॥ भट्टारकश्रीराजेंद्रसूरिविरचितः ॥

॥ कल्पसूत्रस्य बालावबोधः प्रारभ्यते ॥

आ पुस्तक श्रीमारवाडदेशमां आवेला गामश्री सीयाणां तथा गामश्री वागराना रहेवासी श्रावक न्याइउना संघ तरफथी, श्रावक रतनाजी वाघाजी गाम श्रीआहोरना रेवासीयें श्रीमुंबापुरी मध्ये श्रावक नीमसिंह माणकनी पासेथी यथा योग्य शुद्ध करावीने तथा केटलिएक वावदो वधारीने तेमनीज मारफत निर्णयसागरनामक मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्युं छे

आ पुस्तकने छापवा संबंधि सर्व प्रकारनो हक्क सरकारना कायदा प्रमाणे छपावनारे पोताने स्वाधीन राख्यो छे माटे छपावनारनी रजा लीधा विना कोइये छपाववु नही.

संवत् १९४४, सने १८८८, शालिवाहन शक १८०९.

मिति फाल्गुन शुक्ल अष्टमी चंद्रवार

आ पुस्तक खरीदवा माटे प्रथमथी नाम नोधावनार साहेबोने विनंति करीयें छैयें के आ ग्रंथनी जेटली प्रतो छपावेली छे लगभग तेटलीज प्रतोना आगलथी ग्राहको थइ गयेला छे माटे बाकी थोडीज प्रतो शिलकमां रहेली छे, तेथी जे साहेबोए प्रथमथी खरीद करेली छे ते साहेबोये जेम बनें तेम मुंबइमां कामाटीपुरानी तेरमी गलीने नाके शा लखमाजी नावाजीनी दुकाने अथवा विठ्ठलवाडीमां शेठ मेगाजी मोतीजीनी पहेडीयें रोकडा नाणा मोकलीने तरत मगावी लेवी अमे घणामा घणा छ महीना पर्यंत नाम नोधावनारनी वाट जोइशुं नहीका पछी आपवाने बधाता नथी

आ पुस्तक जे साहेबोनें लेवानी इछा होय ते साहेबोए नीचे लखेला जुदा जुदा गामोना अमारा आडतीया पासेथी रोकडा रुपैया मोकली मगावी लेवा, देसावरथी मगावना

:प० र सज्जनोयें टपाल खरच सुधां नाणा मोकलवा, नहींकां वेल्युपेअेबल करी टपालनी मार फत मगाववा तसदी लेवी.

१ ॥

१ गामश्री मुंबइमा कामाटीपुरानी तेरमी गलीने नाके शा लखमाजी नावाजीनी दुकानेथी तथा विठ्ठलवाडीमां शेठ मेगाजी मोतीजीनी पढेडी उपरथी मगावी लेवा

२ गामश्री अमदावादमां पांजरापोलनी अदर शेठ पुनमचद ताराचदनी दुकानेथी मलशे

३ गामश्री सुरतमां नानपरा मध्ये शेठ चेनाजी वांताजीनी दुकानेथी मलशे

४ श्रीआबुना पाहाडनी नीचे गामश्री खराडीमां, नार शीतारामजी जवानमल्लजीनी दुकानेथी वेचाती मलशे

५ गामश्री शिवगजमां शेठ मेगाजी मोतीजी श्री जाणावालानी दुकानेथी

६ गामश्री आहोरमा शेठ गोडीदासजी त्रीकमजीनी दुकानेथी मलशे

७ गामश्री जालोरमा मुता धनराजजी लालचदजी माफां वालानी दुकानेथी मलशे

८ गामश्री अलीराजपुरमां शा जेगाजी जवेरचदनी दुकानेथी मलशे

९ गामश्री पुनामध्ये वेतालपेठमां शेठ जीवाजी आणदाजीने त्यांथी मलशे.

१० गामश्री सीयाणामा शा केशरीमल्ल कस्तूरजीनी दुकानेथी मलशे

११ गामश्री भिन्नमालमां शा जुहारमल्ल शिरदारमल्लजीने त्यांथी मलशे

१२ गामश्री थरादमां पारेख आबा मोतीजीनी दुकानेथी मलशे

कहेवाय. ते पाम्याथी तेने स्वयमेव सद्विचारो उत्पन्न थाय छे, ते आवीरीते के.—

आ, मह्रारो देह छे ते क्षणभंगुर छे, विनाश शील छे, एनो विनाश करवा माटे घणा रोगादिक शत्रुउ तत्पर थइ रहेला छे, माटे एने वधारे टकी रहेवानो जरोसो न राखतां जे कांइ माराथी आज शुनकृत्य यतुं होय ते काल उपर न राखुं, परतु आजज करुं, चार दिवस आगल किवा पाछल पण अवश्य मने ए मुकी जशे तो एना योगेकरी हुं जेटलो परोपकार करी शकु तेटलो तो एमांथी लाभ लइ लेउं! छेवटतो ए कांइ मह्रारुं थवानुं नथी, माटे मह्रारे एमांथी जे सार काह्राडी लेवानुं छे ते नहीं काढी लेतां तेने शावास्ते व्यर्थ गमावु? एवु तत्व ग्रहण करी मनरूप मंदिरने विषे विवेक रूप दीपकने प्रकाश करतो सद्वर्त्तन, उदारवृत्ति, सद्गुरुनो समागम, सत्संगति, सदयता, सद्धर्मनिष्ठा, परोपकारबुद्धि, इत्यादि उत्तम प्रकारना विचार तेना मनमां प्रवेश करे तेना योगे तप, जप, पडिक्कमण, पोसह, व्रत. नियम, पूजा, प्रभावना, तीर्थयात्रा, साधर्मी वात्सल्यादि अनेक शुभकृत्यो सेवन करी छेवट धनधान्यादिक नवविध बाह्य परिग्रह तथा क्रोधादिक चौद प्रकारनो अभ्यंतर परिग्रह छे तेनो त्याग करी पंचमहाव्रत आदरी, चारित्र ग्रहण करी कृतकृत्य थाउं. ए मह्रारुं मुख्य कर्तव्य छे एवा विचार तेना मनमां निवास करी रहेला होय छे, ते प्राणी शुभ इछानुरूप पोतानुं वर्त्तन राखी, अतकाल पर्यंत यथाशक्ति सत्कर्मो करी, सर्व मुखे मंगल बोलावी, आ, सृष्टिमां पोतानी कीर्त्तिने अमर करनारो थाय छे. पछी ते धनवान हो किंवा निर्धन हो!

एवा पूर्वोक्त नियमपूर्वक आ हुंडावसर्पिणी रूप पंचम कालने विषे चालनारां मनुष्य रूप रत्नोनी सख्या घणीज स्वल्प जाणवी.

यद्यपि पूर्वोक्त उदारवृत्ति, सदयता, परोपकारबुद्धि इत्यादि शुभकृत्यो तो अन्यदर्शनीउंमां पण अनेक जीवो करे छे खरा, परंतु सम्यक् ज्ञान न होवाथी ते मात्र तेमने सांसारिक सुख नुं कारण रूप थाय छे, पण आत्मधर्मनी उंलखाण विना परंपराये मोक्ष प्राप्तिना हेतु रूप थता नथी, केम के? तेमना धर्म प्ररूपकपण सर्व राग द्वेषनी वृत्तिवाला छे, तेथी ते सत्य कहेवाय नही, सत्यधर्म तो जेने राग द्वेषनो अभाव थइ गयेलो छे, एवा श्रीतीर्थंकरदेवनो प्ररूपेलो छे तेज जाणवो ए वात अनुभवसिद्ध छे, ते विषे आशंकाउ तथा समाधान करवाने आ न्हानी सरखी प्रस्तावनामां स्थल आपवु व्याजवी कहेवाय नही

ते सत्यधर्म पामवानी अभिलाषा करनारा विवेकी जनोयें प्रथम तो गुरुआदिकना मुख थकी अनेक प्रकारनां शास्त्र श्रवण करवामां हरहमेश तत्पर रहेवु जोइये शास्त्रो सांभलवा, तथा जे शास्त्र पोताने वांचवा भणवा योग्य होय ते पोते पण वांचवां तथा भणवां कदापि सांसारिक धंधा रोजगारना प्रपंचथी जो वधारे अवकाश न मली शकतो होय तो नित्य बे घडी, चार घडी पर्यंत जेटलो अवकाश मली शके, तेटलो वखत शास्त्र श्रवण करवु, त्यारपछी ते श्रवण करेला श्रुतनु मनन करवु, त्यारपछी तेनु निदिध्यासन करवु ए शास्त्र श्रवण, मनन, निदिध्यासन जे छे तेज पूर्वोक्त सम्यक् दर्शननी प्राप्ति कराववाना शुभ हेतु छे; माटे ते संपादन करवा सारु ज्ञानप्रद अने जीवितने सफल करनारा शास्त्रो सांभलवानो उद्यम करवो.

तेमां कोइ अल्पपुण्यवानने कदापि आजीविकादिकना भयथी सांसारिक प्रपंचना योगे अवकाश न मली शकवाथी जो प्रतिदिवस शास्त्र भणवु वाचवु, अने श्रवण करवुं न बनी शके तो अष्टमी आदिक चार पर्वोने विषे सांभलवानो अभ्यास राखवो जोइये तेम पण न

• ॥ प्रस्तावना आ असार संसारने विषे प्राणिमात्रनुं जीवितव्य जे छे ते वायरे करी चंचल थयेला जलतरंगना जेवु चचल छे, वली विचित्र प्रकारनी संपत्तिउ जे छे ते पण सर्व विपत्तिउयें करी युक्त छे, तथा रूप रसादिक जे इंडीयोना विषयो छे ते सर्व संध्याना वादलाना रंगनी पेरे तरत विनाशने पामी जाय तेवा छे, तथा मित्र, स्त्री, स्वजनादिकोना समागमथी थयेलुं जे सुख ते पण सर्व स्वप्नोपम अथवा इंद्रजालसमान छे, वली जे अत्यत आनंदने उत्पन्न करनारा एवा सुंदर पदार्थों हमणा जोवामां आव्या होय, तेज पदार्थों कालपरिपाक थइ रह्याथी फरी अल्पकाल पछी शोभाहीन थयेला दीठामां आवे छे, एवी रीते प्रत्यक्षपणे आ संसारनी व्यवस्थाने सर्व कोइ जाणे छे, देखे छे, तथापि प्राणीना मननी टेव एवी कोइ विलक्षण छे के, हु अजर अने अमर छुं, कोइ कालें मह्यारो नाश थवानो नथी तेमज आ, मह्यारां घर छे, आ, मह्यारी लक्ष्मी छे, आ, मह्यारां क्षेत्र, वाडी, वाग, वगीचा प्रमुख संपत्तिउ छे, आ, अमुक मह्योटा मह्योटा मह्यारा स्वजन छे, आ, मह्यारा मित्र छे, आ, मह्यारी स्त्री छे, आ, मह्यारो पुत्र छे, आ, मह्यारुं ऐश्वर्य छे, आ, मह्यारी सत्ता छे, इत्यादि सर्व कांई मह्यारुंज छे, एवो जे तेना मननो संकल्प छे ते घणु करीने कोइ रीते दूर थइ शकतो नथी

कारण के आशारूपी मोहनीयें मनुष्यनुं मन एटलुं तो वश करी लीधेलुं छे के मरतां सुधी पण तेनी तृष्णा मंद थती नथी, परतु दिवसेदिवसे वधती जाय छे अहंममताभिमानपणाने लीधे तेनो कदाग्रह, दंभ, लोभ, आदिक जे छे ते पूर्वकृत कर्मोदयनी प्रबलताने योगे एक लवमात्र पण कमी थता नथी, ए मह्योटी खेदनी वात छे.

कुटुंबादिकना संयोग संबंधि जे क्षणिक सुख छे ते यद्यपि पूर्वे अनंतिवार जीव पामी आव्यो छे, तथापि जेवारे फरी पामे छे तेवारे आ, सुख मने हमणां नवाज जाणे मल्यां होयनी! एवु समजीने तेमां तल्लीन थइ जाय छे, पण आ सुख अल्पकाल रहीने नष्ट थइ जशे, अथवा पुण्य घणुं प्रबल हशे तो म्हारा आयुष्य पूर्ण थया सुधी रहेशे, परतु पछी तो अवश्य ए सुखथी म्हारे वियोग थवानो छे एवो शुभ विचार निरतर जेना अत करणमां थतो होय ते क्षणिक सुखोमां लुब्ध न थाय, एवा कोइ विरलाज दीठामा आवे छे

ज्ञानदृष्टियें विचारतां जे विषयसुख छे तेपण उपचारथी मानी लीधेला छे, परतु पारमार्थिक रीतें जोतां तो ते दु खरूपज छे, ससार वधारवाना हेतु छे, नरक तिर्यंचादि गतिउंमा भ्रमण करावनारा छे, आत्मधर्मने आच्छादन करनारा छे, एवा कल्पित सुखोनी इच्छा करनारा जीवोने ससाररूप समुद्रमा अनेक प्रकारना दु सह दु ख सहन करतां क्षुवकीउं खाता अनंता कालचक्र व्यतीत थइ गया तो पण तृप्ति पाम्या नही ए सर्व प्रबल मोहनीयनु माहात्म्य जाणवु ए मोहनीय कर्म जे छे ते ज्ञानावरणादिक आठे कर्मोमा प्रधान छे माटे एनी उत्तर प्रकृति अठावीश भेद माहेली अनतानुबधि क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार प्रकृति जे छे तेनो जेवारे क्षय थाय तेवारे जीवने क्षायक सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय अथवा ए चार प्रकृतिनुं जेवारे क्षायोपशम थाय तेवारे क्षायोपशमिक सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय, अथवा ए चार प्रकृतिनो जेवारे उपशम थाय तेवारे जीवने उपशम सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय एवी रीतें ए त्रण प्रकारना सम्यक्त्व मांहेलु कोइ पण सम्यक्त्व प्राप्त थाय तेवारे ते जीव निरागी श्रीतीर्थंकर देवनो प्रकाशेलो जे शुद्धधर्म तेने पाम्यो एम

वने तो वे पाक्षिक दिवसोमां श्रवण करवु कदापि तेम पण न वनें अने कोइरीतें नवनवा प्रकारना विचित्रोपदेश आपनारा अनेक स्तुतिपात्र ग्रंथोनुं श्रवण न थइ शके तेवारे पोताना पूर्वकृत अशुनकर्मोना उदयने वि कारी पश्चात्ताप करीने पण परमेश्वरे बतावेला- श्रीपर्युषण पर्वना दिवसोमां आ कल्पसूत्रतो अवश्य सांजलवु. एम सांजलवाथी तथा पूर्वोक्त पश्चात्ताप करवाथी पण अनेक प्रकारना पूर्व संचित ज्ञानावरणीय कर्मनो वध त्रूटे ठे, ते जेम जेम वंध त्रूटतो जाय तेम तेम क्रमे क्रमे क्षयोपशमनी तारतम्यता थती जाय, तेना योगे शास्त्र श्रवणादि साधन पण सुलज्ज थतां जाय, तेथी कालांतरे ज्ञानी थवानो अवश्य संजव थाय, ए अनुक्रम अनुमानथी निर्विवाद सिद्ध ठे आ कालमां प्रथमतो धर्म शास्त्रना संजलावनारा सत्यप्ररूपक निर्ग्रंथी साधुउनी जोगवाइ पण कोइ स्थले कोइ कोइ अवसरेज मले ठे, तेम ठतां जो संजलावनार मली आवे तो सांजलनारा मलवा मुश्केल ठे!!

वली हालना समयमां घणे स्थले तो यतीउनो निवास दीठामां आवे ठे, ते यतिउ पण जेटला श्रावकोने रहेवाना स्थानको ठे ते सर्व स्थानकोमां मली आवे तेम नथी, परतु तेटला गामो मांहेला पण जे महोटां महोटां शहेरो ज्यां घणा श्रावकोनी वस्ति होय तेवा गामोमां मली आवे ठे एटले लगजग जेटला श्रावकोने रहेवाना गामो अने शेहेरो आदिक ठे ते मांहेला आशरे शोमां जागना गामोमां यतियोनो निवास दीठामां आवे ठे, हवे ते यतीयो जे ठे तेमां पण व्याकरणन्यायादि शास्त्रोमां निपुण थयेला एवातो जाग्येज सेकडे मात्र वे यतियो निकलवा कठण थइ पडे, वाकीना अठाणुं रहे ते मांहेला अर्द्ध जागना यतियोतो श्रावकने पडिक्कमणुं करवानी क्रिया सुधां पण समजी शके तेवा न होय, अने

अहीं पडिक्कमणादि क्रिया श्री तथा टबा प्रमुखना ग्रंथो व्याख्यानमां वांचवा प्रमुखनी कलामां निपुण निकले तेटला यतियो श्रावकादिकोने धर्मोपदेश करे ते पण थोडाज गामोमां समजवु परतु जे गामोमा यतिउंनी पण योगवाइ न मले तेवा गामडांउमां नित्य व्याख्यान सांजलवुं तो दूर रह्यु परतु मात्र आखा वर्षमां महामांगल्यकारी महोटु पर्युषण पर्व आवे छे, तेमां पांच दिवस पर्यंत श्रीकल्पसूत्र अवश्य सांजलवु जोइये त्यां सविज्ञ गीतार्थ महामुनिराजो के जेने सूत्र वांचवानो अधिकार छे, तेवा पुरुषोना मुखथी कल्पसूत्र श्रवण करवु, ते तो रह न ... यतियोना मुखथी सांजलवानुं पण बनी शके नही एवीरीते

स्थले अमारा दीठामां तथा सांजलवामां पण आव्युं छे.

अथवा गीतार्थ ज्ञानियोनो सयोग मले छे, ते ते गा

रखा न होय केटलाएकने सिद्धांत श्रवण करवानी

नवा जाय, वली केटलाएक महोटा दिवसो छे माटे

जाय, केटलाएक आपणा गाममां आपणे चार जण

रहु तो बीजा पण कोइ सांजलवा जशे नही एवा हेतुथी

खाडवा महान् प्रतिष्ठित बनवासारु जाय, केटलाएक

श नही, परतु मात्र धर्मना दिवस छे, एवा हेतुथी

जलवा जवाना अनेक हेतु छतां पण सांजलनारानी सख्या

के, अने बाकीना नवमा हिसा जेटला प्राणीतो एवा अज्ञ

मजेज नही तेमने तो बधा दिवसो उद्यम करवामां अने सां

सारिक सुखनी मोज मजाहमांज आनद मानी घरमां वेशी रहेवानुं गमे एवा घणा निकली आवे छे. वर्त्तमान कालनुं माहात्म्यज एवु छे के, धर्म श्रवण प्राणीमात्रने दोहिलुं थाय !

तथापि जे गामोमां संविज्ञ गीतार्थनी योगवाइ तो मलेज क्यांथी ? परतु श्रीपर्वना दिवसोमां कल्पसूत्र वांची शके एवो कोइ यति पण मले नही, अने ते गाममां थोडा घणा पण पंजोसणना दिवसोमां कल्पसूत्र श्रवण करनारा तो जरुर निकली आवे,कदापि कोइ गाममां तेवी संख्या न निकली आवे तोपण धर्मा व्यक्त धर्माधिकारी पुरुषोनुं साधारण धर्म छे के, तेवा गामोमां पण ते प्रकारनी प्रेरणा करीने अवश्यधर्मनी प्रवृत्ति कराववी जोइयेंज हवे तेवा प्रवृत्ति करावनारा धर्मानिरुची जीवो पण आजना समयमां विरला दीठामा आवे छे, तेथी घणा स्थलोमा तो पर्युपण जेवा महोटा दिवसोमां पण कल्पसूत्र बिलकुल वचातुंज नथी,अने जे जे गामोमां तेवा सांभलनार ज्ञानरुची जीवो होय छे, तो तेमने ज्यारे कोइ संभलावनारो मलतो नथी, त्यारे ते श्रवण रुचिकर पुरुषो कोइ यतिने तेडीने कल्पसूत्र श्रवण करवानो व राव करे छे, परंतु यतियो पण एवा होय छे के, जे गाममां पर्युपणना दिवसोमां रहे ते गाम मांथी पांच पचाश रूपैया पेदा करवानी इच्छा राखे एवा होय छे, तेथी ते श्रवण करनारा जे निकली आवे ते वली बीजा पोताना मित्र, हेतु किवा सगा सबंधि अथवा साधर्मि भाइ उने तेमज तेवा कोइ अन्यजनोथी मिलाप करीने पांच दश जणने एकठा करी महाजनना शेठीआने समजावी तेमनी मारफत श्रावकोनी पासेथी टीप करावी यतिने आपवा सारु पैसा एकठा करे छे, ते एकठा थया पछी यतीने बहार गामथी बोलाववामां आवे छे, जे आवी पर्युपणना आठ दिवस ते गाममां रहे छे, अने तेमां कल्पसूत्र वांचवाना दिवसोमां

कल्पसूत्र पण पोतानी प   वी प्रत होय तेवी प्रत उपरथी सर्व सजाने यथामति वाची संजलावे त्यारे सांजलनारा सांजली शके

तिहां कोइ कोइ पोथीमां तो सक्षेपथीज वात लखेली होय छे, अने कोइमां अतिसंक्षेपथी कोइमां मध्यमथी, कोइमां तेथी विशेष तेमज कोइमां उत्कृष्ट रीते सविस्तर वात पण लखेली होय छे, हवे तेज गाममा एक वर्षे एक यती आवे, अने बीजा वर्षे बीजो यती आवे, तो ते बीजी पोथी लइ आवी वांचे, तेमा वली कोइ कथाजाग उंछो अधिको लखेलो होय, ते सांजलीने अथवा तेज यती होयने बीजे वर्षे बीजी पोथी लइ आवीने वांचे तो पण सांजलनारा वधाए प्रवीणतो होय नही,के जेथी ते समजी जाय जे कल्पसूत्रनो मूलपाठतो १२१६ श्लोकनो छे, तेनो अर्थतो मात्र अर्थ करनाराउनी वाक्यरचनामां फेर पडे ते जले, बाकी जावार्थ वधो सरखो होय छे परतु पाछलथी केटलाएक आचार्योंये जे कथाजाग वधार्यो छे, ते कोइये थोडो तो कोइ आचार्यें घणो जाग वधार्यो छे, एवी वातना समजनारा थोडा होय, परतु गया वर्षे तो आ अमुक कथा सांजली हती तेमां आटली वात न हती, अने आ वर्षे आटली वात केम वधारे आवी? किंवा उंछी आवी,अथवा गया वर्षे आ अमुक कथा वाचवामां आवी हती, अने आ वर्षे ते कथाज केम न वचाणी? एवी आशकाउ करनारा घणा होय माटे तेमना मनमां तेवी अशंकाउ मुंजवण करी नाखे छे तेथी तेमने महोटु विचार थइ पडे छे माटे तेवा गामडीयामां जो एकज प्रकारनुं लखेलुं पुस्तक वर्षोवर्ष वचातु होय तो तेमने कोई संशय उत्पन्न न थाय तेमने माटे तथा कोइ वृद्ध श्रावक जरावस्थाने लीधे अथवा कोइ रोगादिना प्रसंगथी चालीने उपासरा सुधी पण कल्पसूत्र सांजलवा माटे जइ शकतो न

होय तो ते पोताने घेरज वेळा थकां पण कल्पसूत्र वांची शके तेवाने माटे, अथवा कोइ काने बहेरो होय तेथी बीजानो करेलो उपदेश श्रवण न करी शके परतु पोतें वांची जाणतो होय तो तेने पण अंतराय न पडे तेमाटे, तथा घणा न्हाना न्हाना गामोमां मात्र पांच दश घेर श्रावकोना होय छे तो तिहां कोइ यतिपण वांची संभळावनारो भाग्येज मळे ! तेवा गामोना रहेवासीयोने पण कल्पसूत्र सांभळवानो अंतराय न पडे तेवाउने माटे, तथा घणा स्थळे श्राविकाउ परिचि एटले पडदा आडा राखीने वेसे छे ते बाहिर सांभळवाने अर्थें जो उपासरादिकमां जाय तो ते आडो पडदो बांधीने अन्यस्थानके क्यां जइ वेशी शके ? माटे पोथी होय तो तेपण घरमां वांची शके तेवी श्रावीकाउने अर्थें तथा तरतनी दीक्षित केटलिएक साधवीउ पण एवी होय छे, के तेमने जो सुगम बाळावबोध करेलो होय तोज वांचवाने अनुकूळ थाय नही तो ते वांची शकवाने अशक्य थाय छे तेमने माटें इत्यादि बीजा पण श्रोताउने विघ्न करनारा अनेक कारणो छे ते सर्व अडचण मटाडवाने माटें घणा मुनिराजोने, तथा संविज्ञ पक्षीउने, तथा श्रीपूज्य भट्टारक अचार्यादिकोने, तेमज घणा यतीयोने, घणा देसोना श्रावको आज केटला एक वर्ष थया हरहमेस कहेतां आवे छे के, सहेला इथी वचाय एवी रीते जो कल्पसूत्रनो बाळावबोध करीने छपावी प्रसिद्ध कर्यो होय तो तेथी श्रोता जनोनी उपर महोटो उपकार थाय, अने पूर्वोक्त हरकतो मटी जाय तेम छतां कोइ पण आचार्यादिकें तेम कर्युं नही छेवट संवत् १९३६ नी शाळमां श्रीविजयराजेन्द्रसूरि माळवादेश मांहेला श्री जांबुवा नगरने विषे मास कल्प रह्या हता, ज्यां माळवा, मारवाड तथा गुंजरात अने पारकर मळी चार देशना श्रावको तरफथी चार माणसोए

आवीने महाराज साहेब कल्पसूत्रनो सुगम बालावबोध बनाववानी विनति करी ते सांभली महाराजें कह्यु के आगल ए कल्पसूत्रनी आठ ढालो पण्डित श्रीज्ञानविमलसूरियें भाषा रूपे रचेली छे, एवु सांभलीये छैये माटे हवे विशेष सुगम करवानी जरूर नथी, तोपण श्रीसंघनी तरफथी विनति करवा आवनारा माणसोये कह्यु, के ते ग्रंथमां थविरावली तथा साधुसमाचारी नथी माटे एक व्याख्यान ओछु छे, अने वली वात पण संक्षेपथी कहेली छे तेथी ते ग्रंथ अधूरो कहेवाय कह्यु छे के, "अधुरुं ग्यानसो ग्यान नही, अधूरो भण्योसो भण्यो नही, ॥ अधूरी रसोइसो रसोइमा नही, अधूरो वृक्ष सो फले नही ॥ अधूरो फल पाको सो बराबर स्वाद नही, तिणसुं सपूर्ण चाहीजे" ते आप महान्पुरुष छो, परमो पकारी छो माटे श्रीसंघनी उपर कृपादृष्टि पूर्वक अमोये करेली अरजी कबुल राखो

एवु सांभली महाराजे श्रावकोनी हस्तक चार पांच भंडाराउमांथी घणी जीर्ण पुरातन लखेली चूर्णि, निर्युक्ति, टीकादिक पचांगीनी, बे चार शुद्ध प्रतो एकठी करावीने कल्पसूत्र नो बालावबोध करवा मांड्यो, ते तयार थया पछी केटलाएक श्रावकोयें तो ते प्रत उपर थी उतारा करवा मांड्या ते सुमारे पांच पचाश उतारा पण थया वली पण उतारा करी प्रतो लखाववानी इछा घणा जनोना मनमां हती पण लहिया तरत वखत उपर मली शके नही तेमज प्रत लखी तयार करवाने पण वरसोना वर्ष निकली जाय, एक प्रत पच्चाश शाठ रुपैया खरच करवाथी बनी शके, ते काम बधाने अनुकूल पडे नहीं मात्र तवगर शेठ साहु कारोथी बनी शके, परतु गरिब वांचनाराथी एटला पैशा खरचाय नही तथा वली ते प्रत लखा वीने पछी शोधन करी आपनार पण कोइ मली शके नही इत्यादिक अनेक प्रकारना विघ्नो

लखावनाराउने माथे पडवाथी सर्व सज्जनोना मनोरथ पूर्ण थइ शक्या नही
त्यार पछी संवत् १९४१ नी शालमां महामुनि श्रीकीर्त्तिचङ्जी महाराज तथा महामुनि केशरविजयजी ए बे मुनिराजो ते साक्षात् जाणे चोथा आरामांहेला साधुउना नमुनानी मूर्त्तिउज होयनी? एवा शुद्ध चारित्रिया, पंचमहाव्रतना यथार्थ पालनारा साधुउये श्रीसीयाणानगरमां आवी चोमासुं कर्युं अकस्मात् बनाव एवो बन्यो के गामश्री वागराना रहेवासी श्रावकोंने ते गामना सिरदार साथे कोइ प्रकारनो वांधो पड्यो तेने लीधे तेमने पण पोताना घर मूकीने गामश्री सीयाणा नगरमां आवी रहेवु पड्युं एम ते गाममां बे गामोना श्रावकोनो जमाव थयो, अने साधु मुनिराजोनी जोगवाइ पण मली आव्याथी त्यां घणा श्रावक श्राविकाउये सम्यक्त्वादि अनेक प्रकारना व्रतपच्चरकाण कर्या तेमां वली ते वखतमां विशेष आश्चर्य उत्पन्न करनारी आ वात बनी के, ते गामना रेहवासी क्षत्री, चोधरी, घांची, कुंभारादि अनेक प्रकारना अन्यदर्शनीउ तेमां वली यवन लोको अने ते गामना ठाकोर सहित पण साथे मली सम्यक्त्वादि व्रत धारण करवा मंडी गया एवी रीतें अनेक जीवो त्यां समकेत पाम्या छेवट जेनाथी कांइ विशेष व्रत लेवु न बनी शक्युं, तो तेणे मात्र महारे आ जन्मपर्यंत रुड न वालवानो, कोइयें पंजोसणना आठ दिवस पर्यंत धान न कापवानो, केटला एकें रात्रिभोजन त्याग करवानो, कोइयें आठम चौदशे जीवहिंसा न करवानो, तथा गामना ठाकोरना भाइये तो जावजीव हिंसा नही करवानो एवा घणाजनोये नियम लीधा तथा ठाकोरे पोते पोताना घरमां जे बकरा तथा पाडा प्रमुख अनेक जातिना जीवो हिंसा करवा माटे राखेला हता, तेमने पण अभयदान आपी छूटा

करी श्रावकोना पंच खातानो जीवरक्षित पांजरापोल छे तेमां मोकली आप्या इत्यादि रीते ते चोमासामां घणाज जीवो समकेत प्रमुख अनेक प्रकारना व्रतधारीओ थया, तेथी महोटो उपकार थयो, अने जैनधर्म अत्यंत देदीप्यमान सूर्य सरखो दीसवा लाग्यो

तेमज वीजा पण सीयाणा गामना परगणाने आसपास चारे बाजुये फरता वीश वीश पचीश पचीश कोशमां आवेला गामोना रहेवासी श्रावको मांहेला घणा श्रावको पण स्थावर तीर्थ करतां जंगम तीर्थ वांदवामां असख्यात गुणु लाभ वधारे छे,एवु समजीने त्यांहा विराजेला वे साधु मुनिराजोनी साथे सांवत्सरी खमाववाने माटे वंदन करवा निमित्तें आव्या

एवी रीते घणा गामोना श्रावको एकठा थया, तेवा अवसरे प्रसंगानुसारे मुनिराजोए पण धर्मोपदेशमां ज्ञानदान आपवानी तुलना करनार अन्य कोइ दान नथी एवु व्याख्यान कर्युं तेवारे सभा मांहेला श्रावको बोल्याके, ए ज्ञानदानतो मुनिमहाराजथी थइ शके छे, परतु श्रावकोथी कांइ बनी शकतुं नथी ते सांभली मुनिमहाराज बोल्या के, पुस्तको लखावीने जे जे ज्ञान भणवानी तथा वांचवानी रुचीवाला होय तेमने आपवाथी तथा ज्ञानना उपकरण आपवाथी, तेमज ज्ञान भणनाराओने अन्नवस्त्रादिकनुं साहाय्य आपवाथी, बीजाने भणाववा आदिकथी श्रावको पण परिपूर्ण ज्ञानदान करी शके छे

ए वात मुनिओना मुखथी सांभलवा पछी तेज दिवसे रात्रिना वखते श्रावको सर्व एकठा थया तेमणे एवो ठेराव कर्योके पंजोसण पर्वमां कल्पसूत्र सांभलवाने तथा बीजा पर्वोमां जे जे पर्व ज्यारे आवे छे तेवारें ते तें पर्वनी कथाओ सांभलवाने घणा श्रावकोने अंतराय पडे छे, माटे आपणने प्रथम भागमां तो पूज्य भट्टारक श्रीविजयराजेन्द्रसूरिये बनावेला कल्पसूत्र

नो बाळावबोध छे ते छपाववो अने बीजा भागमां दीवाळिआदिक सर्व पर्वनी कथाउनो बा ळावबोध छपाववो, तथा त्रीजा भागमां वळी कोइ सर्व संघने उपयोगी ग्रंथ हशे ते विचार करीने छपावीशुं एवीरीते गामश्री सीयाणा तथा गामश्री वागराना श्रावक पंचो मळीने कबुलात आपीके जे पूर्वोक्त ग्रंथो छपवानो खरच लागशे ते अमो आपीशु तेनो व्याज लइशु नही अने छपायला प्रत्येक पुस्तकनी शो शो नकलो तो निर्ग्रंथ साधुउ तथा असमर्थ श्रावको जे वांचवानी रुचीवाळा होशे तेमने मफत आपशुं एवो ठेराव करीने छपाववा संबंधी कामकाजनी तथा शो शो नकल कोने मफत आपवी तेनी तपास करवा माटे शा रतनाजी वाघाजी गामश्री आहोरना रेवासी श्रावक छे ते घणुंज प्रामाणिक, नीतिमान्, विवेकी, माह्यो, दयाळु, भरोसादार, विश्वासु अने शास्त्रज्ञ छे माटे तेने अधिकारी ठेरवीने प्रथम श्रीकल्पसूत्रनो बाळावबोध छपवाना कामने मदत आपवा माटे टीप भरवा मांडी तेमां मदतकरनारा श्रावकोनी संख्या घणीज म्होटी थवाथी श्रावक केसरीमल्ल कस्तुरजी गामश्री सीयाणा वाळायें कह्यु के जो बीजा ग्राहक ए पुस्तकोने लेनारा थशे, तो तमोये मंडावेला पुस्तकोनी संख्या मां फाळा प्रमाणे प्रत्येक पुस्तक राखनार धणीने पुस्तको कमती आपीशु ते वात सर्व टीपमां नाम दाखल करनाराउयें मंजुर राखीने सभा विसर्ज्जन थइ ते दिवसें श्रीसंघे करेला ठेरावने अनुसरीने में आ पुस्तक श्रीमुंबईमां श्रावक भीमसिंह माणकनी मारफत छपाव्युं छे

हवे आ ग्रंथ श्रीपर्युषणाना दिवसोमां वांचवानो छे माटे हालमां म्हारा दीठामां आवेली प्रवृत्ति मुजब केटलाएक श्रावक अने साधुउनी जे उलटी आचरणा पंजोसणना दिवसो मां पण सुधरती नथी ते हवे सुधारी लेशे एवी आशा राखीने प्रथम तेमनी आचारणा

करी श्रावकोना पंच जीवरक्षित पांजरापोल छे तेमां मोकली आप्या इत्यादि रीते ते चोमासामां घणाज वो समकेत प्रमुख अनेक प्रकारना व्रतधारीउ थया, तेथी मह्योटो उपकार थयो, अने जैनधर्म अत्यंत देदीप्यमान सूर्य सरखो दीसवा लाग्यो

तेमज बीजा पण सीयाणा गामना परगणाने आसपास चारे बाजुये फरता वीश वीश पच्चीश पच्चीश कोशमां आवेला गामोना रहेवासी श्रावको मांहेला घणा श्रावको पण स्थावर तीर्थ करतां जगम तीर्थ वांदवामां असंख्यात गुणु लाभ वधारे छे,एवु समजीने त्यांहां [illegible] खमाववाने माटे वदन करवा निमित्ते आव्या

छे घणुं शुं कहीये, परतु आखा वरसनां जे वरवांधा होय ते पंजोसण जेवा महोटा पर्वना दिवसोमां आवी उना करीने कजीयो उत्पन्न करवानुं कारण नीपजावे वास्तविक रीते जोतां श्रावकोने तो गछ छेज नही जो गछ छे तोपण साधु आश्रयी सिद्धांतोमां गछ कह्या छे. परंतु श्रावक आश्रयी कोइ स्थानके सिद्धांतोमां गछ कह्या नथी माटे गछोने वास्ते लडाइ करीने पंजोसणना दिवसोमां शुभक्रिया करवी पडी मूकी तेने वदले कलहकरण रूप क्रिया तो अवश्य नज करवी जोइये तेमज वली जेनी मरजीमां जे आवे ते धणी पोतानी श्रद्धापूर्वक तेटला नाणा टीपणी प्रमुखमां भरी आपे किवा न पण भरी आपे तो तेथी शुं गेरफायेदो थयो ? पोते पोतानी उदारतासहित जेम बने तेम शुभक्रियामां वधारे द्रव्य खरचवुं ते पण पोतानी लघुता दर्शावता छतां खरचवु, कारण के बनता सुधी जो गुप्त रीते परोपकारमां खरचातुं होय तो वली घणुंज रूडुं समजवु समजु श्रावकें तो पोतानुं नाम राखवानी पण अभिलाषा न राखवी, परतु छेवट कोइ रीतें छूटी शकातुं न होय, तेवारें पोतानुं नाम आपवु पडे तो भले, नहिं तो मात्र नामनाने माटे द्रव्य खरचीने अल्प फल प्राप्त करी लेवु नही.

वली आ कल्पसूत्रने सभासमक्ष वांचनारे केवी रीतें वांचवु ते संबंधि केटलो एक खोलासो यद्यपि प्रथम आ ग्रंथना प्रारंभमां लखायलो छे खरो, तथापि वली कांइक वांचनारने विशेष भलामण करवानी रजा लइये छैये के, प्रथम तो वांचनार जे होय ते श्रीवीतरागना वचन उपर पूर्ण श्रद्धालु होय, बीजुं देशकालने अनुमाने यथाशक्तिये कोइपण प्रकारनुं व्रत करेलुं होय, त्रीजुं सभासमक्ष जे दिवसथी वांचे ते दिवसथी मांडीने ज्यासुधी पूर्ण करे त्यां सुधी सचित्त वस्तुनो त्यागी होय, चोथुं वांचे तेटला दिवस ब्रह्मचर्यनो पालनारो होय, एवो

कही देखाडुं छुं जे दिवसोमा प्रत्येक सम्यक्द्दृष्टी जीवोने अरस्परसमां उत्पन्न थयेलो वै
रविरोध ते,सर्व मन,वचन कायायेंकरी टाली नाखवो जोइये,जे दिवसोमां प्रतिक्रमण धर्मध्यान
मां प्रवृत्ति करवी जोइयें, जे दिवसोमां हर हमेश सवरनावमां रहेवु जोइये, जे दिवसोमां उ
त्तम प्रकारना वैराग्य दशाने स्फुरण करनारा, एवा महान्पुरुषोना रचेला शास्त्र श्रवण करवा
जोइयें, जे दिवसोमा राग द्वेष टाली शत्रु मित्रने समनावे गणवा जोइये, जे दिवसोमां षट्
काय जीवोनी जयणा राखवी जोइये कारणके स्वानाविक पण श्रावकनो आचार ए छे जे को
इ पण कार्य करवु ते जयणायुक्त उपशमनावसहित करवु, तेवारे पंजोसण जेवा सर्वोत्तम प
र्वमां तो वली उपशम नाव अत्यत विशेष राखवानी आवश्यकता छे तेम छतां पंजोसण जे
वा महोटा दिवसोमां पण आपस आपसमां एक कहे के महारो गछ महोटो तो बीजो कहे
शे अमारो गछ महोटो एम गछने माटे ज लडाइ करी विरुद्ध वचन बोली क्लेश उत्पन्न
करी नाखे, वली एक कहेशे के तमे चोथनी संवत्सरी करो छो माटे जैनमतथी विरुद्ध चालो
छो, वली बीजो कहेशे के तमे पाचमनी सवत्सरी करो छो ते जैनमतथी विरुद्ध करो छो, एक क
हेशे तमे उगमती तिथी ल्योछो, तो बीजो कहेशे तमे आथमती तिथी ल्योछो, तेमज एक
कहेशे के देरासरनो आ अमुक पूजारो राखवो तो बीजो कहेशे अमुकने राखवो, वली सा
मिवात्सल्य जीव दयाना उत्तम प्रकारना कार्योंने माटे तेमज गोरजीनी पछेडीने माटे, वास
क्षेप नाखवाने माटे पण टीपणीउ फरती करे ते वखत पण एक बीजानी पासेथी कमती जा
स्ती रकम नरावबाने माटे मे एटलु आप्यु तो तमे एटलुं आपो नहीं तो हु अमुक रकम नही
आपीश, हु पण अमुकज रकम आपीश. एवीरीते एक बीजानी साथे क्लेशकारी वचन बोले

ळे. घणुं शुं कहीयें, परतु आखा वरसनां जे वखांधा होय ते पंजोसण जेवा महोटा पर्वना दिवसोमां आवी जना करीने कजीयो उत्पन्न करवानुं कारण नीपजावे वास्तविक रीते जोतां श्रावकोने तो गछ ळेज नही जो गछ ळे तोपण साधु आश्रयी सिध्धांतोमां गछ कह्या ळे. परंतु श्रावक आश्रयी कोइ स्थानके सिध्धांतोमां गछ कह्या नथी माटे गछोने वास्ते लडाइ करीने पंजोसणना दिवसोमां शुजक्रिया करवी पडी मूकी तेने बदले कलहकरण रूप क्रिया तो अवश्य नज करवी जोइये तेमज वली जेनी मरजीमां जे आवे ते धणी पोतानी श्रध्धापूर्वक तेटला नाणा टीपणी प्रमुखमां जरी आपे किवा न पण जरी आपे तो तेथी शुं गेरफायेदो थयो ? पोते पोतानी उदारतासहित जेम बने तेम शुजक्रियामां वधारे द्रव्य खरचवु ते पण पोतानी लघुता दर्शावता ठतां खरचवु, कारण के बनता सुधी जो गुप्त रीते परोपकारमां खरचातुं होय तो वली घणुंज रूडुं समजवु समजु श्रावकें तो पोतानुं नाम राखवानी पण अजिलाषा न राखवी, परंतु ठेवट कोइ रीतें बूटी शकातुं न होय, तेवारें पोतानुं नाम आपवु पडे तो जले; नहिं तो मात्र नामनाने माटे द्रव्य खरचीने अल्प फल प्राप्त करी लेवुं नही

वली आ कल्पसूत्रने सजासमक्ष वांचनारे केवी रीते वांचवुं ते संबंधि केटलो एक खोलासो यद्यपि प्रथम आ ग्रंथना प्रारंजमां लखायलो ळे खरो, तथापि वली कांइक वांचनारने विशेष जलामण करवानी रजा लइये ढैये के, प्रथम तो वांचनार जे होय ते श्रीवीतरागना वचन उपर पूर्ण श्रध्धालु होय, बीजुं देशकालने अनुमाने यथाशक्तियें कोइपण प्रकारनुं व्रत करेलुं होय, त्रीजुं सजासमक्ष जे दिवसथी वांचे ते दिवसथी मांमीने ज्यांसुधी पूर्ण करे त्यां सुधी सचित्त वस्तुनो त्यागी होय, चोथुं वांचे तेटला दिवस ब्रह्मचर्यनो पालनारो होय, एवो

पुरुष पोसह अथवा सामायिक लइने, आगल शुद्ध वाजोट राखी तेनी उपर कवली स्थापी ते उपरे वह्न यत्ना सहित, विनयपूर्वक पुस्तक राखीने पठी सांजलनाराउनी सन्ना एकठी थाय तेवारे बीजो एक वाजोट मूकेलो होय तेनी आगल पांच पच्चीश बाइयो गीत गाती थकी आवी ने प्रथम कंकुनुं स्वस्तिक गुह्ली करी तेनी उपर चोखा शालिनुं स्वस्तिक गुंहली करे ते गुंहली करीने बाइयो तथा माणस सर्व ज्यारे पोतपोताना योग्य स्थानकें वेसी जाय त्यार पठी वांचनार जे होय ते त्रण वार पुस्तकने नमस्कार करे, पठी सन्नासहित पोते उन्नो थइने एक नवकारनो पाठ कहीने "पुरिमचरिमाणकप्पो०" ए मगलाचरणनी गाथा संपूर्ण कहीने पठी नीचे वेसी मुख आगल मुखवस्त्रिका राखीने सन्नासमक्ष वांचना करे, परतु उघाडे मुखे वांचे नही ते पण काल वेलाये वांचे ते आवी रीते के सवारना सात वागाथी ते अगीआर वागा पर्यंत वांचे, अने फरी मध्यान्हे बार उपर एक वाग्याथी मांमीनें सांजना चार वागा पर्यंत वांचें एवा प्रकारनो विधि जेटला दिवस वचाय तेटला दिवस दररोज करवो एम करी बराबर मुदतसर आठ वांचना तो अवश्य पूर्ण करवी अने थविरावली पट्टावली जो तेटला दिवसमां सपूर्ण न वचाइ शकाय तो ते पंजोसणना बीजा दिवसे वचाय तो पण कांइ हरकत नथी एवी रीतें वांचतां कदापि एक वांचनारनो वाचतां वांचतां घांटो बेसी जाय, अथवा बीजु कोइ निमित्त बनी आवे, तो ते स्थाने बीजो जे श्रद्धालु वांचनार आवी बेशे ते पण पूर्वोक्त विधिसहित वाचे आ सन्ना समक्ष वांचनारनो विधि कह्यो

हवे जे पोतानी मेले मनमा वांचीने धारी राखतो होय, अथवा पोते वांचीने पोतानेज सांजलवु होय, तो तेणे पण मुखवस्त्रिका आडी आपी पवित्र थइने अकाल वेला टाली

कवली उपर पोथी राखी वांचवुं ए शुनफलनी देनारी उत्तम प्रकारनी वांचवानी रीत छे

आ ग्रंथमां जे जे स्थानके जे जे विषयो उपर कथाउ आवेली छे, त्यां त्यां ते ते कथाउना संबंध मां जे जे बनाव बनेला छे तेना चित्रो पण स्थानके स्थानके दाखल करेला छे एवा सर्व म ली चोरासी चित्रोनो समावेश करेलो छे, तेमां अमारा तरफथी केटला एक चित्रोमां नूलो थये लीउ छे एक तो श्रीमहावीर नगवानने देवानंदा ब्राह्मणीनी कुद्दीमांथी हरणी गमेषी देवताये जे वखत संहृया छे, ते वखत जन्मेला बालकना जेवु तथा हारादिक आनूषणोये करी युक्त नगवाननुं रूप दर्शावेलुं छे ते ठेकाणे एवी आकृति करवी जोश्ती न हती, परतु व्यासी दिवस गर्नमां रहेला बालकनो जेवो आकार थाय छे तेवी आकृति आनूषणोरहित करवानी हती, तथा वली एज गर्न त्रिशला राणीनी कूखमा संक्रमाववाने वखते पण तेवी ज आकृति करवी जोश्ती हती, बीजुं जे वखत नगवान् श्रीवीरस्वामीने इन्द्र महाराज मेरुप र्वतनी उपर पांडुकवनमां जन्मसंबंधि महोत्सव करवाने लइ गयेला छे ते वखत इन्द्रना खो लामां बेसाडीने नगवानना पगनो अंगुठो मेरुपर्वतनी उपर राखी जाणे ते अंगुठो मेरुपर्वत ने दाबतो होय ? एवा आकारमां स्नान कराववानुं चित्र करवुं जोइतुं हतुं, तेने बदले इन्द्रना खो लामां आडो सुवारी मूकवा जेवी आकृति बनीगयेली छे ए पण चित्रमां नूल थयेली छे तथा वली केटलेक ठेकाणे जे वखत जेवा अंतःकरणना विचारमां जीव होय ते वखत तेनी मुखमुद्रा तथा शरीरना अवयवो पण तेवाज करवा जोइयें तेने बदले तेवी मुखाकृति अने शरीरना बीजा नागोना अवयवो न बनेला जेवा चित्र पण थइ गयेला दीठामां आवे छे ते संबंधि अमाराथी अजाणपणे जे जे नूलो विवेकी सज्जनोने चित्रोमां दीठामां आवे ते

सर्व भूलोनी क्षमापना चित्र अवलोकन करनारा चतुर जनोनी पासेथी हुं मागु छुं

आ कल्पसूत्र मूल पाठे १२१६ श्लोकनी संख्यानुं श्रीभद्रबाहु सूरियें मागधी भाषामां गद्यरूपे रचेलु छे ते प्रथमतो मात्र भाद्रपद शुक्ल पचमीना दिवसे साधुजनोज वांचता हता ते संबंधि वात ग्रंथमां आवी गयेली छे, परंतु जेवारे आनंदपुरनगर केजे हमणा वडनगरने नामे उलखाय छे ते नगरना ध्रुवसेनराजा तथा बीजा पण घणा श्रावक श्राविकादि चतुर्विध श्रीसंघनी समक्ष आ सूत्र वांचवानी चाल प्रवृत्त थई ते वखतथी श्रीपर्वना दिवसोमां प्रत्येक गामोगामे ज्यां ज्यां श्रावकोनी वस्ति घणी होय त्यां त्या साधुजनोए एनी वाचना करवा मांडी, परतु ते वखतमां वधाय साधुओ सस्कृतादि भाषामां निपुण हता तेथी ए उक्त सूत्रनी टीका, चूर्णि आदिक सस्कृत भाषामां करेलीओ हती ते वांचता हता, तथा पछी पण घणा कालपर्यंत वाचनाराओ तेज भाषामां वांचता हता परतु ते वखते घणुं करीने टबा तथा बालावबोध करवानी जरूर पडती न हती एवीरीते एक आ कल्पसूत्र नही परतु अगणित ग्रंथो जे जैन सप्रदायमां प्रवर्त्तता हता ते वधाय ग्रंथोनी रचना मागधी अथवा सस्कृत भाषामांज थती हती ज्यारे क्रमे क्रमे सस्कृत भाषाना अभ्यासी साधुओनी न्यूनता थवा मांडी तेवारे घणाएक मागधी भाषामां अने सस्कृत भाषामां बनावेला ग्रथोनी उपर पंडित जनोये टबा भरवा मांड्या तथा केटलाएक ग्रंथोना बालावबोध करवा मांड्या एवी चाल घणुं करीने विक्रम सवत् चौदशेंना शतकथी वधारे पडेली दीठामां आवे छे तेमां पण घणा ग्रथोनी उपर घणुं करीने गुर्जर भाषामां मात्र अक्षरार्थ रूपे टबा करेला तथा केटलाएक ग्रथोना कांइक अक्षरार्थथी विस्तार करीने टबा करेला अने केटलाएक ग्रंथोना संस्कृत टीका

उपरथी जाणे गुर्जर जापामां टीकाज वनावेली होय, एवी रीतना घणा विस्तारपूर्वक वालाववोध करेला दीठामां आवे छे तेमज संस्कृत जापामां थयेली टीकाउथी कोइ कोइ स्थले अथवा सर्व स्थलें न्यूनाधिक वालाववोध थयेला पण दीठामां आवे छे एवी रूढी जेम गुर्जर जापामां वधारे पडेली देखाय छे तेमज हिंदुस्थानी जापामां अने मारवाड मेवाड वगेरे अन्य देशोनी जापामां तथा एक, वे, त्रण, देशोनी मिश्र थयेली जापामां पण केटलाएक ग्रंथोना टवा अने वालाववोध वनेला देखाय छे तेने लीधे संस्कृत जापाथी अज्ञात रहेला जनोने ग्रथो वांचवाने अनुकूलता थती गइ, तथापि अद्यापि सुधि जे कांइ पूर्वाचार्योए संस्कृत अने मागधी जापाउमां अगणित ग्रंथो रचेला छे तेमांना दशहजारमा जाग जेटला ग्रंथोना टवा तथा वालाववोध थयेला नथी हजी एएएए मा जाग जेटला ग्रथो लगजग टवा तथा वालाववोध कस्या विनाना शेप रहि गयेला छे तेनो वालाववोधादिक करवानुं काम आगल पंडित जनोना विचार उपर अने मेहेनत उपर आधार राखे छे एवीरीतें ए कल्पसूत्रना पण जुदा जुदा अनेक साधुउ टवा तथा वालाववोधादिक रचता गया तेमां मूलपाठ उपर तो टवा जरेला होय अने वीजी प्रसंगे आवेली वातो तथा कथाउ ते वालवोध रूपे लखेली होय पण जे प्रतमां मूलपाठ लखेलो होय ते प्रततो विगयादि त्यागी योगवहन करनारा साधुउ सिवाय अन्य कोइथी वांची शकाय नहीं माटे पूर्वोक्त सर्व कोइने वांचवाना काममां आवे एवा हेतुथी आ ग्रंथमां मूलपाठ काहाडी नाखीने मात्र ते मूलपाठना संक्षेपथी अर्थ लइने तथा टीकाकारना आधारथी केटलो एक कथाजाग प्रमुख लइने श्रीविजयराजेंद्र सूरिये वधो मलीने ५५०० श्लोकनो आसरे वालाववोध रूपे ग्रंथ रच्यो पण तेमां वली घणी कथाउ तो

बलकुल हतीज नही तेमज ७ पण टबामां लखेली प्रतो साथे मेलवतां केटलिक वातो न्यूनाधिक दीठामां आवी माटे बीजी बे त्रण कल्पसूत्रोना टबानी प्रतोनो आधार लइने तेमां छापनार श्रावक भीमसिंह माणेके वधारो कर्यो तेथी आ ग्रंथ लगभग अगीआर हजार श्लोक संख्या जेटलो थइ गयो हजी पण थविरावली पटावली वगैरेमां घणी वात वधारे लखवानी हती पण थोडा दिवसना व्याख्यानमां पूर्ण थइ शके नही तेना भयथी पडती मूकी देवी पडी छे, तथा वली श्रीपार्श्वनाथस्वामीना चरित्रमां तेमज बीजे केटलेक स्थानके अन्य प्रतोमां लखेली वातोथी तदन जुदीज रीते अने अति संक्षेपमां महाराज साहेबे वातो लखी काहाडी हती ते मांहेली घणा स्थले तो फेरवी नाखेली छे, परतु केटलाएक स्थानके संशय होवाथी तथा महाराजने कागल लखी जुबाब मगाववाथी घणा दिवस छापवानु काम बंध राखवु पडे तेम न बनी शकवाथी एमज रहेवा दीधी छे तेमज छापवाने घणी उतावल हती माटे वधारे शोधन पण थयुं नथी, तथापि जेटलुं बनी शक्युं तेटलुं यत्किंचित शोधन पण कर्युं छे वली मारवाड, गुर्ज्जर तथा हिडुस्थानी मली त्रण भाषायें मिश्रित आ ग्रथ महाराज साहेबे बनावेलो हतो, परतु तेमां घणा वांचनार साहेबोने वांचतां कंटालो उपजे कदाचित् कोइने यथार्थ अर्थ न बेशे, तेथी ते भाषा सुधारीने श्रावक शा भीमसिंह माणके घणु करी एकज गुर्ज्जर भाषामां लखीने छाप्यु छे तोपण हजी कोइ कोइ स्थले मारवाडादि देशोनी भाषायें मिश्रित थयेली भाषा रहेली हशे तथा कोइ कोइ वातो पण अपूर्ण रहेली हशे तेमज पुनरुक्ति पण घणा स्थानकें दीठामां आवशे ते सर्वे वांचनार सज्जनोये सुधारी वाचवु

आ ग्रंथमा शोधनार श्रावक भीमसिंहमाणकनी नजर चूकथी तथा बुद्धिनी मदताथी तथा

लखावी मोकलेली प्रतमां लेखकना दोषथी जे जे नूलो दीगामां आवी ते सर्वनुं शुद्धिपत्र पण गाम श्रीथरादथी पारेख अबा मोतीचंदें करी मोकलेलुं ठे, ते प्रमाणे अहीं गापी मुक्यु ठे, तथापि ते शुद्धिपत्र फरी पाढुं प्रत साथे मेलववाने फुरसद न मलवाथी तपासवामां आव्युं नथी, तेथी तेमां पण बधी पूरेपूरी चुको दाखल थइ गयेली होय एम जणातुं नथी, माटे एवी नूलो संबधि जे कांइ खामीयो रहेली आ ग्रंथने विषे वांचक जनोने दृष्टिगोचर थाय तो ते साहेबोये अमारा उपर कृपादृष्टी राखीने सुधारी वांचवी अमे आ ग्रंथमां रही गयेली नूलोसंबंधि थयेलो अमारो अपराध तथा बीजोपण जेकांइ श्रीजिनवचनविरुद्ध आ ग्रंथमां लखाण कर्युं होय ते सर्वनुं मिच्छाडकडं सर्व श्रीसंघनी साथे करीये ठैये

तथा ए ग्रंथमां जे वक्रजडादि उपर दृष्टांतोनी कथाउ आवेली ठे, तेमज बीजा पण घणा स्थले कथाउ आवेली ठे, तेमां जुदी जुदी प्रतोनी लखावट उपरथी फेरफार दीगामां आवशे माटे प्रथम कल्पसूत्र सांजलनारा साहेबोये कोइ जगायें कथा विस्तारपूर्वक सांजलेली होय अने ए ग्रंथमां संक्षेपथी लखेली होय, अथवा प्रथम कोइ जगायें संक्षेपथी कथा सांजलेली होय अने आ जगायें विस्तारपूर्वक लखेली होय अथवा ते कथाना संबंधमां पण कोइ वार्त्ता कोइक प्रतमां एक रीते लखेली होय अने तेज वार्त्ता वली बीजी प्रतमां बीजी रीतें लखेली होय तो, ते सर्व जुदी जुदी प्रतो जुदा जुदा साधुउना हाथथी बनावेली होवाथी तेमज जुदा जुदा माणसोना हाथे लखायाथी परंपराये एवा प्रकारनो फेरफार चाल्योज आवे ठे, माटे तेवा तेवा फेरफार जोइने कोइ वांचनारे अथवा सांजलनारे एमां नूल थयेली ठे एम समजीने मनमां संशय आणवो नही नि संदेह थइने एकाग्रचित्ते सांजलवु

वली अमो सर्व श्राव   गाइउने मह्योटा उत्साहपूर्वक प्रार्थना करीये ठैयें के, आ कल्प सूत्रनी जो वधारे प्रतो न राखी शकाय तोपण प्रत्येक श्रावके एकेकी प्रत तो पोतानी पासे अवश्य राखवी केमके? आ पुस्तकमां मह्या मांगलिकनां करनारा एवा चौद सुपन जे श्रीतीर्थंकर नगवाननी मातानें जे वखते नगवान् कूखमां आवी उपजे ठे, ते वखते दीठामा आवे ठे, ते चौदे सुपनाना चित्रो घणांज सुशोनित बनावी दाखल करेला ठे, तेमज वली प्रत्येक वर्षमां पजोसणपर्वना आठ दिवस लगण प्रत्येक श्रावक धंधो रोजगार सर्व मूकी देइने धर्मसबधि जे जे शुनक्रियाउ नगवाने कहेली ठे ते करवामां तत्पर रहे ठे, तो तेमने तेवा मह्योटा दिवसोमां यद्यपि गुरु पासेथी सांनलवानी जोगवाइ मलती होय तो पण फरी पोताने घेर आवी अवगाही लेवाने माटे प्रत राखवानी अवश्यकता ठे, तेमज जेमने गुर्वादिक पासे सांनलवानी जोगवाइ न मले ते साहेबोने तो जरूर वांचवा माटे राखवीज जोइये अमो तो जैन बधुउने एवी नलामण करीये ठैये, के प्रत्येक श्रावके वधाय पुस्तको लखावी तेनो संग्रह करी राखवो जोइये जो कदापि तेटलुं द्रव्य खरचवाने सामर्थ्य नही होय तो मात्र आजना समयमां ठापाखानानी कलाथी लखेला पुस्तकोना किमतना पचाशमा हिस्सा जेटली किमते सारा शोधेला अने लखेली प्रतो करतां हजार दरजे चडतां एवा पुस्तको मली आवे ठे तेटला तो जरूर पोताना घरमा राखवाज जोइये, पण आपणने वांचतां तो आवडतु नथी माटे फोकट पुस्तक राखीने शु करीये? नकामा पडी रहशे, आपणथी सचवाय पण नही, उलटी ज्ञाननी आशातना थाय, वली कागलो उपर नकामा पैशा कोण खरचे? कागलोतो काले शडी जाशे एवा एवा अनंत ससारने वधारनारा कुविकल्प क

रीने पोते पण ज्ञाननो संग्रह न करवो, अने बीजा वली पांच पचाशने उपर लख्या मुजब जुवा उपदेश आपीने तेमने पण ज्ञाननो संग्रह करवा न देवो एवी रीतना उपदेशकर्त्ता श्रावक मंडलमां आज वर्त्तमान काळनेविषे हजारो माणसो दीवामां आवे छे, एवा असभ्य शास्त्रथी हास्य विनोदमां पुस्तकोनो संग्रह न करवा माटे लोकोने उपदेश करवाथी धर्मरूप प्रासादनो पायो त्रोडी नखाय छे, तेथी तेमने अनंतकाल पर्यंत नरक निगोदादिना दुःख सहन करवा पडशे, ते जोइ मने तेमनी उपर करुणा आवे छे, जे आ बिचारा मोहरूपी मदिरानुं पान करी मदोन्मत्त थइ मायाजालमां फसी पडेला मदिरानी छाकमां आवीने पोताने भावे तेम बक्यां करे छे, पण ते धर्मरूप धन साचवी राखवाने माटे मंजूषासमान जे धर्मपुस्तको छे तेनो नाश करवानो मजबुत उपाय बतावे छे, तेथी आगल एना कटुक विपाक भोगववा पडशे माटे तेम न थाय तो सारुं ए माटे तेमने सावधान करवा सारु कहुं छुं के एवा असभ्य अने परभवे महाकलहकारी दुःखोने उत्पन्न करनारा उपदेशो करवामां हवे तमारे सावचेत रहेवु जोइये एवो उपदेश तमारे मात्र वचनथी करवानोज बंध राखवु एटलुंज नही परतु तमे तमारा मनमां एवो उपदेश करवानी इच्छा पण कदापि काले राखशो नही एथी धर्मरूप वृक्षनुं उन्मूलन थइ जाय छे कारण के पुस्तको भणवा वांचवाथीज धर्मनुं अथवा अधर्मनुं जाणपणुं थाय छे, तेनी तमे निर्भर्त्सना करो छो तो पछी बीजो एवो कयो पदार्थ छे के जेना आधारे तमाराथी धर्मनुं स्वरूप जाणवु जशे?

तेमां वली आटलो विशेष छे जे केटला एक साधारण गरिब अवस्थाने प्राप्त थयेला स्वल्पद्रव्यवान् जे होय छे ते तो पोतानी यथाशक्तिये ज्ञान पुस्तको उपर प्रतिवर्षे पाच रुपैया

खरच करता दीठामां आवे , परंतु जे द्रव्यवान् छे तेमने तो जाणे घोर निद्रा आवी गये ली होय एवी स्थितिमां रह्या थका ज्ञान ते वली शु? अने पुस्तक ते शु? एटलुं पण जाणता नथी तो पछी पुस्तको खरीद करी पोते लइ वांचवा, बीजा जे निर्द्धन जनो होय तेमने वांचवाने माटे मफत आपवा, ज्ञान भंडाराउ करी राखवा, एवी वात तो जाणेज क्यांथी?

माटे जे प्रमाणे नवा नवा श्री जिनमंदिरो कराववामां द्रव्य खरचवु तेमां महोटो लाभ छे, ते वातो पण सर्व शास्त्रना आधारथी जाणी जाय छे तो तेवा शास्त्रोनो संग्रह करी तेना महोटा महोटा भंडारा कराववा तेमां तो वली देरासरो कराववा करतां पण अनंतगुणो लाभ छे, तेम छतां ते वातमां आशातनादिक दूषण काहाडी देखाडवा अने कोइनु मन भगाववु एना सरखु महोटामा महोटु पाप वली बीजु कोइ नथी जो ज्ञाननो संग्रह करवामा आशातना लागशे एवो बोलता तमारी जीभ अटकती नथी तो वली देरासर कराववामा पण कोइ अन्यदर्शनी आवी थुंक प्रमुख नाखशे तो तेनी पण आशातना थाशे माटे ते पण न करवा जोइये एम कहेवामां पण कोइ वखत तमे भर राखशो नही? ते विचारी जो जो माटे कोइना आगल कुतर्क करी कल्पित वातो बनावीने कहेवाना कामथी दूर रहेजो परमेश्वरेतो श्रीजिनचैत्य नवीन कराववा, पोषध शालाउ नवीन कराववी, अने पुस्तकोना नवा नवा भंडारो कराववा ए त्रण पुण्यक्षेत्र थया, तथा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका ए चतुर्विध श्रीसंघनुं वैयावच्च करवु, ए प्रमाणे ए सातक्षेत्र पुण्यना छे, ते शुभक्षेत्रोमां श्रावके पोतानु न्यायोपार्जित द्रव्य खरचवु एवी रीते आगमोमां कहेलु छे, तो ए सात क्षेत्रमाहेज ज्ञानना भंडारा कराववा, ज्ञान पुस्तकोनो संग्रह पोते करवो, बीजाने कराववानो उपदेश देवो,

जे करतो होय तेने अनुमोदन आपवु, जे ज्ञानपुस्तकोनी वृद्धि करतो होय, जे ज्ञान जणवामां वांचवामां, जणाववामां पोतानो काळ निर्गमन करतो होय, तथा अन्यजनोने पण एज उपदेश करतो होय ते पुरुष सर्वमांहे शिरोमणी समजवो, तथा ज्ञानने पोते जणवु, बीजा जे जणता होय तेमने पोताथी बनतु यथाशक्तिये आश्रय आपवु, जणनार वाचनारने पुस्तको लइ आपवा तेने अन्न वस्त्रादिक आपवानुं सहाय देवुं, इत्यादिक ज्ञानवृद्धि थवामां जे श्रावकें द्रव्य खरचवुं ते पूर्वे कहेला सात पुण्यक्षेत्रो मांहेलुं मुख्य क्षेत्र छे, तो तेवा शुभस्थानकमां कोइ अजाणना कहेवाथी अथवा देश काळने अनुमाने घणा पुरुषोमां मान नही मळे,एवा हेतुथी अथवा लोभदशाथी पोताने द्रव्य खरचवानो संकल्प न थाय ते तो चूको, परतु पोते सारासार विचारमां निपुण न होय तो पण माह्यो बनी पूछवा आवनारने, अथवा स्वभावे चार गपा मारनार वेश होय तेमनी पासे वातो करतां जो पुस्तकसंग्रह करवानी वात निकळेतो कहेके जाइ आ काममां आशातना बहु लागे छे, आ तो महापापनुं काम छे, एमांतो प्राणी रुबी जाय, एथीतो सातमे नरके जवु पडे, अथवा ए पुस्तकोना संग्रह करनारा, छपावी प्रसिद्ध करनारा, एने अनुमोदन देनारा, एनी प्रशंसा करनारा ए सर्व नरकना अधिकारी थाय छे, ए महोटी आशातनाउ करे छे, ए अनत संसार जटकशे, एनो क्यारे पण छूटको थवानो नथी, एवी एवी जे चार वातो पोताने बोलतां आवडती होय, ते बोलीने बीजा प्राणीउने पण पुण्यक्षेत्रमां द्रव्य खरचवाने नाकारो करे, तेथी तेमनुं पण मन उतरी जाय, वळी ते पण बीजा दशजणनी पासे जइ एवी वातो करे, तेथी पुस्तकनी वृद्धि करवा उपर कोइनुं पण चित्त लागे नही. तो एवा असत्योपदेश करवाथी शुं तेने फायेदो थाय

छे? एथी तो उलटुं धर्मना नास्तिपणानो संभव थइ जाय कारण के कोइपण धर्मनी प्रवृत्ति करवी अने ते धर्मने म्होटा पाया उपर लाववो, तथा ते धर्मनुं महत्त्व वधारवुं तथा ते धर्मने सर्वदर्शननी वचमा दीप्त करीने प्रकाशित करी राखवुं तथा सर्व दर्शनमां मुख्य अने श्रेयस्कारी शिरोमणी करवो, तथा घणा जनो आपणा धर्मने मान्य करे, घणा जनो आपणा धर्ममां आवी भळे, घणा जनो आपणा धर्मने अंगीकार करे, घणा जनो आपणा धर्मनी प्रशंसा करे, इत्यादि धर्मनी वृद्धि करवानुं मुख्य कारणतो ते धर्मसंबंधि धर्मपुस्तकोज छे, अने बीजुं ते धर्ममां म्होटा विद्वानोनी संख्या म्होटी होवी जोइये ते विद्वानो थवानो मुख्यआधार पण धर्मपुस्तकोज छे,तो तेवा धर्मपुस्तकोनी अवगणना करी,तेने पडतो मूकी,तेनी वृद्धि करतो होय ते पुरुषने सर्व पुरुषोमां शिरोमणी गणवो जोइये ते तो दूर रह्युं पण उलटुं तेने पतित करवा माटे तेना उपर आशातना लागवाना दूषणोनो आरोप करी तेनी निंदा करवी ए शुं थोडी सरमनी वात छे? एथी जो पोताना धर्मनुं निर्मूलपणुं न थाय तो वळी धर्म गमाववाना बीजा एथी वधारे साधनो कोण छे वारु?

वास्तविक जोतां तो उक्त पुरुषो जे छे तेज पोते पोताना धर्मने दूषित करी पोताना धर्मरूप प्रासादना थंभभूत एवा जे धर्मपुस्तको तेनो जडा मूळथी नाश करवानो जाणे बीडोज लइ बेठेला छे एवा प्राणीउनी गणनामां तेमने गणवा माटे कांइ पण हरकत देखाती नथी, ते पुरुषो, खरेखरा स्वधर्मनिंदक, स्वधर्मभ्रष्ट, स्वधर्मनाश करनारा, अविवेकी, अनंतो काळपर्यंत अपारावार संसारमां परिभ्रमण करनारा, स्वधर्मद्वेषी, ज्ञानद्वेषी, ज्ञाननी हेलना करनारा, धर्मध्वंसक, क्रूरपरिणामवाळा, श्रद्धारहित, विनयरहित, एवां जाणवां

केमके जेणे ज्ञाननो विनय न कर्यो ते देव गुरुनो विनय पण क्यांथी करे ?

प्रस्तुत ज्ञान ज्ञानीनां निंदक जनोने आटलो पण विवेक नथी के जमणवार करी न्यातो जमाडी, सातमो पापस्थानकजे अहंकार छे तेने धारण करी, जाणे कोइ नाचतो कूदतो होय तेवा गांडा जेवा आकारमां बनी जइ छकाय जीवोनो आरंभ करीने वली तेने पुष्ट करवा सारु अनुमोदन करे जे जूओ आ अमुक माणसे नातवरो कर्यो तेनां करतां मारुं जमण केवुं बनी आव्युं के तेवु आज दिवस पर्यंत कोईये करेलुं नथी एम घरोघर बाईयोना टोले टोला मलीने वातो करता हता माटे आपणने तो सहुयें वखाण्या, आपणे हवे खरचे वधी गया, आपणे महोटा थइ गया, एवीरीते विकारवंत थइने जाणे हुं धर्मिष्ठ महोटो ज्ञानी थइ गयो, अने हवे आवी कीर्त्ति थइ, तेथी माठी गतिये जावानी बीक मटी गइ परंतु ते एम समजतो नथी, के बुढायोना मरणादि पाछल जे नातवराकरी जमण करवां, अने खावा खवराववाथी राजी थवु, नाराजी थवुं, ए सर्व चाल भिखारी ब्राह्मणोना घरथी चालेली छे, पण श्रावकोना घरथी चालेली नथी एथी मात्र छकायनो आरंभ थाय ने अभिमान वधे ए वे कर्म शिवाय जो दान बुद्धिथी अनुकंपा लावीने गरीब दुखी भूखे मरतांने जमाडे तो तेथी शाता वेदनीय कर्म बांधी पुण्य उपार्जन करे नहीं कां आ भवे मान मल्युं एटलुंज फल समजवुं, अने पुस्तकोनुं दान देवाथी तो लाखो माणसोनां मननां परिणाम सुधरे, जेथी तेमनामांथी दुर्गुणो दूर थइ जाय, सद्गुणनी प्राप्ति थाय, धर्म पामीने धर्म मार्गमां प्रवृत्ति करे, तेथी देवादिकनी शुभगतियोनां सुख भोगवी परंपराये मोक्ष पामे वली दान आपनारने पण वधारे अहंकार न आवे अने सरलस्वभावी थको ते पण तरतज धर्म पामी

परंपराये मोक्ष पामे ए ज्ञानदानसमान बीजुं कोई पण उत्तम दान नथी सर्वदानोमां श्रेष्ठ दान ते ज्ञानज छे, पारमार्थिकपणे मोक्षनु साधन छे माटे जावथी अन्नयदान जे छे ते ज्ञाननुंज दान छे एम समजवु तो दूर रह्यु परंतु आ संसारमां रह्या थका मात्र साधारण नीति शास्त्रनु ज्ञानसंपादन करवाथी पण केटला अगणित फायेदाउ थाय छे, ते सर्व कोइ प्रत्यक्ष देखे छे, धर्म, विवेक, नीति, मर्यादा, महापण, चतुराइ, सन्यता, इत्यादि लक्षावधि सद्गुणोनु साधन ते ज्ञानज छे, आ नव, परनव बेहु नवे सुखदाइ छे, तो तेनु आराधन करवामां शु खोटु छे, आटलु पण ते समजता नथी!!!

वली केटला एक श्रावक नाइउ तो कोइने विवाहादि कार्योमां जमणवार आदिक करवा पडे छे, तेमने वासणोनो खप पडे माटे पोतानी महोटाइने वास्ते कोइ मागवा आवे तो तेने आपवा जोइये एवा हेतुथी केटलीएक जातना त्रांबा पितल वगैरे धातुना वासणोनो संग्रह करी राखे छे के जे बीजाने मागवा आपवाथी ते वासणो लइ जइ तेना उपर रसोइ करे तेमां छकायनो आरंन थाय छे, ते सर्व कोइ जाणे छे, वली ते लाडवा प्रमुख जमनारा मनुष्योने पण पारकी रसोइ खावाथी कोइ प्रकारनो गुण प्राप्त थतो नथी, मात्र खाइ पी मदोन्मत्त थइने विषय सेवनमां तत्पर थवा शिवाय बीजो कोइ विशेष फायदो थतो देखातो नथी अने पुस्तको लइ पोताने तथा बीजाउने वांचवा नणवाने माटे संग्रहरूपे राखेला होय तेनाथी वाचनार अथवा राखनार बेहुने कोइ प्रकारनो आरंन थतो देखातो नथी तथा विषयसेवनमां मदोन्मत्त थवाने बदले उलटो तेनाथी निवृत्त थवानो उपदेश मले, तेथी ते अकार्य करवाने बीहीतो रहे, एवा एवा अनेक प्रकारना फायदा थाय छे

एमज केटलाएक विवाहादिकमां वरराजाने पहेरवा माटे कोइ मागवा आवशे तो जरूर आपवा पडशे एवो सकल्प करीने नवनवा प्रकारना सोना रूपा हीरा मोती आदिकना आभूपणो घडावी राखे छे, तथा वस्त्रोना वागा सिवरावी राखे छे, तेम कोइने नणवा वांचवाने माटे ज्ञानना नमारा करी राखवामां शुं हरकत आवी नडे छे? पण एवी बुद्धि तो नाग्येज आवे

वली केटलाएक घरटी, कोशी, कोमाल, पावडा प्रमुख छकाय जीवोनी हिंसाना अधिकरणनो संग्रह करी राखे छे के कोइ मागवा आवशे तेने आपवा पडशे तो तेने वदले कोइ वाचवा सारु मागवा आवशे तेने आपवु पडशे ए हेतु माटे ज्ञाननो संग्रह करी राखवामां कांइ हरकत जणाती नथी, हरकत मात्र एटलीज छे के ज्ञानना संग्रहथी सद्गति प्राप्त थवानी परपरा चालु थाय छे, अने घरटी आदिकना संग्रहथी छकायनो आरम्भ थवाने लीधे दुर्गतिनी परपरा चालुज रहे ए विना बीजी कसी हरकत जोवामां आवती नथी

प्रस्तावनामां यद्यपि नियमतो एवोज छे के, जे ग्रंथनी प्रस्तावना होय ते ग्रंथनो सारांश देखाडवो जोइये, तेने पडतो मूकीने बीजी अन्य वातो लखेली छे, तथा प्रस्तावना पण एक न्हाना सरखा ग्रंथ जेटली लखाइ गयेली छे, तेमज उतावलथी लखवाने लीधे पुनरुक्ति पण घणा स्थले थयेली छे तेनुं कारण ए के आवातो जाहेर करवा माटे महारा अत करणमां हर हमेस इछा रहेती हती, परतु कोइ योग्य प्रसंग न मलवाथी एमांज लखी मूकीने माहारी इछा पूरण करी छे माटे जेमने सामान्य पणे विषय जोवानी अभिलाषा होय तेमने आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका वांचवाथी जाणवामां आवी जाशे, अने विशेष खप करनाराये आ ग्रंथने आद्यथी अत पर्यंत वांची जावु ए महारी प्रार्थना छे. अस्तु ॥

॥ अथ कल्पसूत्रबालावबोधस्य शुद्धीपत्रं प्रारभ्यते ॥

पत्रांक	पृष्ठांक	पङ्क्य०	अशुद्ध	शुद्ध	पत्रांक	पृष्ठांक	पङ्क्य०	अशुद्ध	शुद्ध
२३	२	१	महाकच्छ	महाशुक्र	११९	१	१६	वाठी	वीठी
२७	१	५	मीधो	धीगो	१३२	२	५	एधाए	एधाए
२७	२	१७	घमी	धडी	१३३	२	१६	लोखमना	लोह्खमना
३२	२	२	खामी	स्वामी	१३४	१	७	लोखम	लोह्खम
४३	१	९	ग्रथिल	ग्रथिल	१४२	२	६	कीधि	कीधो
५१	१	६	श्रृगार	शृगार	१५२	१	१०	मेघलीने	मेघमालीने
५८	१	१	ठाव्याआदिक	ठाटवादिक	१६०	१	१	नाख्यो	नाख्या
५८	१	९	जासूसना	जासूलना	१७०	२	१४	नमि	नूमि
६२	२	१८	कूपापडो	पापडोकू	१७१	१	६	कुमी	चडी
६३	२	१२	वाघुं	वांधा	१७३	१	१४	अगथफूलना	अगंधनकुल०
७४	१	२	कूर्मे	कुर्मे	१८६	२	१५	घणोफेरवो	घडोफेरवो
७४	१	२	रीदसी	रीह्शी	२१८	२	१२	गेवरीनी	घेवरनी
८२	१	३	केठलीएक	केटलीएक		२	१०	गेवरीया	घेवरीया
८६	१	१२	वरफरी	फरफरी	२४८	२	१	तेनेयं	तैरियं
९१	१	६	फूकरा	फूकारा	२४८	२	२	योगोघहनं	योगोद्वहन
१०४	२	१८	कोलो	कोली	२४८	२	२	युंका	मुंक्का

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका.

अनुक्रमांक	विषयोनां नाम	पृष्ठांक
१	ग्रंथनी रचना करवानो हेतु	१
२	श्रीपर्युषणपर्वने विषे ग्रंथ वांचवानो विधि	१
३	श्रीपर्युषणपर्व तथा कल्पसूत्र अने श्रमणसंघनुं महत्त्व	१
४	दश प्रकारे साधुनो आचार छे, तेनुं वर्णन	२
५	दश प्रकारना आचार मांहेला कया कया तीर्थंकरनी वारे कया कया आचार होय तेमनुं आशंका तथा समाधानपूर्वक वर्णन	६
६	ऋजुजड, वक्रजड अने ऋजुप्राज्ञ एवा त्रण प्रकारना साधुउ आश्रयी जुदा जुदा दृष्टांतो कह्या छे	७
७	दश प्रकारनो साधुने आचार रूप धर्म उपर वैद्यनो दृष्टांत	१०
८	चोमासुं पुरुं थया पछी पण तेज गाममां साधुने रहेवु पडे तेना कारणो तथा चोमासुं पुरु थयानी अगाउ साधुने त्यांथी विहार करी जपुपडे तेनां कारणो	११
९	जे गामे साधु चोमासुं रहे तिहां उत्कृष्ट तेर गुण अने जघन्य चारगुण जोवा जोइयें तेनां नाम	११
१०	पंजोसणपर्वनी उत्कृष्टता देखाडवामाटें एकतालीश पदार्थनी उपमा आपीते नाम	१२
११	अन्यदर्शनमां पण ऋषिपंचमी माननीय छे तेनी कथा	१२
१२	अष्टम तप करी कल्पसूत्र सांभळवु ते उपर नागकेतुनी कथा. ..	१३

अनुक्रमांक	विषयोनां नाम	पृष्ठांक.
१३	चौद पूर्वनां नाम तथा तेटलु शास्त्र लखवा उपर मसी केटली जोइयें तेनु प्रमाण	१५
१४	कल्पसूत्र वांचवानी चाल पूर्वे अने पाछल केवा प्रकारनी हती तथा तेना संबंधे आवेली वडनगरना ध्रुवसेनराजानी कथा	१६
१५	ए सूत्र वांचवाथी पाप जाय ते उपर दोसीना पुत्रनी कथा	१६
१६	पजोसणमा साधुयें तथा श्रावके केटला धर्म कार्य करवा ते कह्या छे	१७
१७	मंगल रूप नवकार मंत्र अर्थसहित	१८
१८	श्रीमहावीर स्वामीना पांच कल्याणक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमा थया	१८
१९	अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल आश्रयी छ आरानु संक्षेप व्याख्यान	१८
२०	श्रीऋषभदेवजीये कहेला श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश भव संक्षेपथी	२०
२१	देवानंदायें चौद सुपन दीठा तेने ऋषभदत्ते सामान्यथी फल कह्यु	२५
२२	बत्रीश लक्षणनां नाम तथा वीजा पण सामुद्रिक शास्त्रने अनुसारे हाथ पग प्रमुखनी रेखाउ आश्रयी फलाफल कहेलां छे	२६
२३	शक्रेन्द्रनां पूर्वभव आश्रयी कार्तिक शेठनी कथा तथा इंद्रनु महत्त्व	२८
२४	शक्रेंद्रे भगवाननी स्तवना करी तेमा नमुत्थुणनो अर्थ तथा तेनी अंतर्गत मेघ कुमारनी कथा,इहां प्रथम व्याख्यान पण समाप्त थयेलु छे	३०
२५	दश अछेरानी दश कथाउ वीरभगवान ब्राह्मणना कुलमां उपना ते आश्रयी	३२
२६	इंद्र महाराजे पोतानो आचार विचारी देवानंदानी कुखथी गर्भ अपहरीने त्रि	

अनुक्रमांक	विपयोनां नाम	प्रष्ठांक
	शलानी कुखे संक्रमाववानो आदेश हरणीगमेषी देवने आप्यो तेमां त्रिशला देवी अने देवानंदाना पूर्वनव कह्या छे एमां अन्यदर्शनीउमां नागवतना दश मस्कंधमध्ये वेलदेवना हरण थवानी कथा पण प्रसंगे आवी छे	४६
२७	हरणीगमेषी गर्न पालटन करवा गया तिहां चंद्रादि चारगतिनुं प्रमाण	४७
२८	अपहरती वखत नगवान शुं जाणे ने शुं न जाणे ते आश्रयी	४९
२९	त्रिशलाराणीयें जे घरमां सुपन दीठा ते घरनुं वर्णन	४९
३०	त्रिशला राणीये चौद सुपन दीठा तेनो विस्तार सहित नाम तेमनी अंतरगत चार सुपनना वर्णन सुधी बीजुं व्याख्यान पूर्ण थयुं छे	५०
३१	सिद्धार्थ राजाये त्रिशला राणीने स्वप्नानुं फल सामान्यथी कह्यु	५५
३२	प्रनातें राजाये कचेरी शणगारी पोतें मल्लयुद्ध करी, तैलमर्दन कराव्युं, स्नान कर्युं, आनूषण पहेर्या, मांमवीया प्रमुख त्रेशठ प्रकारना पदवी धरावनाराउनो परिकर छे जेमने माटे तेनां नाम कह्या ते त्रेशठमांथी सीमसेढाना वांधाने पतावनार जे सिंधी पालक थाय छे, तेनुं स्वरूप बतावबा माटे कहेली कथा	५८
३३	आठ प्रकारना सुपन पाठकोनुं वर्णन	६१
३४	सुपनपाठकोये सर्वजणे अग्रेसरन थवामाटे कहेली पांचसो सुनटोनी कथा.	६२
३५	सुपनपाठको सिद्धार्थ राजा पासें आव्या इहां त्रीजुं व्याख्यान पुरुं थयुं	६३
३६	सुपन पाठकोयें कहेला नव प्रकारना स्वप्ननुं वर्णन तथा फल	६४

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम	पृष्ठांक
३७	त्रिशला राणीयें चौद सुपन दीठां तेना फल	६५
३८	अरिहंत, चक्रवर्त्यादिकनी माता केटला केटला सुपन देखे इत्यादि तथा त्रीश सारा अने बेंतालीश माठा मली बहोतेर सुपनानां नाम	६५
३९	सुपन दीठा पछी कोनी आगल कहेवु अथवा नही कहेवु ते संबंधि कथा	६६
४०	बीजा पण केटलाक सुपनोनां फल तथा चौद सुपननुं समुच्चय फल	६८
४१	सिद्धार्थ राजायें सुसिद्धिना वचन कह्या ते उपर गांगातेलीनी कथा कही छे	६९
४२	इन्द्रना हुकमथी देवोये सिद्धार्थराजाने घेर करेली धनादिकनी वृष्टिउ	७१
४३	जगवान मातानी कूखमां निश्चल रह्या, हाल्या चाल्या नही, तेथी थयेलुं माताने छुःख, पश्चात्ताप तथा फरी जगवाने अवधिज्ञाने मावित्रोनुं छुःख जाणयुं ते उपर गुणने बदले अवगुण करवा आश्रयी कहेली कथा, तथा फरी गर्भे हाल्यो तेथी माताने उत्पन्न थयेला आनंदनु वर्णन	७२
४४	गर्भप्रतिपालन करवा माटे त्रिशला माताजी केवा आहारादि करे छे ते	७५
४५	मोला पूरण करवा आश्रयी इंद्र महाराज साथे थयेलु युद्ध	७६
४६	वीर जगवाननु जन्म, चोवीश तीर्थंकरनो गर्भकाल, जन्मकुंडली, चोथुं व्याख्यान	७६
४७	जगवान जन्म्या ते वखते देवोनु आगमन, छपन्नदिक्कुमारीये करेलो महोत्सव	७७
४८	सौधर्मादि चोशठ इंद्रे करेलो महोत्सव	७९
४९	जगवाने इंद्रनी शंका निवारवा माटे अंगुठे करी मेरु चांप्यो इत्यादि	८१

विषयोनां नाम

अनुक्रमांक	विषयोनां नाम	पृष्ठांक
५०	भगवानना जन्मनी रात्रे सिद्धार्थराजाने घेर सोना रूपादिनी वृष्टि थइ	८२
५१	सिद्धार्थराजाये तोल मापादि वधारीने महोत्सवादि कर्यो	८३
५२	भगवाननुं नाम स्थापवामाटे भोजन कराव्या तेनां विस्तारपूर्वक नाम	८५
५३	भगवानना गुण रूप वलादिनुं वर्णन तथा आमलि क्रीडा अने नीशाल गरणुं	९०
५४	इन्द्र महाराजना पूछवाथी भगवानें कहेला जनेना अर्थ	९३
५५	भगवाननो विवाह,भगवानना मातपितादिनां जुदां जुदां नाम	९६
५६	भगवानना मातपिता देवलोक गया पछी भगवाने गर्भमां करेला अभिग्रहने याद कर्यो, लोकांतिक देवो आव्या, फरी नंदीवर्द्धननां अनुरोधे वे वर्ष पर्यंत गृहस्था वासे रह्या, वरषीदान आप्युं	९७
५७	भगवाने दीक्षा लेती वखते नंदीवर्द्धने करेलो महोत्सव पांचमुं व्याख्यान समाप्त	९९
५८	दीक्षा लीधा पछी कुमारगामनी बाहेर हालीये करेलो उपसर्ग	१०२
५९	कोल्लाग सन्निवेसे बहुलनामा ब्राह्मणने घरे पहेलुं पारणुं कर्युं	१०३
६०	भगवानना शरीरे सुगंधी लेप हतुं तेथी मंखी जीवोये करेलो उपद्रव	१०३
६१	भगवान दुइज्जंत नामा तापसने आश्रमे आव्या	१०४
६२	भगवान चोमासुं रह्या तिहां यक्षे करेलो उपद्रव, बलदनी कथा	१०४
६३	भगवाने निद्रामां पाछली रात्रे तालपिशाचादि दश सुपन दीठा	१०५
६४	अच्छंदक नामा नैमित्तिके भगवाननी इर्ष्या करी ते आश्चर्य कथा	१०६

अनुक्रमांक	विषयोनां नाम	पृष्ठांक

७८ भस्मग्रहाधिकार, भगवानना परिवारनी संख्या, तथा भगवाननुं निर्वाण अहीं सुधी छठ्ठु व्याख्यान संपूर्ण थयुं, अने महावीरचरित्र पण सपूर्ण थयुं १४३
७९ श्रीपार्श्वनाथस्वामीना दश भवनो अधिकार १४६
८० श्रीपार्श्वनाथनुं जन्म, तथा विवाह तथा कमठ तापसनो अधिकार इत्यादि १४९
८१ पार्श्वनाथ भगवाने दीक्षा लीधी, पछी कलिकुंड तीर्थ थयुं तेनी कथा, तथा कूकडेसर तीर्थ थयुं तेनी कथा, तथा भगवानने कमठे उपसर्ग कर्या तिहां अहिछत्रा नगरी थइ तेनी कथा, तथा केवलज्ञान उपज्युं तथा परिवारनी संख्या निर्वाण १५०
८२ श्रीनेमीश्वर भगवाननां पांच कल्याणिक यादवो अने पांडवोनी कथा १५३
८३ चोवीश तीर्थंकरनां आंतरा कहीने सातमुं व्याख्यान समाप्त कर्युं छे १७४
८४ श्रीऋषभदेव भगवान्‌ना तेर भव तथा सात कुलघर थया, तेनी कथाउ १७६
८५ श्रीऋषभदेवनुं जन्म, नामस्थापन, बाल्यावस्थानुं वर्णन, तीर्थंकरोने स्तनपान करवानी अने आहार करवानी रीति, भगवाननो विवाह तथा पुत्र पुत्रीनो परिवार १८३
८६ राज्याभिषेक, अयोध्यानी रचना, दीक्षा, युगलीयाने आहारनी कला सीखवी १८४
८७ अढारलिपि, स्त्रीनी चोशठ कला, पुरुषनी बहोतेर कला तथा भगवाने चोटलीनी शिखा इन्द्रमहाराजना कहेवा उपरथी राखी इत्यादि १८६
८८ नमि विनमिनी कथा, श्रेयांसे पारणुं कराव्यु तिहां बेहु हाथनो थयेलो विसंवाद १८८
८९ भगवानने केवलज्ञान उपनुं, मरुदेवीजी पण केवल पाम्या तेनुं वर्णन १९४

अनुक्रमांक	शेनां नाम	पृष्ठांक
९०	भरतबाहुबलनुं युद्ध, बाहुबले दीक्षा लीधी, भरतराजा अष्टापदें गया	१९७
९१	श्रीऋषभदेवजीनु परिवार, निर्वाणमहोत्सव, आम्मु व्याख्यान समाप्त थयुं	२०१
९२	स्थविरावली, श्रीवीरना अगीआर गणधर सर्वथि नवगछनी वात	२०३
९३	सुधर्मस्वामी,जंबुस्वामी,प्रभवस्वामी,सय्यंभवसूरि तथा यशोभद्रसूरि एमना चरित्रो	२०४
९४	संभूतिविजयजी अने भद्रबाहु स्वामिना चरित्रो, वराहमिहिरनी कथा सहित	२०९
९५	श्रीथूलिभद्रजीनुं चरित्र, श्रीआर्यमहागिरिजी तथा आर्यसुहस्ति तदंतर्गत सम्प्रतिराजा तथा आर्यवज्रसूरि अने आर्य वज्रसेन सूरिनी कथा	२११
९६	आर्यसिंहगिरिनी कथा तथा श्रीवज्रस्वामीनी कथा	२१७
९७	रोहगुप्ताचार्यना गुप्तनामा शिष्य जेनाथी त्रैराशिक मत निकट्युं तेनी कथा	२२१
९८	प्रियग्रथसूरि तथा पांचशे तापसना प्रतिबोधक आर्यसमितसूरिनी कथा	२२३
९९	श्रीआर्यरक्षित सूरिनी कथा एमा कांइक वज्रस्वामीनी कथा पण छे	२२५
१००	वृद्धवादी तथा तेमना शिष्य सिद्धसेनदिवाकरनो संक्षेपथी संबंध.	२२८
१०१	त्रण कालिकाचार्य तथा त्रण हरिभद्रसूरिनी कथा	२२८
१०२	अठावीश प्रकारे साधुओनी समाचारी,चोशठ आलावे करी कथा सहित कही छे	२३०
१०३	इति नवम व्याख्यान समाप्तम्	२४८

साधु
१० शिष्य
श्री विजयराजेन्द्रसूरी
साध्वीओ ६
शिष्यणी


साभलनारा
स्वस्तिक
काढामेछे
साभलनारानी सभा

॥ॐश्रीशांतिनाथाय नम ॥अथ कल्प सूत्रस्य बालावबोध प्रारंन ॥प्रथम ग्रंथकर्त्ता आ ग्रथनी रचना करवानो हेतु कहे छे श्रीजिनशासननें विषे सर्व पर्वमांहे शिरोमणि श्रीपर्यूषण पर्व छे ते पर्वना दिवसोमा नगर नगरने विषे कल्पसूत्र वचायछे पण योग वहन करनारा साधु मुनि राजनेज सूत्र वांचवानो अधिकार श्रीतीर्थंकर नगवाने दीधो छे बीजा कोइथी सूत्रनी व्याख्या थाय नही माटे तेवा मुनिराजोनुं आगमन सर्वस्थलें होतुं नथी तेथी जे गाममां साधुमहाराज विराजमान न होय ते गाम निवासी श्रावकोनें कल्पसूत्र श्रवण करवानो अंतराय पडे छे ते अंतराय दूर करवानें वास्ते जेम पूर्वाचार्योयें लोकोपकारने अर्थे पूर्वे अनेक प्रकरणोनी रचना करेली छे तथा वर्त्तमान कालमां पण करे छे ते प्रकरण पण सूत्रोना अर्थरुपज छे अने तेनुं पठन पाठन चतुर्विध श्रीसंघ करे छे तेम हुं पण श्रीकल्पसूत्रना बालावबोधने प्रकरण रूपें बनावुं छुं के जें ग्रंथ साधु, साधवी श्रावक अने श्राविका मली चारे प्रकारना श्रीसंघने वांचवाना उपयोगमां आवे केमके ए ग्रंथ पण सूत्रनो अर्थ रूप होवाथी प्रकरण सद्दश समजवो ॥ १ ॥ ॥ हवे श्रीपर्यूषण पर्वने विषे ए ग्रंथ वांचवानो विधि कहेछे जेम जे शहेरमां श्रीमुनिमहाराज चोमासुं रह्या होय अने ते गामना श्रावको एकठा थइ साधुजी पासेंथी सूत्रनी पोथी मागी लइ आवीनें एक श्रावकना घरमां राखे तिहां रात्रि जागरण करे पछी बीजे दिवसें श्रावक श्राविका एकठां थइने एक कुंआरा छोकरानें अखोट वस्त्र पहेरावी हाथी उपर बेसाडीने अथवा अश्वप्रमुख कोइ उत्तम वाहन उपर बेसाडी ते पोथी एक थालमां राखी ते थाल ते पहेला छोकराना हाथमां आपी सर्वेने बदाम, साकर पतासा आदिकनी प्रभावना करी वाजते गाजते महोटा महोत्सव पूर्वक उपाशरे आ

वीनें ते पुस्तक गुरुना हाथमां आपे गुरु वांचना करे ते सर्व श्रीसंघ सांभले अने गुरु आगल फलादिक राखे छे ॥ तेम आ पुस्तक पण जे श्रावकादिकनी पासें होय तेनी पासेंथी मागी लावीने पछे ठेरावेला बीजा कोइ श्रावकने घेर लइ जइ तिहां रात्रि जागरण करी पछी बीजे दिवसे सर्व संघ मली पूर्वोक्त रीतें महोटा महोत्सव पूर्वक पौषधशालामां किंवा उपाश्रयमां अथवा कोइ श्रावकने घेर जिहां सामायिकादिक करवानी कोइ स्वछ निर्मल जगा होय ते स्थानके अथवा बीजी कोइ जीवादि उपद्रव रहित जगा होय के जिहां सर्वसंघें मली वांचवानो विचार कर्यो होय तेवी जगाने यथाशक्तियें शोभावी राखी होय तिहां आवीनें ज्ञान भक्ति पूर्वक घणाज यत्नथी सर्व प्रकारनी अशातना टाली पोथी कोइ विवेकी सुज्ञ श्रावकना हाथमां आपीने वचाववी अने बीजा सर्वजनोये प्रमाद, निद्रा, विकथादिकनो त्याग करी विनय पूर्वक त्यां बेसीनें एकाग्रचित्तें सांभलवी ॥ २ ॥ ॥ हवे श्रीपर्यूषण पर्व तथा कल्पसूत्र अने श्रमणसंघ एमनुं महत्व कहे छे ॥ श्लोक॥नैतत्पर्वसमं पर्व,नचकल्पसमं श्रुतं॥ नधार्मिकसमः संघ, स्त्रिरत्नानि जगत्त्रये॥१॥ अर्थ ॥आ जगतने विषे दीपालिकादिक अनेक प्रकारना लौकिक पर्व छे तथा चोमासी, श्रीतीर्थंकरदेवना पांच कल्याणिक, अष्टमी, पक्खिका अने तीर्थ यात्रादिक अनेक पुण्य पर्व छे ते सर्व लोकोत्तर उत्तम पर्व छे ए सहु पर्वने विषे शिरोमणि चिंतामणि रत्न सदृश ज्येष्ट एवुं सांवत्सरिक पर्व छे ए जेम सांवत्सरिक पर्व समान बीजुं कोइ पर्व नथी तेम कल्प सूत्र समान बीजुं कोइ सूत्र पण नथी तथा चतुर्विध श्रीसंघ मांहे श्रीसाधुमुनिराजना संघ समुदायसमान बीजो संघ पण कोइ नथी एटले सर्व पर्वमांहे सर्वोत्तम पजोसण पर्व छे तेने विषे कल्पसूत्र वचाय ते पण एकादशांगादि सर्व सूत्रमां उत्तम छे तेम कल्पसूत्रना वांचना

नगवान तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधु तो श्वेतमानोपेत जीर्णप्राय वस्त्रने धारण करे तेमां ढुंटीथी चार आंगुल नीचो अने गुदाथी चार आंगुल ऊचो एवो साडा त्रण हाथनो चलोटो राखे तथा साडाचार हाथनो कपडो राखे तथा पोताना आंगुल प्रमाण एक वेतने चार आ गुलनी मुहपत्ति राखे एम अर्द्ध शरीर उघाडुं अने अर्द्ध शरीर ढांक्युं राखे एवीरीते पहेरेला वस्त्र ते अण पहिस्यां जेवां समजवां माटे तेने अचैलक कहीये ते ऊपर दृष्टांत कहे छे जेम कोइ एक पुरुषे धोतीया बनावनारने कह्यु जे महारा धोतीयां ताकीदथी आप केमके हुं नागो फरुं छुं एवु वचन व्यवहारथी कह्यु हवे ते पुरुषे जूना वस्त्रनुं पोतीयुं पहेर्युं छे तोपण नागो फरुंछुं एम कह्यु वली बीजुं दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक पुरुष पोतीयुं पहेरीने नदी ऊतर्यो तेने कोइ एकें पुछ्युं के नाइ तुं नदी शीरीते ऊतर्यो तेवारे तेणे जवाब आप्यो के हुं नागो थइने नदी ऊतर्यो वली त्रीजुं दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक डोसी जूना वस्त्र पहेरी वणकरनी पासे जइ कहेवा लागी के अरे नाइ महारा वस्त्र तैयार थयां होयतो मने आप हुं नागी फरुंछुं एवी रीतें साधुने पण जीर्णप्राय जूना श्वेतमानोपेत वस्त्र धारण करते छते पण वस्त्र रहित अचै लकज कहीये तेम आ चोवीसीमां श्रीऋषभ देव अने श्रीमहावीरनें जाजेरा एक वर्ष पछी इन्द्रदत्त वस्त्रने अपगमे जावजीव पर्यंत अचैलक पणुं हतुं अने चोवीसे तीर्थंकर आश्रयितो दी क्षा लेती वखतें इन्द्र महाराज तेमना खन्ना ऊपर देवदुष्य वस्त्र मूके ते जिहां सुधी खन्नाऊपर र हे तिहां सुधी सचैलक कहीये अने पडीगया पछी अचैलक कहीये तथा आ चोवीसीमां बीजा श्रीअजितनाथ नगवानथी मांडीने श्रीपार्श्वनाथ नगवान पर्यंतना बावीश तीर्थंकर मध्यना क हेवाय तेने देवदुष्य वस्त्र शेष बे घडी आयुष्य थाकतो रहे तिहां सुधी रहे छे माटे ते वस्त्रसहि

तने सचैलक कहीयें तथा ए बावीश तीर्थंकरना साधु पण ऋजु एटले शुनमन वाला सरल अने दक्ष एटले पंमित घणा माह्या चतुर होय माटे महोटा मूलनां पांच रंग वालां मानोपेत रहित एवां वस्त्र राखे तेथी एने सचैलक कहीये केमके एनें ए अचैलक कल्पनी कांइ मर्यादा नथी माटे एमने ए कल्प अनियत छे अने पहेला तथा छेला तीर्थंकरना साधुने ए कल्प नियत छे एटले निश्चय छे ए प्रथम अचैलक कल्प कह्यो ॥ १ ॥ ॥ हवे बीजो उद्देशिक कल्प कहेछे जे साधु अथवा साधवीने उद्देशि कर्यो एवो जे अहारादिक तेनें उद्देशिक आहारादिक कहीये तिहां मध्यना बावीश तीर्थंकरना वखतमां जे साधु अथवा साधवीने निमित्त कोइ गृहस्थे नात, पाणी, औषध भैषज्य, वस्त्र, पात्र निपजाव्यां होय ते तेहज साधुनें लेवा न कल्पे पण शेष बीजा साधुनें ते आहारादिक लेवा कल्पे केमके तेने आधाकर्मादिक दोष न लागे अने पहेला तथा छहेला तीर्थंकरना शासनने विषे तो एक साधु अथवा एक साध्वीने अर्थें जे आधाकर्मिक आहारादिक निपजाव्यां होय ते सर्वथा प्रकारे कोइ पण साधुनें अथवा साध्वीनें लेवा कल्पे नही ए बीजो उद्देशिक कल्प कह्यो ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजो सय्यातरि पिंमनो कल्प कहेछे जे उपाश्रयनो धणी होय तेने सय्यातरि कहीये अथवा जे साधुने रहेवानी उतरवानी जगा आपे एटले जेनी आज्ञा लेइने साधु जगामां रह्या होय ते घरना स्वामीने सय्या तरि कहीये तेना घरनो पिंम जे आहारादिक बार वस्तु ते सर्व तीर्थंकरना साधुउने वोहोरवी कल्पे नही ते बार वस्तुना नाम कहेछे १ आहार, २ पाणी, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ कपडा, ६ पात्रा, ७ कंबल, ८ उंघो, ९ सूई, १० पिप्पलक, ११ नखकतारवानीनेरणी, १२ कानमांथी मेल काढवानी चाटुइ, ए बार चीज तथा बीजा पण छरी कातरणी अने सरपला प्रमुख ते कोइ

पण साधुने लेवां कल्पे नही ए सय्यातर पिंम लेवामा अनेषणाय अशुध्द दोषना संभव था य प्रसंगादि महोटा दोष ऊपजे केमके साधुना रागे करी पारणाने उत्तरवारणाने अर्थे वारं वार जातां आवता अशुध्दमान आहारादिके करीने ते ग्रहस्थ दहि दूध प्रमुख स्निग्ध वस्तु पण आपे तेथी रसगृध्दि थाय अने मिष्टान्नना लोन्ने तेनुं घर न मूके कदापि वेगलो बीजे गामे गयो होय तो पण त्यांथी मिष्टान्नने लोन्ने फरी आवे वली वस्त्रादिक मा ग्यां थकां तेगृहस्थ तरतज आपे तेणे करी उपधिनी वृध्दि थाय वली ते सय्यातरनो पिंम लेतां थकां गाममां फरवाथी बूटे तेथी ते साधुनु शरीर जाडुं थाय वली ते सय्यातरिनो पिंम लेवाथी कदाच गृहस्थने एवो पण नय उपजे के जे उपाश्रय करावे तेने आहारादिक पण आपवा पडे तेने लीधे कोइ उपाश्रय पण न करावे अने रहेवाने कोई जगा पण आपे नही तेथी आहार शिष्यादिकनो मलवो डुर्लन्न थइ पडे इत्यादिक दोषना प्रसंगथी सय्यातरिना घर नो आहार लेवो सर्व तीर्थंकरे निषेध्यो ठे कदाचित् कोइ कारणे सय्यातरिना पिंम लेवो पडे तो रात्रिना चार पहोर क्रिया सधाय करतो जागरण करे पण निद्रा न करे अने प्रन्नातनुं पडिक्कमणुं बीजे स्थानके जइ करे तो उपाश्रयना धणीनो सय्यातर न थाय अने जो रात्रे निद्रा करे अने प्रन्नातनो पडिक्कमणुं बीजे स्थानकें करे तो बेहु सय्यातर थाय एटले बेहु स्थानके आहारादि लेवा न कल्पे तथा १ तृण, २ माटीनो ढेंफुं, ३ नस्म, राख, ४ मात्रानु गमडुं, तेने मात्रा कहीये, ५ बाजोट, ६ पाटी पाटला, ७ सय्या, ८ संथारो, ९ लेप प्रमुख वस्तु, १० उपधि सहित चेलो एटले वस्त्रादिक सहित चेलो ए दश वस्तु सय्यातरना घरनी लेवी कल्पे ए त्रीजो सय्यातरिपिंम कल्प कह्यो ए कल्प सर्व तीर्थंकरोना साधुने निश्चय होय माटे

एने नियत कल्प कहीये ॥ ३ ॥ ॥ हवे चोथो राजपिंम कल्प कहे ठे जे महोटो ठत्रपति चक्रवर्त्यादिक राजा होय अने जेने सेनापति, पुरोहित, श्रेष्टि, प्रधान अने सार्थवाह ए पांच वानां होय ए पांचनी साथे राज्य करे तेने राजा कहीये तेना घरनो आहारादिक पिंम पहेला तीर्थंकरना साधु साध्वीने अने ठेल्ला श्रीवीरजगवानना साधु साध्वीने लेवो कल्पे नही केमके राजद्वारमां घणा लोक मले तिहां घणो वखत लागे तथा कोइक अपसांगलिक कहे तथा तिहां हाथी, घोडा, रथ अने स्त्री प्रमुखनें जोतां थकां राग उपजे वली कोइक चोर कहे कोइक हेरू पण कहे इत्यादिक अनेक दोष उपजे वली लोक निंदा करे जे आ यति थइने राज्यपिंम लीये ठे अन्यदर्शनीयोना शास्त्रमा पण राज्यपिंम निवार्यो ठे माटे पहेला अने ठेल्ला तीर्थंकरना यतिये राज्यपिंम न लेवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुतो रुजु अने पंमित ठे माटे राजाना घरनो निर्दोष आहार जाणे तेवारे आहार लीये अने सदोष जाणे तो न लीये माटे तेमने ए कल्पनी मर्यादा नथी ए चोथो राज्यपिंम कल्प कह्यो ॥ ४ ॥ ॥ हवे पांचमो कृतिकर्म कल्प कहेठे जे वांदवु तेने कृतिकर्म कहियें ते बे प्रकारे ठे एकतो ऊजु थावु बीजु द्वादशावर्त्तवांदणे वांदवु तिहां श्रीजिनशासनने विषे सर्व तीर्थंकरोना साधुउंनी एवी मर्यादा ठे के जेणे पहेली दीक्षा लीधी होय तें साधुने पाठलथी दीक्षा लेनारो साधुवांदे पण बाप दीकरो अथवा राजा अने प्रधान इत्यादिक न्हानो महोटो जुवे नही परतु दीक्षा जो दीकरे प्रथम लीधी होय अने पिताये पाठलथी लीधी होय तो पिता पुत्रने पण वदन करे एम राजा पोताना प्रधानने पण वदन करे तथा सर्व साध्वीयो तो पुरुषोत्तम धर्म जाणीने सर्व साधुने वांदे परतु न्हानो महोटो जुवे नही जो सो वर्षनी दीक्षित साध्वी होय अने एक दिव

सनो दीक्षित साधु होय तोपण ते साध्वी साधुने सामी जइने हे पूज्य ! पधारो एवीरीतें विनयपूर्वक खमासमणा देइने वांदे, केमके धर्ममांहे मुख्य प्रधान पणु ते पुरुषनेज कह्यु छे, माटें पुरुष अधिक छे तेथी पुरुषे स्त्रीने वांदवु नही, जो साधु थईने साध्वीने वांदे तो घणा दोष प्राप्त थाय केमकें स्त्रीजाति तुच्छ छे माटे अहंकार करे तो तेथी नीच गोत्रने बांधे, वली लोक निंदा करे माटे पुरुषे स्त्रीनें वांदवु नही ए कल्प सर्व चोवीशे तीर्थंकरोना साधु आश्रयी नियत जाणवो ए पांचमो कृतिकर्म कल्प कह्यो ॥ ५ ॥ ॥ हवे छठो व्रतकल्प कहेछे तिहां प्राणातिपातादिक पांच महाव्रत छे. एटले प्राणातिपात, मृषा वाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह ए पांचथी विरमवु ते पाच महाव्रत कहीये तिहां श्री ऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधु तथा साधवीने तो तादृश जाणपणाना अभावथी पांचे महाव्रत व्यवहारथी छे अने मध्य बावीश जिनना वाराना साधु तो परिग्रह व्रतमांहे परिग्र हित स्त्री भोगनुं पच्चरकाण जाणे छे तथा त्रीजा अदत्तादान व्रतमांहे अपरिग्रहित स्त्रीभोगनुं पच्च रकाण जाणे छे एटले स्त्रीने परिग्रह रूप गणीने पांचमा परिग्रह व्रत साथेज लीये छे, केमके जिहां स्त्री तिहां परिग्रह अने जिहां परिग्रह तिहां स्त्री होय छे माटे बावीश तीर्थंकरना साधुने चोथु मैथुन विरमण व्रत वर्जीने शेष चार महाव्रत जाणवां अथवा श्रीऋषभदेव अ ने महावीरना तीर्थें रात्रि भोजन व्रत मूल गुणमांहे गणे छे तेथी रात्रिभोजन विरमण व्रत साथे गणीये तो साधुने छ व्रत थाय अने बावीशजिनना तीर्थें तो रात्रिभोजन व्रत उत्तर गुण मां गणे छे माटे चारज व्रत जाणवां ए छठो व्रत कल्प कह्यो॥६॥ ॥ हवे सातमो ज्येष्ट कल्प कहे छे ज्येष्ट एवु महोटानुं नाम छे तिहां श्रीऋषभदेव अने महावीरना साधुउने तो महोटी दीक्षा

दीधा पछी लघु वडाइ गणाय छे माटे जेणे महोटी दीक्षा पहेली लीधी होय ते महोटो गणाय अने जेणे न्हानी दीक्षा तो पहेली लीधी होय पण महोटी दीक्षा पछी लीये तो ते आगलानी अपेक्षाये लघु गणाय जेम पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने चाकर तथा माता अने दीकरी एम अनुक्रमे दीक्षा लीये पछी जगमणा आवे महोटी दीक्षा लीये तेवारे मुख्य प्रकारे तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार महोटा छे ते जणवामां जो अधिक थाय तो तेहज महोटां कहेवाय नहींका पुत्र, प्रधान, चाकर अने दीकरी ए चारे न्हाना छे परतु ते जणवामां अधिक थइ जाय तो गुरु तेमने महोटी दीक्षा आपी महोटा करे अने वावीश तीर्थंकरना साधुने तो ए मर्याद नथी, केमके ते तो वधाये प्रवीण ड्राह्या होय छे तेथी तरत ज जणी लीये छे माटे ते दीक्षाना दिवसथीज वृद्ध अने लघु गणाय छे तेथी तेमनामा प्रथम जे दीक्षा लीये तेहज महोटो गणाय, जो पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने वाणोतर तथा माता अने दीकरी ए सहु साथे दीक्षा लीये तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार लोक रीतीये महोटा गणाय तथा पुत्र, प्रधान, वाणोतर अने दीकरी ए चारे लघु गणाय तथा महोटी दीक्षाने योग्य प्रधान अने पुंत्र होय तो राजाने तथा पिताने पूछीनें महोटी दीक्षा आपे तेथी अप्रीति न ऊपजे एरीतें ए अनियत कल्प छे ए सातमो ज्येष्ठ कल्प कह्यो ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो प्रतिक्रमण कल्प कहे छे प्रतिक्रमण ते जे आवश्यकनु करवु ते जाणवु तिहां प्रथम अने चरम जिनना वारामां तो साधुने अतिचार दोष लागे किवा न लागे तोपण निश्चयथी दैवसिकादिक पांचे प्रकारना पडिक्कमणांकरे अने वावीश तीर्थंकरना साधुतो जो पाप लाग्यु छे एवु जाणे तोज दैवसिक अथवा राइ पडिक्क

मणुं सांजे अथवा सवारे करे अने पाप लाग्युं न जाणे तो ते पण न करे बाकी पाक्षिक,चोमासी अने सांवत्सरिक ए त्रण पडिक्कमणां तो बावीश जिननां वारामां नहीज करे एम ए पण अनियत कल्प छे ए आठमो प्रतिक्रमण कल्प कह्यो ॥ ८ ॥ ॥ हवे नवमो मासकल्प कहे छे. पहेला अने छेला तीर्थंकरना साधु एक गाममां एक मास पर्यंत रहे उपरांत रहे नही मात्र चोमासाना चार महीना पर्यंत एक गाममां रहे परतु अन्य दिवसोमां एक महीनाथी उपरांत रहे तो घणा दोषोनो संजव थाय एकतो गृहस्थ साथें प्रतिबंध थाय,लघवा पणु पामे, लोकनो उपकार करी शके नही, देश विदेशनुं ज्ञान न थाय, ज्ञाननुं आराधन न थाय माटे एक मास उपरांत रहेवानी साधुने आज्ञा नथी कदाचित् डुर्भिक्षादिक कारणे रहेवुं पडे अथवा विहार करवाने असमर्थ होय तो पण वस्ति पालटण करें, पाडो पलटावे, घर पलटावे अने छेवट संथारानी जूमि पालटण करीने जावथी पण मास कल्प करे जे माटे लोकमां पण केवत छे के॥स्त्री पीयर नर सासरे, सजमियां थिरवास॥ एतां होये अलखामणां, जो मांमे थिरवास ॥ १ ॥इति॥अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुउ तो विहार करवाने जो सामर्थ्यवान होय तोपण तेऋजु अने पण्डित छे माटे तेमने मासकल्पनो कांइनियम नथी जो दोष नही लागतो होय अने लाभ जाणे तो देसूणा पूर्वकोडी वर्ष पर्यंत पण एकज क्षेत्रमां एकज स्थानके रही जाय माटे ए अनियत कल्प छे ए नवमो मास कल्प कह्यो ॥ ए ॥ ॥ हवे दशमो पर्यूषणा कल्प कहे छे जे एक जगाये रहेवु तेने पर्यूषणा कहे छे ते पंजोसण बे प्रकारनां छे एक तो गृहस्थ जाणे अनें बीजो गृहस्थ न जाणे ज्यांहां पर्यूषण पर्वने पडिक्कमतां थकां साधुलोक पूछे तेवारे रहेवाने विषे वर्त्तमान योग्य कहे पण पर्यूषणा पर्व पडिक्कम्या पछी तो

कार्त्तिकी पुनम पर्यंत रहेवानु निश्चयथीज कहे तिहां गृहस्थनी आज्ञा थकी पांच दिवस यावत् रहेवु एम पांच पांच दिवस रहेतां पचास दिवसे पजोसण पर्व करे तिहां कल्पसूत्र गृहस्थ आगल वांचे पछी सीतेर दिवस निश्चयथी रहे एटले जे गृहस्थ जाणे ते तो जादरवा शुदि पाचमथी मांडीने कार्त्तिक शुदि पूर्णिमा सुधी रहे अने बीजो जे गृहस्थ न जाणे ते तो आषाढ शुदि पूर्णिमाथी मांडीनें जादरवा शुदि पचमी सुधी जाणवु, केमके कदापि कोइ गृहस्थ साधुनें पूछे के आप चोमासुं रह्या तेवारे साधु कहेके जेवी खेत्र फरसना अथवा पांचदिन छैये एवो जवाब आपे तेथी आगलना दिवस गृहस्थ न जाणे अने पर्यूषण कर्या पछी तो अवश्य तिहांज रहे माटे ते गृहस्थ जाणी शके ते जघन्यथी सीतेर दिवस पंजोसण अने उत्कृष्ट छ महीनानां पंजोसण जाणवां ए कल्प श्रीऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधुउने निश्चयथी जाणवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुउने निश्चय नही ए दशमो पजोसण कल्प कह्यो ॥ १० ॥ ॥ एरीते ए दश कल्प कह्या ते दशे कल्प श्रीऋषभदेव तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधुउने निश्चयथी जाणवा अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुउने तो ए दशमांथी एक सय्यातर, बीजो चार महाव्रत, त्रीजो ज्येष्ट अने चोथो कृतिकर्म एटले वांदणा ए चार कल्प निश्चयथी होय छे अने एक अचेलक, बीजो उद्देशिक, त्रीजो प्रतिक्रमण, चोथो राज्यपिंड, पांचमो मासकल्प अने छठ्ठो पजोसण कल्प ए छ कल्पनो निश्चय नही ए जेवी मर्यादा बावीश तीर्थंकरोना साधुउनी कही तेवीज मर्यादा श्रीमहाविदेह खेत्रना तीर्थंकरोना साधुउनी पण जाणवी ॥ २ ॥ ॥ इहां कोइ कहेके साधुतो सर्वे सरखाज छे तो तेना आचारमां जेद केम पड्यो तेने उत्तर कहीये छैयें जे श्रीऋषभदेवजीनी

वारे माणस ऋजु अने जड होय छे,तेमने धर्म समजाववो घणो कठण थाय छे तथा श्रीमहावीर भगवाननी वारे माणस वक्र अने जड होय छे,तेमने धर्म पालवो घणो दुर्लभ थइ पडे छे अने मध्यना बावीश तीर्थंकरनी वारे माणस बधा ऋजु अने प्राज्ञ होय छे माटे तेमने धर्म समजाववो पण सुलभ होय छे अने पालवु पण सोहेलुं होय छे एवीरीतें मनुष्योना परिणाममां भेद होवाथी कल्पमां पण भेद थया छे एम जाणवु, परतु परमार्थथी भेद कांइ पण नथी मात्र पुरुषोना परिणामना भेद छे ॥ ३ ॥ ॥ हवे प्रथम तीर्थंकरना साधु जे ऋजु अने जड होय ते दृष्टांतें करी समजावीये छैयें श्रीऋषभदेवना तीर्थमां कोइएक आचार्यनो शिष्य थंडिल भूमिकायें गयो ते घणो वखत लगाडीने पाछो आव्यो तेने गुरुये पुछ्युं अरे शिष्य तने आटलो वखत केम लागो त्यारे ते ऋजु पणाथी बोल्यो के स्वामी नाटकीया लोक रमत करता हता ते जोवाने ऊभो रह्यो हतो तेथी वधारे वखत लागो ते सांभली गुरु बोल्या हे वत्स ! आपणे साधु थइने नाटक जोवा ऊभा रहेवु नही एथी पाप लागे छे माटे आपणने ए अकल्पनीय छे तेवारे शिष्ये तहत्ति कही एटले जेम तमे कहो छो ते प्रमाण छे आज पछी जोइश नही फरी कोइक दिवसे तेहज शिष्य बाहिर भूमि गयो हतो ते घणो वखत लगाडीनें पाछो आव्यो जेथी गुरुयें पुछ्युं जे आटलो वखत केम लागो तेवारे ते शिष्य बोल्यो के हे स्वामी रस्तामां नाटकणी नाचती हती ते जोवानें ऊभो रह्यो हतो तेने लीधे असुर थइ तेवारे गुरु बोल्या जे तमने पूर्वे मनाइ करी हती तेम छतां केम जोवाने ऊभा रह्या तेवारें ते शिष्य जडपणाथी एटले मूर्खपणाथी बोल्यो के महाराज तमेतो नाटकीया जोवानें मनाइ करी हती पण नाटकणी जोवाने तो मनाइ करी हती नही तेवारे गुरु बोल्या हे महाभाग्य ! नाटकणी

तो वली नाटकीया करतां पण अधिक रागनुं कारण छे माटे तेतो सर्वथा नहीज जोवी ते सांजली शिष्य बोल्यो हे स्वामी ! मने प्रथम एवी समज पडी हती नही हवे हु क्यारे पण जोइश नही इहां ऋजु पणाथी सत्य बोल्यो अने जडपणाथी जो नाटकीआ वर्ज्या तो नाटकणी अवश्य वर्जवी जोइयें एटलुं समज्यो नही इति प्रथम दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे वली बीजु कोकण देशीय दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक कोकणदेशना वाणीयाये वृद्ध पणामा कुटुंब परिवार छोडी धर्म पामी वैराग्य वान थइने स्थविर पासें दीक्षा लीधी तेने कोकण साधु कहीनें सर्व बोलावे एक दिवस ते थण्डिल थकी आवी इरियापथिका किरिया पडिक्कम्यो तेने काउसग्ग पारता घणो वखत लागो तेवारे गुरुयें पुछ्युं जो कोकणिक साधु ! तमोने एटलो वखत काउस्सगमां केम लागो ते सांजली साधु ऋजु पणे बोल्यो के हे स्वामीजी ! मे आज जीवदया चितवी, गुरुयें पुछ्यु तमे केवा प्रकारनी जीवदया चितवी तेवारे साधु बोल्यो जेवारे हु घेर गृहस्थ अवस्थामां रहेतो हतो तेवारे वर्षाकालें खेत्रमा वृक्षोने कापी नाखी सूड करीनें जमीनने अग्निये बाली शुद्ध करी तेमां धान्य वावतो हतो तेणेकरी महारा घरमा घणुज धान्य नीपजतु हतु तेथी महारु सर्व कुटुंब सुखी रहेतुं हतु अने हवे में तो दीक्षा लीधी छे अने महारा छोकरा आलसु छे ते खेतीमां कांइ समजता नथी माटे जो निरुद्यमी थका निश्चित पणे घरमां बेठा हशे अने सूड नही करशे तो धान्य उपजशे नही तेथी ते बापडा भूखे मरशे एवा प्रकारनी मे जीवदया चितवी एम ऋजुपणाथी साधु बोल्यो ते सांजली गुरु बोल्या हे जड ! तमे माठुं ध्यान कर्युं छे केमके ए खेतीनो धंधो पाप विना थाय नही ते माटे सावद्यनी अनुमोदना साधुनें करवी युक्त नथी माटे मिछामि दुक्कड देइने शुद्ध थाउ ते सांजली साधुयें मिछामि दुक्कड

दीधो, ए बीजुं दृष्टांत कह्यु ॥ २ ॥ ॥ हवे वली त्रीजुं दृष्टांत कहे छे सोरठ देशने विषे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेनो पुत्र सासरे जवा लाग्यो तेवारे पितायें शिखामण आपी के हे बेटा! एकवार हा कहेवी अने एकवार ना कहेवी एवी पितानी शिखामण धारण करीने सासरे पोहोतो त्यां सासु ससराये पुछ्युं जे हे भट्टजी! तमे आव्या तेवारें ब्राह्मण बोल्यो हाजी, फरी सासु ससरे पुछ्युं के घेर कुशल खेम छे? तेवारे ब्राह्मण बोल्यो नाजी, फरी पुछ्युं के तमारा पिता देवलोक पहोता? तेवारे कह्यु हाजी, फरी पुछ्युं तेमनी पछवाडे कांइ खरच खराजात करी तेवारे कह्यु नाजी, ते सांभली सासु ससरे कह्युं के तमेतो महोटा मूर्ख छो, तेवारे तेणे कह्यु हाजी, एटली वात थया पछी ते सर्व ब्राह्मण मलीने मोकाणे गया त्या जइने जुए छे तो जमाइनो पिता जीवतो बेठो छे तेने राम राम जुहार जुहारकरीने सर्व मल्या, पछी जमाइना पितायें पुछ्युं के तमो सर्वेनु शा कामे अहींआं आववुं थयुं छे? ते सांभली सर्वे बोल्याके तमारे छोकरे तमे परलोक सधाव्या एवी वात अमारी पासे कही तेथी अहींआं आव्या छैयें, तेवारे ते छोकराना पिताये कह्युके ए छोकरो मूर्ख छे एवा जीवनें पण ऋजु एटले भोला अने जड एटले मूर्ख कहीये ए त्रीजुं दृष्टांत कह्यु ॥ ३ ॥ ॥ एवा साधु प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेवना तीर्थें समजवा ए प्रथम तीर्थंकरना साधुउं आश्रयी त्रण दृष्टांत कह्यां ॥ ॥ हवे चरम एटले छेला तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामीना साधु वक्र अने जड होय तेना ऊपर दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक महावीर स्वामीना तीर्थनो साधु स्थंडिलें गयो ते घणो मोडो आव्यो तेने गुरुये वखत घणो लागवानुं कारण पुछ्युं तेवारे वक्रपणाथी कहेवा लागोके बाहिर जाय तेने वख ततो लागेज एमां तमे मने शु पूछो छो!! पछी जेवारे गुरुये घणुं पूछ्युं तेवारे कह्यु जे नाट

कीआ नाटक करता हता ते जोवा ऊभो रह्यो हतो तेने गुरुये कह्यु जे यतिये नाटक जोवु नही ते तमे जोयु तेथी पाप लाग्यु माटे मिछामिछुक्कड लीयो एम कही मिछामिछुक्कड दीधुं, फरी कालांतरे एक दिवस नटडीनु नाटक देखवा ऊभो रह्यो तेथी घणो वखत लागो माटे गुरुये तेनुं कारण पूछवाथी वक्रपणाना योगथी वांका वाका उत्तर आपवा मांड्या पण साचु कहे नही तोपण गुरुये ज्यारे घणुं पूछ्युं त्यारे बोल्यो जे नाटकणी नाच करती हती ते जोवा ऊभो रह्यो हतो,ते सांभली गुरु बोल्या मे ना कही हती तो पण तु नाटक जोवा केम ऊभो रह्यो? तेवारे शिष्य वक्रपणाथी बोल्यो जे तमेतो नाटकीआनुं नाटक जोवाने वार्यो हतो परतु ते वखत नटडीनुं नाटक जोवाने शा वास्ते वार्यो नही? तो एमां माहारो शो वांक छे एतो तमारोज वांक छे एम वक्रपणाथी उलटो गुरुने उलभो दीधो ए वक्रपणा आश्रयि प्रथम दृष्टांत कह्यु ॥१॥ ॥ हवे वली बीजु लोकोक्त दृष्टांत वक्र जडनुं कहे छे कोइएक शेठनो छोकरो घणो दुर्विनीत हतो ते पोताना मा बाप साथे वढवाड कर्यां करे तेने मा बाप घणा समजावे तो पण कोइनु कह्यु माने नही पछी कुटुंबना माणसोये तेने शीखामण आपी कह्यु के मा बापनी सामुं तारे बोलवु नही तेवारे तेणे कह्यु हवे हुं बोलीश नही एम करतां कोइएक दिवसे मा बाप प्रमुख सर्व कुटुंब मली पुत्रने घर सोंपी कांइक कामसर बाहेर गया तेवारे ते छोकरो पितानी शीखामण याद करतो घरनां कमाड जडीने खाटला ऊपर जइ सूतो,थोडीक वार पछी ते पितादिक आव्या तेणे छोकराने घणा साद कर्या तो पण ते छोकरो खाट ऊपर बेठो बेठो सांभले परतु बोले नही अने कमाड पण उघाडे नही एम घणो वखत थयो त्यारे तेनो बाप भींत ऊपरथी चडी घरमां आव्यो अने जूए छे तो पुत्र खाटला ऊपर बेठो बेठो हसे छे

तेने वापे मार आपीने पुछ्युं के तने आटला साद कर्या तोपण केम जवाव आप्यो नही वली क
माड शावास्ते उघाड्यां नही तेवारे पुत्रे कह्यु जे तमेज मने शीखाव्यो हतो के महोटाने सामुं
न वोलवु तो महारो एमां शो वांक छे? तेवारे पिताये कह्यु के अरे मूर्खा काम होय त्यारे तो
वोलवु जोइये ते सांभली छोकरो वोल्यो के हवे हुं काम हशे तेवारे वोलीश, फरी एक दिवसे
शेठ घणालोकोमा वेठा हता एटलामां घेर शेठाणीये रावडी बनावीने छोकराने कह्युके तारा
वापने वोलावी लाव तो रावडी शीरावीने पछी सुखेथी काम ऊपर जाय, त्यारे ते छोकरो
ज्यांहा तेनो वाप घणा माणसोनी वचमां वेठो छे तिहां जइ महोटे सादें हेला पाडीने कहेवा
लागोके हे पिताजी! आज आपणे घेर रावडी थइ छे ते महारी मातायें कह्यु छे के एकवार
शीरावी जाउ पछी सुखेंथी काम काज करो ते सांभली शेठ लज्जा पामीने त्यांथी उठयो आ
गल जइ पुत्रने एकांतमां कह्युके हे कुपुत्र! आ घणा लोकोमा लाज जाय तेवीरीते तुं शा वा
स्ते वोल्यो तेवारे पुत्र वोल्यो तमेज मने शीखाव्यो हतो तो हुं शु करुं? तेवारे पिता वोल्यो
के आज पछी जो एवु काम होय तो धीरे धीरे वोलवु, छोकराये कह्युके हवे धीरे धीरे वो
लीश, एटलामां वली एक दिवस ते शेठने घेर लाय लागी तेवारे शेठाणीये शेठने तेडवा सारुं
छोकराने मोकल्यो ते छोकरो तिहां आवीनें जूए छे तो शेठ घणा लोकोनी वचमां वेठो छे ते
वारे पोते दूर ऊभो रहीनें धीरे धीरे वोल्यो घणीवार थया पछी शेठे तेने जोयो तेवारे शेठे
पुछ्युं के अरे तु शावास्ते अहीआं आव्यो छो तेवारे ते छोकरो शेठनी पासे जइने हलवे हलवे
धीरजथी शेठना कानमां कहेवा लागोके आपणे घेर लाय लागी छे ते सांभली शेठ वोल्यो
के अरे मूर्खा घरतो वली गयु हशे तुं इहां आवतांज केम वोल्यो नही तेवारे छोकरो

बोल्यो के तमे सीखाव्यो हतो जे धीरे धीरें बोलजे तो एमां महारो वांक कांइ नथी ए त मारी पोतानीज जूल छे, पिताये कह्यु अरे एटलो महोटो थयो तोपण हजी अकल आवी नही ज्यारे धूआडा नीकल्या त्यारे तरतज धूल नाखवी हती तो अग्नि शांत थइ जात, एवु शेठनु केहेवु ते छोकराये धारी राख्यु एम करतां शीत रुतु आवी तेवारे प्रनात समयें एनो पिता दातण करवा बेठो छे तेना मुखमांथी धूवाडा नीकल्या ते देखी धूलनो धोबो जरीने छोकराये पिताना महोडामा नाख्यो तेवारे पिताये जाएयुं जे ए छोकरो खरेखर मूर्ख छे वली एक दिवस पिताये छोकराने कह्यु के आ घोडो तरस्यो छे तेने पाणी पीवरावजे अने नवरावी आवजे, छोकराये कह्यु बे काम तो नही करुं पिताये कह्यु नवरावी आवजे पछी ते छोकरो घोडा ऊपर चडी तलाव पासे जइ घोडानु महोडुं बांधी नवरावीने पाछो घेर लाव्यो पण घोडो तरश्यो हतो माटें आकुल व्याकुल थतो देखी शेठें पुत्रनें मूर्ख जाणी घरमांथी काढी मूक्यो अनें कह्युके वाटे जाता कोइ मलेतो तेने महोटे सादें जुहार करजे पछी वाटें जतां कोइएक पाराधी पास मांफी मृगला एकठा करी ऊनो छे तेने छोकराये महोटें सादें जुहार कर्यो तेनो साद सांजलीने सर्व मृग नासी गया पाराधीये तेने मार आप्यो अने मूर्ख जाणीने कह्युके हे जूफा मार्गे जतां छपतो चाल्यो जाजे वली आगल जातां कोइक कोटवाल चोरनी शोध करवा नीकल्यो छे तेणे छोकराने छपतो देखी चोर जाणी पकड्यो मार मार्यो पछी मूर्ख जाणी कह्युके घणा माणस दीठामा आवे तेवारे एम कहेजे के तमारे एवु कोइ वखते थाशोमां वली आगल जातां कोइएक गाममां विवाह छे ते देखी पहेला मूर्खायें कह्यु के तमारे घेर एवु कार्य कोइ वारे म थाजो ए वचन सांजलीने विवाह वालाये कूट्यो मार आप्यो पछी छोकरायें कोटवालना शीखा

ए कल्प सिद्धांत, पण त्रीजा वैद्य समान गुणकारी ठे केमके एना श्रवणथकी जे पूर्वे कर्म वांध्या होय तद्रूप व्याधि दूर थइ जाय अने नवा कर्मनो वंध पडे नही सर्व आपदा निवारे, सुख संपत्ति करे, चारित्रना गुणनी पुष्टि करे अने वली मोक्षना सुख तरत आपे ए कल्प सूत्रने विषे प्रथम श्रीवीर चरित्र ठे ते वीज समान ठे, श्रीपार्श्वनाथ चरित्र ठे ते अंकुरो ठे, श्रीनेमीश्वर भगवाननुं चरित्र ठे ते थड ठे,श्रीआदिनाथ चरित्र ठे ते शाखा ठे, थविरावली ते फूल ठे, कथा ठे ते सुगंध ठे, फल ते मोक्ष ठे, जे ए सूत्रना सर्व अक्षर सांभले ते जीव आठ भवमां मोक्ष जाय॥ ॥हवे साधु जे गाममां चोमासुं रहे ते गाममां ए कल्पसूत्रनी वाचना करे अने चोमासुं पूरण थया पठी एटले कार्त्तिकशुदि पूर्णिमा थया पठी पण कदापि वर्षाद वरसवाथी मार्गमां कादव प्रमुख थया होय तो वधारे दिवस पण रहे तथा वली कदाच जे गाममां साधु चोमासुं रह्या होय अने हजी चोमासुं पूरुं न थयुं होय तेनी वचमां ते गाममां १ मरकी आदिक रोगोनो उपद्रव थाय, २ भिक्षा दुर्लभ मलती होय, ३ राजा दुष्ट होय तेणे कोप कर्यो होय, ४ कुंथुआदिक घणा जीवोनी उत्पत्ति थइ होय, ५ सर्प अग्नि आदिकनो भय उत्पन्न थयो होय,रोग अने वर्षाद विरमता न होय,दुर्भिक्ष पडे इत्यादिक कारणे चोमासामां पण विहार करवानी आज्ञा प्रभुयें दीधी ठे माटे विहार करवामां दोष नथी हवे संयम निर्वाह करवाने अर्थे साधुने ज्यां चोमासुं रहेवु पडे तिहां प्रथम ते खेत्रमां उत्कृष्टपणे तो तेर गुण जोवा जोइये तेना नाम कहेठे १ जे गाममां चिरकल कादव घणो न होय, २ जे गाममां वेइन्द्रियादिक जीव घणा न होय, ३ स्थंडिल जवानी भूमि निरवद्य होय, ४ स्त्री पशु पंडकादिक दोष रहित उपाशरो रहेवानो होय, ५ जे क्षेत्रमां दहि दूध घणा

मलतां होय, ६ जे गाममां नद्रक अने श्रद्धावान एवा श्रावकना घणां घर होय, ७ जे गाममां वैद्य घणा निपुण रहेता होय, ८ जिहां औषध घणां सुलन्न मलता होय, ए जिहां श्रावकोना घरमां धन धान्य प्रमुखनो घणुं सग्रह होय पण कोइ वातनी चिता न होय, १० जे गामनो राजा अति नद्रक होय यतिउंनी नक्ति घणी करतो होय, ११ जिहां ब्राह्मण, तापस, जुआ, नरडा प्रमुख पाखमी लोक जे ठे ते साधुनें अपमान करी शकता न होय, १२ जिहां निक्षा सुलन्न मलती होय, १३ जिहां सधाय पठन पाठनादिक सुखे थतां होय ए तेर गुणवाला गाममा साधुये चोमासु करवु, कदापि एटला योग न वनें तो पण जघन्यथी चार गुण तो अवश्य जोवा तेना नाम कहेठे १ थमिल नूमि घणीज सारी शुद्ध फासु होय, २ जेमां सधाय ध्यान सुखे थाय एवी रहेवानें जगा होय, ३ जिहां श्रीजिनमदिर होय, ४ जिहा गोचरी रूडी रीतें मलती होय ए चार गुण खेत्रना जोइने चोमासु करवु एम ए तेर गुण उत्कृष्टथी अने चार गुण जघन्यथी कह्या तथा पाचथी मामीने बार गुण सुधी सर्व मध्यम गुण जाणवा, एवु खेत्र जोइने त्या साधुयें चोमासु करवु कारण के साधुजन पृथ्वी पीठने विषे नवकल्पि विहार करे तिहा अनेक तीर्थयात्राउ करतां, गामेगामे विचरता मिथ्यात्वे पडता अनेक नव्यजीवोना उद्धार करता थका विचरे तें जेवारे चोमासु आवे तेवारे धरामंमलें सजलधारायें वर्षाद पडे तेंथी पगले पगले पाणीनो प्रवाह चाले, कोमलकिसलय फूटें, थानकें थानकें अनेक प्रकारना जतुउ उत्पन्न थाय ते माटे जीवयत्न करनारा चारित्रियाये वर्षाकालमां विहार न करवो, एकत्र स्थानकें रहेवु, अनेक प्रकारना घोर अन्निग्रह करवा, जेमाटे साधुने तो वीशवशा दया ठे परतु श्रीकृष्णमाहाराज जेवा सवावशानी दयाना पालनारा

ववा संबधि वात कहे ठते ते लोकोये मूर्ख जाणी शीखामण आपी कह्युके हे जोला! जेवा
रे घणा माणस मले तेवारे एवु कहेवु के तमारे सदा सर्वदा एमज थाजो तेवात याद राखीने
ठोकरो आगल चाल्यो मार्गमां कोइ एक देशनो राजा मरण पाम्यो ठे तेनी मैयथने लइ जा
य ठे तेने ठोकराये कह्यु के तमारे सदा सर्वदा एवुज होजो तिहां पण तेणे मार आप्यो मूर्ख
जाणीने मूकी दीधो एम रखडतो रझलतो केटलाएक दिवसें पाठो घेर आव्यो ए श्रीवीरना
साधु उपर वक्रजडनुं बीजुं दृष्टांत कह्यु ॥ ॥ हवे मध्य बावीश तीर्थंकरना साधु ते सर्व रुजु
अने प्राज्ञ ठे तेना ऊपर दृष्टांत कहेठे जेम कोइएक अजितनाथ जगवाननो साधु ते स्थंमि
लथी घणो असुरो आव्यो माटे गुरुये तेनुं कारण पुठ्युं तेवारे रुजु पणाथी कह्युके नाटकी
आनुं नाटक जोवा ऊजो रह्यो हतो, गुरु बोल्या जे साधुयें नाटक जोवु नही तेवारे तेणे
मिछामिडक्कड देइने कह्युके हवे कोइवारे जोवा ऊजो रहीश नही वली कोइएक दिवसें बाहेर
गयो तिहां रस्तामां नटवी नाचती हती ते जोइ पंमित पणांथी विचार कर्यो के गुरुयें मुजनें
नाटकीआनुं नाटक जोवा वर्ज्योंठे तो नाटकणीतो वली विशेष रागनुं कारण ठे माटे ए
मुजने सर्वथा जोवीज नही एवु विचारीने पाठो आव्यो ए रुजु अने प्राज्ञनुं दृष्टांत कह्यु ॥१॥
एम ए दृष्टांत जे कह्यां ते कांइ सर्वे साधुउ आश्रयी समजवां नही, परतु कोइएक सा
धुनां आश्रयी जाणवां ॥ ॥ हवे आजना समयना माणस वक्र अने जड ठे ते प्रमाणे आज
पांचमा आरामा चारित्रीया साधु नथी एम पण न कहेवुं कदापि अनाजोग पणे अतिचार दोष
घणा लागे तेवा पण साधु आजना समयमां ठे केमके साधु विना धर्म न होय माटे व्यव
हार जाष्यमां कह्यु ठे के श्रीजगवतनां जांखेला शास्त्रनी जे खरेखरी प्ररूपणा करे तेने साधु

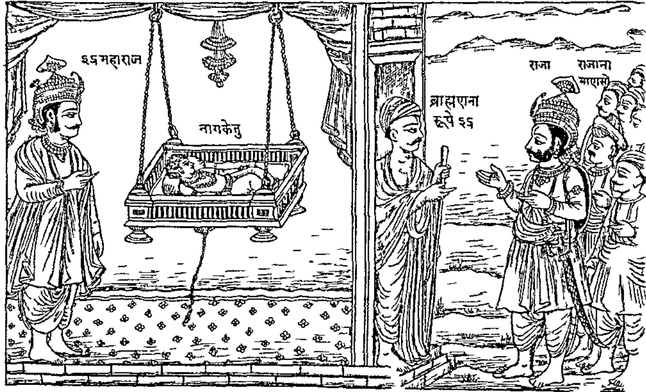
कहीये ॥ तथा ॥ जो जण नहि धम्मो, नय सामाईय न चेवय वयाइ ॥ सो समणसंघवुज्झो, कायव्वो समण संघेण ॥ १ ॥ माटे जो पूर्व साधुनी अपेक्षाये हीन कहो तो जले कहो पण ड पमकालमां साधु नथीज एम न कहीये जे माटे साधु तो आजे पण छे ॥ ॥ हवे ए दश प्रकारनो कल्प जे साधुनो आचार रूप धर्म छे तें त्रीजा वैद्यना औषध सरखो छे एटले जेम त्रीजो वैद्य उपकारी थयो तेम आ कल्प पण उपकारी जाणवो ते त्रीजा वैद्यनी कथा कही देखाडे छे कोइएक राजाने एकज पुत्र अत्यंत वल्लभ हतो माटे राजाये विचार कस्यो जे आ पुत्रने रोग आव्या पहेलांज एनु हु औषध करावु तो पछी कोइ वारे एने रोगज थाय नही एम चिंतवी वैद्यने बोलावी कह्यु के आ छोकरानु एवु औषध करो के जेणेकरी एने कोइ वखत रोग न थाय ते वारे वैद्य बोल्यो के हे राजन्' म्हारी पासे जे औषध छे ते एवु छे के जे खाधा थकी रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो वली नवो रोग प्रगट थाय ते सांभली राजाये कह्यु के सूता सिंहनें जगाडवा सरखु ताहारु औषध अमारे करवु नथी, एम कही तेने शीख आपी, पछी बीजा वैद्यने पुछ्यु तेवारे ते बोल्यो के हे राजन्' माहारु औषध खवराव्याथी जो रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो गुण दोष काइ नथाय ते सांभली राजा बोल्यो जे राखमां घृत ढोलवा जेवु ताहारु औषध अमारा कामनु नथी एम कही तेने पण विदाय कस्यो, पछी त्रीजा वैद्यने बोलावी पुछ्यु तेवारे ते बोल्यो हे राजन्' म्हारु औषध एवु छे के जे खवराव्याथी रोग होय तो जतो रहे अने रोग न होय तो, वली अपर रोग आवे नही तथा बल, बुद्धि, रूप अने तेजनी वृद्धि करे ए वात सांभली राजाये प्रसन्न थइने ते वैद्यनुं औषध छोकराने अपाव्यु अने वैद्यने शिरपाव आपी विदाय कस्यो एवीरीते

श्रावकोये पण चोमासामां शोल हजार राजाउने सन्नामां पधारवानी ना कही अने पोते पण सन्ना मांहे नाव्या केमके वर्षाद मांहे घणा कीडी कुंथुआदिक जीव हणाय एवु जाणी ठाकोर पोढ्याछे एवो जवाब श्रीकृष्णे कह्यो त्यांथी देव पोढणी अगीआरस लोकमां प्रसिद्ध थइ एरीते शुद्ध श्रावक पण वर्षाकालें पाप जाणीने देशांतरनो व्यापार न करे माटे साधुने पण चोमासामां एक ठेकाणे रहेवु ते चोमासानें विषे पंजोसण पर्व आवे थके मांगलिकनें अर्थें कल्पसूत्र अवश्य वांचवुं ॥ ॥ हवे पंजोसण पर्व सर्व पर्वों मांहे उत्कृष्ट छे माटे एनो महिमा कहेछे १ जेम मंत्रमांहे पांच परमेष्टि मंत्र, २ जेम तीर्थमांहे शत्रुंजय तीर्थ ३ जेम दानमांहे अन्नय दान, ४ जेम गुणमांहे विनय गुण, ५ जेम व्रतमाहे ब्रह्मचर्य व्रत, ६ जेम सतोपमाहे नियम, ७ जेम तपस्या मांहे इंद्रिय दमन, ८ जेम दर्शनमांहे जैनदर्शन, ९ जेम क्षीरमांहे गोक्षीर, १० जेम जलमध्ये गंगानीर, ११ जेम पटमांहे हीर, १२ जेम वस्त्रमांहे चीर, १३ जेम अलकारमांहे चूडामणि, १४ जेम ज्योत्स्नामांहे निशामणि, १५ जेम तुरगमांहे पचवह्नकिशोर, १६ जेम नृत्यकलावतमांहे मोर, १७ जेम गजमांहे ऐरावत, १८ जेम दैत्यमांहे ऐरावण, १९ जेम वनमांहे नंदनवन, २० जेम काष्टमांहे चदन, २१ जेम तेजवतमांहे आदित्य, २२ जेम साहासिक मांहे विक्रमादित्य, २३ जेम न्यायवतमांहे श्रीराम, २४ जेम रूपवतमांहे काम, २५ जेम सतीमांहे सीता, २६ जेम शास्त्रमांहे गीता, २७ जेम वाजित्रमाहे नंना, २८ जेम स्त्रीमाहे रन्ना, २९ जेम सुगधमांहे कस्तूरी, ३० जेम वस्तुमांहे तेज, ३१ जेम पुण्यश्लोकमांहे राजा नल, ३२ जेम फूलमांहे सहस्त्रदल कमल, ३३ जेम धनुर्धरमांहे अर्जून, ३४ जेम इंद्रियमांहे नयन, ३५ जेम धातुमांहे सुवर्ण, ३६ जेम दातारमांहे कर्ण, ३७ जेम गायमांहे

कामधेनु गाय, ३८ जेम स्नेहमाहे घृत, ३९ जेम जलमांहे अमृत, ४० जेम ज्ञानमांहे केवलज्ञान, ४१ जेम सुखमाहे मोक्षनु सुख, तेम सर्व पर्वमांहे पजोसण पर्व महोटु जाणवु ए नाद्रवा शुदि पचमी जेम श्रीजिनशासनने विषे माननीय छे तेमज परशासनने विषे पण ए रूषीपंचमीनो दिवस माननीय छे ते रूषीपचमीनो सवध कहे छे ॥ ॥ पुष्पवती नगरीने विषे नीलकठ नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी सोमा नामे नार्या हती तथा इन्द्रदेव नामे पुत्र हतो ते जन्मथीदारिद्री हतो केटलेक काले तेना माता पिता मरण पामीने एनाज घरमां पिता बलदीयो थयो अने माता कुतरी थइ एवामा श्राद्धपक्ष आव्यो तेवारे घरमां द्रव्य नही तेथी विचार करवा लागो जे माता पिताना श्राद्धनो दिवस महारे केवीरीते साचववो पछी बलदीयो ते लीने घेर खेडवा आप्यो तेनुं नाडुं लइ दुध, चोखा, खाण्ड, घृत अने गोधुम लइ आवीने खीर रांधी घणा ब्राह्मणोने नोतरुं दीधुं एवामां पूर्वला नवनुं पोतानु घर देखीने कुतरीने जाति स्मरण ज्ञान उपनु छे तेणे ते दूधमाहे उपरथी सर्प्पे गरल नाखी ते दीठी तेवारे कुतरीयें विचारयु जे अज्ञाने करी आ खीरने ब्राह्मणो जमशे तो मरण पामशे तेथी महा अनर्थ थइ पडशे ब्रह्म हत्यानु पाप लागशे ने महारो पुत्र तथा वहु बे मरण पामशे एम विचारे छे एटलामा वहु आवी तेवारे तेने देखतां ते कुतरीये दुधमाहे पोतानु मोहोडुं घाली दुध बोटयु ते जोइ वहुने रीश चडी तेथी तेने मुसलना प्रहारे मार मारी केड नागीने ज्यां गायनी शाला छे त्यां जइ हेठी पाडी दीधी तेथी ते तडफडवा लागी अने ब्राह्मणे बीजो दुध लावी खीर रांधी सर्व ब्राह्मणोने जमाडी श्राद्धनो दिवस साचव्यो पछी ब्राह्मण थाको थको बाहेर गौशालामां खाटलो पाथरी सूतो एवामां सध्या समय थयो तेवारे आखा दिवसनु जुख्यो,

तरस्यो थाकी गयेलो वलद ते पण पेला घांचीयें लावीने तेनां स्थानकें बांध्यो एटलामां कुल देवी आवीने वलदीया तथा कुतरीना शरीरमा संक्रमी तेवारे कुतरी वलदीयाने कहेवा लागी के आज श्राद्ध तो आपणुं हतुं अने खावानुं ब्राह्मणोने मल्यु एटलुंज नही पण आ पापिष्ट वहुये माहारी केड जांगी नांखी तेथी महाडु ख पामुं छु तेवारे वलदीयो बोल्यो जे आ पापिष्ट आपणो छोकरो पण कांइ समजतो नथी मने पण आजें घांचीने घेर मोकल्यो हतो तेणे आखो दिवस घाणीमां फेरव्यो अने चारो पाणी आप्या विना एमज जूखें मरतो आंही आवी बांधी गयो छे, ए सर्व वात खाटलापर बेठेला ब्राह्मणे सांजली तेथी तेना म नमा दिलगिरी पेदा थई अने विचार्युं जे आतो महारा माता पिता देखाय छे एवो निर धार करी त्यांथी उठीने कुतरीने खीरनुं जोजन कराव्युं अने वलदने सारीरीते चारो प्रमुख आप्युं पछी पोते पोताना माता पितानी सद्गति करवाने अर्थे परदेश जइ अनेक तीर्थ करी कोइ महोटा रुषीश्वरने पूछवा लागो के महाराज महारो बाप वलदीउ थयो छें अने माता कुतरी थइ छे तेनी रुडी गति केवीरीतें थाय ते प्रकार कहो तेवारे रुषी बोल्यो जे ए बेहु जीवें रुषि पंचमीना दिवसे अप्रस्तावे काम क्रीडा करेली छे मैथुन सेवन कर्युंछे तेनुं पाप लाग्युं तेना योगे ए अवतार पाम्यां छे माटे हवे तुं जेवारे रुषि पंचमी एटले जादरवाशुदि पचमीनो दिवस आवे ते दिवसें वलदनुं खेड्युं धान्य खाइश नही चोख्खो चउविहारो उप वास करजे कदापि खाधा विना रहेवाय नही तो दश मुठी अडदना बाकला खाजे एटले एम नी सद्गति थशे पछी ते ब्राह्मणे तेमज कीधुं ते दिवसथी लोकोने विषे रुषि पंचमीनुं नाम प्रसिद्ध थयुं छे ए रुषिपंचमीना पर्व आश्रयी कथा कही॥ ॥हवे श्रीपर्यूषण पर्व आवे तेवारे

महोटो महोत्सव करी जे पुरुष तेलानी तपस्यामां एटले अठ्ठम तप करी श्रीकल्पसूत्रने सांभले ते पुरुष नागकेतुनी पेरे केवलज्ञान पामीने मोक्ष सुखने पामे ते नागकेतुनी कथा कहे छे, चंद्रकांता नगरीने विषे विजयसेन नामे राजा राज्य करतो हतो, ते नगरीमां श्रीकांत नामा शेठ रहेतो हतो तेनी श्रीसखि नामे भार्या हती तेने घणा उपाय करतां देवदेवीओनी मानताओ करतां एक पुत्र आव्यो अनुक्रमे ते पुत्रनुं पालण पोषण करतां केटलोएक काल वीत्यो एटलामां पर्यूषण पर्वना दिवसो आव्या ते समयमां ते बालकनी आसपास वेठेलां माणसो मांहोमांहे वातो करवां लागां के आपणे सांवत्सरीनो तेलो करीशु एटले अठ्ठम तप करीशु ए वात सांभळीने पहेला बालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेना योगे पोतानो पाछलो भव दीठो तेथी बाल्यावस्थामां पण तेणे पोताना मनमां अठ्ठमनु तप करवु एवो निश्चय करीने स्तनपान करवु मूकी दीधु तेथी तेनुं शरीर कुमलाइ गयु मरणतुल्य अवस्था दी ठामां आवी एवी पुत्रनी अवस्था जोइ तेनां माता पिता घणुंज दुःख धरवा लागा तेणे अनेक प्रकारना औषधोपचार कर्या तो पण ते बालकें स्तनपान कर्युं नही एम करतां भूखनां योगे ते बालकने मूर्छा आवी गइ छोकराने मूवेला जेवो देखीने तेना बापनुं हैयुं फाटी गयुं तेथी मरण पाम्यो, तेमज माता पण मरण पामी अने बालकने मृतक देखी तेना ज्ञातिवालाये धरतीमां भंडार्यो,पछी आपणा गाममा अपुत्रीयो श्रीकांतशेठ मरण पाम्यो छे एवी खबर पडतां राजाये ते शेठनु धन लेवा सारु माणस मोकल्यां, एवा समयमां अठ्ठम तपना प्रभावे करी धरणेन्द्रनु आसन चलायमान थयु तेवारे अवधिज्ञाने करी सर्व वृत्तांत जाणी त्यां आवी बालकने अमृत सचारे सज्ज कर्यो अने पोतें ब्राह्मणनुं रूप धारण करी ते शेठना घरना बा



चित्र ९

रणा आगळ उभो रहीनें राजाना माणसोने धन लेतां अटकाव्यां, राजपुरुषोये जइ राजाने कह्यु के ब्राह्मण धन लेवा देतो नथी तेवारे राजा पोते उतावळो आवीने ब्राह्मणने कहेवा लागो के अमारा राज्यमां जे अपुत्रीयो मरण पामे तेनुं धन राजा लइ जाय एवी परपरायें रीत छे माटे तमे शा वास्ते अटकाव करो छो त्यारे ब्राह्मण बोल्यो हे राजन्' ए शेठनो पुत्र जीवतो छे राजाये कह्युं क्यां छे, तेवारे धरणेंद्रे ते बाळक जमीनमांथी जीवतो काढीने राजाने देखाड्यो ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या राजाये ब्राह्मणने पूछयुं के आप कोण छो अने आ बाळक कोण छे तथा ए वात तमे केम जाणी? ब्राह्मण बोल्यो हुं धरणेंद्र नाग राजा छु तेलाना प्रभावथी एनो सहाय करवाने आव्यो छुं राजा बोल्यो ए बाळकें जनम तांज अठम तप केम कर्युं, धरणेंद्र बोल्या हे राजन्' ए बाळक पूर्वे भवमां एक वाणीयानो छोकरो हतो त्यां बाल्यावस्थामांज एनी माता मरण पामी तेवारे एनो पिता बीजी स्त्री परण्यो पछी ते ओरमान माता जो छोकरानो थोडो वांक होय तोपण अवगणना करें घणु घणु खीजे तथा मारवा कूटवा वगैरे घणुंज दुःख देवा लागी, एम ते छोकरो नित्य प्रत्यें दुःख पामतो थको तेनो एक श्रावक मित्र हतो तेनी पासें जइ तेणे पोताना दुःखनी वात कही तेवारे मित्र बोल्योके हे भाइ' ते पूर्वे भवमां धर्म कर्यो नथी तेना योगथी दुःखी थयो छो एवो उपदेश सांभळी तेणे यथाशक्ति तप करवानो प्रारंभ कर्यो पछी ते आठमे चौदशे उपवास करतो अने बीजा दिवसोमां नवकारसी पोरसी प्रमुख तप करतो अनुक्रमें पजोसण पर्व आव्युं तेवारे तेणे अठम तप करवानो निश्चय विचार करीनें रात्रे तृणनी झुंपडीमां जइ सुतो, एटलामां तेनी नजीक लाय लागी तेवारे अवसर जोइनें ओरमान मातायें घासनी झुंपडी उपर

अग्नि नाख्यो तेथी ऊपडी बली गइ अने ढोकरो पण शुजध्याने मरण पाम्यो तेणे अष्टम तप ध्यानना प्रजावथी इहां अपुत्रीया श्रीकांत शेठने घेर जन्म लीधो अने जातिस्मरण ज्ञान पामीने एणे अठम तप कखु, तेथी जूखनें योगे मूर्छागत थयो हतो परतु जीवतो हतो तथापि लोके अजाण पणे तेनें मूवेलो जाणी जमीनमां नमाख्यो ते मे आवी अमृत सचार करी मूर्छा ऊतारी सज्ज कख्यो हे राजन्! ए महापुरुष छे, एहज नवमां मोक्ष जाशे एने घणाज यत्नथी राखजो, तमोने पण महोटो ऊपकारनो करवा वालो थाशे एम कही पोताना गलानो हार बालकना गलामा नाखी धरणेइ पोताने स्थानके गयो, राजाये ते बालकने हाथी ऊपर च डावी महोटा आमंबर सहित घेर आण्यो पछी कुंटुबना लोकोये शेठनु मृतकार्य करी ढोकरानु नाम नागकेतु पाड्यु ते बालपणाथीज जितेंद्रिय परम श्रावक थयो, अष्टमी, चतुर्दशीनो उप वास करे, चोमासे ढठ करे अने पजोसणनो अठम करे, जिनपूजा, साधु सेवा नित्य करे, एक दिवसे नगरना विजयसेन राजाये कोइ पुरुषनी ऊपर चोरीनु जुठुं कलक आपी निरपराधी छता तेने माख्यो ते मरीने व्यंतर देवता थयो तेणे आवी आखा नगरनो विनाश करवा सारु नगर प्रमाणे एक सिल्ला आकाशें विकूर्वी लोकोने बीवरावबा लाग्यो अनें राजाने पाटुये मारी मोहोडे लोही वमतो करी जमीन ऊपर नाख्यो, ते कृत्य जोइने नागकेतुये जाण्यु जे हु जीवता छता श्रीसघनो अने श्रीजिनचैत्यनो विनाश केम जोइ शकु!! एवु विचारी मनमा जीवदया आणी जगवानना प्रासाद ऊपर चडीने शिलाने हाथ आडो आपी पडती शिला हाथे धरी राखी व्यतरो पण नागकेतुना तपनी शक्ति न सहन करतो थको ते पोतानी वि कूर्वेली शिलाने सहरण करीने नागकेतुने आवी पगे लागो अने नागकेतुना कहेवा ऊपरथी

राजाने पण शाता करीने व्यंतर पोतानें थानकें गयो, पछी नागकेतुनी घणी मानता थई राजाये तेने सन्मान आप्युं नागकेतु पण पूर्वनी पेठें घणा तप जप करतो थको विचरे छे एकदा नागकेतुने भगवतनी पूजा करतां फूलमांहे रहेला तबोली नागे डस्यो तेथी शरीरमां झेर व्यापी गयु पण शुभ ध्यान धरवा लागो तेना योगथी केवलज्ञानऊपज्युं तिहां दीक्षा लीधी, शासन देवीयें उघो, मुहपति प्रमुख साधुनो वेश आप्यो, घणाकाल पर्यंत विहार करी घणा भव्यजीवोने प्रतिबोध आपी मोक्ष पोहोतो, एवो नागकेतुनो अधिकार सांभलीने जे भव्य प्राणी छठ्ठ अठ्ठम तप करीनें एटले बेला तेलानी तपस्या करीने श्रीपर्यूषण पर्वमा कल्पसूत्र सांभलशे ते जीव शाश्वत सुखने पामशे इतिश्री नागकेतु कथा समाप्त ॥ ॥ आ कल्पसूत्र पापनुं निवारक छे, मनोवांछित पूरनार छे, निकाचित जे चार घातिकर्म छे तेनुं जीपनार छे माटे भव्यजीवें प्रमाद, निद्रा, विकथा छांडी बेला अथवा तेलानुं तप करीने कल्पसूत्र सांभलवुं तथा श्रीजीवाभिगम मध्ये कह्यु छे के पंजोसण पर्व आवे त्यारे देवताना इंद्र पण भेला थ इनें श्रीनंदीश्वर द्वीपने विषे जइ अठ्ठाइ महोत्सव करे छे तेम इहां रूडा श्रावक, श्राविकाये पण कल्पसूत्रनो अठ्ठाइ महोत्सव करवो एवा विधिये करी जो कल्पसूत्र सांभले तो बहु लाभकारी थाय ॥ ॥ ए कल्पसूत्र श्रीमहावीर स्वामीनें छठ्ठे पाटें चौद पूर्वधारी श्रीभद्रबाहु स्वामी युगप्रधान थया तेमने चौद पूर्व मांहेला नवमा प्रत्याख्यान प्रवाद नामा पूर्वनी मांहेथी दशाश्रुतस्कंध सूत्र तेनुं आठमुं अध्ययन रूप रच्युं छे ते जेम दधिनो सार घृत छे तेम सर्व शास्त्रनो सार भूत ए सूत्र रच्युं छे इहां चौद पूर्वनुं मान कहे छे तिहां प्रथम उत्पाद पूर्व छे ते अंबाडी सहित एक हाथी ऊभो करीये तेनो जेटलो ढगलो देखाय तेटली साइनो एक

ढगलो करीये एटली साइथी लखीये तेवारे ए पहेलो पूर्व लखाय,बीजो अग्रायणी पूर्व बे हाथी जेटली साइथी लखाय, त्रीजो वीर्यप्रवाद पूर्व चार हाथी जेटली साइथी लखाय, चोथो अस्तिप्रवाद पूर्व आठ हाथी जेटली साइये लखाय, पांचमो ज्ञानप्रवाद पूर्व शोल हाथी जेटली साइये लखाय,छठो सत्यप्रवाद पूर्व बत्रीश हाथी जेटली साइये लखाय, सातमो आत्मप्रवाद पूर्व चोसठ हाथी जेटली साइये लखाय, आठमो कर्मप्रवाद पूर्व एकसोने अठावीश हाथी जेटली साइये लखाय, नवमो प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्व बसो छपन्न हाथी जेटली साइयें लखाय, दशमो विद्याप्रवाद पूर्व पांचसेने बार हाथी जेटली साइथी लखाय, अगीआरमो कल्याणप्रवाद पूर्व एक हजारने चोवीश हाथी जेटली साइये लखाय, बारमो प्राणावायप्रवाद पूर्व बे हजारने अडतालीश हाथी जेटली साइथी लखाय, तेरमो क्रियाविशाल पूर्व चार हजारने छन्नु हाथी जेटली साइये लखाय अने चौदमो लोकबिंदुसार पूर्व आठ हजार एकसोने बाणु हाथीउंना प्रमाण जेटली साइथी लखाय एम चौदें पूर्वने लखवा मांमीयें तो सरवाले १६३८३ हाथीउंना ढगला जेटली साइ जोइये परतु अद्यापि पर्यंत कोइये लख्या नथी अने हवे कोइ लखशे पण नही मात्र प्रमाण आपीने श्रीकेवली भगवाने उपमा बतावी छे ए सूत्रथी मान कह्यु ॥ हवे ए चौदपूर्वनु अर्थ थकी मान कहे छे समस्त जेटली नदीउ छे ते सर्वे नदीउंनी वेलुना कणीया जेटला थाय तथा असख्याता समुद्र छे ते सर्व समुद्रनां पाणीना बिंदुउ जेटला थाय तेथी पण अनंतगुणो एकेका सूत्रना पदनो अर्थ जाणवो एरीतें चौद पूर्वनां नाम कह्यां ॥ ॥

ए कल्पसूत्र प्रथम तो भादरवाशुदि पचमीना दिवसे रात्रिनु सांवत्सरिक पडिक्कमणुं कर्या पछी अर्द्धरात्रि कालग्रहण करी श्रीगुरु उभा थका मुखथी सूत्रनो पाठ उच्चार करता अने बीजा

साधुउ सर्व काउस्सग्ग करी सांजलता हता तेमज दिवसना साधवीउने पण संजलावता हता ए विधि हतो ॥ ॥ तेवार पछी श्रीमहावीर जगवाननां निर्वाणथी नवशेंने ऐंसीमें वर्षे पुस्तकारूढ थयो अने श्रीवीर निर्वाणथी नवशें त्र्याणुमें वर्षे आनदपुर नगर जेने हमणा वडनगर कहे छे तेने विषे ध्रुवसेन राजा राज्य करतो हतो तेने अत्यत वल्लन सेनागज नामे एक पुत्र हतो ते दैवयोगे मरण पाम्यो एटलामां पर्यूषण पर्व पण आव्यां तेवारे राजा घणो शोकाक्रांत थयो हतो तेथी धर्मशालाने विषे पण आवे नही वली जेम राजा चाले तेम प्रजा चाले ए हेतुथी बीजा जे शेठ व्यवहारी प्रमुख लोक हता ते पण धर्मशालाने विषे आवे नही एवो राजाने शोकातुर थयो जाणी, धर्मनी हाणी थती देखीने गुरु ध्रुवसेन राजानी पासे वदाववा गया त्यां राजाने कहेवा लाग्या के हे राजन्' तमो शोकाक्रांत थया जाणीने नगरना लोक पण सर्व शोकाक्रांत थया छे तेमाटे शरीर धनादिक सर्व अनित्य छे, आयुष्य चचल छे, संसार असार छे ए प्रकारना संसार स्वरूपने तमे जाणोज छो माटे जैनधर्म मांहे घणो शोक करवो अयुक्त कह्यो छे तेथी तमे शोक निवारीने पंचमीना दिवसे पंजोसण छे माटे धर्मशाला मांहे पधारो तो श्रीजद्रबाहु स्वामीयें नवमा पूर्व मांहेथी उद्धरेलु श्रीकल्पनामे सूत्र महामंगलिक प्राचीन कर्मना क्षयनुं करनार छे ते वांचीये तेवारे राजानें पांचमने दिवसें पुत्र मरणनो शोक निवर्त्ताववो हतो अने इंद्रमहोत्सव पण हतो तेथी राजाये कह्यु के छठनो दिवस अथवा चोथनो दिवस ठेरावो तो महाराथी आवी शकाय पण पंचमीने दिवसें महाराथी आवी शकाशे नही तेवारे " अंतरावासेकप्पत्ति " एवो पाठ देखीने कारण विशेषे गुरुयें चोथनी थापना करी चोथनुं कल्पसूत्र वांचवा कबुल कर्यु कालिकाचार्यथी उंहरुं वजमित्र अने जानुमित्र

ए वे न्नाणेज साथे वडनगरनो ध्रुवसेनराजा सन्ना सहित धर्मशाला मध्ये आव्यो तेवारे नव वा
चनाये करी प्रन्नावनाये सहित महोत्सव पूर्वक सर्वलोकनी समक्ष श्रीकल्पसूत्र गुरुये वांच्यु
ते दिवसथी चोथने दिवसे पजोसण थवानी परपरा चाली छे अने केटलाएक गच्छमां अद्या
पि सुधी पाचमना पण पजोसण करे छे तेमज ते दिवसथी महोत्सव पूर्वक प्रन्नावना सहित
सर्वलोकनी समक्ष कल्पसूत्र वांचवानी प्रवृत्ति चाली ते श्रीगुरु परपराये आज पर्यंत चाली
आवे छे अने ते प्रमाणे सर्वस्थले कल्पसूत्र वचाय छे एना वांचवाना अधिकारी योग वहन
करनारा साधुर्ज छे अने सांन्नलवानो अधिकार चतुर्विध श्रीसघने छे ॥ ॥ एक प्रतमा वली
आम कहेलु छे के वडनगरमां गुरुजी चोमासुं रह्या हता एवामां पर्यूपण नजीक आवतांमां
ध्रुवसेन राजानो एकज पुत्र हतो ते दाहज्वरें पीडा पामवा लाग्यो तेना योगे राजा चितातुर
थयो थको गुरुने वांदवा आवी शक्यो नही अने पर्यूपण पर्वमां धर्मध्यानमां प्रवृत्ति करनारा
घणा जनो दीगमां न आव्या तेथी गुरुयें तेनु कारण पुछ्यु तेवारे राजाने शोकमां पड्यो
जाणी गुरु पोते राज सन्नामां पधाखा त्या राजाने धर्मोपदेश आपी समजावीने महोटा लान्न
नु कारण जाणी मांगलिक निमित्ते कल्पसूत्रनी प्रथम वांचना करी ते सान्नलता राजाना पुत्र
ने शाता थई एम करतां नव वाचनाये तो सर्व दाहज्वर उपशमी गयो तेथी राजाये घणो
हर्षवत थइने महोटो महोत्सव कस्यो, धर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो, राजाये गुरुने विनति करी
के श्रीसघना मांगलिक निमित्ते ए कल्पसूत्र वर्षोवर्ष श्रीसंघनें वांची संन्नलाववु ते दिवसथी
कल्पसूत्र चतुर्विध श्रीसघनी आगल वांची सन्नलाववानी प्रवृत्ति चाली छे ते रीते हमणा
पण श्रावकोना आग्रहथी कल्पसूत्रनी वाचना साधुमुनिराज करे छे ॥ ॥ हवे ए सूत्रना

वांचवा थकी एना अक्षरना महात्म्यने योगे साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकाना कल्याण थाय ए वात निःसंदेह छे तेनी उपर कथा कहे छे कोइएक मोशीनो पुत्र वनमांहे गायो चारवा जाय एक समये तेने सर्प्पे डस्यो तेथी मूर्छागत थयो ते वात लोकोना मुख थकी सांभलीने मोसी वनमां गइ त्यां पुत्रने मूर्छित थयो देखी, मोहना वश थकी पुत्रनुं नाम वारवार स्मरण करवा मांड्युं के रे हंस ! रे परमहंस ! एवीरीते चार पोहोरसुधी पोकार कर्यो, तेथी मोसीना छोकराने झेर उतर्युं, साजो थयो, प्रभाते माता अने छोकरो बेहु जण गाममां आव्यां, नगरनां लोक सर्व विस्मय थया, त्यां मोशीने गारुडीये पूछ्युं जे तमोये शो उपाय कर्यो, के जे थकी तमारो पुत्र निर्विष थयो ? त्यारे मोशी बोलीजे हुं कांइ मंत्र जाणती नथी ओषध जाणती नथी, पण आखी रात्रि, रे हंस ! हंस ! अने रे परमहंस ! परमहंस ! ! एवुं रुदन कर्युं तेथी निर्विष थयो मे पोकार कर्यो ते देवताये सांभल्यो देवना प्रयोगथी छोकरो निर्विष थयो ते सांभली गारुडी बोल्या के ए मंत्र सत्य छे अक्षरना प्रयोगथी मंत्र निपजे छे, तेम आ कल्प सिद्धांत वांचतां थकां, सांभलतां थकां, जन्म जन्मनां पातक जाय छे एवुं महोटुं महात्म्य कल्पसूत्रना अक्षरनुं जाणवुं ए कल्पसूत्रने सांभलवा थकी घणा गुण थाय छे, घणा मांगलिकनी वृद्धि थाय छे ॥ ॥ हवे परिसामस्त्येन उपणा सेवना ते पर्यूषणा कहीये ते पंजोसण पर्व आव्यां थकां साधुये एटलां धर्म कार्य करवां ते कहे छे १ चैत्य परिवाडी करवी एटले सर्व चैत्यने विषे श्रीअरिहंतनी प्रतिमानां दर्शन भक्तिभावे करवां, २ लोच करवो, ३ सांवत्सरि पडिक्कमणुं करवुं, ४ सर्व श्रीसंघनी मांहोमांहे खमणां करवां, ५ तेलो करवो एटले अट्ठमनुं तप करवुं तथा पांच दिवस सुधी श्रीकल्पसूत्र वांचवुं

ए पांच वानां करवां,एम श्रीतीर्थंकर गणधरे कह्यु छे वली पर्यूषण आव्यां थकां श्रावके आठ ज्ञां धर्म कार्य करवां ते कहे छे १ आठ दिवस सुधी अमारि पलाववी, २ यथाशक्ति बेला तेलानु एटले छठ अठमादिकनु तप जपादिक करवु, ३ आठ दिवस पर्यंत सुपात्रने अविछिन्न दान देवु, ४ सोपारी नालीयेर प्रमुखनी प्रज्ञावना करवी, ५ श्रीवीतराग देवनी प्रतिमानी पूजा करवी, चैत्य परिवाडी करवी, ६ सर्व साधुउने वदन करवु, ७ श्रीसघनी ज्ञक्ति करवी, ८ सचित्त वस्तुनो परिहार करवो, ए ब्रह्मचर्य पालवु, १० सर्व प्रकारना आरज्ञ सबंधि कर्मो नो त्याग करवो, ११ पोतानी शक्ति प्रमाणे सन्मार्गे द्रव्य खरचवुं, १२ श्रुतज्ञाननी ज्ञक्ति करवी, १३ अज्ञयदान देवु, १४ कर्मक्षय निमित्त काउस्सग्ग करवा, १५ प्रतिदिवस उज्ञय टक पडिक्कमणां करवां, १६ मोटो महोत्सव करवो, १७ जे कल्पसूत्र वांचे तेने ज्ञक्त पाना दिक सहाय आपवो तेनी सुख समाधिनी खबर लेवी अने १८ श्रीसघे मांहोमांहे खमाववु, १ए ज्ञावना ज्ञाववी, २० कल्पसूत्र सर्व अक्षरे अक्षर सांज्ञलवु कल्प समान जे ज्ञव्य जीव होय ते कल्पसूत्र सांज्ञले अने ते विधिपूर्वक सांज्ञलनारो पुरुष बारमे देवलोके जइ देवतानां सुख ज्ञोगवे परपराये आठमें ज्ञवे मोक्षना सुख पामे एटलां धर्मकार्य करवां ॥ ॥ हवे ईहा व्याख्यान करती वेलाये प्रथम मंगल रूप गाथा कहेवी ते लखीये छैयें ॥ पुरिम च रिमाण कप्पो, मगल वद्धमाण जिण तित्थ ॥ ईह परिगहिया जिणहरा, थेरावली चरित्तमी ॥ १ ॥ पहेला श्रीऋषज्ञदेव तीर्थंकर अने छेला श्रीमहावीर स्वामी तीर्थंकर यथा तेमा श्रीव र्द्धमान जिनेश्वरना तीर्थने विषे मगलिक निमित्ते ए कल्प सूत्र छे तेमां त्रण अधिकार कह्या छे त्या प्रथमतो जिनावली एटले श्रीमहावीर ज्ञगवानथी मांमीने पश्चानुपूर्वीये श्रीजिने

श्वरोनां चरित्र कहेवाशे, बीजो स्थविरावली एटले स्थविरोनां चरित्र कहेवाशे, त्रीजो चोशठ आलावें करी अठावीश प्रकारनी साधु समाचारि कहेवाशे तेमां प्रथम श्रीजिनेश्वरोनां चरित्रो मांहे छेला श्रीमहावीर स्वामी शासनना अधिकारी छे माटे तेमनु चरित्र पहेलु कहेवाशे एरीते पीठिका करी ॥ ॥ हवे ए कल्पसूत्रनो अर्थ अत्यत गंभीर छे एकेका अक्षरनो अनंतो अर्थ छे ते सर्व अर्थ कहेवाने हु समर्थ नथी तथापि जेम पूर्वाचार्योये कह्युं छे तेम हुं पण ते महान्पुरुषोना ग्रंथोने अनुसरी गुरुकृपाथी स्वल्प अर्थ करु छुं ॥ ॥ हवे जो पण ए कल्पसूत्र पोतेज सर्व विघ्नोपशांतिने माटे महामांगलिक रूप छे तो पण शिष्यने मंगलबुद्धि होवाने लीधे जेम लौकिक कार्यना प्रारम्भमां पण प्रथम श्रीदेव गुरूनुं स्मरण करीने पछी ते कार्यनो आरम्भ करीये छैये तेम आ कल्पसूत्र रचवा रूप कार्यनी आद्यमां पण सर्व मंगल मांहे महामांगल्यकारी, चौदपूर्वनो सारभूत एवो पंच परमेष्टि मंत्रनो उच्चार कराय छे ते लखीये छैये ॥ ॥ नमो अरिहंताणं के० ॥ नमस्कार हो विहरमान श्रीअरिहंत प्रत्ये, नमोसिद्धाण के० ॥ नमस्कारहो जे आठकर्म क्षय करी मोक्ष गया एवा सर्व सिद्ध प्रत्ये, नमो आयरियाणं के० ॥ नमस्कारहो श्रीआचार्य भगवान प्रत्ये, नमोउवझायाणं के० ॥ नमस्कारहो श्रीउपाध्याय प्रत्ये,नमो लोए सव्वसाहूण के० ॥ नमस्कारहो अढीद्वीप रूप मनुष्य लोकने विषे रह्या एवा सर्व साधु प्रत्ये, एसो पंच नमुक्कारो के०॥ ए जे अरिहंतादिक पांच नमस्कार छे एटले ए नमस्कार पचक जे छे ते कहेवो छे तोके सव्वपावप्पणासणो के० ॥ सर्व पापनो प्रकर्षें करी नाश करनार छे, मगलाणच सवेसि के० ॥ सर्व मगलमांहे पढमंहवईमगलं के०॥ प्रथम एटले मुख्य मगल छे, एरीते मंगल कहीने हवे मूलपाठनो अर्थ लखीये छैये, ते

कालने विषे एटले चोथा आराना अंतने विषे, ते समय ने विषे एटले ते अवसरने विषे श्र
मणजगवत श्रीमहावीर स्वामीना पांच स्थान उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमां होता हवां ते कहे
ढे एक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने देवानंदाजीनी कूखे गर्जमा आवी उपन्या
वीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां देवानदाजीनी कूखथी लईने श्रीत्रिशला देवीनी कूखमा सक्र
माव्या, त्रीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां जनम्या, चोथो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां गृहस्थ पणुं
त्यागीने साधु पणु अगीकार कर्यु, पांचमो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमा अनत अनुपम जेने बी
जी कोई उपमा लागे नही तथा जेनो क्यांय पण व्याघात न थाय एवु, आवरण रहित स
मस्त वस्तु प्रकाशक सपूर्णपूर्णिमाना चन्द्र समान एवु श्रेष्ठ केवलज्ञान तथा केवलदर्शन जग
वानने उत्पन्न थयु ए पाच स्थान उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां थयां तथा स्वाति नक्षत्रमा जगवत
निर्वाण एटले मोक्ष पद पाम्या ए पाच कल्याणक सामान्य पणे जगवतना कह्यां हवे
विस्तारथी वर्णन करीये ढेये ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमण जगवान् श्रीमहावीर
स्वामी उष्णकालनो चोथो मास आगमुं पखवाडियु अर्थात् आषाढ शुदि ढठनी रात्रे महावि
जय पुष्पोत्तर प्रधान पुण्डरीक नामे दशमा देवलोकनु विमान ढे ते विमानमां वीश
सागरोपमना आउखानो क्षय करीने, देवजव त्यागीने, देव सबधि शरीर ढांमीने, अंतर
रहित चवे, चवन करीने एहज जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रमाहेला दक्षिणजरतमा ए अवसर्प्पिणी
कालना इहा अवसर्प्पिणी कोने कहे ढे ते देखाडे ढे जे कालमा समय समय वस्तुनी हानि
थती होय ते अवसर्प्पिणी काल कहेवाय अने जे कालमा समय समय वस्तुनि वृद्धि थती
होय ते उत्सर्प्पिणी काल कहेवाय ते प्रत्येक एकेका कालना ढ ढ आरा होय ढे तेनु स्वरूप

संक्षेपथी लखीये छैये तिहां पहेलो सुखमसुखमा नामे आरो चार कोडाकोडी सागरोपमनो, तेमां मनुष्य तिर्यंचनो त्रण पल्योपमनो आउखो होय, त्रण कोशनुं देहमान होय, वळीने बप न्न पांसली होय, कल्पवृक्षना फल तथा माटीनो तूवरनी दाल जेटलो आहार त्रण दिवसे करे, उंगणपचाश दिवस सुधि जोडलो जनम्यो पाले पछी देवलोके जाय ए अवसर्प्पिणीनो पहेलो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो छठो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ १ ॥ ॥ बीजो सुखमा नामे आरो, त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो, तिहां मनुष्य तिर्यंचनुं बे पल्योपमनुं आयु, बे कोशनुं शरीर, बोर प्रमाणे बे दिवसे आहार करे, एकसो अठावीश पांसली होय अने चोशठ दिवस पर्यंत अपत्य पालना करी देवलोकमां जाय ए अवसर्प्पिणीनो बीजो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पांचमो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ २ ॥ ॥ त्रीजो सुखम दुखमा नामे आरो, बे कोडाकोडी सागरोपमनो, तिहां युगलीया मनुष्य तिर्यंचनुं एक पल्योपमनुं आयु, एक कोशनुं शरीर, एकांतरे आमला प्रमाणे आहार करे, चोशठ पांसली होय अने उंगण्याएंशी दिवस सुधि संतान पालना करी मरण पामी देवलोके जाय ए अवसर्प्पिणीनो त्रीजो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो चोथो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ३ ॥ ॥ चोथो दुखम सुखमा नामे आरो बेतालीश हजार वर्षे न्यून एक कोडाकोडी सागरोपमनो तेमां मनुष्यनुं आयुष्य एक पूर्वकोडी वर्षनुं अने पांचसे धनुष प्रमाण शरीर होय, इहां युगलीया न होय माटे जेवखत जेटलुं जोइये तेवखत तेटलुं भोजन करे,मरण पामीने चारेगति मांहेली गमे ते गतिमां जाय,कोइक जीव कर्मक्षय करी मोक्ष पण जाय ए अवसर्प्पिणीनो चोथो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो त्रीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥४॥ ॥ पांचमो दुखमा नामा आरो

एकवीश हजार वर्षनो, तिहां मनुष्यनुं सात हाथ देह मान, एकसो वीशवर्षनुं आयु होय, मरण पामीने चारगति माहेली गमे ते गतिमां जाय परतु ए आरामां सर्व कर्म क्षय करीने कोइ मोक्षने विषे जाय नही, ए अवसर्प्पिणीनो पांचमो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो वीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ५ ॥ ॥ छठो डुखम डुखमा नामे आरो एकवीश हजार वर्षनो छे, एमां मनुष्यनुं शोलवर्षनु आयु होय अने एक हाथनु शरीर होय, बिलमां निवास होय, सर्व मनुष्य क्रूरकर्मी, न्यायमार्ग रहित, डुर्गतिमा जावा वाला जीव जेमां होय एवो अवसर्प्पिणीनो छठो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पहेलो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ६ ॥ एरीते ए छ अवसर्प्पिणीना अने छ उत्सर्पिणीना मली छ ड वार आरा थाय तेनो सर्व मली वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण काल थाय ॥ ॥ हवे एमां अवसर्प्पिणीनो सुषम सुषमा नामा पहेलो आरो पण सपूर्ण थयो वली सुखमा नामा वीजो आरो पण संपूर्ण थयो तथा सुषम डुषमा नामा त्रीजो आरो पण व्यतिक्रम थइ गयो अने डुसम सुसमा नामे चोथो आरो पण घणो वीती गयो एटले तेमांथी पण बेतालीश हजारने पचोतेर वर्ष अने साडा आठ महिना ऊपर एटला वरसे न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम वीती गया तेमां एकवीश तीर्थंकर श्रीइक्ष्वाकु कुलमां थया जेमनुं काश्यप गोत्र हतु तथा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अने श्रीनेमिनाथ जगवान ए बे तीर्थंकर श्रीहरिवंश कुलमा थया तेमनुं गौतम गोत्र हतु एरीते सर्व मली त्रेवीश तीर्थंकर तो थइ चूका अने जेवारे ए अवसर्प्पिणी सबधी चोथा आराना पंचोत्तेर वर्ष ऊपर साडा आठ महीना शेष काल रह्यो तेवारे प्रथम श्रीजरत महाराजाये श्रीआदिनाथ तीर्थंकरने पूछ्युं हतुं त्यारे श्रीआदिनाथ जगवाने कह्यु हतु जे चोवीशमा तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान परमेश्वर थाशे ते

प्रमाणे श्रमण जगवान् श्रीमहावीर ठेल्ला तीर्थंकर ते ब्राह्मण कुंमगाम नगरमा रुपजदत्त नामा ब्राह्मण जेनु कोडाल गोत्र ठे तेनी देवानंदानामे ब्राह्मणी जार्या ठे तेनुं जालधर गोत्र ठे तेनी कूखनेविषे मध्यरात्रिना समयमां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते बते देव संबंधि आहार तथा देवनो जव अने देवनुं शरीर त्यागीने देवानंदानी कूखमां अवतर्या ॥ ॥ हवे श्रीरुपजदेव जगवाने कह्यु हतुं के चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामी थशे ते वात कथा जवनी ठे ते जाणवाने अर्थे श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश जव लखीये ठैयें आ श्रीजबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे प्रतिष्ठान पत्तनना राजाना गामनी चिंता करवावालो नयसार नामे चाकर कणवार्यो हतो ते एक दिवसे राजाना हुकुमथी घणां गाडां अने चाकर साथे लइने काष्ठ लेवाने अर्थे वनमां गयो तिहां पोते एक वृक्षनी नीचें जइ बेगो ठे अने बीजा चाकर माणस लाकडां कापवानो उद्यम करवा लागा ठे एटलामां साथथकी जूला पडेला केटलाएक साधु त्यां आव्या ते तेणे दीठा तेवारें हर्षवंत थको तेमनी सन्मुख जइ वांदीने पोतानें स्थानकें तेडी लावीने आहार वोहोराव्यो पठी साधुये तेने धर्मोपदेश आप्यो ते सांजलीने त्यां समकेत पाम्यो तेवार पठी ते साधु मुनिराजोने पाधरो रस्तो देखाड्यो ए नयसारनो पहेलो जव जाणवो ॥१॥ ॥ जिहांथी समकेत पाम्या तिहांथी जवनी गणती थाय समकेत पाम्याथी आगल तो संसारमां जीवे अनंत जव कर्या ते कांइ लेखामां गणाय नही पठी त्यांथी आयुक्षय करी अंतसमये नमस्कार सहित मरण पामीने पहेले देवलोके देव पणे उपन्यों ए बीजो जव जाणवो ॥२॥ पठी देवजवमां एक पल्योपमनुं आयुष्य जोगवी तिहांथी चवीत्रीजे जवे श्रीरुपजदेव स्वामीनो पुत्र जरत चक्रवर्त्ती तेनो मरीचि नामे पुंत्र थयो

तेणे एक दिवस श्रीरूषभदेव जगवाननी देशना सांजलीने दीक्षा लीधी ते वखत बीजा पण जरत राजाना पांचसे पुत्र अने सातसे पोतरा मली वारशे पुरुषोए दीक्षा लीधी,एक दिवस उष्ण काले शरीरमां ताप घणो लागो तेथी ते मरीचिने मनमा नाहावानी ईछा थई तेवारे संयमनो निर्वाह दोहेलो तेथी दीक्षा पालवाने असमर्थ अने घरे पण जवाय नही एवु विचारी साधुनो वेष गंमीने मन कल्पनाये नवो त्रिदमीनो वेश धारण कर्यो लोक पूछे तेवारे एवु कहेजे साधु त्रणदंमथी रहित छे अने हु त्रणदंम सहित छु माटे महारे त्रणदमनु चिन्ह हो तथा साधु महाराज द्रव्य अने जावथी लोच करे छे हु लोचकरवाने असमर्थ होवाथी महारे मस्तकें शिखा अने मुंमन एटले क्षुर मुंम हो तथा साधु सर्व प्राणातिपातादिकथी विरम्या छे महाराथी तेम पली शकतुं नथी माटे महारे स्थूल प्राणातिपातनी विरति हो तथा साधु शीलेकरी सुगंधित छे अने हु तेम नथी माटे माहारे बावना चंदननु विलेपन हो तथा साधु मोह रहित छे अने हु मोहें करी ढांक्यो छुं माटे माहारे एक छत्र ढांकवा सारु हो तथा साधु पाडकाये करी रहित छे हुं तेम नथी माटे महारे पगे पावडी हो तथा साधु कषायथी रहित छे अने हु कषाये सहित छु माटे महारे कषाईया एटले गेरूना रग्या वस्त्र हो तथा साधु स्नाने करी रहित छे अने हु तेम नथी माटे महारे स्वल्प पाणीयें स्नान हो एरीतें जेख लई हाथमां जलकममल धारण करी प्रजुना समोसरणनी बाहेर बेसे परतु एवो विरूप वेश छतां पण जे कोई पूछे तेनी आगल खरे खरी हकीगत कहे अने एनी पासे आवनारनें शुद्ध साधुमार्गनो उपदेश आपी श्रीरूषभदेव जगवान पासे दीक्षा देवरावे एवो थको जगवान साथे विचरे एकदिवस श्रीरूषभदेव स्वामी अयोध्याये पधार्या तेवारें जरतचक्रवर्त्तिये परमेश्वरने वदना करी पू

चित्र





छयुं जे हे जगवत ! आ समोसरणमां कोई तीर्थंकरनो जीव छे ? तेवारे जगवान बोल्या के समोसरणमां तो नथी परतु समोसरणनी बाहेर ताहारो मरीचि नामे पुत्र जेणे त्रिदंमीनो वेष धारण कस्यो छे ते चोवीशमो श्रीमहावीर नामा तीर्थंकर थाशे तथा एज मरीचिनो जीव ते आ जरत क्षेत्रमां पोतनपुर नगरे त्रिपृष्ट नामे पहेलो वासुदेव थाशे तथा श्रीमहाविदेह क्षेत्रमां मूका नगरीये प्रियमित्र नामा चक्रवर्त्ती थाशे एवी वात सांजलीने जरत महाराज हर्षवत थइ श्रीजगवान पासेथी मरीचिने वांदवानी आज्ञा लेइ समोसरणमांथी उठीनें समोसरणनी बाहेर ज्यां मरीचि बेठो छे त्यां आव्या अने त्रण प्रदक्षिणा आपी वांदीने कह्यु के हे मरीचि ! हुं तने तथा ताहारा त्रिदंमीना जेखने तथा तुं वासुदेव थाइश ते ताहारा वासुदेव पणांने तथा चक्रवर्त्ती पणांने नमतो नथी परतु चोवीशमो श्रीमहावीर नामे तीर्थंकर थाइश माटे तेने वाडु एम कही जरत महाराज स्वस्थानकें गया पछी ए वात सांजलीने मरीचि घणा आनंदथी बोल्यो के एकतो महारो दादो तीर्थंकर तथा महारो पिता चक्रवर्त्ती अने हुं पोते पण पहेलो वासुदेव थाइश तथा चक्रवर्त्ती पण थाइश वली छेल्लो चोवीशमो तीर्थंकर थाइश माटे मने वासुदेवादिक अधिक पदवीउं मलशे तेथी अहो महारु उत्तम कुल एम कहीने पोतानी जुजायें ताली ठोकी महा हर्षवत थयो थको हाथे तालोटा देतो नाचवा लाग्यो, एवीरीतें पोताना कुलनो मद कस्यो तेथी नीचगोत्र कर्म बांध्यु जेमाटे १ जातिमद, २ कुलमद, ३ लाजमद, ४ ऐश्वर्यमद, ५ बलमद, ६ रूपमद, ७ तपमद, अने ८ श्रुतमद ए आठ मदने करतो थको जीव हीन जात्यादिकने पामें हवे कोइएक दिवस मरीचिना शरीरमां रोग उपन्यो तेवारे तेनो जिन्नवेष देखीने असयति पणाने लीधे कोइ पण साधु तेनो वैयावच्च करे

नही ते जोइ मरीचिये मनमां चितव्युं के मने रोग मटी जाय अने सारो थाउं तो एक शिष्य करु के जे मने रोगादिक अपने वैयावच्च करवा काम आवे एम निर्धारी राख्यु पछी केटलाएक दिवसे तेने रोग मट्यो अने शरीरे शाता थइ, एक दिवसे कोइ कपिल नामा राजपुत्र मरीचि पासे आवी धर्मोपदेश सांभली प्रतिबोध पाम्यो पछी मरीचिने कहेवा लागो के मने दीक्षा आपो ते सांभली मरीचि बोल्यो के श्रीऋषभदेव स्वामी पासेथी दीक्षा ल्यो तेवारे कपिल राजपुत्र श्रीऋषभदेवजीना समोवसरणमां गयो तिहां प्रभुने समोसरणमां वेग जोइ फरी मरीचि पासे आवीनें बोल्यो के श्रीऋषभदेवजीतो राज्य लीला भोगवे छे माटे तेमनी पासे तो धर्म कांइ पण नथी पण ताहारा पासे कांइ धर्म छे के नथी ? एवु वचन सांभली मरीचिये तेने यथार्थ कह्यु तो पण बहुल कर्मी पणा माटे तेणे मान्युं नही तेवारे मरीचिये आदि कषाय, सहित मतिभ्रशथी, मिथ्यात्वोदयना योगे, शिष्यना लोभथी, स्वधर्म थापवा विचार्युं जे ए म्हारे योग्य छे एम चितवीनें बोल्यो के हे कपिल ! कांइक जैनधर्म म्हारा पासे पण छे माटे तु सुखें दीक्षा ले, हुं तुजनें दीक्षा आपीश एवा प्रकारे पोताना अर्थ सारुं कपिलने दीक्षा दीधी ए उत्सूत्र भाषण कर्युं पछी ते कर्मनें आलोयु पडिक्कम्यु नही तेना योगथी एक कोडाकोडी सागरोपम संसारमां परिभ्रमण करवा संबधि कर्म उपार्जन कर्युं पछी ते मरीचि अनुक्रमे पोतानु चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगवी समाधि मरण करीने ॥ ३ ॥ ॥ चोथे भवे पांचमे ब्रह्म देवलोकें दश सागरोपमनें आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ ४ ॥ ॥ त्यांनु आयुष्य पूरण करी चवीनें पांचमे भवे कोल्लागसन्निवेशने विषे एंशी लाख पूर्वनें आउखे कौशिक नामा विप्र थयो त्यां पण छेल्ली तापसी दीक्षा ग्रहण करी आयुष्य पूरु करी मरण पामीने ष

णाकाल पर्यंत संसार परिभ्रमण करी ॥ ५ ॥ छठे भवे थूणापुरीमां पुष्पमित्र नामा ब्राह्मण थयो तिहां त्रिदंडी तापस थई बहोतेरलाखपूर्व आयु भोगवी ॥ ६ ॥ ॥ सातमे भवे पहेले सौधर्म देवलोके मध्यम आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ ७॥ ॥ त्यांथी चवीने आठमे भवें चैत्य सन्निवेशें साठ लाख पूर्वने आउखे अग्निद्योति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पण त्रिदंडी तापस थई काल करीने ॥ ८ ॥ नवमे भवे बीजे ईशान देवलोके मध्यम आउखे देवता थयो ॥ ९ ॥ त्यांथी चवी दशमे भवें मंदिराख्य सन्निवेशें छप्पन्न लाख पूर्वने आउखे अग्निभूति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पण त्रिदंडी पणुं ग्रहण करी मरण पामीने ॥ १० ॥ अगीआरमे भवे त्रीजे सनत्कुमार नामा देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ ११ ॥ त्यांथी चवी बारमां भवमां श्वेतांबिका नगरीनें विषे चुम्मालीश लाख पूर्वने आउखे भारद्वाज नामा ब्राह्मण थयो अंते त्रिदंडी पणुं ग्रहण करी त्यांथी मरण पामीनें ॥ १२ ॥ तेरमे भवें चोथा माहेंद्र नामा देवलोकने विषे मध्यम आउखे देवता पणें उपन्यो ॥ १३ ॥ त्यांथी चवी घणुं संसार भ्रमण करी वली चौदमां भवे राजगृही नगरीने विषे चोत्रीश लाख पूर्वने आउखे थावर नामा ब्राह्मण थयो त्यां त्रिदंडी तापस पणुं अंगीकार करी मरण पामीने ॥ १४ ॥ पन्नरमें भवे पांचमें ब्रह्म देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ १५ ॥ त्यांथी चवीने वली पण घणुं ससार भ्रमण करी शोलमां भवने विषे राजगृही नगरीनो चित्रनंदी नामेराजा तेनी प्रियंगु नामा राणी तेनो पुत्र विशाखानदी हतो अने ते राजानो बीजो न्हानोभाईविशाखाभूति नामे युवराजा हतो तेनी धारणी नामे राणीनी कूखने विषे ते मरीचिनो जीव आवी पुत्र पणे उपन्यो, तेनुं विश्वभूति नाम मावित्रे दीधुं, ते अनुक्रमे यौवन वय पाम्यो त्यारे तेना पिताये

अते अनशन करी त्यांइ। मरण पामीनें ॥ १६ ॥ सत्तरमे जवे महाशुक्र नामा सातमा देवलोकने विषे सत्तर सागरोपमना पूरण आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ १७ ॥ ॥ तिहांथी चवीनें अढारमे जवे पोतनपुर नगरमां प्रजापति नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमां चार सुपने सुचित्त एक पुत्र थयो तेनुं नाम अचल दीधुं तथा वली एज प्रजापति नामा राजानी मृगावतीनामे एक पुत्री थइ ते एक दिवसे विवाहनी चिताने लीधे ते कुमारी नी माताये तेने शणगारी सुशोभित वस्त्राभूषण पहेरावीनें राजा पासें मोकली अने विचार्युं जे ए महोटी कन्या यौवन वय पामेली देखीने राजा कोइ कुलवान राजकुमारने परणावी देशे, प रतु राजा तो ते पोतानी सुरूपवाली पुत्रीने आवेली देखीनें कामेकरी पीडीत थयो अने पोतेज पोतानी दीकरीनें परणवानी इच्छा करतो थको लोको अपवाद न करे एटला माटे सन्नामा बेठेला लोकोनी आगल कहेवा लाग्यो के हे जाइउ! जे लोकनें विषे सारामां सारी चीज होय ते कोनी कहेवाय? तेवारे सजाजनो बोल्या के जे उत्तम चीज होय ते तमारी कहेवाय, राजा बोल्यो जे तमारा मुखथी जे वचन निकल्यु ते निश्चयथी सत्य छे माटे आ सर्वोत्कृष्ट जे कन्यारत्न छे ते हु बीजाने आपीश नही एनें हु पोतेंज परणीश एम कही ते पोतानी पुत्रीने पोतेज परण्यो अने तेनी साथे संसार संबंधि सुख जोगववा लाग्यो एम करतां एक दिवस ते विश्वभूतिनो जीव देवलोकथी चवीने मृगावतीनी कूखें आवी उपज्यो तेवारे मृगावतीये सात स्वपनां दीठां पछी पूरण नव महीने पुत्र जन्म्यो तेवारे राजाये महोटो महोत्सव करीने ते बालकनु नाम त्रिपृष्ठ एवु दीधु अनुक्रमे ते बालक महोटो थयो एवा अवसरमां शंखपुर नगरनी पासे तुंगी नामा पर्वत छे ते पर्वतनी गुफामा विशाखानंदीनो जीव सिंह पणे आवी उपन्यो

छे ते वखतमां अश्वग्रीव नामे प्रतिवासुदेव हतो तेनु शालिनुं खेत्र ते पर्वतनी नजीक हतु ते शालिना खेत्रनो जे रखवालो रहेतो तेने ते सिंह मारी नाखतो हतो तेवारे ते अश्वग्रीव पोताना सेवक राजाउनी ऊपर वर्षोवर्ष वारा प्रमाणे हुकुम लखी खेत्रनी चोकी करवा मोकलतो हतो एम करतां एक वर्षे वारा प्रमाणे ते प्रजापतिराजाने चोकी करवानो हुकुम आव्यो ते वारे ते खेत्रनी रखवाल करवा सारुं राजाये पोतें जावा मांड्युं तेने त्रिपृष्टे वारी राख्यो अने पोते पोतानो अचल नामे भाइ जे गौतमस्वामीनो जीव छे अने आ भवमां बलदेव थाशे ते सहित खेत्रनी रखवाल करवा गयो, तिहां बख्तर टोप पहेरी रथमां वेशी अचलने सारथी करी शस्त्र लइनें जे गुफामां सिंह रहे छे त्यां गयो एटलामा तो रथनो अवाज सांभलीनें सिंह पण गुफाथी बाहेर आव्यो तेने देखीने त्रिपृष्टे विचार्युं जे ए सिंहने वेसवा रथ नथी तो महारे पण रथमां वेसी लडवु नही वली एनी पासे शस्त्र तथा कवच नथी तो महारे पण शस्त्र तथा कवच नही राखवां पछी शस्त्र तथा कवचनें रथमां मूकी पोते रथथी हेठो उतरी सिंहने कहेवा लाग्यो के अरे ढांढीना खावा वाला उठी उभो थइने महारी सामो आवीजा एटलुं कह्यु के तरत ते सिंह पण उठ्यो अने मुख फाडी साहमो लडवा आव्यो के तरतज त्रिपृष्टे ते सिंहना होठ पकडी बे कटका करी चीरी नाख्यो, तो पण ते सिंहनो जीव जाय नही, तेवारे त्रिपृष्टनो सारथी सिंहने कहेवा लाग्यो के हे सिंह ! जेम तुं मृगराज छो तेम आ ताहारो मारनार पण नरराज छे माटे तने कोइ साधारण माणसे मार्यो नथी एवी वात सांभली सिंह मरण पामीनें नरकें गयो पछी ते सिंहनुं कलेवर लइ गाममां आवी लोकोनी वचमा कलेवर नाखीनें त्रिपृष्ट बोलवा

लागो के आ उपद्रव करनार सिं आव्यो हुं माटे हवे महारा प्रतापथी अश्वग्रीव
प्रतिवासुदेव सुख समाधिथी चावल ब्रात लोकोना मुखथी सांजलीनें अश्वग्रीवने महा
क्रोध उपन्यो तेथी पोतानी सेना लइने । आव्यो ते त्रिपृष्ट साथे युद्ध करतां कोइ पण
रीतें पोहोची शक्यो नही तेवारे चक्र फेरवीने तेना उपर नाख्यु ते चक्र पण त्रिपृष्टना हा
थमां आवी वेतु पछी तेज चक्र त्रिपृष्टें अश्वग्रीव उपर चलाव्यु तेणे जइ अश्वग्रीवनु मस्तक
छेदी लावीनें त्रिपृष्ट आगल हाजर कयु ते जोइ देवो आकाश उपर रही जय जय शब्द कही
बोल्या के आ नरतखेत्रमां ए त्रिपृष्ट पहेलो वासुदेव थयो पछी ते त्रिपृष्ठ अनुक्रमें त्रण खंम
साधीने वासुदेवनी राजलीलाना सुख नोगवतां थकां एक दिवस नाटक थातु हतु तेवामां
राजाने निद्रा आववा लागी तेवारे शय्यापालकनें कयु के मने निद्रा आवी जाय तेवारे ए
नाटक करनाराउने शीख आपी वारी राखजो तो पण तें शय्यापालकें श्रोत्रेंद्रियना रसें करी
तेमनें गीत गान करतां वारी राख्या नही एटलामां त्रिपृष्ट जागृत थइनें बोल्यो के अरे आ
नाटकीआनें शा वास्तें रजा आपी नही तेवारे शय्यापालके कयु के हे प्रजु ! श्रोत्रेंद्रियना
रसे करी हु रजा आपता चूकी गयो ते सांजली त्रिपृष्टने क्रोध चड्यों पछी सीशु गरम करी
तेनो उनो उनो रस ते शय्यापालकना कानमा रेडाव्यो तेथी ते मरण पामीनें नरकें गयो
एरीतें ते वासुदेवना नवमां घणा महोटा पापोपार्जन करी चोराशी लाख वर्षनु आयुष्य नोग
वीने एंशी धनुष प्रमाणना शरीरनो त्याग करी मरण पामीने ॥ १८ ॥ ॥ उंगणीशमे नवे
सातमा नरकने विषे नारकी पणे जइ ऊपन्यो ॥ १९ ॥ ॥ त्यांथी मरण पामीने वीशमे
नवे सिंह थयो ॥२०॥ तिहांथी मरण पामीने एकवीशमे नवे चोथा नरकने विषे नारकी पणे



चित्र ४
त्रिपृष्ट वासुदेव
दासी
शय्यापालक
विणामृदग
बजावनार

लइ उपन्यो ॥ २१ ॥ त्यांथी मरण पामी घणुं संसार भ्रमण करी बावीशमे भवे रथपुर नगरे प्रियमित्र नामे राजानी विमला नामे राणी तेनी कूखने विषे पुत्र पणे उपन्यो मा वित्रे विमल एवु नाम दीधुं अनुक्रमे सर्व कलानो पारगामी थयो पिताये तेने राज्य सोप्युं एक दिवस वनमा क्रीडा करवा गयो त्यां पाश मांहेथी हरण छोडाव्यां तिहां दयाना प्रभावे भद्रक परिणामें करी मनुष्यायु बांध्युं, छेवटे दीक्षा लइ उग्र तपश्चर्या करी, चक्रवर्त्तीनी पदवी उपार्जी अते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी चवीनें ॥ २२ ॥ त्रेवीशमे भवे पश्चिम महाविदेहमां मूका नगरीनो धनंजय नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखे आवी उपन्यो माताये चौद स्वपनां दीठां पछी पूरण मासे पुत्र जन्म्यो तेवारें मातपिताये महोटा महोत्सव पूर्वक तेनुं प्रियमित्र एवु नाम दीधुं ते अनुक्रमे छ खंड साधी चक्रवर्त्तीनी पदवी भोगवी अंते श्रीपोटिलाचार्य पासेथी दीक्षा लइ क्रोड वर्ष पर्यंत चारित्र पालि सर्व चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पूरण करी त्यांथी मरण पामी ॥ २३ ॥ चोवीशमे भवे शुक्र नामा सातमे देवलोकें सत्तर सागरोपमने आयुखे देवता पणे उपन्यो ॥ २४ ॥ त्यांथी चवी पच्चीशमे भवें एहज भरतखेत्रमां छत्रिका नामे नगरीनो जितशत्रु नामे राजा तेनी भद्रा नामे राणीनी कूखने विषे पचीश लाख वर्षने आयुखे नंदन नामे राजपुत्र थयो त्यां चोवीश लाख वर्ष सुधी गृहस्थावासे रहीने पछी पोटिलाचार्य पासेंथी दीक्षा लइ एक लाख वर्ष पर्यंत दीक्षा पाली जावज्जीव सुधी मास खमणे करी वीशस्थानकनुं तप आराध्युं तेथी तीर्थंकर नामकर्म निकाचित उपार्ज्जी अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी काल करीने ॥ २५ ॥ छवीशमे भवे दशमा प्राणात देवलोकने विषे पुष्पोत्तरावतंसक नामना विमानमां वीश सागरोपमनें आ

उखे देवता पणे उपन्या ॥ २६ ॥ पछी त्यांथी चवीने मरीचिना नवमां जे कुलनो मद कस्यो हतो ते नीचगोत्रकर्मना उदयथी सत्तावीशमा नवने विषे रूषनदत्त ब्राह्मणनी देवानदा नामे स्त्रीनी कूखे आवी उपन्या छे एरीतें प्रथम तीर्थंकर श्रीरूषनदेव नगवानें नरत चक्रवर्त्तीनी आगल कह्यु हतु जे मरीचिनो जीव तीर्थंकर थाशे ते निश्चयथी थयो ॥ २७ ॥ ॥ हवे नगवान् श्रीमहावीर देवानदानी कूखे अवतस्या ते समयने विषे त्रण ज्ञान सहित गर्नपणे आव्या त्यां हुं देवलोकथी चवीश एवु जाणे पण चववाना वखतनो जे वर्त्तमान एक समय सूक्ष्म काल छे माटे ते न जाणे अने त्यांथी चव्या पछी हु देवलोकथी चवीने देवानदानी कूखे उपन्यो छु एवु जाणे हवे जे रात्रिमां श्रमणनगवान् श्रीमहावीर स्वामी देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखे उपन्या ते रात्रिमां देवानदा ब्राह्मणी सुखशय्यामां कांइक सूती कांइक जागती अर्थात् थोडीक निद्रामा रही थकी,उदार कल्याणकारी,उपद्रव रहित,धनकारी,मगलकारि शोना सहित एवां चौद महोटां स्वपनां देखीने जागी ॥ ते चौद स्वपनाना नाम कहे छे पहेले स्वपने हाथी दीठो, बीजे वृषन, त्रीजे सिंह, चोथे लक्ष्मी, पांचमें फूलनी माला, छठे चंद्र, सातमें सूर्य, आठमें ध्वजा, नवमे कुंन कलश, दशमें पद्म सरोवर, अगीआरमें क्षीर समुद्र, बारमे देवविमान, तेरमे रत्नो नो ढगलो राशि, चौदमे निर्धूम अग्नि ए चौद स्वपनां एवा रूपनां कल्याणकारी महामगलना करनारां देखीने जागी थकी हर्ष सतोष पामी, चित्तमां आनद पामी, महोटा प्रेम सहित मन थयु, परमहर्ष उपन्यो, हर्षने विषे पसरतुं छे मन जेनुं, उत्कृष्ट सौम्य मन छे जेनुं, जेनां मनमां हर्ष उल्लास थयो छे, मेघनी धारायें करी हणाएुं एवु कदब पुष्प जेम विकस्वर थाय तेम जेनां रोमे रोम विकस्वर थयां छे एवी थइ थकी पूर्वे दीठेला स्वपनांने याद करे

याद करीने सूवाना पलंग उपरथी उठे उठीनें पादपीठ थकी पण उतरे उतरीने नही उता वली, नही धीरी, एवी वे गतिनी वचमां ठहेरती थकी ॥५॥ राजहंसीनी गति सरखी चाल ती थकी जिहां रुषभदत्त ब्राह्मण छे त्यां आवती हवी, आवीने रुषभदत्त ब्राह्मण प्रत्ये जय विजय शब्द करीने वधावे वधावीने भद्रासन एटले बाजोट उपर बेठी, त्यां मार्गमां आववानो खेद मटावीने, परसेवो उपशमावीने, बे हाथ जोडी दश नख एकठा करी मस्तकें अंजली करीने कहेवा लागी के हे स्वामि! में आज रात्रे शय्यामां कांइक सूतां हस्ति आदिक चौद सुपनां दीठां ॥ ६ ॥ तेनुं शुं फल थशे, कया प्रकारना कल्याणने करनारां थशे तेवारे रुषभ दत्त ब्राह्मण देवानंदाना मुखथी एवु सांभलीने पोताना हृदयामां घणो खुशी थयो, जेवा पाणी नी धाराथी कदंब पुष्प खुल्ले तेवी तेनी रोमराजि प्रफुल्लित थई ते सुपनोना अर्थ विचारवा लाग्यो विचारीने देवानंदा ब्राह्मणीने कहे उदारकारी हे देवाणुप्रिया! तमे जे सुपनां दीठां ते मं गलकारी छे, तमे जे सुपनां दीठां तेनुं फल एवु छे के हे देवाणुप्रिया! धननो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, निश्चे तमारे नव महीनाने साडा सात दिवस गया के सुकुमार छे हाथ पग जेना, हीन अंग रहित, संपूर्ण पांचइंद्रिय सहित शरीर जेनुं छे, लक्षण, व्यंजन, अने गुणेकरी सहित तथा मानोन्माने करी सहित संपूर्ण भलुं शरीर जेनुं छे एवो पुत्र थाशे हवे लक्षण कोने कहीये ते कहे छे, जे पुरुषनो ज्यारे जन्म थाय त्यारे तेना अंगमां पुण्यनी रेखा प्रमुख पडे तेने लक्षण कहीये ॥ सहज लक्षणं इति वचनात्॥ तिहां चक्रवर्त्ती तथा तीर्थंकरोने तो एक हजारने आठ लक्षण होय अने बलदेव तथा वासुदेवने एकसोने आठ लक्षण होय तथा बीजा सामा न्य भाग्यवत पुरुषोने बत्रीश लक्षण होय तेनां नाम कहेछे १ छत्र, २ वीजणो, ३ धनुष,

चित्र ५





याद करीनें सूवाना पलंग उपरथी उठे उठीने पादपीठ थकी पण उतरे उतरीनें नही उता वली, नही धीरी, एवी वे गतिनी वचमां ठहेरती थकी ॥५॥ राजहंसीनी गति सरखी चालती थकी जिहां रूषभदत्त ब्राह्मण छे त्यां आवती हवी, आवीने रूषभदत्त ब्राह्मण प्रत्ये जय विजय शब्द करीनें वधावे वधावीनें जद्रासन एटले बाजोट उपर वेठी, त्यां मार्गमां आववानो खेद मटावाने, परसेवो उपशमावीने, वे हाथ जोडी दश नख एकठा करी मस्तकें अंजली करीनें कहेवा लागी के हे स्वामि! मे आज रात्रे शय्यामां कांइक सूतां हस्ति आदिक चौद सुपनां दीठां ॥ ६ ॥ तेनुं शुं फल थशे, कया प्रकारना कल्याणने करनारां थशे तेवारे रूषभदत्त ब्राह्मण देवानंदाना मुखथी एवु सांभलीने पोताना हृदयामां घणो खुशी थयो, जेवा पाणीनी धाराथी कदंब पुष्प खुल्ले तेवी तेनी रोमराजि प्रफुल्लित थई ते सुपनोना अर्थ विचारवा लाग्यो विचारीने देवानंदा ब्राह्मणीने कहे उदारकारी हे देवाणुप्रिया! तमे जे सुपनां दीठां ते मंगलकारी छे, तमे जे सुपनां दीठां तेनुं फल एवु छे के हे देवाणुप्रिया! धननो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, निश्चे तमारे नव महीनाने साडा सात दिवस गया के सुकुमार छे हाथ पग जेना, हीन अंग रहित, संपूर्ण पांचइंद्रिय सहित शरीर जेनुं छे, लक्षण, व्यंजन, अने गुणेकरी सहित तथा मानोन्माने करी सहित संपूर्ण भलुं शरीर जेनुं छे एवो पुत्र थाशे हवे लक्षण कोने कहीये ते कहे छे, जे पुरुषनो ज्यारे जन्म थाय त्यारे तेना अंगमां पुण्यनी रेखा प्रमुख पडे तेने लक्षण कहीये ॥ सहजं लक्षणं इति वचनात्॥ तिहां चक्रवर्त्ती तथा तीर्थंकरोने तो एक हजारने आठ लक्षण होय अने बलदेव तथा वासुदेवनें एकसोने आठ लक्षण होय तथा बीजा सामान्य भाग्यवत पुरुषोने बत्रीश लक्षण होय तेनां नाम कहेछे १ छत्र, २ वीजणो, ३ धनुष,

४ रथ, ५ वज्र ६ का , ७ अंकुश, ८ वावडी ए स्वस्तिक १० तोरण, ११ तलाव, १२ सिंह, १३ वृक्ष, १४ चक्र, १५ शंख, १६ हाथी, १७ समुद्र, १८ कलश, १ए प्रासाद, २० मत्स्य, २१ यव, २२ यूप यज्ञनुस्थंग, २३ थांजलो, २४ कमंडल, २५ पर्वत, २६ चामर २७ काच, २८ वलद, २ए पताका ३० लक्ष्मी, ३१ माला, ३२ मयूर ए वत्रीश लक्षण पूर्वकृत पुण्यना योगवाला पुरुषना हाथ पगना तलीयाने विषे होय ए आदि देइनें एक हजारने आठ लक्षण पण एवाज उत्तम प्रकारनां जाणी लेवां तथा वली प्रकारांतरे वत्रीश लक्षण कहे छे जेना नख, पग, हाथ, जीन, होठ, तालु अने आंख्योना खुणा ए सात वानां रक्त होय सारां होय ते पुरुष नाग्यवान जाणवो ते ससांग लक्ष्मी नोगवे तथा जेनी काख, छाती, कोट एटले गलानी हडबटी तथा गलानो मण्यो, नाक, नख अने मुख ए छ वानां उचां होय तो ते पुरुष सर्व प्रकारे उन्नति पामे तथा दात, चामडी, केश, आंगुलीना पर्व एटले आंगलीनी रेखा अने नख ए पांच जेनां पातलां होय सूक्ष्म होय तो ते पुरुष घणो धनवान् थाय तथा नेत्र, स्तननां अतर, नाक, गलानो मण्यो अने नुजाउ ए पांच जेना लांबा होय ते पुरुषनु आयुष्य महोटु होय घणुं धन पामे अने पराक्रमी होय तथा ललाट, पेट अने मुख ए त्रण जेनां महोटां होय तो ते पुरुष राजा थाय तथा वली ग्रीवा, जघा अने पुरुष चिन्ह, ए त्रण जेनां लघु होय टुंका होय तो ते पुरुष राजा थाय तथा बोलवानो स्वर, फूटी एटले नाजी अने सत्व ए त्रण जेना गंनीर होय ते पुरुष पृथ्वीनो धणी थाय अथवा प्रधान थाय एम जे पुरुषमां जेवा लक्षणहोय ते पुरुषमा तेवो आचार पण होय, जेवु रूप होय तेवु धन पण होय, जेवो स्वनाव होय तेवो गुण पण होय ए प्रकारांतरे वत्रीश लक्षण कही देखाडयां तथा बीजां पण केटलाएक लक्षण कहे छे पद्म, वज्र अंकुश, छत्र, शंख

अने मत्स्य ए जेना हाथ पगमां देखाय ते पुरुष लक्ष्मीपति थाय तथा जेना चीकणा त्रांबाना वर्ण जेवा नख होय ते पुरुष सुखी होय तथा जेना चलकता उज्वल अनारवत् स्नेह निविड एवा बत्रीश दांत पूरेपूरा होय ते राजा थाय अने जेना एकत्रीश दांत होय ते भोगी थाय तथा त्रीश दांत वालो मध्यम कहेवाय अने त्रीशथी पण उंडा दांत जेना होय ते सामान्य पुरुष गणाय जे पुरुष अत्यंत ठींगणो तथा अत्यंत लांबो तथा अत्यंत जाडो होय तेमज जे अत्यंत दुर्बल, अत्यत कालो अथवा अत्यंत गौर वर्ण वालो होय ए छ ने विषे सत्व पणुं होय, जेना मस्तकने जमणे भागे सवलो भमरो होय तो शुभ जाणवो अने अवलो भमरो होय तो अशुभ जाणवो ॥ ॥ तथा जेना हाथने विषे एक पण रेखा नहोय अथवा घणी रेखाउ होय ते पुरुषनुं आयुष्य अल्प होय तथा जेने देवपूजानी आंगुलीनां छेल्ला वेढाथी अधिक कांइक उंची टचली आंगुली होय तेपुरुष धनवान् होय तथा तेनी मातानो पक्ष घणो होय तथा जेना मणीबंधथी बापनी रेखा तथा करतलथी वित्तनी रेखा अने आयुखानी रेखा जेनी संपूर्ण होय ते पुरुषनुं गोत्र, धन तथा आयुखुं संपूर्ण होय अथवा आयुषनी रेखा जेटली आंगुली अतिक्रमे तेटली पचवीशी आयुखाना वरसनी जाणवी तथा जेना अंगुठाने मध्यभागें यव होय ते पुरुष विद्यावत यशस्वी होय अने अजवाला पक्षमां तेनो जन्म होय तथा जेनां नेत्र रक्त होय तेनुं पासुं स्त्री मूके नही तथा जेना नेत्र पीलां होय तेने धन मूके नही तथा जेनी भुजा दीर्घ होय तेने इश्वर पणुं होय तथा जेनुं दृढ शरीर होय तेने सुख घणुं होय तथा जेना हाथ पगने विषे कमल, छत्र, अकुश, शंख, मत्स्य प्रमुख होय ते पुरुष महोटा लक्षणवालो होय तथा जेना नख राता होय तेने धननु सुख घणुं होय तथा जेना नख उजला होय ते भिक्षुक होय तथा

जेना नख लुखा होय ते अनाचारी होय ॥ ॥ वली शरीर माहे मुख प्रधान छे ते मुखमां वली नासिका छे ते प्रधान छे वली नासिकामा नेत्र छे ते प्रधान छे माटे जेना जेवा नेत्र होय तेनो तेवो शील एटले अचार पण होय तथा जेवी नासिका तेहवु आर्य पणुं होय, जेवु रूप होय तेवु वित्त होय, जेवु शीयल होय तेवा गुण होय उक्तंच ॥ यथानेत्र तथा शील, यथानासा तथार्जव ॥ यथारूप तथा वित्तं, यथाशील तथा गुणा ॥ पाठांतरे ॥ सर्वसत्त्वे प्रतिष्ठित ॥ १ ॥ इत्यादिक लक्षण जाणी लेवां ए लक्षण कह्यां ॥ ॥ हवे व्यजननु स्वरूप कहे छे जे जन्म्या पछी अंगमां प्रगट थाय तेने व्यंजन कहीये जेमके मसो, तिल अने लसण इत्यादिक सर्व व्यजन जाणवां ते पुरुषनें जमणी बाजुये होय तो सारां जाणवां अने स्त्रीनें डाबी बाजुयें होय तो सारां जाणवा ॥ ॥ हवे गुणनु स्वरूप कहे छे जेमां सौभाग्य पणुं, उदार पणु अने धैर्यपणुं इत्यादिक होय ते सर्व गुण जाणवा ॥ ॥ हवे मानोन्माननुं स्वरूप कहे छे. पुरुष प्रमाणे पाणीथी भरेली कुंडीमां पच्चीश वर्षनां पुरुषने बेसाडवो पछी ते पुरुषना बेसवा थकी जो एक द्रोण भार पाणी कुंडीमांथी बाहेर नीकले तो ते पुरुष मानोपेत एटले प्रमाण सहित जाणवो अने जो त्राजवामां तोलता ते पुरुषनो अर्द्ध भार प्रमाण तोल थाय तो ते उन्मानोपेत पुरुष जाणवो ॥ ॥ इहां तोलनी वार्त्ताना प्रसगमां भारनु प्रमाण कही देखाडे छे प्रथम छ सरसवे करी एक यव थाय, त्रण यवे एक चिणोठी थाय, त्रण चिणोठीये एक वाल थाय तेवा शोल वाले एक गदीयाणु थाय तेवा दश गदीयाणे एक पल थाय तेवा दोढसो पलनो एक मण थाय तेवा दशमणनी एक घडी थाय तेवी दश घडीये एक भार प्रमाण थाय एवा अर्द्धभारे तोलाय ते पुरुष उन्मानोपेत मान रहित जाणवो एरीते पोणा चार मण उन्मानना थाय ने

॥ वली जे पुरुषनुं पोताने आंगले नरतां पोतानुं शरीर एकसोने आठ आंगलनुं होय ते ठ
त्तम पुरुष जाणवो तेमां बार आंगलनुं मुख होय तेने नवे गुणीये तेवारे १०८ थाय ते मानो
पेत पुरुष जाणवो तथा जेनुं ठन्नुं अंगुलनुं शरीर होय ते मध्यम सम पुरुष जाणवो, जेनुं चो
राशी आंगुलनुं शरीर होय ते हीन पुरुष जाणवो अने श्रीतीर्थकरनुं तो एकसो वीश आंगुल
नुं शरीर होय केमके तीर्थंकरने माथे बार आंगुलनी उष्णीष राखडीने ठामे होय तेमाटे एवो
सर्व अंगे सुंदर, चंद्रमा समान सौम्य आकार वालो, जेनुं मनोहर प्रीतिकारी दर्शन ठे एवा
सुरूपवत देवकुमारसमान पुत्रने तुं जणीश ॥९॥ ॥ते पण बालक बाल्यावस्था रहित थाशे
तेवारे ते पोताना विज्ञान नावथीज थाशे ते केवो थाशे ते कहे ठे एटले ते पुत्र युवान अव
स्था पामे थके ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ए चार वेद तथा पांचमो इतिहास पुराण
शास्त्र, ठठो नाम कोश निघंटनाम माला ए सर्व ठ ए शास्त्र ने अंग उपांग सहित तेना तात्प
र्यनो जाणवा वालो थाशे, चार वेदनो नणाववा वालो थशे, जे नूलशे तेने बताववा वालो
नूल देखाडवा वालो थशे, जूठु बोलशे तेने वर्जवा वालो थशे, शुद्धनो धारण करनारो थशे
पारगामी थशे, ठ अंगनो जाण थाशे, साठ अर्थ ठे जिहां एवा साठ तंत्र शास्त्र तथा कपि
लशास्त्रनो जाणनार थशे, गणित शास्त्रनो जाणनार थशे, अक्षर शिक्षामां निपुण थशे,
क्रिया शास्त्रमां निपुण, व्याकरणनो जाणनार, ठंद जोडवामां दक्ष, टीकानो जाण
नार, ज्योतिष शास्त्रमां प्रवीण एम बीजा पण ब्राह्मणोनां शास्त्रोमां परिव्राजकोनां शास्त्रोमां
अत्यंत निपुण मह्यो एवो ताहारो पुत्र थाशे ॥१०॥ तेमाटे तमे रूडा स्वपनां दीठां, जावत्
आरोग्य कारी स्वपनां तमनें आव्यां एवुं वारंवार केहेतो हवो अने पोते पण अनुमोदना

करतो हवो ॥ ११ ॥ हवे देवानदा ब्राह्मणी ऋषभदत्त ब्राह्मणना मुखथी एवा अर्थ सांभळीनें, तेने मनमां धारी राखीनें, हर्ष संतोषयुक्त हृदय वाळी थइ थकी हाथ जोडी, दश नख भेळा करी मस्तके चडावी कहेती हवी ॥ १२ ॥ जे ए वात जेम तमे कही तेमज छे, हे देवाणुप्रिय ! ए सत्यज छे खोटी नथी, हे देवाणुप्रिय ! जे तमे कह्यो छो ते सर्व संदेह रहित छे एवु कहीने ते स्वपना रूडा प्रकारे अंगीकार करीनें ऋषभदत्त ब्राह्मणनी साथे मनोहर मनुष्य संबंधि सुख भोगवती थकी विचरे छे ॥ १३ ॥ ते काळनें विषे शक्रेंद्र देवताउनो राजा जेना हाथमां दैत्योने विदारण करनारुं वज्र छे जेणे पूर्वना भवमां श्रावकनी पांचमी प्रतिमा सो वार वहन करी तेणे करी शतक्रतु एवु बीजु नाम ते पूर्वना कार्त्तिकशेठना भवनी अपेक्षाथी छे ते कार्त्तिक शेठनी कथा कहीये छैये पृथ्वीभूषण नामे नगरने विषे प्रजापाळ नामे राजा हतो ते नगरमां राजानो घणो मानितो अने घणो धनाढ्य जैनधर्मी, परम श्रावक एवो कार्त्तिक नामा शेठ रहेतो हतो तेणे श्रावकनी अगीआर प्रतिमा माहेली पाचमी प्रतिमा सोवार वही तेनु तेथी शतक्रतु एवु नाम लोकोमां प्रसिद्ध थयुं एम करतां एक समये गेरिक नामा तापस महिने महिने पारणुं करे छे ते परिव्राजकें नगरनी बाहेर आवी उतारो कर्यो तेने राजा आदिक सर्व लोक वांदवा गया पण एक कार्त्तिकशेठ शुद्ध समकेति छे माटे वांदवा गयो नही तेथी तेना उपर तापस क्रोध करवा लागो एवामां ते तापसने राजायें पोताने घेर जमवाने नोतरुं दीधु तेवारे तापसे मनमा विचार्यु जे बीजातो सर्व लोक मने वादवा आव्या पण एक कार्त्तिक शेठ जैनधर्मी छे ते मने पगे लाग्यो नथी माटे हवे तेने नमावु एम चितवी राजाने कहेवा लाग्यो जे हे राजन् ! कार्त्तिक शेठ पोतानी पीठ उपर खीरनी थाळी राखीने भोजन करावे तो हु तमारे घेर जमवा आवु

चित्र ६

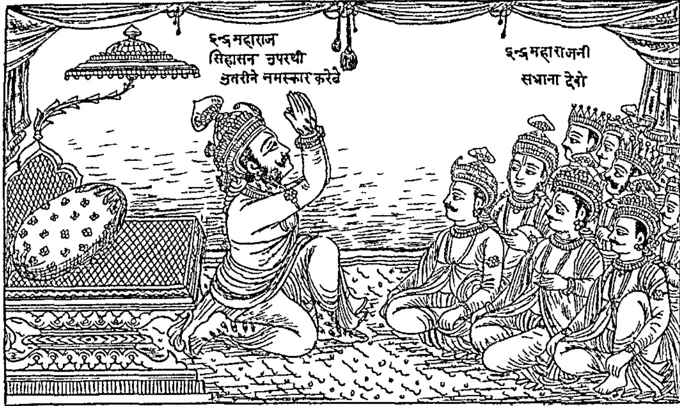


ए वात राजाये कबुल करी तापसने पारणुं करवानुं कहीने पछी राजा कार्त्तिकशेठ पासें आवीने कहेवा लाग्यो जे महारो गुरु गैरिकनामे तापस महारे घेर जमवा आवशे तेनें तमे पीरसवा आवजो ते सांजली शेठ बोल्यो के हुं सम्यक्त्व धारी छुं माटे महारे ए वात योग्य नथी पण तमारी वस्तिमां रहुंछुं माटे शास्त्रमां "रायाजिओगेणं" ए आगार छे ते आगारे करी ताहारी आज्ञाथी जमाडीश परंतु महारा जक्तिजावे करी जमाडीश नही पछी तापस जमवा आव्यो तेवारे शेठे खीर पीरसी, पण तापस जम्यो नही अने कहेवा लाग्यो जे शेठ वांसो मांडे तो पात्र मूकी जोजन करुं पछी राजाना कहेवाथी शेठे आडो थइ वांसो मांड्यो शेठना हाथनी अंगुलीमां वीटी पेहेरी हती तेमां जिनप्रतिमा हति तेनें नमस्कार कर्यो हवे तापस शेठनी पीठ उपर ऊनो ऊनो खीरनुं पात्र मूकी जोजन करतो जाय छे अनें आंगुलीये करी शेठनुं नाक पण घसतो जाय छे ने शेठनें चेष्टामां कहेतो जाय छे के जो मुजनें पगे लागवा न आव्यो तो हुं आ ताहारुं नाक कापु छुं अने हमणा वारवार तुजने महारा आगल नमावुं छुं एम चेष्टा करतो तापस पारणुं करीने पोताने स्थानके गयो अने पाछलथी गरम थाल शेठनी चामडीमां मली गयो ते घणे कष्टे राजायें छोडाव्यो ए कृत जोइ शेठें विचार्युं के जो में पहेलांज दीक्षा लीधी हत तो आज एवी हेलना थात नही एवु चितवी वैराग्य पामीने शेठ एक हजारने आठ वणिक पुत्रोनी साथें श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनी पासेथी दीक्षा लइ द्वादशांगी जणी, बार वर्ष चारित्र पाली सौधर्मेंद्र थया अने गैरिक तापस पण अज्ञान तप करी मरण पामीने इंद्रनुं वाहन ऐरावत नामा हाथी थयो पछी ते देव हाथीनुं रूप करी इंद्रनी पासे आव्यो जेवारे इंद्र तेना उपर चडवा लाग्यो तेवारे ऐरावते देखीने अवधिज्ञाने करी जाण्युं

के अरे एतो कार्त्तिक शेठ छे एवु जाणी नासवा मांम्यो पण इंड तेने पकडीने उपर चड्यो तेवारे शक्रेंडने बीवरावबा सारुं हाथीये बे रूप कस्या ते देखी इंडे पण बे रूप कस्यां वली हाथीये चार रूप कस्यां त्यारे इंडे पण चार रूप कस्या पछी इंडे अवधिज्ञानें पूर्वनो नव जोइ हाथीनें तर्जना करी चलाव्या अने कह्यु के अरे गैरिक हवे तुं क्यां छूटी जाइश तु पूर्वनो नव जाणतो नथी? जे महारी पीठ उपर थाल राखी जम्यो हतो? तो हमणा तुं महारुं वाहन थयो छो माटे जे बांध्यां कर्म ते नोगव्या विना छूटको नथी एवु सांनली, अपराध खमावी मूलगुं रूप धारण करीने हाथी शांत थयो ए इंडमहाराजना पूर्वला नव संबंधि कार्त्तिक शेठनी कथा कही॥ ॥ वली ते शक्रेंडनी सज्ञावे तो बे आंख्यो छे परतु पांचशे देव ते इंडना काम करवा वाला छे ते पांचसो देवोनी हजार आंख्यो एना काममां आवे माटे सहस्राक्ष एवु नाम छे तथा महामेघ जेने वशमा छे माटे मघवा एवु नाम छे तथा पाक नामा दैत्यने शिक्षा दीधी माटे पाकशासन एवु नाम छे एवो शक्रेंड दक्षिणार्द्ध लोकनो ठाकुर, स्वामी, ऐरावत जेनुं वाहन छे, सुरनो इंड, बत्रीश लाख विमाननो मालेक, रजरहित स्वछ निर्मल एवा वस्त्रनो धारण करनारो, लटकायमान माला मुकुटमां नवा सुवर्णना कुंमल तेणे करी घसीजता एवा गाल छे जेना, वली महोटी ऋद्धि, महोटी कांति, महोटु बल, महोटो जश, महोटुं माहात्म्य, महोटु सुख, लांबी पुष्पोनी माला धारण कस्याथी देदीप्यमान छे शरीर जेनु एवो इंड ते सौधर्म देवलोकमां, सौधर्मावतंसक विमानमा, सौधर्म नामे सन्नाने विषे, शक्र नामा सिंहासन उपर बेठो थको, बत्रीश लाख विमानोमां वसनारा देवो, चोराशी लाख सामानिक देवो, तेत्रीश त्रायत्रिंसक गुरु स्थानीया देवो तथा सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए चार लोकपाल देवो, आठ अग्रमहीषी ते शोलहजार

देवीना परिवार सहित, त्रण परषदा, सात कटक, सात कटकना स्वामी, प्रत्येके एकेकी दिशा
मां चोराशी चोराशी हजार करतां चार दिशामां मळी त्रणलाखने छत्रीश हजार आत्म रक्षा
कारी देवो तथा बीजा पण घणा सौधर्म देवलोकना वसवा वाळा एवा देव तथा देवीओ तेमनी
ऊपर रक्षाकारी पणुं, अग्रेसर पणुं, नायक पणुं, पोषक पणुं, सर्वमां महोटाइपणुं, सर्वने
पोतानी आज्ञा मनावतो थको, सेनापति पणुं करतो थको, पोते पाळतो थको तथा महोटा
स्वरसहित नाटक, गीत, वाजित्र वीणा, करताल अने बीजा पण घणा वाजित्र जेवा के मृदंग
पडह प्रमुख वाजाओना शब्द तेणे करी सहित दिव्य देव संबंधि भोग भोगवतो थको विचरे छे
॥ १४ ॥ ॥ एवा समयने विषे आ प्रत्यक्ष जंबूद्वीप नामा द्वीपने विस्तीर्ण एवो महोटो अ
वधिज्ञान तेणे करी देखतो थको विचरे छे ते काळने विषे ते समयने विषे श्रमण भगवत श्रीम
हावीर स्वामीने ऋषभदत्तनामा ब्राह्मण कोडालगोत्रनो धणी तेनी देवानंदानामे भार्या जालंधर
गोत्रनी तेनी कूखने विषे गर्भ पणे उपन्या देखीने मनमां घणो आनंद पाम्यो,हृदयमां घणो हर्ष
पसर्यो, मेघ धाराये हणाएुं एवु कदंब वृक्षनुं फूल तेनी पेरे रोमांच विकस्वर थयां, प्रधान क
मळनी पेरे नयन अने वदन प्रफुल्लित थयां, भगवतनुं अवतरवुं देखीने तेना दर्शनथी उत्पन्न
थयो जे हर्ष तेना वश थकी प्रकर्षे करी चलायमान थया छे प्रधान कडां, कंकण, बेरखा
बाजुबंध, मुकुट, कुंडल, हार अने महोटां घरेणां झुमखां प्रमुख जेनां एवो इंद्र ते तत्काळ
सिंहासनथी उठी ऊभो थइने चळकतो मणिरत्ननो बाजोट ते उपरथी उतरीने भला वैडुर्यरत्न
मरकतरत्न, अरिष्टरत्न, अंजनरत्न, तेणेकरीने निपुण कारीगरे घडेली देदीप्यमान मणिरत्ने ज
डेली एवी पावडी (चांखडी) पगथकी उतारी पछी अखंड वस्त्रनो एगसाडी उत्तरासंग क

रीनें बे हाथ जोडीने तीर्थंकर श्री महावीर देवने साहामो सात आव पगलां जइ पोताना विमानमांहे बेठो थको माबो ढीचण उचो राखी अने जमणो ढीचण नूमिकाने विषे थापे थापीनें लगारेक नमीने त्रण वार मस्तक धरतीये लगाडे लगाडीने वली चोथीवार लगारेक नमीने थोडो उचो थइने कडां, कंकण, बेरखा, बाजुबंध, फुंमणा तेणे करी सहित थनाय ली एवी जुजाउनें संहरीने वालीने दशनख नेला करी, बे हाथ जोडी मस्तके अंजली करीने शक्रस्तवनो पाठ कहेतो हवो ॥ १५ ॥ ॥ तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे – नमस्कारहोजो श्री अरिहंत जगवंत प्रत्यें, आदिनां करवा वाला, चतुर्विध श्रीसंघ रूप तीर्थना करवा वाला, श्री संघने तारवा वाला, बीजाना उपदेश विना पोतानी मेले बोध पाम्या, पुरुषोमांहे उत्तम, पुरुषोमां सिंह समान, पुरुषोमां प्रधान पुंमरीक कमल समान, पुरुषोमां गंधहस्ति समान जेम गंधहस्तिने देखी बीजा हस्ति नाशि जाय तेम श्रीतीर्थंकर नगवानने देखी परवादी रूप हाथी उ नाशि जाय एवा नगवान, लोक मांहे उत्तम, लोकना नाथ, लोकना हितकरनार, लोकमा दीपक समान, लोकनेविषे उद्योत करनार, अनयदानना दातार, ज्ञान चक्षुना देवा वाला, मोक्षमार्गना दातार, कर्मथी बीक पामनारा जीवोने शरणना दातार, संयम रूप जीवित व्यना दातार, बोधबीज जे सम्यकत्व तेना दातार, सर्व मरणना मटाववा वाला, धर्मना दातार, धर्म उपदेश देवा वाला, धर्मना नायक, धर्मना सारथी समान जेम सारथी रथने शुद्धमार्गमां लइ जाय तेम नगवान धर्ममार्गथी त्रष्ट थयेला लोकोने धर्म मार्गमां लइ जाय एना उपर मेघकुमारनु दृष्टांत कहे छे ॥ तत्रआदौ ॥ श्लोक ॥ पुत्र श्रेणिकधारिण्यो., श्रुत्वा वीरविन्नोर्गिर ॥ प्रबुद्धोष्टौ प्रियास्त्यक्त्वा., मेघोदीक्षामुपाददे ॥ १ ॥ व्याख्या –राजगृही नगरीने विषे श्रेणिकराजानी धारिणी


चित्र ७
इन्द्र महाराज
सिहासन उपरथी
उतरीने नमस्कार करेछे
इन्द्र महाराजनी
सभाना देवो

नामे राणीनी कूखें मेघकुमार, पुत्रपणे उपन्यो, ते वखत गर्ननां प्रनावे करी राणीने एवो दोहोलो उपन्यो के वर्षाकालमां आपणें राजा, तथा राणी, बेहु जण हाथी उपर बेशीने वनमां जइ क्रीडा करीयें? ते अनयकुमारे पूर्व नव संगति देवतानुं आराधन करीने दोहोलो संपूर्ण कस्यो, पठी नव मासें पुत्रजन्म थयो, तेनो जन्ममहोत्सव करी, स्वजन कुटुंबने जमाडी मेघकुमार नाम पाडयुं, अनुक्रमे यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारें पिताये आठ कन्या परणावी, तेमनी सार्थे विषयसुख नोगवतो विचरे ठे, एहवा समयमां राजगृही नगरीये श्रीमहावीर समोसस्या, श्रेणिकादिक सर्वलोक वांदवा गया, तेमनी साथे मेघकुमार पण गया, त्यां नगवतनी देशना सांनली प्रतिबोध पाम्मी, आठ कन्या त्यागी, माता पितानी आज्ञा लेइ दीक्षा लीधी पठी नगवाने पण ग्रहण, आसेवना, साधुनो आचार शीखववा निमित्तें स्थविरोने नलाव्यो रात्रियें संथारवानी वेलाये अनुक्रमे सर्व साधुने ठेडे मेघकुमार ऋषिनो संथारो आव्यो, तिहां साधु, मात्रुं करवाने उठे, तेवारे मेघकुमारने वारवार पगनी ठोकर लागे, तेथी एक क्षण वार पण निद्रा न आवी, धूलथी नराइ गयो आखी रात जाग्यो अने विचार कस्यो जे किहां महारी सुखशय्या, अने किहां आ नूमिने विषे लोटवुं, अने वली एक रात्रिमां केटलो उपसर्ग थयो, तो ए कदर्थना हुं केटलाक काल सुधी सहन करुं, माटे ए दीक्षा महाराथी तो पले नही, तो हवे प्रनात समयें नगवतने पूठी हुं महारे घेर जइश? हजी कांइ बगडयुं नथी एम विचारी प्रनाते उठ्यो, मुहपत्ती लइ, नगवत पासें आव्यो, तेवारे नगवत पण मीठा वचने बोल्या के हे मेघ ऋषि! आज रात्रिमां तमाराथी साधुना पग न खमाया, निद्रा न आवी, तेथी मनमां माठुं ध्यान ध्यायुं जे हुं प्रनातमां

घेरजाइश एवात सत्य छे? मेघकुमार बोल्यो हा महाराज! सत्य छे प्रज्ञु बोल्या हे मेघकुमार! ए तमने योग्य नथी जे जणी नरक तिर्यंचनां डुःखो तो जीवे अनंतिवार दीठा छे तेनी आगल आ डुःख, कोण लेखामां गणे? एवो कोण मूर्ख छे जे चक्रवर्त्तीनी ऋद्धि मूकीने दासपणुं वांछे? माटे मरवु सारु छे पण चारित्र जग करवो सारो नथी ए चारित्रनु ज्ञान सहित कष्ट छे, ते आगल घणां फल देनारु थाशे तथा जोके तें पूर्व जवें पण धर्मनें अर्थे घणां अकाम कष्ट जोगव्यां छे, ते पण महाफलादायक थया ते ताहारा पूर्व जव सांजल आ जवथी त्रीजा जवने विषे वैताढ्य पर्वतनी पासे छ दंतोशल सहित श्वेत वर्णे एक हजार हाथणीनो नायक एवो सुमेरुप्रजनामें तुं हस्ती हतो, तिहां एकदा दावानल लागो देखी जय पामीने त्यांथी नाठो तृषाये पीड्यो थको एक सरोवरमां कादव घणो हतो अने पाणी स्वल्प हतुं तेमां हस्तीना मार्गेने अजाणतो पाणी पीवाने पेठो, त्यां कर्दममांहे खूतो, पाछो नीकली शक्यो नही एटलामां एक पूर्व जवनो वैरी बीजो हाथी त्यां आव्यो तेणे दंतोशलने प्रहारे करीने तुजने हण्यो, तेथी सात दिवस पर्यंत महा वेदना जोगवी, एकशो वीश वर्षनु आयु पूर्ण करी मरण पामी विंध्याचल पर्वतनी जूमिकायें तुं चार दंतोशलवालो, रातेवर्णें, सातशें हाथणीनो नायक, मेरुप्रज नामे हस्ती थयो, तिहां पण एक समये दावानल लागो देखी जातिस्मरण उपन्युं, तेथी पूर्वजव दीठो, पछी दावानलनो जय टालवासारु चार गाउ लगे जूमिकानुं मांमलु बनावी शुद्ध कीधुं, तेमां तृणवेलि मात्र राखतो हतो नही उगतां पहेलांज उन्मूली नाखतो हतो, एम घणां वर्ष वीत्या पछी, एकदा वली महोटो जगी दावानल लागो, तेवारे सर्व वनचर जीव, आवी मांमलामां रह्यां, तु पण तत्काल आवी मांमलामां रह्यो, मांमलामां तिल

जेटलो पण मार्ग रह्यो नही, एवु संकीर्ण थयुं, एटलामां तें खरज खणवाने पग ऊंचो ली धो, ते पगने स्थानके निराली जूमिका देखी एक शशलो ताहारा पग नीचेनी जूमिये आवी बेठो पछी पग नीचो मूकतां नीचे शशलो दीठो एटले तुजने दया आवी तेथी पग अधर रा ख्यो, अढी दिवसें दावानल उपशम्यो, तेवारें शशला प्रमुख सर्व जीव, पोत पोताने स्थानकें गयां, ताहारो पग लोहीयें जराणो तेने नीचो मूकतो थको पर्वतना कूटनी पेरे तुं हेठो पड्यो त्रण दिवस सुधी क्षुधतृषाये पीडातो सो वर्षनुं आयु जोगवी दया सहित मरण पामी, हे मेघकुमार ! तुं राजकुलें उपन्यो छो अकालें मेघवृष्टिनो दोहोलो तारी माताने थयो माटे तारुं नाम मेघकुमार स्थाप्युं जे वखते तुजने हाथियोये मार्यो, ते वखते तो तिर्यचनुं करेलुं दुःख हतुं, तो ते दुःख आगल आ साधुना संघट्टथी तुं शुं दुःख धरे छे ? ते साधु तो जगद्वंद्य छे, एमना चरणनी रज तो पुण्यवान् जीवने लागे माटे साधुना पग लागवाथी दुःख न आणवुं एवा जगवाननां वचन सांजली जातिस्मरण उपन्युं, तेणें करी पूर्वला जव दीठा, पछी प्रजुने पगे लागी चारित्रने विषे स्थिर थइने एवो अजिग्रह लीधो के आज पछी महारे बे नेत्रनो जावतो राखवो माटे ते टालीने बीजा शरीरनी शुश्रूषा, गमे तेवु सकट पडे तो पण न क रवी एवो जावज्जीव सुधीनो अजिग्रह करी निरतिचार पणे शुद्ध चारित्र पाली अंते एक मा सनी संलेषणा करी विजयनामा अनुत्तर विमानमां देवपणे उपन्यो, तिहांथी चवी महा विदेहमां उपजी मोक्ष पामशे, इति मेघकुमार कथा ॥ माटे जगवतने धर्मसारथि सरखा कहिये ॥ ए प्रथम व्याख्यान समाप्त थयुं ॥ १ ॥ ॥ अथ द्वितीय व्याख्यान प्रारंज ॥ वली जगवानने नमस्कार करे छे धर्ममां चार अंत कर्या एवा चक्रवर्त्ति समान जगवान छे

जेम चक्रवर्त्ति त्रण वाजु अने एक वाजु चुल्लहेमवत पर्वत पर्यंत राज्य करे तेम जग
वान दानादि चार प्रकारनो धर्म प्ररूपे माटे धर्म चक्रवर्त्ति कहीयें, संसार समुद्रमां डूबता
प्राणीउने द्वीप समान शरणागत वत्सल, क्यांय हणाय नही एवा ज्ञान अने दर्शनना धरवा
वाला, जेमने उद्मस्थ पणुं रह्यु नथी, पोते राग द्वेषनें जीत्या, वीजाने जीतावे, पोतें संसार
समुद्रथकी तर्या, वीजाने ससार समुद्रथी तारे, पोतें तत्त्वने जाण्या छे, वीजाने तत्त्वनो वोध
करे, पोतें कर्म रहित थया, वीजाने कर्मथी मूकावे, सर्वज्ञ, सर्वदर्शि, शिव एटले निरूपद्रव,
अचल, रोग रहित, जेनो अंतनही अने क्षय पण नही, वाधा रहित, ज्यांथी फरी पाछु संसा
रमा आववु नथी एवु जे सिद्धिगति नामक स्थानक तेने पाम्या एवा जिनेश्वरनें महारो नम
स्कार होजो, जीत्याछे भय जेमणे एवा भगवतनें नमस्कार हो, श्रमण भगवत श्रीमहावीर
छेला तीर्थकर, आदिना करनार पहेला तीर्थकर श्रीऋषभदेव स्वामीये देखाड्या यावत् मो
क्षमां जावा वाला तेमने हुं वांदु छुं भगवान तो त्यां गर्भमां छे अने हु देवलोकमा छुं माटे
त्यां रह्यां थकां आपे मने देखवो एवु कहीने भगवानने नमस्कार करे करीने सिहासन उपर
पूर्वदिशानी साहामुं मुख करीनें वेठो तेवारें शक्रेन्द्रनां मनमां एवो विचार उत्पन थयो ॥१६॥

॥ एम सर्व तीर्थकरोना एक चवन कल्याणक, वीजु जन्मकल्याणक त्रीजु दीक्षा कल्या
णक, चोथु ज्ञानकल्याणक अने पांचमुं निर्वाणकल्याणक, ए पाच कल्याणकें सदा कालें
शक्रस्तव कहे एटले शक्रजे इन्द्र ते स्तव एटले थुणे माटे तेने शक्रस्तव कहीयें ते इंद्र महाराज
शक्रस्तव कहीनें रोमांचित थाय, आनंद पामे, वली ए पाच कल्याणकें चोशठे इन्द्र भेला थइने
अठाइ महोत्सव प्रमुख करीनें प्रत्येक कल्याणकनो महिमां करे ए मर्यादा छे ॥

ते कहे छे इंद्र महाराजे विचार्युं जे श्रीअरिहंत भगवंत अथवा चक्रवर्ति अथवा वासुदेव
बलदेव ए त्रेशठ उत्तम पुरुष छे,ते अंतकुल जे शुद्रजाति तेने विषे तथा प्रांतकुल ते अधमाचारीना
कुलने विषे तथा अल्पपरिवार वाला तुच्छ कुलने विषे तथा निर्धन ते दरिद्रीना कुलने विषे तथा
अदातारते कृपणनां कुलने विषे तथा चारण प्रमुख भीखारीना कुलने विषे तथा ब्राह्मणना कुलने
विषे आव्या,आवे अने आवशे निश्चयथी ए वात पूर्वेंथइ नथी,वर्त्तमान कालें थाती नथी अने
आगामिक कालें थाशे पण नही एटले त्रेशठ शिलाका पुरुष तो निश्चे थकी पूर्वोक्त अंत कुलादि
कने विषे आव्या पण नथी, आवता पण नथी अने आवशे पण नही ॥ १७ ॥ ॥ ए पूर्वो
क्त अरिहंतादिक त्रेशठ शिलाका पुरुष लो, निश्चयथकी श्रीऋषभदेवजीयें आरक्षक पणे जेने
राख्या तेने उग्रकुल कहीये ते कुलने विषे तथा जेने गुरुस्थानीया पणे राख्या तेने भोगकुल
कहीये तेने विषे तथा जेनें मित्रस्थानें राख्या तेने राजन्य कुल कहीये तेने विषे तथा प्रजा लो
कपणे थाप्या तेने क्षत्रियकुल कहीये तेने विषे तथा इक्ष्वाकु कुलने विषे तथा हरिवर्ष क्षेत्रना
युगलीयानो जे परिवार तेने हरिवंश कुल कहीयें एवा बीजा पण तथा प्रकारनां विशुद्ध जाति
नां उत्तम कुलने विषे आव्या छे, आवे छे अने आवशे, ए मर्यादा छे ॥ १८ ॥ ॥ तथापि
ए श्रीमहावीर स्वामी ब्राह्मणना कुलमां आवी उपन्या ए लोकने विषे अछेराभूत वात
थइ एटले अनती उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणी जेवारे व्यतिक्रमे तेवारे कोइक काले एवा
अछेरा थाय छे तेम आ अवसर्प्पिणीमां पण एवा दश अछेरा एटले आश्चर्यकारी वातो थये
ली छे एम इंद्र महाराज विचारे छे ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १०० ॥ ॥ हवे अवसर्प्पिणीने विषे जे
दश अछेरां थयां ते वखाणे छे त्यां प्रथम कोइ तीर्थंकरने केवलज्ञान उपन्या पछी उपसर्ग

थाय नही अने श्रीमहावीर देवनें केवल ज्ञान उपन्या पछी गोशालाये उपसर्ग कर्यो, ते कहे छे एकदा भगवत श्रीमहावीर स्वामी विहार करतां सावत्थी नगरीये समोसर्या, तेवारे गोशालो पण, हुं तीर्थंकर छु एम लोकोमां कहेतो थको सावत्थीये आव्यो, ते समये गौतमस्वामी गोचरीये गया, तिहां लोकोना मुखथकी एवु सांभळ्युं जे आज नगरीमां एक महावीरस्वामी अने बीजो गोशालो, ए बे तीर्थंकर आव्या छे पछी संशयवत थइने श्रीगौतम स्वामीये भगवत पासें आवीने गोशालानी उत्पत्ति पूछी, तेवारे प्रभुये कह्यु के शरवण ग्रामनो रेवासी मखली भरडानीजाति शनिश्चरनो दान लेनारो तेनी सुभद्रा स्त्रीनो ए पुत्र छे, ब्राह्मणनी गायनी शालामां जन्म्यो तेथी मातापितायें गोशालो नाम पाड्युं छे ए भिक्षामागतो हतो ते आवीने महारो शिष्य थयो, छद्मस्थावस्थाये महारी साथे छद्मस्थ पणे छ वरस रह्यो हतो, महारी पासेथी भणीने कांइएक बहुश्रुत थयो छे, तेजोलेश्या पण शीख्यो छे बीजुंवली दिशाचरो पासेथी निमित्तविद्या शीखीने ए मिथ्या जिननाम धरावे छे,परतु ए तीर्थंकर नथी,एवी वात प्रभु पासेथी सांभलीने श्रीगौतमे बीजा घणा लोको पासे वात करी, जे गोशालो मखली पुत्र छे, ते वात, गोशालाने काने गइ, तेवारे गोशालो क्रोधायमान थयो एवा समये भगवतनो आनदनामा शिष्य गोचरीयें गयो तेने गोशाले बोलावीने कह्यु के हे आनंद ! तने एक दृष्टांत कहु ते सांभल, कोइएक चार वाणीया व्यापार करवाने अर्थें विविध प्रकारनां करियाणानां गाडां भरी परदेशे चाल्या मार्गमां कोइएक महोटी अटवीमां पेठा, तिहां तृषालागी तेथी उजाडमा पाणीनी गवेषणा करता पाणीतो क्यांय दीठु नही पण चार वाल्मिक एटले उदेहीनां शिखर (ढीम) दीठां अने तेना उपर नीलां वृक्ष उगेलां दीठां, तेथी जाण्यु के अहीयां अ

वश्य पाणी हशे ? एवु जाणी एक शिखर फोडथुं तेमांथी घणुं निर्मल शीतल जल नीकल्यु, ते सर्वजनोये पीने तृषा नांजी, वली बीजा वासणोमां पण पाणी नरी लीधु, पढी बीजु शिखर नांगवा मांम्यु, तेवारे तेमांथी एक वृद्ध वाणीयो वोल्यो के आपणुं काम थयुं, माटे हवे बीजुं शिखर फोडशोमां, एम वार्या थका पण तेणें बीजुं शिखर फोड्युं, तेमांथी सोनुं नीकल्युं, तेवारे लोन लागो तेथी जोपण वृद्धेवर्ज्यो तो पण त्रीजुं शिखर फोड्यु तेमांथी रत्न नीकल्या वली वृद्धे घणो वार्यो तोपण चोथुं शिखर फोड्युं, तेमांहेथी महाविकराल नयंकर दृष्टिविष सर्प नीकल्यो, ते सर्पें दृष्टिविषे करी सूर्य सामुं जोइने सर्वने बाली नस्म कीधा, एक सुशिक्षाना आपनार वृद्धने दया आणी जीवतो मूक्यो, ए दृष्टांतें ताहारा धर्माचार्यने एटली सपदा प्राप्त थइ तो पण असंतुष्ट थको महारो अपवाद लोको आगल बोलीने मने रोषवत करे बे तेथी हुं त्यां आवी महारा तेजथी सर्वने बाली नस्म करीश, माटे तुं उतावलो जइने ताहारा धर्मचार्यने कहेजे, हुं वृद्धवाणीयानी पेरे मात्र एक तनेज जीवतो मूकीश, ए वात सांनली आनंद,मुनि नयत्रांत थयो थको नगवत पासें आवीने गोशालाना सर्व समाचार कह्या, तेवारे नगवते कह्युके हे आनंद तमे गौतम प्रमुख सर्व साधुउने कहेजो जे अहींआं महारो कुशिष्य गोशालो आवशे, ते उपसर्ग करशे माटें तमे कोइ पण तेनी साथे नाषण करशोमां जो बोलशो तो बाली नस्म करशे तेथी अरहा परहा टली रहेजो ते सांनली सर्व साधुउ एकांते बेशीरह्या तथापि सर्वानुनूति अने सुनक्षत्र ए बे साधु, नगवत पासेज रह्या, एटलामा गोशालो आवीने नगवानने कहेवा लाग्यो के हे काश्यप ! तुं कहे बे जे महारो शिष्य गोशालो बे ते खरी वात बे पण ताहारो शिष्य जे गोशालो हतो ते तो मरण पाम्यो अने

हुं तो बीजो छुं मात्र तें गोशालानुं शरीर परीग्रह सहन करवा सरखुं हतुं माटे मे तेना शरीरमां प्रवेश कर्यो छे ते सांजली जगवान बोल्या के अरे गोशाला कोइ चोर चोरी करी नाठो होय तेनी पछवाडे वाहार चढी होय ते जोइने पहेलो चोर नाशी जवानें असमर्थ छतो एक तरणुं लइने पोताने ढाकवा सारुं आडुं आपे अने मनमां जाणे के हवे मने कोइ देखी शकशे नही तेथी शु ते छानो रही जाशे ! तेम तु पण महारी आगल केवीरीते छप्यो रहीश तु तेहज महारो शिष्य गोशालो छे ! एवु सांजली गोशालो रोषआणीने जगवानने कहेवा लागो के अरे तु जीवतो रहीश त्यांसुधी मने सुख थाशे नही एवा तेना तुछ बोल सांजलीने सुनक्षत्र मुनि बोल्या के अरे गोशाला तु पोताना गुरुने सामुं बोले छे एतो तु संसारमा अनंता जव भ्रमण करवानुं काम करे छे एटलु बोल्यो तेटलामां गोशालायें तेनां उपर तेजोलेश्या नाखी तेथी ते मुनि बली जस्म थइ गयो फरी पण जगवानने गोशालो कडवां वचन कहेवा लाग्यो तेवारे सर्वानुजूति मुनि बोल्या तो तेने पण तेजोलेश्यायें करी बाली जस्म कीधो ते बन्ने साधु मरण पामीने देवलोकमा गया हवे जगवाने गोशालाने कह्यु के तुं चोरनी पेठे कां छिपतो रहे छे तेवारे जगवान उपर पण तेजोलेश्या मूकी ते तेजोलेश्या जगवाननें त्रण प्रदक्षिणा आपीनें पाछी गोशालाना शरीरमां पेठी तेथी गोशालो दाज्यो तेना ताप थकी सात रात्रि सुधी विविध वेदना जोगवीने गोशालो मरण पाम्यो अने तेजोलेश्याना तापथी जगवानना शरीरें वेदना थवा लागी, छ महीना सुधी लोही खरु जाडो थयो, रेवती श्राविकाना घेरथी बीजोरांपाक सिंह अणगार पासें मगावी जगवंते खाधो, तेथी शरीरे शाता थइ एवीरीनें जेनो नाम मात्र लीधाथी पण सर्व उपद्रव मटी जाय तेमने पण महा

पीडा थइ एम तीर्थंकरने जिनपद लह्या पछी एटले केवलज्ञान उपन्यापछी उपसर्ग न थाय, ते थयो ए प्रथम आश्चर्य जाणवुं ॥ ॥ हवे वीजुं अछेरू जे आ वर्त्तमान चोवीशीमा श्रीमल्लीनाथ उंगणीशमा तीर्थंकर स्त्रीवेदपणे उपन्या, तेनो संबंध कहे छे. आज बूद्वीपना श्रीमहाविदेह क्षेत्र ने विषें सलिलावती विजयमां वीतशोकानामें नगरीनो बलनामे राजा तेने धारिणी नामें स्त्री छे, तेनो महाबल नामे पुत्र छे, ते यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारे राजायें तेने पांचसो स्त्री परणावी, पछी वृद्धावस्थाये पुत्रने राज्य आपी पोते दीक्षा लइ चारित्र पाली मोक्षे पोहोतो, हवे महाबल राजा राज्य करे छे, तेने एक अचल, बीजो धरण, त्रीजो अभिचंद, चोथो पूर्ण, पांचमो वसु, छठो वैश्रमण, ए छ मित्र हता एकदा ते साते जणे गुरु पासें धर्म सांभली दीक्षा लीधी, अगीआर अंग भण्यां अने ते साते जणे मांहोमांहे एवो संकेत कर्योके आपण सर्व जणायें छठ अठमादिक जे तप करवु ते सरखुं बराबर करवुं पण एक बीजाथी अधिकन्यून तप कोइयें करवुं नही ते प्रमाणे ते सातेजण सरखुं तप करे, तेमां एकदिवस महाबल ऋषिना मनमां एवो विचार थयो के हुं एनांथी कांइ अधिक तप करूं के जेथकी हु ए सर्वेथी अधिक थाउं एवो निश्चय करी, कपटथकी ते छ जणथी छानो जेवारें पारणुं करवानो दिवस आवे तेवारे छ जणने एम कहे के महारुं तो माथुं दुखे छे,हुं आज पारणुं करीश नही तमें सुखे पारणुं करो वीजे दिवसें वली तेमना सरखुं तप करे ए प्रमाणे कपट थकी वीशथानकतप कर्युं तेथी तीर्थंकरनाम कर्म उपार्ज्युं परतु कपटनेलीधे स्त्रीपणानुं कर्म बांध्युं शेवट सातेजणा बे मासनी संलेषणा करी चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पाली मरण पामीने बत्रीश सागरोपमने आउखे विजयतनामा अनुत्तर विमानें जइ उपन्या, पछी तिहांथी चवी एक अचल

नो जीव तो अयोध्यानो सुप्रतिबद्धनामें राजा थयो, बीजो धरणनो जीव, चपानगरीये चद्र जसा नामे राजा थयो, त्रीजो अभिचद्रनो जीव, काशी नगरीये शखनामें राजा थयो, चोथो पूरणनो जीव, सावथ्री नगरीये रुक्मिनामें राजा थयो, पांचमो वसुनो जीव कुरुदेशे अदीनशत्रुनामे राजा थयो, छठो वैश्रमणनो जीव कपिला नगरीये जितशत्रुनामें राजा थयो, अने सातमो महाबलनो जीव मिथिला नगरीयें कुंभ राजा तेनी प्रभावती राणीनी कूखे आवी मल्लीकुमरी पणे उपन्यो,तेवारें मातायें चौदसुपनां दीठां,आषु शुदि अगीआरशें पुत्रीपणे जन्म्या अनुक्रमे यौवन अवस्था प्राप्त थइ, पछी अवधिज्ञानें करी पोताना छ मित्र, जूदें जूदे ठेकाणे उपन्या देखी तेने प्रतिबोध करवाने अर्थे अशोक वाडीमा रत्ने जडित घर कराव्यु, तेनां छ बारणां कराव्या, तेमां पोताना रूप सरखी रत्नजडित सोनानी एक पूतली करावी, हवे मल्लीकुमरी जे जे वारें भोजन करे, ते ते वारें ते रत्ननी पूतलीने माथे बारणुं कराव्यु छे ते बारणानी उपर एकेको कवल नाखती जाय अने फरी पाछुं ढांकणु आपी दीये, एम नित्य करती जाय हवे एकदा अयोध्या नगरीयें सुप्रतिबद्ध राजायें यक्षने देरे पूजा रचावी छे, तिहां फूलनी माला देखीने दूतने पूछ्युं जे तमें एवो फूलनो श्रीदामक्यांहि पण दीठो छे? तेवारे दूत बोल्यो जे हे राजन्! मल्लीकुमरी घणी चतुर छे घणा रूपमय छे, ते जेवो फूलनो श्रीदाम बनावे छे तेहना लाखमां अंशें पण ए श्रीदाम नथी हवे पूर्वभवना प्रेमथकी सुप्रतिबद्धराजाये मल्लीकुमरीनी याचना करवाने कुंभराजा उपर दूत मोकल्यो अने कहेवराव्युं जे तमारी बेटी मुजने परणावो ॥ इति प्रथम दूत ॥ १ ॥ तेवार पछी चपानगरीना अरहन्नक प्रमुख व्यवहारिया प्रवहण भरी गंभीर पत्तने द्वीपांतरे चाल्या, एवा समयमां इद्र महाराज

अरहन्नक श्रावकनी प्रशंसा पोतानी सभाने विषे करवा लाग्या जे धन्य छे अरहन्नकने, आज भरत क्षेत्रमां एना समान बीजो कोइ दृढ श्रावक नथी ! ते इंद्रना वचनने कोइएक मिथ्यात्वी देवता अण सद्दहतो थको तिहां अरहन्नक पासे आवीने ते देवतायें समुद्रमां महोटो उत्पात कस्यो ते जोइ अरहन्नक तो सागारी अणशण करीने निश्चल मनें श्रीवीतराग देवनुं स्मरण करवा लाग्यो, तेनें देवताये घणोए चलाव्यो अने एवु कह्यु जे तुं श्रीवीतराग देवनुं स्मरण मूकीने हरि हरादिक देवोनुं स्मरण कर, तो उपसर्ग निवारण करुं नहीतर ताहारां जिहाज समुद्रमध्यें बूडावी देईश, एम कही जिहाज समुंद्रमां बूडाववा लाग्यो, तें जोइ सर्व लोक एकठा मली अरहन्नकने कहेवा लागा जे देवताये कह्यु तेम करो,तो पण अरहन्नक श्रावकनुं समकित दृढ छे, तेथी चलायमान न थयो, तें जोइने देवता तुष्टमान थइ कुंमलाभरणनो जोडो आपी, अर्हन्नकने पगे लागीने कह्यु के अहो अर्हन्नक ! तमोने धन्य छे,हे कृतपुण्य ! तमारुं जीवितव्य सफल छे,तमोने इंद्र महाराजे सभा समक्ष वखाण्या ते अणमानता मे तमारो अपराध कस्यो, ते महारो अपराध तमे खमजो, ते सांभली अर्हन्नक बोल्या जे इह लोक अने परलोकनुं साधन एवो श्रीजिनधर्म पामीने बीजो धर्म हुं अंगीकार न करुं, तेवारे देवताये चार कुंमल आप्यां, अने पोताने स्थानकें गयो, हवे ते व्यावहारीयो कुशल क्षेमे गंभीरपत्तने गयो तिहां व्यापार करी फरी मिथिला नगरीये आव्यो तेवारे देवताये आपेला चार कुंमलमांथी राजाने बे कुंमल आप्यां, राजाये मल्लीकुमरीने दीधां, पछी व्यापारिये पोतानी चंपानगरीयें आवी, तिहां चंपानगरीना राजाने बाकी रहेला बे कुंमल आप्यां राजाये पूछ्युं जे हे व्यवहारीया ! तमे परदेशमां कोइ तमासो दीठो ? ते सांभली व्यवहारीयो

बोल्यो के अमे मल्लीकुमरीनु रूप अद्भुत दीठु, एवु रूप बीजे क्याहि पण दीठुं नथी, पछी चइजसा राजाये पण कुंभराजा पासे दूत मोकलीने कहेवराव्यु के तमारी पुत्री मल्लीकुमरी मुजने परणावजो ॥ इति द्वितीयदूत ॥२॥ एक दिवसे मल्लीकुमरीना बे कुंडल भांग्यां, तेवारें कुंभराजाये सोनीउं बोलावीने कह्यु के आ कुंडलनो जोडो साधी आपो, तेवारे सोनी कुंडल जोइने बोल्या जे महाराज ! ए सधाय नही एतो देवताना कुंडल छे, ते अमे केवी रीतें सांधिये ? तेथी राजायें सर्व सोनीउने देशनिकाल कीधा, ते सोनी वाणारसी नगरीये गया, तेवारे त्यांना शंख राजाये पूछ्यु के तमे देश केम छोड्यो ? सोनी बोल्या जे महाराज ! मल्लीकुमरीनां कुंडल देवता सबधी छे, ते अमारा थकी सधाणां नही, तेणे करी देश छोडवो पड्यो अने मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कह्युं, तेवारे वाणारसीना राजाये पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थें कुंभराजाने दूत मोकल्यो ॥ इति तृतीयदूत ॥ ३ ॥ हवे रुक्मी राजाये पोतानी पुत्रीने चार महीना सुधी पीठी करावीने दूतने पूछ्युं जे हे दूत ! तें आवु रूप क्यांही पण दीठु छे ? तेवारे दूत बोल्यो जे मल्लीकुमरीने लाखमे अंशें पण ए रूप नथी, ते सांभली, रुक्मी राजाये पण कुंभराजा उपर दूत मोकली, मल्लीकुमरीनी याचना करावी ॥ इति चतुर्थदूत ॥४॥ हवे कुंभराजानो पुत्र छे, तेणे पोतानी चित्रशाला चित्रावी, तिहां चितारे मल्लीकुमरीनो अंगुठो दीठो, ते प्रमाणे मल्लीकुमरीना सर्व अंगनु स्वरूप चित्री काढ्युं, एकदा मल्लीकुमरीना भाईये क्रीडा करतां मल्लीकुमरीनु रूप चित्रशालामा जोयुं, तेने रीश चढी तेथी चितारानो हाथनु अंगुठो कापीने काढी मूक्यो, चितारो हस्तिनापुरे अदीनशत्रु राजाने मल्यो, तिहां मल्लीकुमरीनु रूप, वर्णन कह्युं, ते सांभली तेणे पण मल्लीकुमरीनी याचना करवा कुंभराजाने दूत मोक

व्यो ॥ इति पचम दूत ॥ ५ ॥ ॥ एक दिवस धर्मचर्चा करतां एक परिव्राजिकाने मल्लीकुंमरीये जीती, मानभ्रष्टा करी, तेथी ते रीशाणीथकी कपिलानगरीये जइ जितशत्रुराजाना मुख आगल मल्लीकुमरीना रूपनु वर्णन कर्युं, तेणें पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थें कुंभराजा उपर दूत मोकल्यो ॥ इति षष्ठदूत. ॥ ६ ॥ ॥ ए रीते छ दूत कुंभराजा पासे समकालें आव्या, कुंभराजायें सर्व दूतोने कह्यु के हुं म्हारी कन्या कोने आपवानो नथी, एवी रीते अपमान करी काढी मूक्या, पछी ते छए राजाउ पोत पोतानु लशकर लइने समकालें आवी मिथिला नगरीने वींटी लीधी, कुंभराजायें पण बाहिर आवी युद्ध करवा मांड्युं युद्ध करतां हार्यो अने पाछो नगरीमां पेठो, तेवारे मल्लीकुमरीये छए राजाउने कहेवराव्यु के तमे म्हारा रत्नघरमां आवजो, पछी ते छए राजा छ बारणामांथी जूदा जूदा आव्या, मल्लीकुमरीनी मूर्त्ति देखी व्यामोह पाम्या, एटलामां मल्लीकुमरीये आवीने ते पुतलीना माथा उपरथी ढांकणुं उघाड्युं तेवारे ते सडीगयेला अनाजमां कीडा पड्या हता तेमांहेथी दुर्गंध नीकल्यो एटले सर्व जणे मोढा पासे लूगडुं आपी थुथुकार कीधो अने दुःखी थवा लागा तेवारे मल्लीकुमरी बोल्यां जे हे नृपो ! आ रत्नमय पूतली छतां नित्यप्रत्ये एक कवल आहारना संयोगथी एवी दुर्गंध वास आपे छे, तो म्हारा शरीरमां तो नित्यप्रत्ये शेर धान्य पडे छे. तेथी मलमूत्रनो भंडारज छे तेमा तमें शु रागांध थया छो ? एवो प्रतिबोध करीने पछी पूर्वलो भव संभलाव्यो, तेथी ते छए राजाने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं,पूर्वभव दीठा पछी ते छए कहेवालाग्या के हवे अमने तारो, तेवारें मल्लीकुमरीये कह्यु के हमणां तो तमें घेर जाउ, जेवारे मने केवलज्ञान उपजे, तेवारे तमे आवजो, हुं तमोने दीक्षा आपीश, पछी ते छए राजा पोतपोता

बोल्यो के अमे मल्लीकुमरीनु रूप अद्भुत दीठु, एवु रूप बीजे क्यांहि पण दीठुं नथी, पछी चङ्जसा राजाये पण कुंभराजा पासे दूत मोकलीने कहेवराव्यु के तमारी पुत्री मल्लीकुमरी मुजने परणावजो ॥ इति द्वितीयदूत ॥२॥ एक दिवसे मल्लीकुमरीना बे कुंडल भांग्यां, तेवारे कुंभराजाये सोनीउं बोलावीने कह्यु के आ कुंडलनो जोडो साधी आपो, तेवारे सोनी कुंडल जोइने बोल्या जे महाराज ! ए सधाय नहीं एतो देवतानां कुंडल छे, ते अमे केवी रीते सांधिये ? तेथी राजाये सर्व सोनीउंने देशनिकाल कीधा, ते सोनी वाणारसी नगरीये गया, तेवारे त्याना शंख राजाये पूछ्यु के तमे देश केम छोड्यो ? सोनी बोल्या जे महाराज ! मल्लीकुमरीनां कुंडल देवता संबधी छे, ते अमारा थकी सधाणां नहीं, तेणे करी देश छोडवो पड्यो अने मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कर्युं, तेवारे वाणारसीना राजाये पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थे कुंभराजाने दूत मोकल्यो ॥ इति तृतीयदूत ॥ ३ ॥ हवे रुक्मी राजाये पोतानी पुत्रीने चार महीना सुधी पीठी करावीने दूतने पूछ्युं जे हे दूत ! ते आवु रूप क्यांही पण दीठु छे ? तेवारे दूत बोल्यो जे मल्लीकुमरीने लाखमे अंशे पण ए रूप नथी, ते सांभली, रुक्मी राजाये पण कुंभराजा उपर दूत मोकली, मल्लीकुमरीनी याचना करावी ॥ इति चतुर्थदूत ॥४॥ हवे कुंभराजानो पुत्र छे, तेणे पोतानी चित्रशाला चित्रावी, तिहां चितारे मल्लीकुमरीनो अंगुठो दीठो, ते प्रमाणे मल्लीकुमरीना सर्व अंगनुं स्वरूप चित्री काढ्युं, एकदा मल्लीकुमरीना भाईये क्रीडा करतां मल्लीकुमरीनु रूप चित्रशालामा जोयु, तेने रीश चढी तेथी चितारानो हाथनुं अंगुठो कापीने काढी मूक्यो, चितारो हस्तिनापुरे अदीनशत्रु राजाने मल्यो, तिहा मल्लीकुमरीनुं रूप, वर्णन कर्यु, ते सांभली तेणे पण मल्लीकुमरीनी याचना करवा कुंभराजाने दूत मोक

व्यो ॥ इति पंचम दूत ॥ ५ ॥ ॥ एक दिवस धर्मचर्चा करतां एक परिव्राजिकाने मल्लीकुं मरीये जीती, मानभ्रष्टा करी, तेथी ते रीशाणीथकी कपिलानगरीये जइ जितशत्रुराजाना मुख आगल मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कर्युं, तेणे पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थे कुंभराजा उपर दूत मोकल्यो ॥ इति षष्ठदूत. ॥ ६ ॥ ॥ ए रीते ठ दूत कुंभराजा पासें समकालें आव्या, कुंभराजाये सर्व दूतोने कह्यु के हुं म्हारी कन्या कोने आपवानो नथी, एवी रीते अपमान करी काढी मूक्या, पठी ते ठए राजाउ पोत पोतानुं लशकर लइने समकाले आवी मिथिला नगरीने वींटी लीधी, कुंभराजाये पण बाहिर आवी युद्ध करवा मांड्युं युद्ध करतां हार्यो अने पाठो नगरीमां पेठो, तेवारे मल्लीकुमरीये ठए राजाउने कहेवराव्युं के तमें म्हारा रत्नघरमां आवजो, पठी ते ठए राजा ठ बारणामांथी जूदा जूदा आव्या, मल्लीकुमरीनी मूर्त्ति देखी व्यामोह पाम्या, एटलामां मल्लीकुमरीये आवीने ते पुतलीना माथा उपरथी ढांकणुं उघाड्यु तेवारे ते सडीगयेला अनाजमां कीडा पड्या हता तेमांहेथी दुर्गंध नीकल्यो एटले सर्व जणे मोढा पासें लूगडुं आपी थुथुकार कीधो अने दुःखी थवा लागा तेवारे मल्लीकुमरी बोल्यां जे हे नृपो ! आ रत्नमय पूतली ठतां नित्यप्रत्ये एक कवल आहारना संयोगथी एवी दुर्गंध वास आपे ठे, तो म्हारा शरीरमां तो नित्यप्रत्ये शेर धान्य पडे ठे. तेथी मलमूत्रनो भंडारज ठे तेमा तमें शु रागांध थया ठो ? एवो प्रतिबोध करीने पठी पूर्वलो भव संभलाव्यो, तेथी ते ठए राजाने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं,पूर्वभव दीठ पठी ते ठए कहेवालाग्या के हवे अमने तारो, तेवारे मल्लीकुमरीये कह्यु के हमणां तो तमें घेर जाउ, जेवारे मने केवलज्ञान उपजे, तेवारे तमें आवजो, हुं तमोने दीक्षा आपीश, पठी ते ठए राजा पोतपोता

ने स्थानकें गया, मल्लीकुमरीये पण संवत्सरी दानआपीनें त्रणशें राजपुत्र साथे मार्गशिरशुदिअगीआरशने दिने दीक्षा लीधी, तेज दिवसे केवल ज्ञान उपन्यु, पछी ते छए मित्र आवी श्रीमल्लीनाथ पासेथी दीक्षा लीधी ते छए ने गणधर कह्या तेहज नवे मोक्ष गया, ए श्रीमल्लीनाथ स्त्रीवेदें उगणीशमा तीर्थंकर थया, तेमना समोसरणमा स्त्रीनी परषदा आगल बेशती हती अने पुरुषनी परषदा पाछल बेशती हती ते स्त्रीवेदें कोइ तीर्थंकर थाय नही ते थयुं ए बीजुं अछेरूं जाणवु ॥ २ ॥ ॥ त्रीजु कोइ तीर्थंकरने गर्भपालटो थयो नथी, ते आहीं श्रीमहावीर स्वामीने ब्याशी रात्रि पछी देवानदानी कूखथी हरणिगमेषी देवतायें अपहरीने त्रिशला क्षत्रियाणीनी कूखमांहे धर्यो अने त्रिशलानी कूखे पुत्री हती, ते महाणकुर्में देवानंदानी कूखे मूकी तेवु कोइवारे थाय नही, माटे ए त्रीजु गर्भ पालटन आश्चर्य जाणवु ॥ ३ ॥ ॥ चोथु श्रीवीरभगवानने जेवारे केवलज्ञान उपन्युं, तेवारे देवताये मली समोसरणनी रचना कीधी, त्यां घणी महोटी परषदा भेली थइ तेवारे भगवाने धर्मदेशना दीधी परतु प्रभुनी देशना सांभलीने कोइ समकेत पाम्यो नही, तेमज व्रत पच्चरकाण पण कोइये लीधु नही एरीते देशना निष्फल गइ, एम तीर्थंकरनी देशना कोइ वखते खाली न जाय ते आ वेलाये खाली गइ, माटे ए चोथु आश्चर्य जाणवु ॥ ४ ॥ ॥ पांचमुं जे एक द्वीपनो वासुदेव होय ते बीजे द्वीपे जाय नही, ते श्रीकृष्णजी द्रौपदी लाववाने अर्थे धातकीखर्मे गया तेमज कपिल वासुदेवनो शख अने श्रीकृष्ण वासुदेवनो शख ए बे शखेशंख मल्या ते पण कोइवारें मले नही माटे आश्चर्य जाणवु तेनी कथा कहेछे कांपिलपुर नगरमा द्रुपदराजानी चुलणी पटराणीनी कूखे द्रौपदी नामे पुत्री थइ तेना विवाह सारु स्वयवर मण्डप माम्यो, सर्व देशोना राजा ते

डाव्या हस्तिनागपुरथी पोताना युधिष्ठिरादिक पांच पुत्रने तेडी पांडुराजा पण आव्यो, अर्जुने राधावेध साध्यो तेवारे द्रोपदीये अर्जुनना गलामां वरमाला नाखी ते वरमाला पूर्वनवमां द्रौपदीये पांच नरतारनो नीयाणो कर्यो हतो तेना प्रनावथी पांचे पांडवोना गलामां जइ पडी पूर्वला नवमां द्रौपदीनो जीव नागिला नामें ब्राह्मणीनो हतो तेणे एक दिवस धर्मरुचि मुनिने कडवी तुंबडीनुं शाक वोह्योराव्युं ते मुनिये अनशन करी खाधु तेनां योगथी मुनि मरण पाम्या पछी नागिला साधुनी घात करनारी छे एवु आचार्यें साधुउने गाममां मोकली कहेव राव्युं तेवारे ब्राह्मणे नागिलाने घरमांथी काहाडी मूकी, ते नमती नमती मरण पामीने नरके गइ त्यांथी अनेक तिर्यंचादिकना नव करी एक शेठने घेर घणी स्वरूपवाली सुकुमालिका नामे पुत्री पणे उपनी तेनें तेज गाममां एक बीजा शेठना दीकराने परणावी तें रात्रे सुवा गयो त्यां सुकुमालिकानो स्पर्श थतांज तत्काल तेने दाहज्वर उपन्यो तेथी ते पडती मूकी चाल्यो गयो पाछलथी सुकुमालिकाने शोक करती जोइने तेना बापे एक निक्षुकने परणावी ते पण तेमज मूकी नागी गयो पछी सुकुमालिका उ खगर्भित वैराग्य पामीने साधवी थइ तेने गुरुणीये नाकारो कर्यो तो पण ते वनमां तप करवा गइ त्यां एक वेश्याने पांच पुरुष हाजरीमां रह्या छे तेने जोइने सुकुमालिकाये कह्यु के महारा तपनो प्रनाव होय तो आगला नवमां मुजनें पण पांच नरतार होजो एवु नियाणुं कर्युं, अंते अनशन करी इशान देवलोकें गइ त्यांथी चवीने अहीं द्रौपदी थयेली छे ते पूर्वकृत नियाणाना योगे वरमाला पांच जणानां कंठमां पडी, देवोये आकाशथी एवी वाणी करी के द्रौपदी पांच नरतारी छतां पण सती छे, पांच पांडव द्रौपदीने परणी हस्तिनागपुरमां आव्या त्यां सुखे रहे छे, एक दिवस जेनी मुखाकृति सौम्य

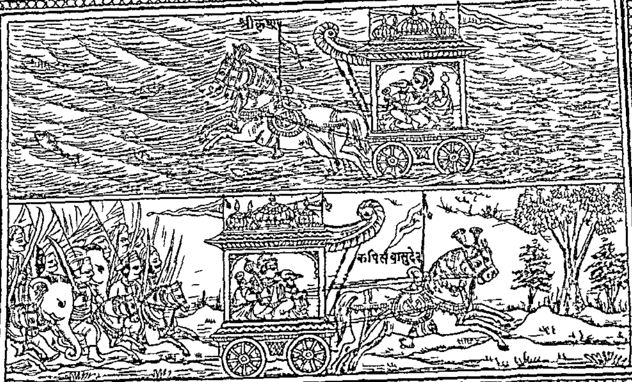
छे,परतु मनमां कपट घणुं राखे छे, वल्कल चीर पहेरे छे,जनोइ पहेरे छे, काला मृगना चाम डानो उत्तरासग करेलो छे, जेनो जटाजूट महाकांति वालो छे, जे कलह कोलाहलनो जगा डनार छे, एवो नारद ऋषि आकाशमार्गथी ते पांडुराजानी सन्नामां आव्यो, तेवारे पांडवो स हित सर्व सन्नाजनोये उन्ना थइने आदर सन्मान आप्यु, परतु ते नारद जेवारे द्रौपदीने जो वा गयो तेवारे द्रौपदीये तेने असयती जाणी वांद्यो पूज्यो नही, तेम उठीने उन्नी पण थइ नही, अने बोलाव्यो पण नही, तेथी नारदने रीश चडी अने विचार करवा लाग्यो के आ द्रौ पदी पांच नरतार पामीने मस्त थइ गइ छे, तेथी गर्वित थकी बेठी छे तो हवे हुं एने संकट मां नाखु एम चितवी, धातकीखंडना पूर्व नरत क्षेत्रमा अमरकका नामे नगरी छे त्यां कपि लवासुदेवनो सेवक पद्मनान्न नामे राजा राज्य करे छे, ते राजा पोतानी सातसे राणीयो सा थे वाडीमा रमतो हतो तेवा समयमां नारद पण त्यां गयो, तेने पद्मनान्न राजाये वांदीने पूछ्यु के हे नारदजी! म्हारो जेवो अंतेउर छे तेवो अतेउर बीजे क्यां तमे जोयो छे, तेवारे नारदजिये जाण्यु के आ स्त्रियोनो लोलुपी छे एम जाणी अवसर जोइने नारदजी कहेवा लाग्यो, के हे राजन् तु कूवानां देडका सरखो देखाय छे, जेम कोइएक समुद्रनो देडको कूवाना देडकानी पासे आव्यो, तेवारे तेने कूवानां देडकाये पूछ्यु जे तु क्हिां रहे छे अने क्यांथी आव्यो छो, तेणे कह्यु हु समुद्रमां रहु छु अने त्यांथीज आव्यो छु तेवारें कूवाना देडकाये पूछ्यु जे ताहारो समुद्र केटलो महोटो छे, तेणे कह्यु घणो महोटो छे, तेवारे कूवानो देडको हाथ पग पसारीने बोल्यो के आटलो महोटो छे, समुद्रना देडकाये कह्यु एथी तो घणोज महोटो छे, तेवारे कूवानो देडको पोताना कूवानी चारे बाजुये कूदका

मारीने बोल्यो के आटलो महोटो छे, तो पण तेणे कह्यु के एनाथी ता घणोघणो महोटो छे, तेवारे कूवानो देमको रोप आणीने बोल्यो के अरे असत्य वादी तुं इहांथी दूर जा, म्हारी फालथी पण वली कोइ महोटो हशे ? माटे तुं जुठुं बोले छे, तेम हे राजन् ! तें पण कूवाना देमकानी पेरे आटलीज स्त्रीयो दीठी छे तेथी एनाज वखाण करे छे, परंतु पांच पांमवनी स्त्री द्रौपदी एवी छे के तेना एक अंगुठाना नखाग्रना रूप सरखुं पण ताहारी कोइ राणीनुं रूप नथी, त्रण लोकमां ए द्रौपदी समान कोइ स्त्रीनुं रूप नथी एम कहीनें नारद चालतो थयो, पाछलथी पद्मोत्तर राजा कामे पीडित थको चिंतववा लाग्यो जे एवी स्त्री विना जन्म निष्फल छे पण द्रौपदीने पामवानो कोइ उपाय सूज्यो नही तेवारें अठम तप करी पूर्वभवसंगति देवतानुं आराधन कर्युं देवता प्रत्यक्ष आवी उभो रह्यो अने कहेवा लाग्यो के हे राजन् ! मने केम संभार्यो माटे जे काम होय ते फरमावो, पद्मोत्तर राजाये द्रौपदी लेइ आववानी याचना करी तेवारे देवतायें कह्यु ते महा सती छे माटे शील भंग करशे नही तो तुं फोकट शा वास्ते तेने तेडावे छे तो पण पद्मोत्तरे घणो हठ कर्यो त्यारे देवताये द्रौपदीनें अवस्वापिनी निद्रा आपी, ज्यां सुती हती त्यांथी ढोलीया सहित उपाडीने पद्मोत्तर राजानी अशोक वाडीमां आवी मूकी अने राजाने कह्यु के ते म्हारा हाथे मातुं काम कराव्युं छे, माटे हवे कोइ पण दिवसे तुं मने याद करजे नही कदापि बोलावीश तो पण हवे हुं आवीश नही एम कही देवता स्वस्थानकें गयो, केटलिक वार पछी द्रौपदी निद्रामांथी जाग्रत थइने विचारमां पडी जे हुं इहां क्यां आवी छुं ! तेवारे पद्मनाभ बोल्यो के में तुजने म्हारी साथे भोग करवा सारुं देवतानी मारफते इहां मगावी छे, तो हवे तुं म्हारी साथें विषयसुख भोगव, हुं ताहारो दास छुं, तेवारे

द्रौपदी बोली हे देवानुप्रीय! तुं ७ महीना सुधी म्हारु नाम लइश नही, म्हारी वाहार करवा वाला, पांच पाण्डव तथा श्रीकृष्ण छे ते जो ७ महीनामां आंही आवशे नही तो तु कहीश तेम थाशे, पद्मनाभे पण हा कही अने विचार्यु जे इहा एनी खबर लेवा कोण आवनार छे? वली जोरावरीथी प्रीति पण नथाय एम जाणी, द्रौपदीनें पोताना महेलमां तेडी गयो द्रौपदीये त्या छठ छठ्ठनु तप अने पारणे आयंबिल करवा मांड्यु, हवे प्रभाते हस्तिनाग पुरमां द्रौपदीने महेलमा दीठी नही, तेवारे पांडवोयें घणो शोध कराव्यो पण क्यांये पतो लागो नही, तेवारे पांडवोनी माता कुंताजीयें द्वारिकामां जइने श्रीकृष्ण वासुदेवने कह्यु के हे पुत्र! द्रौपदीने रात्रिये सुतां थकां कोइ देव, दानव, राक्षस अथवा विद्याधर अपहरी गयो छे, अमे सर्व जगा जगाये जोइ पण मली नही तेवारें श्रीकृष्णजी कांइक हास्य पूर्वक बोल्या के पांच पांडव एक द्रौपदीने पण राखवाने समर्थ न थया, हुंतो म्हारी बत्रीश हजार स्त्रीयोनी रक्षा करु छु, ते सांभली, कुंताजी बोल्यां के हे वत्स! आ अवसरमां हास्य करवानु काम नथी तुं तरत द्रौपदीनी खबर कराव पछी श्रीकृष्णजीये पण घणो शोध कराव्यो परंतु क्यांय खोज पाम्या नही तेवारे चिंतातुर थइ बेठा एटलामां नारदऋषि त्या आव्यां तेणे आवी कृष्णजीने चिंतामा बेसवानु कारण पूछ्युं त्यारे कृष्णजीयें कह्यु के तमें कोइ स्थानकें द्रौपदीने दीठी? नारदजी बोल्या ते पापणी कोइ साधुने पण बोलावती नहती माटे दुःखमां पडी हशे, तथापि हुंतो कांइ ओलखतो नथी, परंतु धातकीखंडमा अमरकंका नगरीये द्रौपदी सरखी एक स्त्री दीठी छे पछी कोण जाणे तेहज होयतो होय एम कही, नारदजी चाल्या गया पछी श्रीकृष्णे विचार्युं के आ कृत अवश्य कुबुद्धि नारदनुज करेलुं छे माटे अमरकंका माहेज द्रौपदी हशे

एवु जाणी पांमवोने जइ सेना सहित श्रीकृष्णजी समुद्र तटे आव्या, समुद्र उलघवाने अर्थे अठ्ठम तप करी लवणाधिप देवताने बोलाव्यो ते पण प्रगट थइ बोल्यो के कहो शु काम छे हुं करवाने तत्पर हुं, तेवारे कृष्णजीये सर्ववृत्तात निवेदन करी कह्यु के अमनें धातकीखमना जावु छे, माटे अमारी सेनाने समुद्रमांथी जवानो मार्ग आपो, त्यारे देवता बोल्यो के तमे शा वास्ते त्यां जवानो श्रम करो छो हुं पोते जइ द्रौपदी लावीने तमोने आपीश,वली तमारो हुकुम होय तो अमरकंका नगरी सहित पद्मनाभ राजाने समुद्रमां नाखी देउं, तेवारे श्रीकृष्ण बोल्या के हे देव! तमे एवाज शक्तिवान छो एमां कांइ संशय नथी तथापि अमोने पांच पांमव सहित छ जणने जवानो मारग आपो तो अमारे त्यां जवानी इछा छे ते सांभली सुस्थित देवे ते छ जणाना छ रथ चालवानो मार्ग आप्यो पछी पांमवो सहित श्रीकृष्ण समुद्र उलंघीने अमरकंका नगरीना उद्यानमां जइ दारुक नामा सारथीने दूत बनावीने श्रीकृष्णे पद्मनाभ पासे मोकल्यो तेणे जइ पगउपर पग आपी त्रिवडी ललाटे चडावी,कह्यु के हे पद्मनाभ! श्रीकृष्णवासुदेवे तमोने कहेवराव्युं छे के,पांमवोनी स्त्री द्रौपदीने तमे लइ आव्या छो ते घणुं अयोग्य काम कर्यु छे तथापि हजी कांइ बगड्युं नथी माटे तमे आवी द्रौपदी अमोने आपी जाउ, तेवारे पद्मनाभ बोल्यो के हु तमोने पाछी आपवा सारुं द्रौपदीने लइ आव्यो नथी, हुंतो महारा बलथी लाव्यो छुं माटे तुं ताहारा स्वामीने जइ कहे के तमारे युद्ध करवु होय तो सुखें करो,हुं पण क्षत्री छु एम कही दूतने निछ्रठी ने काहाडी मूक्यो,दूतें आवी श्रीकृष्ण आगल तेणे कहेली सर्व वात निवेदन करी, श्रीकृष्णे जाण्युं के असाध्य रोग कांइ औषध विना जाय नही माटे युद्ध करवा तैयार थया,पद्मनाभ पण सेना लइ लडवाने साहामो आव्यो,पांमवो बोल्या के

अमे एनी साथे युद्ध करीशु कदापि जो हारी जश्ये तो आपे सहाय करवो त्यारे श्रीकृष्णे कह्यु के तमे महोटा योधा छो पण तमारी आवी आणी सांभलतां थकां एवु लागे छे के तमारे जीतवु कठण थइ पडशे,तो पण पांडवो श्रीकृष्णनी आज्ञा लइ युद्ध करवाने गया,पद्मनाभे पण महोटु लशकर लइने पांडवो साथे युद्ध कर्युं, त्यां भवितव्यताना वशथी पांडवो हारी गया ते वारें नाशतां थका सिंहनाद कर्यो ते सांभली पांडवो हार्या जाणी, एकलाज श्रीकृष्ण रथ उपर बेशीने पद्मनाभनी सेनाने मथन करवा लाग्या त्या धनुषना टंकारवथीज पद्मनाभनी सर्व सेना नाशी गइ अने पद्मनाभ पोते पण नाशिने नगरमां घुसी गयो नगरना दरवाजा बंधकरी मूक्या, तेवारे श्रीकृष्णे नरसिंह रूप धारण करीने हाथज मारी अमरकंका नगरीनो सर्व कोट भांजी नाख्यो, सर्व नगर धुजवा लाग्युं, घणा महेल पडीगया, पद्मनाभ राजा श्रीकृष्णजीनु एवु पराक्रम देखीने बीहीनो थको द्रौपदीने शरणे गयो अने कहेवा लाग्यो के हे सति ! तु महारी रक्षा कर, द्रौपदी बोली हे कपाल ! में तुजने प्रथमथीज कहेलुं हतुं जे महारी पछवाडे श्रीकृष्णादिक घणा बलवंत राजाओ वाहार करनारा छे तो पण तें मान्यु नहीं तेतो ठीक पण हवे जो तु जीववानी चाहना राखतो होय तो स्त्रीनो वेश पहेरी मुखमां तृण लइ महारी पछवाडें बेसी रहे एटलु जो महारु कह्यु करीश तो हुं तुजने पगेलगाडी दइश केमके श्रीकृष्ण सत्पुरुष छे तेनी आगल जे नमी जाय तेने मारे नही माटे ताहारे जीवतो रहेवानो ए उपाय छे ते कर, पद्मनाभे पण तेमज कर्युं, एटलामां श्रीकृष्ण पण आव्या, त्यां जूवे तो पद्मनाभ स्त्रीनु रूप करी द्रौपदीनी पछवाडे बेठो छे, श्रीकृष्णे द्रौपदीने पूछ्युं के आ कोण बेठो छे, द्रौपदीये कह्यु पद्मनाभ राजा तमारा भयथी नाशिने महारे शरणे आ


चित्र ८
कपिल वासुदेव

व्यो छे एम कही डौपदिये पद्मनाजने श्रीकृष्णनें पगे लगाड्यो तेवारे श्रीकृष्णे तेना उपर दया आणी जीवतो राख्यो अने पद्मनाजने कह्युके अरे तुं जाणतो नहतो जे आ डौपदीनी पठवा डे महोटा-महोटा वाहार करवा वाला छे? पण मूर्खोना माथामां जेवारे पडे छे तेवारे अक्ल आवे छे, तो हवे ताहारुं कर्युं कर्म ते जोगव्युं, डौपदीना प्रतापथी तुं जीवतो रह्यो एवु कही अखम शीलवती एवी डौपदीने लइने पांच पांमव सहित श्रीकृष्णजी पाठा वल्या जयनो शखपूर्यो, एवा वखतमां ते खेत्रमां श्रीमुनिसुव्रत तीर्थंकर पासे त्यांनो कपिल वासुदेव वखाण सांजले छे, तेणे शंखनाद सांजल्यो, मनमां शका उपनी जे कोइ बीजो वासुदेव उत्पन्न थयो! तेथी जगवतने पूछ्युं के महाराज! ए बीजो वासुदेव कोण थयो छे केंणे म्हारो शंख वजाव्यो? जगवत वोल्या के हे कपिल! एक खेत्रमां वे तीर्थंकर अने वे वासुदेव, न थाय पण एतो जंबुद्वीप संबधि जरत क्षेत्रनो श्रीकृष्णनामे वासुदेव ताहारा सरखी ऋद्धिनो धणी छे, ते पद्मनाज राजा डौपदी हरण करी लाव्यो हतो,तेने लेवाने आव्यो हतो,ते पद्मनाजने जीतीने पाछो जाय छे,तेणे शंखनाद कर्यो,ते सांजली तीर्थंकरनी आज्ञा लइने कपिल वासुदेव तरत तिहांथी उठीने पोताना सरखो वासुदेव जोवा सारु समुद्रने कांठे आव्यो, पण श्रीकृष्णतो दूर नीकली गया,मात्र समुद्रमां नीली, पीली रथनी ध्वजाउदेखीनें, शंखनो शब्द कर्यो, तेमां एवु जणाव्युं के हे मित्र! आप उजा रहो हुं तमोने मलवा सारुं आव्यो छुं माटे एकवार पाछा आही आवो, तमारा दर्शननी मने अजिलाषा छे, एवो शंखनो शब्द सांजलीनें श्रीकृष्णे पण पाछो शंखनो शब्द कर्यो तेमां आवीरीते कहेता हवा के हे मित्र! अमे घणा समुद्रनु उल्लंघन करी गया छैयें माटे पाछा अवाशे नही तमे अमारा उपर कृपादृष्टि राखजो एवु कहीने चालता थया,

गढ मढ कोट केम पाडलथी कपिल वासुदेवे जइ, पद्मनाजनें कह्यु के आ ताहारी नगरीना पडीगया ? पद्मनाजें कह्युके अहींआं जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रनो वासुदेव महारी राजधानी लेवा आव्यो हतो तेनी साथे महोटु युद्ध थयुं तेणे ए गढादिक त्रोडी नाख्या छे, कपिलवासुदेवे कह्यु के अरे अन्यायी महारी पासे तु जुठु बोले छे एम कही घणो निर्त्रंछीने देशमांथी काढी मूक्यो अने तेना पुत्रनें राज्यपाटे थापी कपिल पोताने स्थानकें गयो, पछी श्रीकृष्ण पांडवो सहित समुद्र उल्लंघन करी पांडवोने कहेवा लाग्यो जे हुं लवणाधिप सुस्थित देवने मलवा जाउं छु एटलामां तमे नावा लइ गंगानदी उतरीने पछी एक जण साथे तरत नाव मोकली देजो पछी पांडव द्रौपदी सहित नाव लइ गंगानदी उतस्या अने विचास्यु के जोइयें तो खरा जे कृष्णजी पोतें एकला गंगानदी उतरी आवे छे के नथी आवता एम निरधार करीने नाव मोकली नही, त्या श्रीकृष्ण घणो वखत थोभ्या पण नाव आवी नही तेवारे मनमां जाण्युजे पांडवो बुडी गया देखाय छे एवु विचारी चार जुजाउ करीने एक हाथमां सारथी सहित रथ उपाड्यो, एक हाथमां शस्त्र राख्या, एक हाथमां घोडाने पकड्या अने एक हाथथी गंगा नदी तरवा लाग्या तिहां साडी वासठ योजन गंगानदी पोहोली छे तेनी मध्य जागमां जेवारे आव्या तेवारे श्रीकृष्ण घणा थाकी गया ते वखत गंगादेवीये सहाय आपीने मध्यमां वि कूर्वित थल कर्यु त्या केटलोएक वखत विश्राम लइने वली पोतानी जुजाउथी गंगानदी त रीने तट उपर आव्या तिहा आगल आवीने जुवे छे तो पांडवो नाव सहित वेग वेग हसे छे, तेवारे श्रीकृष्ण रीश चढावीने पांडवोने पूछवा लागा के अरे दुष्टो ! तमें नाव पाछी केम न मोकली ? पांडवो बोल्या, तमारी परीक्षा जोवाने न मोकली, तेवारे श्रीकृष्ण बोल्या

के अरे मे वे लाख योजन समुद्र उल्लंघन करी पद्मनाभथी तमे नागा तेने जीती द्रौपदी आणी आपी, तेवारे मारी शक्ति न दीठी? जे हमणा महारुं बलजोवा वेगा? एम कही क्रोध चढावी ने पांचे पांडवोनें मारवा सारु लोहदंड उपाड्यो, वली दया आवीने जाण्युं जे महोटो अनर्थ थाशे? एम विचारी पांचे पांडवना रथ भांगी चूर्ण कर्या अने कह्यु के जाउ रे पापीउ हवे महारी नजरे आवशो नही अने महारा देशमां पण रहेशो नही एम कही पांचे बांधवने देशनिकाल कर्या अने जिहां रथ भांग्या, तिहां रथमर्दन कोट थयो, श्रीकृष्ण पोतानी सेना लइ द्वारकामा गया अने पांडव पण द्रौपदीने लइ सेना सहित हस्तिनापुरे आवी कुंताजीने देशनिकालनी वात कही, तेवारे कुंताजी द्वारकामां आवी श्रीकृष्णने मीठे वचने संतोषी पांडवोने बोलावी श्रीकृष्णने पगे लगाड्या पछी श्रीकृष्णे आज्ञा आपी के ज्यां में तमारा रथ भांग्या त्यां तमे पांडवरथनुपुर नगर वसावीने रहो पछी पांडवो त्यां श्रीकृष्णजीनी सेवा करता थका रह्या छेवट पांडुसेन नामे पोताना पुत्रने राज्य पाटें थापी पांच पांडव अने छठी द्रौपदीये दीक्षा लीधी, छठ, अठमादिक तप करी चौद पूर्व भणी ते पांचे पांडव श्रीशत्रुंजय तीर्थ उपर मोक्षे गया, अने द्रौपदी पण अगीआर अंग भणी मासनी संलेपणा करी पांचमा ब्रह्मदेवलोकें गइ तिहांथी चवी महाविदेहक्षेत्रे मोक्ष पामशे ए रीते जबूद्वीपनो वासुदेव, धातकीखंडमां न जाय, ते गयो. ए पांचमुं अछेरूं जाणवु वली केटलाएक आचार्य एम कहे छे के वें वासुदेवनुं शंखेशंख पण भेगो न थाय अने इहां शंखेशंख मल्यो, माटे ए पण अछेरूं जाणवु. ॥ ६ ॥ ४ ॥ हवे छठुं आश्चर्य कहे छेः–युगलिया मरण पामीने नरकें न जाय, अने अहीं हरि तथा हरिणी, ए वें युगलिया मरण पामीने नरके गयां माटे

ए अछेरू थयुं तेनी कथा आम छे के, जबुद्वीपमांना जरतक्षेत्रनेविषे कौशांबी नगरीनो सुमुख नामे राजा हतो एकदा प्रस्तावे वसत ऋतुये ते राजा हाथीउपर आरूढ थइ नगरीनी नजीकना वनमां रमवाने अर्थे जतो हतो .मार्गे जता वीरकनामे कोलीनी वनमाला नामे जार्या अत्यत स्वरूपवती छे ते पोताना धणीने घणी वल्लज छे तेने देखीने माहोमाहे सराग दृष्टिये जोतां प्रीतिजाव उत्पन्न थयो तेथी राजा त्यांथकी आगल जाय नही तेवारे सुमतिनामा प्रधान कहेवा लाग्यो के हे स्वामि! समस्त सौजन आव्यां छतां तमे आगल केम चालता नथी? ते सांजली राजा पोताना प्रधाननी लाज आणी आगल वनमा गयो पण ते शून्यचित्तथको मनमाहे केवल ते स्त्रीनु चितवन छे तेथी क्यांयें पण चेन पामतो नथी ते जोइने प्रधाने पूछ्युं के हे महाराज! तमे आज आवा शून्यचित्त केम देखाउ छो? एम फरी फरी घणो आग्रह करी पूछयाथकी पोताना मननी सर्व वात राजाये प्रधानने कही ते सांजली प्रधान बोल्यो के तमे काइ चिता करशो नही, हु तमने ए स्त्री मेलवी आपीश पछी घेर आवी प्रधाने आत्रेयिकानामे परिव्राजिकाने बोलावी सर्व वात समजावी वनमालानी पासे मोकली, ते पण त्यां जइ जुए छे तो वनमाला पण विरहविव्हलथकी मुखे निःश्वास नाखती क्षणेक बेसे, क्षणेक उठे, क्षणेक पडे, ए रीते महाविरहिणी देखी तेने ते परिव्राजिका केहेवा लागी के हे वत्से! तु आज एम दुःखित केम देखाय छे? ताहारु दुःख मने कहे तो हुं ते दुःखथी तने पार उतारु ते सांजली वनमालाये गुह्यनी वात कही तेवारे परिव्राजिका बोली के हु तने राजानी साथे काले मेलवीश, तुं काइ चिता करीश नही, पछी ते परिव्राजिका हर्षवतथकी त्याथी जइ सर्व वात प्रधानने कही प्रधाने जई राजाने सर्व वृत्तात सं

लाग्युं तेवार पछी प्रभाते परिव्राजिका वनमालाने राजा पासे तेडी आवी। राजाये हर्षवंत थइ अंत पुरमां तेने राखी अने तेनी साथे ते पंचविध विषयसुख भोगववा लाग्यो हवे वीरक कोली घेर आव्यो, तेवारे तेणें स्त्रीने दीठी नहीं पछी पाडोशी प्रमुखने पूछतो थको भार्याना विरहथी घेलो थयो थको आखा गाममां हे वनमाला हे वनमाला करतो फरतो फरतो एक दिवसें चोमासामां राजाना प्रासाद नीचे आवी उभो रह्यो तेवामां राजा पण वनमालानें साथे लइ गोंखमां आवी बेठो राजाये वीरककोलीने देखीने मनमां विचार्युं जे में पापिष्ट पारकी स्त्री लइ लीधी ए अत्यंत लोक विरुद्ध अनार्य कार्य कीधुं मार्टे मने धि कार छे एम मनमां घणीज पोतानी निंदा करवा लाग्यो अने वनमालाये पण विचार्युं जे मे पापणीये स्नेहवंत भरतारने त्याग्यो ए म्हारा विरहथी ग्रंथिल थयो माटे म्हारी शीगति थाशे एम बन्ने जण पश्चात्ताप करे छे तेवामां अकस्मात् उपरथी विजली पडी तेथी बेउ जणां शुभ ध्यानें मरण पामी हरिवर्ष क्षेत्र युगलिया पणें उपन्यां.त्यां समस्त मनोवांछित कल्पवृक्ष पूर्ण करे छे अने सुखे रहे छे पछी वीरक कोली पण ते बेहुनु मरण जाणी ग्रथिलभाव त्यागी, अज्ञान तपस्या करी सौधर्म देंवलोकें किल्विपिया देवमां जइ उपन्यो त्यां अवधिज्ञानें जोयुं त्यारे जाण्युं के अरे म्हारा पूर्वभवना वैरी तो युगलीया थया छे, ते त्याथी मरण पामीने वली देवता थशे माटे ए देवता न थाय एवो उपाय करुं एम विचारी ते युगलने त्यांथी उपाडीनें चपानगरीमां इक्ष्वाकुवंशनो चंद्रकीर्त्ति राजा अपुत्रीयो मरण पाम्यो छे त्यां नगरनां लोक सर्व आपणो कोण राजा थाशे एवी चितामां पड्या छे एटलामा ते देवताये ते युगलीयाने लावीने नगरीना लोकोने सोंप्या अने कह्यु के हुं तमारे माटे ए राजा लाव्यो छुं, एने जेवारे

नूख लागशे तेवारे ए कल्पवृक्षनां फल खाय छे, तेनी साथे मास मेलवीने खवरावजो तथा आहेडो करवा शीखावजो, देवताये मनमा विचाखु जे ए मास नक्षण करशे अने मासना लोलुपी थाशे तेथी मरण पामीने नरके जाशे तो महारु वैर वलशे एम चितवी हरि अने हरिणी एवु तेनुं नाम आपी देवता पोताने स्थानके गयो, लोकें पण देवताना कह्या प्रमाणे तेने मास मदिरा खवरावता शीखव्युं तेथी ते मासना लोलुपी थयां,पछी ते हरिराजाना पुत्रादिक जे थया तेनो त्यांथी हरिवंश कुल कहेवाणो, ते हरिने हरिणी मरण पामी नरकें गया एरीतें युगलीया नरकमां जाय नही ते गया,माटे ए छठु आश्चर्य जाणवु ॥ ६ ॥ ॥ हवे सातमुं अछेरु कहे छे आ नरतक्षेत्रने विषे बिनेलनामा सन्निवेषे एक पूरण नामा शेठ रहेतो हतो ते एक दिवसे पाछली रात्रे जाग्यो थको कुटुंब जागरण करतां मनमा विचार उपज्यो के, महारा धरमा घणुं धन परिवार छे ते में पूर्वला नवमां कोइ सारी धर्मकरणी कीधी छे तेना योगथी हु संपदा पाम्यो छु माटे फरी हमणा पण काइक धर्मकरु तो वली आगल पामीश, एम चितवी, प्रनातें स्वजनादिकने पूछी, पुत्रने कुटुंबनो नार सोपी, पोते तापसी दीक्षा लइने एवो अनिग्रह कर्यो के जावज्जीव सुधी महारे छठ छठ एटले बे बे उपवासे पारणो करवो अने पारणाने दिवसे चारखूणानु पात्र लइने निक्षा मागवी तेमां पहेला खूणामां जे निक्षा मले ते जलचर जीवोने खवरावी देवी, पण महारे खावी नही तथा बीजा खूणामां जे निक्षा पडे ते पखीउने खवरावी देवी तथा त्रीजा खूणामां जे निक्षा पडे ते अन्यागतने खवरावी देवी तथा चोथा खूणामां जे निक्षा पडे ते जलमां धोइनें महारे पोतें खावी एरीतें बार वरस पर्यंत तपस्या करी मरण पामीने चमरचचा राज्यधानीमां चमरेंद्रपणे नुवनपति देवोमा जइ

उपन्यो त्यां उपजतांज अवधिज्ञाने करी जोयु तो सौधर्मेंद्रना पग पोताना मस्तक उपर दीठा
तेथी महाक्रोध उपन्यो तेवारे सर्व सामानिक देवोने बोलावीने कह्यु के हे देवो ! आ कोण
दुष्ट माठा पुण्यनो धणी जे म्हारा मस्तके पग देइने बेठो छे, तेवारे देवो बोल्या हे स्वामी पूर्व
जन्मने विषे संपादन करेला पुण्यें करी सर्वना करतां अतिशय समृद्धि अने पराक्रम छे जेनुं एवो
आ सौधर्माधिप छे ए अनादिकालनी मर्याद छे माटे इहां तमारे कोप न करवो तमारा सर
खा इंद्र पूर्वे थइगया तेना उपर पण एमज पग रहेता आव्या छे माटे इर्ष्या म करो इत्यादिक
देवोये कह्यु तोपण चमरेंद्र क्रोधे भर्यो थको बोल्यो के जेनी उपर सौधर्मेंद्र पग राखे एवा पूर्वे
थयेला चमरेंद्र ते जूदा अने हुं जूदो माटे हुं त्यां जइ सौधर्मेंद्रने पग पकडी हेठो नाखुं, एवु
कही आयुधशालामां आवी, परशु शस्त्र हाथमां लइने सौधर्मदेवलोकें जावा लाग्यो तेवारे
सर्व देवोये वर्ज्यो तोपण कोइनुं मान्यु नही, ते वखत सुसुमारपुरने विषे श्रीमहावीर प्रतिमा
स्थित रह्या हता तेनुं शरण लइने लाखयोजननुं रूप विकूर्वी ब्रह्मांड फूटीपडे एवो शब्द
करतो, पगथी धरती कंपावतो, हाथे तालोटा देतो, मेघनी परें गर्जारव करतो, वीजलीनी पेरे
जबकार करतो, ज्योतिष्यचक्रनें त्रास पमाडतो, देवताउने भयभ्रांत करतो, देवीउ बीक पाम
ती थकी देवोने गले वलगवा लागीउ एवा प्रकारनो कोलाहल करतो, परिघायुध फेरवतो, ग
र्वेकरी अंध थयो थको सौधर्मेंद्र साहामो धायो त्यां पोतानो एक पग सौधर्मावतंसक विमान
नी पद्मवर वेदिकाने विषे अने बीजो पग सौधर्मसभामां राख्यो तेवारे सर्व सौधर्मदेवलोकना
देवता भयभ्रांत थइने इहां तिहां नाशीगया चमरेंद्र बोल्यो अरे देवो तमारो इंद्र क्यां छे?
काली अमावास्यानो जन्म्यो मने बतावो तो हमणा फरसुथी मारी नाखुं एवु देवताउने क

हीने मुखमांथी अग्निज्वाला काहाडतो थको, लाबाहोठ, कूवा सरखा गाल, खाम्द सरखा नाकना फोरणां, अग्नि सरखां नेत्र, सूपडा सरखा कान, कुसी सरखा दात, गलामा सर्प हाथमां वीठीना घरेणा, क्याकतो उंदरो बाधेला, क्यांकतो नोलीया घोह बांधेली, काळु रूप धारण करेलुं एवो देखी, देवदेवीये कोलाहल कर्यो, ते कालाहल सांनलीनें इंड्रे अवधिज्ञाने जोयुं तेवारें जाण्यु जे एतो चमरीयो अडधो घडो नरेलो उछले ले माटे हवे एने हु शिक्षा आपु एम विचारी, हजार देवताउथी उपडी शके नही एवु अग्निज्वाला करतु देदीप्यमान वज्र चमरीया उपर मूक्यु ते पोतानी उपर आवतुं देखीनें चमरेंद्र बीक पामतो थको माथो नीचुं अने पग उंचा करेला एवो थको, त्यांथी नागो तेना क्यांएक घरेणा पड्या, क्यांएक पोतें पडतो थको नासवा मांड्यो पण स्वनावे चमरेंद्रनी नीचे आववामां शक्ति घणी होय अने वज्रने उचुं चडवामां शक्ति घणी होय तेथी छेटुं रही गयुं त्यारे चमरेंद्र पोताना लाख योजन वाला विकूर्वेला शरीरनो उपसंहार करी, “ शरण शरण ” एवु बोली, कुंथुआ जेवो सूक्ष्म थइने श्रीमहावीरस्वामीना चरणनी वचमां प्रवेश करतो हवो एवीरातें वज्रथी ऊरतो थको श्रीमहावीरस्वामीने शरणे बेठो एटलामां शक्रेंद्रे जाण्युं जे चमरीयानी एटली शक्ति नथी जे विना शरणे इहां चाल्यो आवे माटे निश्चेथी ए श्रीअरिहंतनु अथवा अरिहतनी प्रतिमानु अथवा नावित अणगारनुं शरण लेइनें इहां आव्यो हशे ? तो रखे आशातना थाय नही ? एवु विचारी अवधिज्ञाननो उपयोग आपी जोयुं तो श्रीमहावीरस्वामीनु शरण लेइ आव्यो हतो एवु जाणी तत्काल वज्रनी पाछल शक्रेंद्र पण चाल्यो ते श्रीमहावीरस्वामीथी चार अंगुल अप्राप्त थयेला वज्रने पाछु खेंची लीधुं कारणके महावीरस्वामीथी चार आंगुल

छेटें वज्र परिभ्रमण करतुं हतुं पण तीर्थंकरनी आशातना टालवा माटे तीर्थंकरनी पासे वज्र जाय नही एरीतें चमरेंद्रने श्रीमहावीरने शरणे आव्यो जाणी छोडी दीधो अने भगवानने कह्यु हे प्रभु ! म्हारो अपराध खमजो एवु कही लगारेक दूर जइने पगथी जमीकूटीने बोल्यो अरे चमर हवे श्रीवीरभगवाननी कृपायें तुं महारो भय म राखजे एवु कही भगवानने वांदी तेमनी आज्ञा लेइ शक्रेंद्र पोताने स्थानकें गयो, चमरेंद्र पण नाना प्रकारे भगवाननी स्तुति करी, वांदीने पोतानी चमरचंचा राजधानीये गयो, त्यां पोताना सिंहासन उपर उदास थइ बेठो त्यारे सामानिक देवे आवी वधाव्यो अने कह्यु के शोच कां करो छो तेवारें चमरेंद्रे पोतानी वीतक वात सर्व कही अने कह्युके हे देवाणुप्रियो ! ए सर्व श्रीवीरभगवाननो उपकार छे माटे वांदवाने चालो एम कही सर्व देव देवीयोने लइ महोटी ऋद्धि सहित आवीने श्रीमहावीरने वांदी नाटक करी पोताने स्थानकें गयो एरीते पातालवासी चमरेंद्र उंचो सौधर्मदेवलोकें जाय नही ते आ अवसर्पिणी कालें गयो माटें ए सातमुं चमरोत्पात नामे आश्चर्य जाणवु ॥ ७ ॥ हवे आठमुं अछेरु कहे छे अष्टापद पर्वत उपर उत्कृष्ट पांचशे धनुष अवगाहना वाला एक श्रीऋषभ देव पोते अने भरत विना नवाणुं भगवंतना पुत्र, तथा आठ भरतना पुत्र मली एकसो ने आठ पुरुष एक समयमां सिद्धि पाम्या, ते मध्य अवगाहना वाला सीझे पण उत्कृष्ट अवगाहना वाला एक समये एकसोने आठ न सीझे, मात्र बेज सीझे अने इहां एकसो आठ सिद्धा माटे ए आठमुं अछेरुं जाणवुं ॥ ८ ॥ ॥ हवे नवमुं अछेरुं कहे छे श्रीमहावीर देव कोशंबी नगरीयें समोसर्या, त्यां चंद्रमा अने सूर्य जेनां शाश्वतां विमान, ज्योतिषचक्रमां छे ते तेज विमानमां बेसीने पश्चिम पोरसिये श्रीमहावीरने वांदवा सारु आव्या, अहि

आं कोइएक एवु कहे छे के उत्तर वैक्रिय विमानमां वेशीने आव्या, परतु तेम न जाणवु ए मूलगे विमाने वेशीनेज वांदवा आव्या छे ते, मूलगे विमाने कोइवारे न आवे अने हमणा आव्या माटे ए अछेरु जांणवु ॥ ए ॥ हवे दशमुं असयती, आरम्नी, परिग्रहवत, अब्रह्म चारी गृहस्थना वेषे रहेला, तेनी पूजा, सत्कार ते असयतिपूजा नामे दशमुं अछेरु छे, ते आ वी रीते के श्री सुविधिनाथना निर्वाण पछी केटलोक काल व्यतिक्रम्यानतर हुन्डावसर्प्पि णीना दोषने लीधे साधुउनो विछेद थयो, सर्व साधुकाल करी गया कोइसाधु रह्यो नही, ते वारे लोक बोल्या हवे कोने पूजीये तेवारे रूषभदेवजीनी वारे श्रावक ब्राह्मण कहेवाता तेनो दाखलो लइ जे स्थविर श्रावक हता, तेनी पासे जइ लोको धर्म पूछवा लाग्या ते पण जेवु जा णता हता, तेवु तेउने कहेवा लाग्या लोक पण तेमने धन वस्त्रादिक देवा लाग्या, तेथी तेउ गर्वित थया थका पोतानां मन कल्पित नवीन शास्त्र बनावी कहेवा लाग्या के जे कोइ पृथ्वी शय्या, मदिर, सुवर्ण, रूपु, लोह, कपास, गाय, कन्या, अश्व अनें गज, अमने आपे, ते आ लोकें तथा परलोके महा फल पामे अने अमेंज सुपात्र छइयें एवो उपदेश साभली लोके तेमने गुरु करी मान्या एवी असयतीनी पूजा चाली एम केटलाएक काले तो वली साधुनो धर्मज विछेद गयो अने जैन विना पाखन्डी सन्यासी प्रमुख अन्य दर्शनीज पूजाववा लाग्या, प्रथम सदा सर्वदा सयतीनी पूजा थती हती तेथी विपरीतपणाये करीने श्रीशीतलनाथजिनना तिर्थ वेसतां सु धि आश्चर्य चाल्यु, इहाजे साधु नहोय अने साधुपणे पूजाय ते आश्चर्य जाणवु तेमज श्रीतीर्थ करोनु तीर्थविछेद नथाय ते विछेद थयो ते पण आश्चर्य जाणवु ए दशमुं अछेरु छे ए रीतें ए दश आश्चर्य आ चोवीशीमा थयां वली अनते काले थशे ॥ १० ॥ हवे दश अछेरा

कया कया तीर्थंकरनी वारे थयां ? [illegible] ठे श्री रुपजदेवना वारामां एकशो ने आठ सिद्ध थया ॥ १ ॥ श्री शीतलनाथना वारामां हरिवंश कुलनी उत्पत्ति थइ ॥ २ ॥ श्री मल्लीनाथना वखतमां स्त्री तीर्थंकर थइ ॥ ३ ॥ श्री नेमिनाथना वखतमां अमरकंका नगरीये श्रीकृष्णनुं गमन थयु ॥ ४ ॥ अने श्री सुविधिनाथना वारामां असंयती ब्राह्मणोनी पूजा थइ ॥ ५ ॥ ए असयतीनी पूजा तो श्री आदिनाथना वखतमां पण मरीचि कपिलादिकनी सांजलिये ठैये एम घणुं करीने बीजा तीर्थंकरोना वारामां पण प्रवाहे थाय ठे ॥ ॥ अने पांच अछेरां श्री महावीर स्वामीने वारे थयां ॥ १० ॥ ॥ इति अछेरा अधिकार संपूर्ण ॥ ॥ हवे इंद्र महाराज विचारे ठे के जगवान श्रीमहावीर स्वामी माहणकुंम नगरे रुपजदत्त ब्राह्मणनी जार्या देवानंदानी कूखमां उपन्या ए आश्चर्य थयुं, जे माटे तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती, बलदेव अने वासुदेव एमनो जो नीचगोत्रकर्मक्षय न थयो होय, वेद्यो न होय, निर्जर्यो नहोय, ते कर्म उदय आवे तेना उदये करीने श्रीअरिहंत, चक्रवर्त्ती बलदेव अने वासुदेव ते पण अंतप्रांत तुछ दरिद्री प्रमुख कुलमां आव्या, आवे अने आवशे कूखने विषे गर्जपणे उपन्या ठे, ऊपजे ठे अने उपजशे पण जे योनी मारगे जन्म पणे निकलवुं ते कोइ निकल्या पण नथी निकलता पण नथी अने निकलशे पण नही एटले जन्म्या पण नथी, जन्मता पण नथी अने जन्मशे पण नही ॥ १९ ॥ ॥ एवीरीत ठे पण ए जगवान श्रीमहावीरस्वामी, माहणकुंमनगरमां रुपजदत्त ब्राह्मणनी जार्या देवानंदा तेनी कूखमां आव्या ॥ २० ॥ तो हवे महारो ए आचार ठे के जे वखते जे इंद्र होय ते इंद्र ते वखतें अरिहंत, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव ए जो अंतप्रांत तुछ दरिद्री प्रमुख यावत् ब्राह्मणना कुलोमां आवी उपन्या होय तो

तेने अंतप्रांतादिक नीच कुलोमांथी लइने, उग्र, भोग, राजन्य,क्षत्री, हरिवंश इत्यादिक उत्तम कुलोमा सहरावे, ए कुलोमा लावी मूके, नीच कुलमा जनम थवा आपे नही, ए सर्व त्रणे काळनां जे इन्द्र होय तेमनी मर्याद छे तो निश्चे हुं पण भगवान श्रीमहावीरस्वामीने देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमांथी लइने ज्ञातक्षत्री, ज्ञात सिद्धार्थक्षत्री, तेमनो काश्यप गोत्र, तेनी भार्या त्रिशला क्षत्रीयाणीनी कूखमां गर्भपणे मूकुं,एवु तेमना भाग्य प्रमाणे विचारीने इन्द्रमहाराजे, हरणीगमेषी नामा देव जे पायदल कटकनो मालेक छे तेने बोलावीने एवीरीते कह्यु ॥२१॥ के निश्चे हे देवाणुप्रिया! आ वात थइ नथी,थाती नथी ने थासे पण नही जे श्रीअरिहंतादिक शिलाका पुरुषो छे ते अतप्रातादिक नीचकुलोमा आव्या, आवे अने आवशे ॥ २२ ॥ अने जो कोइ नीचकुलमा आवेतो ते, लोकोमां अछेरो कहेवाय, अनंता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालथी जो कोइ अरिहंतादिकोनो नीचगोत्रकर्मनो क्षय न थयो होय, वेद्युं भोगव्यु न होय ते उदय आवे तो श्रीअरिहंतादिक नीचकुलमां आवे खरा पण तेनो ते नीचकुलमां योनि मार्गे जन्म नथाय ॥ २३ ॥ अने ए भगवान श्रीमहावीरस्वामी, जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमा ब्राह्मणकुंडगामे ऋषभदत्तब्राह्मणनी भार्या देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमां उपन्या ॥ २४ ॥ तो अतीत, अनागत अने वर्त्तमान ए त्रणेकालें जेवारे जे इन्द्र होय तेनो ए आचार छे जे श्री अरिहंतादिक जो नीचकुलमा आवी उपजे तो तेने उग्रादिक उंच कुलोमा लइ मूकवु ॥२५॥ तेमाटे हे देवाणुप्रिया! तमे जाउ ते भगवान श्रीमहावीर स्वामीने ब्राह्मणकुंडगाम नगरने विषे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदानी कूखमांथी लइने, क्षत्रीयकुंड नगरने विषे सिद्धार्थक्षत्री राजा तेनी भार्या त्रिशला क्षत्रियाणी छे तेनी कूखमां गर्भ पणे जइ मूको अने

त्रिशला क्षत्रियाणीनो जे गर्भ छे ते देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमां मूको आ महारी आज्ञा तत्का ल करीने पाछी सोंपो अर्थात् ए काम करीने पाछुं मने आवी कहो के जे आपे फरमास करी ते काम हुं करी आव्यो छुं एवु कहो ॥ २६ ॥ ॥ इहां कोइ प्रश्न करेके इंद्रमहाराजने एज विचार केम उपन्यो जे देवानंदानी कूखमांथी अपहरीने त्रिशलाराणीनी कूखमां संक्रम ण कराववो केमके ते वखतमां बीजा पण श्रेणिक प्रमुख महोटा महोटा राजा हता तेमने तो संभार्या नही अने ए सिद्धार्थ तो सामान्य राजा हतो तेने याद कर्यो तेनुं शुं कारण हशे? एनो उत्तर एम छे जे सहु सहुनां पोत पोतानां भाग्य प्रमाणे देवोने पण करवानी बुद्धि उप जे छे, कर्मथी उपरांत करवानी शक्ति देवोमां पण नथी इहां पण पूर्वला भवमां त्रिशलारा णीनो जीव देराणी हतो अने देवानंदानो जीव जेठाणी हतो बन्ने एक घरमां रहेती हती, परंतु कषाय महा बलवान छे जो जीव रुडुं करवानी चाहना करे तो कषाय माठुं करी आपे हवे लोभना वशथी जेठाणीये देराणीनो रत्नकरंमीयो चोरी लीधो देराणीयें संभाव्यो पण लाधो नही तेवारे बे जणीयोने घरनी मांहोमांहे घणाघणी बोलाचाली थइ तोपण जेठाणीये करंमीयो आप्यो नही तेना प्रभावथी कर्म बंधाणुं ते कर्म देवानंदाने उदय आव्यो, त्रिशला नी देवादार हती तेथी इंद्रने पण एवोज विचार स्वाभाविक पणे आवीगयो जे त्रिशलाराणी नेंज पुत्र रत्न देवरावुं तेमाटे हे भव्य प्राणीयो तमे जूओ के जे जीव जेवुं शुभाशुभ करशे ते जीवने तेवु शुभाशुभ मलशे ए उत्तर कहेवुं इहां कदापि कोइ अन्यदर्शनी पूछे के ए भगवानने गर्भमां जे आघो पाछो कर्यो ते तमे दीठो तो नथी तेवारे अमे केम मान्य करीये? एवो प्रश्न करे तेने कहेवु के तमारा मतमां पण भागवतना दसमस्कंधना बीजा अध्यने बलदेवनुं

पराव थयुं ठे वली पुराणने विषे पण पुरुषोने गर्भ उत्पन्न थया ठे ते देवतायें काढ्या ठे ए उपर मांधाता राजानी कथा कहे ठे –विशाला नगरीयें वनराजा महाधनवान ठे परतु ते अपुत्रीयो ठे माटे पुत्र थवा सारु शोलशे स्त्री परण्यो तो पण तेने पुत्र थयो नही तेथी ते राजा घणो चितातुर थयो जेमाटें शास्त्रमां कह्यु ठे के "अपुत्रस्यगतिर्नास्ति, स्वर्गोनैवचनैवच ॥ तस्मात्पुत्रमुखदृष्ट्वा, स्वर्गगछतिमानवा ॥ १ ॥ ॥ अपुत्रियाने गति न होय ते अवगतियो थाय तेवारे ते राजायें कोइकना उपदेशथी अठाशी हजार तापस ऋषियोने नोतरीने जोजन कराव्यु तेंत्रीशक्रोड देवता आराध्या, तथापि कोइमा पुत्र आपवानी शक्ति न दीठी तेवारे अठ्याशी हजार ऋषियोने पूछ्यु जे स्वामी तमे पेटज जरी जाणो ठो पण महारु काम करता नथी एवु राजानु बोलवु सांजली एक तापस बोल्यो जे हे राजन्! ताहारे पुत्र थाय एवो उपाय हु जाणु छु, हु तुजने सोनाना कचोलामां पाणी मत्रीने आपु ते पाणी ताहारी स्त्रीनें पीवरावजे तेथी ताहारे पुत्र थाशे पठी राजा पाणी मंत्रावीने कचोलो जरी घेर लइ आव्यो एटलामां तो सर्व राणीयोये पुत्र सनधी वात सांजलीने प्रत्येक जुदीजुदी राणी राजाने कहेवा लागीके पाणी अमने आपो एम माहोमाहे क्लेश थवा लाग्यो, राजाये विचार्यु जे हवे हु कोने पाणी आपु अने कोने न आपु! एम चितवी कोइने पाणी आप्यु नही पठी ते कचोलु लेइ वस्त्रे ढांकी पाणीयारा उपर राखीने राजा पोताने आवासे आवी सूइ रह्यो एटलामा रात्रीये राजाने तृषा लागी त्यारे पाणी मगाववा सारु पासे कोइ माणस हतो नही पण एक दासी तेनी शय्या पासे सूतीहती तेने कह्यु के अरे दासी तृषा लागी ठे माटे पाणी लइ आव ते दासीयें लइ मत्रेलुं कचोलु पाणीनु जरेलु हतुं ते आणी आप्यु

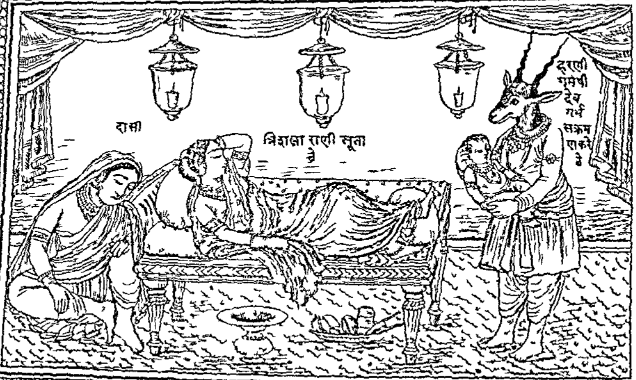
राजायें पण अजाणतां पीधुं ते पाणीना प्रभावथी राजाये गर्भ धारण कस्यो दिवसे दिवसें पेट वधतु गयुं तेथी राजा लज्जायमान थयो थको सभामां पण आवे नही, प्रधान विचास्युं जे ए घणुं खोटुं काम थयु पढी राजाने कही पाछा अठाशी हजार रुषीउने नोतस्या अने उलंभो दीधो जे तमे आ शु कस्यु ? हवे करार करो पढी रुषीउये तेत्रीश कोटी देवतानुं आराधन कस्युं तेवारे इन्द्रे आवी पोताना सेवकोने हाथे राजानु उदर विदारीने मांहेथी गर्भ काढयो तेवारे सर्वे बोल्या जे ए धावी शकशे नही पढी इन्द्रे स्त्रीनुं रूप करी धवराव्यो क्रमेक्रमे वधवा लाग्यो तेनु मांधता एवुं नाम दीधुं इत्यादि अनेक वार्ता ढे माटे गर्भ पण परावर्त्तन थाय ढे ए वात नि:संदेह ढे इति मांधाताद्दष्टांत ॥ हवे इन्द्रे हुकुम कस्या पढी हरणीगमेषी देवता पालाकटकनो मालेक ते खुशीथइने हाथजोडीने मस्तके अंजली करीने आज्ञाने विनय सहित प्रमाण करीनें इन्द्रमहाराजनी पासेथी निकलीने ते हरणीगमेषी उत्तरपूर्वनी वचमांनी इशानखुणमां आवीने वैक्रियसमुद्घात करे ते केवीरीतें तोके पोताना जीवना प्रदेश शरीरमांथी बाहेर काहाडीने समुद्घात करे संख्याता योजननो उंचो दंडकरे, जीव प्रदेश कर्मपुद्गलनो समूह दंडरूप करीने प्रगट करे ते दंड रत्नमय करे ते रत्न केवी जातिउना होय ते कहे ढे १ कर्केतनरत्न, २ वैडुर्यनीलरत्न, ३ वज्ररत्न, ४ लोहिताक्षरत्न, ५ मसारगल्लरत्न, ६ हंसगर्भरत्न, ७ पुलकरत्न, ८ सौगधिकरत्न, ९ ज्योति साररत्न, १० अंजनरत्न, ११ अंजनपुलकरत्न, १२ जातरूपरत्न, १३ सुभगरत्न, १४ अंकरत्न, १५ स्फाटिकरत्न, १६ अरिष्टरत्न, ए शोल जातिनां रत्न तेना असार पुद्गलने छांडीने सार पुद्गल ग्रहण करे ॥ २७ ॥ करीने उत्तर वैक्रिय धारण करे, मूलरूप तिहांहिज राखे, नवु रूप करीने. मनुष्यलोकमां आवे, केवीगतिथी मनुष्यलोकमां आवे ते कहेढे एक चपल, वी

ठ चपला, त्रीजी जयणा अने चोथी वेगा ए चारगतिये करीने चालतां तो केटलोएक काल वीतीजाय तोपण मनुष्यलोकमां आवी शके नही ? ते चारगतिनु प्रमाण कहेछे २८३५८० एटले बे लाख त्रियाशीहजार पाचशोने एंशीयोजन अने एक योजनना सात जाग करीये तेवा ठ जाग उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलु जरतो चाले ते प्रथम चमा गतिनुं प्रमाण जाणवु तथा ४७२६३३ एटले चारलाख बहोंतेर हजार ठशेने तेत्रीश योजन अने त्रीश कला उपर एटला क्षेत्रनु एक मगलु जरतो चाले ते बीजी चपलागतिनु मान जाणवु तथा ६६१६८६ एटले ठ लाख एकसठ हजार ठशे ठयाशी योजन अने चोपन कला उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलु जरतो चाले ते त्रीजी जयणागतिनु मान जाणवु तथा ८५०७४० एटले आठ लाख पचाश हजार सातसे चालीश योजन अने अढार कला उपर एटला खेत्रनु एक मगलु जरतो चाले ते चोथी वेगागतिनु मान जाणवु ए चार गतिना प्रमाण कह्यां हवे ए गतियोना प्रमाणथी जो देवता चाले तो ठ महीना सुधीमा पण आ मनुष्य क्षेत्रमां आवी शके नही तेमाटें दिव्य देवगतिये करी असख्याता द्वीप समुद्र उल्लघन करतो थको जिहां जबूद्वीपनु जरतक्षेत्र तिहां ब्राह्मणकुम गाम नगर तेमां रूषजदत्त ब्राह्मणनो घर तेमां जिहा देवानदा ब्राह्मणी सुती ठे तिहां आव्यो, आवीने जगवानने देखी प्रणाम करीने, देवा नदा ब्राह्मणीना सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा देइने अशुज पुजल दूर करीने शुज पुजल (घालीने) प्रक्षेप करीने कहेतो हवो के हे जगवन् आज्ञा आपो एवु कहीने,जगवानने पीडा रहित देवप्रजावे करीने हाथमा ग्रहण करी करसपुटमा लइने, जिहां क्षत्रियकुम नगर त्यां सि द्धार्थ क्षत्रिय राजाना घरमा जिहां त्रिशला क्षत्रियाणी ठे तिहां आवीने तेना सर्व परिवारने




चित्र ९

अवस्वापिनी निद्रा आपीने अशुन्न पुजल बाहेर काहाडीने शुन्नपुजल प्रक्षपाने जगवानने पीडा रहित त्रिशलाराणीनी कूखमां मूक्या दशमाद्वारथी देवे प्रवेश कस्यो अने नाजिथी पाछो निकल्यो एवु वृद्ध वाक्य छे पछी त्रिशलाना गर्नमां पुत्री हती तेने त्यांथी लइने देवानदानी कूखमां गर्नपणे मूकीने जे दिशाथी देवता आव्यो हतो ते दिशाये पाछो चाल्यो गयो ॥ २७ ॥ तिहां चमा चपलादिक चारगतिथी अधिक दिव्य देवगतिये करीने तीर्छो असंख्याता द्वीप समुद्रमांथी थइने लाखयोजनना प्रमाणवाला शरीर सरखा पग मूकतो थको उंचो जिहा सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतसक नामे विमान छे तथा शक्रसिंहासन छे अने जिहां शक्रेंद्रनामे देवताउनो राजा छे तिहां आव्यो आवीने शक्रेंद्रने पाछी आज्ञा सोंपी अर्थात् एम कह्युके तमे कह्यु ते सर्व काम करी आव्यो छुं ॥ २९ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे, श्रमणजगवत श्रीमहावीरस्वामीने वर्षा कालनो त्रीजो महीनो पांचमुं पखवाडियुं आसु वदि तेरशने दिवसे व्याशीमी रात वीतीगइ अने त्र्याशीमी रातना वर्त्तमानमां पोताना हितने लीधे अथवा जगवाननी अनुकपाने लीधे इंडे मोकलेला हरणीगमेषी देवता तेणे ब्राह्मणकुंडगाम नगरमां रूषजदत्तब्राह्मणनी जार्या देवानंदा ब्राह्मणी छे तेनी कूखमांथी लइने जिहां क्षत्रियकुंड गामनगरे सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी त्रिशला क्षत्रियाणी राणी छे तेनी कूखे मध्यरात्रिनेविषे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आव्यां थकां पीडा रहित मूक्या ॥ ३० ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे जगवान त्रणज्ञान सहित आवी उपन्या तिहां मुजने इहांथी संहरण करशे एवु जाणे पण संहरणनी वेला सूक्ष्म छे माटे ते जाणे नही अने संहरण कस्या पछी जाणे जे मने संहरण कस्युं एवु जाणे जे रात्रिमां श्रमणजगवत श्रीमहावीर स्वामीने देवानंदानी कूखथी लइने त्रि


चित्र १०
दासी
त्रिशला राणी सूता छे
हरणी
गमेषी
देव
गर्भ
सक्रम
णकरे
छे

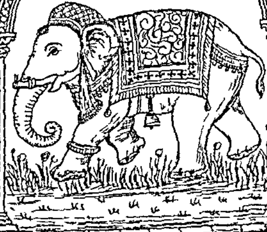
अवस्वापिनी निद्रा आपीने अशुभ पुद्गल बाहेर काढीने शुभपुद्गल प्रक्षेपीने भगवानने पीडा रहित त्रिशलाराणीनी कूखमां मूक्या दशमाद्वारथी देवे प्रवेश कर्यो अने नाभिथी पाछो निकळ्यो एवु वृद्ध वाक्य छे पछी त्रिशलाना गर्भमां पुत्री हती तेने त्यांथी लइने देवानंदानी कूखमां गर्भपणे मूकीने जे दिशाथी देवता आव्यो हतो ते दिशाये पाछो चाल्यो गयो ॥ २८ ॥ तिहां चपळा चपलादिक चारगतिथी अधिक दिव्य देवगतिये करीने तीर्छा असख्याता द्वीप समुद्रमांथी थइने लाखयोजनना प्रमाणवाळा शरीर सरखा पग मूकतो थको उंचो जिहां सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतसक नामे विमान छे तथा शक्रसिंहासन छे अने जिहां शक्रेंद्रनामे देवताउनो राजा छे तिहां आव्यो आवीने शक्रेंद्रने पाछी आज्ञा सोंपी अर्थात् एम कह्युके तमे कह्यु ते सर्व काम करी आव्यो छुं ॥ २९ ॥ ते काळने विषे ते समयने विषे, श्रमणभगवत श्रीमहावीरस्वामीने वर्षा काळनो त्रीजो महीनो पांचमुं पखवाडियुं आसु वदि तेरशने दिवसे ब्यासीमी रात वीतीगइ अने त्र्यासीमी रातना वर्त्तमानमां पोताना हितने लीधे अथवा भगवाननी अनुकंपाने लीधे इंद्रे मोकलेला हरणीगमेषी देवता तेणे ब्राह्मणकुंडगाम नगरमां रूपभदत्तब्राह्मणनी भार्या देवानंदा ब्राह्मणी छे तेनी कूखमांथी लइने जिहां क्षत्रियकुंड गामनगरे सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी त्रिशला क्षत्रियाणी राणी छे तेनी कूखे मध्यरात्रिनेविषे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आव्यां थकां पीडा रहित मूक्या ॥ ३० ॥ ते काळने विषे ते समयने विषे भगवान त्रणज्ञान सहित आवी उपन्या तिहां सुजने इहांथी संहरण करशे एवु जाणे पण संहरणनी वेला सूक्ष्म छे माटे ते जाणे नही अने सहरण कर्या पछी जाणे जे मने संहरण कर्युं एवु जाणे जे रात्रिमां श्रमणभगवत श्रीमहावीर स्वामीनें देवानंदानी कूखथी लइने त्रि

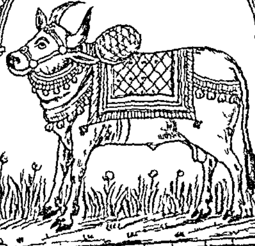
शला क्षत्रियाणीनी कूखमां गर्भपणे मूक्या ते रात्रियें देवानदा ब्रह्मणी पोतानी सुकोमल शय्या
मां सूति कांइक जागतीने सुपनु आव्यु के महारा जे महामंगलकारी चौद स्वप्नां हतां ते
त्रिशलाक्षत्रियाणीये खेंची लीधां एटले हरणकर्यां एवु सुपनु देखीने जागी ॥ २१ ॥ ॥ जे
रात्रिमां श्रमणभगवत श्रीमहावीरस्वामीने देवानदानी कूखमांथी लइने त्रिशलाक्षत्रियाणी वा
सिष्ट गोत्रवाली तेनी कूखमा मूक्या ते रात्रिमा त्रिशला क्षत्रियाणी शय्यामां सूती हती ते
शय्यानु स्वरूप आवीरीते कह्यु छे तिहां प्रथमतो जेनु स्वरूप कहेवामां आवे नही एवु तो वस
वानुं घर छे ते घर केहेवु छे तोके ते घरनी मध्य एटले भींतनी माहेनी बाजु चित्रे चित्रित छे अने
भींतनी बाहेरनी बाजुने घसीने धोली चलकादार करी छे एवु ते घर छे जिहां उपरनो भाग चित्राम
सहित छे अने जमीननो भाग तो जेवो मणिरत्नोनो उद्योत होय तेवो छे तेथी ते घरमां सर्व अं
धकारनो नाश थइगयो छे, अने नित्य उद्योत रहे छे वली जेने विषे जमीन उपर अनेक मांझणा
मांझ्या छे एवु आंगणुं छे वली आंगणे सरस सुगंधि पांच वर्णना फूलनां पुज मूकेला छे ते
फूलोनी रचना सहित छे तथा कृष्णागर भलो कुदरु शिलारस तेनो धूप तेणे घमघमायमान छे
तेणे करी मनोहर छे सुगध प्रधान चूर्णनो गंध छे जिहां, गधवट्टी समान छे. तिहां पुण्यवतने
योग्य जेनु वर्णन करवामां न आवे एवी शय्या छे तेने विषे शरीर प्रमाणे बे पासें उशीसा तकीया
राख्या छे, बे पासे गालमसूरीयां मूकेला छे, बे पासे उची छे,मध्यमां उंडी छे, जेम गगानदीनी
रेतिमा पग मूकीये ते नीचो जाय तेम जेमां पग मूकतां नीचो जाय ते समान नीखाण्या अतल
सना पटकूल वस्त्रे ते खाट ढांकी छे, भली मच्छरदानीयें रचित, रजराखवाना वस्त्र लाल रम
णीक सुकोमल वस्त्रे ढाकी छे. आकडानां फल मांहेलो कपास तथा माखण ते सरखो ते श

॥४९॥

ज्यानो स्पर्श ठे, नखु सुगंधित चूर्ण तथा फूलो जेने विषे विछाव्यां ठे, एवी शय्या ते शय्याने विषे मध्यरात्रिना अवसरमां त्रिशलाक्षत्रियाणी अल्पनिद्रामां सुती ठे ते वेलाये गजवृषनादिक चौद स्वपना देखीने जागी ॥३१॥ ॥ तेवारे ते त्रिशलाक्षत्रियाणी ते चौद स्वप्नामाथी पहेले स्वपने हाथी देखे ते हाथी कहेवो ठे तो के? चार दांत वालो ठे, घणो उंचो ठे, जेवा मेघ नां ठांटा धोला थाय तेवो धोलो ठे, तथा जेवो मोतीनोहार, क्षीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरणो, पाणीना कणीयां, अने रुपानो पर्वत एना सरखो धोलो ठे, वली ते हाथीनाकुंन स्थलमांथी मद ऊरे ठे तेथी तेना कपोल पासें नमरा गुंजारव करी रह्या ठे, इन्द्रना ऐरावत सरखो महोटो देखाय ठे, ते हाथी मेघनी पेरे गंनीर शब्दें गाजतो थको ठे, शुन उत्तम सर्व लक्षणे करी सहित, महोटा पेट वालो एवो हाथी पहेले स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणीये दीठो ॥ ॥ १ ॥ ३२ ॥ ॥ तेवार पठी बीजे स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणी वृषन देखे ते वृषन कहेवो ठे तोके? धोला कमलना समूह सरखो श्वेत ठे, तथा पोताना शरीरनी कांतिये करी सर्वदिशा उमा उद्योत करतो थको ठे, तथा घणी शोनाना समूहे करी शोनित एवी खांधानी नूमि ठे जेनी एवो ठे वली तेना शरीरमां पातला केश ठे ते केश जाणे तेले चोपड्या होयनहि? एवा ठे, घणो रुडो स्थिर शरीर ठे, वली जिहां जेवुं अंग जोइयें त्यां तेवु अग ठे, जेनुं एटले जिहां पातलु अंग शोने तिहां पातलुं ठे अने जिहां जाडुं अंग शोने तिहां जाडुं अग ठे तथा दृढ गोल शोनायमान मलरहित तैलादिके चोपड्या तीखां एवा वे शींगडा ठे जेनां तथा मोती सरखा उजला बरोबर सरखा शोनता दांत ठे जेना एवो वृषन ते जाणीये अनेक मंगलनुंज मुख होय नहि? तेने बीजा स्वप्नामा त्रिशलायें दीठो ॥२॥३४॥ ॥ तेवार पठी त्रीजा स्वप्नामां त्रिशला राणी

चित्र ११





ख्यानो स्पर्श ठे, नवुं सुगंधित चूर्ण तथा फूलो जेने विषे विठाव्यां ठे, एवी शय्या ते शय्याने विषे मध्यरात्रिना अवसरमां त्रिशलाक्षत्रियाणी अल्पनिद्रामां सुती ठे ते वेलाये गजवृषनादिक चौद स्वपना देखीने जागी ॥२१॥ ॥ तेवारे ते त्रिशलाक्षत्रियाणी ते चौद स्वप्नामांथी पहेले स्वपने हाथी देखे ते हाथी कहेवो ठे तो के? चार दांत वालो ठे, घणो ऊंचो ठे, जेवा मेघ नां ठांटा धोला थाय तेवो धोलो ठे, तथा जेवो मोतीनोहार, क्षीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरणो, पाणीना कणीयां, अने रुपानो पर्वत एना सरखो धोलो ठे, वली ते हाथीनाकुंभ स्थलमांथी मद झरे ठे तेथी तेना कपोल पासें भमरा गुंजारव करी रह्या ठे, इंद्रना ऐरावत सरखो महोटो देखाय ठे, ते हाथी मेघनी पेरे गंभीर शब्दें गाजतो थको ठे, शुभ उत्तम सर्व लक्षणे करी सहित, महोटा पेट वालो एवो हाथी पहेले स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणीये दीठो ॥ ॥ १ ॥ २२ ॥ ॥ तेवार पठी बीजे स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणी वृषभ देखे ते वृषभ कहेवो ठे तोके? धोला कमलना समूह सरखो श्वेत ठे, तथा पोताना शरीरनी कांतियें करी सर्वदिशा उंमा उद्योत करतो थको ठे, तथा घणी शोभाना समूहे करी शोभित एवी खांधानी भूमि ठे जेनी एवो ठे वली तेना शरीरमां पातला केश ठे ते केश जाणे तेले चोपड्या होयनहि? एवा ठे, घणो रुडो स्थिर शरीर ठे, वली जिहां जेवुं अंग जोइयें त्यां तेवु अंग ठे, जेनुं एटले जिहां पातलुं अंग शोभे तिहां पातलुं ठे अने जिहां जाडुं अंग शोभे तिहां जाडुं अग ठे तथा दृढ गोल शोभायमान मलरहित तैलादिकें चोपड्या तीखां एवा वे शींगडा ठे जेनां तथा मोती सरखा उजला बरोबर सरखा शोभता दांत ठे जेना एवो वृषभ ते जाणीयें अनेक मंगलनुंज मुख होय नहि? तेने बीजा स्वप्नामा त्रिशलायें दीठो ॥२॥२४॥ ॥ तेवार पठी त्रीजा स्वप्नामां त्रिशला राणी

सिंहने देखे ते सिंह कहेवो ठे तोके? मोतीनोहार, खीरसमुद्रनु पाणी, चन्द्रमाना किरण, पाणीना कणीया, तथा रूपानो पर्वत तेना सरखो धोलुं शरीर ठे जेनु वली ते सिंह रमणीक देखवा योग्य ठे, तथा दृढ ठे हाथ प्रमुखना अवयव जेना, वली उज्वल गोल अने तीक्ष्ण एवी जेना मुखमां दाढा ठे तेणे करी मुख शोभतुं ठे जेनुं, वली कमल सरखा सुकोमल राता एवा जेना होठ ठे, राता कमलना पत्रनी परे सुकोमल तालवु ठे, जीभ बाहेर काहाडतो थको लपलपायमान करतो थको शोभे ठे, वली पीला अने वीजली सरखा चलकता चचल जेनां नेत्र ठे, वली विस्तीर्ण पुष्ट अने माता एवा साथल ठे जेना, स्कध जेनु दृढ प्रतिपूर्ण निर्मल ठे, वली सुकोमल ठे भला विस्तीर्ण एवा जे सिंहकेसरा इहां केसरा एटले मुखना केश जाणवा तेने आटोपे करी शोभित ठे मुख जेनुं, वली जमीन उपर पछाडीने फटकारीने उचु कयु ठे पुछ जेणे एवा पूछडानो अत एटले ठेडो काननी वचमां ठे वली सौम्याकारवालो लीला करतो थको आकाशमांथी उतरतो थको त्रिशलाना मुखमा पेसतो थको तीक्ष्ण नखवालो सिंह त्रिशलाये त्रीजा स्वप्नामां दीठो ॥ ३ ॥ ३५ ॥ ॥ ते वार पछी चोथा स्वप्नामां त्रिशलाक्षत्रीयाणी सपूर्ण पूर्णिमाना चन्द्रमा सरखु ठे मुख जेनुं एवी लक्ष्मीदेवताने देखे ते लक्ष्मी किहां रहे ठे ते कहे ठे उचो हिमाचल पर्वत तेनी उपर एक पद्मद्रह ठे ते द्रहमां एक कमल ठे तिहां रहेवा वाली लक्ष्मी देवता तेनो पगथी लइने सर्व अगनी शोभानु वर्णन श्रीभद्रबाहुस्वामी करे ठे केमके प्राये देवताना रूप वर्णनमां पगोथी वर्णन कराय ठे माटें आंही पण पगोथी मांडीने वर्णन करे ठे, ते लक्ष्मीदेवीना पग भले प्रकारे करी सोनाना काचबा सरखा जाणे लाखने रसे रग्या मांस सहित एवा वचमां अति उचा अने

चित्र १२





सिद्दने देखे ते सिद्द कहेवो छे तोके? मोतीनोहार, खीरसमुद्रनु पाणी, चन्द्रमाना वाला०
[illegible] कणीया, तथा रूपानो पर्वत तेना सरखो धोळुं शरीर छे जेनु वली
[illegible] ने हाथ प्रमुखना अवयव जेना, वली ज
[illegible] ने जेनुं, वली

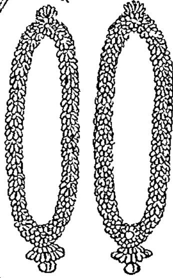
...एवा छे तथा त्रांबा सरखा नख छे, कमल सरखा कोमल आंगलां छे तथा
पिण्डि केल सरखी गोल छे नीचेनीचे पातली अने उपरउपर जाडी एवी जघापिण्डियो छे तथा
गुप्फा मासथी नेरेला छे माटे गुप्त छे हाड देखाय नही तथा ऐरावत हाथीना सरखो ज
घानो वचलो प्रदेश सोन्ने छे, सोनानी कटिमेखला छे केडमां जेनी, वली लक्ष्मीदेवीनी मूटी
थी लइने स्तन सुधी रोमराजी छे, प्राये स्त्रीयोना शरीरमां रोमराजी होती नथी तेमां वली
देवताने तो सर्वथा नहीज होय तोपण कवीश्वर श्रृंगाररस वर्णन करतो बोले छे, हवे ते रो
मराजी कहेवी छे तोके कज्जलनीपेरे तथा नमरानी श्रेणीनी पेरे श्याम छे, मेघघटा सरखी
काली छे, सरल मलेला थका सुकोमल, मनोहार विलास सहित सरस सूका फूल सरखा को
मल छे, वली नान्निमण्डल नलुं छे जेनुं, मुष्टीमां समाइ जाय एवी कटि छे, पेटमां त्रण
सल पड्या तेथी शोन्नाये मान छे, वली सर्वांगोपांगमां घरेणा आन्नूषण पहेरेलां छे जेने ते घ
रेणा कहेवां छे तोके अनेक प्रकारना मणियोंये करी जडेला छे, रत्नोये करी सोनामां मढ्या
छे, वली हृदयमां बे स्तन छे ते जाणे सोनाना कलश ज होय नहि? एवां छे, वली ते स्तन
हारें करी तथा कुंदमालाये करी व्याप्त छे तथा नला मोतीयोनां जालीयां तेणेकरी विराज
मान सोनैयानी माला क्यांएक मणिसूत्रनो दोरो छे तेणेकरी कंठ शोन्नायमान छे, बे कानोमां कु
ण्डल बे शोन्ने छे, एवा घरेणाना समुदायथी लक्ष्मी देवतानुं मुख शोन्ने छे, जेम राजा कुटुंबथी
शोन्ने छे तेम लक्ष्मीदेवीनुं मुख घरेणाथी शोन्ने छे वली निर्मल कमलनी पांखडी सरखा दीर्घ तीखां
अने अणीयालां एवां महोटां नेत्र छे जेनां बे हाथमां कमल छे तेमांथी पाणी छटकावती
थकी छे, वली लीलाने वास्ते हाथमां कमलवींजणो धरेलो छे, ते जेवारे कमल लीलाने सारुं

हलावे तेवारे कमलमाथी सुगध नीकले वली लक्ष्मीदेवीने मस्तकें वेणीदम घणो निर्मल नलो
कालो ले लांबो केड सुधी शोभे ले एवी ले ए नखथी मांमीने माथानी वेणीसुधी वर्णन कर्यु
१॥ एवी लक्ष्मीदेवता पद्मद्रहना कमलमा वसती हिमाचलनामा पर्वत उपर वेठी थकी दशदिशाथी
शोजायमान ले वली हाथी आवी सूढमां पद्मद्रहथी जल जरीने लक्ष्मीदेवीने स्नान करावे एवी
लक्ष्मीदेवताने त्रिशलाक्षत्रियाणीयें चोथा स्वनमां दीठी ॥ हवे हिमाचल पर्वत उपर लक्ष्मी देवता
नो निवास ले तिहा ए देवीनो परिवार केटलु ले तथा निवास केवा प्रकारनो ले ते कहे ले आ
जरतखेत्रना ठ खम ले तेना अतमां उत्तरदिशा तरफ एक चुलहिमवत पर्वत सोनानो ले ते
एकसो योजन उचो ले, तथा एक हजार वावन योजन अने बार कला उपर, एटलो पोहोलो
ले, तेमध्ये पद्महद ले, ते दश योजन ऊंमो, हजार योजन लांबो, पांचशें योजन पोहोलो ले
संपूरण जलेकरी नर्यो शाश्वतो ले, तेनु तलीयु वज्ररत्नमय ले, चोफेर पण वज्रमय ले, ते हदना
मध्यजागे एक कमल ले, ते कमलनु नाल दश योजननु दीर्घ ले, जलथी उपर वे कोश उचु ले,
एक योजन पोहोलु ले, एक योजन दीर्घ ले, कांइक जाजेरा त्रण योजननी परिधी ले, दश योजन
पाणीमा नाल ले, तेनुं वज्र रत्नमय मूल ले, रिष्ट रत्नमय मूलनो कांदो ले, इन्द्रनील रत्नमय
नाल ले, राता सुवर्णमय वाहेरना पांदडां ले, कांइक जांबूनंद सुवर्णमय अभ्यंतरनां पादडां ले,
तेमां सुवर्णमय कर्णिका ले, एटले वचली मोमी ले, ते वे कोश पोहोली अने एक कोश ऊंची ले,
तिहा रातां सोनाना केसरां ले ते कर्णिकामां श्री लक्ष्मी देवीनु जवन ले, ते एक कोश लांबु, अर्द्धो
कोश पोहोलु अने चवदशें चालीश धनुप ऊंचु ले, ते घरना वारणां पूर्व, दक्षिण अने उत्तर एवी ॥५१॥
त्रण दिशायें ले, ते वारणां पांचशे धनुप ऊंचां अने अढीशें धनुप पोहोलां ले, वली ते घरमा

अढीशे धनुष प्रमाण एक मणिमय पीठिका छे, ते पीठिका उपर लक्ष्मी देवीनी शय्या छे, हवे तिहां ए देवीनां मुख्य कमलनी पांखडिये लक्ष्मी देवीने आजरणादिक मूकवानां वलयाकारे एकशो ने आठ कमलो छे, ते कमलोनु सर्व ऊंच नीचपणुं मुख्य कमलथी अर्द्ध प्रमाणे जाणवु ए एकसोने आठ कमले करी ते मूल कमल वींटेलुं छे, जेम गढे करी नगरी विटायेली होय छे, तेम जाणवुं, हवे ते मूलगा कमलना बीजा वलयनी पूर्व दिशाये महर्द्धिक चार देवीउने वसवानां चार कमल छे, तथा वाव्य कोण, उत्तर दिशा, अने ईशानकोण, ए त्रणे दिशायें देवीना सामानिक देवताने वसवानां चार हजार कमल छे, तथा श्री देवीनी अभ्यतर पर्षदानां जे आठ हजार गुरुस्थानीय देवता छे, तेने वसवानां आठ हजार कमल, अग्नि कोणे छे, तथा मध्य पर्षदाना दश हजार मित्र स्थानीय देवताने वसवानां दश हजार कमल, दक्षिण दिशाये छे, तथा श्री देवीनां बाह्य पर्षदाना किंकर स्थानीय बार हजार देवताने वसवानां बार हजार कमल, नैरुत कोणे छे, अने श्रीदेवीना हाथी, घोडा, रथ, पायक, महिष, नाट्य, गंधर्व ए सात कटकना स्वामीने रहेवानां सात कमल, पश्चिम दिशाये छे हवे वली लक्ष्मी देवीना अंगरक्षक शोल हजार देवताने वसवानां शोल हजार कमल, ते त्रीजा वलयनी चार दिशामांहेली प्रत्येक दिशाने विषे चार चार हजार कमल करतां शोल हजार कमल छे, तथा चोथा वलयने विषे श्री देवीना अभ्यंतर आभियोगिक बत्रीश लाख देवताने वसवानां बत्रीश लाख कमल छे, तथा पांचमां वलयने विषे श्री देवीना मध्यम चालीश लाख आभियोगिक देवतानां चालीश लाख कमल छे, तथा छठ्ठा वलयने विषे श्री देवीना अडतालीश लाख बाह्य आभियोगिक देवतानां अडतालीश लाख कमल छे, एव

मूल कमल सहित सर्व मली छ वलयनां एक क्रोड, वीश लाख, पच्चाश हजार, एकसो ने
वीश कमल जाणवां ते कमलनां मान मुख्य कमलथी माफी अनुक्रमे अर्द्ध अर्द्ध प्रमाण
लेवा ए सर्व कमलवासी देवता श्रीदेवीनो परिवार जाणवो ए देवी भवनपति मांहेली जा
णवी ॥ ए चोथु स्वप्न कह्यु ॥ ४ ॥ ३६ ॥ इहां बीजो वखाण सपूर्ण थयो ॥ २ ॥ ॥
हवे त्रीजो वखाण कहे छे तेवारपछी वली त्रिशलाराणी पाचमां स्वप्नमा फूलोनी माला देखे
ते मालामा रस सहीत कल्पवृक्षना फूल, तेणे करी घणी मनोहर छे, वली चपाना फूल,
अशोकनां फूल, पुन्नागनां फूल ते नागप्रियगु सरखा ए फूलनां झाड थाय छे, मोगरानां फूल,
मालतीना फूल, जायना फूल, जूइना फूल, कोल्लज फूल ते कोइ वेलि विशेषना फूल, कोजनां
फूल, कोरटनां फूल, दमणाना फूल, नवमालिकानां फूल, बकुलवृक्षनां फूल, तिलवृक्षनां फूल,
वासतिकाना फूल, पद्मकमलना फूल, उत्पलते पुन्डरीकनां फूल, कुदमचकुद वृक्षना फूल, अगथि
याना फूल, आम्रमांजर एवा प्रकारना फूलोनी घणी सुगध छे जेमां एवी वे फूलोनी माला तेनी
मनोहर गधथी खेचाणा थका आव्या एवां जे भमरा भमरीयो तेनो गुजारव शब्द जेनेविषे थइ
रह्लो छे वली ए बेउ मालामा सर्व ऋतुनां फूल सुगधा पाच वर्णा छे परतु तेमां धोलो वर्ण
विशेष छे, ते ज्या ज्यां जे जे फूल शोभे त्यां त्यां ते ते फूल गुथ्यां छे एवी वे माला पांचमां
स्वप्ने त्रिशलादेवीये दीठी ॥ ६ ॥ ३७ ॥ ॥ तेवार पछी छठा स्वप्नमां त्रिशला देवी चंद्रमा
देखे ते चंद्रमा कहेवो छे तोके ? गायना दूधना फीण सरखो उजलो छे, रूपानां कलश सर
खो धोलो छे, वली हृदय नेत्रने वल्लभ, सपूर्ण पूर्णिमाना अधकारने हरवा वालो, वली
शुकलपक्षमां शोभायमान, कुमुदवननो बोध एटले उघाडवा वालो, रात्रिनी शोभाने करवा

चित्र १२



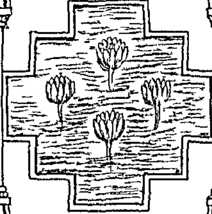


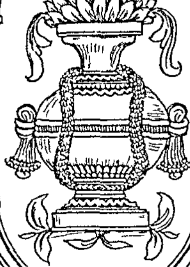


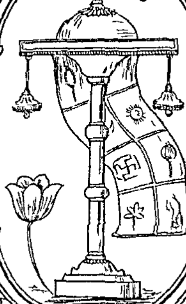
वालो, नलीरीतें उजला काचनी परे शोन्नायमान, आकाश रूप तलावनो हंस वेग पक्षे करी पूर्ण, सर्व ज्योतिपियाना मुखनुं मम्डन, अंधकारनो वैरी, कंदर्पबाणनो पूरवा वालो, समुइनां जलनो वधारवा वालो केमके जेवारे शुक्लपक्षमां चइमा उगे तेवारें समुइनी वेल वधे, विरहिणी स्त्रीने चइना उदयथी अधिक विरह जागृत थाय तेमाटे विरहियोने किरणोये करी शोपण करवा वालो, आकाशनु तिलक, रोहिणीना हृदयनें वल्लन्न केमके चइमा रोहिणीनो नरतार ठे एवी लोकोमा केवत ठे परतु रोहिणीतो नक्षत्र ठे ते वने नही एवो पूर्णिमानो चंइ त्रिशलादेवीये ठहा स्वप्नामां दीठो ॥ ६ ॥ ३७ ॥ ॥ तेवार पठी त्रिशलाराणी, सातमें स्वप्ने सूर्यदेखे ते सूर्य कहेवो ठे तोके? अंधकारनां पम्लने फोडवा वालो, वली रातो वर्ण ठे तेवर्ण कहेवो ठे तोके? राता अशोक सरखो, केशूडानां फूल सरखो लाल ठे, जेवुं पोपटनुं मुख लाल होय, जेवी अर्धि चिणोठी लाल होय तेवो सूर्य लाल ठे, वली कमलनां वननो उघाडवा वालो ठे, तेमाटेज कमलनी शोन्ना करवा वालो ठे, ज्योतिप शास्त्रनो तथा ज्योतिपचक्रना चिन्ह सरखो उंलखाणनो करवा वालो ठे, आकाशमां दीवानी पेरे शोन्ने ठे, उगतो थको हेमना समूहने हाथथी गरदन पकडीने काहाडवा वालो, वली ग्रहोनो राजा ठे, रात्रिनो नाश करवा वालो ठे, वली उगतीवेलाये तथा आथमति वेलायें बे घडी पर्यंत सुखे दीठामां आवे पठी सुखें दीठामां आवे नही, वली रात्रिना विचरवा वाला जे चोर आदिक तेमनुं त्रमण मटाडवा वालो, वली शीत टाहाडने मथन करवा वालो, मेरुपर्वतने पाखति निरतर महोटा मंम्डल सहित न्नमवा वालो, वली सूर्यना हजार किरणोये करी सर्वज्योतिपीयोनी प्रन्ना मटी गइ माटे इहां सूत्रकारोजे सूर्यनी हजार किरणो कहे ठे ते जघन्यआश्रित लिखे ठे अने लोकमां

पण सहस्र किरण कहेवानी रूढी ठे परंतु सूर्यना किरणोमां तो महीने महिने वध गट थाय ठे ते आ प्रमाणे जे चैत्रमां बारसे किरणो, वैशाखमां तेरसे किरणो, ज्येष्ठमां चौदसे किरणो आषाढमां पन्नरसे किरणो श्रावणमां चौदसें किरणो, जादरवामां चौदसे किरणो, आसोमां शोळसे किरणो, कार्त्तिकमां अगीआरसे किरणो, मार्गशिरमां एकहजारने पच्चाश किरणो, पौषमां हजार किरणो, माघमां साडादशसे किरणो, फाल्गुनमां अगीआरसे किरणो, एवो सूर्य लोकोना चक्षु समान त्रिशलादेवीयें सातमे स्वप्ने दीठो ॥ ७ ॥ ३९ ॥ ॥ तेवार पठी आठमे स्वप्ने, त्रिशलामाता, ध्वजा देखे ते ध्वजा कहेवी ठे तोके? सोनानो जेने दंड ठे ते उपर रहेली ठे, पांच वर्णना वस्त्रनी ध्वजा ठे, वली ते ध्वजानी उपर सुकोमल अनेक रंगनां मोरपीठ धर्या ठे ते चोटी सरखा शोजायमान ठे तथा घणो श्रीकार ठे, तथा ते ध्वजामां सिंहनुं रूप लख्युं ठे तेणेकरी वली बहुज शोजे ठे ते सिंह कहेवो ठे के जेवो शंख उजलो, कुंदनुं फूल उजलुं, जलनो कणीयो उजलो तथा रूपानो कलश उजलो होय तेवो श्वेत वर्ण ठे, जे सिंहने देखीने लोक एवुं समजे के आ सिंह आकाश मंडल जेदवाने उद्यम करे ठे के शुं? एवी ते सिंहनी मुखाकृति तथा शरीराकृति ठे, जे ध्वजानुं वस्त्र वायरानी लहेरोथी थोडुं थोडुं चलायमान थइ रह्युं ठे, वली घणो उंचो लोकोने देखवा योग्य एवो ध्वज आठमां स्वप्नामां त्रिशला देवीयें दीठो ॥ ८ ॥ ४० ॥ ॥ तेवार पठी, नवमां स्वप्नमां, श्रीत्रिशलादेवी, पूरण कलश देखे ते कलश कहेवो ठे तोके? उत्तम देदीप्यमान ठे रूप जेनुं, निर्मल जलथी जर्यो थको घणोज सुंदर ठे, सूर्यमंडल सरखी जाज्वल्यमानशोजा ठे जेनी, वली जे कलशनी पासें कमलनी वाडी ठे एटले कमलोथी वींटयो थको ठे वली ते कलश सर्व मंगलोनो मलाववा वालो ठे,

चित्र १४







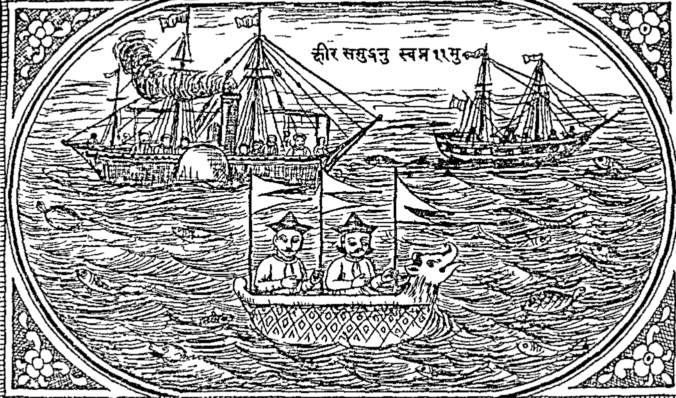
चित्र १४

... रहित सर्व ... ऋतुना सुगंधि फूलोनी माला ठे, एवो पूरणकुम्न जलो रूपामय ते नवमे स्वप्ने त्रिशलाराणीये दीठो ॥ ए ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ तेवार पठी, दशमां स्वप्नामां त्रिशलादेवी पद्मसरोवर देखे ते पद्मसरोवर कहेवु ठे तोके ? जे सरोवरमां उगता सूर्यथी उघड्यां एवां हजार पांखडीना कमलो ठे, ते विकस्वरमान कमलनी वासनाये करीने जेनुं पाणी सुगंधमय थयुं ठे, वली ते कमलोनी प्रनाये करीने पाणी लाल पीला रग जेवु देखाय ठे, वली जे पद्मसरोवर जलमत्स्य कच्छपादिक जलचर जीवोये सेव्यु थकु रह्यु ठे, वली जे पद्मसरोवरमां कमल पत्र उपर पड्यो जलनो ठांटो तेणे करी जाणे नीला आंगणामां मोती जड्यां होय नहि ? एवुं देखाय ठे, वली ते महोटु सरोवर ठे तेमां सूर्यविकासी कमल, चंद्रविकासी कमल, नील कमल, महापद्म श्वेत कमल, रातां कमल, इत्यादिक कमलनी शोना बनी रही ठे तेथी घणुंज रमणीक थयु ठे, वली ते कमलो उपर प्रसन्नथया एवा नमर नमरीयो आवीने गुंजारव करी रह्यां ठे ॥ ग्रंथा ग्रंथ ॥ २०० ॥ वली तिहां कादंबक हंस, चकवा, राजहंस, बगला, सारस, एवा पंखीयोये करी शोने ठे, अर्थात् ए जातियोना पंखीयो तिहां रहे ठे, एवो पद्मसरोवर त्रिशलादेवीयें दशमां स्वप्नामां दीठुं ॥ १० ॥ ४२ ॥ ॥ तेवार पठी अगीआरमां स्वप्नामां त्रिशलादेवी खीरसमुद्र देखे ते खीरसमुद्र कहेवो ठे तोके ? चंद्रमाना किरणोनी जेवी शोना तेवी शोना ते समुद्रमां ठे, वली चारे बाजु जे समुद्रनुं जल वृद्धि पामे ठे, वली

थी चचलथी पण घणा चचल एवा घणा ऊचा कल्लोल ऊठी रह्या ठे, ते कल्लोलेकरीने घणुंज चचल थयु ठे, वली मदमद वायराथी चलायमान थया जे कल्लोल ते समु तट ऊपर आवीने जफाका खाइ रह्या ठे, तेनो शब्द थइ रह्यो ठे जेनेविपे ते कल्लोलोथी शोजी रह्यो ठे, वली ते कल्लोल मल्या थका दोडता ठे एटले एक कल्लोलनी पठवाडे कल्लोल दोडी रह्यो ठे, पहेलो एक न्हानो कल्लोल चाले, वली महोटो कल्लोल चाले, । कल्लोलोनी शोजा ठे जेने विपे, वली जे समुद्रमां जलचर जीव कल्लोल करी रह्या ठे, ते केवा जातिना तोके महामगरमछ, तिमिगलमछ, लघुमछ ते सर्व परस्पर मल्या थका रमत करे तेवारे तेमनां पूठना उलालवाथी उठट्यु जे पाणी तेमांथी फीण प्रगट थइ ते फीण कल्लोलोथी तणाइने किनारापर आवी पडे ठे, तेना ढगला थइ गया ठे ते ढगला सर्व कपुरना ढगला सरखा देखाय ठे, वली जे समुद्रमां गगा प्रमुख नदीयोना पाणी पडे ठे तेमा चौद चौद हजार नदीयोना परिवार साथे गगा अने सिधु ए बे जरतक्षेत्रनी नदीयो पडे ठे एमज चौदचौद हजार नदीयोना परिवार साथे ऐरवतक्षेत्रनी रक्ता अने रक्तवती ए बे नदीयो पडे ठे तथा अठावीश अठावीश हजार नदीयोना परिवार साथे रोहिता अने रोहितासा ए बे नदीयो हेमवतक्षेत्रनी पडे ठे तथा अठावीश अठावीश हजार नदीयोना परिवार साथे सुवर्णकुला अने रूपकुला ए बे नदीयो ऐरण्यवतक्षेत्रनी पडे ठे तथा ठपन्न ठपन्न हजार नदीयोना परिवार साथे हरिकता अने हरिसलिला ए बे हरिवर्ष क्षेत्रनी नदीयो पडे ठे तथा ठपन्न ठपन्न हजार नदीयोना परिवार साथे नरकाता अने नारिकांता ए बे नदीयो रम्यकक्षेत्रनी पडे ठे तथा पांच पांचलाखनी ऊपर बत्रीश बत्रीश हजार नदीयोना परिवार साथे सीता

वाला

॥५४॥

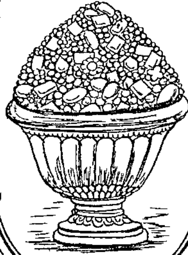

चित्र १५
क्षीर समुद्रनु स्वप्न ११मु

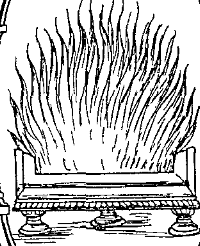
अने सीतोदा ए बे नदीयो महाविदेह क्षेत्रनीपडे छे, सर्वमली चौदलाखने छपन्न हजार नदीयोनुं पाणी जे समुद्रमां पडे छे इहां कोइ प्रश्न करे के सूत्रमांतो खीरसमुद्र स्वप्नमां दीठो एवो पाठ कह्यो छे अने तमे तो नाना प्रकारनी वेलाये वधतो पाणी कहोछो तथा नदीयो मांहे जले छे एवो कहो छो तेनुं शुं कारण छे? तेने उत्तर कहे छे जे खीरसमुद्रनो पाठ कहेवा थकी लवण समुद्र लेवो कारणके जो लवणसमुद्र नही कहेशो तो गंगा अने सिंधु नदीयो पडे छे ए पाठ पण सूत्रकारेज कहेलो छे ते पाठ मलशे नही माटे इहां एम समजवु के लवणसमुद्रनु पाणी मोळुं छे ते स्थानके त्रिशला माता ए लवणसमुद्रनुं पाणी खीरसमुद्र सरखु देखे छे एवो अगीआरमे स्वप्ने खीरसमुद्र त्रिशला देवियें दीठो ॥ ११ ॥ ४३ ॥ ॥ तेवार पछी बारमे स्वप्ने, त्रिशला मातायें देवविमान दीठुं ते कहेवु छे तोके? पुण्डरीक उत्कृष्ट विमान छे तेमां उत्तम सुवर्णमणीनां एकहजारने आठ थंभोयें करी विराजमान छे वली ते विमान आकाशमां दीपकनी पेरे दीपी रह्यु छे, उद्योतमां सूर्यमण्डल सरखी शोभा छे जेनी, वली जे विमानमां सोनानी भीतोमां नागफणा खीला ठोक्या छे, वली स्थानके स्थानके दिव्यफूलमालाउ, सुवर्ण पत्रेकरी लंबायमान एवी मोतीयोनी मालाउ लटके छे, वली ते विमाननी भीतमां मृग हरणना रूप, नाहारना रूप, बलदना रूप, घोडाना रूप, मगरमच्छ, भारण्डपंखी, गरूड, मयूर एमनां रूप, सर्पनां रूप, किन्नरदेवोनां रूप, कस्तुरीया मृगनां रूप, सर्दूलसिंहनां रूप, हाथीनां रूप, वनलता, पद्मलता, एमनां रूप चित्रामणमां छे, वली जे विमानमां नाटक थइ रह्यां छे ते नाटकमां जे वाजित्रो वाजी रह्यां छे तेना शब्दें करी पूराणुं एवुं ते विमान छे, वली जे विमानमां मेघगाजे तेना सरखो देवडुंडभीनो शब्द थइ रह्यो छे तेथी जाणीये छेये

के सर्व जीवलोक संसार ते शब्दथी पूरण कर्यो छे अर्थात् ते शब्द सर्वत्र फेलाइ गयो छे, वली
ते विमानमां, अगर, कुंदरु, शिलारस, एमना धूपनो मघमघायमान धूप सुगंध थइ रह्यो छे,
वली जे विमानमां देवोने योग सदाउद्योत थइ रहेलो छे, देवोने योग्य सर्वदा सात सुखनो
निवास रूप एवु देवविमान त्रिशला माताये बारमां स्वप्नमां दीठु ॥ १२ ॥ ४४ ॥ ॥ तेवार
पछी त्रिशलाक्षत्रियाणीए तेरमे स्वप्ने रत्नोनो ढगलो दीठो तेमां कयां कयां रत्न छे १ पुलकरत्न
२ वज्ररत्न, ३ नीलरत्न, ४ ससांकरत्न, ५ कर्केतनरत्न, ६ लोहितरत्न, ७ मरकतरत्न, ८ प्रवाल
रत्न, ए स्फाटिकरत्न, १० सौगंधिकरत्न, ११ हंसगर्भरत्न, १२ मसारगल्लरत्न, १३ अंजनरत्न,
१४ चंद्रप्रभरत्न एवा बीजा पण अनेक जातिनां उत्तम रत्न ते सोनानां महोटा थालोमां ज
रेला ते रत्नोनो ढगलो कहेवो छे तोके? मेरुपर्वत जेटलो उंचो, आकाशमां देदीप्यमान एवो
रत्ननोनो ढगलो त्रिशला देवीये तेरमां स्वप्नमां दीठो ॥ १३ ॥ ४६ ॥ ॥ तेवार पछी चौदमे
स्वप्ने त्रिशला क्षत्रियाणीये निर्धूमअग्निदीठो ते अग्नि कहेवो छे तोके? घणो उजलो निर्मल
पीलो अने लाल वर्ण वालो, वली मधु अने घृतथी सींच्यो थको, निर्धूम धगधगायमान
जाज्वल्यमान शिखावालो, वली ते अग्निमां अनेक न्हानी शिखाउ छे वली तेथी कोइक शिखा
अधिकी वली ते अधिकथी पण वली कोइक शिखा उंची केटलीएक शिखाउ वली घणीज
न्हानी एवी अनेक ज्वालाये करी अग्ननी शिखा मली रही छे वली जे अग्निमां अनेक ज्वा
लायो मांहोमांहे मली रही छे, एवा धूम्ररहित अग्निनी ज्वालाउ ते कोइ आकाश प्रदेशमा चाल
ती होय तेनी पेरे घणी चपल अग्निनी शिखा त्रिशला देवीये चौदमां स्वप्नमां दीठी ॥१४॥४६॥ ॥५५॥
आ स्वप्नमां बारमे स्वप्ने देवतानु विमान कह्यु ते जे तीर्थंकरनो जीव देवलोकथी चवीने माता

चित्र १६







माताना कूखना [illegible]
एवा चौदे स्वप्नां देखीने त्रिशला राणी जागृत थइ ए स्वप्नां केवां ठे तोके? शुन ठे, सौम्य नलां ठे, घणुं रूडुं वह्लन ठे दर्शन जेमनुं, नलुं रूप ठे जेमनुं, एवां स्वप्नां देखीने त्रिशला माता जागी ते केवी ठे तो के? जेवा कमल उघडे तेवां नेत्र विकसित थयां ठे जेना, हर्षना वशथकी सर्वअंग हर्ष सहित होतुं हवु, सर्व रोमराजी उह्लसित थइ ॥ ए चौद स्वप्नां सर्व तीर्थंकरोनी माताउ देखे, जेवारे तीर्थंकर गर्भमां आवे तेवारे देखे, तेम त्रिशलादेवी पण श्रीमहावीर स्वामी कूखमां आव्या तेना योगे चौद स्वप्नां देखीने शय्यामां जागती हवी ॥ ४७ ॥ तेवार पठी त्रिशला क्षत्रियाणी पूर्वें कह्या एवां चौद स्वप्नां देखीने जागती थकी घणीज पोताना हृदय मां खुशी थइ, संतोष पामी, जेवुं मेघनी धाराये करी हणाएुं कंदब वृक्षनुं फूल तेनी पेरे उह्ला सपाम्या ठे रोमकूप जेना, अर्थात् रोमरोम हर्ष पाम्या पठी ते स्वप्नाने याद करे जे अनुक्रमें में एवां एवा स्वप्नां दीठां एवी रीते याद करीने उठे, उठीने बाजोट ऊपर पग आपीने हेठी उतरे उतरीने नही उतावली एटले मनमां उतावल नथी तथा कायाथी चपल पणुं नथी, र स्तामां ठेकर रहित, विलंबरहित, नीत प्रमुखना ठेगिणने न लेती थकी, राजहंसी सरखी गतियें करी चालती थकी जिहां सिद्धार्थ क्षत्रिय राजानी शय्या ठे, जिहां सिद्धार्थक्षत्रिय राजा पोढ्या ठे, तिहां आवी, आवीने, सिद्धार्थक्षत्रियराजाने एवी वाणीथी जगावती हवी ते केवी वाणी तोके? जे सिद्धार्थराजाने वह्लभ लागे, सिद्धार्थराजा एवी वाणीनी सर्वदा चाहना करे, एवी वाणी तथा द्वेषरहित एवी तथा सर्वना मनने गमती एवी तथा वह्लभपणानी चेतवणी

क तथा स्वर अक्षरें करी स्पष्ट एवी तथा कल्याणनी करवा वाली एवी तथा वृद्धि नी करवा वाली एवी तथा निरुपद्रव अर्थात् उपद्रव रहित एवी तथा धनना लाभनी करवा वाली एवी तथा मंगलनी करवावाली, श्रीकार अलंकारादि शोभा सहित, हृदयमा कोमल लागे एवी, वली जे वाणी सांभलवाथी मनमा आनंद थाय एवी, वली कोमल, मीठी रस युक्त, जेमां वचन थोडा अने अर्थ घणो एवी वाणीयें त्रिशलादेवी पोताना भरतारने जगा वती हवी ॥ ४८ ॥ ॥ तेथी सिद्धार्थराजा जाग्यो, त्यारे त्रिशला राणी सिद्धार्थराजानी आज्ञाथी नाना प्रकारना मणिरत्नथी चितर्यो एवो सोनानो बाजोट मणिरत्नोथी जड्यो ते उपर पलोठी वालीने बेठी, रस्तानो खेद मटाडीने सुखे बेठी, बेसीने सिद्धार्थराजा प्रत्ये जेवी रीते पूर्वें वर्णन करी आव्या एवी वाणीयें करी कहेती हवी ॥ ४९ ॥ ॥ हे स्वा

आज पूर्वोक्त शय्यामां काइक सुती कांइक जागती थकी, में गज वृषभ

कही आव्या ते चौद स्वप्ना दीठां, देखीने जागी, ते महोटा स्वप्नांनु फल

वृत्ति फलनु पामवु कांइ थाशे ? एवु त्रिशलायें पोताना भरतारने पूछ्युं ॥

० ॥ तेवारे सिद्धार्थराजा त्रिशलाना मुखथी एवो अर्थ सांभलीनें, हर्ष संतोष पामीनें, चित्तमा आ ... को, प्रीतिकारी परम सौम्य हर्ष हृदयमां फेल्यो, जेम मेघनी धारायें

... तेनी पेरे उल्लसित थयो थको, सांभलीने तेनो विचार कर्यो,

...नी बुद्धि विज्ञाने करी ते स्वप्नोनो अर्थ ग्रहण कर्यो, अर्थ ग्र

मीठे वचने करी एवु कहेतो हवो ॥ ५१ ॥ ॥ हे देवाणुप्रिया !

...ने कल्याणकारी स्वप्नां दीठां, शिवकारी, धनकारी, आरोग्यकारी,


चित्र १७
सिद्धार्थ राजा
त्रिशला देवी
दासीउ
दरवान

घणा दीर्घायुना करवा वाला एवा ते स्वप्नां दीठां ॥ ग्रंथाग्रथ ॥ २०० ॥ तेनु फल आवी रीते छे हे देवाणुप्रिया ! तमोने अर्थनो लाभ थाशे, तमोने भोगनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, राज्यनो लाभ थाशे, ए निश्चे नवमहीना उपर साडासात दिवस गये थके अमारा कुलमां ध्वजा समान, अमारा कुलमां द्वीप समान, अमारा कुलमां दीवासमान, अमारा कुलमां पर्वत समान स्थिर, अमारा कुलमां शिखर समान, अर्थात् मुकुट समान, अमारा कुलमां तिलक समान, अमारा कुलमां सूर्यसमान, कुलनो आधार, कुलनी वृद्धिनो करवा वालो, कुलनी कीर्त्तिनो करवा वालो, कुलना निर्वाहनो करवा वालो, कुलना यशनो करवा वालो, कुलमां वृक्षसमान, घणा लोकोने छत्रछायामां राखवाथी कुलनी विशेष वृद्धिनो करवा वालो एवो पुत्र थाशे वली सुकोमल छे हाथ पग जेना, संपूर्ण पांचेन्द्रिय परवडां छे जेनां. लक्षण, व्यंजन अने गुणे करी सहित, मानोन्मान प्रमाण सर्व शरीर सुंदर, चंद्रमानी पेरे सौम्याकार, मनोहर दर्शन करवा योग्य, एवो पुत्र तुजने थाशे ॥ ५२ ॥ ॥ ते पुत्र कहेवो थाशे तोके ? बालक अवस्था छांडीने जेवारें विज्ञान अवस्थामां आवशे तेवारे सर्व कलाउ मात्र देखवाथीज जाणी लेशे पण तेने शीखाववुं पडशे नही. वली युवान अवस्थामां शूरवीर, महादानेश्वरी, स्वप्रतिज्ञा निर्वाहक एटले पोते अंगीकार करेली वातना निर्वाहने करवा वालो, संग्रामसमां वीर एटले पाछो भागे नही, जमीन उपर राज्य करवा वालो, घणा हाथी घोडा रथ पायदल प्रमुखनो मालक एवो, राजाउनो राजा थाशे ॥ ५३ ॥ ॥ तेमाटे तमे उदारकारी यावत् स्वप्नां दीठां एवीरीतें सिद्धार्थराजा बे वार त्रणवार त्रिशला राणीने कहे, प्रशंसा करे, तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी सिद्धार्थराजाना मुखथी आ वात

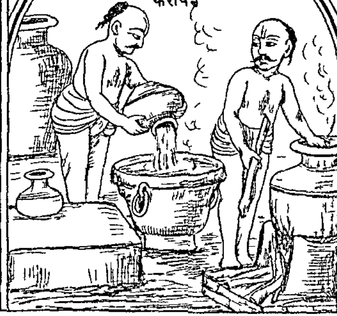
सांनजीने हर्ष संतोष पामी, यावत् हाथ जोडीने, मस्तके अंजली करीने, एवु कहेती हवी ॥ ५४ ॥ ॥ हे स्वामी ए अर्थ एमज छे, तमे कह्यु ते तहत्त छे, संदेह रहित छे, जे प्रमाणेमे वांछयोहतो हे स्वामी तेज प्रमाणेमे आपना मुखथी ग्रहण कर्यो, एम हे स्वामी जे तमे कह्यो छो ते अर्थ सत्य छे एवीरीते वारवार कहेती थकी एम कहीने, स्वप्नानां अर्थने रुडीरीतथी अंगीकार करीनें, सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने, नानाप्रकारना मणीये जडित एवा सोनाना बाजोट उपरथी उठीने, नही उतावली, नही धीरी एवी पूर्वे कहेली रीत मुजब चालती थकी जिहां पोतानु शयन घर छे तिहां आवीने एम कहेती हवी ॥ ५५ ॥ ॥ जे महारे उत्तम स्वप्ना दीठामा आव्यां तो हवे महारे सुवु नही, जो सुइजाउ तो वली कदापि बीजा कोइ पाप रूप खोटा स्वप्नां आवीजाय तो ए रुडा स्वप्नांनु फल जातु रहे तेमाटे देव गुरु संबधि रूडी मंगलकारी, शुभकारी, धर्म कथा कहीने रात्रि पूरण करु एवु कहीने स्वप्न जागरण करती थकी, पोते जागती बीजाने जगावती विचरे ॥ ५६ ॥ ॥ तेवार पछी प्रभात समये सिद्धार्थ राजा कौटुंबिक जे सेवक पुरुष तेमने बोलावीने एम कहेतो हवो ॥ ५७ ॥ उतावलथी हे देवाणुप्रिय ! आज सारीरीते बाहिरनी उवठाणशाला जे कचेरी छे तेने गधोदकथी सींचो,कचरो कांटो काहाडीने साफ करो, लीपो,लीपीने पछी प्रधान सुगधि पांचवर्णना फूल तेना ढगला करावो, कृष्णागर, कुंदरु, शिलारस तेना धूप उखेवो अने सुगंधना चूर्णनी गोली, अगरबती उखेवो, सुगधे अभिराम करो, सुगधे वासित करो, गधनी वाटमूको, आ काम तमे करो, बीजा कोइनी पासे करावो, आ महारी आज्ञा पाछी तत्काल सोंपो ॥ ५८ ॥ तेवारें कौटुंबिक पुरुष एवु सांभली घणाज खुसी थइने, हाथजोडी तहत्ति करीने, सिद्धार्थ

राजा पासेथी निकलीन ज्या बाहरनी सना ठे त्यां आवीनें गंधोदकादिक ढांटया आदिक
सर्व काम राजाना हुकुम प्रमाणे करीने यावत् तिहां सिंहासन मांडीनें जिहां सिद्धार्थक्षत्रि
यराजा ठे त्यां आवीने हाथजोडी मस्तके अंजली करी कहेता हवा के हे स्वामी! जे आपे
फरमाव्युं ते सर्व काम अमे करी आव्या एम कही आज्ञा पाठी सोंपी ॥ ५९ ॥ ॥ तेवार
पठी कांइक रातुं धोळुं पीळो प्रभात थयुं, सूर्यविकासीकमल फूल्यां, चंद्रविकासी कमल कुम
लाणा, उज्वलप्रभात थयुं, सूर्य उग्यो ते सूर्य कहेवो ठे तोके? राता अशोक सरखो लाल
ठे,केसुना फूल सरखो लाल ठे, सूडाना मुख सरखो लाल, अर्द्ध चिणोठी सरखो लाल, मा
लीयो जीव थाय ठे तेना जेवो रातो वफोरीयाना फूल सरखो लाल, कबूतरना पग नेत्र
सरखो लाल, जासूसना फूल सरखो लाल, हिंगलुना ढगला सरखो लाल ए पूर्वे कही जे वस्तु
तेवी कोइ पण लाल वस्तु होय तेथी पण अधिक लाल एवो उगतो सूर्य, कमलाकर नामे
तलावने विषे घणा कमलोने उघाडतो थको एवो सूर्य उग्यो, हजार करणनो धिरनार, दिव
सनो करवा वालो, तेजेकरी जलजलायमान,जेना किरणोथी अंधकार नाश पाम्यो ठे, चोरना
प्रचारने टालनारो, बालिकानी जाणीये कुंकुनी पीयाली ते सरखो, लाल, ते सूर्यनो नवो ता
वडो (तडको) ते तावडे करी जाणे कुंकु सरखो सर्व मनुष्यलोक लाल थयो ठे, एवुं प्रभात थयुं,
॥ ६०॥ तेवारे राजा शय्याथी उठीने बाजोट उपर पग मूके,बाजोटथी हेठे उतरे,उतरीने, जि
हां मल्लयुद्ध करवानी शाला ठे तिहां आवीने,मल्लयुद्धशालामां प्रवेश करीने, अनेक प्रकारनी
मल्लयुद्धनी कलाउ करीने थाका पठी, सो औषधीना पाकनुं तेल, हजार औषधीना पाकनुं
तेल, सुगध प्रधान तेल प्रमुख बीजा पण तेल जे धातुनी वृद्धि करवा वालां, जठराग्निने

दीपाववा वालां,कामदेवनी वृद्धि करवा वाला, मांसने पुष्ट करवा वाला, बलवृद्धि करवा वा ला, सर्व इंद्रिय शरीरने उल्लास करवा वाला, जेना अभ्यंगन थकी चामडीमां तेजनी वृद्धि थाय एवा अनेक जातिनां तेल ते तेलना मसलवा वाला कहेवा छे के घणा चतुर, जेमना हाथ पग घणा सुकोमल छे, ते तेलने मसलतां थका हाथना तलानो जे मल ते शरीरमा स मावी आपे, एवी क्रियामां दक्ष, परिपूर्ण छे हाथ पग जेना, अवसरना जाण, उतावलथी का र्यना करनार, सर्व मर्दन करवा वालामां उत्कृष्ट, विवेकवत, बुद्धिवत माह्या, पण्डित, मस लतां थकां हारे नही, एटले परिश्रमना जीतवा वाला इत्यादिक गुणना जाण पुरुषो ते केवी रीते तेल मसले तोके जे थकी हाडने सुख थाय एटले हाडने सुखकारी, मांसने सुखकारी, चामडीने सुखकारी, रोमने सुखकारी ए चारेने सुखकारी एम ए पूर्वोक्त तेल ते उपर कह्या प्रमाणे मसलवाथी राजाने थाक मट्या पछी सिद्धार्थराजा मल्लशालाथी निकलीने॥६१॥ जिहां स्नानकरवानुं घर छे तिहां आवीने स्नान घरमां पेठा, ते स्नान घर कहेवु छे तोके ? मोतीयोनी जा लीयोना गोखला छे जेमा,विचित्र मणिरत्ने जडित धरती तल छे जेनु,तिहा रमणिक स्नान क रवानो मण्डप छे तेमा अनेक प्रकारना मणिरत्नोये करी जड्या चित्र्या एवा अनेक बाजोट छे तेना उपर राजा सुखे बेठो हवे स्नान करवानु जल, कहेवु छे ते कहे छे. फूलना गधवालु जल, चदन कपूरादि वासित जल, उष्णजल, शुभजल, गगा प्रमुखनु निर्मलजल, एवा जलथी कल्याण कारी प्रधान मज्जननी विधिये स्नान करे तिहा घणा प्रकारनां जल उगालवा प्रमुख कौतुक करीने कल्याणकारी स्नानना अतमां कमल सरखा सुवाला गंधवस्त्रथी अंग लूछु पछी घणां मोघा वस्त्ररत्न पहेर्या, नवा रस सहित गोशीर्ष चदनथी शरीरने लेपन कर्युं, पवित्र माला पहेरी,

चित्र १९





वर्ण कुंकुमादि विलेपन कर्या पछी मणि जडित सोनाना घरेणा पहेर्या, वली अढार सरो हार, नवसरो हार, त्रीशसरो हार, लांवा जूमखा प्रमुख घरेणां तथा कनदोरो पहेर्यो तेथी शोनवा लागो, गलामां कंठीउ प्रमुख पहेर्या, आंगुलीउमां वीटी, वेड प्रमुख पहेर्या, केशोमां फूल प्रमुखना घरेणां धारण कर्यां, रूडा जडाव कडा, जडाव बहेरखा पहेर्या, जुजा प्रमुखमां जुजवधादिक पहेर्या तेणे जुजा थंजित थइ छे, तेथी घणुं श्रीकार रूप छे तथा कानोमां कुंमल पहेर्या तेणे करी शोजायमान मुख थयुं, मस्तकें देदीप्यमान मुकुट घाल्यो, हारप्रमुखे करी सुशोजित थइ छे गाती जेनी, वीटीयोथी पीली थयली छे अंगुलीउ जेनी तथा लांवा वस्त्र करी कर्यो छे उत्तरासंग जेनुं, अनेक प्रकारना मणिरत्न निर्मल घणा मूल्यना माह्या कारिगरोनां घड्यां देदीप्यमान जली रचनाये करी एकमां वीजा घरेणां मलेला तेथी मनोहर देखाय छे तथा वीरवलयने धारण कर्यो ए घरेणो जे शूरवीर होय तेने राजा बक्षीश आपे छे एटले मान आपवानुं घरेणुं छे ते कोइक तो कहे छे के ए घरेणुं हाथमां पहेराय छे वली कोइ कहेछे ए वीरवलय कानमां पहेराय छे हवे घणुंशुं वर्णन करीये ते सिद्धार्थराजा साक्षात् कल्पवृक्ष सरखो थयो, जेम कल्पवृक्ष पत्र, पुष्प, फल सहित शोने तेम सिद्धार्थराजा घरेणाथी शोने छे तथा पुरुषोमां इंड समान, कोरट वृक्षनां फूलोनी माला सहित एवु छत्र मस्तके धरावतो थको, श्वेत चामरोथी वीजातो थको, जिहां लोकोये मंगलिकना जय जय शब्द कर्या छे, वली १ अनेक गणनो नायक एटले पोताना घरमां जे मनुष्य छे तेनो मालक, २ दंमनायक देशनी चितानो करवा वालो, ३ हाथीयोनो इश्वर ४ राजानो पुत्र, ५ कोटवाल, ६ मांमवीया, ७ कुटुंवना स्वामी, ८ न्हाना प्रधान, महोटा प्रधान, ए मंमलिक, १० महामंमलिक, ११ ज्योतिषी, १२ दरवान, १३ जे

राजासाथे जन्म्या ते अमात्य, १४ पीठी मर्दनना करवा वाला, १५ नगरना चोवटीया, १६ चोधरी, १७ वाणीया, १८ शेठ, १ए सेनापति, २० सार्थवाह, २१ दूत, २२ देशनी सिधीना रखवाला एटले सिधिपालक तथा व्यवहारीया, २३ अगरक्षक, २४ पुरोहित, २५ वृत्तिनायक, २६ वह्निवाहक, २७ थइआयत, २८ पडुपडिआयत, २ए टाकटमाली, ३० इड्जाली, ३१ फलमाली, ३२ मंत्रवादी, ३३ धनुर्वादी, ३४ दंरुधर, ३५ धनुर्धर, ३६ खड्गधर, ३७ छत्रधर, ३८ चामर धर, ३ए पताकाधर, ४० नेजाधर, ४१ दीवीधर, ४२ पुस्तकधर, ४३ कारीधर, ४४ तांबूलधर, ४५ प्रतिहार, ४६ शय्यापालक, ४७ गजपालक, ४८ अश्वपालक, ४ए अंगमर्दक, ५० आरक्षक, ५१ मिष्टवचनबोलनारा, ५२ कथाकहेनारा, ५३ सत्यबोलनारा, ५४ गुणना बोलनारा, ५५ समस्याना बोलनारा, ५६ पारसीनापा बोलनारा, ५७ वैयाकरण पाठी, ५८ तर्क पाठी, ५ए साहित्य वधक, ६० लक्षण वधक, ६१ छंद वधक, ६२ अलंकारना जाण, ६३ नाटक वधक, आदी त्रेसठ नाममां जे सिधीपालक कह्यु ते राजाना सीमाडीया राजा साथे सीमसेढा ना वांधा पडवाथी राजाने विरोध थाय तेवारे सीमकाढी निवेडो करी आपे तेने सिधीपालक कहीये तेना दृष्टांत उपर कथा कहे छे कौशंबीनगरीमां जितशत्रुराजा राज्य करे छे तेने प्रधान, पुरोहित, शेठ, सेनापति, नंकारी, सिधीपाल इत्यादिक घणो परिवार छे सहु सहु पोतपोताना अधिकारमा सावधान छे हवे कोइक पुरुपे राजाने कह्युके तमारा बधा सेवको काम करे छे पण सिधीपालतो तमारु अनाज खाइने खोटु करे छे माटे एनो तपास करवो, तेवारे राजाये सिधीपालकने कह्यु के तमे मनचिंतित द्रव्य खाउ गो अने कार्यतो कांइ करता नथी तेवारे सिधीपालक बोल्यो हु महोटा काम करी आपु, परस्पर वैरनाव होय तेनें मित्राइ करावी

आपु अने मित्रता होय तेमां विरोध पाडी आपु, अनेक बुद्धिना काम करुं, एवा महारामा गुण छे, पछी राजाये परिक्षा निमित्ते पोतानो दुसमन अरिमर्दन राजा छे तेनी साथें मेलाप करवा माटे नेटणा सारुं एक डाबलो सीवी आप्यो ते राजाने आपजो अने वैर टाली आवजो एवु कही सिधीपालकने मोकल्यो सिंधीपालक त्यांथी चालतां केटलेक दिवसे अरिमर्दनराजा पासे जइ नेटणुं मूकी पगेलागीने कहेवा लाग्यो जे हे राजन्! जितशत्रुराजाये तमोने सलाम कही छे अने नेटणु आप्युं छे, राजाये ते नेटणुं छोडयुं तेमाथी डाबडो निकल्यो ते उघाड्यो तेमां वली घणे बंधने बांधेली एक सोनानी डाबली निकली तेना बंधन छोडयां तेवारे मांहेथी राख निकली तेवारे प्रधाने कह्यु तमारा वैरीये राख मूकी छे, ते राख चोपडी तमे जोगी थाउ, ते सांजली राजा क्रोधातुर थयो तेवारे सिंधीपालके जाण्युं जे राजाये वैर सांध्युं एवु चितवी उत्पातनी बुद्धिये करी कहेवा लाग्यो के हे राजन्! तमे उलटो विचार म करो, ए राख बहु गुण कारी छे राजाये पुछ्युं एमां शो गुण छे? सिधीपालक बोल्यो अमारा राजाये यज्ञ कीधो हतो तेना उपर असंख्य द्रव्य खरच्युं ते यज्ञ पूरण थयाथी तेनी जस्म तिलक करवाने अर्थे सर्वे राजाउ ने मोकली छे एमां कांइ विरोध नथी एनु प्रजातकालें तिलक करतां जन्मांतरनां पातक टले अने सौजाग्य पामे, ते सांजली राजा प्रसन्न थयो अने जाण्युं जे मे वैरजावथी अवलु विचार्युं पण एणे तो वैर टालवा ए उपकार कर्यो छे पछी राजाये ते सिंधीपालकने घणुं सन्मान आपी, एक महीनां सुधी पोतापासे खमावी घणा हाथी घोडा आजरण देइ पहेरामणी करीने शीख आपी, तथा हवे तमारा राजासाथें अमारे परम मित्राइ छे एवो पत्र लखी आप्यो ए सर्व जेट लइ सिंधीपालक पोताना राजा पासें आव्यो राजाने पत्र दीधो सर्ववस्तु पण आपी तेवारे राजा

विस्मय पाम्यो,वली राजाये पटराणीने कह्युके तु ताहारे पीयरे जा, जेवारे हु नामांकितमुद्रिका मोकलु तेवारे तरत आवजे पण बीजा कोइना कहेवाथी आवीश नही, पछी ते राणी पीयर गइ पाछलथी राजाये सिधीपालकने कह्युके महारी राणी रीसाणी थकी पीयरे गइ छे तेने तमे तेडी लावो तो तमारी अकल खरी जाणु, पछी सिधीपाल तीर्थवासीनो वेश करी राणीना पीयरनां गाममा गयो राणीने खबर पडी तेवारें राणीये तेडाव्यो अने कह्युके तु मुजने मलवा केम नाव्यो तेणे कह्यु हुं तीर्थवासी थयो छु तेथी ससार संबधि कोइ कार्यमां पडतो नथी, राणीये कह्यु धन्य ताहारा अवतारने तोपण मने राजाना समाचार कहो तेवारे सिधीपालक माथुं धूणावीने कहेवा लाग्यो के राजाये हमणा कोइक राजानी पुत्री परणवानो आदर कर्यो छे ते कन्या घणी रूपवती छे तेने पटराणी करवा धार्युं छे एवी वात सांभली राणी उतावली पाछी पोताने घेर आवी राजाये पुछ्यु तमे तेड्या विना उतावला केम आव्यां तेवारे राणी रीश आणीने बोली जे तमे नवी पटराणीने घेर जाउ छो तो हवे मुने शावास्ते तेडो एवो उलभो सांभली राजा विस्मय पाम्यो पछी राजाये सिधीपालकने तेडावी भ्रांतभागी राणीने मनावी राजा हर्ष पाम्यो, सिधीपालकने घणा वस्त्र आभूषण आपी सन्मान्यो ॥ एम सिद्धार्थराजानी सभामां एवा सिधीपालक आदिदेइने शेठनापुत्र सेनापति बुद्धियत प्रमुख घणा बेठा छे॥ इति सिधीपालक कथा ॥ इत्यादिक बावीशथी आदि लइने त्रेसठ पर्यंत टीकाकारे लख्या छे एमना परिकरसाथे परवर्यो थको सिद्धार्थराजास्नानघरथी निकलीने सभा मंडपमां आवे छे ते कहेवो शोभे छे तोके धवलमेघनी घटामां जेवो सूर्य निकले तेनी पेरे शोभे छे वली जेवा नक्षत्र ग्रह प्रमुखना तारामां चन्द्रमा शोभे तेवो लोकोमां राजा शोभे एवो मज्जनघरथी निकलतां शोभायमान थयो थको

नरपति, नरोमां इन्द्र, नरोमा वृषभ समान, नरोमां सिंहसमान, घणी अधिक राजतेजनी लक्ष्मी येँ करी दीपतो थको,स्नानघरथी निकलीने ॥ ६२ ॥ ॥ जिहां सभानी शालाछे तिहां आवीनें सिंहासन उपर पूर्वदिशानी सन्मुख मोहोडुं करीने बेठो ॥ ६३ ॥ ॥ बेशीने पोताथी उत्तर अने पूर्वदिशानी वचमांनी ईशानकूणमां आठ बाजोठ श्वेत वस्त्रथी ढांकेला श्वेत सरसव अने श्वेत द्रव्य कुकुथा मंगल अर्थे पूजीने थापे अने एक पडदि एटले पडदो बांधे ते पडदि कहेवी छे तोके? नाना प्रकारना मणिरत्नोथी जडेली छे,सर्व लोकने देखवा योग्य, घणामूल्यनी, नला पाटणमां नीपजेली,रेशमना वस्त्रनी, अनेक चित्रामवाली एटले मृग, वृषभ, घोडा, मनुष्य,मत्स्य, पंखी, सर्प्प, किंनर, अष्टापद, चमरीगाय, हाथी, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक अनेक रूप जे पडदिमां मांड्या छे एवी पडदी बांधी, (पडदी एटले पडदो जाणवो) ते पडदीनी मांहेली बाजुये, अनेक जातिना मणिरत्ने करी जडित रूडा सुंवाला गादलां सहित मशरुने वस्त्र विशेषे ढाक्यु तेनी उपर श्वेत वस्त्र आछाद्युं, सुकोमल अंगने सुखकारी स्पर्श छे जेनो एवो रूडो एक बाजोठ त्रिशलाक्षत्रियाणीने वास्ते रचावे, रचावीने पछी सिद्धार्थराजा कौटुंबिक पुरुषने बोलावीने एम कहे ॥ ६४ ॥ ॥ के शीघ्रमेव एटले तत्काल हे देवाणुप्रिया, अष्टांग महानिमित्तना जाण, सूत्रअर्थना धरवा वाला, अनेक प्रकारनां शास्त्रमां कुशल, स्वप्न शास्त्रमा कुशल एवा स्वप्न लक्षण पाठकोने बोलावो इहां आठ अंगनां नाम कहे छे तेमां प्रथम फरकण विचार अंग तेमां शरीर फरके तेनो विचार जेमके स्त्रीनुं डाबुं अंग फरके तो सारुं इत्यादिक वातो जाणवी, बीजु स्वप्नविचार अंग तेमां उत्तम, मध्यम अने कनिष्ट एवा स्वप्नांनो विचार,त्रीजो स्वरविचार अग तेमां काली चिडी,रूपारेल,शीयाल प्रमुख बोले ते मुजब फल कहे

वाय, चोथु नूमिकप अग तेमां नूमिकंपवाथी जे शुनाशुनफल तेनां कहेनारां शास्त्र ते नौमविद्या
नामे चोथुं अंग जाणवु, पाचमुं मसा, तिल, लसण इत्यादिकोनो विचार जेमां ठे ते व्यजनविद्या
नामे पांचमुं अग जाणवु, ठठो हाथ पगनी रेखा जोवानो विचार जेमां ठे ते लक्षणविद्या नामे
ठहु अंग जाणवु, सातमुं उत्पातविद्या ते उल्कापात तारा तूटे, मम्ल मम्ले इत्यादिकोनो वि
चार जेमा ठे ते सातमुं अग जाणवु, आठमुं अतरिक्षविद्यानु अंग ते ग्रहोनां अस्त उद
य वक्र तेना फल जेमा ठे ते आठमुं अग जाणवु, एवा जाण स्वप्नपाठक पुरुषोने बोलावो
एवु सिद्धार्थराजाये कह्यु त्यारे ते कौटुंबिक पुरुष सांनलीने घणो खुशी थयो पठी हाथजोडी
यावत् सांनलीने तहत्त करीने ॥ ६५ ॥ ॥ सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी पासेथी निकलीने खत्री
कुम्म गामनगरनी वचमांथी थइने ज्यां स्वप्न पाठकोनां घर ठे त्या आवीने स्वप्नलक्षण पाठ
कोने कहेतो हवो ॥ ६६ ॥ ॥ हे स्वप्न पाठको तमोने सिद्धार्थक्षत्रिय राजा याद करे ठे
तेमाटे हु तमोने बोलाववा आव्यो हुं तेवारे स्वप्नलक्षणपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाना कौटु
बिक पुरुषनी वाणी सुणीने एटले तमोने सिद्धार्थराजा बोलावे ठे एवी वाणी सांनलीने, घ
णाज हर्ष सतोष हृदयमां पामवा लाग्या पठी स्नान मज्जन करीने, पोताना घरना इष्टदेवने
पूजीने, शरीर उपर कौतुकने अर्थे तिलक ठापा प्रमुख करीने, दहीं, माल अने सरसवने मांग
लिक माटे करीने इहा डुःस्वप्न प्रमुखनो नाश करवो ए प्रायश्चित्त टालवु ठे, तेमाटे ते करीने,
इहा कोइ प्रश्न करेके सिद्धार्थराजाना स्नानना वर्णनमां तो देवपूजा करवी आवी नही अने
आ निमित्तियाउना सक्षेप पाठमां देवपूजा आवी तो शुं सिद्धार्थराजा देवपूजा नही करता ह
ता ? एवु पूठे तेने उत्तर कहे ठे के आ वखत तो सिद्धार्थराजा शणगार करीने सनामां आव

ता हता तेथी तिहां दही, भात्त अने सरसवनी पेरे पाठ नथी तेथी जाणवामां आवे छे के निमित्तियाउने पूछी विदाय करीने पछी पूजा करी हशे ! केमके सिद्धार्थराजा पण श्रीपार्श्व नाथ जगवानना श्रावक छे तेथी श्रीपार्श्वनाथजीनी मूर्त्ति तेमना घरमां अवश्य होवी जोइये, वली आगल "एायाकय वलिकम्मा" ए पाठ त्रिशलाजीना अधिकारमां चाल्यो छे अथवा कर्त्ता ये पण ए पाठ सहजनो जाणी नही लख्यो होय !! एम पण संजवे छे पछी केवली गम्य हवे स्नानपावक शुद्ध मांगलिक वस्त्र पहेरीने,घणा मूल्यना घरेणां पहेरी सर्व शरीर शोजायमान करीने, वली पण सरसव अने दर्ज मंगल निमित्ते मस्तके धारण करीने, उगालीने, पोतपोताना घरथी निकलीने, क्षत्रियकुंम गामनगरनी वचमांथी थइने, जिहां सिद्धार्थराजानो मुख्य महेल छे तेने बारणे आवी सर्व एकठा थया, पछी सर्व जेला थइने मांहोमांहे विचार करवा लाग्या के आपणा वर्गमां कोइने महोटो थाप्यो नथी माटे एक जणने महोटो थापो, केमके वृद्धविना तो अप्रतिबध टोलुं वाजे माटे मांहोमांहे स्वप्ननो अर्थ विचारीने एक महोटाना मुखथी राजा आगल कहेवरावबुं, पण जणे जणें जुउ जुउं बोलवु नही जो जणे जण जुउं बोलवा जाशो तो आदर पामशो नही जेम न्यायशास्त्रमां कह्यु छे के ॥ यत्रसर्वेपिनेतार. सर्वे मत्सरवादिन ॥ सर्वे ममत्वमिछति, तेवसीदंति वृदवत् ॥ १ ॥ जिहां सर्वजण अग्रे सर थावा जाय अने सर्व अहंकार सहित बोलवा वाला होय, परस्परे ईर्ष्या करवा वाला होय, सर्व महोटाइ पणाने वांछवा वाला होय तेमनो समुदाय जेम पाचशे सुजट अनादर पामी दुःख करवा लागा तेम दुःख करे ते पांचसें सुजटनी कथा कहे छे कोई समये इहां तिहांथी आवीने पांचसे सुजट जेला थइ गया, ते रोजगार करवा सारुं देशांतरे

गया तिहां कोइ कोइ राजाउनी पासे बे चार दिवस रही रही चाल्या जाय एम करतां एक म
र्द्धिक महोटा राजाने जइ मळ्या तेवारे ते राजाये घोडा, वस्त्र, घरेणां, शस्त्र इत्यादिक सामग्री
तेमनी पासे दीधी तेमज ते सुभटो सर्वे सुरूपवान हता तेने देखी राजा तेमने सन्मान आपी
बोल्यो के तमे कोण छो अने क्याथी आव्या छो तेवारे ते पुरुषोये राजाने प्रणाम करीने कह्यु
के हे राजन्! अमे नोकरी रहेवा सारु आव्या छैये यावत् तेमनी वातो सांभळीने राजा प्रमुख
सर्व सभा खुशी थइ तेवारे राजाये प्रधानने बोलावीने कह्यु के आ सुभटो सारा देखाय छे, आ
बरुदार छे, काम पडतां संग्राममां पाछा हटे तेवा नथी एवा राजाना वचन सांभळी प्रधान
बोल्यो के हे स्वामी! ए सुभट देखवामां तो सारा छे पण असबंध छे केमके एमनामां कोइ मा
लेक नथी तेथी काम पडशे तेवारे भागी जाशे तो तमे उलभो कोने आपशो? एवु प्रधाने क
ह्यु तोपण राजा समज्यो नही तेवारे प्रधाने जाण्यु जे राजानुं मन ए सीपाइयोने नोकरी राख
वानु छे एवु समजीने प्रधाने कह्यु हे महाराज! एनी परीक्षा करीने आपणे नोकरीमा राखवु
राजाये पण कह्यु के सुखेथी परीक्षा करो पछी प्रधाने तेमने कोइ सारी जगा जोइने तेमा उ
तारो आप्यो अने रातनी वखते एक ढोलीयो, एक गादलु अने एक उसीसु ते सुभटोने उतारे
मोकल्यो वळी भोजनादिक सामग्री पण घणी मोकली ते सुभटोये भोजन कर्यु पछी जेवारे
सुवा लागा तेवारे ढोलीयो देखीने माहो माहे पांचसे जण लडवा लाग्या तेमांथी एक बोल्यो
के मेरादादा बडाथा, और मेभी बडाहु, इसे मेसुउंगा तेवारे बीजो बोल्यो के एकदिन वनमें
सिंह बोलाथा, उसका साद घरमे बेठेबेठे सुनके मेरा बाबाकू सातदिन तक ताप आयाथा,
इसे मेही सबसे बडा हुं, वळी त्रीजो बोल्यो के मेरे बडे भइयाने लेके हूए सत्ताइस कूपापडो

एक पांवकी लातसें नांजि मारेथे, इस्सें मेंही बडाहुं. वली चोथो बोल्यो के मेरे मामाने एक उंदराको हराइ दीयाथा इस्से मेंही बडाहुं, वली पाचमो बोल्यो के मेरा मामाने सातसेरकी खीचडी खाइथी, छठो बोल्यो के मेतो छ गोलीकी छास पीताहुं, सातमो बोल्यो के मेतो घरमेंही जगल जांता हुं,आठमो बोल्यो मेतो सातदिनतक सोइ रहताहूं जागतानही, नवमो बोल्यो मेंतो बिल्लीसेंभी मरताहूं, दसमो बोल्यो मे कुत्ता नसे जद नाग जाउं,एवीरीते एक कहे हू सुउं, बीजो कहे हू सुउं तुं कांइ मालेक नथी, एम अर्द्धरात्र सुधी लड्या तेवारे तेमां पांच सात जण समजु हता ते बोल्या अरे तमे लडाइ मकरो, ए शय्यानी साहामां पगराखीने वधाये सूइ रहो ए न्याय सर्वने बराबर जाणवामां आव्यो तेथी सर्वजणो ढोलीया सामा पगराखीने सूइ रह्या अने बीजी पण सर्व चीजो पाती प्रमाणे वेंची लीधी पछी प्रजात थयुं तेवारे राजाना माणसो जे निगाह करवा रह्यां हतां तेणे जइ राजा आगल सर्ववात कही तेवारे राजाये निर्भ्रंछीने स र्वने शीख आपी, कांइ आदर पाम्या नही एवुं स्वप्न पाठके परस्पर विचारीने एक जणाने मालेक थाप्यो अने जिहां सिद्धार्थक्षत्रियराजा छे तिहां आव्या आवीने सिद्धार्थराजाने जय विजय शब्द करी वधाव्या ॥ ६७ ॥ ॥ इति तृतियव्याख्यान समाप्त ॥ ॥ अथ चतुर्थ व्याख्यान प्रारंभ ॥ ॥ हवे ते स्वप्नपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाने हाथजोडीने जयविजय शब्द करी वधावे अर्थात् हाथ प्रसारीने आशिर्वाद आपे अने कहेके हे राजा ! तमे दीर्घ आयु ष्य वाला हो, घणी आजीविकाना धणीहो, लक्ष्मीवान्हो, जशवान्हो, बुद्धिमान्हो, कीर्त्ति मान्हो, वली सिद्धार्थराजाने पार्श्वनाथ स्वामीनो सेवक जाणीने श्रीपार्श्वनाथजीनी स्तुतिक रीने अशिर्वाद आप्यो ॥ श्लोक ॥ दशावतारोव· पायात्, कमनीयांजनद्युति ॥ कितुदीपो नहि

तथा प्रासाद उपर चढीने जाणे जमुं छुं एवु स्वप्न देखे तथा समुद्र तरु छु एवु स्वप्न देखे तो जो नीचकुलमां तेनो जन्म थयो होय तोपण ते राजा थाय वली दीपक, मांस, फल, कन्या, पद्म, छत्र अने ध्वजा एटला वाना स्वप्नांमां देखे.तो जय पामे, तथा पोताना इष्टदेवनी प्रतिमाने जो स्वप्नमां देखे तो आयुर्वृद्धि पामे तेमज कीर्त्ति, यश अने धननी पण वृद्धि पामे वली जे कपास, जस्म, हाड अने छास ए चार श्वेतवस्तु वर्जीने बीजी कोइ पण सपेत वस्तु स्वप्नांमां देखे तो जली जाणवी तथा जे हाथी, देवता, घोडो अने राजा ए चार चीज विना बीजी कोइ काली वस्तु स्वप्नमां देखे तो ते सारी जाणवी नही. तथा स्वप्नमां गायन करे तो रुदन करवु पडे, स्वप्नमां नाचे तो बदीखाने पडे, स्वप्नमां हसे तो शोचमां पडे, स्वप्नमां जणे तो कलह थाय, वली जो स्वप्नमां देवता, साधु, ब्राह्मण, राजा, पितृ, वृषन्न एटला मांहेलो कोइ आवीने कोइ प्रकारनी वात कहे ते वात अवश्य सत्य थाय तथा स्वप्नमां धोलो सर्प जुजाने मसे तो हजार सोनैयानो लान्न थाय, वली कोइ फल्युं फूल्यु वृक्ष तथा रायणनुं वृक्ष तेना उपर पोते चढयो एवु स्वप्नमा देखे तेने घणुं धन मले, वली गधेडो, उट, जेस जेसो एमना उपर एकलो हु चढयो छुं एवु स्वप्न देखे तो ते तत्काल मरण पामे, वली जे पुरुष धोला कपडा वाली धोला चदननुं विलेपन करेली एवी स्त्रीने हु जोगवु छु एवु स्वप्न देखे तो तेने सर्व प्रकारनी लक्ष्मी मले, वली जे रातां वस्त्रवाली, रातो चदन कृष्णगध विलेपन वाली स्त्री जोगवु छु एवु स्वप्न देखे तो तेनुं लोही सुकाइ जाय, वली जे रत्ननां, सोनानां अने सीसाना ढगलाउ उपर हुं चड्यो छु एवु देखे तो ते अवश्य समकेत पामीने मोक्ष जाय तथा जे स्वप्नमां दारु प्रमुखनो घडो जाणे मे उपाड्यो छे एवो पोताना आत्मा

... नवमा मास जाय ॥ हवे त्रिशला माताए जे चौद स्वप्न दीठां तेनुं फल तो आ प्रमाणे छे जे प्रथम स्वप्नमां चार दंतोशलवालो हाथी दीठो ते देखवाथी ए पुत्र महा पराक्रमी थाशे वली दान, शील, तप अने भाव रूप चार प्रकारनां धर्मनी प्ररूपणा करशे, वली चोसठ इंद्र तथा गजपति जे राजाउ ते एनां चरणकमलने सेवशे ॥ वली वीजे स्वप्ने वृषभ दीठो तेथी तमोने धर्मधोरी पुत्र थशे एटले भरतक्षेत्रने विषे जेम कर्षणीउ वृषभ थकी धान्यनुं बीज वावे तेम ए पुत्र वोधरूप धान्यनु बीज वावशे ॥ त्रीजे स्वप्ने सिंह दीठो तेथी निर्भय अने शूरवीर त्रण भुवनमां पोतानी आज्ञा मनावशे एवो ए पुत्र थाशे एटले जेम सिंह होय ते श्वापद जीवोथी विनाश पामतुं एवु जे वन तेनुं रक्षण करे तेम ए पण सम्यक् प्ररूपणा रूप सिंहे करी कुदृष्टि जे मिथ्यात्वरूप श्वापद जीवो तेथकी नाश पामतुं एवुं जे भव्यजीवरूप वन तेनुं रक्षण करशे, एटले मिथ्यात्वरूप आपदाथी भव्यजीवोनुं रक्षण करशे अथवा आठकर्म अने आठमदरूप श्वापदोनो नाश करशे, वली त्रण भुवनने विषे पोतानी आज्ञा मनावशे ॥ चोथा स्वप्नमां लक्ष्मी देवता दीठी तेथी त्रणजगतनी तीर्थंकर लक्ष्मीनो भोक्ता थशे एटले वरसीदान देइ दीक्षापाली केवल रूप लक्ष्मी पामीने आठ प्रातिहार्यरूप तीर्थंकरनी लक्ष्मीने भोगवशे ॥ पांचमां स्वप्नमां फूलनी वे मालाउ दीठी तेथी सत्पुरुषोने माथे पूज्य पणुं भोगवशे एटले जेम फूलनो तोरो मस्तके धराय छे तेम एनी आज्ञा पण सर्व भव्यजीवो मस्तके धरशे तथा वे माला दीठी माटे एक श्रावकनो अने बीजो साधुनो एवा वे प्रकारना धर्म कहेशे ॥ छठा स्वप्नमां चंद्रमा दीठो तेथी ए सौम्यदर्शन वालो थशे, शीतल परिणामवालो थशे,भव्यजीवरूप कुवलयनो वोध प्रकाश करवाने चंद्रमा सदृश

थशे ॥ सातमा स्वप्नमा सूर्य दीठो तेथी मिथ्यात्वरूप अंधकारनो हर्त्ता थशे तथा पोते प्रजामंमले करी अलंकृत थशे ॥ आठमा स्वप्नमां ध्वजा दीठी तेथी कुलमां ध्वजा समान उत्तम थाशे तथा धर्मध्वजायें करी विराजमान थाशे, जगतने चारे दिशाये धर्मध्वजाये करी शोजावशे ॥ नवमा स्वप्नमां पूरण कलश दीठो तेथी संपूर्ण गुणी थशे तथा धर्मरूप प्रासाद उपर कलश चडावशे ॥ दशमा स्वप्नमां पद्मसरोवर दीठु तेथी जगतना तापने हरवावालो थाशे तथा चालतां थकां एना पगतले देवताउ सुवर्ण कमल थापशे ॥ अगीआरमां स्वप्नमां खीरसमुद्र दीठो तेथी गनीर हृदय वालो थाशे तथा केवल ज्ञानरूप रत्न पामीने चौदराजलोकना नाव जाणशे ॥ बारमां स्वप्नमा देवविमान दीठुं तेथी देवताउनो पूजनीक थाशे एटले वैमानिक पर्यंत चार निकायनां देवताउ एनी सेवा करशे ॥ तेरमां स्वप्नमा रत्ननो राशि दीठो तेथी देवता त्रणगढ करशे, तिहां बेशी नव्यजीवोने धर्मदेशना आपशे ॥ चौदमा स्वप्नमां निर्धूम अग्नि दीठो तेथी दीप्तिवंत थाशे तेजवंत थाशे तथा जेम अग्नि कंचनने शुद्ध करे ठे तेम ए तमारो पुत्र आत्माना शुद्ध स्वनावनी शुद्धि करनारो थाशे, नव्यजनोनां मन शुद्ध करशे, कर्ममलने बाली नाखशे ॥ तथा ए चौद स्वप्नां दीठां तेथी चौदराज लोकनो स्वामी थाशे ॥ एवां चौद स्वप्नांथी एवां फल वालो तमारो पुत्र थशे ॥ वली स्वप्न पाठको कहे ठे के हे देवाणुप्रिया अमारा स्वप्नशास्त्रमां बेतालीश स्वप्ना सामान्य अशुनफल दायक कह्यां ठे अने त्रीश स्वप्ना उत्तम महोटा फलना देवावालां कह्यां ठे सर्वमली बहोतेर स्वप्नां कह्यां ठे तेमांथी श्री अरिहंत अने चक्रवर्त्तिनी माता, अरिहंत अने चक्रवर्त्ति गर्नमां आव्यां थकां ॥ ग्रंथा ग्रंथ ॥ ४०० ॥ ॥ त्रीश महोटा स्वप्नामांथी गज वृषनादिक चौद महोटा स्वप्नां देखे ॥७४॥ अने

वासुदेव गर्नमां आवे तेवारे वासुदेवनी माता ए चौद महोटा स्वप्नां मांहेला कोइ पण सात स्वप्नां देखे ॥ ७५ ॥ ॥ बलदेव गर्नमां आवे तेवारे बलदेवनी माता ए चौद महोटा स्वप्नां मांहेला गमे ते चार स्वप्नां देखे ॥ ७६ ॥ ॥ मम्हलिक राजानी माता ए चौद स्वप्नां माहेलुं एक स्वप्न देखे ॥ ७७ ॥ हवे बेतालीश मध्यम अने त्रीश उत्तम स्वप्न जे पूर्वे कह्यां तेना नाम कहे बे तिहां प्रथम बेंतालीश स्वप्ननां नाम कहे बे गंधर्व, राक्षस नूत, पिशाच, वुकस, महिप, अहि, वानर, कंटकडुम, नदी, खर्जूर, स्मशान, उट, खर, मार्जार, श्वान, दोस्थ, संगीत, धीज, नस्म, अस्थि, वमन, तम, कुस्त्री, चर्म, रक्त, अश्म, वामन, कलह, विविक्तदृष्टि, जलशोप, नूकंप, ग्रहयुद्ध, निर्घात, नंग, नूमज्जन, तारापतन, सूर्यचंद्र स्फोट, महावायु, महातप, विस्फोटक, डुर्वाक्य ए बेंतालीश मागां स्वप्न अशुन फल दायक जाणवां हवे त्रीश उत्तम स्वप्नना नाम कहे बे अर्हन्, बौद्ध, हरिकृष्ण, शंजु, ब्रह्मा, स्कंद, गणेश, लक्ष्मी, गौरी, नृप, हस्ती, गौ, वृषन, चंद्र, सूर्य, विमान, गेह, अग्नि, स्वर्ग, समुद्र, सरोवर, सिंह, रत्नरेख, गिरि, ध्वज, पूर्ण घट, पुरीप, मांस, मत्स्य, कल्पडुम, ए त्रीश स्वप्न शुन फलदायक जाणवां. ए वधां मली बहोंतेर स्वप्ननां नाम श्री वर्द्धमान सूरिकृत स्वप्नप्रदीप ग्रंथने अनुसारे लख्यां बे ॥ ॥ हवे जे पुरुष स्थिरचित्तवालो होय, जितेंद्रिय होय, पचेंद्रिय जेणे वश करेलां होय, शांत मुद्रावालो होय, वली धर्मरुचि होय, धर्मानुरागी होय, धर्म उपर श्रद्धावंत होय, दयावंत होय, इत्यादिक उत्तम गुणनो धणी होय, तेने जे स्वप्नुं दीठामां आवे, ते सारुं अथवा मानुं तरत फले वली रात्रिने प्रथम प्रहरे स्वप्न देखे, तो एक वरपमांहे फल आपे, रात्रिने बीजे प्रहरे स्वप्न देखे तो बमास मांहे फल आपे, रात्रिने त्रीजे प्रहरे स्वप्न देखे तो त्रणमास मांहे

फल आपे, रात्रिने चोथे प्रहरे स्वप्न देखे, तो एक मासमांहे फल आपे, रात्रिनां अतनी छेहेली बे घडीरात्र रहे तेवारे स्वप्न देखे, तो तेनु फल दश दिवसमांहे पामे, सूर्य उगती वेलाये स्वप्न देखे तो तत्काल फल पामे तथा जो मातुं स्वप्न दीठामां आवे तो पाछा सुइ रहेवु अने कोइनी आगल कहेवु पण नही तथा उत्तम स्वप्न देखी गुर्वादिक आगल कहेवु, जो संभलाववा योग्य कोइ जन न मले तो गायना कानमा पण संभलाववु, भलु स्वप्न देखी पछी सुवे तो निष्फल थाय, भलु स्वप्न देखी मूर्ख जन आगल तो सर्वथा न ज कहेवु केम के जेवु फल सांभले, तेवु फल पामे पण उत्तम पुरुष आगलज कहेवु ते उपर मूलदेवनु दृष्टांत कहे छे को इएक राजानो पुत्र अणमानितो थको छे तेनुं नाम मूलदेव छे पण तेने दान आपवानु घणुंज व्यसन छे तेथी राजाये तेने काहाडी मूक्यो ते फरतो फरतो कोइक गामे आव्यो पोते महा धर्मवत जैनमति छे परतु खावाने नहतुं तेवारे शहेरमां याचवाने गयो तिहा फरतां एक वा णीयांये भेशने अर्थे अडद राध्या हता ते मूलदेवने आप्या तेने लइ वाडीमां आव्यो अने मन मां चिंतववा वेगो जे कोइ अतिथि आवेतो तेने भोजन आपीने पछी हु भोजन करु एटलामां एक साधु पण भूख्यो थको त्या आव्यो, तेवारे मूलदेवे ते रुषिने देखी वाकला वोहोरावी दी धा अने पोते आनंदपणे सुइ रह्यो तिहां निराबाध पणे वह्यो चइमा मे गल्यो एवु स्वप्नु दीठु, ते स्वप्न देखीने जाग्यो अने वली जे वाडीमा ए मूलदेव स्तो हतो तेज वाडीमां एक बावानो मठ छे ते बावाना चेलाये पण तेहज स्वप्नु दीठु देखीने जाग्यो प्रभाते पोताना गुरुने कह्यु ते वारे गुरुयें कह्यु जे तुं आज गाममां भिक्षा लेवा जइश तेवारे तुजने चइमा जेटलो महोटो घृतें चोपडेलो रोटलो गोल सहित मलशे ते सांभली चेलो राजी थइने भिक्षा लेवा गयो ते

वारे तेने गुरुना कह्या प्रमाणे रोटलो मल्यो हवे ते वात राजकुमार मूलदेवे सांभलीने विचा र्युं जे हुं एनी आगल म्हारा स्वप्नांनी वात जो कहीश तो मने पण एटलुंज फल कहेशे केम के जे स्वप्न एना चेलायें दीठुं छे ते मे पण दीठु छे माटे एनी आगल तो वात करीश नही ए म विचारी हाथमां श्रीफल लेइने शहेरमां गुरु आगल गयो तिहां स्वप्नांनी वात कही तेवारे गुरुयें कह्यु जे तुं म्हारी दीकरी परणीशतो हुं तुजने स्वप्ननुं फल कहीश मूलदेवे कह्युं म्हारी नात जात तो तु जाणतो नथी अने ताहारी पुत्री केम परणावे छे ? निमित्तिये कह्यु मे सर्व वात जाणी छे एम कही तेने पुत्री परणावीने पछी स्वप्नांनुं फल कह्यु के आ गामनो अपुत्रीओ राजा आजथी सातमे दिवसे मरण पामशे अने तमे आ गामनां राजा थाशो तेवात साची मानीने मूलदेव फरी तेहज वाडीमां गयो एम करतां सातमे दिवसे गामनो राजा पण मरण पाम्यो तेवारे राजाविना कोइने चाले नही तेथी पंच एकठा थइने एवो ठेराव कर्यो के पाटवी घोडो, पाटवी हस्ति अने पाटवी प्रधान इत्यादिकने शणगारीने कह्यु जे जेने ए राजा करी थापे तेने राजगादीये बेसाडीये केमके एम कर्याथी पित्राइ गोत्राइ जे होय ते आगल कोइ वांधो करी शके नही हवे हाथी अने घोडो ए बे बाहेर नीकलीने जे वाडीमां मूलदेव सूतो छे ते वाडीमां आवी हाथीये गलगाट करी मूलदेवना मस्तके कलश ढोल्यो अने घोडे हणह णाट कर्यो पछी हाथी तेने सूंढथी उपाडी पोतानी पीठ उपर बेसाडीने शहेरमां लइ आ व्यो, लोकोये तेने राजपाटें थाप्यो माटे सारुं स्वप्न दीठुं होय तो उत्तम माह्या पुरुष आगल कहेवु पण मूर्ख आगल नज कहेवु॥ हवे उत्तम स्वप्न मूरख आगल कहेवाथी जे दुःख थाय ते आश्रयी वणिकस्त्रीनुं बीजुं दृष्टांत कहे छे, कोइएक वणिकस्त्रीयें स्वप्नमांहे समुद्र पीधो, प्रभातें

ढोलीयो अने धोळु वस्त्र स्वप्नमां देखे तो पोताने पीडा उपजे, कोइ मनुष्यना पगनु दु मांस जक्षण करु छु एवु स्वप्न देखे तो राजा थाय, पद्मसरोवर, समुद्र अने नदी उतरतो देखे तो घणुं द्रव्य पामे वली उनु पाणी, गायनु ढाण गोलमां जेलवेलु पीधुं एवु देखे तेने अतिसार रोग थाय तेथी मरण पामे, देवमूर्त्तिनी पूजा करु छु, यात्रा करुंछुं एवु देखे तेने सर्वप्रकारे वृद्धिथाय, हृदय उपर कमल उग्यु देखे तो तेनु शरीर कोढरोगे विनाश पामे इत्यादि ॥ माटे हे देवाणुप्रिया ! त्रिशलाक्षत्रियाणीये जे चौद मद्योटा स्वप्ना दीठां ते उदारकारी, मंगलकारी छे तेनु फल हे देवाणुप्रिया ! अर्थनो लाभ थाशे भोगनो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे तेमाटे हे देवाणुप्रिया ! निश्चे ए त्रिशला क्षत्रियाणीने नव महीना अने साढासात दिवस व्यतिक्रम्यानंतर तमारा कुलमां ध्वजा समान, दीपकसमान, मुकुटसमान, पर्वतसमान, तिलकसमान, कुलनी कीर्त्तिनो करवा वालो, कुलना निर्वाहनो करवा वालो, कुलमां सूर्यसमान तेजवंत, कुलनो आधार, कुलना यशनो करवा वालो, कुलमां वृक्ष समान, कुलपरंपरानी वृद्धि करवा वालो, जेना हाथ पग घणा सुकोमल छे एवो वली कोइ इन्द्रिये हीन नही, लक्षण व्यंजन गुण सहित, मानोन्मान सहित, संपूर्ण सर्व अंग भलो सौम्याकार, वल्लभकारी जेनु दर्शन छे एवो पुत्र थाशे ॥ ७८ ॥ वली ते बालक बाल्यावस्था छोडीने जेवारे विनय विज्ञान पणो युवान अवस्था पामशे तेवारे शूरवीर, पराक्रमवंत, घणा हाथी घोडा रथ प्रमुख सेनानो मालक, चार अंत पृथिवी सुधी राज करवा वालो एवो चक्रवर्त्ति राजानो राजा थाशे अथवा त्रण लोकनो नाथ धर्मचक्रवर्त्ति एवो तीर्थंकर थाशे ॥ ७९ ॥ तेना वास्ते हे देवाणुप्रिया त्रिशलाक्षत्रिया

कोनां मुखथी एवो अर्थ सांजली करीने हृदयमां हर्ष संतोष पाम्यो थको हाथजोडी अंजली करीने स्वप्न लक्षण पाठकोने कहेतो हवो ॥८१॥ एमज थवानुं ले, हे देवाणुप्रिया एवोज ए अर्थ ले, जुठो नथी, में वांछ्यो तेज प्रमाणे तमारा मुखथी ग्रहण कर्यो, जे तमे कह्यो लो ते सत्य ले एवुं कहे आ वचन उपर कोइक टीकाकारे जोजराजानी वारमां एक गांगो तेली थयो ले तेनुं दृष्टांत आपेलुं ले परतु ते पाछलथी थयेलो ले अने आ वाततो प्रथमनी ले तेथी ए दृष्टांत मलतुं नथी पण उपनयनमां मलती वात ले वली दृष्टांत होय ते एक देशीय होय माटे लोकने आनंदने वास्ते जोपण अंतर्वाच्यादिकोमां नथी तोपण लखी मूकीये लैये तद्यथा ॥ सिद्धार्थराजा कहे ले के *सुसिद्धिनुं कहेवुं ते सर्व स्थानके सिद्धज थाय ले* जेम गांगा तेलीने थयुं ते गांगा तेलीनी कथा कहे ले कोइएक विद्यार्थि दक्षिणदेशमां प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे कोइ एक जट्टनी पासेंथी त्रीश वर्ष पर्यंत विद्या जणीने अहंकारमां आव्यो तेवारे माथा उपर अंकुश धारण कर्यो तथा रखेने विद्याये करीने म्हारो पेट फाटी जाय तेना गर्वथी पोताना पेटने पाटो वांध्यो, वली जो कोइ वादी म्हारा साथे वाद करता नाशिने आकाशमां जाय तो तेने निसरणी उपर चढी नीचो पटकी आपु एवा गर्वे करी एक नीसरणी पण पोतानी पासे राखी, वली वादी जो नाशिने पातालमां प्रवेश करी जाय तो तेने खोदीने बाहार काढीश एवा अनिमानथी एक कोदाल पण पोतानी पासे राखी तिहां निसरणी तथा कोदाल एक चाकरना माथा उपर आपी तथा वली जो कोइ वादी म्हारा साथे वादमां हारी जाय तो तेना मुखमां तृण रखावी देवुं एवा विचारथी एक माणस घासनो पुलो लइने तेनी

ढोलीयो अने धोलु वस्त्र स्वप्नमा देखे तो पोताने पीडा उपजे, कोइ मनुष्यना पगनु दु
मास नक्षण करु बु एवु स्वप्न देखे तो राजा थाय, पद्मसरोवर, समुद्र अने नदी उतरतो
देखे तो घणु द्रव्य पामे वली उनु पाणी, गायनुं गण गोलमां नेलवेलुं पीधुं एवु देखे
तेने अतिसार रोग थाय तेथी मरण पामे, देवमूर्त्तिनी पूजा करु बु, यात्रा करुंलुं एवु देखे
तेने सर्वप्रकारे वृद्धिथाय, हृदय उपर कमल उग्युं देखे तो तेनु शरीर कोढरोगे विनाश पामे
इत्यादि ॥ माटे हे देवाणुप्रिया! त्रिशलाक्षत्रियाणीये जे चौद महोटा स्वप्ना दीठां ते
उदारकारी, मंगलकारी ठे तेनुं फल हे देवाणुप्रिया! अर्थनो लाभ थाशे भोगनो लाभ
थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे तेमाटे हे देवाणुप्रिया! निश्चे ए त्रिशला
क्षत्रियाणीने नव महीना अने साढासात दिवस व्यतिक्रम्यानंतर तमारा कुलमां ध्वजा
समान, दीपकसमान, मुकुटसमान, पर्वतसमान, तिलकसमान, कुलनी कीर्त्तिनो करवा
वालो, कुलना निर्वाहनो करवा वालो, कुलमां सूर्यसमान तेजवंत, कुलनो आधार, कु
लना यशनो करवा वालो, कुलमां वृक्ष समान, कुलपरंपरानी वृद्धि करवा वालो, जेना
हाथ पग घणा सुकोमल ठे एवो वली कोइ इंद्रिये हीन नही, लक्षण व्यंजन गुण सहित, मा
नोन्मान सहित, संपूर्ण सर्व अंग जलो सौम्याकार, वल्लभकारी जेनु दर्शन ठे एवो पुत्र थाशे
॥ ७८ ॥ वली ते बालक बाल्यावस्था ठोडीने जेवारे विनय विज्ञान पणो युवान अवस्था
पामशे तेवारे शूरवीर, पराक्रमवंत, घणा हाथी घोडा रथ प्रमुख सेनानो मालक, चार अंत
पृथिवी सुधी राज करवा वालो एवो चक्रवर्त्ति राजानो राजा थाशे अथवा त्रण लोकनो
नाथ धर्मचक्रवर्त्ति एवो तीर्थंकर थाशे ॥ ७९ ॥ तेना वास्ते हे देवाणुप्रिया त्रिशलाक्षत्रिया

णीये यावत् मंगलकल्याणकारी, स्वप्नां दीठां ॥७०॥ तेवारे सिद्धार्थराजा ते स्वप्न लक्षण पाठकोनां मुखथी एवो अर्थ सांभली करीने हृदयमां हर्ष संतोष पाम्यो थको हाथजोडी अंजली करीने स्वप्न लक्षण पाठकोने कहेतो हवो ॥७१॥ एमज थवानुं छे, हे देवाणुप्रिया एवोज ए अर्थ छे, जुठो नथी, मे वांछयो तेज प्रमाणे तमारा मुखथी ग्रहण कर्यो, जे तमे कह्यो छो ते सत्य छे एवु कहे आ वचन उपर कोइक टीकाकारे भोजराजानी वारमां एक गांगो तेली थयो छे तेनुं दृष्टांत आपेलुं छे परतु ते पाछलथी थयेलो छे अने आ वाततो प्रथमनी छे तेथी ए दृष्टांत मलतुं नथी पण उपनयनमां मलती वात छे वली दृष्टांत होय ते एक देशीय होय माटे लोकने आनंदने वास्ते जोपण अंतर्वाच्यादिकोमां नथी तोपण लखी मूकीये छैयें तद्यथा ॥ सिद्धार्थराजा कहे छे के सुसिद्धिनुं कहेवुं ते सर्व स्थानके सिद्धज थाय छे जेम गांगा तेलीने थयु ते गांगा तेलीनी कथा कहे छे कोइएक विद्यार्थि, दक्षिणदेशमां प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे कोइ एक भट्टनी पासेथी त्रीश वर्ष पर्यंत विद्या भणीने अहंकारमां आव्यो तेवारे माथा उपर अंकुश धारण कर्यो तथा रखेने विद्याये करीने महारो पेट फाटी जाय तेना गर्वथी पोताना पेटने पाटो बांध्यो, वली जो कोइ वादी महारा साथे वाद करता नाशिने आकाशमां जाय तो तेने निसरणी उपर चढी नीचो पटकी आपुं एवा गर्वे करी एक नीसरणी पण पोतानी पासे राखी, वली वादी जो नाशिने पातालमां प्रवेश करी जाय तो तेने खोदीने बाहार काढीश एवा अभिमानथी एक कोदाल पण पोतानी पासे राखी तिहां निसरणी तथा कोदाल एक चाकरना माथा उपर आपी तथा वली जो कोइ वादी महारा साथे वादमां हारी जाय तो तेना मुखमां तृण रखावी देवुं एवा विचारथी एक माणस घासनो पुलो लइने तेनी

पछवाडे पछवाडे चाले एवा आर्मबर सहित चालतो थको दक्षिण, गुजरात, मारवाड, मेवाड इत्यादिक देशोनां पम्तितोनी साथे वाद करी तेने जीतीनें सरस्वतीकंठाभरण इत्यादि विरुदावली बोलावतो थको सर्व गामोना पम्तितोने जीततो थको अनुक्रमे मालवदेशमा उज्जेणी नगरीना जोजराजानी सनामां पांचशें पम्तित छे एवी वात सांजलीने ते पम्तितोनी साथे वाद करवा सारु उज्जेणीये आव्यो तेने राजाये महोटा आर्मबरथी नगरमां प्रवेश कराव्यो, रुडा महेलमां उतारो आप्यो, पछी ते पंम्तित राजानी सनामां आवी पंम्तितोनी साथे वाद करीने राजानी समक्ष कालिदास माघ आदिक पांचशे पम्तितोने जीत्या तेवारे राजाये विचार्युं जे आ महोटो आश्चर्य थयो जे परदेशी नट्ट आवीने महारा सर्व पम्तितोने हरावी दीधा तेथी महारा पम्तितोना माननी हानि थइ एवो चिंतातुर थइने क्रीडा करवाने अर्थे जावा लाग्यो मार्गमां जतां रस्तामां एक आख्य वालो एक गांगोतेली घाणी उपर बेठो छे ते घाणीमांथी तेल लइने बीजो एक जुदो घडो हतो तेमां नाखे पण तेलनुं एक टीपु मात्र बाहेर पडवा दीये नही एवा काणा घांचीने देखीने राजाये विचार्यु जे आ काणानी बुद्धि जूउ केवी छे ! तो ए काणानी अक्कलनो तो पारज नही होय एम कहेवु तेज सत्य छे पछी राजाये तेने बोलावीने पुछ्युं के अरे तु नट्टाचार्य साथे सवाद करीश ? तेवारे ते बोल्यो हा महाराज ! हुं वाद करीश एमा महारुं शुं जवानुं छे ? ए नट्टाचार्यनी साथे वाद करवो कांइ महोटी वात नथी जो जोरावर जबर देखीश तो पण अटपटा न्यायथी तेने जीती लइश पछी राजाये आदित्यवारने दिवसे नट्टाचार्यने बोलावीने कह्यु के हे नट्टाचार्य ! महारा जे साधारण नट्टो हता तेने तमे जीत्या पण हजी महारा सर्व पम्तितोनो जे आचार्य छे तेनी साथे जो वाद करो अने जीतो तो हुं जाणु जे तमे

खरा पण्डित छो तेवारे दक्षिण भट्टाचार्यें कह्युं हा राजन्! हुं तेनी साथे पण वाद करीश माटे ते क्यांछे तेने आंही बोलावी ल्यो तेवारे राजाये भट्टाचार्यने आसन आपी वेसाड्यो पछी कालीदास, क्रीडाचन्द्र प्रमुख भट्टोने एकठा करीने कह्यु के जाओ पण्डितजीने लइ आवो तेओये जइ गांगातेलीने भट्टाचार्यनो वेश कराव्यो, घरेणां पहेराव्यां अने शरीरमां तो ते, प्रथम थीज मातेलो मदोन्मत्त हाथी सरखो छे तेने पालखीमां वेसाडी पांचशे पंडितोये परवर्यो थको राजसभामां लाव्या, राजाये उठी आदर दीधो, सर्व सभा उठी उभी थइने महोटा सन्मानथी सिंहासन उपर वेसाड्यो तेवारे दक्षिण भट्टाचार्यें तेने जोइने विचार्यु जे आतो मातेलो छे अने हुंतो शरीरे डुबलो छु तेथी एनी साथे वाद करतां पार आवे नही माटे एनी साथे वचननो कलह करवो नही, मात्र तत्त्वज पूछवु एम चिंतवीने एक आंगुली उंची करी तेवारें भोजराजाना भट्टे क्रोधकरी वे आंगुली उंची करी ते जोइ दक्षिण भट्टाचार्यें चमत्कार पामीने पांच आंगुली उंची करी बतावी ते जोइ गांगातेलीये मुठी भीडी बतावी तेवारे दक्षिण भट्टाचार्यें पोताना मस्तक उपरथी अंकुश उतारी नाख्यो, पेटे पाटो बांध्यो हतो ते छोडी नाख्यो अने निसरणी तथा कोदाली पण नाखी दीधी, तृणनो पूलो बाली नाख्यो, समस्त माननो त्याग करी सर्व सभा समक्ष भोजराना भट्टने पगे लाग्यो अने कहेवा लागो के महोटी आश्चर्यनी वात छे जे मने कोइए पण जीत्यो नही पण तुं महोटो पण्डित माटे ते मुजने जीत्यो ते जोइ भोजराजा विस्मय पामीने दक्षिण भट्टाचार्यने पूछ्यु के तमे केवा प्रकारनो वाद कर्यो तेवारे भट्ट बोल्यो के तमारो भट्ट महाज्ञानवान् छे कारणके मे एनी साथें समस्याये वाद कर्यो जे आ जगतमां एक शिव छे एवु स्थापन

करवा सारु एक आंगुली तमारा नट्टने बतावी तेवारे लमारा नट्टे बे आंगुली देखाडी तेथी हु समजी गयो के एक मात्र शिवज नथी पण शिव अने शक्ति ए बेउ ळे पळी वली मे कह्यु के इंद्रियो पांच ळे तेथी पाच आंगुली बतावी तेवारे आपना नट्टाचार्ये मुठीजीडीने बतावी तेथी हुं समजी गयो के पांचइंद्रियोतो खरी पण तेने वश राखवी जोइये तेवारे में जाण्यु जे ए पंमित त्यागी ज्ञानी अने जितेंद्रिय ळे एवीरीते वाद थयो तेमा हु हारीगयो एना समान बीजो पंमित मे क्यांय पण दीठो नही एवु कहीने दक्षिणनट्टाचार्य मानभ्रष्ट थयो थको पोताने देशे चाल्यो गयो, पाळलथी नोजराजायें गांगातेलीने पूळ्युं के ते केवा प्रकारनो वाद कर्यो अने केवीरीते जीत्यो तेवारे तेली बोल्यो के महाराज दक्षिणनट्टाचार्य घणो खराब माणस ळे मने कहेवा लाग्यो के ताहारी एक आंख ळे तें हुं फोडी नाखीश एवु मनमां लावीने एक आंगुली उचीकरी तेवारे मे बे आंगुली उची करीने समजाव्यो के तुंतो एक आंख फोडतो पण रही जाइश परतु हुं ताहारी बे आंखो फोडी नाखीश त्यारे मने पंजो देखाडी बोल्यो के हु तने थाप मारीश तेथी ताहारुं मोहोडुं फरी जाशे तेवारे में मुठीवाली बतावीके हुं तुजने एक मुठी मारीश तो तुं पातालमां पेसी जइश एवी वात तेलीना मुखथी सांनलीने राजा प्रमुख सर्व सन्नाने हसवु आव्युं अने बोल्या के ए महोटो नाग्यशाली सुसिद्धिवालो ळे एवु कही वस्त्रादिक पहेरामणी आपी सन्मान देइ गांगा तेलीने घेर पोंचतो कर्यो एनी पेरे सिद्धार्थ राजा कहे ळे के हे स्वप्न पाठको ! तमे सुसिद्धि कहो तेथी महारेतो तमारु कहेवुं सत्य थाउ एवु सिद्धार्थराजाए स्वप्न पाठकोने कह्यु कहीने ते स्वप्नांने रुडीरीते धारण करीने ते स्वप्नलक्षण पाठकोने घणा अशन पान खादिम स्वादिमादिक चार आहार जमाडीने फूल फल गंध माला

घरेणादिके करीने सत्कार सन्मान आप्युं ते सत्कार सन्मान आपीने घणी आजीविका जीवे
तिहां सुधी खाया करे एवी करी दीधी अर्थात् गाम प्रमुख आपीने शीख आपे ॥७२॥ ॥
तेवारपछी सिद्धार्थ क्षत्रियराजा सिंहासन थकी उठीने जिहां त्रिशलाक्षत्रियाणी पडिछमां बेठी
छे त्यां आवीने कहे छे ॥७३॥ ॥ एवो निश्चय हे देवाणुप्रिया स्वप्न शास्त्रमां बेंतालीश सामा
न्य स्वप्नां अने त्रीश महा स्वप्नां सर्व बहोंत्तेर स्वप्नां कह्यां छे तेत्रीशमांथी चौद महोटां स्वप्नां
तीर्थंकर अने चक्रवर्त्तिनी माता देखे अने एज चौद स्वप्न माहेला सात स्वप्नां वासुदेवनी माता
देखे अने चार बलदेवनी माता देखे, एक मण्डलिकराजानी माता देखे, एवु स्वप्न पाठके कह्यु
ने जे तमे चौदे स्वप्नां दीठां ॥७४॥ ॥ ते तमारे चक्रवर्त्ति तथा तीर्थंकर होवावालो पुत्र थाशे
॥७५॥ ते पछी त्रिशलादेवी ए अर्थ सांजलीने हृदयमा खुशी थइ यावत् स्वप्नांनो अर्थ धारण
करीने ॥७६॥ ॥ सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने नाना प्रकारना मणिरत्नोना बाजोठथी उठीने ता
कीदरहित यावत् राजहंस सरखी गतिये चालती थकी ज्यां पोतानुं जुवन छे तिहां आवीने पो
ताना मंदिरमां प्रवेश करती हवी ॥७७॥ ॥ जे दिवसथी श्रमणजगवत श्रीमहावीरस्वामी ते
राजानाकुलमां हरणिगमेषी देवे संहराया ते दिवसथी वैश्रमणनामे इन्द्रमहाराजनो जे जंमारी
जेनुं लोकोमां धनद एवु नाम छे ते जंमारीना हुकुमना उठाववा वाला एवाजे तिर्यक लोक
निवासी वैताढ्यपर्वतनी मेखलाये रहेनारा व्यंतरनिकायनां तिर्यगजृंजक देवता ते शक्रेन्द्रना
हुकुमथी घणाजघणा एवा जे जुनाधन घड्या महानिधान ते केवा धन तोके जे धनना स्वामी
हीण थइगया, जे धनना संचयकरवा वाला घडाववा वाला मरण पामी गया छे, तेमनो कोइ
गोत्री पण रह्यो नथी, सर्वथा ते धनना स्वामी विछेद गया, फाटवा वाला विछेद गया,

माटवा वालानां कुलगोत्र पण विछेद पाम्यां तेमनुं धन ते हवे जे स्थानके गालीने मरीगया ते स्थानकोनां नाम कहे छे गामबुधिना गुण जिहां जता रहे तेने गाम कहीये तिहां घडावीने मरीगया ते धन तिहांज रहीगयु, ते धन तथा जिहां कर नही लागे तेने नगर कहीये, धूल नो कोट जिहां होय तेने खेट कहीये, खोटुं नगर ते कर्बट कहीये, शहेरथी बे कोश उपर जे गाम होय ते मम्प कहेवाय, जेने चारे बाजुये गाम वसे ते द्रोणमुख कहेवाय, जलमा अने थलमां थइने मार्ग जाय ते पट्टण कहीये, जिहां तापसोनुं वसवु होय तेने आश्रम कहीये, तीर्थस्थानके जे गाम होय तेने संवाह कहीये, सार्थवाहने उतरवानु स्थानक होय तेने सन्निवेश कहीयें एवा प्रकारनां गामोनें विषे सिघोडाने आकारे रस्ता होय तेने विषे तथा त्रिवाटाने विषे, चोवटाने विषे तथा घणा मार्ग जिहां भेला थता होय तेने चच्चर मार्ग कहीये तथा चौमुखां देवोनां मदिरमा, महोटापंथ वाला राजमार्गने विषे, देवकुलमा, सभामां, पाणीना स्थानकमां, बागमां, उद्यानमां, वनमा, वनखंडमां, एकजातिनां वृक्ष होय तेने वन कहीये, अनेक जातिनां वृक्ष जेमां होय तेने वनखंड कहीयें, मसाणमां, सूनाघरमां, पर्वतनी गुफाउमा, होमना स्थानके, पर्वतनी शिला खोदेली होय तेमां, बेसवानी शालामां, लोकोने वसवाना स्थानकोमां एटला स्थानके घालेलां जे धन ते सर्वजगाउनां धन लइ जइने सिद्धार्थ राजाना घरमां नाखो एवो इन्द्रमहाराजनो हुकुम थयो तेवारे तिर्छालोकना वसवा वाला तिर्य गृंभक देवता ते सर्वधन लइ जइने सिद्धार्थराजानां घरमां नाखे ॥८८॥ ॥ जे रात्रिमां श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामी ज्ञातकुल जे सिद्धार्थराजा तेना कुलमां आव्या ते रात्रिथी मांडीने सिद्धार्थराजा, सोनेकरी, रूपेकरी, धनेकरी, धान्येकरी राज्येकरी, देशेकरी, वाहनेकरी, कटके

करी, पालखां प्रमुखकरी, भंडारकरी, धान्यना कोठारकरी, उरकरी, [illegible] गीयोनो परिवार तेणेकरी, देशवासी लोकोयेकरी, यशवातेकरी, घणुं घणुं वध्या, वृद्धि पाम्या तथा घणो धान्य गणवामां आवे एवां चोवीश प्रकारनां धान्य तेनां नाम कहेछे जव, घउ, शालि, व्रीहि, साठी, कोद्रवा, सामो, कांग, राल, तिल, मग, अडद, अलशी, चणा, तिउडा, वाल, सिलिंद, राजउडद, उच्छू, मसूर, तुअर, कुलथ, धाणा, कलायरो, इत्यादिक प्रकारनां धान्यथी तथा बीजां पण सोनुं, रूपु, रत्न, मोती, मणि, दक्षिणावर्त्तशंख, राजवर्त्त, शिला, मुगिया, लाल रत्न, पद्मराग आदिके करी वध्या वृद्धि पाम्या तथा प्रीति, सत्कार, समुदाये करीने घणा घणाज वध्या, वृद्धिपाम्या, तेथी श्रमणभगवत श्रीमहावीरस्वामीनां माता पिताउनां मनमां एवो हर्ष विचार उपन्यो ॥ ७९ ॥ ॥ के जे दिवसथी अमारे आ पुत्रकूखमां आव्यो छे ते दिवसथी लइने अमे सर्वप्रकारे पूर्वे कह्यां एवां सोनां रूपां प्रमुख वस्तुयेकरी वध्या,प्रीति सत्कारे करी घणाघणाज वध्यां, माटे जेवारे अमारे घेर आ पुत्रनो जन्म थाशे तेवारे अमे ए छोकरानुं नाम जेवा एमां गुण छे तेवु आपीशुं, वृद्धिपणाना गुणेकरी वर्द्धमान एवु नाम स्थापन करीशु ॥ ८० ॥ ॥ तेवारे श्रमणभगवत श्रीमहावीर स्वामी पोतानां मातानी उपर अनुकंपा एटले दया लावीने विचार्यु जे हुं जेवारे गर्भमां हालुं चालुं छुं तेवारे माताने दुःख उपजे छे एम चितवीने मातानी कूखमां निश्चल रह्या, हाल्या चाल्या नही, कंप्या नहि, पोतानां अंगोपांग गोपवी राख्यां एवा थया थका रह्या, इहां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के जाणे भगवान् मोहराजाने जीतवासारुं एकांते विचार करता रह्या छे केशुं ? अथवा कोइ परब्रह्मनु अगोचर ध्यान करे छे केशुं ? अथवा कल्याणरस प्रत्यें पोताना आत्मगुण साधवा

रह्या ठे केम्रु ? अथवा कामदेवनो निग्रह करवाने अर्थे रूपपरावर्त्तन विद्या साधता रह्या ठे केम्रु ? एवीरीते श्रीजगवान् मातानी कूखने विषे रह्या ते तमोने कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थे थाउ इति ॥ ए१ ॥ ॥ तेवारे त्रिशलामातानां मनमां एवु थयु जे महारोगर्ज कोइ देवता जइगयो, ए महारोगर्ज मरण पाम्यो, महारो गर्ज चविगयो, महारो गर्ज गलिगयो, ए महारो गर्ज प्रथम हालतो चालतो हतो ते हमणां हालतो चालतो नथी तेथी जाणुलुं जे गर्जने कुशल नथी एवु विचारीने मनमां सकल्प थयो, चितारूप समुड्मा बुड्यां, अने हाथ उपर मोढोडुं धरी नीचीदृष्टि राखीनें आर्त्तध्यान ध्याववा लागी, ते आर्त्तध्यान आ प्रमाणे ठे ते आगला आलावामा कहे ठे ॥ ए२ ॥ ॥ हवें त्रिशलादेवीनो शोक विचार लखीये ठैये ॥ अहो एटले खेदकारक वचने शोक करे ठे के माहारो जे गर्ज जतो रह्यो ते हुं निश्चे अजागणी बु, हीणापुण्यवाली बु, अजागीयाना घरमां चितामणीरत्न रहे नही अथवा दारिड्रीना घरमां निधान केम रहे ? जेम मारवाडमां कल्पवृक्ष रहे नही तेम पुण्यहीणने तृपालागे तेवारे अमृत पान करवानी इछा थाय तो ते इछा केवीरीतें पूरणथाय ? वली कहे ठे के हे दैव, हे कर्म, तु महा निर्दय ठो, निर्लज्ज ठो, तुजने करुणा नथी, अरे पापिष्ट डुष्ट अरे निरपराधी लोकने मारवा वाला, तु महारो विना मुद्दे वैरी केम थयो ? ताहारो मे शो अपराध कर्यो के जेथकी तें माहारो मनोरथरूप कल्प वृक्ष उखेडी नाख्यो, जो में कोइ ताहारो अपराध कर्यो होयतो हे पापी तुं प्रगट थइने शावास्ते कहेतो नथी ? तें मुजने डुखनी खाण प्राप्त करी दीधी, तें मुजने आंख्यो आपीने पाठी खेंची लीधी, तें मुजने हाथमां निधान आपीने पाठो खेंची लीधो, तें मुजने मेरुपर्वत उपर चडावीने पाठी जमीन उपर नाखी दीधी, तें महारा मुखमां आ

वेलो कोलीयो खेंची लीधो, ते मह्रारा निपजेला पाकेला धान्यना क्षेत्रने बाली दीधुं, तें मह्रारी
रसकुपिका नांजी दीधी,ते मह्रारुं जहाज नर समुद्रमां फूबावी दीधु,अथवा वली दैवने बलंनो
देवाथी शुं थाय ! अरे जीव ते आगला नवमां एवाज कर्म बांध्या ह्शे ते कर्म तुजने ह्मणां
उदय आव्यां छे पूर्वनवमां मे माताउंनी पासेथी बालकोने दूर कर्यां ह्शे तथा गाय प्रमु
खनां वाछरुने दूध पीवा दीधुं नही, वृक्षनी मालीयो नांगी, सरोवरनी पाल फोडी, दव ल
गाव्या, अणगल पाणी पीधां, उंदरोना बिल खोद्यां, धूलथी नर्यां, नोलीयां अने गोह्नां
दरोमां उनुंपाणी तथा तेल रेड्युं, कीडी मकोडाना दरमां उम्न पाणी रेड्यां, पोपट मेना
प्रमुखने पांजरामां घाल्यां, तेमनी माताना वियोग कर्या, चिडा प्रमुख पंखीउंनां माला पा
ड्या, इंमां फोड्यां, जूं लीख मार्यां, लोकोना गर्न उपर द्वेष कर्यो, गर्न पडाव्या, गर्नस्तनन
कराव्या, वशीकरण, उच्चाटन कराव्यां ताह्रारो पुत्र मरण पामजो एवा शराप दीधा, पापना
मंत्र अने औषध कर्यां, कोइने विष दीधु, कोइना रत्न चोरी लीधां, कोइनुं शील नंगाव्युं,
अथवा व्रत लेइने नांग्या, कोइनां गाम बाल्यां, मह्रोटां वृक्ष धरतीमांथी उखेडी नाख्यां, म
ह्रोटा तालावनां शोषण कर्यां अथवा देवद्रव्य नक्षण कर्यां, जैनमंदिर पाड्यां, गुरुना अ
वर्ण वाद बोल्या, देवगुरु उपर द्वेष कर्यो, दान देतांने वर्जना करी, वृक्षनां फल विदार्यां अ
थवा अनतकाय नक्षण कर्यां, काचांफल तोड्यां घणुंशु कहुं ! एवा माह्रारे जीवे पाप कर्यां
ह्शे ते पाप ह्मणां मुजने उदय आव्यां छे के जेथकी मह्रारो आवो गर्न गली गयो, माटे
हुतो पारविनानी दुखणी थइ, जो मह्रारो ए चौद स्वप्न सूचित गर्न गयो तो ह्वे मह्रारे ससा
रमां बीजुं शुं सुख छे, हुं राजपाटने शुं करुं वधारे शुं कहुं, त्रणलोके पूजित एवा पुत्र विना

सर्व महारे सुनु छे, हवे हुं किहां जाउ, शुं करु, कोनी आगल जइ पोकार करु, एवा विलाप करती थकी त्रिशला देवी यूथभ्रष्ट हरणी सरखी थइ, इहां तिहां जमे, नीसासा नाखे, एवी अव्यवस्थित थयेली त्रिशलादेवीने देखीने सखीयो पूछवा लागी के हे स्वामिनि ! आज तु एवी केम थइ रही छो ? अमे तने पूछीये छैये के आ दुःखनु शुं कारण छे तेवारे त्रिशलादेवी आखमाथी आंसु नाखीने निशासा मूकती बोली के हे सखीयो ! हु तमोनें शुं कहु, हु निर्भागणी छु, महारुं जीवितव्य गयुं तेवारे सखीयो बोली हे सखि ! आवा अमंगलिक वचन म बोल, बीजु सर्व रह्यु पण ताहारा गर्भने तो कुशल छे ? तेवारे त्रिशला बोली हे सखियो ! जो महारा गर्भने कुशल होय तो बीजु महारे शु दुःख छे ? महारो गर्भ जतो रह्यो एज दुःख छे एवु कहेतां मूर्छा खाइने जमीन उपर पडीगइ तेवारे सखीयोए चदनजल छंटकावीने वीजणाये वायरो करी सचेतन करीने फरी पुछ्यु जे ताहारा गर्भने शु थयु तेवारे राणी गदगदस्वरथी बोली के महारो गर्भ जतो रह्यो एवु सांभली सखीयो पण सर्व दुःखी थइ थकी राजाने जइ ए हकीगत कही तेथी राजा पण दुःखी थयो, नाटक वाजित्र सर्व निषेध कर्यां, सर्व शोकाकुल थइ बेठा के हवे शुं करीये एवा थया के तेने कांइ पण सूजे नही, तेवारे कोइक तो निमित्तियाने पूछता हवा, कोइ ज्योतिषीया जोगीने पूछता हवा अने वृद्ध स्त्रीयो, शांति पुष्टि करती हवी,कुलदेवीने उलंभा देती हवी के हे देवी आ वखत तु किहां गई,एवा एवा विलाप करे छे पण त्यां कोइ शब्दथी बोले नही, स्तब्ध थया, सर्व शोकनी राजधानी सरखां थयां आंसुंथी मुख धोतां थकां, निशासा खाता थकां,दुःखे पीडातां थकां, कोइने खावु पीवु पण सूजे नही एवा स्वरूपे थयां तेवारे थोडी वार पछी भगवाने जाण्युं के प्रथम वाजित्र प्रमुख वाजतां

हता ते हमणा केम नथी वाजता ? एवु जाणी अवधिज्ञाने जोयु तेवारे सर्व व्यतिकर जाणीने वि
चार्यु के जुर्उ यत ॥ किकूर्म्मी कस्यवाब्रूम, मोहस्यगतिरीदशी ॥ इरवैर्धातुरिवास्माकं, दोपनिष्प
त्तयेगुणा ॥१॥ ॥ आ मोहराजानी गति कहेवी छे जे में तो गुण कर्यु तो आंही उलटुं अवगुण
थयु ते उपर कलिकालनुं दृष्टांत कहेछे जेम कोइक पंथी परदेशथी घणु द्रव्यउपार्जन करी पोताने
घेर आवतो हतो तेवामां रस्ते चालतां कोइक अटवी आवी तेमां दव लागो दीठो ते दवमां कोइ
सर्प्प दाझे छे ते सर्प्पे पहेला वाट मार्गुने कह्यु के मुजने आ दवमांथी बाहेर काहाड्य तेवारे तेणे
बाहेर काहाड्यो त्यारे सर्प्पे कह्यु उभो रहे हुं तुजने भक्षण करीश ते पुरुप बोल्यो मे तुजने बलतो
राख्यो, उपकार कर्यो, मरणमांथी उगार्यो तो उलटो तुं मुजने भक्षण करीश ? सर्प्पे कह्यु आज
कलिकाल वर्त्ते छे आजना समयमा गुणनो दोप थाय तेमाटे हु तुजने करडीश तेवारे पथी बोल्यो
हुं घणा वर्षे घेर जाउबुं वली माहारी पासे द्रव्य छे माटे घेर जइ महारी स्त्रीने द्रव्य आपी तेनी
शीख मागी आवु हु एवो कोल आपी पोताने घेर आव्यो, स्त्रीने सर्व वात कही शीखमागीने
ते पुरुप अटवीमां पाछो आव्यो, स्त्रीपण पाछलथी आवी सर्प्पने स्तुति करी कहेवा लागी जे
अहो नागराजा महारा भरतारनुं भक्षण करशोतो महारी शी वले थशे, महारे शत्रु पण घणा
छे तेवारे सर्प्पे कह्यु ते शत्रुनिवारण उपाय तुजने बतावीश, तेनी तुं चिता मकरजे आ औपध
महारा राफडा पासे छे तेनुं मूल लइ पापाण उपरे घसीने तेना छांटा वैरी उपर नाखजे तो
बलीभस्मथाशे स्त्रीये ते औपधीनुं मूललइ, अमृत मूलीने पापाण उपर घशीने सर्प्प उपर छांटा
नाखवा तैयार थइ तेवारे सर्प्प बोल्यो मे तुजने औपधी देखाडी तो वली मुनेज बाले छे उलटो
गुण उपर अवगुण करे छे तेवारे स्त्री बोलीजे गुणनो नाइ दोप छे एवुं तमेज तमारा मुखथी

सर्व म्हारे सुनु छे, हवे हु किहां जाउ, शुं करु, कोनी आगल जइ पोकार करु, एवा विलाप करती थकी त्रिशला देवी यूथभ्रष्ट हरणी सरखी थइ, इहां तिहां भमे, नीसासा नाखे, एवी अव्यवस्थित थयेली त्रिशलादेवीने देखीने सखीयो पूछवा लागी के हे स्वामिनि ! आज तु एवी केम थइ रही छो ? अमे तने पूछीये छैये के आ दुःखनु शु कारण छे तेवारे त्रिशलादेवी आंखमांथी आंसु नाखीने निशासा मूकती बोली के हे सखीयो ! हु तमोने शुं कहु, हु निर्भागणी छु, म्हारु जीवितव्य गयु तेवारे सखीयो बोली हे सखि ! आवा अमंगलिक वचन म बोल, बीजु सर्व रह्यु पण ताहारा गर्भने तो कुशल छे ? तेवारे त्रिशला बोली हे सखियो ! जो म्हारा गर्भने कुशल होय तो बीजु म्हारे शु दुःख छे ? म्हारो गर्भ जतो रह्यो एज दुःख छे एवु कहेतां मूर्छा खाइने जमीन उपर पडीगइ तेवारे सखीयोए चदनजल छंटकावीने वींजणाये वायरो करी सचेतन करीने फरी पुछ्यु जे ताहारा गर्भने शु थयु तेवारे राणी गदगदस्वरथी बोली के म्हारो गर्भ जतो रह्यो एवु सांभली सखीयो पण सर्व दुःखी थइ थकी राजाने जइ ए हकीगत कही तेथी राजा पण दुःखी थयो, नाटक वाजित्र सर्व निषेध कर्यां, सर्व शोकाकुल थइ वेगा के हवे शु करीये एवा थया के तेने काइ पण सूजे नही, तेवारे कोइक तो निमित्तियाने पूछता हवा, कोइ ज्योतिषीया जोगीने पूछता हवा अने वृद्ध स्त्रीयो, शांति पुष्टि करती हवी, कुलदेवीने उलंभा देती हवी के हे देवी आ वखत तु किहां गई, एवा एवा विलाप करे छे पण त्यां कोइ शब्दथी बोले नही, स्तब्ध थया, सर्व शोकनी राजधानी सरखां थयां आंसुथी मुख धोता थकां, निशासा खाता थकां, दुःखे पीडातां थकां, कोइने खावु पीवु पण सूजे नही एवा स्वरूपे थयां तेवारे थोडी वार पछी भगवाने जाण्यु के प्रथम वाजित्र प्रमुख वाजतां

हतां ते हमणा केम नथी वाजता ? एवु जाणी अवधिज्ञाने जोयु तेवारे सर्व व्यतिकर जाणीने वि चार्यु के जुर्ज यत ॥ किकूर्म्म कस्यवाब्रूम , मोहस्यगतिरीदशी ॥ डुरवैर्धातुरिवास्माक, दोपनिष्प त्तयेगुणा ॥१॥ ॥ आ मोहराजानी गति कहेवी छे जे में तो गुण कर्यु तो आंही उलटुं अवगुण थयु ते उपर कलिकालनुं दृष्टांत कहेछे जेम कोइक पंथी परदेशथी घणु द्रव्यउपार्जन करी पोताने घेर आवतो हतो तेवामां रस्ते चालतां कोइक अटवी आवी तेमां दव लागो दीठो ते दवमां कोइ सर्प्प दाझे छे ते सर्प्पे पहेला वाट मार्गुने कह्यु के मुजने आ दवमांथी बाहेर काहाड्य तेवारे तेणे बाहेर काहाड्यो त्यारे सर्प्पे कह्यु उभो रहे हुं तुजने भक्षण करीश ते पुरुष बोल्यो मे तुजने बलतो राख्यो, उपकार कर्यो, मरणमांथी उगार्यो तो उलटो तुं मुजने भक्षण करीश ? सर्प्पे कह्यु आज कलिकाल वर्त्ते छे आजना समयमा गुणनो दोष थाय तेमाटे हुं तुजने करडीश तेवारे पंथी बोल्यो हु घणा वर्षे घेर जाउंछुं वली माहारी पासे द्रव्य छे माटे घेर जइ महारी स्त्रीने द्रव्य आपी तेनी शीख मागी आवु छु एवो कोल आपी पोताने घेर आव्यो, स्त्रीने सर्व वात कही शीखमागीने ते पुरुष अटवीमां पाछो आव्यो, स्त्रीपण पाछलथी आवी सर्प्पने स्तुति करी कहेवा लागी जे अहो नागराजा महारा भरतारनुं भक्षण करशोतो महारी शी वले थशे, महारे शत्रु पण घणा छे तेवारे सर्प्पे कह्यु ते शत्रुनिवारण उपाय तुजने बतावीश, तेनी तुं चिता मकरजे आ औषध महारा राफडा पासे छे तेनुं मूल लइ पाषाण उपरे घसीने तेना छांटा वैरी उपर नाखजे तो बलीभस्मथाशे स्त्रीये ते औषधीनुं मूललइ, अमृत मूलीने पाषाण उपर घशीने सर्प्प उपर छांटा नाखवा तैयार थइ तेवारे सर्प्प बोल्यो मे तुजने औषधी देखाडी तो वली मुनेज बाले छे उलटो गुण उपर अवगुण करे छे तेवारे स्त्री बोलीजे गुणनो भाइ दोष छे एवु तमेज तमारा मुखथी

कहो ठे माटे हवे तमारे बोलवु नही एम कही सर्प्पउपर ठांटा नाख्या ते वली नस्म थयो
॥ इति कलिकाल दृष्टांत ॥ एम विचारी गर्नमांहे रह्यां नगवाने एक देशे टचली अंगुली ह
लावीने एक देशे हाल्या तेवारे त्रिशलाजीये जाण्यु अरे महारो तो गर्न ठतो ठे, अने मे
फोकट खोटो शोक कर्यो एवु चिंतवन करीने कहेती हवी के हे सखीयो! महारा गर्नने कुशल
ठे, एवी वात हर्षथी कहेती हवी, मे अज्ञानथी विलापात कर्यो, महारा नाग्य महोटा, हुं धन्य
कृतपुण्य, हु त्रणनुवनमा मान्य, माहारु जीववु प्रशंसनीय, मने जैनधर्म फल्यो, मे पूर्वे जे धर्म
सेव्यो हतो ते प्रगट थयो, महारु जीववु सफल, सखीयो जयजय करवा लागी, अष्टमंगल
मांमयां, कुंकुमठांट्या, राजाने वधाइ दीधी, राजापण खुशी थयो, वाजित्रवाज्यां, नाटक महो
त्सव थया, तोरण बाध्यां, वंदीजन जयजय शब्द बोल्या, बंदीखानां ठोड्यां, अनेक लोक मल्या,
मंगलिकनी वातोये करी कोलाहल थइ रह्यो, महा दान आप्यां, ए प्रमाणे आनंदथी राजानी
राजधानी हर्ष रूप थइ, सूत्रकार कहे ठे के ते गर्ननुं कुशल न जाणवाथी सिद्धार्थराजाना घरमा
मृदंग, ताल, वीणा, हस्तताल, नाटक इत्यादि लोकवल्लन एवा सर्व कार्य आनंद रहित थया हता
॥एउ॥ तेथी महावीर स्वामी माताने शोकातुर जाणीने एक देशथी हालता हवा तेवारे त्रिशला
हृदयमा हर्ष पामीने बोली ॥ एध ॥ ॥ माहारो गर्न हरण थयो नथी, यावत् गल्यो नथी,
आ महारो गर्न प्रथम हालतो न हतो ते हमणा हाले ठे, एवु कहीने हर्ष पामीने विचरवा
लागी हवे श्रमण नगवंत श्रीमहावीरस्वामीने विचार थयो जे महारा मा बाप हमणाथीज
एवा प्रकारनो मोह करे ठे तो जेवारे हुं दिक्षा लउ तेवारे तो ए घणुं दुःख पामे माटे हवे
महारे महारा माता पिता जीवे तिहां सुधी दीक्षा लेवी

गर्नने थया तेवारे नगवाने अनिग्रह लीधो अर्थात् आंही साडाठमहीनानो गर्न थयो, साडा ठमहीना वीत्या ॥ ए५ ॥ ॥ तेवार पठी त्रिशलामाताये स्नान कर्युं, घरे देवपूजा मंगल कर्यां, सर्व घरेणां आनूपण पहेर्यां, हवे गर्नप्रतिपालन करवाने अर्थे घणो ठमो आहार लीये नही, घणो उन्हो आहार लीये नही, घणो तीखो सुंठ मिरचादिकनो आहार लीये नही घणो कडवो निंबादिक, घणो कशायेलो हरडे प्रमुख, घणो खाटो ते आंबली प्रमुख, घणो मीठो ते गुडादिक, घणो चोपड्यो ते घी प्रमुख, घणो लूखो ते चणा प्रमुख, घणोसूको ते पूडला पापडी प्रमुख, घणो लीलो ते फल फूल कंदमूलादिक इत्यादिक नोजन खाय नही, जे नोजन करे ते पण विधि सहित करे, वस्त्रपण विधिये करी पहेरें, गंधादिक विधियें लीये, माला प्रमुख विधिथी पहेरें, गर्ननी रक्षानें वास्ते पोताने रोग थवा दीये नही, शोक करे नही, मोह करे नही, नय राखे नही, घणा काम करे नही, जेजे काम गर्नने हितकारी होय ते ते कामकरें, मानोपेत पथ्यकरती थकी गर्नने पोषे, जे देशमां जे चीज पाचन थती होय, जे कालमां जे चीज गुणकर्त्ता होय ते चीज वापरे, एवुं करे, कोमल शय्याये शयन करे, सुखासनने विषे वेसे, उंची नीची फरे नही, इत्यादिक गर्न यत्न करे वली वाग्नटादिक ग्रंथोमां कहेलुं ठे ते कहे ठे गर्निणी स्त्रीजो वायडुं खाय एटले वायुचीज खाय तो गर्न कुबडो थाय, आंधलो थाय, वामन थाय, पित्तकर नारी चीज खाय तो गर्न पडीजाय तथा तेनुं अंग पीलुं थाय, कफ करनारी चीज खाय तो पांडु रोग श्वेत वर्ण वालो थाय अथवा कावरचितरो थाय तथा जो गर्नवाली स्त्री लूण घणुं खाय अने आंखमां काजल घणुं घाले तो ठोकरो नेत्र रहित आंधलो थाय, घणोठमो आहार करे तो वायु घणो थाय, घणुं उनुं खाय तो ठोकरो निर्बल थाय, मैथुन सेवन करे तो गर्न

राजा संपूरण करे, हर्ष सहित सन्मान करीने पूरा करे पण एवुं ...

करे ले एवीरीते डोहोलानुं अपमान करे नही, एम त्रिशलादेवीने उपजता डोहोलानी इच्छा सर्वथा तेना मनमां रहे नही एप्रकारे मटावी आपे ले तिहां रथवाडी प्रमुख वनक्रीडा प्रमुखनां डोहोला तो सर्व सिद्धार्थराजायें पूर्या परंतु एक दिवसे त्रिशलादेवीने एवो डोहोलो उपन्यो के इंद्राणीनां कुंमल खेंची लइने हुं पहेरुं ते डोहोलो राजाथी पूरण थयो नही तेथी मनमां दुमणी थइ (अर्थात् खिन्न थइ) तेवारे राजाना पूलवाथी डोहोलो पूरो करवानी वात राणीना मुखथी सांभलीने राजा कहेवा लाग्यो के ए डोहोलो पूरण करीश पण ए वात महारा हाथमां नथी एटलामां इंद्र महाराजनुं आसन चलायमान थयुं तेवारे इंद्रे अवधिज्ञाने जोइने भगवाननी माताने डोहोलो पूरण करवा सारुं इंद्राणी प्रमुख देवांगनाना समूहने लइने क्षत्रियकुंम नगरनी समीपे एक महादुर्गम पर्वत ले तिहां इंद्रपुरनामे नगर वसावीने पोताना परिवार सहित आवी रह्यो, सिद्धार्थराजायें सांभल्युं जे इंद्र महाराज आपणा पर्वतमां रहे ले तेवारे सिद्धार्थराजाये इंद्र महाराजने कहेवरावी मोकल्युं के अमारी राणीने कुंमल जोइये लैये माटे तमारी इंद्राणीनां कुंमल आपजो ते सांभली इंद्रे कुंमल आप्यां नही तेवारे सिद्धार्थराजा सेना लइ इंद्र साथे युद्ध करवा गयो तिहां इंद्रमहाराजतो जीतवाने समर्थ ले तथापि जाणी बूजी हार खाइने भागी गया पालथी सिद्धार्थराजायें पोकार करती रुदन करती एवी इंद्राणी अप्सरानां वृंदमां वेठेली हती तेना कुंमल लूटीने त्रिशलाराणीने आपीने डोहोलो पूरण कर्यो वली बीजा पण सत्तरभेदी पूजा रचावुं, तीर्थयात्रा करुं, देवगुरुनी भक्ति करुं, सुपात्र दान आपुं इत्यादिक अनेक डोहोला त्रिशलाने उपन्या ते राजाये पूरण कर्या ॥ ॥ एवी

रीतें त्रिशला राणी मोहोला पूरीजती, सूवे, वेशे, उत्नीरहे, सघली ऋतुने विषे सेववा योग्य, गर्जने सुखनां करनार, एवां जोजन, आछादन, वस्त्र, गध, माला प्रमुख लीये, गर्जना हित कारक पथ्ये करी देशकाल योग्य आहार करती थकी, गर्जपोषण करती थकी पोताना परिजन जे दासी साहेलीउं प्रमुख तेमनी साथे विचरती थकी फरती थकी पोताना आवासमां रहे ठे ॥ ए६ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमणजगवत श्रीमहावीर स्वामी उनालानो पहेलो चैत्र महीनो तेहु वीजु पखवाडियुं एटले चैत्रशुक्, ते चैत्रशुक्नी तेरशने दिवसे नवमहीना उपर साडासात दिवस गया थकां इहां नवमहीनाने साडासातदिवस गर्जावासनो अधिकार ठे परतु उठो अधिको होय तोपण पाठ एवो वोले तो तेनी कांइ हरकत नथी गर्जमा रहेवानो काल तो चोवीशेयतीर्थंकरनो आ प्रमाणे ठे — श्रीऋषजदेवजी नवमहीनाने चारदिवस रह्या, श्रीअजितनाथजी आठ महीनाने पचीश दिवस रह्या, श्रीसंजवनाथ नवमहीनाने ठ दिवस रह्या, अजिनदन आठ महीनानें अठावीश दिवस, सुमतीनाथ नवमहीनाने ठ दिवस, पद्मप्रज नवमहीनाने ठ दिवस,सुपार्श्वनाथ नवमहीनाने ठदिवस,चंद्रप्रज नवमहिनाने आठदिवस,सुवि धिनाथ आठ महीनाने ठवीश दिवस, शीतलनाथ नवमहीनाने ठ दिवस, श्रेयांसनाथ नवम हीनाने ठ दिवस, वासुपूज्य आठमहीनाने वीशदिवस, विमलनाथ आठमहीनाने एकवीश दिवस, अनंतनाथ नव महीनाने ठ दिवस, धर्मनाथ आठमहीनाने ठवीश दिवस, शांतिनाथ नव महीनानें ठ दिवस, कुंथुनाथ नवमहीनाने पांचदिवस, अरनाथ नवमहीनाने आठदि वस, मल्लीनाथ नवमहीनाने सातदिवस, मुनिसुव्रत नवमहीनाने आठदिवस, नेमिनाथ तथा नेमनाथ नवमहीनाने आठदिवस, पार्श्वनाथ नवमहीनाने ठ दिवस, श्रीमहावीरस्वामी नवम

हीनाने साडासात दिवस ए चोवीश तीर्थंकरनी गर्भस्थिति कही ॥ हवे उंचराशिना सात ग्रहमां पहेलो चड्योग होते बते, निर्मल दशदिशाउ ते वादला अने धूल रजे करी रहित होते बते, जनमति वेलाये अंधकाररहित, अग्नि दावानल प्रमुख उपद्रव रहित दिशाउ होते बते, एवा वखतमां पक्षीयो सर्व जयकारी शब्द बोली रह्यां बे, प्रदक्षिणावतसानुकूल शीत मंदमंद सुगंध सहित एवो पवन भूमिमां चालीरह्यो बे पृथ्वीमां सर्वजातिनां धान्य नीपज्यां बे तेना योगे करी हर्षवत थया थकां सर्वदेशोना लोक क्रीडा करता थका विचरी रह्यां बे तेकालें मध्य रात्रिना समयमां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रना त्रीजा पाया साथे चड्मानो योग होते बते रोग रहित एवी त्रिशलाराणी ते रोगरहित त्रणज्ञान सहित एवा पुत्रने प्रसवती हवी ॥९७॥ ॥ इति चतुर्थ व्याख्यान समाप्त ॥ यत्र जन्मकुंमली स्थापना ॥ स्वस्तिश्री ऋद्धि वृद्धि जयोमांग ल्यान्युदयश्च संवत् बविशें एकाणुना वर्षे मासोत्तममासे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ नौमवासरे घटी ५५ पल ११ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र घटी ६० ध्रुवयोग घटी ४५ पल. ५५ तैतलकर्णे एव पंचाग शुद्धो श्री इष्ट घटी. ४५ पल, १५ इक्ष्वाकुवशे श्रीक्षत्रिय कुंमल



पुरनयरे सिद्धार्थगृहे नार्या त्रिशला क्षत्रियाणी कुक्षौपुत्ररत्नमजीजनत्, त्रण भुवन दीपक नगवत श्रीमहावीर जन्म्या तस्य जन्म कुंमली स्थापना ॥ ॥ अथ पचम व्याख्यान प्रारन ॥ जे रात्रिमां श्रीमहावीर स्वामी जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता अने देवीयो ते स्वर्गमां जातां आवतां जाणे घणाज आकुल व्याकुल थइ रह्या होय तेनी पेरे जाणवामां नही आवे एवो तेनो शब्द होतोहवो अर्थात् अव्यक्त कोलाहल शब्दमय होतो हवो एटले जेवारे घणाजनो बोले

तेवारे शब्दमय थाय पण मालम पडे नही ॥ हवे सूत्रना अर्थने अनुसारे विस्तार सहितजन्ममहोत्सव कहियें छेये ॥ जे समयमां श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो तेवारे त्रण जगतमां उद्योत थयो,वली आकाशमां देवडुन्नी वाग्यां,वली नरकना जीवोने पण क्षणमात्र आनद थयो, केम नगवतना अतिशय थकी नारकी जीवने पण मुहूर्त मात्र शाता रहे वली स्थावरजीवोनुं पण ेप छेदन नेदन नथाय तेथी तेने पण सुख उपजे,जन्मती वेलाये सर्व जमीन उल्लासमानन्नी र थइ रही,हवे श्रीनगवतनो जन्ममहोत्सव कहेछे तेमां पण प्रथम छप्पन्न दिशाकुमारीये करेलो नन्ममहोत्सव कहे छे तिहा नगवानना जन्म थयाथी छप्पन्न दिग्कुमारिकाना आसन चलायमा थया तेवारे अवधि प्रयुंजी नगवाननो जन्म थयो जाणी, रात्रे तिहां आवे, तेनां नाम कहे रुचकद्वीपनी वसनारी चार दिशानी आठ आठ, तथा वे विदिशानी चार चार अने मेरुनी विशानी तथा गजदंत गिरीनी अधो दिशानी आठ आठ, मली छप्पन्न दिग्कुमारिका ते तिहां आवे, तेमां प्रथम नोगंकरा, नोगवती, सुनोगा, नोगमालिनी, तोयधरा, विचित्रा, ला अने अनदिता, ए आठ दिग्कुमारिकाउ अधोलोकें गजदंताकार पर्वतनी हेठे वस । छे, ते आवीने नगवतने तथा नगवतनी माताने नमस्कार करीने, ईशानकोणे एक सू तिका घर बनावे, एक योजन एटले चार गाउ प्रमाण धरतीने सवृतक वायरे शुध्द करीने कांटा, कांकरा, दूर करीने सुगंधित करे ॥ तेवार पठी मेघकरा, सुमेघा, मेघवती, मेघमालिनी, सुव त्सा, वत्समित्रा, वारीपेणा अने वलाहिका, ए आठ दिग्कुमारिकाउ ऊर्ध्व लोकें नंदन वनना कूटोने विषे वसनारी छे, त्यांथी आवीने प्रनुने तथा प्रनुनी माताने नमस्कार करीने ते सू तिका घरने विषे सुगंधित पाणीये करी सहित फूलनो वरसाद वरसावीने गीत गाती रहे ॥ तेवार


चित्र २१
आकाशमा देवदुदुभी
सूतिका घर
दिग् कुमारिका
दिग् कुमारिका
भगवान्

पछी वली नंदोत्तरा, नंदा, आनंदा नंदीवर्द्धिना, विजया, वैजयंती, जयती अने अपराजिता, ए आठ दिग्कुमारिकाउ रुचकद्वीपनी पूर्वदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे ते त्यांथी आवीने भगवान् तथा भगवाननी माताने नमीने मुख देखवाने प्रभुआगल दर्पण हाथमां लइने गीत गाती उभी रहे॥तथा समाहारा,सुप्रदत्ता, सुप्रबद्धा, यशोधरा, लक्ष्मीवती, शेषवती, चित्रगुप्ता अने वसुंधरा, ए आठ दिग्कुमारिकाउ रुचकनामा तेरमा द्वीपनी दक्षिणदिशाना पर्वतने विषे वसनारीउ छे, ते त्यांथी आवी जिनने तथा जिननी माताने नमस्कार करीने सोनाना भृंगार कलश सुगंधित पाणीथी भरी हाथमां धारण करी भगवाननीमाताने स्नान करावे प्रभु आगल गीत गान नाटारंभ करे ॥ तथा इलादेवी, सुरादेवी, पृथिवी पद्मावती, एकनासा, नवमिका, भद्रा, अने सीता, ए आठ रुचक द्वीपनी पश्चिम दिशाना पर्वतने विषे रहेनारीयो छे, ते त्यांथी आवीने प्रभु तथा प्रभुनी माताने नमस्कार करी भगवाननी मातानी आगल वायरो करवाने अर्थें वीजणा हाथमां लइ उभी रहे ॥ तथा अलबुशा, मितकेशी, पूंमरीका, वारुणी, हासा, सर्वप्रभा, श्री अने ह्री, ए आठ दिग्कुमारिकाउ रुचक द्वीपनी उत्तरदिशाना पर्वतने विषे वसनारीउ छे, ते आवी भगवत तथा भगवतनी माताने नमीने भगवतनी बे बाजुये चार चार उभी थकी चामर हाथमां लइने प्रभुने ढोले ॥ तथा विचित्रा, चित्रकनका, तारा अने सौदामिनी ए चार दिग्कुमारिकाउ रुचकद्वीपनी विदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे, ते आवीने भगवत तथा भगवतनी माताने नमीने हाथमां दीवा ग्रहण करीने उभी रहे॥ तथा रूपा, रूपासिका, सुरूपा अने रूपकावती, ए चार दिग्कुमारिकाउ रुचकद्वीपनी विदिशिमा वसे छे, ते आवीने भगवत तथा भगवतनी माताने नमीने भगवतनुं चार अंगुल प्रमाण नालवर्जीने कापे पछी

धरतीमांहे खाडो खणीने माटे, तेना उपर वैडूर्य रत्ननो चोखडो चोतरो करे, तेनी उपर दर्भ वावे तेवार पठी सूतिका गृहथकी वेगलां एक पूर्वदिशे, एक दक्षिणदिशे अने एक उत्तर दिशे, ए त्रण ठेकाणे त्रण केलीना घर करे, तेमां सिंहासन रचे पठी दक्षिण दिशिना केलीगृहमध्ये भगवत तथा भगवतनी माता, ए बेहुने लावीने सिंहासन उपर बेशाडीने तेमने सुख उपजे एवु सुगंधी तेलोनु मर्दन करे, पठी पूर्वदिशिना केलीगृहमां लइ जइ सिंहासन उपर बेसाडी स्नान करावे, चंदन लेपन करे, पठी उत्तर दिशिना कदलीगृहमा सिंहासन उपर बेसाडी अरणीकाष्ठथी घसीने अग्नि जगाडी चंदनना काष्ठथी शांति पुष्टि होम करी, ते होमनी रक्षा पोटली करी भगवत तथा भगवतनी माता ए बेहुना हाथमां बांधे, बांधीने हे भगवान्! पर्वतायुर्भव एवी आशीष आपीने मणिमय गोला बे उछाले पठी तेने वजावीने भगवानने रमवासारु पल्यंक उपर बांधीने गीत गान करी भगवत तथा भगवतनी माताने जन्मस्थानकें मूकी पाठी पोत पोताने स्थानकें जाय ॥ ए एकेकी दिगुकुमारिकाने चार चार महत्तरादेवी ठे, चार हजार सामानिक देवो ठे, शोल हजार अंगरक्षक देवो ठे, सात अनीकाधिपति ठे, तथा बीजा पण घणा परिवारे परिवृतथकी एक योजनना विमानमां बेशीने प्रभुनो जन्ममहोत्सव करवाने जेम आवे, तेम महोत्सव करीने पोताने स्थानकें पाठी जाय, ए देवी भवनपतिमांहेली एक पल्योपमायु वाली जाणवी, ए देवीयोनो एज स्वभाव ठे, के तीर्थंकरनो जन्म थयाथी प्रथम एमनु आसन चलायमान थाय, तेवारे प्रभुनो पहेलो जन्ममहोत्सव ए देवीयो करे, पठी बीजा इंद्रादिक देवो करे इति ॥१॥ एम दिगुकुमारिकाउये महोत्सव कस्या पठी चोसठ इंद्रोना आसन चलायमान थाय तेवारें श्रीमहावीर भगवाननो जन्म थयो एवु अवधिज्ञाने जाणीने प्रथम सौधर्म

चित्र २२





इ्र, हरणीगमेषी देवताने बोलावी बार योजन पोहोली अने ठ योजन उची तथा एक यो
जन नाली, पाठांतरे चार योजननी नाली कहे छे ॥ उक्तंच ॥ बारसजोयण पहुला, सुघोसा
घटाइ अद्धउच्चत्त ॥ चत्तारिय नालाउ, देवा सयपंच वायंति ॥ १ ॥ एवी सुघोषा नामे घंटा
वजाववानो हुकुम आपे, तेवारे हरणी गमेषी देवता पांचसे देवोनी साथे ते घंटा वजावे ते
घंटाना शब्दथी सौधर्म देवलोकनां बत्रीश लाख विमाननी घंटा वाजे,तेवारे सर्व देवता साव
धान थइ जाय ॥यदुक्तं॥ सुणिऊण संखसद्दं, सिलंतिजवणाय वितर पडहं ॥ जोइसियं सीय
नाय, घंटेण विमाणिया देवा ॥ १ ॥ एज प्रमाणे इशानेंद्र लघु पराक्रमनामा देवता पासे
सुघोषा घंटा वजडावे, एम चोसठ इ्र सहु पोतपोताना देवोनी पासे घंटा वजडावे तेवारे
सर्व देवो इ्र महाराजनु कांइ कार्य छे एवु जाणीने इंद्रमहाराजनी पासे आवी हाजर थाय
पछी सौधर्मेंद्र पण पालकनामा देवतायें बनावेल लाख योजननु पालकनामक विमान तेना
मध्यभागमां पूर्वदिशानी साहामो सिंहासन उपर बेसे तेनी आगल इंद्रनी आठ अग्रमहिषी
आठ भद्रासन उपर बेसे अने इ्रने डाबे पासे चोराशी हजार सामानिक देवो भद्रासनो
उपर बेसे जमणे पासे त्रण पर्षदा बेसे तेमां बार हजार अभ्यंतर पर्षदाना, चौद हजार म
ध्यम पर्षदाना तथा शोल हजार बाह्य पर्षदाना मली बेतालीश हजार देवो भद्रासन उपर
बेसे तथा इ्रनी पठवाडे सात कटकना देवो भद्रासन उपर बेसे चारे दिशाये चोराशी चो
राशी हजार आतमरक्षक देवता भद्रासनो उपर बेसे एवीरीते सर्व चोसठ इ्रो पोतपोताना
विमानमां बेठा जाणी लेवा ए प्रकारे सर्व इ्र देवदेवीउ सहित नंदीश्वर द्वीपे आवे तेमां
केटलाएक देवो इंद्रनो हुकुम राखवा सारु आवे, केटलाएक देवो मित्रना प्रेर्या थका आवे,

केटला एक पोतानी देवीउना प्रेस्या थका आवे, केटलाएक तीर्थकरनी नक्ति नावे करी आवे,
केटलाएक ... जोवा सारु आवे, केटलाएक अपूर्व आश्चर्य जोवाने अर्थे आवे, ते देवो
नदा वाहन उपर चड्या थका मांहोमाहे आपसआपसमां सिंहना वाह
हस्तिना वाहन उपर चडनारा देवताने कहे छे के ताहारो हाथी दूर
सिंह जबरजस्त छे ते तारा हस्तिने मारी नाखशे एमज पाडाना वा
ा घोडाना वाहन वालाने कहे छे तथा गरुड उपर असवारी करनार
नवारी करनाराने कहे छे तथा चित्राना वाहन उपर बेठेला देवो छे ते ब
र वेसनाराने कहे छे एम वचन विवाद करता कोडाकोडी देवताउ सहु पोत
...करता चाले छे, तिहां देवसमुदाये करी आकाश यद्यपि घणुं म
गयु, वली मार्गमा कोइएक देवता मित्रने छोडी आगल चाल्या
के अरे थोडीवार उना रहो हु पण आवु छुं तेवारे ते देवता कहे
वानो महोटो लाभ कोण मूके? एवु कहीने चाल्यो जाय एवीरीते जे
ते आगल निकली जाय अने कोइएक नवला होय ते पडता थका बोले जे
घणो सांकडो छे तेवारे बीजो कोइ कहे चुप रहो ए पर्वना दिवस सांकडाज
घणुं नही बोल खबर पडशे तो इंद्र मारशे एवीरीते आकाशथी देवा उतर
ोतिषीना तारा पासें आव्या तेवारें ताराउनी किरणो लागवाथी कवि उ
जो पण देवता सर्वे निर्जर छे तोपण जरा सहित थया मस्तकमां जाणे ॥७ए॥
उग्या के शु? एवा देवताना मस्तकें ताराना विमान शोनि रह्यां छे ते जाणीये

केटलाएक पोतानी देवीउंना प्रेर्या थका आवे, केटलाएक तीर्थंकरनी नक्ति नावे करी आवे,
केटलाएक कौतुक जोवा सारु आवे, केटलाएक अपूर्व आश्चर्य जोवाने अर्थें आवे, ते देवो
पोतपोताना जूदा जूदा वाहन उपर चड्या थकां माहोमांहे आपसआपसमां सिंहना वाह
न उपर चडेला देवता हस्तिना वाहन उपर चडनारा देवताने कहे ठे के ताहारो हाथी दूर
राख, नही तो महारो सिंह जबरजस्त ठे ते तारा हस्तिने मारी नाखशे एमज पाडाना वा
हन उपर चडेला देवता घोडाना वाहन वालाने कहे ठे तथा गरुड उपर असवारी करनार
देव सर्प उपर असवारी करनाराने कहे ठे तथा चित्राना वाहन उपर बेठेला देवो ठे ते ग
गना वाहन उपर बेसनाराने कहे ठे एम वचन विवाद करता कोडाकोडी देवताउ सहु पोत
पोताना वाहननी प्रशंसा करता चाले ठे, तिहां देवसमुदाये करी आकाश यद्यपि घणुं म
होट ठे तोपण साकडुं थई गयु, वली मार्गमां कोइएक देवता मित्रने ठोडी आगल चाल्या
जा वारे तेनो मित्र कहे के अरे थोडीवार उना रहो हुं पण आवु छुं तेवारे ते देवता कहे
गवानने वांदवानो महोटो लान कोण मूके? एवु कहीने चाल्यो जाय एवीरीतें जे
अने कोइएक नबला होय ते पडता थका बोले जे
कोइ कहे चुप रहो ए पर्वना दिवस सांकडाज
मारशो एवीरीतें आकाशथी हेठ उतर
रें ताराउंनी किरणो लागवाथी कवि उ
पण जरा सहित थया मस्तकमां जाणे
कें ताराना विमान शोनि रह्यां ठे ते जाणीये



चित्र १६

रूपानो घडोज होय नहि!' वली शरीरे तारा लाग्या तेना योगे परसेवाना बिंदु सरखा दिसवा लाग्या एरीते सर्व इंद्र अने देवो नंदीश्वरद्वीपमां विमान संकोचीने रहेता हवा ॥ हवे सौधर्मेंद्र भगवानना जन्म घरने विषे आवीने, भगवान तथा भगवाननी माताने नमस्कार करीने, त्रण प्रदक्षिणा आपी भगवाननी माताने कहे के हे रत्नकुक्षिधारिणी! हे रत्नगर्भे! हे रत्नदीपक हे माता! पहेला देवलोकनो हुं इंद्र छुं ते ताहारो पुत्र चोवीशमो तीर्थंकर छे तेनो जन्ममहोत्सव करवा सारुं आव्यो छुं माटे तमे कांइ डरशो नही एम कही "नमोस्तु रत्नकुक्षिधारिके तुभ्यं" ए पाठ भणीने भगवतनी माताने अवस्वापिनी निद्रा आपीने बीजो भगवान जेवुज स्वरूप करी मातानी पासे राखीने इंद्रे पोतानां पांच रूप वैक्रिय बनाव्या तेमां एक रूपे करी बे हाथे करसंपुटमां राखी भगवानने उपाड्या अने एक रूपे भगवतनी पछवाडे रह्यो थको उपर छत्र धर्युं अने बे रूपे बे पासे चामर ढालवा लाग्यो, अने एक रूपें वज्र उछालतो थको भगवाननी आगल चाल्यो, एम वधां मली पांच रूप इंद्र महाराजे वैक्रिय कर्यां, तेमां आगलो पाछला रूपने वखाणे अने पाछलो आगला रूपने वखाणे, एम पांच रूपें करी इंद्रमहाराज, मेरुपर्वत उपर जिहां पांडुक वन छे, तिहां भगवतने लइ आवीने मेरुनी चुलिकाथी दक्षिण दिशिये अतिपांडुकमला शिलाने तले शाश्वतुं सिंहासन छे, तेनी उपर भगवानने उत्संगमां लइने इंद्रमहाराज पूर्व सन्मुख बेठा, तेवारे तिहां बार देवलोकना दश इंद्र, भवनपतिना वीश इंद्र, व्यंतरना बत्रीश इंद्र, अने चंद्रमा तथा सूर्य, ए बे ज्योतिषीना इंद्र, एम सर्व मली चोसठ इंद्र सपरिवार प्रभुनेस्नात्र करावावाने अर्थे मल्या छे, ते सर्व इंद्र तथा देव मलीने पोतपोताना सेवक देवताउने आज्ञा आपे के जाउ एक हजारने आठ

सोनाना कलश, तथा एक हजारने आठ रूपाना कलश, तथा एक हजारने आठ रत्नना कलश, तेमज चोथा सुवर्णरौप्यमय, पांचमां सुवर्ण रत्नमय, छठा रत्नरौप्यमय, सातमा सुवर्णरौप्यरत्नमय,आठमा मृत्तिकामय, ए आठ जातिना प्रत्येक एक हजारने आठ आठ कलशो, करतां आठ हजारने चोसठ कलश थाय एवा सर्व मली अभिषेक कलशो एक क्रोडने साठ लाख होय तेनो विवरो लखीये छैये नवनपतिना वीश इंद्र, व्यंतरना बत्रीश इंद्र, वैमानिकना दश इंद्र, तथा अढी द्वीपना एकसोने बत्रीश सूर्य चंद्र, धरणेंद्र भूतानेंद्रनी बार इंद्राणी, व्यंतरनी चार इंद्राणी, चमरेंद्रनी दश इंद्राणी, ज्योतिषीनी चार इंद्राणी, सौधर्म ईशान ए बेनी सोल इंद्राणी, सामानिक देवोनो एक, त्रायत्रिंशकनो एक, लोकपाल देवोना चार, अंगरक्षक देवोनो एक, पर्षदाना देवोनो एक, प्रजाना देवोनो एक, अने सात कटकना देवोनो एक, एम सर्व मली बशें ने पच्चाश अभिषेक थाय, ते एकेक अभिषेकें चोसठ हजार कलश होय, तेवारे चोसठ हजारने अढीसो गुणा करतां,एक क्रोडने साठ लाख कलश थाय ए एकेका जातिना कलश, पच्चीश योजन उंचा बार योजन पोहोला, अने एक योजननां नालवा वाला जाणवा, एवा कलश, तेमज वली भृंगार, दर्पण, रत्नकरंडीआ, थाला, पात्रिका, पुष्प चंगेरी इत्यादिक पूजाना उपकरण प्रत्येकें एक हजारने आठ प्रमाणे जाणवां तथा मगधादिक तीर्थनां जल, गंगा प्रमुख नदीउनां जल, पद्म द्रहनां जलथी कलशाभरी लावो अने चुल्लहिमवत, वृद्धधर, वैताढ्य, विजय, वक्षस्कार, देवकुरु, उत्तरकुरु, भद्रशाल अने नंदनवन प्रमुखना सर्व फल, प्रधान गंध, सर्व औषधि, पाणी प्रमुख अभिषेक वस्तु पण देवतापासेथी अणावे, तेवारे सेवक देवो सर्व क्षीरसमुद्र प्रमुखना जलें करी कलशाभरी पोताना हृदय आगल



चित्र २४
पांडुकवनमां प्रभुजीनो स्नात्रमहोत्सव देवो करेछे
च्यार वृषभना रूपे इन्द्र नवरावेछे

धरीने उन्ना रहे ते सर्व विचारे ठे जे इंद्रमहाराज आज्ञा आपे तो कलश ढोलीये ते देवता एवा शोने ठे के जाणीये संसार समुद्रने तरवाने अर्थे कुंन धस्यो होय नहीं ? एवा शोने ठे. तथा नावृक्षनें सिंचेठे किंवा पोतानां पापरूप मलनें धुवे ठे, अथवा धर्मरूप प्रासाद उपर कलश चढावे ठे, के शुं ? हवे एवा अवसरने विषे, इंद्र महाराजना मनमां एवो संशय उत्पन्न थयो के आ नानो बालक थका श्रीवीर नगवान्, एटला कलशोनी जलधाराथी महारा खोलामांथी क्यांय जता रहेशे एवडा जलान्निषेक केम सहन करी शकशे ? एवुं जाणी अन्निषेकनो आदेश न देता हवा, तेवारे नगवते अवधिना बलें करी इंद्रनुं शंकित मन जाणीने अरिहंतपणानुं अतुल्य बल जणाववा निमित्ते खोलामां बेठा थकांज बालरूपें डाबा पगने अंगुठेथी सिंहासन फरस्यो, तेवारे शिला कंपायमान थइ तेना कंपवाथी मेरुचुलिका कंपायमान थइ, तेवारे लाख योजननो मेरुकंप्यो, तेना कंपवाथी सर्व पृथ्वी कंपी, सकल धरती थरहरवा लागी, पर्वतनां शिखर त्रूटवा लागां, समुद्र जलक्षोन पाम्यो चलाचल थयो, ब्रह्मांड फाटवा सरखो शब्द थयो, सर्व देवो नय पाम्या, देवांगनाउ नयने लीधे देवोना गलामां वलगी तेवारें इंद्र क्रोधे धाम्यो थको कहे ठे, के अरे आ हर्षना समयने विषे आवो उत्पात विषाद कोणें कस्यो ठे ? वली प्रन्नुना जन्म महोत्सवमां एवां विघ्न करवा वालो आ कोणदुष्ट ठे ? एम विचारी हाथमां वज्र लइने अवधि प्रयुंजीने जोयु तो प्रन्नुनी शक्ति जाणी के एतो नगवाने पोतेज सर्व कर्युं ठे मे अज्ञानथी तीर्थंकरनुं बल नहीं जाण्युं एवुं जाणीने इंद्र पगे लागी खमावीने स्तुति करवा लागो ॥ भुजंगप्रयात ठंद ॥ सुणो वीर्य बोलुं विशालो विबुधो, नरे बार योद्धे मली एक गोधों ॥ दशे गोधले लेखवो एक घोडो, तुरंगेण बारे मली एक पाडो ॥ दशे पंच महिषो

हरि वीशड़ो वीर्य अष्टापदेको, दश लक्ष मदोन्मत्त नागो, गज पांचशें केशरी वीर्य त्यागो ॥ हरि वीशड़ो वीर्य अष्टापदेको, दश लक्ष अष्टापदे राम एको ॥ जला रामयुग्मे समो वासुदेवो, द्वितीय वासुदेवे गणी चक्रि लेवो ॥ जला लक्ष चक्री समो नाग शूरो, वली कोडि नागाधिपे इंड पूरो ॥ अनते सु इंडे मली वीर्य जेतु, टची अगुली वीरप्रजु वीर्य तेतुं ॥ १ ॥ ॥ एम इंडे वखाण्या तथा मेरुपर्वते विचार्यु जे अनंता तीर्थंकरना जन्माजिषेक म्हारा उपर थया, परतु मुजने कोणे पगे फरश्यो न हतो, ते हमणां श्रीवीरें फरश्यो, तेथी हु पण धन्य छु एम समजीने जाणे हर्षथी नाच्यो थको चितवे छे जे हु सर्व पर्वतनो राजा ते खरे खरो छुं वली पांच मेरुमां पण हु म्होटो अग्रेसर ते पण खरेखरो छुं हवे शक्रेंद्रना आदेशथी प्रथम बारमां देवलोकनो अच्युतेंद्र स्नात्र करावे ते पछी अनुक्रमे उतरता उतरता इंद्रादिको अजिषेक करे छेल्ला चंद्र सूर्य स्नात्र करे एम सर्व अढीशे अजिषेक थाय पछी ईशानेंद्र, जगवानने खोलामां लेईने बेसे अने सौधर्मेंद्र चार धवल वृषजना रूप विकूर्वीने तेना आठ शींगडाये करी खीर समुद्रना पाणीनी धाराये अजिषेक करे एवा विधिथी सर्व देवो पोतपोतानी जक्ति करी स्नात्र करावे पछी जगवतनु शरीर गधक पाये वस्त्रे लोहीने फूल, बावना चदन विलेपन, अक्षत ढोकन, दीप, फल, धूप, पाणी, नैवेद्य ए आठ प्रकारनी पूजा करीने जगवाननी आगल श्रीवत्स, मत्स्ययुग्म, दर्पण, पूरण कलश, स्वस्तिक, नंदावर्त्त, जद्रासन, सरावसपुट ए आठ मगल रूपाना अक्षते करी आलेखे, पछी आरति करे, गीतगावे नृत्य करे, वाजित्र वजावे, पछी अपूर्व एकसो आठ काव्यनी रचना करी स्तुतिरूप जावपूजा करें ते करीने पछी जगवानने जगवाननी माता पासे मूके, अवस्वापनी निद्रा दूर करें, वली जगवाननो प्रतिबिंब तिहां प्रथम थापन करेलो हतो तेपण दूर

चित्र १५

सूतिका घर

अष्टमंगल

करीने रत्नजडित कुंडल युगल तथा देवडुष्य युगल, त्रिशलामाताने आपीने सुवर्णजडित दडो जगवानने रमत करवाने अर्थें मूकीने तथा बारक्रोड सोनैयानी वृष्टि करीने वली एज पाठ केटलाएक प्रतोमां आवीरीते लखेलुं छे के उपर रत्नजडित चंडुवो बांधी, रत्न जडित बे कुंडल तथा श्रीदाम ते रत्नजडित सुवर्णनो दडो ए सर्व उसीशे मूकी बत्रीश क्रोड सोनैयानी वृष्टि करी पछी सौधर्मेंद्र सर्व देवोमां एवो हांको करीने कहे के जो जो देवो जे हुं कहुं छुं ते तमे सांजली लेजो के जे कोइ देव अथवा असुर दानव, जगवान उपर तथा जगवाननी माता उपर माठी चिंतवणा करशे तेनो मस्तक अर्जुनवृक्षनी मांजर नी पेरे आ वज्रथी छेदी नाखीश ए प्रमाणे कहीने जगवानने अंगुठाथी अमृत संचार करी सर्व इंद्र नंदीश्वरद्वीपमां आवी अठाइमहोत्सव करीने पछी पोतपोताने स्थानकें जाय तिहां पण अठाइ महोत्सव करे इति देवकृत जन्ममहोत्सव समाप्त ॥ २ ॥ हवे सिद्धार्थराजायें करेलो जन्ममहोत्सव लखे छे पुत्र जन्म्या पछी दासीये जइने राजाने वधामणी आपी राजा पोताने घेर पुत्रनो जन्म सांजलीने रोमरोम हर्षवंत थयो एक मुकुट विना बीजा सर्व आजूषण जे पोताना अंग उपर हतां ते दासीने आपी दीधां, माथुं धोवरावीने तेनुं दासीपणुं दूर कर्युं, पेढीधरपेढी सुधी खाय एटलुं धन दासीने आप्युं जे रात्रिमां श्रमणजगवंत श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो ते रात्रिमां घणा वैश्रमण देवनी आज्ञा धारक तिर्यक्जृंजक देवताउए, सिद्धार्थराजाना महेलने विषे रूपानी वृष्टि करी, सोनानी वृष्टि करी, वज्रहीरानी वृष्टी करी, वस्त्रनी वृष्टी करी, आजूषणनी वृष्टि करी, नागरवेल पत्र, फल, फूल तथा बीजजे शालि प्रमुख ते सर्वनी वृष्टि करी, माला, गंध, वास, सुगंधि चूर्ण तथा हिंगलु



चित्र २६

करीने रत्नजडित कुंमल युगल तथा देवडुष्य युगल, त्रिशलामाताने आपीने सुवर्णजडित दडो जगवानने रमत करवाने अर्थे मूकीने तथा बारक्रोड सोनैयानी वृष्टि करीने वली एज पाठ केटलिएक प्रतोमां आवीरीते लखेलुं ठे के उपर रत्नजडित चंडुउ बांधी, रत्न जडित बे कुंमल तथा श्रीदाम ते रत्नजडित सुवर्णनो दडो ए सर्व उसीशे मूकी बत्रीश क्रोड सोनैयानी वृष्टि करी पठी सौधर्मेंइ सर्व देवोमां एवो हांको करीने कहे के जोजो देवो जे हुं कहुं बुं ते तमे सांजली लेजो के जे कोइ देव अथवा असुर दानव, जगवान उपर तथा जगवानंनी माता उपर माठी चिंतवणा करशे तेनो मस्तक अर्जुनवृक्षनी मांजर नी पेरे आ वज्रथी ठेदी नाखीश ए प्रमाणे कहीने जगवानने अंगुठाथी अमृत संचार करी सर्व इंइ नंदीश्वरद्वीपमां आवी अठाइमहोत्सव करीने पठी पोतपोताने स्थानकें जाय तिहां पण अठाइ महोत्सव करे इति देवकृत जन्ममहोत्सव समाप्त ॥ २ ॥ हवे सिद्धार्थराजाये करेलो जन्ममहोत्सव लखे ठे पुत्र जन्म्या पठी दासीयें जइने राजाने वधामणी आपी राजा पोताने घेर पुत्रनो जन्म सांजलीने रोमरोम हर्षवंत थयो एक मुकुट विना बीजा सर्व आजूपण जे पोताना अंग उपर हतां ते दासीने आपी दीधां, माथुं धोवरावीने तेनुं दासीपणुं दूर कर्युं, पेढीधरपेढी सुधी खाय एटलुं धन दासीने आप्युं जे रात्रिमा श्रमणजगवंत श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो ते रात्रिमां घणा वैश्रमण देवनी आज्ञा धारक तिर्यक्जृंजक देवताउए, सिद्धार्थराजाना महेलने विषे रूपानी वृष्टि करी, सोनानी वृष्टि करी, वज्रहीरानी वृष्टी करी, वस्त्रनी वृष्टी करी, आजूषणनी वृष्टि करी, नागरवेल पत्र, फल, फूल तथा बीजजे शालि प्रमुख ते सर्वनी वृष्टि करी, माला, गंध, वास, सुगंधि चूर्ण तथा हिंगलु

प्रमुख रग अने सोनामोरोनी वृष्टि करी, ते अगणित वृष्टि करी, कोइक ठेकाणे एवु लखेलु ठे के पन्नर मास पर्यंत त्रणक्रोड रत्न वरसावे ॥ ९९ ॥ हवे देवताउंये जे घरेणानी सिद्धार्थराजाने घेर वृष्टि करी तेनां नाम कहे ठे ॥ मुकुट, कुमल, हार, अर्द्धहार, बाजु वध, वेरखा, त्रिसरा, चोसरा, ढसरा, सातसरा, आठसरा, नवसरा, अढारसरा, एकावली, कनकावली, टकावली, रत्नावली, मुकुटावली, चडावली, हीरावली, प्रवाली नक्षत्रावली श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, रसना, खूप, पट्टशिखर, चूडामणि, कटक, ककण, अगद, मुद्रानदक, दशमुद्रक, मुद्रिका, अगुलीय, कदव, पुष्पक, तिलजगक, कर्णपीठिक, चन्नक, अजर, मेखला, सुंदक, पदक, पडकडि, साकलु, सांकली, विशिष्ट, मौक्तिकजग, उतरी, दोरा, हांसडी, कर्णपाल, सकपाल, गेययक, हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, रत्नजाली, गोपुछक, उरसूका, ममेक, वर्ण, वरिका, हांस, जाजर, नेपूर, घूघरा, पागडां, वीठीआ, अगूयली, बालाजाली, फूंमणा, अकोटा, रूपालहेरिआ, राखमी, गोफणो, फूली, सियो, त्रसंटीउं, त्रोटी, वोरडां, कडी, वेढला, मुरकी, मोती, नरगंगोडा, नागफणां, तुगल, चपकली, पानडी, उजरा, वाली, मोतीसर, ताति, गांठिआ, वरघली, पोंची, गलसिरि, टीली, चांदला, आडी, नवग्रह, मुद्रडी, अगुठी, वेढ, वींटि, वाकडा, ठाप, करजालु, मादलिआं, कदोरो, खेलमादलिया, पाटीआलो कदोरो, लटकण, मवड, नागफूली, नाग, नागलां, मोर, वेसण, नथ, काटो, मयोदय, आंजण, उगनिया, हिंगलो, कुकुम, एला, जवला, चूडी, चूडली, थर, ककण, कारेली, लालि, पचमेखला, हाथसांकली, सोनानांलहेरिआ, तावीत, कडलां, सलिआलु, कलाडी, अणवट, लोलिआं, कुची, पाईल, सातग्रैवेयक, नवग्रैवेयक, ठापलवींटी, मकोडांखली, जेदेह इत्या

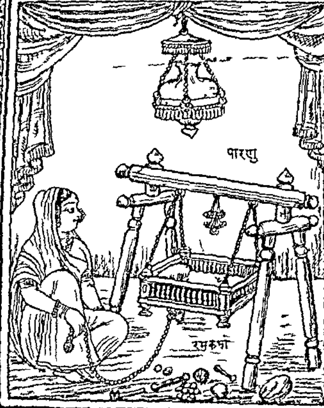
दिक अनेक जातिना आजरणोनी वृष्टि करता हवा ॥ हवे जगवतने जन्म कल्याणके चौदरा जलोके उद्योत थाय नरकमां पण उद्योत थाय तिहां पहेली नरकें सूर्यसमान तेज थाय, बीजीयें वादलाये ढांकेला सूर्यसरखो तेज थाय, त्रीजीयें चद्रमा सरखुं तेज थाय, चोथीयें वादलाये ढांकेला चद्र सरखु तेज थाय, पांचमीये ग्रह सरखु तेज थाय, बठीये नक्षत्र सरखुं तेज थाय, सातमीयें तारा समान तेज थाय एम जगवानने जन्मादिक पांच कल्याणकें नरकादि सर्व चौदराजलोक पृथ्वी आदिकमां सर्वत्र तेज थाय एवीरीते जवनपति, व्यंतर, वाणव्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक देवताये तीर्थकरनो जन्ममहोत्सव कस्या पठी प्रजातसमये सिद्धार्थराजा नगरना रखवालाने बोलावीने कहेतो हवो ॥१००॥ ॥ हे देवाणु प्रिया तमे उतावला क्षत्रियकुंमनगरमां वदिवानोने बूटा करी मूको अने तोल मापां वधारो तथा क्षत्रियकुंमनगरनी माहेली कोरे अने बाहेर कचरो कांटो काहाडी साफ करो, लीपावो, तेनी उपर सुगधजलनो बटकाव करावो, त्रिखूणामार्ग त्रणमार्ग, त्रवाटा, चोवटा तथा जिहां घणा मार्गजेलाहोय तेचच्चर चारमुखमार्ग, राजमार्ग ए सर्व रस्ताने पवित्र करावो, कचरा कांटा काहाडीने साफकरावीने रस्ताने बरोबर करो, तथा जेनी उपर वेशीने सुखेथी सर्व लोको महोत्सव जोइ शके एवा महोटा मांचाउपरमांचा वंधावो, अनेक प्रकारना रगनी ध्वजा पताकाउ करावी स्थानके स्थानके वंधावीने नगर शोजायमान करो, शहेरना मार्गोने लीपावो, धोवरावो, वली गोशीर्षचदन, रक्तचदन, पांचआंगुलीआ गपा देवरावो, घरमां चदनना कलश थापन करावो,चदनकलशघटित तोरणोनें घरोना वारणे वंधावो, लांबी महोटी अने गोल तथा लटकति एवी पुष्पमालाउनो समूह लटकावो, पांचवर्णा फूलोना ढगला करावो, कृष्णागर, जलोकुंदरु, शिलारस, धूकतो थको घमघमायमान

मनोहरगंध सुगंधगंधित अगरबत्ती उखेवो, मनोहर गंध करो, वली नाटक करवा वाला जे पोतें नाटक करे ते, रशीउपर नाचे ते, मल्लयुद्धकरनारा, मुष्टीयोथी युद्धकरनारा, भाण्ड भवा इया, कथाना करवावाला, रास बोलवावाला, उंट अने हाथी उपरथी कूदी जाय तेने प्लवक कहे छे ते, राजानी वंशावलीनां बोलनारा, पाठक कवित कहेनारा, कोटवाला, शुभाशुभ निमि त्तना कहेवा वाला, वांसनी उपर नाचनारा, चित्रामणना पाटीया देखवावाला जेने मंख कहे छे ते, तथा चामडानी मसकने वायराथी भरीनें वजावे तेने तूणयल्ला कहे छे ते, तुंबिनी वीण वजावनारा, हाथताल देइने नाचनारा, अनेकतालना वजावनारा,ए सर्वेने बोलावीने ठेकाणे ठेकाणे बेसाडी आपो ए सहु पोतपोतानी कलाउ लोकोने देखाडे ए काम तमे करो तथा बीजापासे करावो वली हजारो गमे धूसरा एटले विवाहना मण्डपमां घाले छे ते तथा हजारो गमे मुसल उंचा करावीने म्हारी आज्ञा मने पाछी सोंपो ॥ १०१ ॥ ॥ तेवारे ते कौटुंबिक पुरुष घणाखुशी थइने राजाना हुकुम प्रमाणे काम करीने राजानी आज्ञा राजाने पाछी सोंपी ॥ १०२ ॥ तेवार पछी सिद्धार्थराजा मल्लयुद्धनी शालामां आवी, युद्ध करी, तेल मसलावी, स्नानकरीने सर्व वस्त्र घरेणां माला प्रमुख पहेरीनें म्होटा तेजसहित, मोहोटाबलसहित, सर्व वाजा वाजतां थकां, म्होटी ऋद्धि, म्होटीकांति, म्होटी सेना, घणा वाहन, घणो समुदाय, म्होटां म्होटा वाजित्र सर्व भेलां समकाले साथे वजाड्यां, तेथकी शंख, पठह ढोल, भेरी, जल्लर, खरमुखी ते कालही, रणसिंगो कोइ वाजानु नाम छे मांदलनी जात, मृदंग, देववाजु तेने डुडुभि कहीये, ए नव जातना वाजाना शब्द, प्रतिशब्द तेणे करी सिद्धार्थराजा हर्ष करतो रहे, वली क्षत्रियकुण्ड गामनगरमा उमुक्क एटले दश दिवस सुधी दाण कोइनी पासेथी लेवु नही

तथा उक्कर एटले गायो ढोर प्रमुखनु जे कर लागे ते दशदिवस पर्यंत न लेवो तथा उक्किकं एटले खेत्र प्रमुखथी जे कर लागे ते दशदिवस सुधी नही लेवो तथा अदिज्जं एटले दशदिवस सुधी कोइ हाटमां मूल्यलइने वस्तु वेचे नही जेने जोइति होय ते राजानी पासेथी मफत लइ जाय तेना पैसा राजाना नंडारमांथी देवाय तथा अमिज्जं एटले दशदिवस सुधी कोइ चीज मापवी नही तथा अन्नडप्पवेसे एटले दशदिवस लगे कोइ राजानो माणस जोरकरीने जोरावरीथी कोइना घरमां प्रवेश करी कोइ चीज वस्तु लीये नही तथा अदम एटले कोइये अपराध कर्यो होय तेनी पासेथी गुनाह प्रमाणे दम लेवो जोइये ते दंम दशदिवस सुधी लेवो नही तथा कुदम एटले कोइकें अपराध अल्प कर्यो होय अने दंम वधारे लेवो तेने कुदम कहीयें ते कुदंम दशदिवस पर्यंत लेवो नही तथा अधरिम एटले दश दिवस सुधी कोइ उधारे लइने रुण करे नही एटला वाना सिद्धार्थराजाये मूक्या बत्रीस कर्यां वली अत्यंत स्वरूपवान एवी वेश्याउंना नाटक थाते तथा अनेक ताल वाजा सहित नाटक थाते पठी उत्कृष्ट मृदग वजाववा सारु सज्जकर्या ठे मृदंग जिहां ग्रंथाग्रथ ॥ ५०० ॥ ॥ कुंमलाणी नथी एवी विस्तार सहित फूल मालाउंनो समूह ठे जिहां, हर्षवान थया थका ते देशना सर्वलोक क्रीडा करे ठे. ए प्रमाणे दशदिवस पर्यंत स्थितिपतिका एटले पोताना कुल परपरानी मर्यादा पुत्रजन्मनी ते सिद्धार्थ राजा क्षत्रियकुम्म नगरमां करे ॥ १०२ ॥ ॥ तेवार पठी सिद्धार्थराजा दशदिवसनी कुल मर्यादामां जिनपूजामां सो सोनैया लागे तथा हजार सोनैया लागे तथा लक्ष सोनैया लागे एवु जे पूजन तेना निमित्तें द्रव्य राखे एटले पठी पूजा करावीशु एवो अनिप्राय करीने पूर्वोक्त द्रव्य काहाडे वली आठम, चौदशनां दिवसें पोसह करनारा श्रावकोनी नक्ति करवा

निमित्तें द्रव्य राखे ते एवा अभिप्रायथीके जाणे पोसह करावावालाने पारणे साहामी वात्स
ल्यना काममां आवशे वली बीजु पण देवायोग्य द्रव्य धर्मने अर्थे कल्पे एवु द्रव्य पोते
सिद्धार्थराजा देतो थको, बीजाउनी पासेथी देवरावतो थको विचरे ॥ वली पूर्वोक्त रीते सो,
हजार अने लाख सोनैया प्रमाणे वधामणाने अर्थे नेट लोको लइ आवे ले ते लेतो थको,
बीजा कने लेवरावतो थको एवीरीते दशदिवस सुधी करतो थको कुलमर्यादा करे ॥ १०४ ॥
तेवार पठी श्रमण जगवान श्रीमहावीरस्वामीना माता पिता जगवानना जन्मदिवसथी पठी
आगल पहेलादिवसे तो कुलस्थिति करे अने त्रीजे दिवसे चन्द्रमा तथा सूर्यना दर्शन करावे
हमणा आजना कालमां तो त्रीजे दिवसे काच देखाडे ले परतु मूल विधि आवो ले जे गृह
स्थगुरु आवीने श्रीअरिहतनी प्रतिमा आगल स्फाटिक अथवा रूपानी चन्द्रमूर्त्ति करावे ते
प्रतिष्ठावी पूजीने मांझे पठी बालक तथा बालकनी माताने स्नान करावी नला वस्त्र पहेरावी
चन्द्रोदयनी वेलाये पुत्रने हाथमां लइने माता सहित पुत्रने बेशाडी प्रत्यक्ष चन्द्रमा साहामां
आणी आवीरीते मत्रजणे ते लखे ले ॥ ॐअर्हंचन्द्रोसि निशाकरोसि नक्षत्रपतिरसि सुधाकरोसि
औषधिगर्जोसि अस्यकुलस्यऋद्धिवृद्धि कुरुकुरु ॥ एवा मत्रनो गुरु उच्चार करे,माता पुत्रने चन्द्रमा
देखाडी नमाडे वली पुत्रने लइ गुरुने पगें लगाडे, गुरु आशिर्वाद आपे ते आवीरीते —श्लोक ॥
सर्वौषधिमिश्रमरीचिराजी, सर्वापदांसंहरणे प्रवीण ॥ करोतु वृद्धिसकलेपिवसे, युष्माकमिडु
सतत प्रसन्न. ॥१॥ ॥ तेवार पठी चन्द्रमानी स्थापेली मूर्त्तिने विसर्जन करे कदाचित् कालि
चौदस, अमावास्या होय अथवा वादला होय तेथी चन्द्रमा न देखाय तो तेज रात्रिये तेज
चन्द्रमानी मूर्त्ति आगल तो जरुर करे एवीरीतें तेज दिवसनी सांजे जे विधि होय ते अवश्य

चित्र २७





... पुत्र सहित माताने वेसाडी गृहस्थ गुरु आवीरीते मंत्र बोले ॥ ॐअर्हंसूर्योसि, दिनकरोसि, तमोपहोसि, सहस्त्रकिरणोसि, जगच्चक्षुरसि, प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टिं पुष्टिं मोदं कुरु कुरु ॥ ए सूर्यमंत्रउच्चारीने माता सहित पुत्रने सूर्यनुं दर्शन करावे पछी माता पुत्रने लइ गुरुने पगे लगाडे तेवारे गुरु आशीर्वाद आपे ते लखीये छेये ॥ श्लोक ॥ सर्वसुरासुरवद्य , कारयिता सर्वधर्मकार्याणां ॥ भूयास्त्रिग चक्षु , मंगल दस्ते सपुत्राय ॥ १ ॥ ॥ पछी थापन करेली सूर्यमूर्त्तिने विसर्जन करे वली छठे दिवसें धर्म जागरण करे, अगीआरमें दिवसें अशुचिकर्मनिवर्त्तन करे, माटीना जुना भाजन काहाडी नाखे, नवा वस्त्र पहेरे ॥ ॥ हवे बारमो दिवस आव्या थकां अशन ते अन्न विगय प्रमुख तथा पान ते मीठा पाणी प्रमुख तथा खादिम ते खारक टोपरा प्रमुख तथा स्वादिम ते लविंग पान प्रमुख ए चार प्रकारनो आहार रधावे रधावीने सिद्धार्थराजा पोताना मित्रोने,न्यातिने एटले पोतानी जातिवालाने, पोताना पुत्रपौत्रादिकोने, काकाने,ससरा प्रमुखने,पोताना दास दासीयोने, वली सिद्धार्थराजानाज गोत्रवालाउने, वली क्षत्रियोने तथा गामना क्षत्रियोने, एवा बीजा पण महोटा लोकोने निमंत्रण करे अर्थात् नोतरा आपे पछी भगवानने तथा त्रिशलाजीने स्नान करावे, घरे देवपूजा करावीने पछी विघ्ननिवारवाने अर्थे कौतुकथी काजलना टीलांटवकां करे, मंगलिकने अर्थे सरसव, दही, दर्भ, चावलनुं तिलक मस्तकें धारण करे, नवा वस्त्र पहेरे, वली जेमां भार अल्प अने मूल्य घणुं एवा घणा मूलनां घरेणा पहेरे, पहेरीने भोजननी वेलायें भोजन मंडपमां सुखे वेसे. वली पूर्वे नोतरेला मित्रादिकोने

अशन, पान, खादिम, स्वादिमादिक चार प्रकारना आहार जमाडे हवे तेमां केटलाएक आहार स्वाद करवा योग्य तेना स्वादकरतां थकां अशनादिक मोदक प्रमुख सर्व चीज खवाइ जाय तथा केटलीएक सेलडीप्रमुख चीज थोडी खाय अने घणी नाखी आपे वली केटलीएक खजुरप्रमुख चीज घणी खाय अने थोडी नाखीदीये एवीरीते चारे प्रकारनो आहार साधर्मिकादिकोने सिद्धार्थराजा जमाडता थकाविचरे ॥ १०५ ॥ ॥ हवे ग्रंथांतरथी भोजननो विधि लखीये छेये ॥ केलिपत्रे छायेला मांडवा नीचे मध्यान्ह वेलाये कुंकुमछटित मंडपमां सर्वने बेसाड्या, मखमलना पांतिया नाख्यां, ते उपर सर्व पवित्रथइने आवीबेठा, तेना पेट पाताले पेठा, आगल स्वर्णरत्नजडित बाजोट मेल्या, तिण उपर सोनाना थाल,जमवावाला थया उजमाल ॥ कनेमेली कटोरीयां, निर्मल जलसे धोवे, माहे मुखडा जोवे, ते कहेवा छे तोके ? फांदाला, फुंदाला, डदाला, सुंहाला, आंखे अणिआला, मुछाला, केइ जमाइ केइ साला, इसी पांति बेठी, तिहां पीरसणवाली पेठी, ते घणी रूपाली, नला वस्त्र पहेर्यां, शोले सणगार कर्या, हाथमां महोटी झारी, युवानोकी निजरो ठारी ॥ हाथधोवाया, मनमे काम ठुराया, पहेलां ते फल पिरसे, देख्यासे मन विकसे ॥ ते कहेवा फल पिरस्यां तेनां नाम कहे छे अखोड मिसरिकीपात, चोपडी चारोली, केला रायण लीलांनालियेर बदाम पिस्ता द्राख आखा आंबा तथा स्याग दाल पक्क, सेवा सेतुत दाडिम नारगी मीठांलींबु, पाकांकिरणां खारक खजुर सेव जांबु शुदा पेमदीबोर लीलीद्राख छोलेली सेलडी कागटा जामफल रामफल सीताफल बीजोरां, इत्यादिक उदार मनथी पिरस्या, ढेरकीया खातां हीया हर्ष्या ॥ किस्याक खावे के पिरसवावालीतेना मुख सामा जोइ मोहमां पड्या खायां जावे, पण पेटफाटे ते नजर न आवे ॥

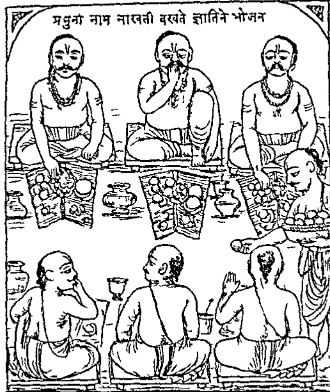
मालवानी जमीनमां नीपज्या घऊं हाथथी मसल्या धोइने दल्या झला वस्त्रथी मेदो गण्यो तेना पिरस्या खाजां, दांतोमां करे अवाजा ॥ हवे कहुं पकवान, खावा थया सावधान ॥ पिरसण वाली सुंहाली, मानकरे रढीयाली, पहेली पिरसे लाडू, जिमे वेंग जाणे साडू, सिंहकेसरीया मेल्या, मसाला अधिका भेल्या ॥ कंसार मगदारा मोदक, किटिया जसरीया दालिया, इस्यामोदक खावे, बूढो मरद हो जावे, अछीपिरसी मुरकी, खावा जीभडी फुरकी, जलेबी मुखमा घाले, रसना गटका चाले, पेडापेटमां पडिया, मुखमेलता गुडिया, मखाणा मुखमा घाले वडबड जाणे बोले, घेवर मुखमां धरिया, खातां घृतवहु झरिया, जीणातारनी फीणी, आणीसेवां जीणी, दहीथरा दोंग खावे, मनमां हसता जावे, सांकली तिलनी खाधी, सिंघोडा सेवसु साधि, आवे साकर सीरो, भोकरा मन थयो धीरो, लापसी आठी आवे, मेवाखीचडी खावे ॥ इम अनेक पकवान, जिमे वेग राजान ॥ देवसुगंधीसाल, खावा थया उजमाल ॥ मुगदालने भेली, घीसुगंधी ठेली ॥ खीचडी पतली पोली, थाये इकवीशनी एककोली ॥ सालणा मुखमा भावे, जीभवरफरी थावे ॥ मूगीया केर रायभोभी, वालोल, करमदा काचा, केलां, चोरानी फली, मुगनी फली, नीलाचणा, मिरच, पीपल, सांगरी, काचरी, बावल्या, करेलां, भींभी, तरोइ, वेगण, मोगरी काकडी तवडा तीभसी इस्या जातना साग, जीरा मिरच समभाग ॥ गरम मसाला पडिया, घृतमांहे पहेला ठमकिया ॥ हिंग वघार सुगंधा, खातां तज्या सव धंधा ॥ जीभवरफरी होवे, कलीकंदने जोवे ॥ भाजीविणारीमेथीरीचदलेवारी पालखारी सुआरी थेगरी, खातां जीभ शोभाधरी ॥ मिसरीमां भेल्यो दूध, पीतां नरही शुध ॥ भयोपेट बोल्या सहु एम, हवे खावानो नेम ॥ दहीदेखीने मुखडे चाल्यो पाणी, जीराराव शुध तिहां आणी ॥ करबो खाधो

बीजां आण्यां पकवान, जमता वाधे मुखनु वान ॥ कुण कुण जाति, नव नवि भांति, सखरासांटा, सा तेमाहे नही खाटां ॥ वरफीनी जाति, फीणीनी जाति, मरकीनी जाति, ढुधपिम्नीनी जाति, करीयामोतिचूरनी जाति, मसूरनी जाति, जलेबीनीजाति, सक्करपारानीजाति, गोलपापडीनी जाति, हवे आव्या वडां गुदवडा, फीणी सखरां सोट ॥ तेमाहे नही खोट ॥ दहीवडां, फेण वडा, मथीयावडां, कांजीयावडा, सालियावडा ॥ पातली सेव, पीरश्यानी रूडी टेव, ताजो गुद, तल्यो गुद ॥ कुम्लाकृत जलेबी, शीरो, लापसी ॥ जिण दीठे दाढा गले, स्वर्गदुति देव देवी टलवले ॥ वली मीठो मगद, सारो माल नगद ॥ खांमनु चूरमुं, साकरनु चूरमु, पछी पी रशी सालि, ते जमीये विशाल ॥ ते कुण कुण भेद, सांभलता उपजे उमेद ॥ सुगधसालि, सुवर्ण सालि, धवली सालि, राती सालि, नीली सालि, पीली सालि, मद्दा सालि, शुद्ध सालि, कद कोमुदि सालि मालवी सालि, कलम सालि, कुकणी सालि, तिलवासी सालि, जीरा सालि, वली साधु सालि, रायभोग सालि, कुवारी सालि, चढायण सालि, निकी सालि, गुरुडा सालि, नख थकी चोखा अखम्ड चोखा ने वली खांम्या, सबला गांम्या, हलवा हाथथी सोह्या, उंचा कूर वीण्या, उत्तम स्त्रीये उरुया, सुजाण स्त्रीये उसाया, एवा आणीयाला सुगधि फरहरा, कावली च पीरश्या ॥ वली उपर दाल पीरशी, तेना नाम कहे छे, मम्रोरनी दाल, मुगनी दाल, वर्णे पीली, णानी दाल, गुजराती तुयरनी दाल, अडदनी दाल, जालरनी दाल, मठनी दाल, एवा गायनां परिणामे सीली, वली परिघलघृत पीरश्या ते कहेवा छे ? तो के आजना ताव्यां, पोली पीरसी, ते घी, भेशनां घी, पीला वरणना घी, नाकें पीयां घी, मजीठवर्णा घी, हवे एकवीश पोलीनो कहेवी छे ? तो के आठी पोली, घीमांहे जवोली, फूंकनी मारी फलसी जाय,

एक कोळीउं थाय ॥ ढप्पो ॥ मुरकी मोतीचूर, सेवफिणी साकर सरखी ॥ खाजां खुरमा खा ,
प्रिया तिहां पीरसे हरखी ॥ केळा तणी कातळी, अंब्ररस मूके घोळी ॥ घळ घळ घीनी नाळ,
पीरसे पातळी पोळी ॥ साळ दाळ बहुसालणां, गोरस करवे चित्त ठ्युं ॥ रूपन्न कहे ए जमण
कह्युं, बाकी सघळुं एजो वह्यु ॥ १ ॥ चोळा मरटी तेळ, साक विण नित्ये सारे ॥ पीरसे जूंनी
नार, पेट कहो केणी परे ठारे ॥ उपर ढीली घेंश, ठास पण पीरसे पाणी ॥ सिंधव नही ल
गार, किशु कहे कर्मनी कांणी ॥ आहार सेर अढी तणो, सेर सवा दोहिलो लहे ॥ कवी रूपन्न
कहे एजो वह्युं, जोजन एहने कुण कहे ॥ हवे शाक पीरस्यां तेनां नाम कहे ठे, नीली मो
थीनां शाक, टिंडसीनां शाक, चीभडांना शाक, कोहेळा, कंकोडां, करमदां, कालिंगडां, केळां,
कारेलां, आरियां, तुरियां, खडबुजां, वेंगण, मोघरी, नीबु, अंबोळीया, वालोळ, चोळानी
फळी, सरगवानी शिंग, सांगरी, काचरी, आमलां, केरनां फूल, केरडां, लीलां मरचां, लीली
पीपर, लीली रायण, खाटां, खारां, मोळां, गळ्यां, तळ्यां, वघार्यां, फुगार्यां, ठमकार्यां, वली
पीरसी जाजी, ते उपरे सहुको राजी ॥ ते कोण कोण जातनी ते कहे ठे सरसवनी जा
जी, सूवानी जाजी, मूळानी जाजी, चणानी जाजी, चीलनी जाजी, मेथीनी जाजी, थेगीनी
जाजी, अफीणनी जाजी, तांदूलनी जाजी, हवे वडीनां शाक कर्या तेना नाम कहे ठे दाळ
वडी मवकावडी चूथरावडी घासवडी घारवडी दहीवडी घोळवडी पापडवडी मरियाळावडी,
घणा जोलेजीना, घणा वघार मसालाना चमत्कार सवडका देतां अंगुली चाटता मनमां
विशेषे जावतां, हवे रायतानां नाम कहे ठे. खारेकना रायतां, टोपरानां रायतां, द्राखना रा
यतां, वदाम प्रमुख मेवानां रायतां, हवे वडां कइ कइ जातना पीरश्यां? ते कहे ठे. मरचा

ना वडा, तल्या वडां, कोरां वडां, काजीघोलवडां, घोल वडां, मगनी दालनां वडां, चोलानी दालना वडां, अडदनां वडा, दहीवडां, गूंदवडां, फेणवडां, मेथीया वडां, सालीयावडां, घणे जोले नीनां, घणे तेलें सीनां, मरचाना घणा चमत्कार, अत्यंत घणा सुकुमार, हाथे लीधा उछले, मुखे घाल्यां तरत गले, घणु शु कहिये ए वडां एवा तो छे, के जेने खावाने अर्थे घणा देव देवि पण टलवले छे हवे पलेव पीरसी, ते कहेवी छे? चोखानी पलेव, जुहारनी पलेव, बाजरीनी पलेव, गहुनी पलेव, हलदीया पलेव, पींपलीयां पलेव, सुंठीयां पलेव, सवडकीया पलेव, हवे नोजन जमता वचमां पीवानां पाणी आवे छे, ते कहे छे साकरना पाणी, द्राखनां पाणी, खांम्नां पाणी, गंगाना पाणी, पालर पाणी कपूरे वास्यां पाणी, एलचीये वास्या पाणी, टाढां सीतल पाणी, हीमनां पाणी हवे दही अने दहीनां घोल आवे, ते कहेवां छे? ते कहे छे गायनां दही, नेशनां दही, काठा जाम्यां दही, मधुरां, सखरां, सजीरालां, सलवणां जामां, घोल, तेनां नखा कचोल, चावलशु जिमतां, थया रगरोल ॥ वली सखरां करवा नरी आणीने पीरस्यां, ते करवामांहे घणी राइ, जमतां ढील न कांइ, उपर जीरा लुणनो प्रतिवास, करणहारी पण खास ॥ एम नोजन कराव्या पछी एकांते तेहज आशने रह्या थकां ने चलु कराव्या ते चलु कराववानां पाणी केवां आव्यां, ते कहे छे. केवडानी वासनां पाणी, काथानां पाणी, कपूरें वास्यां पाणी, चदने वास्यां पाणी, पाम्ले वास्यां पाणी, सुगंधी पाणी, गंगोदकना पाणी, चदने निवास्यां पाणी, एलचीये निवास्यां पाणी, इत्यादिक पाणीये करी चलु कर्या पछी तृणशला प्रमुखथी मुख सोधी दांतोनी शुद्धि करीने परम सोच्य थया हवे मुखवास दीधा ते कहे छे, वांकडी सोपारी, चीकणी सोपारी, ते पण केशर वरणी, कपूरे वा

चित्र १९





[illegible] पान, [illegible] चूना सहित दीधां, वली घणा आदर सन्मान, घणां गीत गान, घणां तानने मान, हवे कइ कइ जातिनां कइ कइ नांतिनां वस्त्रोनी पहेरामणी करी, ते कहे छे देवडुष्य वस्त्र, रत्नकंबलवस्त्र, पांनडी, खीरोदक, अटाणां सेलां, अधोतर, मूलकसबी, जरबाप, मख मल, चिणीया, बुलबुल, चसम, पाट्टु, टसरिया, शणीया, नेरव, नारीकुंजर, पट्टहीर, पट सीउली, पंचसइयां फूलपगर, फूलकारी, दोरीयां, जादर, चादर, नेत्रपट्ट, धोतीपट्ट, राज पट्ट, गजवडी, सुवर्णवडी, हंसवडी, कालवडी, सुअच्छिआ, पटकूल, पट्टहीरसाडी, घाटडी, चीर, कुंमखाव अतलशलादि खाराचीनी, पापडीआंचीनी, सयीआ गुआगरी, आसणिआ आगराइ, सणलीपट्टणी,मशरु तास्ता, शालु, दोपट्टा, त्रपट्टा, वास्ता, टुकडी, मुगटां, गयल नारी कुंजर, शाडला, रत्नकंबल, चुनडी, घाटफी, इत्यादिक पांचरगी वाघा पहेराव्या, वली काशमीरी केशरना छांटणां कीधां, नलां नलां सुगंध बावना चंदननां विलेपन कीधां, अरगजा, चूआ, चपेल, फूलेल, केवडो, मोगरो, जाइ, जुइ, कुंद, मचकुंद, चपो, मरुओ, दमणो, केतकी अने मालती प्रमुख फूलोनी मालाउ पहेरावी पछी वली मुकुट, तिलक, बाजुबंध, हार, चीर, बेर खा, रत्नावली, मुक्तावली, चशवली, हीरावली, प्रवालावली, सूर्यावली, ग्रहावली, नक्षत्रा वली, श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, पट्टशीखर, चूडामणि, कुंमल, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रनंदक, दशमुद्रक, चक्रक, अजर, मेखला, मुदक, पदक, सांकलुं, सांकली, चिचिष्ट, नंगउत्तरी, हारा हांशडी, कपाली, ग्रैवेयक हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, वर्णसरीका, जांजर, नेउर, घुघरा, पीगडां, वीछीया, अंगुवडी, वालाजाल झुमणां, अकोटा,रूपाला, हरीयाराखडी, गो

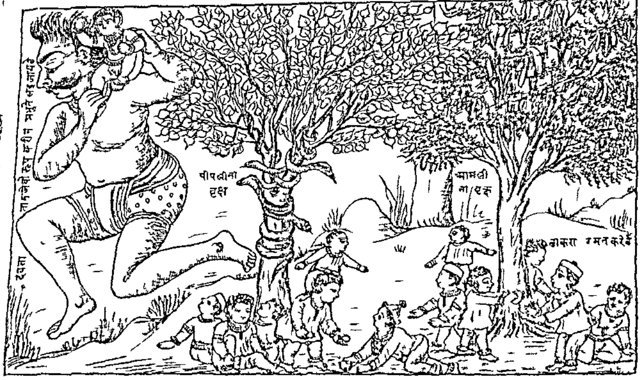
फणा, उलसीयो, त्रिसयीयो, त्रोटी, वोरडांकरी, वेढला, मुंरकी, मोतीदर, गंगोडा, वुंगल, चपकली, पानडी, होलेरताली, मोतीसर, सरलीया, टीलां, टीली, चांदला, आड, नवग्रह, मुड्डी, अगुठी, वीटी, वांकरु, गलसरी, बापकरजाली, हेमजाली, मादलीयां, खेलमादलीया, कंदोरा, पाटीआला कदोरा, लटकणमोड, नागफूली, नागला, मोरवेसण, नथवाली, सिंदूर, कुंकुमरीली, जवलाचूडी, घरचूडी, चूमा, काकणी, कारेली, लाल, पोची, मेखला, हाथलांकली, सोना लहेरीयां, तावीत, कमलां, कमली, वांकडी, वेलीया, लोलीया, इत्यादिक आभरण पहेराव्या ए रीते मित्र, ज्ञाति पोताना क्षत्रियो तथा कुटुव, सगा सबधीनी भक्ति विविध प्रकारनी कीधी इति भोजन तथा आभरण विधि हवे बालकनु श्रीवर्द्धमान एवु नाम दीधु, ते वखाणे छे हवे ते मित्र, न्याती, गोत्री, स्वजन, पितरीया प्रमुखने सत्कार, सन्मान आपीने त्रिशलादेवी तथा सिद्धार्थराजा एवु कहेवा लाग्या ॥१०६॥ ॥ जे हे देवानुप्रियो ! अमारे घेर ए पुत्र गर्भने विषे आवी उपन्या पछी अमे रूपेकरी, अणघडे सोने करी, धान्यें करी, राज्ये करी, वाहने करी, मनुष्यना सत्कारे करी, अत्यत घणा वृद्धि पाम्या तथा सामत जे सीमाडाना राजा अने चदप्रद्योतनादिक राजा, ते पण अमारे वश थया. तथा अमारी चाकरी करवा आव्या ॥१०७॥ तेथी अमारा मनमां एवु चितव्यु हतु के जेवारे अमारे घरे बालकनो जन्म थाशे तेवारे ए बालकनुं नाम रूप गुणे करी प्रधान निष्पन्न श्रीवर्द्धमान एवो आपीशु, ते अमारा मनोरथ सिद्ध थया, अमारी इछा पूरण थइ माटें अमे ए कुमारनुं वर्द्धमान एवु नाम आपीये छैये तमे पण ए कुमारने श्रीवर्द्धमान कुमार एवा नामें बोलावजो एरीते सबधी सर्वने शिरपाव पहेरामणी करीने सर्व सज्जननी साखें बालकनु नाम स्थापन

कर्युं ॥ १०८ ॥ पछी ते सर्वने विदाय कर्या ॥ इतिश्री वर्द्धमान नामस्थापन सं० ॥ ...
र्द्धमान भगवान् कहेवा छे? तोके सात हाथनुं महोटुं शरीर छे जेनुं, वली समचोरस संस्थान छे, सुवर्णवर्ण देहनी निर्मल कांति छे, वज्र रूषभनाराच संघयण छे, एवा भगवान् छे हवे श्रीवर्द्धमान स्वामीनां सर्वमली त्रण नाम थयां ते कहे छे एकतो माता पितायें आपेलुं नाम श्रीवर्द्धमान भगवान् छे अने बीजुं रागद्वेष रहित तपस्यामां खेद सहन करवाथी श्रमण एवु नाम जाणवु अने त्रीजुं जे अकस्मात् उपजे ते भय अने सिंहादिकोना उपद्रवथी जे भय उत्पन्न थाय ते भैरव कहीये ए भय भैरवोथी चलायमान थया नही निर्भय पणे रह्या थका भूख तृषा प्रमुख परिसहे करीने क्षोभ पाम्या नहि एम परिसह उपसर्ग सहन कर्या तथा सर्वतोभद्र प्रमुख प्रतिमाना पालवा वाला, चारज्ञान सहित, धैर्यवान, अरति रति परिसहने वेठीने रागद्वेष रहित पणे सुख दुःख सहन कर्यां तेथी द्रव्यवीर्य पाम्या थका मोक्षजवानो निश्चय कर्यो छे तोपण चारित्र पालवामां तत्पर रह्या एवा वीरपणांनां गुणोये करी देवताउये श्रीमहावीरस्वामी एवु नाम दीधु तथा भगवान् आमल क्रीडा करतीवेलाये देवता क्षोभ पमाडवा आव्यो तेनाथी बीक पाम्या नही ते कथा आगल कहेवाशे तेवारे पण देवताये महावीर एवु नाम दीधुं ॥ १०९ ॥ ॥ हवे भगवान् श्रीमहावीरस्वामी दिवसें दिवसे चन्द्रकलानी पेरे वधता थकां, घणा दासदासीयो साथे परवर्या थकां, अत्यंतरूपवान, मस्तके भमरानां सरखा काला केश छे जेना, कमल सरखा नेत्र छे, परवाला समान बिंबोष्ट छे, धोला दांत छे, कमल गर्भ सरखो गौर वर्ण छे, कमलना गंध सरखो श्वासोश्वास छे, सर्व देवताउना रूपथी पण घणुंज रूपछे जेनुं एटले सर्व देवोनुं रूप जो एकठुं करीये तो भगवानना

फणा, भलसीयो, त्रिसरीयो, त्रोटी, बोरडांकरी, वेढला, मुरकी, मोतीहर, गंगोडा, तुगल, च
पकली, पानडी, होलेरताली, मोतीसर, सरलीया, टीलां, टीली, चांदला, आड, नवग्रह, मु
दडी, अगुठी, वींटी, वांकरु, गलसरी, बापकरजाली, हेमजाली, मादलीयां, खेलमादलीयां,
कंदोरा, पाटीआला कदोरा, लटकणमोड, नागफूली, नागला, मोरवेसण, नथवाली, सिंदूर,
कुकुमरीली, जवलाचूडी, घरचूडी, चूडा, कांकणी, कारेली, लाल, पोंची, मेखला, हाथलां
कली, सोना लहेरीया, तावीत, कमलां, कमली, वांकडी, वेलीया, लोलीया, इत्यादिक आभ
रण पहेराव्या ए रीते मित्र, ज्ञाति पोताना क्षत्रियो तथा कुटुंब, सगा संबधीनी भक्ति विवि
ध प्रकारनी कीधी इति भोजन तथा आभरण विधि हवे बालकनुं श्रीवर्द्धमान एवु नाम
दीधु, ते वखाणे छे हवे ते मित्र, न्याती, गोत्री, स्वजन, पितरीया प्रमुखने सत्कार, सन्मान
आपीने त्रिशलादेवी तथा सिद्धार्थराजा एवु कहेवा लाग्या ॥१०६॥ ॥ जे हे देवानुप्रियो !
अमारे घेर ए पुत्र गर्भने विषे आवी उपन्या पछी अमें रूपेकरी, अणघडे सोने करी, धान्ये
करी, राज्ये करी, वाहने करी, मनुष्यना सत्कारे करी, अत्यत घणा वृद्धि पाम्या तथा सा
मत जे सीमाडाना राजा अने चंदप्रद्योतनादिक राजा, ते पण अमारे वश थया तथा अमारी
चाकरी करवा आव्या ॥१०७॥ तेथी अमारा मनमां एवु चितव्यु हतु के जेवारे अमारे घरे बाल
कनो जन्म थाशे तेवारे ए बालकनु नाम रूप गुणे करी प्रधान निष्पन्न श्रीवर्द्धमान एवो
आपीशु, ते अमारा मनोरथ सिद्ध थया, अमारी इछा पूरण थइ माटे अमे ए कुमारनुं वर्द्ध
मान एवु नाम आपीये छैये तमे पण ए कुमारने श्रीवर्द्धमान कुमार एवा नामे बोलावजो
एरीते सबधी सर्वने शिरपाव पहेरामणी करीने सर्व सज्जननी साखे बालकनुं नाम स्थापन

कर्यु ॥ १०८ ॥ पछी ते सर्वने विदाय कर्या ॥ इतिश्री वर्द्धमान नामस्थापन २५
र्द्धमान ज़गवान् कहेवा छे? तोके सात हाथनुं महोटुं शरीर छे जेनुं, वली समचोरस संस्थान छे, सुवर्णवर्ण देहनी निर्मल कांति छे, वज्र रूपजनाराच संघयण छे, एवा जगवान् छे हवे श्रीवर्द्धमान स्वामीनां सर्वमली त्रण नाम थयां ते कहे छे एकतो माता पिताये आपेलुं नाम श्रीवर्द्धमान जगवान् छे अने बीजुं रागद्वेष रहित तपस्यामां खेद सहन करवाथी श्रमण एवु नाम जाणवु अने त्रीजुं जे अकस्मात् उपजे ते जय अने सिंहादिकोना उपद्रवथी जे जय उत्पन्न थाय ते जैरव कहीये ए जय जैरवोथी चलायमान थया नही निर्जय पणे रह्या थका जूख तृषा प्रमुख परिसहे करीने क्षोज पाम्या नहि एम परिसह उपसर्ग सहन कर्या तथा सर्वतोजद्र प्रमुख प्रतिमाना पालवा वाला, चारज्ञान सहित, धैर्यवान, अरति रति परिसहने वेठीने रागद्वेष रहित पणे सुख डुःख सहन कर्यां तेथी द्रव्यवीर्य पाम्या थका मोक्षजवानो निश्चय कर्यो छे तोपण चारित्र पालवामां तत्पर रह्या एवा वीरपणांनां गुणोये करी देवताउये श्रीमहावीरस्वामी एवु नाम दीधुं तथा जगवान् आमल क्रीडा करतीवेलाये देवता क्षोज पमाडवा आव्यो तेनाथी बीक पाम्या नही ते कथा आगल कहेवाशे तेवारे पण देवताये महावीर एवु नाम दीधुं ॥ १०९ ॥ ॥ हवे जगवान् श्रीमहावीरस्वामी दिवसे दिवसे चंद्रकलानी पेरे वधता थका, घणा दासदासीयो साथे परवर्या थकां, अत्यंतरूपवान, मस्तकें जमरानां सरखा काला केश छे जेना, कमल सरखा नेत्र छे, परवाला समान विवोष्ट छे, धोला दांत छे, कमल गर्ज सरखो गौर वर्ण छे, कमलना गंध सरखो श्वासोश्वास छे, सर्व देवताउना रूपथी पण घणुंज रूपछे जेनु एटले सर्व देवोनुं रूप जो एकठुं करीये तो जगवानना

मावा पगना अंगुगनी एक कलाने पण पहोचे नही केमके त्रणे लोकमां सर्वथी अधिक रूप श्रीतीर्थंकर जगवाननुं होय ळे तेथी ऊंबु गणधर महाराजनुं रूप, तेथी ऊंबु आहारक शरीर वाला साधुनु रूप, तेथी ऊंबु अनुत्तर विमानवासी देवोनु रूप जाणवु, तेथी ऊंबुं नव ग्रैवेयकना देवोनु रुप, तेवार पळी बारमो देवलोक, अगीयारमो, दशमो, नवमो, आठमो, सातमो, ळठो, पांचमो, चोथो, त्रीजो, बीजो, पहेलो देवलोक ए सर्व क्रमे करी एक वीजाथी उतरता उतरता रूप वाला कहेवा तेंवार पळी जोतिषि देवोनु, पळी जवनपतिदेवो, पळी व्यतर देवो, पळी चक्रवर्त्तिराजा, पळी वासुदेव, पळी बलदेव, पळी मण्डलिक सामान्यराजानु रूप जाणवु ए सर्व अनुक्रमे एकेकथी हीनहीन रूपवाला जाणवा वली जगवान जातिस्मरण ज्ञानसहित अप्रतिपाति मति, श्रुत अने अवधि मली त्रणज्ञाने करी सहित, सर्वथी उत्कृष्ट देहनी काति ळे जेनी, एवा जगवान अबीह, बलवत, बुध्धिमत, सुरूपी, दिव्यस्वरूप धारी, साहसिक वली रूपाला, रगीला, रढीयाला, रेखाला, रतीला, मतिला एवा जगवान रमतां रमतां जेवारे आठवर्षनां थया तेवारें सरखे सरखा राजकुमारो साथें क्रीडाकरता थका ते देशमां प्रसिध्द पामेली एवी आमलकी क्रीडा रमवा सारु नगरनी बाहिर एक पीपलीनुं वृक्ष ळे त्या सर्वकुमारो एकठा थइने सर्व ळोकरा डोडवा लाग्या ते आवीरीते के बे बे ळोकरा साथें डोडे तेमां पहेलो जे पीपलीना वृक्षने जइ पकडे ते जीत्यो अने जे पाळल रहीजाय ते हार्यो पळी जे हारे ते पोतानी खांध उपर जीतेला ळोकराने वेसाडीने जे स्थानकथी होड करीने डोड्या होय ते स्थानकें पाळो जइ मूके एवीरीतनी रमत पोताना जेवडा ळोकरा साथे जगवान करे ळे एवामां सौधर्मेंद्र सजामां वेठा थकां अवधिज्ञाने करी जगवाननुं महाबल


चित्र२९
देवता
पीपळीनो वृक्ष
आमली ना वृक्ष

जाणीने सभामां कहेवा लागा के, आजना समयमां जेवा श्रीमहावीर भगवान बळवान छे
एवो कोइ बीजो बळवान नथी जो महारासहित सर्वदेवो मळीने तेने डराववा जाय तोपण
डरे नही एवा छे ते इन्द्रमहाराजना वचनने असद्दहतो थको एवो कोइ मिथ्यात्वी देवता
तिहांथी आवीने जिहां भगवान रमे छे तिहां आव्यो अने छोकरानुं रूप करी भगवान साथे
रमवा लाग्यो तेवारे भगवान अत्यंत वेगथी छोडीने तरत जइ पीपळीना झाडने हाथ लगा
डीने आगळ चाल्या अने देवताये पीपळीना नीचेनी डाळीयोमां सर्वत्र फूंकरा करतो एवा
सर्पनुं रूप बनाव्युं ते भगवाननी सामो फणाटोप करीने बीवराववा लाग्यो पण भगवाने
सर्पने पोताना हाथथी दूर करीने पोतें पीपळी उपर चडीगया अने मनमां ते सर्पनो कांइ
पण भय आण्यो नही हवे जेवारे ते देवकृत बालक हार्यो अने श्रीवर्द्धमान जीत्या तेवारे ते
देवरूप बालके पोतानी खांध उपर भगवानने चडावीने तेने बीवराववा सारुं सात ताडवृक्ष
जेटलुं उंचु रूप कर्युं तेने जोइने बीजा सर्व बालको भयपामीने नाशि गया अने प्रभुना मा
तापिताने जइ सर्ववृत्तांत कह्यु तेवारे माता पिता चिंता करवा लाग्यां तेमनी चिंता टाळवा
ने माटे भगवाने वज्रप्रहार जेवी पोतानी मुष्टि, देवनी पीठ उपर मारी तेथी ते देव अरराट
करतो चीश पाडतो थको जमीन उपर पडी गयो पछी घणो लज्जायमान थइ पोतानुं रूप
प्रगट करीने कहेवा लाग्यो के हे प्रभु ! जेवा तमोने इन्द्रमहाराजे वखाण्या तेवाज तमे धीरजवाळा
महाबळवान छो ए अवसरमां इन्द्रमहाराज पोतें पण तिहां आव्या अने ते देवताने भगवानने पगे
लगाड्यो देवतायें पण भगवानने पगे लागी अपराध खमाव्युं ते देव मिथ्यात्वपणुं त्यागी समकेति
थयो पछी इन्द्रमहाराज तेने पोतानी साथें देवलोकमां लइ गयो इति आमलपीपलि क्रीडा संपूर्ण ॥


चित्र ३०
भणावनार मेता
वृद्ध ब्राह्मणने
रूपे इन्द्र महाराज
भणनार निशालिया

जाणी अहंकार आणी महादु आसन [illegible]
बे कान, बे काननी मूलमां, एक ललाटमां अने एक कोटमां एवा बार स्थानके तिलक कर।
पोताना परिवारने सर्व शणगारी वाट जोतो जोतो बेगो छे ए अवसरमां इंद्रमहाराजनुं आसन पण ध्वजानी पेरे कंपायमान थयुं अथवा जलमां चंद्रबिंबनी पेरे चपल थयुं अथवा हाथीना काननी पेरे चपल थयुं तेवारे इंद्रमहाराजे अवधिज्ञाने जोयु तो भगवान भणवा बेगा छे एवु देखी कौतुक पामी चिंतववा लाग्यो के आ मोहनीयनो चमत्कार जुओ केहवो छे माटे मातापिता जाणे जे एने भणावीये पण भगवानतो त्रणज्ञाने सहित छे महागंभीर छे एने शुं भणवुं छे? एतो भण्या गुण्या स्वयंबुद्ध छे, अमृतमां वली मीठाश शी करवी छे? सरस्वतीने वली पोथी शी देखाडवी छे? चंद्रमाने वली उज्वलता शी करवी छे? आंबाने विषे तोरण बांधवुं? तथा मातानी आगल मोसाल वर्णव करवो तेम एमणे अज्ञानना वशथी भगवानने निरर्थक भणवा बेसाड्या छे माटे हवे भगवाननी आशातना न होवी जोइये एवु विचारी शक्रेंद्र ब्राह्मणनुं रूप करी जिहां भगवान नीशालमां आव्या छे तिहां ब्राह्मणनें सिंहासन उपरथी उठाडी भगवानने उंचा सिंहासन उपर बेसाडी प्रथमतो उपाध्यायनी समीपें बेशी तेने केटलाएक शास्त्रार्थना प्रश्न पूछ्या परंतु उपाध्यायथी बराबर तेनो जवाब अपाणो नही तेवारे वली तेहज प्रश्न भगवानने पूछ्या तेना उत्तर भगवाने निःसंदेह पणे आप्या ते जोइ अध्यापक जे भणावनारो ते मनमां विचार करवा लाग्यो के आ वातोना तो महारा मनमां पण आज सुधी संदेह हता मे पूर्वे घणा पंडितोने एनां अर्थ पूछेला हता पण कोइये महारी शंकाउनुं समाधान कर्यु नही अने आ न्हाना बालकें महारा संदेह दूर कर्या ए महोटो


चित्र ३०
भणावनार मेता
वृद्ध ब्राह्मणने रूपे इन्द्र महाराज
भणनार निशालिया

जाणी अहंकार आणी मह्होटुं आसन मंगावी शणगार करीने बे मणिबंध, बे बाहु, बे कंठा, बे कान, बे कानना मूलमां, एक ललाटमां अने एक कोटमां एवा बार स्थानके तिलक करी पोताना परिवारने सर्व शणगारी वाट जोतो जोतो बेगो छे ए अवसरमां इंद्रमहाराजनुं आसन पण ध्वजानी पेरे कंपायमान थयुं अथवा जलमां चंद्रबिंबनी पेरे चपल थयुं अथवा हाथीना काननी पेरे चपल थयुं तेवारे इंद्रमहाराजे अवधिज्ञाने जोयु तो भगवान भणवा बेग छे एवु देखी कौतुक पामी चिंतववा लाग्यो के आ मोहनीयनो चमत्कार जूओ कहेवो छे माटे मातापिता जाणे जे एने भणावीये पण भगवानतो त्रणज्ञाने सहित छे महागंभीर छे एने शुं भणवु छे ? एतो भण्या गुण्या स्वयंबुद्ध छे, अमृतमां वली मीठाश शी करवी छे ? सरस्वतीने वली पोथी शी देखाडवी छे ? चंद्रमाने वली उज्वलता शी करवी छे ? आंबाने विषे तोरण बांधवु ? तथा मातानी आगल मोसाल वर्णव करवो तेम एमणे अज्ञानना वशथी भगवानने निरर्थक भणवा बेसाड्या छे माटे हवे भगवाननी आशातना न होवी जोइये एवु विचारी शक्रेंद्र ब्राह्मणनुं रूप करी जिहां भगवान नीशालमां आव्या छे तिहां ब्राह्मणनें सिंहासन उपरथी उगडी भगवानने उचा सिंहासन उपर बेसाडी प्रथमतो उपाध्यायनी समीपें बेशी तेने केटलाएक शास्त्रार्थना प्रश्न पूछ्या परतु उपाध्यायथी बराबर तेनो जवाब अपाणो नही तेवारे वली तेहज प्रश्न भगवानने पूछ्या तेना उत्तर भगवाने नि संदेह पणे आप्या ते जोइ अध्यापक जे भणावनारो ते मनमां विचार करवा लाग्यो के आ वातोना तो महारा मनमां पण आज सुधी संदेह हता मे पूर्वें घणा पंडितोने एनां अर्थ पूछेला हता पण कोइये महारी शंकाउनुं समाधान कर्युं नही अने आ न्हाना बालकें महारा संदेह दूर कर्या ए मह्होटो

लागीने कह्यु के हे प्रजु! तमे ज्ञानसमुद्र ठो हुंतो अपूर्ण कलशनी पेरे छुं माटे तमे महारा गुरु ठो पठी प्रजुये उपाध्यायने घणुं दान आप्युं जगवानना माता पिता घणां राजी थयां थकां जगवानने हाथी उपर वेसाडी उत्सव सहित गाजते वाजते घरे तेडी आव्या इति लेखक शालामहोत्सव समाप्त ॥ ॥ हवे प्रथम इंद्रमहाराजे आवीने जगवानने जलेना अर्थ पूठ्या ठे ते विस्तार होवाथी उपरे सूचव्या नथी माटे अहीं लखीयें ठैयें ॥ ॥ अथ जलेना अर्थ प्रारंज ॥ श्रीवीरप्रजुने नीशाले वेगा जाणीने सौधर्म इंद्र ब्राह्मणनें रूपे आवी प्रजुने नमस्कार करी सर्वलोकने चमत्कार उपजाववा निमित्तें प्रथम जलेना अर्थ पूठ्या थकां प्रजुजीयें आ प्रमाणे अर्थ कह्या ॥ १ वे लीटी ते जीवनी वे राशि ठे तेमां एक सिद्धना जीव ते निष्कर्मी अने बीजा संसारी जीवते सकर्मी जाणवा २ जले ते अरे जीव तुं सिद्धना जीवनी राशिमां जलवानी इछा राखजे ३ मिंडुं ते संसार रूप गोलाकारे ऊंमो कूप ठे ते मांहेथी निकलवानुं छिद्र ठे माटे नीकलीश तो सिद्धमां जलीश ४ बिलाडी ते जेम कूवामां वस्तु पडी होय तेने लोढानी विलाडीथी बाहेर काहाडीयें तेम इहां संसारी जीवने संसार रूप कूप मांथी काहाडवानी एक देशविरति अने बीजी सर्वविरति रूप वे बिलाडी जाणवी हवे ते सिद्धना जीव किहां रहे ठे ते कहे ठे ५ उगण चोटीउ माथे पोटीओ एटले चौदराज लोकना एक अधोलोक बीजो मध्यलोक अने त्रीजो उर्ध्वलोक एवा त्रण जाग ठे तेमां उर्ध्वलोकने चोटीने स्थानके वार योजन विस्तार वाली इसीपप्जारा नामे पृथिवी ठे तिहां एक योजननें चोवीशमे जागें ३३३ धनुषत्रपर बत्रीश अंगुल जेटला विस्तारमां लोकने मस्तकें अलोकने अडी रह्यां थकां सिद्धना जीव रहे ठे ६ ननो वीटालो ते हे जीव! तुं संसारना

आश्चर्य जणायछे वळी पण इंद्रमहाराजे जगवाननें शब्दोनी उत्पत्ति पूछी तेवारे जगवाने सञ्ज्ञा सूत्र, परिजाषा सूत्र, विधि सूत्र, नियम सूत्र, प्रतिषेध सूत्र, अतिदेश सूत्र, अधिकार सूत्र, अनुवादसूत्र, विजाषा सूत्र अने निपात सूत्र ए दश सूत्रना अर्थ सर्व पृथक् पृथक् कही बताव्या, शब्दसाधनिका बतावी तेवारे लोकोये जाण्यु जे आ कोइ परदेशी ब्राह्मण आवेलो छे ते बालकने प्रश्न करे छे अने बालक तेना उत्तर आपे छे पण एवा उत्तरतो आ जणावनार पंमितनां मातापिता पण जाणतां नथी एम लोक सर्व आश्चर्य पामीनें विचारवा लाग्यां के आटलां शास्त्र आ बालक ते क्यिहां जण्यो हशे ? अनें उपाध्याय पण चमत्कार पामीने कहेवा लाग्यो के आते कोण ब्रह्मा पोते साक्षात् आहीं आव्या छे केशु ? ते वारे सर्व लोकना मननां संशय मटाडवा सारु इंद्रमहाराज बोल्या के अरे लोको आ वर्द्धमान कुमार छे, एने सामान्य पुरुष जाणशो नही ए त्रण लोकनो नाथ छे, सर्व पदार्थोनो जाण छे, परतु महागंजीर छे माटे पूछयाविना उत्तर आपे नही लोकोमां केवत छे के गला ते वाजणा, गला बोला पोलाढोल, जाणे आश्विन अने कार्त्तिकनो मेघ, जेवो असति स्त्रीनो स्नेह तथा जेवो शरद्ऋतुनो गर्ज्जारव तेवो गलो जाणवो पण जे पंमित छे ते तो वर्षादना मेघ सरखा गला बोले नही जे मूर्खहोय ते पोतें पोतानें जाणेजे हुं पंमित छुं एवी लपरायो करे पण एवा महोटा पुरुष जे छे ते विना पूछे बोले नही एवुं कहीने जगवाने प्ररूप्यां जे व्याकरण संबधि दशप्रकारना सूत्र तेनी वृत्ति तथा उदाहरण करीने व्याकरण बनाव्युं ते जिनेंद्र व्याकरण नामा आछ व्याकरणनी आदिमां थयो पछी इंद्रमहाराज पंमित प्रमुख लोकोमां जगवान सर्वज्ञ छे एवु जणावी पोतानुं रूप प्रगट करीनें स्वर्गमां गयो उपाध्याये जगवानने पगे

जाणीने कह्यु के हे प्रभु ! तमे ज्ञानसमुद्र छो हुंतो अपूर्ण कलशनी पेरे छुं माटे तमे म्हारा गुरु छो पछी प्रभुये उपाध्यायने घणुं दान आप्युं भगवानना माता पिता घणां राजी थयां थकां भगवानने हाथी उपर बेसाडी उत्सव सहित गाजते वाजते घरे तेडी आव्या इति लेखक शालामहोत्सव समाप्त ॥ ॥ हवे प्रथम इंद्रमहाराजे आवीने भगवानने भलेना अर्थ पूछ्या छे ते विस्तार होवाथी उपरे सूचव्या नथी माटे अहीं लखीये छैये ॥ ॥ अथ भलेना अर्थ प्रारंभ ॥ श्रीवीरप्रभुने नीशाले वेग जाणीने सौधर्म इंद्र ब्राह्मणनें रूपे आवी प्रभुने नमस्कार करी सर्वलोकने चमत्कार उपजाववा निमित्ते प्रथम भलेना अर्थ पूछ्या थकां प्रभुजीये आ प्रमाणे अर्थ कह्या ॥ १ बे लीटी ते जीवनी बे राशि छे तेमां एक सिद्धना जीव ते निष्कर्मी अने बीजा संसारी जीवते सकर्मी जाणवा २ भले ते अरे जीव तुं सिद्धना जीवनी राशिमां भलवानी इच्छा राखजे ३ मिंडुं ते संसार रूप गोलाकारें कर्मो कूप छे ते मांहेथी निकलवानुं छिद्र छे माटे नीकलीश तो सिद्धमां भलीश ४ बिलाडी ते जेम कूवामां वस्तु पडी होय तेने लोढानी बिलाडीथी बाहेर काहाडीयें तेम इहां संसारी जीवने संसार रूप कूप मांथी काहाडवानी एक देशविरति अने बीजी सर्वविरति रूप बे बिलाडी जाणवी हवे ते सिद्धना जीव किहां रहे छे ते कहे छे ५ उंगण चोटीउ माथे पोटीओ एटले चौदराज लोकना एक अधोलोक बीजो मध्यलोक अने त्रीजो उर्ध्वलोक एवा त्रण भाग छे तेमां उर्ध्व लोकने चोटीने स्थानके बार योजन विस्तार वाली इसीपभारा नामे पृथिवी छे तिहां एक योजनने चोवीशमें भागें ३३३ धनुषउपर बत्रीश अंगुल जेटला विस्तारमां लोकने मस्तके अलोकने अडी रह्यां थकां सिद्धना जीव रहे छे ६ ननो वीटालो ते हे जीव ! तुं ससारना

कामभोगमां मग्न थइ वींटाइ रह्यो छो तेथी अधोगति एटले नीचीगति पामीश ७ ममो माउलो ते आ संसारजे छे ते जीवनु अनादि घरछे तेमा मोहनामे माउलो एटले मोसाळी यो छे ८ ममा हाथ बे लाडुवा ते पूर्वे कह्लो जे मोह नामे मोसाळीयो छे ते जीवने काम भोग रूप बे लाडवा हाथमां आपीने भोळवी राखे छे संसारमाथी नीकळवा देतो नथी ९ सेरीराणी चोकडी ते सिद्धिरूप राणीने मंदिर चढतां चार कषाय रूप चोकडीनी चोकी रा खी छे ते चोकीने वचीने कदापि कोइ उचो चडे तोपण तेने चडवा आपती नथी १० पाछी चारकुंभावलि ते अगीआरमी पावडीथी पाछो ढोळीने तेने ते चोकडी संसार कूपमां नाखे छे ११ ढांउ ढांउं ढोकलो माथे छोकरो एटले हे जीव ! तु संसारमां थाइ धाइने गर्भावासमा पडीश तिहां ढोकलानी पेरे सीजाइ रहीश वळी छोकरां छैयां ते ताहारे माथे विटंबना पाडशे माटे जो तु धर्मना चक्रवर्त्ती महाराजनुं सिद्ध नगर छे तेने जोवाने वाछतो होय तो प्रथम तेनो सम्यक्त्व नामे महामंत्रीश्वर छे तेनी साथे मळजे एटले ते तुजने धर्म महाराजथी मेळाप करावी देशे हवे ते सम्यक्त्व नामा प्रधानना घर सुधी जातां थका वचमां घाट छे तिहां लूटारा रह्या छे तेने निवारण करवानो उपाय कहे छे १२ हाथमा झागडी ते धर्मकथा वार्त्तारूप यथा प्रवृत्ति करण करी, अपूर्वकरणना शुभ परिणाम रूप मांगडी एटले महामुगर हाथमां लइने १३ आइडा दो भाइडा वडो भाइ कांनो एटलें राग द्वेष रूप बे भाइडाने पछा डी वेगळा करजे तथा बीजो पण सात प्रकृति रूप चोरनो क्षय करी अपूर्वकरण रूप मुगरथी मिथ्यात्वनी गांठ भांगीनें एटले ग्रंथीभेद करी आघो जाजे तिहां सम्यक्त्वनामा महामंत्री श्वर पंच रूप करी रह्यो छे तेनां तुं दर्शन पामीश पछी तेनी सेवामां रहेतां थकां ते ताहा

रामां योग्यता जाणीनें आगल धर्म चक्रवर्त्तीनी बे पुत्री छे १४ इडिकेवली इडिछकारु एटले एक देशविरति नामे लघु पुत्री छे अने बीजी सर्वविरति नामे मह्होटी दीकरी छे ते तुजने पर णावी देशे परंतु जो सम्यक्त्व मंत्रीनी सेवा एकाग्रचित्तें सन्मुख रही करीश तो ते प्रसन्न थाशे केमके १५ आउ आउ आंकोडा वडे आंकड फांकोडा एटले तिहां शंका कखा कषाय रूप आंकडा फांकडा मह्होटा छे तेनी जो तुं संगत करीश तो सम्यक्त्व मंत्रीना चित्तमां जर्म पडशे तेवारे ते ताहारी साथे दोहेलो थाशे १६ निलीतोडवे कांगेला वडें एटले तिहां वली विषय कषाय रूप अथवा ममता माया रूप एवी बे विषनी वेलडी छे तेमांहे काम अने जोगरूप बे सर्प सूताछे तेने जगाडीशमां छेडीशमां एम करवाथी स्वामी सुप्रसन्न थयो थको तुजने सिद्ध नगरीये जवानो सथवारो करी आपशे १७ एनवेन वेगाडी एटले समिति अने गुप्ति रूप बे गाडीयोमां बेसाडीने १८ उरखवाला बलदिया एटले तेमां ज्ञान अने चारित्र रूप बे बलद जोतरी आपशे तेने. १९ अमीयां बे रासडी एटले संवर अने निर्ज्जरा रूप बे रासडी बांधीनें गाडली शिवपुर नगरना मार्गे जणी चलावजे २० क क्कोकेवडो एटले केवलज्ञान रूप वोलावा विना सिद्ध नगरे पोहोचातु नथी ते केवल ज्ञा नतो अणाहार मार्गथी उपजे छे माटे २१ खरको खाजलो एटले तुं चार प्रकारना आहारनो स्वादी थाइशमां रसेंद्रियना लोलुपी थाइशमां २२ गगा गोरी गाय वीयाणी एटले ते अणा हारीजे तपादिक मार्ग छे तेना बतावनारा तो गुरु छे माटे गुरुनी जक्ति बहुमान्य करजे केम के गुरुमह्होटा उपकारी छे संसार समुद्र तरवानें बोधबीज धर्मनुं आलंबनादिक गुरु आपे छे माटे गुरुनुं गौरव पणुं करजे २३ घघोघरट पलाएयो जाय एटले अरे जीव तुं घरनो धंधो जे

आरंभ समारंभ तेना भारे करी अहर्निश पलाण्यो थको वहे छे ते भारथी तुजने गुरु मू
कावशे २४ ननीउं आमण दूमणो एटले गुरुये जे घरनो भार छोडाववा माटे पांच अणु
व्रत अने पांच महाव्रत रूप अभिग्रह नियमादिक अंगीकार कराव्या ते पालतां थका आमण
दूमणो भग्न चित्तवालो थइने पश्चात्ताप करीशमां २५ चच्चाचिनीचोपडी एटले गुरुदत्त चारित्र
धर्म पालवानी चित्तमा चोप राखजे २६ छन्नावदियापोटला एटले छद्मस्थ पणे गुरु समीपे
श्रुतज्ञान चौदपूर्वनी विद्यानु पोटलुं बांधजे ज्ञाननो अभ्यास घणो करजे २७ जज्ञोजेसलवा
णीउ एटले नियाणशल्य, मायाशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रणशल्य ताहारा अतरंगने विषे छे
तेने टालवानो वणिज व्यापार करजे २८ झज्झोझारीसारिखो एटले तुं झारी सरखो स्वभाव
राखजे जेम झारीनु मुख सांकडु होय अने पेट पोहोलु होय तेम तु पण पेट महोटु राखजे
अने मुखथकी कोइना दोष मर्म प्रकाशीशमां एवीरीते मुखने साकडु राखजे २९ ञञीयो
खांमोचांदे एटलें खामोचांदो ते अर्द्धचद्रमा जाणवो तेना जेवा आकार वाली सिद्धशिला छे ते
स्थानकें जावानु तु निरतर साधन करजे ३० टट्टापोलिखांमेपु एटले तुं पोताना व्रत नियम
अगड आखडी जे काइ गुरु समीपे लीधां छे ते खंडित करीश नही अर्थात् पच्चख्खाणनी पोल
जे वारणा तेने दृढ राखजे ३१ ठठ्ठाठेबर गाळुउं एटले तु ठेबर ते भांगेलो घडो तेनी
पेरे थाइशमां गुरुये आपेली श्रुतिशिक्षा ते हृदयरूप घटने विषे संग्रह करी राखजे.
३२ डड्डाडामरगाठे एटले तु बाह्य आडंबर करी अभ्यंतर कर्मनी गांठे बधाइशमां ३३ ढढा
सुणोपूछे एटले तु सुणो ते श्वान तेना पूछडानी पेरे वक्रस्वभाव राखीश नही परतु सरल स्व
भाव राखजे ३४ राणोताणोसेले एटले जो तु मोहराणा साथे फूफकरे तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र

तथा त्रणगुप्तिरूप त्रण सेल हाथमां राखजे ३५ तत्तोतावे तेल्ले एटलें तुं तप जप करतो थको कोइनां आक्रोश वचन सांजलीने तप्त तेलनी पेरे तातो थाइशमां ३६ थन्ना थैरखवा ली एटले कदापि ताहारु मन वशवर्त्ति नथाय तो पण वचन अने काया ए बेने तो थिरथाप करी राखजे ३७ दद्दीयोदीवट्टो एटले समकेत दर्शनरूप दीवो तेने हृदयरूप घरमां राखजे वली दया दमननें दान तेनी अनिलाषा धरजे ३८ धद्धीयोधाणको एटले तुं धन कमाववानुं परिग्रह मेलववानु ध्यान राखीशमां केवल धर्मध्यान ताहारा हृदयमां राखजे ३९ ननीयो पुलायरो एटले तुं नास्तिक मति अंगीकार करीने हृदयमांथी समकेतने पोलुं एटले पातलुं करीशमा ४० पप्पापोलीपाटें एटले पाप आववानी पोल जे पांचेंद्रियनां आश्रवद्वार छे तेने सवर रूप कमाड जडीने बंधकरी राखजे पण पोलां राखीश नही जेम अढार पापस्थानकनो प्रचार तेमां प्रवेश करी शके नही एवां दृढ मजबुत बंधकरी राखजे ४१ फप्फाफगडेजोडे एटले फोकट फांसीया, अशुद्ध, अविनीत, अनाचारीनी जोडे संगत करी विचरीशमां. ४२ बब्बा मांहेचांदणुं एटले बोधबीजनो वधारो करजे जेम जेम बोध वधतो जाशे तेम तेम हृदयने विषे ज्ञानरूप चांदणुं एटले चइमां प्रगट थाशे ४३ नन्नोनारीनेसको एटले चेंस जेम सूकु लीलुं नक्षण करीने पेटे नारी थाय तेम तुं पण बावीश अनक्ष अने बत्रीश अनंतकाय जे कंदमूल कहेवाय छे ते पामीने तेनुं नक्षण करी पेटे नारी थाइशमा कदापि देवादिक आवीने चलावे तोपण चलायमान थाइश नही माममूकीशमां एटले अर्हन्नक श्रावकनी पेरे दृढता राखजे तथा वली व्रत नियमादिक पालतो थको मनमां मह्योटो अनिमान धरीशमां, फरी कहे छे नलीयोनाटचूलेतरो एटले जेम चूलानी नाट धगधगती रहे छे तेम तुं कोइना आ

क्रोश असह्यमर्मवेधालां वचन सांजलीने अंतरग हैयामां क्रोध रूपअग्निये धगधगतो रहीशमा एटले क्रोधाग्नियेंजेटीशमां ४४ समयीयोमोचक एटले आठकर्मने मूकजे मोक्ष मार्ग महोटो ठे तेने आदरजे ४५ यर्यीयोजाडोपेटको एटले ससारमांहे यमजे कृतांत तेनुं पेट महोटु ठे ते सर्वजगतने ग्रास करे ठे तोपण तेनुं पेट जरातु नथी तेमाटे एनो जय ताहारा हृदयमां राखीने धर्मने विषे आलस करीशमा ४६ रायरोकटारमल्ल एटले राग अने द्वेष ए बे महोटा मल्ल ठे तेमा रागना वली बे प्रकार ठे एक प्रशस्तराग अने बीजो अप्रशस्तराग ए बेहु मल्लने जी तीश तो कर्मथी हलवो थइ केवलज्ञान उपार्जन करीने अक्षयपद जे मोक्षपद तेनो जोगी थइश ४७ लल्लाथोडोलातवा एटले लोजरूप घोडानी लातथी वेगलो रहेजे ४८ ववाविगणवासदे एटले कामादिक व्यग ठे तेने ताहारा मनरूप घरमां वास एटले वसवा देंजे नही, केमके जो कामादिक ताहारा मनरूप घरमां प्रवेश करशे तो आत्माना उत्तमगुण रूप धनने सर्व चोरी लइ जशे ४९ शशाकोटा मरडीया एटले शसलानी पेरे कोट अने कांनथी ढकाइने गलीयार थइ वेसी रहीशमां पण धर्मने विषे उद्यमी थाजे जे पटलालोकनी गतिथाशे तेम ताहारी पणथाशे एवु चितवता एकदिवसे कालरूप पाराधी डुर्गतिमां लइजाशे जेम ससलानें आहेडी लेइ कोट एटले गलुं मरडी नाखे तेम तुजने पण काल आहेडी मरडी नाखशे ५० षषाखूणे फाडिया एटले खरु बोलजे खोटु बोलीशमां केमके एक पण मृषावाद वचन बोलवाथी सर्वगुण अने सर्वव्रतनो नाश थइ जाशे जेम कोइक वस्त्रनो कोयलो खूणें फाटो पठी तेमां जे वस्तु जरेली होय ते हलवे हलवे निकलतीथकी अनुक्रमे सर्वखाली थइ जती रहे तेम ताहारा गुण तथा व्रत जता रहेशे तथा खूणेवेशी एटले कोइ नही देखे एवीरीते एकाते वेशी पाप करीश तो

पण ते आगल उदयिककालें प्रगट थाशे इत्यर्थ ५१ सारसे दंती लोक एटले जो तुं मोहरा
जानी साथे युद्द करे तो दंती एटले हाथीनी पेरे साहसिक थाजे जेम हाथी साहसिक थको
सर्वनी आगल आगेवान थइ किल्लानां कपाट, गढ कोट सर्वने नांगी नाखें तेम तुंपण मोह
राजानो मिथ्यात्वरूप गढ नांगी नाखीश ५२ हाहोलोहरिणेकलो एटले तु मोहरूप पाराधीनां
पाशमां पडीशमां पण हरण जेम पाराधीने देखी नाशी जाय तेनीपेरे तुंपण फाल मारीने नाशी
जाजे परतु जो मोहना पाशमां पड्यो तो संसारनां बंधनथी छूटीश नही ५३ लावेलछी दोय
पीहार एटले जोतु मोक्षनो अनिलाषी थइने संसारनां बंधन छेदीश तो एक द्रव्यलक्ष्मी अने
बीजी नावलक्ष्मी ए बे प्रकारनी लक्ष्मी ताहारे घेर पाणी नरशे एटले जो अनुत्तरविमाने देव
ता पणे उपजीश अथवा मनुष्यनवे नरदेव चक्रवर्त्ति पणे उपजीश तो नरतादिक जेम द्रव्य
लक्ष्मीनां पुण्य नोगवीने सिद्धने विषे नावलक्ष्मी नोगवे छे तेम तुं पण पामीश ॥ हवे एवां
सिद्धनां सुख केवीरीते पामीये ते आगल कहे छे ५४ खडीयाखाटक मोर पालें बांध्या बे चोर
एटले संसारने विषे षट्काय जीवोना आत्माना जे ज्ञानादिक गुण छे तेने लूटवाने माटे
राग अने द्वेष रूप बे चोर खडा छे एटले ऊना छे तेने पकडी बांधीने तेनुं बीजमात्र का
हाडी नाखजे के जेथकी कर्मरूप वृक्षनी उत्पत्ति फरी थायज नही ॥ रागोयदोषोयमाबीज ॥
इतिवचनात् ॥ माटे ए बे ने टालीने चारघनघातीया कर्मने टालजे के जेम केवलरूप लक्ष्मी
पामे पछी ते केवलश्री नोगवीने अंते चौदमे गुणठाणे योगनिरुंधी शैलेसी करण करी शुक्ल
ध्यानने चोथे पाइये कार्मणशरीर छेदी क्रिया रहित थइ सिद्धना जीवोनी राशिमां नलजे के
जेम ५५ मंगलमहाश्री, देविया परमेश्वरी एटले मंगलिक रूप महोटी नावलक्ष्मी पामीश अर्थात्

पोताना आत्मानां अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य, अगुरु लघु, अरूपी, अखंड, अक्षय, अव्यय एवी महामंगलिक रूप भावलक्ष्मी पामी सादिअनंतभांगे अजर, अमर, अविनाशि पणे, महानंद, परमानंद पद पणे रहीश इतितत्त्व ए भजेनो अर्थ समास थयो ॥ वली एनो अर्थ प्रकारांतरे जुदा जुदा महापुरुषोनो करेलो घणा प्रकारनो टीकामां आव्यो छे परंतु आंही ग्रंथगौरवना भयथी मात्र आ एक प्रकारनोज दाखल कर्यो छे ॥ ॥ हवे भगवान जेवारे बाल्यावस्थाये करी रहित थया अने यौवनवय पाम्या तेवारे मातापितायें रूडुं मुहूर्त्त जोवरावीने घणा आडंबर सहित समरवीरनामा सामंतनी पुत्री यशोदा नामे हती ते प्रभुने परणावी घणी प्रतोमा नरवर्मराजानी पुत्री यशोदा परण्या एवा अक्षर लखेला छे पछी ते यशोदा राणी साथे विषयसुख भोगवतां प्रियदर्शना नामे एक पुत्री थइ ते पुत्री भगवाननी बहेननो पुत्र जमाली नामे हतो तेने परणावी एम करतां भगवानने गृहस्थ पणामां अठा वीश वर्ष वीत्यां ॥ हवे भगवानना परिवारनां नाम सूत्रकार वर्णवे छे महावीरस्वामीनां पिता काश्यपगोत्रीया छे तेना त्रण नाम छे ते कहे छे एक सिद्धार्थ, बीजु श्रेयांस, त्रीजु यशस्वी हवे भगवाननी मातानु वाशिष्टगोत्र छे अने तेमना पण त्रण नाम छे ते कहे छे एक त्रिशला, बीजु विदेहदिन्ना, त्रीजुं प्रीतिकारिणी तथा भगवाननां काकानुं सुपार्श्व एवु नाम छे तथा भग वाननां महोटा भाइनु नंदीवर्द्धन एवु नाम छें तथा बहेननुं नाम सुदर्शना छे तथा स्त्रीनुं नाम यशोदा छे तेनु कोडिन्न गोत्र छे तथा भगवाननी पुत्रीनु काश्यप गोत्र छे तथा तेनां अणोद्या अने प्रियदर्शना एवां बे नाम छे तथा भगवाननी दौहित्री तेनु काश्यपगोत्र छे अने शेषवती तथा यशवती एवा बे तेनां नाम छे ॥ ११० ॥ ॥ हवे भगवान श्रीमहावीरस्वामी


चित्र ३१
चोरिनु
चित्र

कहेवा छे तोके ? सर्वकलाउमां निपुण छे, नलीरीतें निर्वाह करवा वाला, नला रूपवत, सर्वे गुणे संपूर्ण, सरलपरिणामी, विनयवान, ज्ञातराजाना पुत्र, प्रसिद्ध एवाजे सिद्धार्थराजा तेनां कुलमां चड्मा समान, नलो छे देह एटले शरीर जेमनुं, वज्ररुषनारराच संघयण, समचउरस संस्थान, त्रिशलामाताना पुत्र, महा कोमल शरीर वाला, कांतिवत, ममता रहित, दीक्षानी वांछा करनार, त्रीशवर्ष गृहस्थावासे रह्या तेवारे मातापितातो प्रजुनी अठावीशवर्षनी वयमां देवलोके पहोतां हतां ते दिवसे दीक्षा लेवाने माटे पोताना महोटा नाइ नंदीवर्द्धननी आज्ञा लीधी अने नाइने कह्यु के मातापिता जीवता रहे तिहां सुधी महारे घरमां रहेवु एवी महारी प्रतिज्ञा हती ते पूरण थइ फरी नाइनी अनुमतियी वे वरस घरमां रह्या तेवारे लोकांतिक देवो आवीने इष्टकारी वल्लन वाणीये करी नित्यआशीष देता थका नित्य स्तवना करता थका एवु कहे ॥ १११॥ ॥ के हे प्रजु ! हवे तमारो अनिग्रह पूरण थयो, ते हवे अनिग्रह संबंधि वात लखे छे. नगवान अठावीश वर्षना थया तेवारे नगवानना मातापिता देवलोके गयां ते आवश्यकनिर्युक्तिमां तो चोथे देवलोके गयां एवुं लख्यु छे अने श्रीआचारांगसूत्रमां बारमे देवलोके गया एवु लख्युं छे ए वातनुं समाधान करवा सारुं केटलाएक एवी कल्पना करे छे के देवोनी वधीमली चारनिकाय छे तो ते चार देवनिकाय आश्रयी ए चोथी निकाय वैमानिक देवोनी छे माटे ए चोथो देवलोक ते चोथी निकाय वैमानिक देवोनी समजवी तो ते चोथी निकायमां बारमो देवलोक आवीगयो तेथी आचारांगमां कह्या प्रमाणे बराबर वात मली आवे छे ए प्रमाणे समाधान करे छे पछी तत्त्वकेवलीगम्य छे ॥ हवे मातपिता देवलोके गया पछी महोटा नाइ नंदीवर्द्धनने नगवाने पूछ्युं के हु दिक्षा लउं तेवारे नंदीवर्द्धन बोल्या

के जाइ तुं दाऊथा उपर जूण नाखे ने केमके मातापिता मरण पाम्यां तेना वियोग रूप दाघ जे वलतरा एटले फोडला तेतो हालमां मने कायम ने तेना उपर वली ताहारा वियोग रूप जूण नाखवु ते महाराथी सह्यु जाय नही हजीतो माता पितानो शोक पण मट्यो नथी माटे हु दीक्षा लेवानी रजा हमणा आपीश नही तेवारे जगवान बोल्या जे माता पिता जाइ वहेन एतो जीवने अनतिवार थयां ते सर्वने मूकीने वली जीवतो एकलोज आवे ने, एकलोज जाय ने, एकलोज पोतानां करेला शुजाशुज कर्मोने जोगवे ने, एवीरीतें ससारमा कोइ कोइनो सगो नथी तो हवे कोनो कोनो शोक करीये अने कोनी कोनी साथे प्रतिबध राखीयें ? फरी नदीवर्द्धन बोल्या के जाइ ! एवु हु पण जाणु बुं तोपण हु शुकरु जे महारे मोहनीयकर्मनो बंध हजी घणो जारे ने तेथी ताहारो विरह हु खमी शकतो नथी तेमाटें हजी महारा कहेवाथी तु बे वर्ष घरमा रहेतो ठीक ने हवे उत्तम पुरुषनी चाल ने के ऊ खीयाने देखी तरत करुणा आवे माटे जाइनुं एवु कहेण सांजलीने कह्यु के हे जाइ हु बे वर्ष रहीश पण जातपाणी सर्व फासु लइश महारा वास्ते आरंज करीने कांइपण बनावबु नही तेवारे जाइये कह्यु के सुखे एमज रहो अमे तमारा वास्ते कांइ करीशुं नही तेवारे जगवान फरी पण बे वर्ष गृहवासे रह्या ॥ हवे जेवारे जगवान जन्म्या हता तेवारे लोकमां एवी प्रसिद्धि थइ हति जे चौद स्वप्न माताये दीठा माटे ए चक्रवर्त्ति थाशे, एवु जाणीने श्रेणिक अने चदप्रद्योतन राजाये पोताना कुमरोने बालक ठाकोरनी सेवा करवा निमित्ते मोकल्या हता ते सहुये प्रजुने आवा घोर अनुष्ठान करता देखीने विचार्युं जे ए चक्रवर्त्ति नथी एतो सयम ग्राही तीर्थंकर ने एवु जाणी ते सर्व पोतपोताने स्थानकें गया जगवान पण एवी स्थितिमां


चित्र ३७
श्रीमहावीर भगवान्
नवलोकांतिक देव

वली बे वर्ष गृहस्थावासे रह्या, सर्व सचित्त वस्तुनो त्याग कस्यो, ब्रह्मचर्य पाल्यु पण जे वखत दीक्षालीधी ठे ते वखत सचित्तजलथी स्नान कर्युं ठे केमके एवी मर्याद ठे जे दीक्षा लेती वखतनुं स्नान उष्णजलथी करवु तीर्थंकरने न होय तेथी प्रतिमाने पण उष्णजल च डावता नथी एवी स्थिति ठे पठी बे वर्षमांथी जेवारे एकवर्ष वीत्युं तेवारे नवलोकांतिक देवो आव्या तेनां नाम कहे ठे १ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वन्हि, ४ वरुण, ५ गर्दतोय, ६ तुषित, ७ अव्याबाध, ८ अग्नि, ए अरिष्ट ए नव आवीने जो पण नगवान स्वयंबुद्ध ठे तो पण एमनी एवी मर्यादा ठे माटे प्रनुनी पासे आवीनें जाण करे केवीरीतें जाण करे ते केहे ठे जय जयवत होवो हे समृद्धिमान! हे कल्याणवान! तमारुं नखुं थाउ, हे क्षत्रियोमां वृषनसमान! तमारो जयहोवो बोधकरो बोधकरो बुजो बुजो हे नगवान! हे लोकनाथ! सर्वजगत जीवने हितकारी प्रवर्त्तो हे नगवान्! तमें धर्मतीर्थ प्रवर्त्तावो, ते धर्मतीर्थ सर्वलोकने हितकारी, सुखकारी, मोक्षकारी थाशे एवु कहीने जयजय शब्द कहे ॥११२॥ ॥ हवे श्रमण नगवान श्रीमहावीरस्वामीने मनुष्ययोग्य गृहस्थधर्मथी, गृहस्थना व्यवहारथी पहेला, पण अनुपमउपयोग ते अप्रतिपाति एवु अवधिज्ञान अने अवधि दर्शन होतुं हवु ते अनुत्तर अवधिज्ञान अने अवधिदर्शने करी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणीने, रूपानो त्याग करीने, सोनानो त्याग करीने, धननो, राजनो, देशनो, वाहननो, कोठारनो, नंमारनो, अंतेउरनो, देशवासी लोकनो, धन, कण, धान्य, मणिरत्न, मोति, दक्षिणावर्त्त शंख, शिला, प्रवालुं, रातांरत्नादिक जे पोतानी पासें ठतां ठे हाजर ठे ते सर्वनो त्याग करीने अर्थात् तेना उपरथी मन उतारी लीये, सर्व रूपादिक ठोडीने जे चांदी प्रमुख धरतीमां दाटेला होय तेने बाहार काढा

डीने ते सहु आपणा गोत्रियाने वाटी आपीने आ सूत्रथी वरसीदाननो अधिकार एवो छे के जगवान दिक्षाना दिवसथी एक वर्ष पहेलां वरसीदान देवा मांडे ते सूर्योदयथी मांडीने जमवानी वेला सुधी प्रतिदिवसे प्रजातना सवा पहोर दिवस चडता सुधी नित्यप्रत्ये एक क्रोडने आठ लाख सोनैया जगवान दानमां आपे अने गाममां एवी उद्घोषणा करे के जेने जे वस्तु जोइये ते धणी ते वस्तु मागे तेवारे जे धणी जे मागे तेने ते आपे ते सर्वशक्रेंद्रना आदेशथी देवता पूरण करे एवी रीते एक वर्षमां जेटला सोनैया दान आपे ते कहे छे त्रणसो क्रोड एटले त्रण अब्ज अठासी क्रोड ने एशीलाख एटला सोनैया एक वर्षमां दान आपे ते सोनैयो एक एशी रतीजार जेटलो होय अने तेना उपर तीर्थकरनां मा वापनुं तथा पो तानुं नाम होय ते बारसो सोनैयानो एक मण करता नवहजार मण सोनैया दिनप्रत्ये दान देवाय तेना आजना समय प्रमाणे एक गाडलामां चालीशमण जार नाखता वसोने पच्चीश गाडलां थाय ते सोनैया शक्रेंद्रना आदेशथी वैश्रमण देवता देवमायाये करी आठ समयमा नीपजावीने, तीर्थकरना घरमां जरे, ए दानदेवानो अतिशय छे, अने तीर्थकरना हाथने विषे सौधर्मेंद्र एवी स्थिति करे के दान देता थकां तीर्थकरनो हाथ थाके नही अने इशानेंद्र रत्ने जडित सुवर्णनी लाकडी लइ उजो रहे ते चोसठ इंद्रवर्जीने बीजा सामान्य देवताउने दान लेतां वर्जे तथा जे मनुष्यनां ललाटमांहे जेवी प्राप्ति होय जेटलुं जेने आपवुं पोसाय तेटलुं तेना मुखमांथी इशानेंद्र वचन कहेवरावे, तथा चमरेंद्र अने बलेंद्र ए बे इंद्र जो तीर्थकरनी मुठीमांहे अधिकद्रव्य आव्युं होय तो पाछुं पडावी नाखे अने उंछुं द्रव्य आव्युं होय तो पूरण करे मागनारनी प्राप्ति माफक पामे तथा जुवनपति देवता

चित्र ३३





ने ते सढ आपणा गोत्रियाने वांटी आपीने आ सूत्रथी वरसीदाननो अधिकार एवो छे
... तेना माटे ते सूर्यउग्याथी मांडीने

भरतक्षेत्रनां मनुष्यने दानलेवा सारु तेडी आवे अने वाणव्यंतर
तेने स्थानके मूकी आवे तथा ज्योतिषी देवता विद्याधरोने दान लेवानी खबर आपे ए सर्व तीर्थंकरनां अतिशय जाणवा ए प्रस्तावे तीर्थंकरनो पिता महोटी त्रण शालाउ करावे अही भगवाननां मातापिता देवलोकें गयां छे माटे तेने ठेकाणे एमनो महोटो भाइ नंदीवर्द्धन छे ते त्रणशालाउ करावे तेमां पहेली शालाये भरतक्षेत्रनां मनुष्यने अन्नपानादिक आपे, बीजी शालामां वस्त्र आपे अने त्रीजी शालामां आभरण आपे हवे तीर्थंकरना हाथनां दाननो महिमा कहे छे चोसठइंद्रने दानने प्रभावे बार वरस पर्यंत मांहोमांहे कलेश उपजे नही तथा राजा अथवा चक्रवर्त्ति प्रमुख तीर्थंकरनुं दान लइने ते सोनैया पोतानां भंडारमां मूके तो बार वर्ष सुधी तेमनो भंडारअखूट रहे तथा शेठ सेनापति आदिकने दान मलेतो तेना महिमा थकी बारवर्ष पर्यंत यश.कीर्त्ति घणी वधे तथा रोगी पुरुषने दान मलेतो तेना प्रभावथी रोग सर्व मटी जाय अने फरी बारवर्ष पर्यंत तेना शरीरमां कोइ नवो रोग पेदा थाय नही इत्यादिक दाननो महिमा जाणवो हवे छ घडी दिवस चड्या पछी दानदेवा मांडे ते पोणा बे पोहोर दिवस चड्या सुधी दान आपे एवो पाठ घणी प्रतोमां लखेलो छे परंतु आमां सूर्यउग्याथी ते जमवाना वखत सुधी आपे एवो प्रथम लेख आव्यो छे एवीरीते प्रभुजी वरसीदान रूप वर्षाद एकवर्ष सुधी वरसावीने मनुष्योना दारिद्र रूप दावानलने उपशमावे. जे दारिद्री हता ते सर्व धनवंत थया, घोडें करी वध्या, वस्त्रेकरी वध्या, आभरणे करी वध्या, ए आदिक लक्ष्मीयें करी सहित थया ए प्रभुना हाथनुं दानलइने जेवारे पोताने घेर पाछा आवे तेवारे तेना घरनी स्त्रीयो

सरखी पण पोताना स्वामीने उंलखे नही पठी इंद्र महाराज आवी उंलखाण करावे ते वारें तेने सर्व प्रकारनी उंलखाण पडे ए प्रजुना हाथनु दान सर्व जव्यजीवोने मळे परतु अजव्यनेतो ए प्रजुना हाथनु दान सर्वथामलेज नही इति संवत्सरीदान महिमाधिकार वर्णन समाप्त ॥ ॥ हवे जगवान महाराजनो दीक्षा समय जाणीने नदीवर्द्धन राजा दीक्षानो महोत्सव करवाने अर्थें प्रथमतो क्षत्रियकुमपुर नगरने विषें ध्वजाउ वधावी हाट शणगाख्या, घरघर तोरण वधाव्या एवीरीतें नगरशणगारीने पठी चोसठ इंद्र अजिषेक करवा आवे तेवारे देवोना प्रजावथी देवोये करेला जे आठजातिना अजिषेक कलश ते कलश नदीवर्द्धन राजाना करावेला अजिषेक कलशमां प्रवेश करी मली जाय पठी नदीवर्द्धनराजा जगवानने पूर्व सन्मुख वेसाडीने देवताये लावेला जलथी जगवानने अजिषेक करे तेवखतें इंद्रादिकदेवो सर्व जृंगार दर्पण हाथमां लइ जयजयशब्द कहेता थका आगल ऊजा रहे पठी जगवाननां शरीरने लूठी वावनाचदने करी शरीर लेपे अमूल्य वस्त्र मुकुट, मोतीना हार, कठसूत्र, केयूर, वाजुवद, वहिरखा अने कुमलादिक सर्व जातनां आजरण पहेरावे, पुष्पादिके करीने कल्पवृक्ष समान करे पठी नदीवर्द्धनना कहेवाथी अनेक सेवक पुरुष पचाशधनुष लांबी, पच्चीश धनुष पोहोली अने उत्रीश धनुष ऊची मणिकनक रचित एवी एक चंद्रप्रजानामे पालखी वनावे तेमज देवता पण एवीज एक पालखी वनावे ते पालखी दिव्यानुजावे नदीवर्द्धनकृत पालखीमां प्रवेश करे पठी ते पालखी प्रजुना मुख आगल मूके प्रजुते पालखीमां पूर्व सन्मुख सिंहासनें आवीने वेसे अने जगवाननी जमणी बाजु कुलमा वडेरी कुलमहत्तरिका हंसलक्षण स्त्री साडीलेइने वेसे तथा मावी बाजु जगवाननी धात्र्यमाता आवी दीक्षानां उपकरण लइने वेसे तथा जगवान

॥एए॥

नी पछवाडे शोल शणगार पहेरीने एक घणीज स्वरूपवान नली स्त्री छत्रधरीने वेसे तथा ईशानकोणे एक स्त्री जलें पूरण कलश हाथमां लइ उन्नीरहे अग्नि कोणे एक स्त्री मणिमय विचित्र वींजणो-करती उन्नीरहे,ए सर्व स्त्रीयो शणगार करेली युवान-अवस्था वाली जाणवी तेवार पछी-नंदीवर्द्धन राजानी आज्ञाथी एक हजार सेवक पुरुषो जेटलामां ते शिबिकाने उपाडे एटलामा ते वखतमां शक्रेंद्र ते पालखीनी जमणी बाजुनी आगली उपरली तरफनी वाहा उपाडे,तथा ईशानेंद्र डावी बाजुनी आगली उपरली वाहा उपाडे तथा चमरेंद्र जमणी बाजुनी पाछली तरफनी उपरली वाहा उपाडे तथा बलिंद्र डावी बाजुनी पाछली तरफनी उपरली वाहा उपाडे अने बीजा नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक देवोना जे इंद्र छे ते जिहां देखे तिहांथी उपाडे, केटलाएक देवडुंडुन्नी वजावे, केटलाएक पंचवर्ण फूलनो वर्षात करे पछी शक्रेंद्र अने ईशानेंद्र वाहने छोडीने चामर ढोले तेवारे शिबिकानें बीजा इंद्र उपाडे एम शिबिकाने प्रथमतो मनुष्य उपाडे पछी सुरेंद्र, असुरेंद्र, नागेंद्र उपाडे बीजा सर्वदेवो हर्ष पाम्या थका केटलाएक आकाशे रह्या थका नृत्यादिक करे आ ठेकाणे जेम वनखंड फूलें करी शोन्ने, जेम पद्मसरोवरमां शरदकालें कमल शोन्ने, तेम देवता आकाशें रह्या थका शोन्ने छे तथा जेम अलशीनुं वन, कणेरनुं वन, चंपानुंवन, फूलेकरी शोन्ने तेम क्षत्रिय कुंड नगरथी मांडीने देवताना नवन सुधी देवदेवीउंये करी आकाश संकीर्ण थयुंथकुं शोन्ने छे प्रधान पडह नेरी झल्लरी डुंडुन्नी इत्यादिक कडोगमे वाजित्र आकाशे तथा धरतीयें वाजी रह्यां छे, घरना व्यापारधंधा मूकीने मनुष्यना वृंद जोवा मल्या छे, हवें पालखी चालतां देवदेवी तथा नर नारी पोतपोतानी खुशी प्रमाणे मनमां आवे तेवाप्रकारनां हर्षनां वाजां वजावे छे, गाय छे, नाचे

छे,फूल फल मोतीप्रमुखने वरसावे छे ॥ हवे वरघोडामां जगवाननी आगल अनुक्रमे सहुथी पहेलातो आठमगल चाले,पछी पूरण कलश जृंगार चाले,पछी महोटी वैजयति ध्वजा चाले,पछी छत्रधरचाले, पछी मणीपीठ सिंहासन चाले,पछी शणगारेला पण असवार विनाना एवा एकसोने आठ हाथी चाले, पछी एकसोने आठ घोडा चाले, पछी एकसोने आठ शस्त्र जरेला रथ चाले, पछी एकसोने आठ पुरुष चाले, पछी घोडा, हाथी, रथ अने पाला ए चार प्रकारनी सेना चाले, पछी एक हजार योजन उंचो अने न्हानी न्हानी एक हजार ध्वजाये मंडित एवो महेंद्रध्वज चाले, पछी कुंतग्रहा, बाणग्रहा, तीरग्रहा, गोफणग्रहा, हास्यकारिका, कर्मकारिका, वशकारिका, ज्ञानकारिका, विनोदकारिका, खड्गधर, धनुर्धर, एवा पुरुषो चाले, पछी पाटीया धरवावाला पुरुष चाले, पछी घणा चारण जीखारी मागता थका चाले, पछी घणा उग्र जोगकुलादिकना क्षत्रिय, मांडविक, कौटुंबिक, शेठ, सेनापति, सार्थवाह, देव, देवी प्रजालोक चाले, जगवाननी पछवाडे घणी सेनायें परवर्यो थको, छत्र चामर धरावतो थको, घणा आडंबर सहित नंदीवर्द्धनराजा चाले, बीजा पण घणा लोक चाले, ते वखत अनेक प्रकारनां वाजा वाजे तेनो शब्द सांजलीने नगरनी स्त्रीयो पोतपोतानुं काम मूकीनें त्यां आवे ते केवी थकी आवे तोके ? त्रणवातो स्त्रीयोने वल्लज छे एक कजडो, बीजु काजल, त्रीजो सिंदूर वली त्रण वातो बीजी अत्यत वल्लज छे एक दूध, बीजो जमाइ, अने त्रीजुं वाजुं यत ॥ तिन्निवि तियां वल्लहा, कलिकज्जल सिंदूर ॥ एपुण अतिहि वल्लहा, दूध जमाइ तूर ॥ १ ॥ ॥ माटे ते स्त्रीयो वाजानो शब्द सांजलीने उतावलथी आवीयो तेथी कोइएक स्त्रीतो काजल आंखमा आंजती हती ते आंखने बदले गालोमा लगावी दीधुं अने गालोमां कस्तुरी लगा


चित्र ३४
महोत्सवनो
वरघोडो

वे,फूल फल मोतीप्रमुखने वरसावे वे ॥ हवे वरघोडामां जगवाननी आगल अनुक्रमे सहुथी पहेलातो आठमंगल चाले,पठी पूरण कलश जृंगार चाले,पठी महोटी वैजयंति ध्वजा चाले,पठी वत्रधरचाले, पठी मणीपीठ सिंहासन चाले,पठी शणगारेला पण असार विनाना [illegible]
आठ हाथी चाले पठी [illegible]

केटलिएक स्त्रीयो पगोमां झांझर पहेरवां जूलीगइ तेने बदले
डवी ते आंखोमां आंजी दीधां,
गलामां झणेणाट करतां झांझर पहेरी लीधां, केटलीएक स्त्रीयोये गलामां पेहेरवानां घरेणां
ते पगमा पहेरी लीधां, केटलीएक स्त्रीयोये कटीमेखला गलामां पहेरी लीधी अने गलानो हार
ते कटीमेखलाने स्थानके केडमां बांधी दीधो, केटलिक स्त्रीयोये चंदन घसीने पगे चोपड्यु
अने अलतो मस्तके चोपडी लीधो, केटलिएक स्त्रीयो अर्धुस्नान कर्युं न कर्युं एवी थकी दोड
ती आवी, कोइकतो घाघरा उंढीनें चालती आवी तेथी नीचेना जागमां नागीज दीसवा ला
गी, कोइक वीजी पारका पुरुषनी स्त्रीयोनां ठोकरा ते जूलथी पोताना काखमां तेडीने दोडी
आवी, केटलिएक तो पोताना रडतां बालकने पडतां मूकी चाली आवी, केटलिएके पहेरवानुं
वस्त्र ताणी बांध्यु नही तेथी वायराने योगे ते वस्त्र उडीगयुं तेना योगे नववधू बालकुमारी
सरखी दीसवा लागी, कोइएक स्त्रीये एक कानमां आजूषण पहेर्युं अने बीजा कानमां पहेरतां
जूलीगइ, कोइएक स्त्री जमी तो रही पण चलु करवु रहीगयु, कोइक स्त्रीये एकज पगधोयो
बीजो धोवो रहीगयो, कोइक कांचली पहेरतां वीसरीगइ एवी उतावलथी जोवा नीकली
केटलिएक चावल उठाले ठे, केटलिएक नाचे ठे, एवा आमंबरथी जगवाननो दिक्षा
महोत्सव थयो ते कया दिवसे थयो ते दिवस कहे ठे. तेकालने विषे ते समयने विषे
श्रमण जगवत श्रीमहावीरस्वामी ते हेमंतऋतु एटले शीयालानी ऋतुनो पहेलो महीनो
पहेलुं पखवाडीयुं, मागशिरवदि दशमीने दिवसें दिवसनी पाठली ठाया एटले पोरिसी
दिन रहे एक पहोर दिवस रहे तेवारे तथा सुव्रतनामा दिवसनु नाम ते दिवसने विषे, विज
यमुहूर्त्त आवे थके, चड्प्रन्ना नामा पालखीमां बेठा थका, जेनी आगल पाठल देवता अने

मनुष्य चाली रह्या छे, शंखना वजाववा वाला, सोनानां चक्रना धरवावाला, हलना धरवा वाला तथा मंगल शब्द बोलवावाला एवा भिक्षु प्रमुख चारण प्रमुख भाट प्रमुख तथा घटाने वजाववा वाला तेमनो समुदाय ते सर्व आशीष आपे छे ॥११४॥ के हे समृद्धिवंत ! तमारो जय जय होवो, हे कल्याणवंत ! तमोने भद्र थाओ, तमारां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र अतिचार रहित होवो, एमा भग मथाजो, नही जीतवामा आवे एटले जीतवाने घणी कठण एवीजे इंद्रियो तेने तमे जीतो, साधुधर्म पालो, सर्वविघ्न रहित होवो, उग्रविहार करवामां तमारु नाम थाओ, रागद्वेषरूप वे मल्लोने तमो हणो, तथा तपरूप धैर्य अने संतोष रूप लंगोटाने कसीने आठकर्मरूप शत्रुओनु मर्दन करो, उत्तम शुक्लध्याने करीने अप्रमत्तपणे रह्या थका विचरो, हे वीर ! तमे आराधना पताका ग्रहण करो, त्रणलोकरूप रंग एटले मल्लनो अखाडो तेमा अंधकार रहित एवु अनुपम केवलज्ञान, ते तमे पामो मोक्षरूप परमपद पामवाने के वली भगवाने देखाड्यो जे सूधो मार्ग ते मार्गे तमे जाओ केवीरीते जाओ तोके ? बावीश परिसह रूप फोजने हणीने जाओ, हे क्षत्रियोमां वृषभ समान, तमारो जय थाओ, घणादिवस, घणा पक्ष, घणामास घणावर्ष जय पामो वली वे पक्षनो एक मास, वेमासनी एकऋतु थाय, त्रण ऋतुये एक अयन थाय अर्थात् छ मासे एक अयन थाय एवा घणा अयन लगे, वली वे अयने एक वर्ष थाय छे, पांच वर्षनो एक संवत्सर थाय छे, एवा घणा संवत्सर पर्यंत परीसह तथा उपसर्गोथी भय नही राखो, वीजली सिंहादिकोना वीहामणा भय भैरवोने क्षमाये करीने सहन करो, तमोने धर्ममां कोइ विघ्न म करो, एवु कहीने जय जय शब्द करे ॥११५॥ पछी भगवान श्रीमहावीर स्वामी दिक्षा लेवा नीकल्या ते वखत हजारो नेत्रोथी देखता थका

अर्थात् हजारो लोको देखी रह्या छे, देखीदेखीने हर्ष पामे छे, हजारो लोको वचने करी स्तव ना करी रह्यां छे, हजारो लोकोना मनमां एवुं छे के घणा कालपर्यंत ए जीवता रहो, हजारो लोको विस्तारी विस्तारीने मनमां एवा मनोरथ करी रह्या छे के ए तीर्थंकर थाशे तेवारे एनी सेवा करीशुं, एमना कांति रूप गुण देखीने लोको एवुं चितवन करे छे के ए अमारो स्वामी थाउ, हजारो लोको पोताना जमणाहाथनी आंगुलीथी देखाडी रह्या छे के ए नगवान त्रिराज्या छे एवो कहेते थके, हजारो लोकोना एटले हजारो पुरुष हजारो स्त्रीयो अंजली सहित हाथ जोडीजोडीने प्रणाम करे छे ते जमणा हाथे लेते थके, हजारो गमे घरोनी श्रेणी प्रत्यें उल्लंघते थके, रूडा प्रकारे वीणा, हस्तताल, वाजित्र, गीत, शब्द ते मीठा मनोहर जयजय शब्दनी साथे मलेला एवा लोकोना स्वरें करीने सावधान होते थके, सर्व रूधिसहित, सर्व आमंवर सहित, सर्वबले सहित, सर्वसेना सहित, सर्ववाहन सहित, सर्वसमुदाय सहित, सर्वआदर सहित, सर्वसंपदा सहित, सर्वउत्सव सहित, देखवाने मनमां आवें एवा सर्वमलाप सहित, सर्वलक्ष्मी सहित, सुर्वसंन्रम सहित, सर्वनगरलोक सहित, सर्वनाटक सहित, सर्वतालेवर सहित, सर्वअंतेउर सहित, सर्वपुष्प गंधमाला घरेणाये सुशोनित, सर्व वाजानां घोष सहित, महोटी रूधि, द्युति, बल, वाहन, समुदाय सहित, महोटा नलां वाजां समकाल वाजतां थकां, शंख ढोल, पडह, फाल्लर, खरमुखी, हुंडुक्क, देवडुंडनी प्रमुख वाजानां प्रतिशब्द सहित, क्षत्रियकुंमपुरनगरनी वचमां थइने निकले, नीकली करीने जिहां ज्ञातषंडवन नामे उद्यान छे तिहा अशोकवृक्ष घणुंज रूडुं छे, तिहां आवे ॥ ११६ ॥ ॥ आवीनें अशोकवरवृक्षनी नीचे पालखी राखे, राखीने पालखीथी उतरें उतरीने पोतानां हाथथीज घरेणा माला प्रमुख अलंकारादि

उतारे, उतारीने ते घरेणा जे तेमना कुलमां वडेरी हसलक्षण स्रीते पोताना वस्रमा लीये, पछी पोताना हाथथीज पचमुष्टि लोच करे ते केश इन्द्रमहाराज पोते लइलइने खीरसमुद्रमां मूके लोचकरीने चउविहारी छठ एटले वेलानी तपस्या करे, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रनी साथे चन्द्रमानु योग आवे थके एकज शक्रेंद्रें आपेला देवदुष्य वस्त्र लइने, एकला रागद्वेष रहित तथा साधुना सथवारा रहित थका द्रव्यथी अने भावथी मुंडित थइने, गृहस्थपणानो त्याग करीने अणगारपणानो अंगीकार कर्यो ॥ ११७ ॥ ॥ हवे जे वखतें भगवान सामायिकनो उच्चार करे ते वखते शक्रेंद्र सर्व कोलाहल वाजित्र प्रमुख बंध करे पछी भगवान् नमोसिद्धाणं एवु कहीने करेमिसामाइय इत्यादि यावत्तस्सपडिक्कमामि इत्यादिक कहे इहा बीजो गुरु करवानो अभाव छे पोते स्वय चारित्र लीये छे माटे भंते ए पद कहे नही तीर्थंकरनो एवोज कल्प छे, ते माटे भंते पद न कहे, इहां भगवानने चोथु मन पर्यवज्ञान उपन्यु हवे सर्व इंद्र तथा देवो ते भगवानने नमस्कार करीने नंदीश्वरद्वीपे जइ अठाइ महोत्सव करीनें पोत पोतानें स्थानके गया, अने भगवाने पण पोताना भाइ नंदीवर्द्धन प्रमुखने पूछीने विहार कर्यो हवे स्वजनादिको पण ज्यासुधी भगवान नजरे देखाता हता त्यासुधी त्यांज उभारह्या पछी भगवानना गुण याद करता फूरता फूरता पोताने घेर आव्या ॥ इति कल्पव्याख्याने पंचमो वखाण समाप्त ॥ ॥ हवे भगवाने दीक्षा लइने पछी विहार कर्यो ते वखतमां बे घडी दिवस शेष बाकी रह्यो हतो तेवारे भगवान कुमारगामनी बाहेर काउस्सग्ग रह्या ते वखत एक हाली आव्यो तेणे पोताना बलदो भगवानने भलाव्या अने पोते घेर जइ जमीने केट लिएक वार रही पाछो तिहां आव्यो एटलामां आखो दिवस खेडवाथी थाकी गयेला बल


चित्र ३५
इन्द्र
भगवान्
नंदीवर्धन
राजा

गन करवा लागी एम भगवान पासेथी सुगंध मागवा लागा एवो उपसर्ग चार महीना [illegible] रह्यो तोपण भगवान क्षुभ्या नही मेरुनी पेरे अकंप रह्या ॥ ॥ हवे भगवान तिहांथी विचरता मोराक सन्निवेशने विषे सिद्धार्थराजा प्रभुना पिता तेनो मित्र कुलपति, दुईजंत नामा तापसने आश्रमे आव्या, तापस पण भगवानने देखी सामो मलवा आव्यो, तेने भग वत पण ढूकडा पूर्वपरिचयाभ्यास थकी हाथ पसारीने मल्या, पछी तेना आग्रहथकी नीराग चित्तथका एक रात्रि तिहां रह्या, फरी प्रभाते विहार करवा लागा, तेवारे ते तापस, पहोंचा डवा साथे चाल्यो अने आठ मास अन्यत्र विहार करीने चोमासुं पोताना आश्रमे रहेवानी प्रभुने विनंति करी, घणो आग्रह कर्यो तेवारे प्रभुये देशकाल विचारीने कह्यु के एमज थाउ एवुं कही पछी चार ज्ञाने सहित एवा प्रभु ते पृथिवीने विषे विहार करतां जेवारे चोमासुं आव्युं तेवारे ते तापसनी झुंपडीमां रहेवाने आव्या कुलपतियें तृणपलानुं झुपडुं प्रभुने रहेवा सारु आप्युं भगवान तेमां रह्या पण दैवयोगे वर्षाद न थयो तेवारे गामनी गायो प्रमुख ढोर भूखे मरतां थकां झूंपडीना तृणखलां खावा आवे ते जोइ बीजा तापसो तो पशुना समूहने हांकी काढे पण प्रभुतो मौन पणे रहे कोइ जानवरने तृणखलां खातां दूर करे नही, एम करता सर्व तृण पशुउ खाइ गयां तेवारे झुंपडुं उघाडुं देखी कुलपति बोल्यो के हे देवाणुप्रिया हे प्रभु ! पंखीउ पण पोताना माला साचवे छे अने तमे तो राजपुत्र थइ पोतानो आश्रम केम सां चवी शकता नथी ? एवी रीते कुलपतिने अप्रीति उपनी देखी भगवाने निर्धार्युं जे महारे अहीं आं रहेवु नही, पछी आशाढी पूनेमथकी पंदर दिवसे एटले श्रावण वदि अमावास्यायें चो मासाना पन्नर दिवस जातां प्रभुये तिहांथी विहार कर्यो तेथी उपज्या भगवतने न गणे

तरने मासीनो दीकरो कह्यो पण कोइक स्थानके एने काको करी पण लखेलो छे पछी इन्द्रमहाराज देवलोके गयो अने ग्वालीपण पोताने घेर गयो ॥ इतिग्वालीकृत उपसर्ग ॥ हवे प्रभातमां भगवान तिहांथी विहार करीनें कोल्लाग सन्निवेशें गया तिहां बहुलनामे ब्राह्मणने घरे कांस्य पात्रे खीरलइने प्रभुयें परमान्ने पारणुं कीधुं पात्र धर्म बतावबा सारु गृहस्थना कांस्य पात्रमां खीर लीधी तिहां पांचदिव्य प्रगट थाय ए भगवतनो अतिशय छे ते पांचदिव्य कहे छे एकतो आकाशमा ध्वजा विस्तार देवता करे, बीजो सुगंधि जलदेवता वर्षावे, त्रीजो फूल वर्षावे, ४ चोथो देवदुन्दुभी वजावे, पांचमो अहोदानमहोदान एवो ध्वनि करे, प्रकारांतरे क्यांएकतो साडीबार क्रोड सोनैया वरसावे एवा पाठ पांचमा दिव्य विषे लखेला छे इहांपण कोइक आचार्यना मतें पांचमुं वखाण पुरुयुं कहेवाय छे ॥ ॥ हवे प्रभुये जेवारे दीक्षा लीधी, तेवारे इन्द्रादिकोयें सुगंधितबावना चंदनादिकें करी भगवतने शरीरे लेप कर्यो छे, तेनो गंध, चार मास जाजेरा पर्यंत न जाय, ते वासनायें करी हजारो गमे भ्रमरादिक मदोन्मत्त थया थका भगवतना अंगोपांगने वेधे छे, महोटो उपद्रव करे छे कोनी पेरे तो के? जेम कामी पुरुष कामांध थया थका स्त्रीने आलिंगन देता तेना गलस्थल होठादिकने विषे अनुकूल पणे चुंबन करे, नख मारे तेम भमरापण वासनायें अंधधुंध थया थका, भगवतना शरीरना अवयवें डंकमारे छे ए दृष्टांत कह्यु पण अहीयां एटलो फेर छे, जे स्त्री तो कामी पुरुषथी हारी जाय, परंतु भगवान् तो भमरानो एटलो बधो उपद्रव छता पण वज्रऋषभनाराच संघयणना प्रतापथी मेरुनी पेरे अभंग रहे छे अथवा बीजे अर्थें अजाण्या कामी पुरुष, गंध उपर मूर्छा पाम्या थका गंध लेवाने अर्थें, भगवाननां शरीर साथे पोतानु शरीर घसवा लाग्या तथा कामी स्त्रीयो आवीने

गन करवा लागी एम नगवान पासथी सुगंध ... ... रह्यो तोपण नगवान मग्या नहीं मेरुनी पेरे अकप रह्या ॥ ॥ हवे नगवान तिहांथी विचरता मोराक सन्निवेशने विषे सिद्धार्थराजा प्रजुना पिता तेनो मित्र कुलपति, डुईजंत नामा तापसने आश्रमे आव्या, तापस पण नगवानने देखी सामो मलवा आव्यो, तेने नगवत पण ढूकडा पूर्वपरिचयान्यास थकी हाथ पसारीने मल्या, पछी तेना आग्रहथकी नीराग चित्तथका एक रात्रि तिहां रह्या, फरी प्रनाते विहार करवा लागा, तेवारे ते तापस, पहोंचाडवा साथे चाल्यो अने आठ मास अन्यत्र विहार करीने चोमासुं पोताना आश्रमे रहेवानी प्रजुने विनंति करी, घणो आग्रह कस्यो तेवारे प्रजुये देशकाल विचारीने कह्यु के एमज थाउ एवु कही पछी चार ज्ञानें सहित एवा प्रजु ते पृथिवीने विषे विहार करतां जेवारे चोमासु आव्युं तेवारे ते तापसनी फुंपडीमां रहेवाने आव्या कुलपतियें तृणपलानुं फुपडुं प्रजुने रहेवा सारु आप्युं नगवान तेमां रह्या पण दैवयोगे वर्षाद न थयो तेवारे गामनी गायो प्रमुख ढोर नूखें मरतां थका फूपडीना तृणखलां खावा आवे ते जोइ बीजा तापसो तो पशुना समूहने हांकी काढे पण प्रजुतो मौन पणे रहे कोइ जानवरने तृणखलां खातां दूर करे नहीं, एम करतां सर्व तृण पशुउ खाइ गयां तेवारे फुपडुं उघाडुं देखी कुलपति बोल्यो के हे देवाणुप्रिया हे प्रजु ! पंखीउ पण पोताना माला साचवे छे अने तमे तो राजपुत्र थइ पोतानो आश्रम केम सांचवी शकता नथी ? एवी रीते कुलपतिने अप्रीति उपनी देखी नगवाने निर्धार्युं जे महारे अहींआं रहेवु नहीं, पछी आशाढी पूनेमथकी पंदर दिवसे एटले श्रावण वदि अमावास्याये चोमासाना पन्नर दिवस जातां प्रजुयें तिहांथी विहार कस्यो तेथी उपज्या नगवतने न गणे

तरने मासीनो दीकरो कह्यो पण कोइक स्थानके एने काको करी पण लखेलो छे पछी इन्द्रमहाराज देवलोके गयो अने ग्वालीपण पोताने घेर गयो ॥ इतिग्वालीकृत उपसर्ग ॥ हवे प्रजातमा जगवान तिहांथी विहार करीने कोल्लाग सन्निवेशे गया तिहा बहुलनामे ब्राह्मणने घरे कांस्य पात्रे खीरलइने प्रजुयें परमान्ने पारणुं कीधु पात्र धर्म बतावबा सारु गृहस्थनां कांस्य पात्रमां खीर लीधी तिहां पांचदिव्य प्रगट थाय ए जगवतनो अतिशय छे ते पांचदिव्य कहे छे एकतो आकाशमां ध्वजा विस्तार देवता करे, बीजो सुगंधि जलदेवता वर्षावे, त्रीजो फूल वर्षावे, ४ चोथो देवडुन्नी वजावे, पांचमो अहोदानमहोदान एवो ध्वनि करे, प्रकारांतरे क्याएकतो साडीबार क्रोड सोनैया वरसावे एवा पाठ पांचमां दिव्य विषे लखेला छे इहांपण कोइक आचार्यना मतें पांचमुं वखाण पुरुथयु कहेवाय छे ॥ ॥ हवे प्रजुये जेवारे दीक्षा लीधी, तेवारे इन्द्रादिकोयें सुगंधितबावना चंदनादिकें करी जगवतने शरीरे लेप कर्यो छे, तेनो गंध, चार मास जाजेरा पर्यंत न जाय, ते वासनायें करी हजारो गमे ज्रमरादिक मदोन्मत्त थया थका जगवतना अंगोअंगने वेधे छे, महोटो उपद्रव करे छे कोनी पेरे तो के? जेम कामी पुरुष कामांध थया थका स्त्रीने आलिंगन देता तेना गलस्थल होठादिकने विषे अनुकूल पणे चुंबन करे, मंख मारे तेम ज्रमरापण वासनायें अंधधुंध थया थका, जगवतना शरीरना अवयवे मंकमारे छे ए दृष्टांत कह्यु पण अहींआ एटलो फेर छे, जे स्त्री तो कामी पुरुषथी हारी जाय, परंतु जगवान् तो ज्रमरानो एटलो बधो उपद्रव छता पण वज्रऋषभनाराच संघयणना प्रतापथी मेरुनी पेरे अडग रहे छे. अथवा बीजे अर्थे अजाण्या कामी पुरुष, गंध उपर मूर्छा पाम्या थका गंध लेवाने अर्थे, जगवाननां शरीर साथे पोतानु शरीर घसवा लाग्या तथा कामी स्त्रीयो आवीने आलि

गन करवा लागी एम नगवान पासेथी सुगंध मागवा लागा एवो उपसर्ग चार महीना जाजेरा रह्यो तोपण नगवान क्ग्या नही मेरुनी पेरे अकप रह्या ॥ ॥ हवे नगवान तिहांथी विचरता मोराक सन्निवेशने विषे सिद्धार्थराजा प्रनुना पिता तेनो मित्र कुलपति, दुईजत नामा तापसने आश्रमे आव्या, तापस पण नगवानने देखी सामो मलवा आव्यो, तेने नग वत पण ढूकडा पूर्वपरिचयान्यास थकी हाथ पसारीने मल्या, पढी तेना आग्रहथकी नीराग चित्तथका एक रात्रि तिहां रह्या, फरी प्रनाते विहार करवा लागा, तेवारे ते तापस, पहोचा उवा साथे चाल्यो अने आठ मास अन्यत्र विहार करीने चोमासु पोताना आश्रमे रहेवानी प्रनुने विनंति करी, घणो आग्रह कस्यो तेवारे प्रनुये देशकाल विचारीने कह्यु के एमज थाउ एवुं कही पढी चार ज्ञानें सहित एवा प्रनु ते पृथिवीने विषे विहार करतां जेवारे चोमासुं आव्युं तेवारे ते तापसनी फुंपडीमां रहेवाने आव्या कुलपतिये तृणपलासु फुंपडुं प्रनुने रहेवा सारु आप्युं नगवान तेमां रह्या पण दैवयोगे वर्षाद न थयो तेवारे गामनी गायो प्रमुख ढोर नूखे मरतां थकां फूंपडीना तृणखलां खावा आवे ते जोइ बीजा तापसो तो पशुना समूहने हांकी काढे पण प्रनुतो मौन पणे रहे कोइ जानवरने तृणखलां खातां दूर करे नहीं, एम करतां सर्व तृण पशुउ खाइ गयां तेवारे फुपडुं उघाडुं देखी कुलपति बोल्यो के हे देवाणुप्रिया हे प्रनु ! पखीउ पण पोताना माला साचवे ढे अने तमे तो राजपुत्र थइ पोतानो आश्रम केम सां चवी शकता नथी ? एवी रीते कुलपतिने अप्रीति उपनी देखी नगवाने निर्धास्यु जे महारे अही आं रहेवुं नहीं, पढी आशाढी पूनेमथकी पंदर दिवसे एटले श्रावण वदि अमावास्याये चो मासाना पन्नर दिवस जातां प्रनुये तिहांथी विहार कस्यो तेथी उपज्या नगवतने न गणे

चोमासुं एवु कहेवाणु तिहां भगवतें पांच अभिग्रह लीधा, ते कहे छे एक अप्रीति उपजे तिहां न रहेवु. बीजु ज्यांसुधी छद्मस्थपणुं छे त्यांसुधी निरंतर काउस्सग्गमांज रहेवु, त्रीजु गृहस्थनो विनय न करवो, चोथुं यथा संभवे मौन पणे रहेवु, कायाये करीउंचु उभाउभ रहेवु पण सुवु नही पांचमुं सर्वदा हाथमां भोजन करवु, एवा अभिग्रह सहित विचरतां थकां शूल पाणि यक्षने देहरे अस्थिग्रामे प्रथम चोमासुं रहेवा पधार्या, त्यां अत्यंत उपसर्ग सहन करीने शूलपाणि यक्षने प्रति बोध्यो, तेनी कथा कहे छे धनदेव नामे सार्थवाह पांचसें गाडां मालनां भरी, व्यापार करवा कोइ गामांतरे जतो हतो, मार्गमां वेगवती नामे बहुवालुका नदी वर्द्धमान गामपासे आवी, तिहां उनालाना दिवस हता तेथी कोइ बलद ते रेती भरेली नदी मांथी गाडुं ताणीने चाली शके नही पण ते बलदोमां एक बलद घणो जोरावर हतो तेणे ते पांचसें गाडां नदीथकी उतारी पहेले पार कर्या, परंतु पोते त्रुटी पड्यो, तेथी चाली न शक्यो ते वारे सार्थवाहें चारा पाणीने अर्थे वर्द्धमान गामना अधिकारि शेठ, पटेल, गामोद, पटवारी, प्रमुख पंचने ते धोरी भलाव्यो तेने घृत गोल तृण जलादिक सारु घणु धन आप्युं, वली ते बलदनी चाकरी करवानी घणी भलामण आपीने शेठ तिहांथी चाल्यो गयो पछवाडेथी ते गामना लोकोये ते बलदनी सार संभाल काइ पण कीधी नही, शेठनुं धन आपेलुं सर्व वांटीने खाइ गया. पछी ते बलद भूख तृषायें पीड्यो थको अकाम निर्ज्जरायें मरण पामीने व्यंतर देवोमां शूलपाणीनामे यक्ष थयो, तेणे अवधिज्ञानें पाछलु वृत्तांत जोयु, पछी गामनां लोको उपर रूठोथको मरकी विकूर्वी तेथी घणां माणस अनें ढोर मरवा लाग्यां तिहां कोइ माणसने बालवावालो पण मले नही जे कोइ मरे तेने कोलो गामनी बाहेर नाखी जाय तेथी त्यां हाडकांना ढगला थइ पड्या तिहां आवजाव


चित्र ३७
शूलपाणी यक्ष
सिद्धार्थव्यंतर
भगवान्
पूजक

करनारा लोकोये तेनुं अस्थिगाम एवुं नाम पाडी दीधुं पछी घणा माणसोने मरता देखीने गामनां लोके मली तेने आराध्यो तेवारे यक्ष प्रगट थइ आकाश वाणीये करी बोलवा लाग्यो के हु बलदनो जीव छुं, तमे म्हारुं द्रव्यखाइने कांइपण चाकरी करी नही तेथी तमे मने कुमरणे मार्यो छे माटे हुं कोप्यो छुं तो तमे हवे म्हारा नामनुं हाडका उपर देहेरुं करावो, तेमां वृषनना रूपें शूलशस्त्र हाथमा आपीने म्हारी मूर्त्ति थापो, तेनी पूजा करो तो रोग पण मटशे, अने जीवता पण रहेशो नहींकां सर्व मरण पामशो एवी वात सांभलीने लोकोयें मरण भयथी तेनी प्रतिमां करी दहेरे थापी पूजा करी, तेथी मरकी उपशम थइ हवे भगवान् ते शूलपाणी नामा यक्षने प्रति बोधवाने माटे तेने देहेरे आव्या, तेवारे ते यक्ष महादुष्ट छे, कोइने पोताना देहेरे रात्र वास करवा आपे नही, तेथी ते यक्षना देरानो पूजारो इंद्रशर्मा नामें विप्र हतो, तेणें भगवतने रहेवानी मनाइ करी, तेम बीजा लोकोये पण वार्या, तो पण प्रभु मौनपणे तिहां रात्रे काउस्सग रह्या, ते देखीने यक्ष रूठो अने सध्या समयथी उपसर्ग करवा लागो, तिहां प्रथम तो भरावबा सारुं अट्टहास्य कर्युं, पछी हस्तीनुं रूप करी उछाल्युं, पिशाचनां रूप करी छरी कहाडी बीवराव्युं, तेमज सर्प्प थइने फंक मार्यो इत्यादि घणा उपसर्ग करवा मांड्या पण भगवत लगार मात्र क्षोभ न पाम्या तेवारे वली मस्तक, कान, नासिका, आंख, दांत, होठ, पूठ, नख, ए आठ स्थानके विविध वेदना उपजावी तथापि भगवतने अक्षोभ जाणी, यक्ष प्रतिबोध पाम्यो अने प्रभुनी भक्ति करवा लाग्यो, एटलामां सिद्धार्थ व्यंतर आव्यो, तेणे कह्यु के अरे शूलपाणि यक्ष ! आ ते शुं कर्युं ? तुं नथी जाणतो के ए सिद्धार्थ राजानो पुत्र छे, म्होटी समतानो भंडार छे, जो इंद्रमहाराज जाणशे, तो तने बाहिर काढी

मूकशे, ते सांजली जगवाननी शांतमुश देखी वली पण यक्षे पोतानो अपराध खमाव्यो अने प्रजु आगल गीत गान करवा लागो तिहां ते यक्ष समकेत पाम्यो इति ॥ हवे जगवत पण रात्रिना चार प्रहर कदर्थना पाम्या तेना श्रमे करी काउस्सग्गमांज पाछली रात्रे बे घडी निद्रा आवी गई, तिहां निद्रामां दश स्वप्न प्रजुये दीगं, ते कहे ठे एक तालपिशाच हण्यो, बीजु उजलो कोकिला पक्षी अने त्रीजु पचवर्ण विचित्र कोकिलानु जोडु, सेवा करतुं दीतु, चोथी फूलनी माला बे दीठी, पांचमुं गायनो वर्ग दीठो, ठहुं पद्मसरोवर दीतु, सातमुं समुद्र भुजाये तर्यो दीठो, आठमु सूर्य ऊगतो दीठो, नवमुं आंत्रडे वींट्यो मानुष्योत्तर पर्वत दीठो, दशमुं पोते मेरुपर्वते चढ्या एवु दीठो, ए दश स्वप्न देखीने जगवत प्रजाते जाग्या, ते वखते लोक पण एवु जाणताहता जे ए साधु रात्रे मरीजशे तेथी प्रजातना जोवा आव्या तिहां जगवाननो देव महिमा देखीने लोकोये जगवतने पूज्या, घणां हर्ष पाम्या, यक्ष पण नाटकादिक पूजा सेवा करतो हवो, तेथी लोक चितववा लागा जे साधुने उपसर्ग करी हवे गीत गान करे ठे, पुष्पादिकें करी पूजे ठे त्यां लोके पण स्वामीनो घणो महिमा कर्यो, एवा समयने विषे श्रीपार्श्वनाथनो श्रावक उत्पलनामा निमित्तियो ते पण तिहां आव्यो प्रजुने वांद्या, अने कहेवा लागो जे हे स्वामि ! तुमें पाछली रात्रे स्वप्न दीठां तेनु फल कहुं बु ॥ हे प्रजु ! तमे जे ताल पिशाच हण्यो, तेथी तमे तरत मोहनीय कर्मने हणशो वली श्वेत कोकिलापखी दीठो, तेथी अक्षोन्न शुक्लध्यान ध्यावशो पाचवर्णी विचित्र कोकिल पखीनुं जोडलुं दीतु, तेथी द्वादशांगी प्ररूपशो तथा गायनो वर्ग दीठो तेथी अनुपम चतुर्विध संघनी थापना करशो वली तमे देवताये सेवित पद्मसरोवर दीतु,तेथी चार निकायना देवता तमारी सेवा करशे,वली मेरुपर्वतनी चूलिका उपर

तमे चढथा एवु दीठुं, तेथी तमे देवोये रचित सिंहासने वेशी, धर्मोपदेश देशो, धर्मनी प्ररूपणा करशो वली सूर्यनुं मंडल दीठुं, तेथी केवलज्ञान पामशो,तथा मानुष्योत्तर पर्वत आंत्रडे वींट्यो दीठो, तेथी जगत्‌मां जशकीर्त्तिनुं मंडाण पामशो तथा प्रतापवत देवनिकाये करी सेवनीय थाशो पोतानी भुजाबलें समुद्र तर्‍यो दीठो तेथी तमे संसार रूप समुद्रने तरशो, हे भगवन्! तमे फूलनी मालानुं युगल दीठु तेनो अर्थ हुं नथी जाणतो माटे तमेज उपकार करीने कहो तेवारे भगवत मौन छे माटे छद्मस्थावस्थाने विषे बोल्या नहीं,तेथी सिद्धार्थ व्यंतरो भगवानना मुखमां प्रवेश करीने कहेवा लागो के फूलनी बे माला दीठी माटे श्रावकनो अने यतिनो ए बे प्रकारना धर्मनी प्ररूपणा हुं करीश एवीरीते फल सांभलीने सर्वलोक भगवानने वदन करी पोतपोताने स्थानके गया हवे भगवाने निरविघ्न पणे पन्नरदिवस न्यून प्रथम चोमासुं तिहां पूर्ण करीने मेरुनी परे धैर्य धरता समता रूप रसमयथकां चोमासीपारणुकरी तिहांथी विहार कर्‍यो ए प्रथम चोमासुं ॥१॥ तिहांथी विहार करी मोराकसन्निवेशें उद्यानमांआवी काउस्सग्गे रह्या तिहां भगवाननो महिमाकरवा सारुं सिद्धार्थ व्यंतरो स्वामीना शरीरमां संक्रमीने लोक आगल भूत, भविष्य अने वर्त्तमान संबधि निमित्त भांखें छे तेथी त्यांनां लोक भगवाननी सेवा करवा लागा हवे ते गाममां अछंदक नामा निमित्तियो रहे छे ते भगवाननी इर्ष्या करवा लाग्यो केमके लोक तेने कहेवा लागा के देवार्य सरखो तुं निमित्त जाणतो नथी मे काले खेत्रमां सर्प दीठो ते तेणे कही दीधो तथा हुं जमीने गयो हतो ते कही दीधुं तेवारे ते अछंदक नामा निमित्तियो क्रोधकरी भगवाननुं निमित्त जूठुं करवा सारुं हाथमां तृण लइने प्रभुने पूछवा लागो के हे आर्य आ तृण छेदाशे, किंवा नहीं, ते सांभली सिद्धार्थे ना कही तेवारे

मूकशे, ते सांजली जगवाननी शांतमुद्रा देखी वली पण यक्षे पोतानो अपराध खमाव्यो अने
प्रज्ञु आगल गीत गान करवा लागो तिहां ते यक्ष समकेत पाम्यो इति ॥ हवे जगवत पण रा
त्रिना चार प्रहर कदर्थना पाम्या तेना श्रमे करी काउस्सग्गमांज पाछली रात्रे बे घडी निद्रा
आवी गई, तिहां निद्रामां दश स्वप्न प्रज्ञुये दीठा, ते कहे छे एक तालपिशाच हण्यो, बीजुं उ
जलो कोकिला पक्षी अने त्रीजु पचवर्ण विचित्र कोकिलानु जोडु, सेवा करतु दीठुं, चोथी
फूलनी माला बे दीठी, पांचमुं गायनो वर्ग दीठो, छठ्ठु पद्मसरोवर दीठु, सातमुं समुद्र जुजा
ये तर्यो दीठो, आठमुं सूर्य उगतो दीठो, नवमुं आंत्रडे वींट्यो मानुष्योत्तर पर्वत दीठो, दशमुं
पोते मेरुपर्वते चढ्या एवु दीठो, ए दश स्वप्न देखीने जगवत प्रजाते जाग्या, ते वखते लोक पण
एवु जाणताहता जे ए साधु रात्रे मरीजशे तेथी प्रजातना जोवा आव्या तिहां जगवाननो देव
महिमा देखीने लोकोये जगवतने पूज्या, घणा हर्ष पाम्यां, यक्ष पण नाटकादिक पूजा सेवा
करतो हवो, तेथी लोक चितववा लागा जे साधुने उपसर्ग करी हवे गीत गान करे छे, पु
ष्पादिकें करी पूजे छे त्यां लोके पण स्वामीनो घणो महिमा कर्यो, एवा समयने विषे श्रीपा
र्श्वनाथनो श्रावक उत्पलनामा निमित्तियो ते पण तिहा आव्यो प्रज्ञुने वांद्या, अने कहेवा लागो
जे हे स्वामि ! तुमें पाछली रात्रे स्वप्न दीठा तेनु फल कहुं छु ॥ हे प्रज्ञु ! तमे जे ताल पिशाच
हण्यो, तेथी तमे तरत मोहनीय कर्मनें हणशो वली श्वेत कोकिलापंखी दीठो, तेथी अक्षोज
शुक्लध्यान ध्यावशो पाचवर्णा विचित्र कोकिल पखीनु जोडलु दीठु, तेथी द्वादशांगी प्ररूपशो
तथा गायनो वर्ग दीठो तेथी अनुपम चतुर्विध संघनी थापना करशो वली तमें देवताये सेवित
पद्मसरोवर दीठुं,तेथी चार निकायना देवता तमारी सेवा करशे,वली मेरुपर्वतनी चूलिका उपर

तमे चढया एवु दीठुं, तेथी तमें देवोयें रचित सिंहासने बेशी, धर्मोपदेश देशो, धर्मनी प्ररूपणा करशो वली सूर्यनु मन्डल दीठुं, तेथी केवलज्ञान पामशो,तथा मानुष्योत्तर पर्वत आंत्रडे वींट्यो दीठो, तेथी जगत्मां जशकीर्त्तिनुं मन्डाण पामशो तथा प्रतापवत देवनिकाये करी सेवनीय थाशो पोतानी भुजावडें समुद्र तस्यो दीठो तेथी तमे संसार रूप समुद्रने तरशो, हे भगवन्! तमें फूलनी मालानु युगल दीठु तेनो अर्थ हुं नथी जाणतो माटे तमेज उपकार करीने कहो तेवारें भगवत मौन छे माटे छद्मस्थावस्थाने विषे बोल्या नही,तेथी सिद्धार्थ व्यंतरो भगवानना मुखमां प्रवेश करीने कहेवा लागो के फूलनी बे माला दीठी माटे श्रावकनो अने यतिनो ए बे प्रकारना धर्मनी प्ररूपणा हुं करीश एवीरीतें फल सांभलीने सर्वलोक भगवानने वदन करी पोतपोताने स्थानके गया हवे भगवाने निरविघ्न पणे पन्नरदिवस न्यून प्रथम चोमासुं तिहां पूर्ण करीने मेरुनी परे धैर्य धरता समता रूप रसमयथकां चोमासीपारणुकरी तिहांथी विहार कर्यो ए प्रथम चोमासुं ॥१॥ तिहांथी विहार करी मोराकसन्निवेशें उद्यानमांआवी काउस्सग्गे रह्या तिहां भगवानना महिमाकरवा सारुं सिद्धार्थ व्यंतरो स्वामीना शरीरमां संक्रमीने लोक आगल भूत, भविष्य अने वर्त्तमान संबंधि निमित्त भाखे छे तेथी त्यांनां लोक भगवाननी सेवा करवा लागा हवे ते गाममां अछंदक नामा निमित्तियो रहे छे ते भगवाननी ईर्ष्या करवा लाग्यो केमके लोक तेने कहेवा लागा के देवार्य सरखो तुं निमित्त जाणतो नथी मे काले स्वेत्रमां सर्प दीठो ते तेणे कही दीधो तथा हुं जमीने गयो हतो ते कही दीधुं तेवारे ते अछंदक नामा निमित्तियो क्रोधकरी भगवाननुं निमित्त जूठुं करवा सारुं हाथमां तृण लइने प्रभुने पूछवा लागो के हे आर्य आ तृण छेदाशे, किवा नही, ते सांभली सिद्धार्थें ना कही तेवारे

ते छेदवा लागो एटलामां इंद्रें अवधियें जोइने नगवतनो महिमा राखवाने ते निमित्तिआनी आगली छेदी नाखी तेथी तृणत्रुट्यु नही निमित्तिउं विलखो थयो पछी सिद्धार्थें लोक आगल कह्यु के ए निमित्तिउं चोर छे, कांइ जणोनथी एणे वीराघोष कर्मकरनो दश पलनो कांसानो पात्र चोरीने खजुरीनावृद्ध हेठे मात्यो छे तथा इद्रशर्मा ब्राह्मणनो बोकडो मारीने तेनुं मांस एणे खाधु छे, तेनां अस्थि एना घरनी पछवाडे बोरडीनाफाड नीचे मात्यां छे तथा त्रीजु दूषण जे एमा छे ते हु नही कहीश एनी स्त्रीज केहेशे एवु सांजली लोके सर्ववातसाची मानी एनी स्त्रीने जइ पूछ्यु, तेवारे ते स्त्री बोली के ए पापिष्ट, पोतानी जगिनीने जोगवे छे, एवी पोतानी निदानी वातो प्रसिद्ध थयाथी अछंदक लज्जापाम्यो अने गाममां फिट फिट थयो थको प्रजुपासे आवी विनति करी के तमे त्रैलोक्य पूजनीक छो, हु अहींआंज सुखे उदर पूरणा करु छु ने जीवु छु नगवतें अप्रीति जाणी त्याथी विहार कर्यो ॥ ॥ हवे नगवान श्रीमहावीर स्वामी एक वर्ष उपर एक महीना सुधीतो इंद्रे आपेला देवडुष्य वस्त्र सहित रह्या अने ते वार पछी वस्त्र रहित अचेलक थया हाथमा नोजन करे पण अतिशयना योगथी नागा देखाय नही हवे वस्त्र रहित शीरीते थया ते कहे छे नगवाने जेवारे वरसीदान दीधु तेवारे सिद्धार्थराजानो मित्र सोमदेव नामा ब्राह्मण जन्मथी दारिद्रीछे ते परदेश धनकमाववा गयो हतो पण क्यांयें धन पाम्यो नही तेवारे वली नगवाने दीक्षा लीधा पछी जेवो गयो तेवो ठाले हाथे पाछो पोताने घेर फरी आव्यो पण एक कोडी मात्र कमाइ आव्यो नही दारिद्रीज रह्यो तेवारे तेनी स्त्रीये तेने घणो निभ्रछ्यो अने कहेवा लागी के अरे निर्नाग्य तुं किहां गयो हतो तु जिहां गयो हतो तिहां आवोने आवो दारिद्री रह्यो जेम घडो जिहां जाय

तिहां पाणीभरे तथा कपासीयो जिहां जाय तिहां लोढाय तेम तुं पण जिहां गयो तिहां दरिद्री रह्यो पण दारिद्र्य ताहारो केडो मूकतुं नथी जेम कोइ दरिद्री पुरुष धन कमावाने अर्थे परदेशे जवा तैयार थयो तेवारे ते पुरुषे दारिद्र्यने कह्यु के ॥ रे दालिद्दवियक्खणा, वत्ता इक्क सुणिय, हम देसांतर चल्लिया, तुं घर घरे रहिज्ज ॥१॥ एटले हे दारिद्र्य हे विचक्षण, तुं एक म्हारी वात कहुं ते सांभल जे हवे हुं देशांतर जावं छुं अने तुं घरमांज थिरथइ रहेजे एवां तेना वचन सांभली दारिद्र्य बोल्युं ॥ पडिवन्नो गिरुआ तणो, अविहड जाण सुजाण ॥ पावांतरे ॥ पालिज्जइ सुविहाण ॥ तमे देसांतर चल्लिया, तो अमे आगेवान ॥ १ ॥ अर्थ –हे भाइ सांभलो हुं तो महोटानो विनय मूकुं नही केमके जे उत्तमपुरुष अंगीकार करे ते अविचल जावजीव अंगीकार करे तेमाटे हे भाइ ! जो तमे देशांतर जाशो तो हुं पण आगेवान थइने तमारी साथे आगलनुं आगल चालुं छुं तेम हे निर्भाग्य ! ताहारी पछवाडे पण एमज दारिद्र्य रहे छे तुं हमणाघरमां आव्यो छे पण घरमां तो कांइ पण नथी, खावाने अन्न नथी, पीवाने पाणी नथी, भुखे मरती बेठी छुं, क्यांथी ताहारा वास्ते खावा सारुं लइ आवु, घरमां तो शाकमां नाखवाने मिरची अने मीठुं पण नथी, मात्र दारिद्र लहेरो ले छे ॥ यत ॥ जिणघर भेंस न रीके पाडो, जिणघर बलद न दीसे गाडो ॥ जिणघर नारि न चूडी खलके, तिणघर दारिद्र लेहेरि लहके ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – जेना घरमां भेस सहित पाडो रीकतो न होय, वली जेना घरमां बलद अने गाडु दीसतुं न होय, वली जेनां घरमां स्त्रीना हाथमां चूडी खलकती न होय, तेना घरमां दारिद्र लहेरे लहकतु जाणवु ते माटे तुं घरमां आवीश नही आवीश तो भूखे मरीश अरे दारिद्री हजी हमणा पण तुं भगवान पासें जइश तो कांइक पण मलशे

एवां स्त्रीनां वचन सांभळी ते ब्राह्मण, भगवान पासे आव्यो अने बे हाथजोडी हीनस्थितिये थको दीन वचने करी श्रीवीरभगवानने पगे लागीने विनति करतो हवो के हे रूपानाथ,' हे परदुःखभंजक' हे परमार्थना करनार' हे महाराजसिद्धार्थना पुत्र' हे दारिद्र्य रूपवेलडीना छेदक' तुं म्हारी मूळथकी विनति सांभळीने म्हारो निस्तार कर्य, आ म्हारो दारिद्रूप बांधव, म्हारो सहायी, म्हारी साथे जन्म्यो, म्हारी साथे वध्यो, वळी परणवाने समये पण म्हारा पहेलां म्हारी स्त्रीने एणे परणी, शुं घणुं तमारा आगळ कहुं ए दारिद्र्य म्हारा शरीरनी छायानी पेरे तथा पोतानी बांधेली कर्मप्रकृतिनी पेरे एक क्षण मात्र पण म्हारो केड मूकतुं नथी मे धन उपार्जन करवा निमित्ते परदेश चालवाने समये एने घणो घणो वर्ज्यो तो पण ए म्हारी साथेज चाल्यो, में गंगामां स्नान कर्युं तो पण एणे म्हारी साथेज स्नान कर्युं, मे यमुना, नर्मदा सवधि तीर्थकर्या तो एणे पण म्हारी साथेज तीर्थकर्या, माटे एना प्रभावथी परदेशमां घरघरने विषे लोकोनी आगळ भिक्षा मागती वखत हुं तो सर्वने देखुं परंतु दारिद्र्य बांधवना प्रतापथी हुं प्रत्यक्ष प्रगट छतां पण मने कोइ पण देखे नही ॥ यदुक्तं ॥ दीसंतिजोग सिद्धा, अंजनसिद्धा य केइ दीसंति ॥ दारिद्दजोग सिद्धा, पासेविठिया न दीसंति ॥ १ ॥ पुनरपि ॥ भोदारिद्र्यनमस्तुभ्यं, सिद्धोहंतवदर्शनात् ॥ अहंसर्वंप्रपश्यामि, नमांपश्यति कश्चन ॥२॥ ए बे श्लोकोनो भावार्थ कहे छे जे योगसाधीने सिद्धथया तेपण नजरे देखाय छे, वळी जे आंखोमां अंजन करी अदृश्य थाय एवा सिद्ध जे होय तेपण कोइएक प्रयोगथी प्रगट नजरे देखाय, परंतु दारिद्र्यरूप योगे करीने जे सिद्धथया ते पुरुष जो पासे उभारह्या होय तो पण देखाय नही ते माटे हे दारिद्र्य' तुजने नमस्कार थाओ जे हुं ताहारा दर्शनथी सिद्धपुरुष

थयो तेथी हुंतो सर्वने देखु हुं पण मनेतो कोइ पण देखतो नथी ॥ २ ॥ ए कारण माटे हे स्वामी ! ते दारिद्र्य बांधवना प्रसादथी हुं परदेशने विषे घणो जम्यो, घणो उद्यम कस्यो, घणा शेठ साहुकारोनी चाकरी करी पण, हुं भाग्य हीन तेथी एक फूटी कोडी मात्र पण धन पाम्यो नही जेवो घरथी गयो हतो तेवोज घेर पाछो आव्यो तेथी मे हजी महारा घरमां प्रवेश न कस्यो तेनी पहेलांज तेणे माहारा घरमां प्रवेश कस्यो तेना प्रतापथी अनार्जणी एवी जे महारी स्त्री ते क्रोध करी मुसललेइने महारी सन्मुख मने मारवाने दोडी आवी तेवारे मे जाण्युंजे मंगलिक करीने मुजने वधावे छे पण तेणेतो पासे आवीने एवां कठोर अने निष्ठुर वचन बोलवा मांड्यां अने कह्युके हे निर्भाग्य शिरोमणी ! अरे जन्मदरिद्री अरे निर्गुणनाथ ! अरे ढोलण ! हुं तुजने धनविना साक्षात् दारिद्री रूपनें शुंकरुं ! तुं परदेशें गयो थको पण कांइ लाव्यो नही महारे पण ताहारा दारिद्र्य रूप भाइनां सहायथी ॥ यत ॥ अन्नंनास्त्युदकंनास्ति, गृहे नास्ति युगंधरौ ॥ शाकमध्येलवणंनास्ति, तन्नास्तियत्तुज्यते ॥ १ ॥ भावार्थ – स्त्री कहे छे के ताहारा बांधवना सहायथी महाराघरमां अन्नपण खावाने नथी अने पाणीपण पीवाने नथी, जुवार पण नथी शाकमां नाखवाने मीठु पण नथी एवुं कांइ पण घरमां नथी के जेथी तुजने आदरकरी घरमां वेसाडीने जमाडुं महाराघरमां तो एक दारिद्र्य लहके छे वली ब्राह्मणी कहे छे रे ढोला, धनेकरीने जगतमां मानीता थाय छे, पण धनविना जगतमां कोइ कोइने पूछतु नथी, यदुक्तं ॥ धनैर्दुष्कुलीना कुलीनाभवति, धनैरेवपापात्पुन र्निस्तरति ॥ धनिभ्यो विशिष्टोन लोकेपिकश्चित् धन प्रार्जयध्वंधनं प्रार्जयध्व ॥ १ ॥ भावार्थ– धनेकरीने हीणाकुलवालो पण उत्तम कुलवान कहेवाय, वली धनेकरीने पापथकी निस्तार पामे, धन

वान होय तेज जगतमां महोटो कहेवाय, ते कारण माटे धनउपार्जन करवानो उद्यम पुरुपने श्रेष्ट ले वली धनविना जीवतो थको पण पुरुप मडदा समान ले ॥ यडुक्तं ॥ धनमार्जय काकुस्थ, धनमूलमिद जगत् ॥ अतरनैवपश्यामि, निर्द्धनस्य मृतस्यच ॥ १ ॥ जावार्थ – जेवारे रामचड्जीने वनवास थयो तेवारे विचाखु जे वसिष्ट रुपिने नमस्कार करीने चालीये तेवारे जिहां कदलीवनमां वसिष्ट रुपि वेग ले तिहा जइ रामचड्जीये नमस्कार कस्यो परतु वसिष्ट रुपिये नेत्र उघाडीने सामुं पण जोयु नही कारण के रामचड्जीनी पासे ते वखत धनकांइ पण न हतु पली जेवारे लंकाजीतीने चतुरगिणी सेना लइ धनधान्य सहित पाला आव्या ते वखत वसिष्ठ रुपि सात आठ पगला सामा चाली आव्या तेवारे रामचड्जी बोल्या के तेहज हु रामचड़ लु अने आ तेनु तेज कदलीवन तथा तमे वसिष्टरुपि पण तेना तेज लो परतु पहेला हुं तमारी पासे आव्यो हतो तेवारे तो तमे नेत्र उघाडीने सामुं पण जोयु न हतु अने हमणा उठीने सात आठ पगलां सामा आव्या तेनु शु कारण? तेवारे वसिष्ठजी पूर्वोक्त श्लोक कहेता हवा के हे काकुस्थ,! हे रामचड्! एक धननु उपार्जन करो, आ जगतमा धनेकरीनेज प्राणी शोजे ले, परतु निर्धनने अने मडदाने कांइपण अंतर देखातु नथी, ते कारणे तु प्रथम आव्यो हतो तेवारे निर्धन हतो तेथी मे ताहारा सामु न जोयु अने हमणातो तु सर्व विजूति सहित लो माटे हुं सामो चाली आव्यो लु एवु कहीने वली स्त्री कहेवा लागी के हे मूर्ख! धनविना हु तने शु करु? वली कह्यु ले के ॥ पुत्तायसीसायसमविजत्ता, रीसाय देवाय समविजत्ता ॥ मुरकातिरिरकाय समविजत्ता, मुयादरिद्दाय समंविजत्ता ॥ १ ॥ जावार्थ –पुत्रने शिप्य ए बे बरोबर जाणवा, वली रुपी अने देव ए बे पण बराबर जाणवा,

वळी मूर्ख अने तिर्यंच ए वे पण समान जाणवा, तेम मूवेला अने दारिद्री ए पण वे सर खाज जाणवा ॥ वळी ते स्त्री कहेवा लागी के अरे जाग्यहीन ' श्रीवीरजगवाने वरसीदान आपीने सर्वनां दारिद्र्यरूप खनो विनाश कस्यो, ते वेळाये तुं परदेश गयो ते ताहारे कहेवु थयुं के जेम द्राख पाकवाने समये कागडानी चांच पाकी आवे तेनी पेरे थयु अथवा नदी तटे जवासाना झाड तुल्य तु थयो अथवा रात्रि दिवस मेघ वर्षतां ठतां पण पलाशवृक्षनां पान डा त्रणज होय माटे रे अनिष्ट ' रे पापिष्ट ' रे पांडुरपृष्ठ ' तु इहांथी जा इत्यादिक निष्ठुर वचने घणो निर्भ्रछीने गलहत्थो देइ मने घरथी बाहेर काहाड्यो ते कारण माटे ॥ आगेंदारिद्र्य पाछे दारिद्र्य, भावे जमणे पासि ॥ पिझियाणीमुज मारण मांझ्यो, तेणे हुं आयो नासि ॥ १ ॥ माटें हे स्वामी ' महारे आगल पण दारिद्र्य चाले छे, पाछल पण दारिद्र्य चाले छे अने वे वाजुये पण दारिद्र्य चाले छे एम महारे चारे वाजु दारिद्र्य चाल्युं आवे छे तेथी ब्राह्मणीयें मने मारवा मांझ्यो माटे हु नाशिनें तमारी पासे आव्यो छुं अने मे विचार्युं जे श्रीवीर अगम्यगतिवंत छे, जो पण दीक्षा लीधी छे तो पण परमकृपालु छे, माटें मुजने निश्चयथी कांइक पण आपशे एवु चितवीने प्रतीति पूर्वक निरधारकरीने तमारी पासें आव्यो छुं माटे म्हारा दारिद्र्यने चूरीने मनोरथ पूर्ण करो पण हे स्वामी ' एवु मनमां आणशो नही जे महारा वर्षीदानने अवसरे सर्वलोक मनवांछित दान पामी गया अने तुं कांइपण केम पाम्यो नही एवो विचार आणशोमां ॥ यत ॥ स्वामिन्कनकधाराभि, स्त्वयि सर्वत्रवर्षति, अभाग्यछत्रसछन्ने, मयिनायांतिविंदव ॥ १ ॥ भावार्थ.—हे स्वामी ' तमे कनक रूप धाराये सर्वत्र वरस्या पण महारा मस्तक उपरे अभाग्य रूप छत्र ढंकायुं हतुं तेथी एक बिंदुमात्र पण

महारे माथे पड्यु नही तेवारे एवु विचार्यु जे यत ॥ रे मन अप्पा खतिधर, चिंताजाल म पाड ॥ फलतत्तोहिज पामीये, जित्तो लख्यो लिलाड ॥ १ ॥ एम चिंतवी बेसी रह्यो पण हे स्वामी ! एकतो तमारु दान न पाम्यो ने वली तमारा दाननो व्यतिकर सांभलीने सामो मुजने महारीस्त्रीये घरथी काहाडी मूक्यो तेमाटे कहु छे के ॥ यत ॥ त्वयि वर्षति पर्जन्ये, सर्वेपल्लविता द्रुमा ॥ अस्माकमर्कवृक्षाणां, पूर्वपत्रेपु संशय ॥ १ ॥ भावार्थ – हे स्वामि ! तमारा रूप मेघवर्षतां छता सर्वजन रूप वृक्ष नवपल्लवयुक्त थयां अने महारा सरखा अर्क वृक्षोने पूर्वपत्रनो संशय थयो इत्यादि ललित पल्लवित वचन सांभलीनें, कृपासागर भगवंत विचारता हवा जे हु निर्ग्रंथ छु महारी पासे काइपण नथी अने ब्राह्मणने नही देवाथी इन्द्रादिक सर्वलोक समक्ष प्रार्थना भंग होय ते प्रार्थनां भंग करवाथी लघुता थाय ॥ यत ॥ तणलहु य तूस लहु य, तिणतुस लहुयंच पत्थणा लहुय ॥ तत्तोवि सो लहुउ, पत्थण भंगो करेजेण ॥ १ ॥ भावार्थ – सर्वथकी तृणलघु छे ते थकी तुप लघु छे अने तृणथकां तथा तुप थकी पण प्रार्थना करवा वालो लघु जाणवो अने वली प्रार्थनानो भंग करवा वालो जे छे तेतो सर्व थकी लघु जाणवो ॥ पुनरपि ॥ परपत्थणापवत्ति, मा जणणी जणउ एरिसपुत्तं ॥ उयरोवि मा धरिज्जउ, पत्थण भंगो कउ जेण ॥ १ ॥ भावार्थ – परपासे प्रार्थनानो करवा वालो एवो पुत्र हे माता तु जणीश नही अने वली प्रार्थना भंग करना रने तो उदरने विपे पण धारण करीशमा ॥ पुनरपि ॥ यांतुयातु वत प्राणा, अर्थिनिव्यर्थ तांगते ॥ पश्चादपिहिगतव्य, कसार्थ पुनरीदृश ॥ १ ॥ भावार्थ – जाउ रे महारा प्राण जे अर्थिप्राणी व्यर्थ घरथी जाय तेनी साथे तमे पण जाउ केमके पाछल पण तमने कोइक

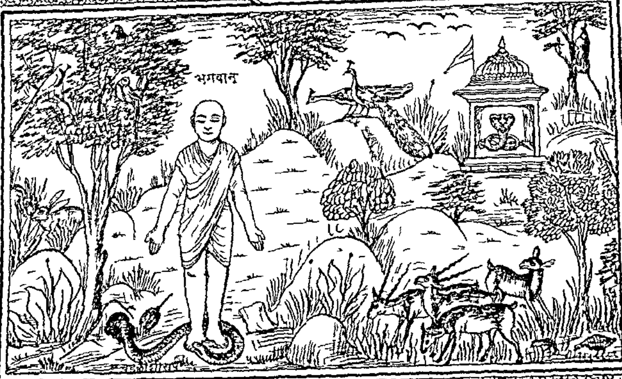

चित्र ३८
भगवान्
देवदुष्य वस्त्र
आपे छे
ब्राह्मण

दिवस जावु तो ढज तो एवो साथ वली तमाम [illegible] जाउं ॥१॥ इत्यादिक शिष्टाचार आचारनो विचार जाणीने श्रीमहावीर देव कृपाकरी अरधुं देव डुष्य वस्त्र फाडीनें ब्राह्मणने देता हवा ए विप्रने चीवर दीधाथी बीजा प्राणीउंने एवु जणावता हवा ॥ यत ॥ जांसतितां देतु धन, इणपरि अरकइ वीर ॥ पितामित्र बांम्हण नणी, आधो दीधो चीर ॥ १ ॥ नावार्थ —ज्यांसुधी घरमां संपत्ति होय त्यां सुधी धन, चीवर, अन्नादिकनुं दान देवु, पिताना मित्र ब्राह्मणने अरधुं चीर आप्याथी श्रीवीर एवु पूर्वोक्त प्रमाणे जणावता हवा ॥ १ ॥ हवे ते ब्राह्मण अरधुंचीर लइने पोताने घेर गयो तेने चीवर सहित वारणाने समीपे आवतो देखीने ब्राह्मणी हर्षित थइ थकी उठीने सन्मुख आवीवे हाथ जोडी ए वीरीते कहेती हवी के हे प्राणनाथ ! हे मम जीवना ! हे महारा हैयाना हार, हे कांत ! सुनग हुं तमारी मेघनी पेरे वाटजोती हती अने जेम जल विना माछली टलवले तेम तमारा विना हुं टलवली रही हती इत्यादिक मीठां मनोहर वचन रचना कथन पूर्वक अपूर्वरीतें घणी प्रीतिये स्नान मज्जन करावी नोजन पान तांबूल आपीने वली घणा सन्मान पूर्वक सुखशय्या शयन प्रमुख सुख उपचार करीने स्त्री घणो प्रमोद पमाडती हवी तेवार पछी ब्राह्मण ते वस्त्रनी दशीयो वंधाववाने वास्ते तुंनारा पासें गयो तुनारे पण ते वस्त्र तेवु अणत्रुटयुं जाणीने सोमविप्रने कहेवा लागोके हे ब्राह्मण ! आ वस्त्रनो बीजो कटको लइ आव्य तो एने सांध्यां थका ए लाख मूलनुं थाशे तेथी ताहारा अने महारा बेहुना दारिद्र्यनो नाश थाशे तेवारे ते विप्र पाछो फरीने लोचे वधतो छतो श्रीवर्द्धमान स्वामी पासे आवतो हवो पण मनमां विचारवा लागो के हु वारवार केवीरीते याचना करुं, अतिलोज करवो पुरुषने युक्त नथी अने नग

वान पण एवु जाणशे जे आ विप्र लोजी ठे एवु जाणीने लाजनो मार्यो मौन करी रह्यो पण मुखथी मागे नही ॥ यत ॥ लज्जा वारेइ मुह, असपया जणई मागिरे मग्ग ॥ दिन्न मानकवाड, देहित्तिमग्गिया वाणी ॥ १ ॥ जावार्थ – लज्जा ठे ते मुखने वारती हवी अने असपदा कहेति हवी के माग्य रे माग्य ! पण मानरूप कमाड देवराणा तेथी आपो एवी वाणी मुखथी न निकलती हवी ॥ १ ॥ अने जाण्यु जे क्याय पण खन्नाउपरथी पडी जाय तो उपाडी लइश एवीरीते जेवारे जगवतने दीक्षा लीधे एकवर्षने उपर एक मास थयो त्यां सुधी जगवाननी पाठल ते ब्राह्मण चाल्यो पठी एकदिवस ते देवडुष्य जगवाननां खन्ना उपरथी वायराना गोटथी उपडयुं ते उत्तरचावालागामनी पासे सुवर्णवालुका नदीने कांठे बोरडीना वृक्षनां काटामा जइ पडयु तेने विप्रे ग्रहण कर्यु जगवान पण सिंहावलोकन दृष्टिये करी देखता हवा इहा कोइकतो कहे ठे के ममत्वे करीने देखता हवा, कोइक कहे ठे के शुजस्थानके पडयु के अशुजस्थानके पडयु ते जोवाने माटे देखता हवा वली कोइक कहे ठे के सहसात्कारे देख्यु, कोइक कहे ठे के महारी पाठल महारा शिष्योने वस्त्रपात्र सुलजजावे थशे के नही थाय एवा कारणथी देखता हवा कटके लाग्यु तेथी जगवाने विचार्यु जे महारी पठवाडे जे साधु स्वसतानिक थाशे ते सर्व बहुल कषायि कटकी कलहकारी प्राय असमाधिकारक थाशे मूर्ख घणा थाशे अने साधु थोडा थाशे एवु जाणीनें निर्ममत्वथी ग्रहण न कर्यु हवे विप्र पोताना आत्माने धन्य कृतार्थ मानतो थको, सपूरण मनोरथवत थयो थको तुनारा पासें वे खंड संधावी तूणावीने वेच्यु तेना लक्ष सोनैया आव्या तेमाथी अर्द्धा तुनाराने दीधा अने अर्द्धा ब्राह्मणे राख्या वेहुनुं दारिद्र्य गयु जावज्जीव सुधी सुखी थया आनंदमां रह्या ॥ इति अचेलक

दृष्टांत ॥ ॥तेवार पछी ज्जगवाने कपडां राख्यां नही ते दिवसथी अचेलक थया अने बीजा त्रेवीश तीर्थंकरोनां देवडुष्य वस्त्र जावज्जीव रह्यां हतां केटलिक प्रतोमां वचला वावीश तीर्थंकरोनां देवडुष्य जावज्जीव रह्यां कह्या छे तेथी ते सचेलक जाणवा हवे श्रीमहावीर स्वामी वारवर्ष उपर साडा छमहीना छद्मस्थपणें कायाने वोसरावी कांइ शुश्रूषा करे नही एवाथका विचर्या तेमा जे कांइ देवताना करेला, मनुष्यना करेला, तिर्यंचना करेला, अनुलोम अने प्रतिलोम एवा वे प्रकारनां उपसर्ग थया तिहां जे नाटक देखाडवां, आलिंगन करवां, इत्यादिक देवादिकोये करेला उपसर्ग ते सर्व अनुलोम उपसर्ग जाणवा अने जे देवादिकोये ज्जय वताव्या, प्रहार कर्या, कूट्या, मार्या एवा उपसर्ग ते सर्व प्रतिलोम उपसर्ग जाणवा ए बन्ने प्रकारना उपसर्ग सर्व पोतानी खुशीथी सहन कर्या पण चारित्रथी लगार मात्र चलायमान थया नही तेमज कोइ उपर रागद्वेष पण लाव्या नही तथा कोइनी पासें दीन वचन पण बोल्या नही तेमज कोइनुं ज्जय पण लाव्या नही एवी रीते अनेकप्रकारना उपसर्ग सहन कर्या ते कही देखाडे छे॥ ॥एकदा ज्जगवान् उत्तर वाचाल सन्निवेशे जातां मार्गे वर्द्धमान गामे आव्या,तिहां एक सुवर्णवालुका,बीजी रूपवालुका,ए वे नदीउ आवी, ते उतरी आगल चालतां एक वक्रमार्ग बीजो सरल मार्ग, एवा वे मार्ग आव्या, तिहां लोके निवार्या के पाधरामार्गमां सर्पनो ज्जय छे माटे जाशो नही तो पण ज्जगवत वक्रमार्ग मूकीने सरल मार्गे चंमकोशीया सर्पने प्रतिबोध देवासारु चाल्या, ते मार्गमां कनक खल नामा वनमां तापसनो आश्रम छे, तिहां एक महा जोरावर घणो मंशीलो चंमकोशीयो सर्प रहे छे ते चंमकोशिया सर्पने ज्जगवाने देवता कर्यो, तेनी कथा कहे छे कोइक गामने विषे वे साधु गुरु चेला चोमासुं रह्या हता ते एक दिवसे

मास खमणना पारणाने अर्थे बे जणा गोचरीये गया, त्यां वर्षाऋतुने लीधे घणा जीवोनी उत्पत्ति थये छते मार्गमां गुरुना पग नीचे सूक्ष्म मेंडकी आवी ते चपाइ मरण पामी तेवारे चेलाये कह्यु महाराज तमारा पग नीचे मेंडकी आवी ते मरण पामी एवु सांभली गुरु बोल्या घणी मेंडकी मरेली पडी छे माटे बीजा कोइनो पग आववाथी मरण पामी हशे तेवारे तिहां ते चेलो मौन रह्यो वली गोचरी आलोवता शिष्य बोल्यो के मेंडकीनो मिछामि दुक्कड ल्यो ते सांभली गुरुने रीश चडी अने चेलाने कहेवा लागो जे अरे आ मेंडकीतो प्रथमथीज मरेली हती, मेंतो मारी नथी चेले घणु कह्यु तो पण मान्यु नही तेवारे चेले विचार्यु जे सांजे पडिक्कमणामा आलोयण लेशे गुरुये पण सांजे पडिक्कमणामां सर्व आलोयण लीधी, पण मेंडकीनी आलोयणा न लीधी तेवारे वली पण चेले कह्यु जे महाराज मेंडकीनी आलोयणा ल्यो तेवारे पण गुरुये रीश करीने तेवोज जवाब आप्यो फरी रात्रें संथारानी वेलाये कह्यु के हे महाराज! मेंडकीनी आलोयणा ल्यो एवु सांभलता गुरुने रीश चडी तेथी हाथमा उंघानी मांमी लइने मारवा दोड्यो रातनी वेला हती तेथी चेलो नाशी गयो, गुरु तेनी पाछल दोड्यो अने उपाशराना थांभलामां अथडायो तेथी गुरुनुं मस्तक फूटयु त्यांथी मरण पामी बीजे भवे ज्योतिषी देवता थयो त्यांथी चवीने चंडकोशी नामे तापस थयो तेना पांचसो शिष्य थया परंतु पोते घणो क्रोधी हतो तेथी एक दिवसे राजकुमारने वाडीमाथी फूल लेतां देखीने हाथमां फरसी लइ तेमने मारवा दोड्यो तिहां पग लपसीगयो तेथी मार्गमां एक अंध कूवो आव्यो, तेमा पड्यो पोताने फरसीवागी तेथी आर्त्तध्याने मरण पामीने तेहज आश्रमने विषे चोथाभवे चंडकोशीउ सर्प थयो छे, आंख्यमां झेर घणु छे, जे कोइने


चित्र २८
भगवान्

देखे, तेने वाली भस्म करे छे, घणा तापसोने वाल्या, बीजा केटलाएक नाशी गया लोक पण ए मार्गे जवानु छोडी दीधुं, एककोश प्रमाण भूमिमां रहेला जीवमात्रने वाली नाखे छे त्यां ते सर्प्प कोइने रेवा देतो नथी ते सर्प्पना बिलउपर भगवत काउस्सग्गे रह्या, ते देखी सर्प्पें क्रोध आणीने प्रभुने डंख मार्यो, तेवारे प्रभुना पगमांथी दूध सरखुं लोही मांस नीकल्युं, तेने देखी सर्पें विचार्युं जे हुं जेने साहामुं जोउं, तेने पण वाली भस्म करुं अने एने तो डंख मार्यो तो पण धोलुं लोइ नीकल्युं माटे ए कोइ म्होटो पुरुष छे एम चितवीने भगवानना मुख सामुं जोयु तेवारे भगवान् बोल्या के अरे चमकोंशिया ! बूज बूज तुं नथी जाणतो एवु केतां थकां ते सर्प्पने विचार उपन्यो जे आवु रूप मे क्यांक दीठु छे एटलामां मूर्छा आवी गइ अने जाति स्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारे पाछलो भव दीठो, पछी प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा देइ विनति करी के हे करुणासागर ! दूर्गतिरूप कूपथी तमे मुजने उद्धर्यो, पछी वैराग्यपामी पन्नर दिवसनुं अनशन करी परोपकारार्थें ते सर्प्प पोताना बिलमांहे मुख घाली अने आखुं शरीर बाहेर राखीने रह्यो पछी ते मार्गें दूध, दही, घृतनी वेचनारी आहिरलोक तेणें ते नागराज सतुष्ट थयो एवु जाणी दूध, दही, घृत, शर्करादिकें करी सर्प्पने पूज्यो तेनी गंधे करी कीडीउ शरीर उपर चडी पछी विचार्युं, जे हुं म्हारा शरीरने फेरवीश तो कीडीयो मरीजशे एवु जाणी शरीर हलाव्युं नही कीडीये ते सर्प्पने फोली चालणी सरखो कीधो, ते सर्प्प शुभध्याने मरण पामीने आठमे देवलोकें देवता थयो प्रभु तिहांथी विचरता उत्तर वाचाल सन्निवेशे पहोता तिहां नागसेन श्रावकने घेर परमान्न पारणुं कर्युं, देवताये पचदिव्य प्रगट कर्यां तिहांथी विहार करीने भगवान श्वेतांबिका नगरीये गया तिहां परदेशीराजाये प्रभुनो महिमा

कस्यो ॥ तिहांथी विचरता थका जगवान सुरजिपुरनगरना मार्गमा गगानदी आवी ते उत्तर वाने अर्थे घणा लोक सिद्धदत्त खारुआनी नावमां बेठा तेनी साथे प्रजु पण बेठा एवा मा घूवड बोल्यो तेनु शुकन जोइ क्षेमिलनामे निमित्तिउ ते नावमां हतो तेणे कह्यु के हे लोको आज आपणने मरणात कष्ट उपजशे परतु आ साधु महात्मा पुरुषना प्रजावथी जीवता रहीशु मरशु नही एवामा जगवते त्रिपृष्ट वासुदेवना जवमां जे सिंहने विदास्यो हतो ते सिंह घणा जवच्रमण करीने हमणां जुवनपति देवोमा सुदंष्ट्रनामे नागकुमार देवता थयो ठे ते अवधिज्ञाने प्रजुने जोइ पूर्व वैर सजारी इहां आवीने नाव बूवाववानो उपद्रव करवा लाग्यो तेवखत नवा उपन्या एवा कंबल अने सबल नामे बे नागकुमार देवता तेणे आवीने एक देवताये तो नाव बूबती राखी अने बीजा देवताये पहेला सुदंष्ट्रदेवनी साथें लडाइ करी तेमां सुदंष्ट्र हारीगयो तेथी जगवान सुखे गगानदी उतस्या हवे ए कबल सबलनी पूर्वजव सबधि कथा कहे ठे, मथुरा नगरीमां जिनदास नामा श्रावक रहे ठे तेनी साधुदासीनामे स्त्री ते पण श्राविका ठे ते बन्ने जणाये पाच अणुव्रतमा चतुष्पद जीवो राखवानो त्याग करेलो ठे तेथी दूध दही जे घरमां वापरवा सारु जोइये ते एक आहिर पासेथी मूल्य आपीने वेचातुं लीये ठे तेने लीधे ते आहिरने अने शेठने मांहोमांहे प्रीति थइ ते आहिर साथे लेवड देवडनो सतोष व्रतमा, राखेलु ठे हवे एकदिवस ते आहिरने घेर विवाह आव्यो तेवारे आहिरे शेठ पासेथी विवाहने माटें केटलिएक चीजो मागी शेठे पण तेने चड्वा प्रमुख सर्व उपकरण तेना माग वा मुजब आप्या तेथी तेनो विवाह घणो सरिकार थयो तेवारे ते आहिर खुसी थइने सरखी अवस्थावाला घणा रूपवत एवा बे वाल वृषज लावीने शेठने घेर बलत्कारे बांधी चा

चित्र ४०



कर्यो ॥ तिहांथी विचरता थका भगवान सुरभिपुरनगरना मार्गमा गंगानदी आवी ते उत्तर | वाला०

ने अर्थे घणा लोक सिद्धदत्त खारुआनी नावमां बेठा तेनी साथे प्रभु पण बेठा —

घवड बोल्यो तेने शकुन जोइ क्षेमिलनामे निमित्ति ते —

चित्र ४०



...नपचा कर पुस्तक
...ज रुडी समजण वाला थया एवा
...क शेठ जवारे उपवास करे तेवारे ते पण उपवास करे तृणादिक चारो बिलकुल खाय नही एवीरीतें शुजजावनाये विचरे ठे हवे एक दिवस शेठ पोसहमां बेठा हता एटलामां कोइएक शेठनो मित्र आव्यो ते पुष्ट वृषजनुं जोडलुं देखी शेठने पूछ्या विना पोताना रथमां जोडीनें जंमीर वनमां यक्षनी यात्राये लइ गयो मार्गमां घणा दोडाव्या तेथी ते बलदोनी नाडियो त्रूटी पडी पठी ते ठानो आवीने पाछा शेठने घेर बांधी गयो पण हाडकां जागी गयां तेथी चारो पाणी त्यागी बेठा शेठें पोताना पुत्र जेवा बलदोने दुःखी थयेला देखी घणो विषाद करीने अनशन कराव्युं चार आहारना पच्चरकाण करावी नवकार संजलाव्युं ते बलदीया शुजध्याने मरण पामीने नागकुमार देव थया ते नवा उपन्या थका अवधिज्ञाने उपयोग आप्यो तेथी ए कृत देखी इहां आवीने जगवानने थतो उपसर्ग मटाड्यो अने जगवान आगल नाटक नाची गीतगान करी पूजा सत्कार करी स्वस्थानकें गया ॥ इति कंबल संबल दृष्टांत ॥ एक दिवसें जगवान् विहार करता गंगा नदी उतरतां सूक्ष्मवेलु मांहे प्रतिबिंबित पगलानी श्रेणीने विषे चक्र, ध्वज, अंकुश प्रमुख लक्षण थया एवामां पाठलथी कोइ एक पुष्पनामा सामुद्रिकशास्त्रनो जाण, आव्यो तेणे मनमां चिंतव्युं जे आ कोइएक

चक्रवर्त्ती थनारो जीव छे चक्रवर्त्ति विना एवा पग बीजानां न होय ते हमणां एकाकी जाय छे माटे हुं जइ एनी सेवा करु, पछी ते चरणानुसारे तिहां आव्यो अने जगवानने वस्त्ररहित दिगम्बररूपे देखीने विचारवा लागो जे हु सामुद्रिकशास्त्र फोकट जण्यो हु जो एवा लक्षणनो धणी निक्षुकरूपे एकाकी छे तो ए महारां पुस्तक खोटां छे पाणीमां बोळवा लायक छे, एम चितवी पुस्तकने पाणीमां बोळवा लाग्यो, इन्द्रमहाराजे ए वृत्तांत जाण्यु तेवारे तिहा आवीने प्रजुनी सेवा साचवी पुष्पनिमित्तिया आगळ प्रजुनु स्वरूप वर्णवी शास्त्र पाणीमां बोळवां न दीधा, पछी जगवतना गुण ग्राम कही इन्द्र स्वस्थानकें गयो, पुष्प पण इन्द्र पासेथी मणि कन कादिक धन पामी हर्ष पामतो पोताने स्थानके गयो, प्रजुयें परोपकारार्थें गंगानदीउतरी वि हार कीधो ॥ हवे गंगानदी उतरीने जगवान बीजे चोमासे राजगृही नगरीये नालंदीनामा पाडामां वणकरनी एटले तंतुवायकनी शाळा छे तेना एकदेशने विषे खूणामां आज्ञा लइने

थम मास खमण कर्यु अहींआ शरवणग्रामे मखली पुत्र सुजद्रानो अंगज बहुल

जपन्यो छे तेमाटे तेनु नाम पण गोशालो राखेलो छे ते अनुक्रमे जमतो

गवाने तिहां चारमासमां चार मास खमण करीने चार पारणा

पारणे प्रजुनें विजयशेठें क्षीरादिक विपुल जोजने पारणुं

गुरु कर्या पछी ते सरस क्षीरादिक कूरादिक मोदकादि

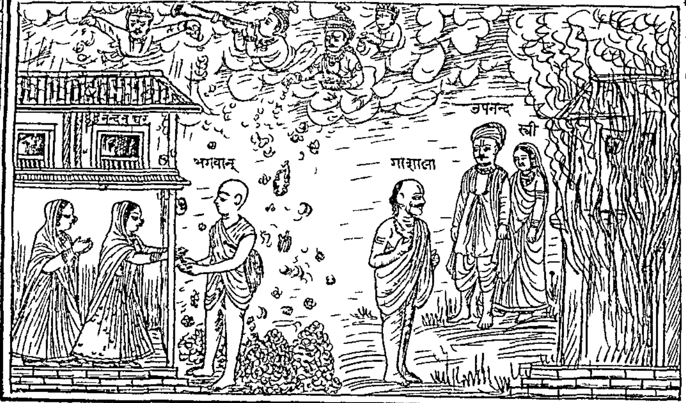
जे एने घर घर वोरावे छे माटे हुं पण जूदो नि

वधशे, तेवारे जगवतने जेणे वोहोराव्या तेना पा

ते देखी पाडोशी हर्ष पाम्यो जे महारे घरे जग

वान् पधाख्या तेथी उठी वेगो थयो पछी वांदीने कह्युं के हे महाराज ! म्हारे घरे पारणुं करो तेवारे गोशालाये वे हाथ पसाख्या गृहस्थे उनी उनी रसोइ पीरशी अने उचुं माथुं करी जोवा लाग्यो जे म्हारे घरे सोनैयानो वर्षाद थाय एम करतां वायस आवी माथे बेठो ते वारे मेडा उपरथी गोशालाना हाथ उपर एक बाइयें देवता नाख्यो ते जोइ शेठे विचाख्युं जे पाडोशीने घेर तो सोनैयानो वर्षाद वरश्यो अने माहारे घरे तो कोयला वरश्या गोशालाना हाथ बल्या तिहांथी उदास थइ गोशालो निकल्यो हवे नगवानने बीजुं पारणुं नंदे पक्वान्ना दिकनुं कराव्युं, त्रीजे मासखमणे त्रीजुं पारणुं सुनंदे परमान्नादिकें कराव्युं तिहां सर्वत्र पच दिव्य प्रगट थयां ते जोइ गोशाले मनमां विचाख्युं जे एनी पासें सारविद्या छे जे घर घर सोनुं वरसावे छे, ए विद्या हुं पण शीखुं माटे एनी संगत करु तो शीखुं अने म्हारी शोना वधे ! एम विचारी गोशालो बोल्यो हे नगवान ! हुं आपनो शिष्य छुं एम कही नगवत साथे फरवा लागो, नगवाने तिहाथी जइ चोथुं पारणुं कोलागसन्निवेशे बहुलनामा ब्राह्मणने घेर केवल खीरना नोजने कखुं तिहां पांच दिव्य प्रगट थयां ए बीजु चोमासुं जाणवु ॥ २ ॥ पाछलथी गोशाले नगवानने दीठा नही सर्व नगरमां फरी जोयुं तो नगवान मल्या नही तेवारे सर्व उपक रण ब्राह्मणनें आपी कुरमुंम थइने चाल्यो पछी कोल्लागसन्निवेशे नगवानने देखी बोल्यो के आ पनी दिक्षा मुजने हो हुं आपनो चेलो छुं ए वात नगवाने पण मानी पछी गोशाला सहित नगवान विहार करी एक दिवसे नगवान् स्वर्णखलग्रामे चाल्या, मार्गमा कोइ गोवालीए खीर पकावतां देखी तिहां गोशालो बोल्यो, हे नगवान् ! ए खीर थाशे ते खाइने जइशुं माटे थो डीवार बेसो तेवारे सिद्धार्थ बोल्यो ए खीरनुं पात्र नांगशे पछी गोशालाये जइ गोवालीयाने

कत्तु हांमी फुटशे गोवालीयाये घणा यत्न कराव्या तो पण हामी फूटी गइ तेवारे गोशालो बो
ल्यो जे थानार होय ते थायज एवु वोली हठ पकडी नियतवादीपणुं पडिवज्यु ॥ तिहांथी
ज्ञगवान विहार करी ब्राह्मण गाम गया तिहां एक नंद अने बीजो उपनंद ए बे ज्ञाइना बे
पाडा छे तेमाथी ज्ञगवाने नंदना पाडामां पारणुं कत्तु अने गोशालाने उपनंदने घेर वाशी
अन्न सात्तदिवसनी घेस मली तेथी कोपायमान थइने गोशालो बोल्यो जे म्हारा धर्मांचा
र्यना प्रज्ञावथी तहारु घर बली ज्ञस्म थाउ एवु कहेतांज व्यंतरदेवोये ज्ञगवाननु महत्त्व रा
खवा माटे तेनु घेर वाली नाख्यु हवे त्रीजे चोमासे बे बे मासनी तपस्याये प्रज्ञु चंपानगरीये
रह्या ए त्रीजुं चामासु ॥ ३ ॥ ॥ त्यां छेल्लुं पारणुं करी कोल्लाग सन्निवेशें गया तिहां शून्य
गृहमां काउस्सग्ग रह्या तिहां सिंहो रजपुत चोधरीनो पुत्र विद्युन्मती दासी साथे क्रिडाकरतो
हतो तेने रमतो देखीने गोशालो हस्यो तेवारे तेणे गोशालाने कूट्यो गोशालो प्रज्ञुने कहेवा
लागो जे मने मार आपे छे माटे तमें एने कां वारता नथी ? प्रज्ञु मौन छे तेथी सिद्धार्थ बोल्यो
के आज पछी एवु हास्यनु काम म करीश ए काम करीश तो एवांज फल पामीश तेवार
पछी स्वामी मोराकसन्निवेशें रमणीय नामा उद्यानमां काउस्सग्ग रह्या, त्यां कुज्ञारशालामां
श्रीपार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरि घणा शिष्यो साथे रह्या छे ते साधुउने देखी गोशाले पूछ्यु
तमे कोण छो, ते बोल्या अमे साधु छैये गोशालो बोल्यो तमे क्यां अने म्हारो धर्मांचार्य क्यां ?
तेवारे ते साधु बोल्या जेवो तु छे, तेवो ताहारो गुरु पण हशे तेवारे गोशालो रुठो थको बो
ल्यो जे म्हारा धर्मांचार्यना तप तेजना प्रज्ञावथी तमारो आश्रम बली ज्ञस्म थाउ तेवारे
शिष्य बोल्या एथी कांइ अमे मरता नथी हवे आश्रमबल्यो नहीं तेवारे गोशाले आवीने प्र


चित्र
नन्दन घर
भगवान्
गोशाला
उपनन्द
स्त्री

हुने कह्युं के स्वामी आगल जेवो तमारो प्रनाव हतो तेवो हमणां नथी तप तेज घटी गयुं जणाय ढे तेवारें सिद्धार्थ बोल्यो अरे गोशाला ! ए साधुउने शाप लागे नही ए साधु नहीं बले, पढी ते पार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरिजिनकल्पनी तुलना करता काउस्सग्गमां उना ढे तेने कुंनारें चोर जाणीने मार आप्यो मुनिचंद्रने अवधिज्ञान उपन्युं मरण पामी देवलोकें गया तेनो देवताये महिमा कर्यो त्यां अजवालुं थयुं ते देखीने गोशालो बोल्यो जुउ साधुना आश्रम बले ढे म्हारा गुरु साचा ढे, तेवारे सिद्धार्थ व्यंतरो बोल्यो के, अरे कुपात्र ! ए तो मुनिचंद्र देवलोकें गया तेनो महोत्सव थाय ढे ते सांनली गोशालो विलखो थयो ॥ ते पढी प्रनु चोरा नगरियें गया तिहां गोशालो गाममांहे हेरतो फरे तेवारे त्यांना लोकोये हेरु जाणी प्रथम गोशालाने (कूप) खोडामांहे घाल्यो पढी नगवंतने पण नाखवा लागा, एवामां उत्पलनामा विप्रनी बेहेन सोम जयंतिनामे ते चारित्र त्यागीने सन्यासणी थइ ढे तेणे आवी नगवानने उलखीने ढोडाव्या गोशालाने पण ढोडी मूक्यो ॥ तेवार पढी त्यांथी विहार करीने चोथुं चोमासुं स्वामी पृष्ट च पाये चार मासी तप करीने रह्या, तिहां चोमासुं संपूर्ण करी बाहेर पारणुं कर्युं ए चोथुं चोमासुं जाणवुं ॥ ४ ॥ ॥ तिहांथी विहार करी नगवान कयंगलें गया, तिहां माघ मासे जागरणना दिवसे दारिद्र अने स्थविर पांखमिणी नाचें ढे, गाय ढे तेनी गोशाले हांसी करी तेथी तेउए गोशालाने मार आप्यो वली प्रनुनो शिष्य जाणी मूक्यो ॥ तिहांथी विहार करी नगवान सावढीनगरीयें आवीने काउस्सग्गे रह्या तिहां पितृदत्तवणिकनी स्त्री श्रीनद्रा ढे तेने पुत्र जीवता नथी, तेवारे शिवदत्त निमित्तिये तेने पूर्वे कह्युं ढे के मृतक पुत्रनुं मांस खीरमां रांधीने कोइ निक्षुकने खवरावजो तो तमारा पुत्र जीवता रहेशे, हवे ते स्त्रीने जेवारे

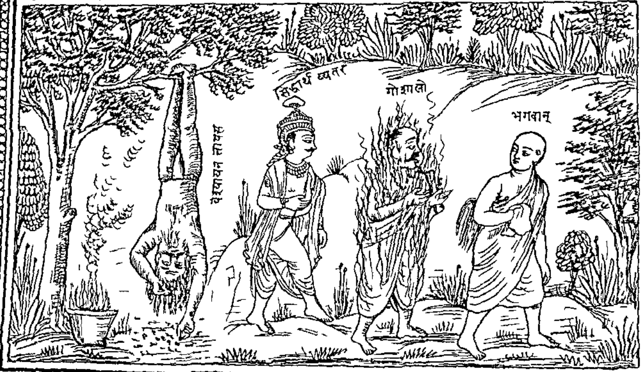
मृतक पुत्र थयो तेवारें तेना मांसनी खीर तैयार करी राखी अने अहीं गोशाले सिद्धार्थ व्यंतरने पूछ्यु के मने आज केवु नोजन मलशे? सिद्धार्थे कह्यु तने आज मनुष्यनु मास मलशे, ते खाइश पछी सिद्धार्थनु वचन खोटुं करवा सारु गोशालो श्रावक वाणीयाने घेर वोहोरवा गयो, मनमां विचार्यु के वाणीयाने घेर मास होयज नही एवु जाणी तिहा खीर जमी फरी पाछो आवी सिद्धार्थने कह्यु के हुं खीर जम्यो छु सिद्धार्थे कह्यु तु मास जम्यो छो, तेवारे गोशालायें गलामा आंगली घाली वमन कर्यु, माहे मांसना कटका दीठा तेवारे गोशालो क्रोध करीने तेने घेर गयो परतु ते स्त्रीये शरापना नयथी घरनु बारणु फेरवी नाख्युं हतुं तेथी गोशालाये घर लाधु नही तेवारे कहेवा लाग्योजे महारा स्वामीना तप प्रनावथी तमारो पाहाडो बली नस्म थाजो तेथी पाडो बल्यो ॥ इति ॥ तिहांथी नगवान दरिद्र सन्निवेशनी बाहेर काउस्सग्गे रह्या तिहां पथीयोये नगवानना पग पासे वासदी बाली तो पण नगवान किंचित्र मात्र सरक्या नही नगवानना पग बलता देखीने गोशालो नाशि गयो ॥ तिहांथी गलगामें वासुदेवनें देहरे काउस्सग्गे रह्या तिहां गोशालो आख्यो काढीने बालकोने बीहीवरावबा लाग्यो तिहां लोकोये मार्यो, कूट्यो वार्यो नगवाननो शिष्य जाणी मूक्यो त्यांथी विहार करीने नगवान आवर्त्त गाममां बलदेवनां मदिरने विषे काउस्सग्गे रह्या तिहां गोशालाये छोकराउने बीवरावबा सारु महोडु मरडी बताव्यु तेथी छोकरा सर्व नय पामीने पोताना माता पितानी आगल कहेवा लागा तेवारे ते माता पिताउ तिहा आवीने कहेवा लागा के आ चेलानें शु मारवो एना गुरुनेंज मार आपो एटले फरी चेलाने पाधरे मार्गे चालवानो उपदेश करशे एवु कहीने जेटलामां नगवानने मारवा

तैयार थया एटलामां वलदेवनी मूर्त्तियें हल लइने लोकोने बीवराव्या तवारे सर्वलोक भगवा नने नमवा लागा ॥ पछी तिहांथी विहार करी घणा क्लिष्टकर्मोनी निर्जरा करवाने अर्थे भग वान लाटदेश गया तिहां अनार्य लोकोये घणाज उपद्रव कस्या ते प्रभुये सहन कस्या ॥ ति हांथी पूरणकलश नामे अनार्य गामें जातां थकां भगवानने मार्गमां वे चोर मल्या ते भ गवानने देखी अपशुकन थयां एवु मानीने खड्ग लइ मारवा दोड्या तेने इंद्र महाराजे वज्रथी मारी नाख्या केटलिक प्रतोमां इंद्रमाहाराजें ते चोरोनां पग थंभ्या तेथी ते वृक्षनी पेरे ति हांज उभा रह्या एवीरीतें उपसर्ग निवारण थयो ॥ पछी तिहांथी प्रभु चोरांगे आव्या तिहां मांझवे धान रधातुं देखी गोशालो नीचो थइ जोवा लाग्यो तेने लोकोये चोर जाणी मास्यो, गोशालो रुठो थको वोल्यो जे महारा स्वामीना तप वलें तमारो मंडप वलजो, ते तेमज थयु तेवार पछी भगवंत हरिवृक्ष नीचे काउस्सग्गे रह्या, तिहां कोइ पंथीयें आगल भूमिका वाली हती तिहां गोशालानां पग वल्या तेवारे त्यांथी गोशालो नाठो ॥ तेवार पछी पांचमुं चोमासुं प्रभु भद्दिकानगरीये रह्या तिहां चोमासी तप प्रभुये कीधु ए पांचमुं चोमासुं चार मासी त पनुं जाणवु ॥ ५ ॥ ॥ पछी पारणुं करी तिहांथी भगवान कुदिक सन्निवेशे गया त्यां लो कोये चोर जाणीने पकड्या पछी श्रीपार्श्वनाथजीनी एक विजया वीजी प्रगल्भा ए वे सा ध्वियो परिव्राजिकणी थयेलीउ छे तेमणे छोडाव्या तिहां गोशालाये जाण्युं जे एनी पछवाडे फरवाथी घणा दुःख सहन करवा पडे छे एवु विचारी भगवतथी जूदो विचस्यो मार्गमां जातां पांचसे चोर मल्या ते मामो मामो कहीने गोशालानी खांध उपर चडी आगल पाछल फराववा लागा तेथी दुःख पाम्यो वली वीजे पण ज्यां जाय त्यां तोफान करे, तेवारे

लोक मार आपे तेथी गोशालाये विचार्यु जे जगवत साथे रहेवुज जखुं छे एवु जाणी जगवानने जोवालाग्यो हवे जगवत विशाला नगरिये गया, तिहां लोहकारनी शालाये काउस्सग्गे रह्या, लोहार पण छ महीना सुधी आजारी हतो, ते पण ते दिवसे साजो थयो छे, तेथी लोह घडवाना उपकरण लइने आव्यो, प्रजुने मुंमा देखी अपमंगलिक जाणी घण लइने मारवा उठयो, एटलामां इंद्रे अवधिज्ञानथी जाणी त्यां आवी लोहारने निवार्यो कोइक स्थानके इंद्रमहाराजे लोहारने तेहज घणथी मारी नाख्यो एम स्पष्ट लखेलु छे पछी तिहांथी जगवान ग्रामाकसन्निवेशे आव्या तिहां वनमांहे बिनेलेक यक्षे महिमा कर्यो त्यांथी निकल्या थका शालिशीर्षग्रामनी बाहेर आवी काउस्सग्गे रह्या ते वखते माघ मासनी रुतु हती तेमां अत्यंत टाहाड पडे छे एवा वखतमां जगवाने शीत उपसर्ग सहन कर्यो ते कहे छे त्रिपृष्ट वासुदेवना जवमा जगवाननी अपमानिती स्त्री हती ते स्त्री अनेक जवन्नमती थकी ते वखत कटपूतना नामा व्यंतरी थयेली छे जगवानने देखी तेने द्वेष उपन्यो तेथी तापसणीनु रूप करी पोतानी जटामांहे पाणी जरीने परमेश्वरनां शरीर उपर छांटयु घणो कठण शीत उपसर्ग कर्यो एकतो शीयालानी रुतु हती तेमां वली व्यंतरिये मेघवृष्टि करी, घणो ठमो वायरो विकूर्व्यों एवा एवा विकट उपसर्ग कर्या ए सर्व प्रमाण विनाना पूर्वकृतकर्म प्रजुना हतां ते आर्द्दी आवी नड्या तेने कठण उपसर्ग सहन करीने दूर कर्या पछी व्यंतरिनां उपसर्गथी प्रजु अमग रह्या एवा धैर्यवत प्रजुने जाणी पोतानो अपराध खमावीने व्यंतरि स्वस्थानकें गइ हवे तिहां शीतवेदना सहन करता थकां जगवतने छठ्ठने तपें करी यथार्थ लोकावधि ज्ञान उपन्युं ॥ त्यांथी जगवाने फरी छठु चोमासुं जद्दिका नगरीये कर्युं तिहां चार महीना

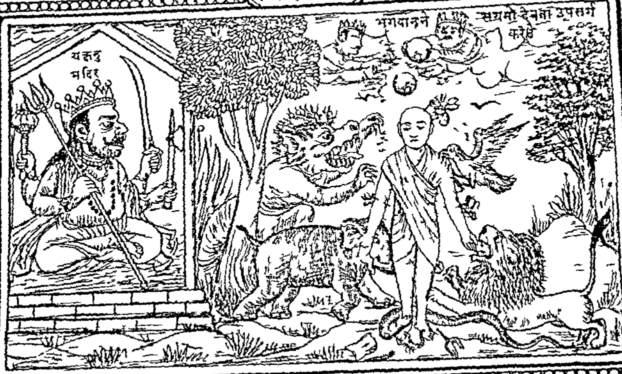
सुधी अनेक प्रकारना ऊ सह्द अभिग्रह कस्या ए ठठुं चोमासुं जाणवु ॥ ६ ॥ ॥ इहां ठ म हीना वाहेर नटकीने गोशालो पण फरी आवी प्रभुने मळ्यो हवे ए चोमासुं पुरु थया पठी शेषकाल आठ महीना सुधी नगवान मगधदेशमां विचस्या ते आठ महीनामां नगवानने कोइ पण उपसर्ग थयो नही तेवार पठी सातमो चोमासो आलंनिका नगरीनी वाहिर देव कुले चारमासी तप करीने रह्या ए सातमुं चोमासुं ॥७॥ ॥ तिहा गोशालाये वलदेवनी प्रति मानां मुखमां लिंग घस्युं ते लोके दीठुं तेवारे गोशालाने मार आप्यो कोइक प्रतमां वलदेवनी मूर्त्ति उपर पुरुषचिन्ह राखीने सूतो तेथी पूजाराये मार आपी एम पण लखेलु ठे तिहांथी विहार करी मर्दनग्रामे वासुदेवने देहेरे तेमज गोशालाये मूर्त्ति उपर पुरुषचिन्ह कयु तिहां पण मार खाधो पठी प्रभु उन्नागगामे जतां रस्तामां कोइएक नवपरिणीतवधूने तेडी जाय ठे तेमां वरनां दांत वाहार निकलेला महोटा हता अने वहु कांणी हती ते जोइ गोशालो हसीने बोल्यो के आ तो देवे सरखी जोड मेलवी आपी ठे तेणे गोशालाने मार आपीने वशजालमां नाखी दीधो ॥ आ ठेकाणे कोइक कूटपूतनानो उपसर्ग लखे ठे एकदिन विचरता थका नग वान पुरिमताल नगरनी वाहेर शकटमुख उद्यानमां काउस्सग्गे रह्या ते वखत ते नगरनो व ग्गुर नामा शेठ तेनी सुनद्रा नामे नार्या ते बेहु जणे पुत्र थवा सारुं श्रीमल्लीनाथजीनी मा नता करी हती ते जेवारे पुत्र थयो तेवारे उद्यानमां श्रीमल्लीनाथजीनु नवु मंदिर करावीने तिहां नित्य पूजा करे ठे हवे जे वखत शेठ स्त्रीसहित पूजा करवा आव्यो ठे तेवखत नगवाननी आगल इंद्रमहाराज बेठा ठे तेणे नगवाननो महिमा करवा माटे शेठने कह्यु के हे शेठ ! जेनी तुं पूजा करे ठे ते हु तुजने प्रत्यक्ष देखाडुं एवु कही शेठने तेडी नगवानने पगे लगाड्यो शेठे

पण नावेकरी सहित नगवानने पूजीने पढी श्रीमल्लीनाथजीनी पूजा करी तेवार पढी आठ
मुं चोमासु नगवानें राजगृही नगरीमां कस्युं तिहा चार मास तप कस्यु पढी चोमासी तपनु
पारणे पारणुं करीने प्रञ्जु अनार्यदेशमां विचरवा गया ठे ए आठमुं चोमासुं जाणवु ॥ ७ ॥ न
हवे अनार्यदेशमा विचरतां थका नगवानें घणा घणा कठण उपसर्ग सहन कस्या ठे अने तिवमुं चोमासुं पण तिहां अनार्यदेशमाज कस्युं ते वली चारमासी तप सहित कस्युं वली ति
हां रहेवानें जग्या पण मली नही तेथी विचरताज रह्या ठे ए नवमुं चोमासु जाणवु ॥
॥ ए ॥ वली पाठल पण बे महिना तिहाज अनार्यदेशमां तप सहित विचस्या ते पण आहार
विनानुं बे मासी तप थयु ॥ पढी अनार्यदेशमांथी विहार करीने सिद्धार्थगामथी कूर्मगामे जतां
मार्गमां एक तलनु ऊाड ऊजु देखीनें गोशाले नगवानने पूढ्यु के आ थंन थाशे के नही
थाय नगवानने कह्यु ए तिलना फूल सात ठे तेना जीव मरण पामीने एक सांकलीमां शीगमा
तलपणे उपजशे ते सांनली गोशाले नगवाननु वचन जुठु करवा सारु ते ऊाडने उखेडीने
फेकी दीधु तेवारे निकट रहेला व्यतर देवताये चतव्यु जे नगवाननु वचन जुठु म थाजो एवु जाणी
वर्षाद कस्यो पढी गायना खुरथी ते तलनु ऊाड चपाणुं तेथी धरतीमां पेठु थिरथयुं अने
वर्षादना योगे पालुं ऊजु थयुं ॥ हवे नगवान कूर्मगाम गया तिहां एक वेश्यायन नामा ता
पस ठे तेनु नाम वेश्यायन केम पड्यु ते कथा कहे ठे राजग्रही नगरी अने चपानगरी ए
बेनी वचमां गूर्वर नामा एक गाम ठे तेमां कोशंबी नामे एक कुटुंबी रहे ठे हवे ते गूर्वर गा
मनी पासे वली एक बीजु गाम ठे ते गामनी बाहेर कोइक राजानी फोज आवी पडी तेथी
गामना लोक सर्व नाशी गया तेमां एक स्त्री पोताना पुत्र सहित नाशति थकी जाय ठे ते स्त्रीने


चित्र ४७
सिद्धार्थ व्यंतर
गोशालो
भगवान्
वैश्यायन तापस

मार्गमां चोर लोकोयें पकडी लीधी अने बालक गूर्वरगामने बाहेर पड्यो रह्यो तेने काशव। नामा कुटुंबीये बाहेर जमतो देखीने उपाडी लीधो ते कुटुंबीने पुत्र हतो नही माटे तेने पुत्रनी पेरे राखीने म्होटो कर्यो अने ते छोकरानी माताने चोर लोकोये जइ चपानगरीमां कोइ वेश्यानी पासे वेची तेथी ते वेश्यानो धंधो करवा लागी पछी अनुक्रमे ते छोकरो जेवारे म्होटो थयो तेवारे एक दिवसे चपानगरीमां व्यापार करवाने अर्थे आव्यो तिहां पोतानी माता जे वेश्यानो धंधो करे छे तेनी सार्थे अजाण पणे जोगजोगववा लाग्यो एक दिवस तेनी कुलदेवी गाय वाछडानु रूप करीने रस्तामा आवी वेठी एटलामां ते छोकरो पण वेश्याने घेर जाय छे तेणे रस्तामा वाछडानां पूछ उपर पगदीधो तेवारे वाछडो वोल्यो जूउ माताजी आ म्हारा पूंछ उपर पग आपीनें चाल्यो जाय छे पण रस्तो देखतो नथी तेवारे गाय बोली के हे वेटा' तु एनु नाम लइश नही एतो पोतानी सगी माता साथे जोग करतां पण कांइ डरतो नथी तो वली ताहारूं शुं सांजलशे? ए वात सांजली छोकरो चमक्यो पछी सर्वह्कीगत कुलदेवीये कही तेथी सांजलीने तापस थयो लोकोये तेनुं वेश्यायन ऋषि एवु नाम आप्युं ते फाडमां बंधे मुखे लटकतो नीचे अग्नि कुंड कर्यो छे तेमां तापे छे तेने तेजोलेश्या उपजी छे एवामां तिहांथी जगवान चाल्या जाय छे पछवाडे गोशालो पण चाल्यो जाय छे ते वखत वेश्यायन पोतानी जटाजूटमांथी जूंउ निकलीने जमीन उपर पडी गयेली छे तेने उपाडीने पाछी पोतानी जटामां मूके छे ते जोइने गोशालो वोल्यो अरे तुंतो निष्केवल जूंनोज घर छो के मुनिछो? एवु हास्यनुं वचन त्रणवार वोल्यो एटले वेश्यायनने क्रोध चड्यो तेवारे गोशाला उपर तेजोलेश्या मूकी ते जोइ जगवानने करुणा आवी तेवारे जगवाने तेने साहामी सीतलेश्या मूकी तेथी गोशालो वल्यो नही

तपसीये पण भगवाननो प्रताप जाणी भगवाने खमाव्या पछी गोशालाये भगवानने पूछ्युं के तेजोलेश्या केम प्राप्त थाय तेनो उपाय बतावो तेवारे भगवान बोल्या के बेलानी तपस्या करे एटले छठ करीने पारणे एक मुठी अडदना बाकुला खाइने तेना उपर एक पसलीभर उष्ण पाणी पीये, सूर्य साहामो उभो रहे, एरीते छ महीना सुधी करे तो छेवट तेजोलेश्या पुरुषने उपजे आही केटलाएक कहे छे सिद्धार्थ व्यंतरे ए विधि कह्यो छे गोशाले पण ए सामान्य विधि धारण करी लीधो ॥ हवे भगवान कूर्मगामथी सिद्धार्थपुरे आवता रस्तामां पूर्वे कहेलु तलना झाडने उगेलुं यथारूप देखी तेने गोशाले विदार्यु तेमा सातपुज तल दीठा तेवारे सर्व सत्य मानीने गोशाले विचार्यु जे थवा वालु होय ते जरुर थाय एवीरीतें मानीलइने दृढनिश्चय वादी थयो ए मत निरधार करी लीधो तेवार पछी गोशालो भगवानथी जूदो रह्यो अने सावत्थीनगरीये आवी तेजोलेश्या साधि तेपण सिद्ध थइ, तथा दिशाचरोनी पासेथी अष्टाग निमित्त शीख्यो ते जिन नही एटले तीर्थंकर नहतो तोपण लोकोने कहे छु तीर्थंकर छु एवीरीतें तीर्थंकर नाम धरावतो पोतानी सिद्धाइ लोकोनी आगल देखाडतो थको भगवानथी न्यारो सावत्थी नगरीये फरे छे ॥ एवामा भगवान पण विचरता विचरता दशमुं चोमासु सावत्थी नगरीये आवीने रह्या अने तिहां अनेक प्रकारना तप कर्या ए दशमु चोमासुं जाणवु ॥ १० ॥ हवे भगवान चोमासु पुरु कर्या पछी विचित्र तपे विचरता थका ॥ उक्तं च ॥ दृढभूमि बहु मिछा, पेढालु जाणमागयो भयव ॥ पोलास चेइयमि, ठिएगराय महापडिम ॥ १ ॥ सक्कोइय देवराया, सभागउ भणइ हरिसीउ वयण ॥ तिन्निविलोग समत्था, जिणवीर मण चलेउजे ॥ २ ॥ सामाणिय सगमउ, देवो सक्कस्सतो अमरिसेण ॥ अह आगउ तुरतो, मि



चित्र ४३

छदिछि पडिनिविछो ॥ ३ ॥ ॥ हवे नगवान दढ एटले कठणनूमिने विपे बहुम्लेछ जिहां वसे छे एवा म्लेछना देशमां गया तिहां नगवानने कुतरा प्रमुखें करज्या छे एवा बीजा पण अनेक प्रकारना कठण उपसर्ग थया छे ते सर्व सहन कस्या पछी एकदिवस नगवान पेढाल नामा ग्रामना उद्यानमां पोलास नामा कोइएक देवनो चैत्य छे तेने विपे अष्टमतपें सहित एक रात्रि महाप्रतिमाये रह्या छे एवामां शक्रेन्द्र देवताउनो राजा ते पोतानी सन्नाने विपे रह्यो थको नगवानना धीरपणानी प्रशंसा करे छे के जो त्रणलोक नेगा थाय तोपण श्रीवीरप्रभुने चलाववानें समर्थ थाय नही एवु प्रभुनुं सत्व छे एवु इन्द्रमहाराजनुं वचन सर्व देवतायें सत्य करी मान्यु परतु एक संगम नामे सामानिक देव मिथ्यादृष्टि अनव्यजातिनो छे तेणे अमर्ष आणीने विचार्युं जे मनुष्यने चलाववु नगाववु एमां कांइ महोटी वात नथी एवु चिंतवी इन्द्रमाहाराज पासे बोल्यो के हुं एक क्षणवारमां चलावी आवु एवु कही इन्द्रनां वचन अणमानतो थको चलाववानी प्रतिज्ञा करीने तुरत प्रभु पासे आव्यो तेणे आवीने एक रात्रिमां महोटा वीश उपसर्ग प्रभुने कस्या तिहां प्रथमतो धूल उडावी धूलनो वरसाद करीने प्रभुनां श्वासोश्वास रुंध्या, पछी बीजो वज्रना जेवां मुखवाली कीडीयो विकूर्वीनें प्रभुना शरीरनें चुटाव्युं करडाव्यु चालणी जेवु शरीर कर्यु, पछी त्रीजु वज्रना जेवा मुखवाला डांस मछर विकूर्वीने प्रभुना शरीरने करडाव्यु, चोथुं घीमेल कीडीयो बनावीने चुटाव्युं, पांचमुं वींछी बनावीने शरीरने करडाव्युं, छठुं सर्पनां रूप करीने डसाव्युं, सातमुं नोलीयानां रूपबनावीने मुख अने नखथी शरीरने विदारण कराव्युं, आठमुं उंदरोनां रूप बनावीने शरीरने करडाव्युं, नवमुं हाथी अने हाथीउना रूप करीने शुंढथी उंचा उछाल्या, दशमुं दांत

अने पगथी शरीर मर्दन एटले शरीरनें कचराव्युं, अगीआरमुं पिशाचोनां रूप बनावीने अट्ट हास्य करी बीवराव्या, बारमुं सिंहनुं रूप करी नख मार्या, शरीर फाड्युं, तेरमुं सिद्धार्थ पिता तथा त्रिशला मातानां रूप करीने विलाप करतो बोल्यो के हे पुत्र ! अमे ताहारां माता पिता आव्यां छैयें माटे तु दुःख देखीशमां अमारी साथे आव अमे तुने सुख करी आपीशु, चौदमु तीक्ष्ण चांच वाला पखीनां रूप विकूर्वीने प्रभुना कान अने मुखनु मांस खवराव्युं, पन्नरमुं चांमालनां रुप करीने तर्जना करी, सोलमुं लाकडा खधा बाली करीने बेहु पग उपर हामी चडावी उपर खीर रांधी, अग्निथी बाल्या सत्तरमुं प्रचंड वायरे करी भगवतने उचा उछालीने पाछा नीचे जमीन उपर पटकी दीधा, अढारमु कलिकाल वायरो विकूर्वीने जे वायरो भगवानने चक्रनी पेरे भमाडे तेरीते भमाड्या, ते पछी ओगणीशमु हजार भार प्रमाण लोखंडनो गोलो बनावीने भगवानना मस्तक उपर नाख्यो तेणे करी भगवान केडसुधी केट लिक प्रतोमां ढीचण सुधी भूमिमांहे पेसी गया ए उपसर्गथी जो बीजो कोइ गमे तेवो बलवान होय तो पण चूरण थइ जाय पण एतो तीर्थकरनुं शरीर छे तेने कांइ पण थयु नही, वीशमुं रातनी वखते दिवस करी देखाड्यो अने संगमो बोल्यो के हे देवार्य ! प्रभात थयु माटे हवे विहार करो, गोचरी जाओ ते वखत भगवाने अवधिज्ञाने करी रात्रि जाणीने विचार्यु जे ए देवकृत चरित्र छे वली संगमाये देवतानी ऋद्धि देखाडी देवांगनानां रूप करी हाव भाव देखाडी अनुकूल उपसर्ग कर्या अने वली बोल्यो के तमोने जोइये ते वर मागो जो स्वर्ग मागो तो स्वर्ग आपु एवु कह्यु तो पण कोइ रीतें भगवान लगारमात्र मन्या नही चलायमान थया नही एम महाविकट एवा वीश उपसर्ग एक रात्रिमां संगमे कर्या पछी जेवारे भगवान

गाममां गोचरी करवा जाय तेवारे ते घरनो आहार अशुद्ध करी आपे जे भगवानने लेवो कल्पे नही एवो करी नाखे तथा हरहमेश गाममांथी चोरी करीने ते चीज भगवान आगल मूकी जाय तेथी लोक भगवानने मार आपे कलंक चडावे वली भगवाननो चेलो बनीने गाममां कोइकोइ लोकोनां छिद्र जोवा जाय जेवारे लोक पूछे के तुं शावास्ते आंही आडो अवलुं जोयां करे छे तेवारे तेने कहेके महारो गुरु रात्रिये चोरी करवा आवशे ते माटे हु आगलथी जोइ राखुं छुं ते सांभली लोक आवीने भगवाननें मार आपे एवो उपसर्ग थयेलो जोइने भगवाने अभिग्रह कर्यो के जिहांसुधी आ उपसर्ग मने थाय छे तिहांसुधी महारे आहार पाणी लेवु नही वली ते संगमो केटलिएक गामनी स्त्रीयो भगवान साथे मलती छे एवु लोक माने तेवु करी देखाडे तेवु छतां पण तिहां भगवान एकांत स्थाने रह्या एवा छ महीनासुधी उपसर्ग कर्या तो पण इंद्रमहाराजे तेने उपसर्ग करताने वार्यो नही केमके इंद्रमहाराजें एवु विचार्यु जे हुं एनें वारीश तो ए कहेशे के हुं तो भगवतने चलायमान करत पण शुं करुं के तमे मने वर्जना करी तेथी लाचार थयो एवो अपवाद टालवा सारुं इंद्रे तेने कांइपण कह्यु नही तोपण जिहांसुधी एणे उपद्रव कर्या तिहांसुधी इंद्रें श्वास लीधो नही, मनमां घणोज उदास रह्यो, बीजां पण सर्व देव देवीयो शोकमां निस्तेज थकां बेशी रह्यां एम करतां छ महीनानी अंते ते संगमो देवता पोतानी मेले पोतेज हार खाइने बोल्यो के हे आर्य ! तमे सुखेथी गोचरी करो हुं हवे बिलकुल उपसर्ग करीश नही तेवारे भगवाने कह्यु हुं महारी इच्छाये गोचरी जइश एवी रीतें हारीने संगमो स्वर्गमां गयो, इंद्रमहाराजें तेनुं मुख पण जोयुं नही लाकडीयोथी कुटावी मार मराव्योने स्वर्गमांथी काढाडी मूक्यो, ते ति

त्यांथी निकलीने पोतानी देवांगनाउ साथे लइने मेरुपर्वतनी चूलिकाये आवी रह्यो, एनु एक सागरोपमनु आयुष्य छे, अने ए अजव्यजीवनी जाति छे एवु कहेवाय छे एम प्रजुने दशमा वर्षने विषे घणा उपसर्ग थया पछी प्रजुये छमासी तपनु पारणु वज्रगाममां गोपालकने घरे खीरना जोजने कर्यु घणी प्रतोमां गोकुलने विषे वत्सपालीनामे वृद्ध स्त्रीये परमान्ने पारणुं कराव्यु कह्यु छे तिहां पाचदिव्य प्रगट थया वली चोसठ इन्द्रादिकोये तथा देवोये आवीने प्रजुने सुखशाता पूछी सावछी नगरीये शक्रेन्द्र प्रतिमामां प्रवेश करीने प्रजुने वांद्या लोकोये देखीने जगवाननो महिमा कर्यो ॥ हवे अगीआरमु चोमासु जगवाने विशाला नगरीमा कर्युं, तिहां जीर्णशेठ जावना जावी के जगवान जातपाणीनो लाज देजो एवीरीतें चार महीनां पर्यंत जावना जावी तोपण मिथ्यात्वी पूरणशेठे दासीने हाथे अडदना बाकुला आप्या ते लइने जगवाने तेने घेर पारणु कर्यु तिहां पचदिव्य प्रगट थयां तेवारे लोक सर्व पूरणशेठने धन्य छे धन्य छे एम कहेवा लाग्या अने जीर्णशेठ जाणु जे हु जाग्यहीण तेथी महारे एवो योग किहांथी मले, एम पश्चताप करतो रह्यो पछी केटलेक दिवसे केवली जगवान ते गाममां पधार्या तेवारे राजा प्रमुखें पूछ्यु के महारा नगरमा जाग्यशाली कोण छे? केवलीबोल्या के जीर्णशेठ जाग्यशाली छे राजाये पुछ्यु जगवानने दानतो पूरणशेठे दीधु छे? केवली बोल्या एणे जावविना दान दीधु छे माटे तेने द्रव्यथी लाज थयो छे अने जीर्णशेठे जावथी दान दीधु छे माटें बारमो देवलोकनु आयुष्य बांध्यु छे ए अग्यारसुं चोमासुं कर्यु ॥ ॥ ११ ॥ हवे जगवान तिहांथी विहार करीने सुसमारपुरे प्रतिमास्थित काउस्सग्गे रह्या तेवखते चमरेन्द्रनु सौधर्म देवलोकें जावु थयु छे अने ते चमरेंद्रे प्रजुनु शरण लीधु छे ए अधिकार


चित्र ४४
भगवान्
जीरण
शेठनु
घर
पूरणशठनु घर
भेसो

आगल दश अछेरानी वातमां सविस्तर आवी गयो छे माटे आहीं लख्यो नथी तेवार पछी अनुक्रमें चदनवालाये प्रञुने पडिलान्या छे एटले नगवते कांइक कर्म शेप रह्यां जाणी कोशं बीनगरीने विपे पोष वदि एकमना दिवसे पोतानी इछाथी एवो अनिग्रह कीधो छे के १ इव्य थीतो सूपडानां खूणामां अडदनां वाकला राखेला होय, २ क्षेत्रथी एक पग घरनी मेलीनी मांहेली कोरे होय अने एक पग मेलीनी वाहेर रह्यो होय ३ कालथी सर्व निक्षुक लोक निक्षा मागी जाय ते पछी ४ नावथी राजानी पुत्रीहोय परतु दासपणुं पामेली होय, ५ माथुं मुंमेलु होय, ६ जेनां पगमां वेडीयो पडेली होय, ७ अछम तपकर्युं होय ते वली रुदन करती वेठी होय एवी स्त्री जो वे पोहोर दिवस चडे मध्यान्ह पछी निक्षा आपे तो महारे पारणुं क रवु एवो अनिग्रह करीने श्रीवीरनगवान् गोचरिये नित्य न्रमण करे पण क्याय एवो योग वने नही त्यां राजानां मत्रीश्वर प्रमुखे अनेक उपाय कर्या पण कोइरीते प्रञुनो अनिग्रह पूर्ण थाय नही एवा अवसरमां चपानगरीनो दधिवाहन नामें राजा तेनी धारणी नामा स्त्रीनी व सुमतिनामा पुत्री छे तेनु अपर नाम चदनवाला छे हवे कोशंवी नगरीनो संतानिक नामे राजा छे तेणें राज्यविरोधे लशकर लेइ चपानगरीने लूटी तेवारे दधिवाहन राजा नाशी गयो अने धारणी राणी तथा चदना ए वे कोइ एक सतानिक राजानो पायदल सेवक हतो तेना हाथमां आवी तेणे धारणीने कह्यु के तने हुं महारी स्त्री करीश ते सांनली धारणी राणी तो पोतानी जीन्न चांपीने मरण पामी पछी सुनटें विचार्युं जे रखेने आ छोकरी पण मरी जाय एवुं जाणी तेने विश्वास आपीने कोशंवी नगरीनां चोवटा मांहे ते चदनवालानें वेचवा गयो तेंने वेश्या लेवा आवी तेवारे चदनाये पूछ्युं तमारो शो आचार छे वेश्या बोली उत्तम पुरुप साथे

प्रीति करवी जलां मन मान्यां जोजन करवां, ए अमारो आचार ळे तवारे चदना बोली ए म ह्माराथी न थाय तथापि ते वेश्यायेँ बलात्कारे लेवा मामी तेवारे शासन देवीये वेश्याना कान अने नाक ळेदी नाख्यां वेश्या नाशी गइ पळी धनावह्नामे शेठ जिनधर्मी ह्तो तेणे मूल आपी चदनाने वेचाती लइ पोताने घेर तेडी आव्यो अने चदना एवु नाम आपी पुत्री पणे थापी, पण चदनानु सु रूप देखी धनावह्शेठनी मूलानामा वाजणी कुह्ाड स्त्री ळे ते मनमां द्वेष राखवा लागी के रखेने ए माह्ारी शोक थाय ! तेमाटे प्रथमथीज कांइ उपाय करु तो सारु पळी एक दिवस शेठना पग पखालता चदनाना माथानी वेणी धरतीयें पडी तेने शेठे उपाडी उचीकरी ते पेह्ली डुराचार मूला स्त्रीये दीठी अने मनमा चितववा लागी जे शेठ एनी वेणीयें मोह्यो देखाय ळे मुखथी तो पुत्री कहे ळे पण एने स्त्री करी राखशे एमां सदेह् नथी केमके हु ह्वे बुढी थइ बु अने ए स्वरूप वती ळे पळी एक दिवसे शेठ कोइएक गामे गया पळवाडे मूलाये चदनानु मस्तक मूंफावी ह्ाथ पगमां वेडी घाली धूसानु वस्त्र पहेरावीने ळाणा प्रमुखना उरडामां वेसाडी पोते घरने वारणे तालु आपी पोताने पीयरे जती रही ह्वे चदना तो उरडामां वेठी नवकार गणे ळे पोताना करेला कर्मने निदे ळे एम करतां चोथे दिवसे शेठ फरी पोताने घेर आव्यो तिह्ां चदनवालाने दीठी नह्ी, तेवारे पडोसी लोकने पूळवा लाग्यो पण पह्ेली कजीयाखोर मूलानी वीकथी कोइ जवाव आपे नह्ी पळी एक फोकरीये सर्व वात कह्ी तेवारे शेठे तालु उघाडी उर डामांथी बाहेर काह्ाडी फेलीमां वेसाडीने कह्यु के हु लोह्ारने बोलावी लावु बु तें ताह्ारी वेडीयो उघाडशे चदनाये कह्यु हुं भूखें मरुं बु तेवारे शेठे अडदना बाकला एक सूपडाने खूणे नाखी चदनाने आणी आप्या अने कह्यु के तु त्रण दिवसनी भूखी ळो ते आ बाकला खाजे हुं


चित्र ४५
इन्द्र
राजा
सेवको
भगवान्
चंदन बाला

वेडी काह्राडवा सारुं लोह्रारने तेडी आवुं हुं एम कही चदनाने पूर्वली अवस्था सहित उंबरे वेसाडी पोते लोह्रारने तेडवा गयो पळवाडे शुद्धसम्यक्त्वनी धरनारी चदना सती चितवे ठे जे कोइ अतिथि आवे तो तेने ए वोह्रारावी आपु एवामां मध्यान्ह वीत्या पठी प्रजु पधा र्या तेने देखी चदनवाला हर्षवत थइ थकी वाकला देवा लागी परतु प्रजुयें लीधेला अनिग्र हना चार नेद तो मलता दीठा पण पांचमुं रुदन दीठुं नही तेथी पाठा वल्या तेवारे चदना दु ख धरती थकी रुदन करवा लागी जे साधु पण म्हारा हाथनो आहार लेता नथी माटे मने धि कार ठे पठी नगवते रुदन करती देखी पोतानो संपूर्ण अनिग्रह थयो जाणी ते अ डदना वाकला लीधा तिहां देवताये पचदिव्य प्रगट कर्यां वेडी नांगीने नेउर थयां मस्तके वेणी पाठी आवी इंद्रमहाराज आव्या, चंदनानी मातानी बहेन मृगावती ते चदनानी मासी थाय तेना सबंधथी सतानिकनामे राजा धन लेवा लाग्यो तेने इंद्रे वार्यो अने कह्यु के चद नाने दीक्षा लेवानी वखते ए धन काममा आवशे, चदनाये कह्यु ए धन धनावह शेठने स्वाधीन करो तेने आपीने इंद्र वोल्यो नगवाननी प्रथम साधवी ए चदना थाशे एम कही इंद्र स्वस्थानके गयो आहीआ पांचदिवसे उणा ठम्मासी तपनुं प्रजुने पारणुं थयु वली कोइक प्रतमां एम कह्यु ठे के वसुधारानी वृष्टि आपणे घरे थइ एवु सांनलीने मूला पोताना पिय रथी ठटति ठटति कसति कांचलीने जेम तेम वाधती तिहां आवी पठी महोटो लोलो वाल ती उतावलमां खोला नरीने धन उपाडवा मांड्युं तें उपाडतां अग्निज्वाला उठी वस्त्र सर्व वली नस्म थयां श्याम वदन थइ थकी जाती हवी तेने देवतायें तर्जना करी कह्यु के ए द्रव्य चदनवालानुं ठे चदनायें ते धन शेठने आप्युं शेठे ते सर्व धन चंदनानी दीक्षाना म

होत्सवें खरच्युं छे पछी जगवान पएमाजिनिका गामे कायोत्सर्गें रह्या तेवारे इन्द्रमहाराज वा दवा आव्या अने बोल्या के हे जगवान ! आपने आटला दिवस पछी अमुक दाहाडे केवलज्ञान उपजशे एवु कहीने गया हवे प्रभु विचरता अनुक्रमें चंपा नगरीये स्वातिदत्त ब्राह्मणनी शालाये बारमु चोमासु रह्या ए बारमुं चोमासुं ॥ १२ ॥ ॥ पछी तिहांथी पारणुं करीने जगवान विचरता पएमानिक गामे आवी बाहेर उद्यानमां काउस्सग्गे रह्या ॥ ते अवसरमा जगवतना कानमां गोवालिये खीला ठोक्या ते उपसर्ग कहे छे प्रभुये त्रिपृष्ठ वासुदेवने जवे शय्यापालकना कानमा तरुउं तरुए करी नखाव्यु हतुं ते कर्म अहीआं प्रभुने उदये आव्युं, ते शय्यापालक अनेक जवभ्रमण करी हमणा गोपालक थयो छे, तेथी ते वैरने लीधे तेणे गोवालीये प्रभुने बलद जलाव्या पोते गाममां गयो त्यांथी पाछो आव्यो तेवारे बलद न दीठा, पछी बलद जोवा सारु चार प्रहर रात्रि जम्यो प्रजाते आव्यो तो जगवत पासे बलद बेठा दीठा, ते वखत ते गोवालीयाने पूर्वजवना वैरथी द्वेष उपन्यो तेथी जगवतना कानमां खीला बेसाड्या, जेम कोइ देखे नही कोइने खबर पडे नही तेवीरीते बाहेरथी कापीने सरखा करीदीधा ते खीला जेना तीर थाय छे एवा शरकट वृक्षना अग्र कापीने कानमां ठोक्या तेथी जगवतने महावेदना प्राप्त थइ तेनायोगे अत्यत कृश थइ गया पछी जगवत्त तिहांथी विहार करता मध्यम अपापाये सिद्धार्थ वणिकने घेर गोचरीये पधार्या तिहां खरक वैद्य बेठो हतो तेणे मार्गानुसारे प्रभुने सशल्य दीठा तेवारे शेठने कहेवा लाग्यो के जगवानने व्यथा छे शेठे कह्यु तो ए व्यथा मटावी आपवानो लाभ तमे कां लेता नथी ? पछी शेठ अने वैद्य बेहु प्रभुनी पछवाडे गया तिहां वैद्ये विचार करी बे साणसा लइ बे वृक्षोनी वच्चे वृक्षोनी माजीयो रेसमथी बांधी कान मांहेली खीली साणसामां पकडीने


चित्र ४६
गायो
भगवान
खीलाठोकनार
गोवालीयो

रेसमनी दोरीयोथी बे बाजुये बे वृक्षोनी माळोमां बांध्यां पछी ते बेहु माळीयो एकज वखते साथेज छोडी तेथी बेहु काननां खीला तरत साथेंज नीकळी आव्या एम बुद्धिना प्रपंचे करी खीलातो काढ्या पण तेवखते प्रभुने वेदना एटली थइ के ते वेदनाना योगथी हाकमारी अरडाट मूक्यो वनमां घोराकार शब्द थयुं तेथी पर्वत फाटी पड्या ते पर्वत हालमां भजणवाड गामनी पासे छे त्यां भंजणवाड तीर्थ थयो प्रभु मूर्छापामी धरतीये पड्या तेने बे पुरुषे उपाडी बेसाड्या एम लोको कहे छे परतु तीर्थकरने एवु संभवे नही ते उपरथी अनुमान करीये छैये के कायाना व्यापारथी हांक थइ हशे पण भावथी थयेली जणाती नथी "अनंत बलित्वात्" ए वचन उपरथी निरधार थाय छे पछी कानोनी उपर व्रणसरोहिणी औषधी लगावी तेथी ते घाव मळी गयो समाधि थइ ते शेठ अने वैद्य बेहु मरण पामी देवलोके गया, गोवाळीयो मरी सातमी नरके गयो ए रीते भगवानने ए छेल्लो महोटो उपसर्ग गोवाळीये कर्यो हवे भगवानने जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण प्रकारना उपसर्ग थया तेमां कया कया जातिना उपसर्गमां महोटामा महोटो उपसर्ग कयो कयो थयो ते कही देखाडे छे प्रथम जघन्य उपसर्गोमां तो शीत परीसहनो महोटो उपसर्ग व्यंतरीये कर्यो तथा मध्यम उपसर्गों मांहे संगम देवताये महोटो उपसर्गकर्यो, अने उत्कृष्ट उपसर्गोमांहे महोटो उपसर्ग कानमां खीला ठोकाणा तथा खीला काढ्यानो थयो ए रीते भगवाने बारवर्ष सुधी काया वोसरावी जेम कोइ पुरुष गाय दोहोवाने बेसे तेवे आसने प्रभु बेठा पण कोइ दिवसे धरतीये बेठा नही ॥ तेमां मात्र बे घडी शूलपाणि यक्षने देहेरे निद्रा करी बाकी सर्वकाळनिद्रा विनानुं गयुं एम श्रीवीरप्रभुने घणा उपसर्ग सहन करवा पड्या अने श्रीऋषभदेव तीर्थकरने एक वर्ष सुधी



(चित्र ४७)

रेसमनी दोरीयोथी वे वाजुये वे वृक्षोनी फालोमां वांध्यां पठी ते वेहु फालीयो एकज वखतें सायेज ठोडी तेथी वेहु काननां खीला तरत सायेंज नीकली आव्या एम बुद्धिना प्रपंचे करी खी लातो काढ्या पण तेवखते प्रभुने वेदना एटली थइ के ते वेदनाना योगथी हाकमारी अर डाट मूक्यो वनमां घोराकार शब्द थयुं तेथी पर्वत फाटी पड्या ते पर्वत हालमां वंजणवाड गामनी पासे ठे त्यां वंजणवाड तीर्थ थयो प्रभु मूर्छापामी धरतीये पड्या तेने वे पुरुषे उ पाडी वेसाड्या एम लोको कहे ठे परतु तीर्थकरने एवु संजवे नही ते उपरथी अनुमान क रीये ठैये के कायाना व्यापारथी हांक थइ हशे पण जावथी थयेली जणाती नथी "अनंत वलित्वात्" ए वचन उपरथी निरधार थाय ठे पठी कानोनी उपर व्रणसंरोहिणी औषधी ल गावी तेथी ते घाव मली गयो समाधि थइ ते शेठ अने वैद्य वेहु मरण पामी देवलोकें गया, गोवालीयो मरी सातमी नरके गयो ए रीते जगवानने ए ठेहेलो महोटो उपसर्ग गोवालीये कर्यो हवे जगवानने जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण प्रकारना उपसर्ग थया तेमां कया कया जातिना उपसर्गमां महोटामां महोटो उपसर्ग कयो कयो थयो ते कही देखाडे ठे प्रथम जघन्य उपसर्गोमां तो शीत परीसहनो महोटो उपसर्ग व्यंतरीये कर्यो तथा मध्यम उपसर्गो मांहे संगम देवताये महोटो उपसर्गकर्यो, अने उत्कृष्ट उपसर्गोमांहे महोटो उपसर्ग कानमां खीला ठोकाणा तथा खीला काढयानो थयो ए रीते जगवाने वारवर्ष सुधी काया वोसरावी जेम कोइ पुरुष गाय दोहोवाने वेसे तेवे आसने प्रभु वेठा पण कोइ दिवसें धरतीयें वेठा नही ॥ तेमां मात्र वे घडी शूलपाणि यक्षने देहेरे निद्रा करी बाकी सर्वकालनिद्रा विनाज गयु एम श्रीवीरप्रभुने घणा उपसर्ग सहन करवा पड्या अने श्रीऋषभदेव तीर्थंकरने एक वर्ष सुधी

निद्रा मली नही एटलो उपसर्ग थयो तथा मध्यम बावीश तीर्थंकरने स्वल्प उपसर्ग थया छे ॥ हवे जगवान जेवारे आगार एटले घर तेणे करी रहित एवा अणगार थया तेवारे एक चाल वानी ईर्या समिति एटले जोइने चाले, बीजी जाषा समिति एटले विचारीने बोले, त्रीजी एषणा समिति एटले दोष रहित आहार लीये, चोथी आदाण जमत्त निरकेवणा समिति ए टले जांम मात्रां प्रमुखने जोइने जयणाये ग्रहण करे तथा जयणाये मूके, पांचमी उच्चार प्र श्रवण खेलजल्ल सिघाणपारिष्ठापनिका समिति एटले ठलो, मात्रो, खखार अने सेम्हो ए सर्व निर्जीवस्थानके परठवे ए पाच समितिये समता होता हवा पण श्रीतीर्थंकरनो आहार निहार कोइनां दीठामां आवे नही, कोइना जाणवामां आवे नही, खेल, नाकमल, खखार, होयज नही केमके एने रोगनो अन्नाव छे वली जगवान मन, वचन अनें कायाने कुकर्ममां न चलावता हवा मन वचन कायाने जलीरीतें वर्त्तावनाथी त्रण समिति सहित थया ॥ वली जगवान म नगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्तियें गुप्त होताहवा, वली जगवान इंडियोने गो पवी नववाड सहित शील राखता हवा, वली क्रोध मान माया अने लोजरहित, घणाज शी तल स्वजाववाला, जेमने क्रोधादिक उपशांत थइ गया छे एवा छे, वली जेणे पापने रोधि मू क्यां छे, निराश्रव थया छे, ममत्त्वरहित, धनरहित, ग्रथरहित होवाथी निर्ग्रंथ थया छे जेम कासाना पात्रने पाणी लागे नही तेम जगवान पण निर्लेप स्नेह रहित छे, जेम शखने रग लागे नही तेवा निरजन छे तथा कोइ उपर राग नही द्वेष नही माटे रागद्वेष रहित, जेमजीवनी गति क्याय रोकाती नथी तेम जगवानने क्यायजाता गति हणाती एटले जगवानने विहार करवामा कोइ रोकी शके नही,आकाश जेम निरालंब छे तेम जगवान पण कोइनो आधार राखता नथी,

वायरानी पेरे अप्रतिबद्ध विहार करे, शरदऋतुना मेघ समान जेनु हृदय निर्मल छे कमलना पत्रनी पेरे निर्लेप जाणवा, काचबानी पेरे इंद्रियोने गोपवी राख्या छे, वली खम्गी नामनुं जानवर थाय छे तेना शिंगडानी पेरे एकलाज छे, पखी जेम पोतानी पासे कांइ पण परिग्रह राखे नही तेम नगवान पण पोतानीपासे कांइ पण परिग्रह राखे नही, नारम्पखीनी पेरे अप्रमत्त, हस्तिनी पेरे कर्मरूप शत्रुउने मथन करवामां महापराक्रमवत, वृपननी पेरे संयमरूप नार निर्वाह करवाने सामर्थ्यवान, सिंहनी पेरे परिसह जीतवामां डुर्द्धर, मेरुनी पेरे अचल अकंप चलायमान थाय नही एवा छे, समुद्रनी पेरे गंनीर छे, चड्मानी पेरे सौम्यले श्यावत छे, वली सूर्यनीपेरे दीपतुं तेज छे जेनुं, तपाव्या कुंदनना सोना सरखा जातरूप छे, पृथ्वीनी पेरें सर्व फरस सहन करनार छे, घृते होमेला अग्नि सरखा तेजे करी जाज्वल्यमान छे, तेथी नगवानने क्यांये प्रतिबंध नथी, हवे जेनो प्रतिबंध नथी ते प्रतिबध चार प्रकारनो छे ते कहे छे प्रथम ड्व्यथकी प्रतिबंध त्रण प्रकारनो छे तेमां एकतो मातापिता पुत्रादिक ते ड्व्य थकी सचित्त प्रतिबंध जाणवो बीजो घरेणा प्रमुखनो प्रतिबंध ते ड्व्यथी अचेत प्रतिबंध जाणवो, त्रीजो शणगार करेली स्त्री प्रमुखनो प्रतिबंध ते मिश्रप्रतिबंध जाणवो एरीते ड्व्यथकी त्रणे प्रकारनो प्रतिबध जेने नथी माटे ममत्व रहित छे वली बीजो खेत्रथकी प्रतिबध ते गाम, नगर, उजाड, खेत्र, खलां, घर, घरनां आंगणां, आकाश इत्यादिक कोइनी उपर महारा पणुं नथी माटे प्रतिबध नथी, त्रीजो कालथी प्रतिबंध ते समयने विपे, आवलिका, श्वासोश्वास, सातश्वासोश्वासें एक स्तोक, क्षण, सातस्तोकनो एक लव, बे घडीनुं मुहूर्त्त, त्रीशमूहूर्त्तें एक अहोरात्रि, पन्नर अहोरात्रीये एक पक्ष, बे पक्षे एक मास, बे मासे एक ऋतु, त्रण ऋतुनुं एक अयन, बे अय

नज़ु एक वर्ष, पाच वर्षनो एक सवत्सर, इत्यादिक वीजा पण दीर्घ कालने विषे कोइ परवत आ अमुक काम हु करीश एवो प्रतिवध नथी तथा चोथो नावथी प्रतिवध ते क्रोध, मान,माया, लोज, जय, हास्य, राग, द्वेप, वचन युद्ध, खोटु कोइने कलक आपवु, चुगली करवी, परना दोप प्रगट करी कहेवा, अरति द्वेप, रति प्रीति, कपटथी वोलवु, मिथ्यात्वशल्य ॥ ग्रथाग्रय ॥ ६०० ॥ ए काम करे तो जावथी प्रतिवध कह्यो कहेवाय ते मांहेलो ए जगवानने विषे काइ पण नथी ॥ ११८ ॥ ॥ वली ते जगवते वर्षादिना कालविना शेप उंनाला अने शीयालाना आठ महीनामां गामने विषे एक रात्रि अने नगरने विषे पांच रात्रि लगण रहेवु एवो विहार कर्यो एवा थका विचरे तथा जेम कुहाडो चदनने कापीनाखे पण चदनतो उलटो कुहाडानी धारने सुगंधज आपे अने जे नही छेदे तेने पण सुगध आपे छे तेम जगवानने कोइ वांसले छेदे कोइ चदने लेपे ते वेहुनी उपर समान सरखु मन छे जेनु वली तृण अने मणी तथा पाणो अने सोनु ए वेहु समान छे जेने, दुःख अने सुख वेहु समान छे जेने, इहलोक अने परलोकनी गरज नथी जेने, जीववा अने मरवानी इछा नथी जेने, ससार समुद्रथी पार थवा वाला, कर्म रूप शत्रुने मारवाने उजमाल थया एवा थका विचरे छे ॥ ११९ ॥ ॥ जे जगवानना उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन अने चारित्र छे, आदि रहित स्थान विहार पराक्रम आर्जव मार्दव अल्प उपधी क्षमा निर्लोजिता गुप्ति मनप्रसन्नता ए सर्व काम उत्कृष्ट छे साचो सयम तप करवाथी उपचय करेलु फल निर्वाणमार्ग तेने विषे आत्माने जावता थका विचरे एवी रीते जगवानने वारवर्ष वीत्या ॥ हवे जगवाने वारवर्षमां जे कांइ तप कर्युं तेनी सख्या तथा पारणां कर्या तेनी सख्या कहे छे एक संगम देवना उपसर्गमां छ मासी तप तेनु पारणु

एक बीजुं पांच दिवसें न्यून ठ मासी तप तेनुं एक पारणुं, नव वखत चारमासी तप कर्युं तेना नव पारणां, बे त्रिमासी तपनां बे पारणां, बे अढीमासी तपनां बे पारणा, ठ दोयमासी तपना ठ पारणां, बे दोढमासी तपनां बे पारणां, बार एकमासी तपनां बार पारणां, ब होतेर अर्द्धमासी तपनां बहोतेर पारणां, बसेनें उगणत्रीश ठठ तप कर्यां तेनां बसेने उगण त्रीश पारणां, ए बेलानी तपस्या करतां पन्नरमहीनानें आठ दिवस तपस्यामां गया, जद्रप्र तिमा दिन बे, महाजद्र प्रतिमा दिन चार, सर्वतोजद्र प्रतिमा दिन दश, ए त्रण प्रतिमानां त्रण पारणां अने तपना दिवस सोल जाणवा तथा एक रात्रिकी प्रतिमा बार तेनां पारणां बार ए रीते सर्व तपना दिवसो मेलवतां सरवाले अगीआर वर्ष ठ महीनाने पचीश दिवस एटला सर्व दिवस निराहार पणे चउविहारा जाणवा एनां यंत्रनी स्थापना नीचे करी ठे तेमां बशेने उगणत्रीश ठठ करी ठे तेनां पारणा बशे उगणत्रीश थयां तेमांथी एक ठठनुं ठेल्लुं पारणुं केवली पणे थयुं गणीने बाकी बशे अठावीश पारणां लख्यां ठे तथा बार एक रात्रिकी प्रतिमाने स्थानकें बार अठम तप लखीने सरवाले ४१६५ दिवस चउविहारा तपना थया अने ३५० दिवस प्रथम पारणा सहित आहारना थया सर्वमली ४५१५ दिवस ठद्मस्थपणे रह्या तेना एकवर्षमां ३६० दिवसनी संख्या करतां बार वर्षने साडा ठमहीनां थाय एरीते जग वानें नित्य जोजनतो रह्यु पण चोथ तप एटले एक उपवास करीने पण पारणुं कोइ वखत कर्युं नही थोडामां थोडुं तप कर्युं ते पण ठठनुं एटले बे उपवासनुं कर्युं ठे ॥ यंत्र स्थापना ॥ हवे श्रीवीरचरित्रानुसारें ठद्मस्थपणाना चोमासानी संख्या कहीयें ठैये एक अस्थिग्रामे, बीजुं नालंदी पाडे, त्रीजुं चपानगरीयें, चोथुं पृष्टचपाये, पांचमुं जद्रिकाये, ठहुं पण जद्रिकाये,

नवुं एक वर्ष, पांच वर्षनो एक संवत्सर, इत्यादिक बीजा पण दीर्घ कालने विषे कोइ वखत आ अमुक काम हुं करीश एवो प्रतिबंध नथी तथा चोथो जावथी प्रतिबंध ते क्रोध, मान, माया, लोज, जय, हास्य, राग, द्वेष, वचन युद्ध, खोटुं कोइने कलंक आपवुं, चुगली करवी, परना दोष प्रगट करी कहेवा, अरति द्वेष, रति प्रीति, कपटथी बोलवुं, मिथ्यात्वशल्य ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ६०० ॥ ए काम करे तो जावथी प्रतिबंध कर्यो कहेवाय ते मांहेलो ए जगवानने विषे कांइ पण नथी ॥ ११८ ॥ ॥ वली ते जगवंते वर्षादना कालविना शेष उंनाला अने शीयालाना आठ महीनामां गामने विषे एक रात्रि अने नगरने विषे पांच रात्रि लगण रहेवुं एवो विहार कर्यो एवा थका विचरे तथा जेम कुहाडो चंदनने कापीनाखे पण चंदनतो उलटो कुहाडानी धारने सुगंधज आपे अने जे नही छेदे तेने पण सुगंध आपे छे तेम जगवानने कोइ वासले छेदे कोइ चंदने लेपे ते बेहुनी उपर समान सरखुं मन छे जेनुं वली तृण अने मणी तथा पाणो अने सोनुं ए बेहु समान छे जेने, दुःख अने सुख बेहु समान छे जेने, इहलोक अने परलोकनी गरज नथी जेने, जीववा अने मरवानी इछा नथी जेने, संसार समुद्रथी पार थवा वाला, कर्म रूप शत्रुने मारवाने उजमाल थया एवा थका विचरे छे ॥ ११९ ॥ ॥ जे जगवानना उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन अने चारित्र छे, आदि रहित स्थान विहार पराक्रम आर्जव मार्दव अल्प उपधी क्षमा निर्लोभिता गुप्ति मनप्रसन्नता ए सर्व काम उत्कृष्ट छे साचो संयम तप करवाथी उपचय करेलुं फल निर्वाणमार्ग तेने विषे आत्माने जावता थका विचरे एवी रीते जगवानने बारवर्ष वीत्यां ॥ हवे जगवाने बारवर्षमां जे कांइ तप कर्युं तेनी संख्या तथा पारणां कर्यां तेनी संख्या कहे छे एक संगम देवना उपसर्गमां छ मासी तप तेनुं पारणुं

एक बीजुं पांच दिवसें न्यून छ मासी तप तेनुं एक पारणुं, नव वखत चारमासी तप कयुं तेना नव पारणां, बे त्रिमासी तपनां बे पारणां, बे अढीमासी तपनां बे पारणा, छ दोयमासी तपना छ पारणां, बे दोढदोढमासी तपनां बे पारणां, बार एकमासी तपनां बार पारणां, बहोतेर अर्द्धमासी तपनां बहोतेर पारणां, बसेनें ओगणत्रीश छठ तप कर्यां तेंनां बसेने ओगणत्रीश पारणां, ए बेलानी तपस्या करतां पन्नरमहीनानें आठ दिवस तपस्यामां गया, भद्रप्रतिमा दिन बे, महाभद्र प्रतिमा दिन चार, सर्वतोभद्र प्रतिमा दिन दश, ए त्रण प्रतिमानां त्रण पारणां अनें तपना दिवस सोल जाणवा तथा एक रात्रिकी प्रतिमा बार तेनां पारणां बार ए रीतें सर्व तपना दिवसो मेलवतां सरवाले अगीआर वर्ष छ महीनाने पचीश दिवस एटला सर्व दिवस निराहार पणे चउविहारा जाणवा एनां यंत्रनी स्थापना नीचे करी छे तेमां बशेने ओगणत्रीश छठ करी छे तेनां पारणा बशे ओगणत्रीश थयां तेमांथी एक छठ्ठनुं छेल्लुं पारणुं केवली पणे थयुं गणीने बाकी बशे अठावीश पारणां लख्यां छे तथा बार एक रात्रिकी प्रतिमाने स्थानकें बार अठम तप लखीने सरवाले ४१६५ दिवस चउविहारा तपना थया अने ३५० दिवस प्रथम पारणा सहित आहारना थया सर्वमली ४५१५ दिवस छद्मस्थपणे रह्या तेना एकवर्षमां ३६० दिवसनी संख्या करतां बार वर्षने साडा छमहीनां थाय एरीते भगवानें नित्य भोजनतो रह्यु पण चोथ तप एटले एक उपवास करीने पण पारणुं कोइ वखत कर्युं नही थोडामां थोडुं तप कर्युं ते पण छठ्ठनुं एटले बे उपवासनुं कर्युं छे॥ यंत्र स्थापना॥ हवे श्रीवीरचरित्रानुसारे छद्मस्थपणाना चोमासानी संख्या कहीयें छैये एक अस्थिग्रामें, बीजुं नालंदी पाडे, त्रीजुं चंपानगरीयें, चोथुं पृष्टचंपाये, पांचमुं भद्रिकाये, छठ्ठं पण भद्रिकाये,

तपना नाम	केटला कर्या	एकदरदिव सनीसंख्या	पारणानी संख्या
छमासी पूरण	१	१८०	१
पंचदिवसूण छ मासी	१	१७५	१
चारमासी	ए	१०८०	ए
त्रणमासी	२	१८०	२
अढीमासी	२	१५०	२
बेमासी	६	३६०	६
दोढमासी	२	ए०	२
एकमासी	१२	३६०	१२
अर्धमासी	७२	१०८०	७२
प्रतिमा, अष्ठमतप	१२	३६	१२
छठतप	२२ए	४५८	२२८
नद्रप्रतिमा	१	२	१
महानद्रप्रतिमा	१	४	१
सर्वतोनद्रप्रतिमा	१	१०	१
सरवाळे		४१६५	३५०

सातमुं आलंनिकायें, आठमुं राजगृहीयें, नवमुं वज्रनूमीये, दशमुं सावत्थिये, अगीआरमु विशालाये, बारमु चपानगरीयें, एरीते बार चोमासा प्रभुना थयां ॥ हवे तेरमां वर्षने विषे वर्त्तमान थका उनालानो बीजो महीनो, चोथु पखवाडचु एटले वैशाखशुदि दशमने दिवसे पाछलो पोहोर दिवस रहे थके सुव्रतनामा दिवसे विजयमुहूर्त्तमां जंनिक गामने बाहेर उजुवालुका नदीना तीर उपर वैयावर्त्तनामा चैत्यने घणुं दूर नही तेम घणुं ढूकडुं पण नही एवा स्थानके सामक नामे गाथापतिना खेत्रमां शालिवृक्षने नीचे नगवान गोडुह आसने एटले गायने दोहोवा बेसीये तेवा आसने उकडा बेसी आतापना लेता थका पाणी रहित बेलानी तपस्यामा आत्माने नावता एवा स्वरूपे रह्या थका उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके ते अव

सरे ध्यानमां वर्त्तमान अर्थात् शुक्लध्यान ध्यावता थका भगवानने जे समान बीजुं कोइ ज्ञान नथी एवो व्याघात रहित, आवरण एटले ढांकणा रहित, सर्व द्रव्य पर्यायोने ग्रहण करवा वालुं संपूर्ण पूर्णिमानां चंद्रनी पेरे केवल एटले एकज पण बीजो कोइ जेने सहाय नही एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयुं ॥१२०॥ पछी भगवान श्रीमहावीरस्वामी अर्हन् एटले पूजनीय थया, राग द्वेष रहित थया, केवली थया, सर्व जाण थया, सर्वना देखवावाला थया, सर्व देव, मनुष्य, असुर लोकना पर्यायोने जाणे देखे, सर्वलोक सर्वजीवोनी आगति, गति, भवांतरमां जावुं, आयुष्य, देवलोकादिकोथी चववुं, देवलोकादिकोमां जइ उपजवुं, ते जीवोने मन, मनमां चिंतवेते, अन्न प्रमुख खाय ते, चोरी प्रमुख करे ते, मैथुनादिक सेवे ते, प्रकटकर्म करे ते, छानुं कर्म करे करावे ते, इत्यादिक वातो मांहेली कोइ एक पण वात जेनाथी छानी रहे नही एवा ज्ञानवान थया जेनी जघन्यथी पण एक क्रोड देवता सेवा करे एवा थया, ते कालमां मन वचन कायाना योगमां वर्त्तमान सर्वजीवोना सर्व भाव जाणता थका, देखता थका भगवान विचरे ॥१२१॥ ॥ हवे भगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी चोसठ इंद्रोनां आसन चलायमान थयां तेवारे चोशठे इंद्र दिक्षा महोत्सवनी पेरे केवलज्ञाननो महोत्सव करवा आव्या ते महोत्सव करीने जांभिकागामनी बाहेर समोसरणनी रचना करी तिहां प्रभुये क्षणेकवार देशना आपी पण ते देशना निष्फल गइ कोइये मात्र सामायिकादिक व्रत पण ग्रहण कर्यां नही तथा देव सर्वे अव्रति छे तेणे नवकारशी प्रमुख पच्चख्काण पण कर्युं नही, "इदमपिआश्चर्य" एटले ए पण आश्चर्य जाणवुं जे तीर्थंकर जेवानी देशना पण खाली गइ तेवारे भगवाने लाभनो अभाव जाणी आगल लाभ थवानो अवसर जाणी तेज वखत तिहांथी विहार कर्यो यत

कहेतां जेमाटे कह्यु छे के ॥ श्लोक ॥ तत्रादिश्यक्षणधर्मं, देवोद्योतेजगद्गुरु ॥ लाजालावान्मध्य मायां, महसेनवनेगमत् ॥१॥ ॥ अर्थ —जिहां केवलज्ञान उपन्यु तिहां जगवान जीत एटले तीर्थंकरनो आचार पालवा माटे एक क्षणमात्र धर्मदेशना आपीने देवोना उद्योतने विषे जगतना गुरु एवा वीरस्वामी लाजनो अजाव जाणी तिहांथी बार योजन मध्यम पावानगरी तेनो महसेन नामक वन तिहां आवता हवा एटले रात्रिये विहार करवानी मर्याद नथी अने एमणे विहार कर्यो ते कल्पातीत पणुं जणाववा माटे जे तीर्थंकर आचरे ते कल्पमां होय तथा कदापि नही पण होय परतु छद्मस्थ साधु तो जे प्रमाणे तीर्थंकरे कल्प कह्यो होय ते प्रमाणेज चाले पण जो तेथी विपरीत चाले तो प्रायश्चित्तने पामे वली रात्रिनो विहार ते जीवनी जयणाने अर्थे वर्ज्यो छे केमके रात्रिये कोइ जीव जोवामां आवे नही माटे इहां श्लोकमा देवोद्योत एवो पाठ कह्यो ते व्यवहार जणाव्यो अन्यथा तीर्थंकरने तो ज्ञान उद्योत सदा सर्वदा छे वली देवरचित कनककमल उपर पगला देता चाले छे तेमाटे एमनुं चालवुं सदा रात्रि दिवस सरखुं छे पण एनु दृष्टांत आपीने जे साधु रात्रिये विहार करे छे ते सुखशीलिया तीर्थंकरनी आज्ञा बाहिर छे माटे ते चारित्रथी भ्रष्ट जाणवा ॥ हवे जगवान मध्यमपावापुरीये आव्या तिहां शु थयुं ते कहे छे जेंवारे मध्यम पावापुरीये वीर प्रभु पधार्या तेवारे देवोये विशेष समवसरणनी रचना करी तिहां जगवत पूर्वने बारणे पेसी अशोकवृक्षने त्रण प्रदक्षिणा देइ सिंहासने बेसी " नमोतिथ्थस्स " एम कही धर्मोपदेश आपे इहां मंगलाचार जणाववा माटे तीर्थ एवु सूत्रनुं नाम छे तेने नमस्कार करीने पछी धर्मोपदेश करे हवे एहवामां तिहां एक सोमिल ब्राह्मण यज्ञार्थि यज्ञ एटले होम करावे छे

तिहां घणा ब्राह्मणो एकठा थयेला ठे वली तेना तेड्या अगीयार महा पंमित सर्वादिशामांथी ब्राह्मण आव्या ठे यत ॥ अपापायां महापुर्यां, यज्ञार्थी सोमिलोद्विज ॥ तदाहूता समाजग्मु, रेकादशद्विजोत्तमा ॥ १ ॥ ॥ अर्थ.– अपापा नामनी महानगरी तेने विषे रहेनारो सोमिलनामा ब्राह्मण तेणे यज्ञकरवाने अर्थें अगीयार महोटा ब्राह्मण बोलाव्या ते तिहां आव्या ठे " तेषां नामानि " एटले तेनां नाम कहे ठे. १ इन्द्रनूति, २ अग्निनूति, ३ वायुनूति, ४ व्यक्त, ५ सुधर्म, ६ मंमित, ७ मौर्यपुत्र, ८ अकंपित, ९ अचलच्रात, १० मेतार्य, ११ प्रनास ए अगीयारे महापंमित, चौदेविद्यानां जाण, वेदपाठी, महाअभिमानी ठे ते एवुं जाणे ठे के अमारा जेवो जगतमां कोइ पंमित नथी तेम सर्वज्ञ जे लोक कहे ठे ते अमेज ठैये हवे ते अगीयारे जणना मनमां जे अगीयार जुदाजुदा संदेह ठे ते कहे ठे ॥ पहेला इन्द्रनूतिना मनमां जीव ठे के नथी एवो संदेह ठे, बीजा अग्निनूतिना मनमां कर्मनो संदेह ठे, त्रीजा वायुनूतिना मनमां जीव अने कर्म जुदां ठे के एक ठे एवो संदेह ठे, ए त्रणे संदेह वाला त्रणे जण सहोदर एटले सगा नाइ ठे एमनु गौतमगोत्र ठे चोथा व्यक्तना मनमां पंचनूतनो संदेह ठे, पांचमा सुधर्मना मनमां जे जेहवो ते तेहवो एटले जे स्त्री होय ते मरीने बीजे नवे पण स्त्रीज थाय अने जे पुरुष होय ते मरीने पुरुषज थाय एवो संदेह ठे, ठठा मंमितना मनमां बंध मोक्ष ठे के नथी एवो संदेह ठे, सातमा मौर्यपुत्रनां मनमां देव ठे के नथी एवो संदेह ठे, आठमा अकंपितना मनमां नरक ठे के नथी एवो संदेह ठे, नवमा अचलच्रातना मनमां पुण्य पाप ठे के नथी एवो संदेह ठे, दशमा मैतार्यना मनमां परलोक ठे के नथी एवो सदेह ठे, अगीआरमा प्रनासना मनमां मोक्ष ठे के नथी एवो संदेह ठे एवा अगीयारे जणने वेदना अर्थ

विपरीत समजवाथी सदेह रही गया छे पोतापासे पंडिताइनुं बल घणुं छे माटे अभिमा नथी बीजानी वात चालवा देता नथी हवे ए अगीआरनी पासे जे छात्र नणे छे तेनी सख्या कहे छे ॥ गाथा ॥ पचएह पचसया, छच्छसयाइदुति डन्निगणा ॥ डन्न तु जुअल सयाण, तिसउ तिसउ हवइगच्चो ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – पहेला पांच पंडितोनी पासे पाचपाचसो छात्र नणे छे ते पांचेना पचीशसो छात्र थया तथा छठा अने सातमा पासे छच्छसया एटले साडात्रणसे छात्र नणेछे एम बेउना सातसे थया तेवारपछी वली बे जुगल एटले आठमो अने नवमो ए पहेलो जुगल अने दशमो तथा अगीआरमो ए बीजो जुगल मली चारजणानी पासे त्रणसो त्रणसो छात्र नणे छे ते चारना मली बारसो थया एम सरवाले अगीआरेनां मली चुमालीशसो छात्रोनो गच्छ एटले समुदाय थयो एटले अगीआरे पंडितोने चुमालीशसो विद्यार्थिउ छे एम घणा विप्र तिहां यज्ञमा मल्या छे ते सर्व यजन, जापन, अध्ययन, अध्यापन, दान, प्रतिग्रह ए षट्कर्म साधे छे, प्रजाते ब्रह्म गायत्री जपे छे, मध्यान्हे विष्णुगायत्री जपे छे, सध्याये शिवसरस्वती जपे छे, हवे एमां प्रथम उपाध्यायनां नाम कहे छे शकर, शिवकर, इश्वर, महेश्वर, धनेश्वर, सोमेश्वर, शुनकर, सीमकर, क्षेमकर, करुणाकर इत्यादि हवे जानीना नाम कहे छे गगाधर, गयाधर, विद्याधर, महीधर, श्रीधर, लक्ष्मीधर, धरणीधर, नूधर, दामोदर, दृपोदर इत्यादि हवे दवेना नाम कहे छे महादवे, शिवदवे, रामदवे, धामदवे, कामदवे, सहदवे, हरदवे, वासुदवे, श्रीदवे, बलदवे, धनदवे, चड्दवे हवे व्यासना नाम कहे छे श्रीपतिव्यास, उमापति, गणपति, प्रजापति, विद्यापति, नूपति, महिपति, लक्ष्मीपति, गंगापति, पृथ्वीपति, देवपति, दानवपति, धनपति हवे पंडितोनां नाम कहे छे


चित्र ४५
यज्ञशाला
यज्ञशालाना ब्राह्मणो

धामदवे, कामदव, सहदेव, [illegible]

नाम कहे छे श्रीपतिव्यास, उमापति, गणपति, प्रजापति, विद्यापति, भूपति, [illegible], ल

क्ष्मीपति, गगापति, पृथ्वीपति, देवपति, दानवपति, धनपति हवे पंक्तिोना नाम कहे छे

॥१२७॥

नागार्जुन पंमित, गोवर्द्धन, गुणवर्द्धन, विष्णु, कृष्ण, मुकुंद, गोविंद, आनंद, परमानंद, उ द्धव, माधव, केशव, पुरुषोत्तम, नरोत्तम हवे जोशीनां नाम कहे छे खिमाइतजोशी, नीमा इत, रामाइत, प्रजाइत, गुणाइत, विख्याइत, सोमाइत, धनाइत, कर्माइत, धर्माइत, देवाइत, चड्डाइत, सूराइत हवे त्रिवाडीनां नाम कहे छे हरिशर्म, अग्निशर्म, महाशर्म, देवशर्म, नर शर्म, सोमशर्म, सूरशर्म, राजशर्म, वासशर्म, गुणशर्म, धर्मशर्म, कर्मशर्म, कुमारशर्म, धन शर्म, जयशर्म, नागशर्म, विष्णुशर्म, शिवशर्म हवे चतुर्वेदीनां नाम कहे छे हरि, हरिहर, नरहरि, नारायण, नीलकंठ, कालकंठ, वैकुंठ, श्रीकंठ, मुरारि, हरिराम, जगन्नाथ, विश्वनाथ, श्रीराम, रामकृष्ण, शुकदेव, वामदेव, चड्डदेव, स्वयंभू हवे शुकलनां नाम कहे छे कमला कर, दिवाकर, प्रजाकर, शंकर, यशस्कर, शोभाकर, गुणाकर, रत्नाकर, श्यामदास, रामदास, गोकुलदास, कृष्णदास, देवीदास, हरदास, द्वारिकादास, इत्यादिक जुदीजुदी शाखानां नाम वाला ब्राह्मण ते देवलोकनां सुख पामवानां अर्थि थया थका यागकर्म करी रह्या छे ॥ एवा अवसरमां श्रीवीरस्वामी पूर्व सन्मुख बेठा थका मिथ्यात्वकर्दम दूर करे एवी मेघसमान गं भीर ध्वनिये देशना आपे छे ते सांभलवा सारुं वैमानिक देवता आकाशें देवडुंडुभि वजा डता थका आवे छे, ते डुडुभिनो नाद सांभली सर्व ब्राह्मण हर्ष पाम्या अने चितववा लागा के अमारा यज्ञमंत्र कहेवा छे के जे भणवाथकी प्रत्यक्ष देवो आवी उभा रहे एवा मंत्र अमे हमणा भण्या जेथी देवो पण आव्या एटलामां तो जेम चांमालनो पाडो वे गलो मूकीने माणस बीजे रस्ते चाले तेम ते देवो पण विप्रोनो याग मंमप मूकीने श्रीवीरने समोसरणे जावा लागा वली ते देवो मांहो मांहे एवु कहेता थका चाल्या जाय छे

के जलदी उतावला जइ सर्वज्ञदेवने वादीयें एवीदेवोना मुखनी वाणी सांजलीने इंद्रजूति मनमां अमर्ष लावीने बीजा ब्राह्मणोनी आगल कहेवा लागो के जूवो जाइ ए आश्चर्य जेवी वात ठे के जे मनुष्यतो अजाण ठे मूर्खठे माटे जूले पण आ देवो ज्ञानवान थइने पण जूले ठे जे माटे ए आश्चर्य लागे ठे के आवो महोटो यज्ञमंमप देखीने आघा ते वली किहां जाय ठे वली महाराथी उपरांत बीजो सर्वज्ञ ते कोण ठे के जेनी पासे ए जाय ठे? तेवारे ते ब्राह्मणमाथी एक ब्राह्मण कहेवा लाग्यो के हे स्वामी! ए कोइक महोटो ढोंगी इंद्रजालीउ आ नगरनी बाहेर आव्यो ठे ते इंद्रजाल काढीने पोते ज्ञानी थइ बेगे ठे बीजा लोकोने कहे ठे के हु पारका मननी वात वधी जाणुं बु, एम घणा लोकोने जरमाव्या ठे तेथी देवता पण तिहां जोवा जाय ठे एवु सांजली इंद्रजूतिने अत्यंत मान सहित क्रोध चढ्यो तेवारें कहेवा लाग्यो के एवो कोण ठे जे महारा उता ज्ञानीनु अजिमान धरीने इहां आवे ते शु मने जाणतो नथी? माटे जूउ जाइ ए देवजे जूला ते एदेव पण एनां जेवाज अणसमजु हशे जेवो ए ज्ञानी तेवा ए देव पण जाणवा ॥ यत ॥ अहोसुरा कथंभ्रांत्या, तीर्थाश्चइववायसा ॥ कमलाकरवभेका, मक्षिकाचदनयथा ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ—अहो इति आश्चर्य जे ए देव थइने भ्रांतिये करी जेम कागडा तीर्थप्रत्ये बोडी जाय ठे तेम ए पण यज्ञ बोडीने जाय ठे माटे ए देव कागडा सरखा ठे, वली जेम देडका समुद्र तजी जाय ठे तेम ए पण समुद्र जेवो यज्ञ तजीने जाय ठे माटे देडका जेहवा ए देव ठे वली जेम मक्षिका चदनने बोडी जाय तेम ए देव पण यज्ञरूप चदनने बोडी जाय ठे ॥ श्लोक ॥ करज्ञा इव सद्द्राक्ष, क्षीरान्न शूकरायथा ॥ अर्कस्यालोकवद् घूका, त्यक्त्वायाग प्रयांतियत् ॥४॥ ॥ अर्थ – वली ए देव कहेवा ठे ते कहे

छे जेम ऊंट नला वृक्षोने छोडी देइने कांटाना वृक्ष उपर जाय तेम ए देवो पण यज्ञने छोडी चाल्या जाय छे, माटे उट जेवा छे, वली जेम क्षीरना नोजनने मूकीने नूंड विष्टा उपर जाय तेम ए देवो पण यज्ञरूप क्षीर नोजन तेने मूकीने विष्टाना नोजन समान इंद्रजालीया पासे जाय छे माटे नूंड जेवा ए देव छे, वली जेम सूर्यना तेजने मूकीने घूड अधारामां जाय तेम यज्ञरूप सूर्यने मूकीने ए देव अधारारूप इन्द्रजालीया पासे जाय छे माटे घूड समान ए देवो छे ॥ ४ ॥ ॥ अथवा वली एवी पण रीतिछे के जे नूंडो माणस होय ते नूंडा पासे जाय जे माटे कह्यु छे के ॥ गाथा ॥ अहवा जारिसो चिय, सो नाणी तारिसा सुरावेति ॥ अणुसरिसो सजोगो, गाम नडाणं च मुरकाण ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – अथवा वली इन्द्रनूति चि तवे छे के जेहवो ए ज्ञानी छे तेवा ए देव छे तेथी ए वेहुनो सरखो संयोग मल्यो छे जेम ग्रामनट मूर्ख छे तेम गामना लोक पण मूर्ख छे ए वेनो सरखो संयोग मले छे तेम ए देवता जे जाय छे ते पण मूरख छे अने जे ए ज्ञानी छे ते पण मूरख छे तेमाटे जे पोते जेवो होय ते पोताना सरखा बीजा पासे जाय एम सरखे सरखा एक बीजानी पासे जाय आवे छे ए रीत छे वली गाहा ॥ रे हिल्ली विहिल्ली करेली, मम चडिस पायवे निवे ॥ अहवा तुज्झ न दोसो, सरिसा सरिसेण रचंति ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – कोइ एक माणस कारेलीनी वेलिने लि बडाना वृक्ष उपरे चढती देखीने बोल्यो के हे सखि ! हे कारेली ! तु ए निवना वृक्ष उपर च ढीश नही केमके तुं पोते कडवी छो अने निंब वृक्ष पण कडवो छे माटे रे नूंडी ! तु वली अधिक कडवी थइश एवुं केण तेणे मान्युं नही अने निंबना वृक्षनी उपर चढती वध थइ नही तेवारे ते माणस बोल्यो हे नोली ! ए ताहारो दोष नथी केमके जगतमां सरखे सरखा

मळे तेवारे राजी थाय तेम तमे पण वे सरखे सरखां छो तो एमां कांइ आश्चर्य नथी तेम इहां पण ए देवता अने ए ज्ञानी वेहु सरखे सरखा मळ्या छे वळी एवा इन्द्रजाळीयाने जइ देवो वादे छे तो शु ए देवो पण जूळा पड्या न कहेवाय ? वळीपण इन्द्रभूति चितववा लाग्यो के महारा जेवा पंडितनी आगळ ए लोकोने ठगे छे अने ज्ञानी नाम धरावे छे, ते महाराथी केम सहन करी शकाय ? महाराथी तो एनु खोटु अभिमान सहु जाय नही अने ए ढोगीनो ढोग पण माहारा शिवाय बीजो कोइ पाधरो करी शकशे नही माटे हु जइने एनु अभिमान उतारी नाखुं जेम एक आकाशमां वे सूर्य होय नही वळी एक गुफामा वे सिंह एकठा न रहे तथा एक म्यानमा वे तरवार समाय नही तेम ए पण सर्वज्ञ अने हुं पण सर्वज्ञ एम कोइ वारे थायज नही ए इन्द्रजाळियो तो विदेशे कळा शीखी आवेलो छे ते सर्वज्ञनु नाम धरावी लोकोने अने देवताउने भोळवे छे अने हुतो सर्व विद्याउमां निपुण छु एवो विचार करे छे एवामा प्रभुने वांदीने समोसरणथी केटला एक लोक फरी आव्या तेमने इन्द्रभूति पूछवा लाग्यो के अहो लोको तमे जेनी पासे गया हता ते सर्वज्ञ कहेवोक छे ? तेवारे लोक बोल्या के एनी वात कांइ कहेवामां आवती नथी परतु तमे पोते सर्वज्ञ नाम धरावीने अमने शुं पुछोछो, ते सर्वज्ञतो बधी मननी वातो जाणे छे पण तमे तो एटलु पण नथी जाणता अने फोकट सर्वज्ञ कहे वरावो छो ते साभळी इन्द्रभूतिये जाण्युं जे ए निश्चय मायानुं घर छे माटे सर्वलोकतो एने मानवा लाग्या पण जेवारे हु जइश तेवारे ए माहारा आगळ बोली शकशे नही, यत ॥ घरसूरा मछ पंडिया, गाम गमारा गोठ ॥ भरी सभामां बोलता, थरथर धूजे होठ ॥ १ ॥ ॥ अर्थ – पोताना घरमां तो वधाय कहेके अमे शूरवीर छैये अने पोताना मठमां पण ब

धाय कहेके अमे पंमित छैयें वली पोताना गाममां जे गमार होय तेपण पच थाय छे परंतु जे वारे पमितोनी नरी सन्नामां वोलवुं पडे तेवारे तो तेना होठपण थर थर ध्रूजवा मंमी जाय छे तेम ए पण सर्वज्ञ एवु नाम वीजानी आगल कहे छे पण माहारी आगल ते वोली शकशे नही वली पण विचारे छे के जे अग्नियें पर्वतोने वाली नाख्या तो ते अग्निनी आगल वृक्षनो श्यो नार ? तथा जे वायुयें हाथी जेवाने उडाडी मूक्या ते वाघरानी आगल पुणीनुं शुं जोर चाले ? तथा जे नदीमां हाथी तणाइ गया ते नदीमां कीडी वापडी शा हिसावमां गणाय ? एम इन्द्रनूति चितवे छे एवामां अग्निनूति वोल्यो के हे नाइ ! तमे ए इन्द्रजालीयाने जीतवा माटे एटलो विचार शुं करो छो, ए कीडी ऊपर कटक श्यो करवो ? अलसीयानी ऊपर गरुडने तेडवो ते शुं ? तृणनी ऊपर कुहाडो उपाडवो ते शा कामनो, कमलनी नालने कापवा सारु फरशी उपाडवी ते शा कामनी, वेलडी उखेडवामाटे हस्तिनुं शुं काम पडे ! तेम ते विचारा गरीवडा सर्वज्ञ पासे तमे वाद करवा शुं जाशो, मनेज आज्ञा आपोतो हुंज एने जीती आवु, एवां नाइनां वचन सांनली इन्द्रनूति वोल्यो के हे नाइ ! एने शुं जीतवो छे एनेतो महारा पांचशे शिष्य मांहेलो कोइ एक शिष्य जाय तेपण जीती आवे तथापि महाराथी रह्यु जातुं नथी केमके थोडुं पण शल्य कामनु नही माटे हु पोतेज जाइश जे कारण माटे वीजा तो सर्व वादी मात्रने मे जीत्या छे पण एक ए किहांएक रही गयेलो देखाय छे जेम हाथीना मुखमांथी कोइक कण पडी जाय, जेम मग रांधतां कोइक करडुं रही जाय, जेम घाणी पीलतां कोइक तलनो दाणो रही जाय, जेम अगस्ति ऋषिने समुद्रनां त्रण चलुं करतां कोइक जलविंदु रही जाय, जेम चणा ञुंजतां कोइक चणो वाहेर पडी जाय, तेम ए

स्त्रमां महारु दक्षपणु छे एटले लक्षण शास्त्रतो हुं सारी पेठे जाणुंछुं स्त्री पुरुषादिकोनां व त्रीश लक्षण रुडीरीते कही देखाडुं तथा पदार्थना लक्षण तो एवां प्रतिपादन करु के जेमां अव्याप्ति प्रमुख दोष रहे नही ॥ १ ॥ तथा साहित्य शास्त्र जे काव्यादिक तेतो सर्व माहारे अस्खलित छे ॥ २ ॥ तथा तर्कशास्त्रमा तो हु एवो निपुण छु के महारा सामो कोइने ज वाब देतां आवडेज नही एवा कठण तर्कने हु जाणु छु माटे तर्कशास्त्र महारे कठण नथी एतो सदा अकर्कश छे ॥ ३ ॥ घणु शु कहिये एवु कयु शास्त्र छे के जेमां महारो श्रम न थयो होय ? अर्थात् अढार व्याकरण, कोशनीतो गणतरीज नथी, छंद रत्नाकरादिक, अलंकार ते काव्यनी शोभा अतिशयालंकारादिक, नवरसादिक ते वात्स्यायनादिक, धर्मशास्त्र ते सर्व पुराण मीमांसादिक, ज्योतिष शास्त्र ते चूडामणि प्रमुख, वैद्यकशास्त्र कालज्ञानादिक, ए वधां शास्त्र महाराथी अजाण्यां नथी तो ए इंद्रजालीयो ते शु महाराथी जीते एवोछे माटे हवे हुं त्यां जइ देव, दानव, मानव सर्वने देखतां एने हरावीने एनु सर्वज्ञपणानु बिरुद टाली नाखु एवो मनमां गर्व आणी पांचशे छात्रोने लेइ जेम जाणे इंद्र खेंची लइ जतो होयनी ? ते श्यामाटे के भगवाननी देशना प्रथम खाली गइ छे ते माटे भगवान बार योजन चालीने एक रात्रीये आव्या तेथी इंद्रमहाराजे जाण्युं के एमने शिष्यनी प्राप्ति थाय तो रुडुं थाय ते माटे इंद्रनो प्रेर्योज जाणे इंद्रभूति समोसरण तरफ जतो होयनी ? एवी कवीश्वर घटना करे छे अन्यथातो एमज थनारु छे हवे इंद्रभूति पांचशे छात्रसहित परवर्यो थको वाद कर वानी इच्छाथी श्रीवीर भगवानना समोसरण तरफ चाल्यो ते वखते पांचशे छात्रो इंद्रभूतिनी बिरुदावली बोले छे ते कहीये छैये सरस्वती कंठाभरण एटले सरस्वतीतो अमारा उपाध्या

थने गलानुं आनूषण ठे अर्थात् सरस्वतीतो सदा एमना कंठमांज वसेठे, वादिविजय लक्ष्मी शरण, ज्ञात सर्वपुराण, वादिकदली कृपाण, पंडितश्रेणी शिरोमणि, कुमतांधकार नन्नोमणि, जितवादिवृंद, वादिगरुड गोविंद, वादिघटमुजर, वादिघूकन्नास्कर, वादिसमुद्र अगस्ति, वादिवृक्षहस्ति, वादिमुखन्नजन, सकलनूपालरंजन, षट्न्नापावल्लीमूल, परवादिमस्तकशूल, वादिगोधूमघरट्ट, मर्दितवादि मरट्ट, वादिकंदकुद्दाल, वादिवृंदनूपाल, वादिगजसिंह, वादिशिरलीह, वादिवेश्याज्ञुजग, शब्दलहरी, गंगातरग, सरस्वतीनंमार, चौदविद्या अलंकार, वादिहृदयशाल, वादियुद्धमाल, बहुराजसमाजमुकुट, बहुबुद्धिविकट, ज्ञानरत्नाकर, शब्ददिवाकर, महाकवीश्वर, कृतशिष्यबृहस्पति, निर्जितन्नार्गवमति, कौजगम सरस्वती, प्रत्यक्षन्नारती, जितानेकवाद, सरस्वतीलब्धप्रसाद, इत्यादि अनेक प्रकारनी बिरुदावली ठात्रो बोली रह्या ठे अने इंद्रनूति चाल्यो जाय ठे वली रस्तामां विचार करवा लाग्यो के अरे जुउंतो खरा के आ मूर्खे शु कर्युं एणे सर्वज्ञपणांना आटोपथी मने नाहक क्रोध चडाव्यो तो हवे एथी ए शु सुखी थवानो ठे जेम कोइ अग्निमां पडे तो वली नस्म थया विना रहे नही तेम एणेपण कर्युं ठे एम चितवतो चालतो चालतो जेवारे समवसरणनी पहेली पावडी ठे तिहां चडीने जोवा लाग्यो ने जोयुं तो त्रण गढ दीठा ते गढ कहेवा ठे ते कहेठे त्यां प्रथम रूपानो गढ ठे तेना सुवर्णमय कोशीशा ठे, चारेदिशाये चार पोहोल ठे बीजो सुवर्ण गढ ठे तेना रत्नना कोशीशा ठे त्रीजो रत्ननो गढ ठे तेना मणिकांतना कोशीशा ठे एक योजनने विस्तारे ठे तेनी वचमां अशोकवृक्ष ठे उपर त्रण ठत्र तिहां सुवर्णनुं सिंहासन ठे तेनी उपर स्वामि बेठा ठे ते इंद्रनूतिये पोतानी नजरे दीठा तेवारे मनमां विचार्युं जे मे घणाय वादी दीठा ठे परंतु आवो प्रकार किहां पण

दीठो नथी तो ए शु ब्रह्मा छे, ना ए ब्रह्मा पण देखातो नथी केमके ब्रह्माने तो सावित्री नामे स्त्री छे, हाथमां पवित्री छे, करे कमंमल छे, हंसवाहन छे, पांचमु गर्दभनु मुख छे एटलां ए घाण मलता नथी तेमाटे जाणीये छैये जे ए ब्रह्मा तो नथी, तो शुं ए विष्णु छे, ना ते पण नथी केमके विष्णुनेतो लक्ष्मी नामे स्त्री छे, चार हाथ छे, शंख, चक्र, गदा अने धनुष ए आयुध छे, गरुड वाहन छे, वरणे श्याम छे, ते एधाण एने नथी माटे ए विष्णुपण नथी तो ए शु ब्रह्मज्ञानी छे, ना ते पण नथी केमकें ते तो अरूपी छे, वली चंद्रमा सोले कलाये संपूर्ण छे परंतु कलंकसहित छे माटे चंद्रमा पण ए नथी तथा वली जो एने सूर्य कहु तो सूर्यथी पण एनुं तेज तो घणु अधिक छे परंतु तेना किरण उष्ण छे ते उष्ण किरण एने नथी माटे सूर्य पण केम संभवे ! ! वली इंद्र छे एम जो कहु तो ते पण नथी कारण के तेने सहस्रनेत्र छे ते एने नथी वली जो ए मेरु हशे एम कहु तो मेरु कठण छे ते एमां कठणपणुं देखातुं नथी माटे ए मेरुपण नथी तो ए सर्वगुणसंपूर्ण सर्वथी अधिक जे तीर्थंकर कहेवाय छे ते ए तीर्थंकर छे केमके एवा गुण तो तीर्थंकर विना बीजा कोइमा होय नही माटे समस्त पापहर, सर्वलोकना शिवकर, षट्कायना रक्षक, अनाथना नाथ, अशरण शरण, तरण तारण, एवा श्रीवर्द्धमान सर्वज्ञ तीर्थंकर जे कहेवायछे ते ए संभवे छे सूर्यनी पेरे तेजवंत, चंद्रमानी पेरे सौम्य, समुद्रनी पेरे दीठे डुस्तर, एवा ए छे ते श्रीमहावीर तीर्थंकर विना बीजो केम संभवे ! ! वली पण इंद्रभूति श्रीवीर प्रभुने देखीने चिंतवे छे ॥ काव्य ॥ किनंदी किमुरारि किंमुरतिरमण किंनल किंकुबेर, किंवा विद्याधरोसौ किमिंद्र सुरपति किंविधु किंविधाता ॥ नायं नाय न चाय न खलु न हि न वा नापि नासौ न चैव, तीर्थं कर्तुं प्रवृत्तो निजगुणविभवैर्वीरदेवाधिदेव. ॥

॥ १ ॥ ॥ अर्थ— शुं ए महादेव छे? अथवा शुं ए कृष्ण छे? अथवा शुं ए वहुरूपवंत छे माटे कामदेव छे? अथवा शुं ए नलराजा छे? अथवा शुं ए इंद्रनो भंमारी कुवेर छे? अथवा शुं ए विद्याधरछे? अथवा शुं इहां ए इंद्र आव्यो छे? अथवा शुं ए चंद्र छे? अथवा शुं ए विधाता छे? एवीरीते कल्पनाओ करीने पछी विचारपूर्वक निर्णय करवा लाग्यो के ए महादेव तो नथी केमके ते तो लंगोट्यो छे तथा एनो सुवर्ण सरखो वर्ण छे माटे ए कृष्ण पण नथी वली स्त्रीवर्जित छे माटे ए कामदेव पण नथी वली राजचिन्हे करी वर्जित होवाथी निश्चयथी ए नलराजा पण नथी वली त्यागी छे माटे कुवेर भंमारी पण नथी, तथा पादचारी छे माटे विद्याधर पण नथी, नगरहित छे माटे इंद्र पण नथी, कलंक रहित छे माटे चंद्र पण नथी, घटना विवर्जित छे माटे विधाता पण नथी, एतो ए पूर्वे जे कह्या ते सर्वथी अधिक लक्षण धारी छे तो ए कोण छे एम विचार करतां जाणवामां आव्युं जे अरे एतो तीर्थंकरवाने अर्थे पोताना अतिशयादि गुण रूप धनवडे करीने प्रवर्त्यो छे एवो देवाधिदेव श्रीवीर जिनेंद्र जे लोक कहे छे ते एज छे बीजो कोइ नथी एम जणाय छे तो हा इतिखेदे ए में शुं कर्युं आ हुं क हेवा संकटमां आवी पड्यो, हवे हुं शुं करुं एनी आगल माहरुं मान केम रहेशे! ॥ श्लोक ॥

कथं मया महत्व मे, रक्षणीयं पुरार्जित ॥ प्रासादं कीलिकाहेतो, भंकुं कोनाम वांछति ॥ १ ॥

अर्थः— तो हवेजे महारुं पूर्वे महोटापणुं थयुं छे तेने हुं केम करीने राखीश? एटले में पूर्वे घणा वादियोने जीत्या छे तेथी हुं लोकमां प्रसिद्ध थयो छुं, पंमित वडुंछुं, तो हवे मुजने महारा पंमितपणांने राखवानो उपाय श्यो करवो के जेथकी ए महारी पंमिताइ लोकोमां कायम रहे अने जो एनाथी वाद न करुं तो लोको कहेशे के ए वाद करवा गयो हतो ते पाछो केम फरी

आव्यो, माटे मे ए मूरखाई करी तो पण हवे वाद कर्या विना महारे पाछु जावु नही केमके
मारे तो हवे ए एकज जीतवो रह्यो छे तो हवे अल्पने माटे महारो वधो यश न गमाववो
जेम कोइने एक खीलो जोइतो होय तो ते एक खीलाने माटे आखो प्रासाद नांगी खीलाने
काढवा वाछे नही एवो मूर्ख कोइ होय नही वली कहेछे ॥ श्लोक ॥ सूत्रार्थी पुरुपोहार, क
स्त्रोटयितुमीहते ॥ क कामकलशस्यांशं, स्फोटयेत् ठिकरीकृते ॥ ३ ॥ ॥ अर्थ – एवो कोण
पुरुप होय जे सूत्र एटले तातणाने अर्थे हारने त्रोडवानी वांछना करे एटले सूत्रनो तागो
जोइतो होय तेटला माटे हार त्रोडवो एम कोइ वाछे नही तेम महारे पण ए एकने हराव्या
विना महारो यश रूपी हार त्रोडी नाखवो नही ए तात्पर्य जाणवु तथा वली कोण पुरुप
ठीकरी जोइती होय तेने अर्थे मनोवाछितने पूरनार एवो जे कामकुंभ तेना गला प्रमुखने
फोडी नाखे अर्थात् ठीकरीने अर्थे कामकुंभने कोइ फोडी नाखे नही तेम हु पण एनी
साथे वाद कर्या विना जो एमज पाछो फरी जाउ तो कामकुंभ जेवो माहारो यश रूप घट
ते फोडी नाख्या जेवु थइ पडे, तेथी हु मूर्खोनी गणतीमां थाउ माटे महारे एम न करवु
वली पण कहेछे ॥ श्लोक ॥ भस्मने चंदनकोवा, दहेद्दुः प्राप्यमप्यथ ॥ लोहार्थी कोमहांभोधौ,
नौभंग कर्तुमिछति ॥ ४ ॥ ॥ अर्थ – वली कोण डाह्यो पुरुप भस्म एटले राखने अर्थे
दु खे प्राप्त थाय एवा चंदनने बाले एटले भस्मने अर्थे मलयागिरि चंदनने कोइ बाले नही तथा
एवो कोण मूर्ख होय जे लोखंडना कटकाने अर्थे महासमुद्रनी मध्ये नाव एटले वाहाण
तेने भांगी नाखवानी वांछा करे अर्थात् कोइ पण भांगे नही परतु जो मूर्ख होय तो भांगी
नाखे तेम जो हु एनी साथे वाद न करु तो महारु यशरूप मलयागिरि चंदन ते बलीने

न्नस्म थाय तथा महारी यश रूपी नौका महासमुद्रमा न्नांगी नाख्या जेवु मने थाय माटे एवो मूर्ख हुं न थाउं इति ॥ अथवा ए पूर्वोक्त श्लोकोनो अर्थ आवी रीते मेलववो जे इन्द्रभूतियें न्नगवानना अतिशय दीठा तेथी चिंतववा लाग्यो जे ए कोइ महापुरुष ठे माटे एनी साथे हुं वाद करीने अवश्य हारी जइश तेथी में पण एनी पासे आवीने एक खीलाने माटे महारो यशरूपी प्रासाद न्नांगी नाखवा जेवी मूरखाइ करी तथा एक तांतणाने माटे हार त्रोडी नाखवानी इच्छा करी वली एक ठीकरीने माटे कामकुन्नने फोडी नाखवा जेवु कर्युं तथा राखने अर्थे चदन बालवा जेवु कर्युं तथा लोखंडना कटकाने अर्थे महासमुद्रमां महारा संपादन करेला यशरूपी जहाजने न्नांगी नाखवां जेवु कर्युं एम चिंतवी प्रन्नुना वचननो अतिशय जोवा मांम्यो तो आ प्रमाणे ठे ते कहेठे ॥ श्लोक ॥ सारंगी सिंहशाव स्पृशति सुतधिया नंदिनी व्याघ्रपोतं, मार्जारी हंसबालं प्रणयपरिवशात्केकिकांता न्नुजंगं ॥ वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जंतवोन्येत्यजंति, श्रुत्वासाम्यैकरूढ प्रशमितकलुषं योगिन क्षीणमोहं ॥ १ ॥ ॥ अर्थ.— सम परिणामे करी एकांते रहेवाथी प्रकर्षे करीने उपशम्यां ठे कलुष एटले पाप जेमनां एवा वली क्षीण थयो ठे मोह जेमनो एवा योगीयोने सुणीने एटले उपशमसहित, पापरहित, मोहरहित एवा जे योगी मुनिराज तेमने सुणीने अर्थात् एवा मुनिनां वचन सांन्नलीने बीजा जीव पण जेने जन्म थकीज अरस्परस एक बीजानी साथे वैर रहेलां ठे एवा तिर्यंच जीव पण समोसरणमां मद रहित थया थका पोतपोतानां वैरने ठांमे ठे एटले जेनां एवां वचन ठे के जे सांन्नलवा थकी जीवो जन्मनां वैरने पण न्नूली जाय ठे ते वैर कोने कोने ठे ते कही देखाडे ठे —प्रन्नुना समोसरणमां आवेली (सारंगी के०) मृगली ते सिंहना बालकने स्पर्शे ठे एटले सिंहने अने हरणने

जन्मनुं वैर छे पण इहां समोसरणमां तेने वैर मटी जाय छे तेथी ते पोतपोतामां मळीने एकठां बेठां छे तथा (नंदिनी के०) गाय ते (सुतधिया के०) पोताना पुत्रनी बुद्धिये करीने (व्याघ्रपोत के०) वाघना बालकने चाटी रही छे एटले वाघने अने गायने वैर छे तोपण इहां ते वैर टळी गयुं छे माटे वाघना बाळकनी पासे बेठी थकी लाड करे छे वळी बिलाडी छे ते (प्रणयपरिवशात् के०) स्नेहना वश थकी हंसना बालकने स्पर्शी करीने बेठी छे एटले बिलाडी पण हंसना बालकने मारती नथी वळी मोर अने सर्पने पोतपोतामां वैर छे तोपण ते इहां प्रभुना समोसरणमां कहेवा थई बेठा छे तोके (केकिकांता के०) ढेल छे ते (भुजगं के०) सर्पनी साथे बेठी छे ए रीते इहां एवा प्रकारनां वैर ते सर्व जीवोनां मटी गयां छे एवो भगवानना वचननो अतिशय देखी इंद्रभूति विस्मय थइ रह्यो छे एटलामां भगवान बोल्या के हे इंद्रभूति ! गौतम गोत्रिया ! तु भले आव्यो तु सुख समाधिमां वर्त्ते छे एवु स्वामिनु वचन सांभळी इंद्रभूति मनमां चितववा लाग्यो जे ए म्हारु नाम गोत्र किहांथी जाणे छे केमके हुं एनी साथे क्यारे पण मळ्यो नथी, तथापि वळी एम विचार्यु जे म्हारुं नामतो जगतमां प्रसिद्ध छे माटे कोण नथी जाणतो सर्व कोइ जाणेज छे जे हुं कांइ अछतो माणस नथी सूर्य किहां पण छानो रहे नही पण एणे मने म्हारु नाम कहीने जे बोलाव्यो तेनुं तत्व म्हारा जाणवामां आवी गयुं के एणे मात्र मने छगवा सारुंज बोलाव्यो जणाय छे परतु हु कांइ एवो अणसमजु नथी जे एना मीठा वचनथी रीझ पामुं पण हु तो जेवारे ए म्हारा मनमां जीव छे के जीव नथी एवो सदेह रहेलो छे ते कही आपे अथवा ते संदेह भांजी आपे तेवारे रीझ पामीने जाणुं जे ए खरेखरो सर्वज्ञ छे नही कां तो मात्र म्हारी साथे एने वाद करवो पडे

तेथी बीह्तिो थको मने राजी राखवा माटे मीठे वचने करी बोलावे छे तेणे करी ए पोताना मनमा एवुं समजतो हशे जे ए मह्यारी साथे वाद करशे नहीं, पण तें तो हुं मानु नही एवु विचारे छे एटलामां फरी भगवान बोल्या हे इन्द्रभूति ! जीव छे के नथी एवो ताह्यरा मनमां संदेह छे ते हे इन्द्रभूति ! ते वेदनां पद जीवने उथापवावालां अने जीवने थापवावालां जा णीने संदेहमां पड्यो छो तेह्नो अर्थ तुं विपरीत करे छे तेथी तने संदेह रही गयो छे माटे ते वेदनां पदोनो अर्थ पूर्वापर विरोध रहित हुं तमोने कहुं छुं ते सांभल एम कही भगवान पोते स्वमुखें वेदनां पदोनुं उच्चारण करे छे ते कहेवा ध्वनिथी करे छे ते कहे छे श्लोक ॥ समुद्रोमथ्यमान कि, गंगापूरोथवा किमु ॥ आदिब्रह्मध्वनि किंवा, वीरवेदध्वनिर्वभौ ॥ १ ॥ अर्थ.—जेम समुद्र मथन करवा मांड्युं होय ते वखतें जे ध्वनि थाय तेह्वोज ध्वनि थायछे के शुं ? अथवा गंगानदीनुं पूर आवे ते वखतें जे ध्वनि थाय तेज ध्वनि थाय छे के शुं ? अथवा आदिब्रह्म ध्वनि थायछे के शुं एवो वीर भगवानना मुखथी ध्वनि थयो तेमां वेदमां जीवसत्ता निषेधपद एवां छे ते कहे छे ॥ अथ वेदपदानि यथा ॥ अर्थ —वेदना पद एम छे " विज्ञान घन एवैतेभ्योभूतेभ्य समुत्थाय, तान्येवानुविनश्यति, नप्रेत्यसंज्ञास्तीति इति जीवाभावश्रुति' ॥ अर्थ —हे गौतम ! ए वेदना पदोनो अर्थ तें आ प्रकारे जाण्योछे के विज्ञानघन एटले विज्ञान समूह जे चेतननो पिंड (सएव के०) तेह्ज चेतन पिंड ते (एतेभ्योभूतेभ्य के०) भूतजे पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने आकाश ए पांच भूतो थकी (समुत्थाय के०) उत्पन्न थइने (ता न्येवानुविनश्यति के०) ते भूतोनो नाश थया पछी ते विज्ञानघन चेतननो पण नाश थाय छे तेमाटे (नप्रेत्यसंज्ञास्ति के०) परलोक नथी एटले ए पृथिव्यादिक पांच भूतोथी जीव उत्पन्न

थाय ढे अने ए पृथिव्यादिक पांचनूत जेवारे नाश पामे तेवारे जीवनो पण नाश थइ जाय ते माटे जीव मरण पामीने परलोके जाय ढे एम कहेवु वृथा ढे केमके परलोकें जाय एवो जीव नथी तो शु ढे तोके ज्ञान ढे तेहज ए नूतोथी उत्पन्न थाय ढे जेम दीपक उपजीने जेवारे विनाशने पामे ढे तेवारे तेनो प्रकाश पण जतो रहे ढे तेम नूतोनो नाश थये ए जीवनो पण नाश थाय ढे वली प्रयोग पण इहा ढे ॥ ज्ञाननान्यनवगनौतिकत्वात् दीपवत् ॥ अर्थ —ज्ञान ढे ते नूतथकी उत्पन्न थायढे माटे वीजे नवे जनार नथी एटले बीजा नवमा जवावालु नथी जेम दीपक ढे तेम ए पण ढे माटे परनवे जनारो जीव नथी वली प्रत्यक्ष देखीये ढैये जे पांचनूततो देखवामां आवे ढे पण जीव देखवामां आवतो नथी जेवारे माणस मरण पामे ढे तेवारे तेने बालीने राख करीये ढैये तिहां हाम प्रमुख तो नजरे दीठामां आवे ढे पण जीवनु चिन्ह तो काइ देखातु नथी एवो विचार वेदना पदना अर्थथी तने नासे ढे के जीव नथी बीजु वली ताहारा मनमां एम पण थाय ढे के वेदमां एवु पण पद ढे॥ सवैअयमात्मा ज्ञानमयो मनोमयो वाङ्मयश्चक्षुर्मय आकाशमयो वायुमय स्तेजोमय आपोमय पृथिवीमयः क्रोधमय अक्रोधमय हर्षमय शोकमय धर्ममय अधर्ममय इत्यादि ॥ अर्थ —(स के०) ते (वै के०) पादपूरणे अथवा सबोधने (अय के०) ए (आत्मा के०) जीव ते ज्ञानमय एटले ज्ञानवत, मनवालो, वचनवालो, नेत्रवालो, एमज आकाशमय, वायुमय, तेजमय, जलमय, पृथ्वीमय तथा क्रोधमय, अक्रोधमय, हर्षमय, शोकमय, धर्ममय, अधर्ममय, इत्यादिक वेदनां पद देखवाथी तने शका उत्पन्न थयेली ढे के जीव ढे के नथी एवो तुने सदेह ढे पण हे इन्द्रनूति! योगीश्वरे प्रत्यक्ष जाणेलो एवो ए आत्मा ढे एटले ज्ञानीने

ए आत्मा प्रत्यक्ष ठे जेम परमाणु वीजा सामान्य जीवोने दीगमां आवतां नथी पण ज्ञा नवत जाणे ठे (अनुमानादपि के०) अनुमानथी पण ए जीवसत्ता सिद्ध थाय ठे ते अनुमान आ प्रमाणेठे.–अस्त्यात्माशुद्धपदवाच्यत्वाद्घटवत् ॥ अर्थ.–ठे आत्मा शुद्धपद कहेवा पणुं ठे माटे जेम घट पद ठे ते असंयोगी पद ठे तो ए घट नथी एम न कहेवाय तेम आत्मा पद जे ठे तेपण संयोग रहित पद ठे तेथी एनी पण नास्ति कहेवाय नही जगतमां जे जे पदार्थ शुद्धपद वाच्य ठे ते ते पदार्थ असत् नथी अर्थात् सत् ठे वली शास्त्रमां पण आत्मा कहे ठे तो हवे शु जाणीये जीव ठे के नथी केमके एक सूत्र जीव कहे अने एक सूत्र नास्ति कहे एवु जाणी हे इंद्रभूति ! तने संदेह पड्यो ठे पण ते संदेह खोटो ठे, व्यर्थ ठे, केमके जीवने नास्ति कहेनारूं जे "विज्ञानघन" पद तेनो अर्थ तु विपरीत करे ठे तेथी ए पूर्वापर विरोधने लीधे तने शंका रही ठे माटे एनो अर्थ आम करवो योग्य ठे जे विज्ञान एटले ज्ञान अने दर्शन ते अभिन्नपणाथकी विज्ञानघन एवुं जीवनुं नाम ठे तेहज "एतेभ्योभूतेभ्य" एटले भूत ते घटादिक ठे तेने देखी उत्पन्न थाय ठे एटले ज्ञाता जे विज्ञानघन तेने घटादिक जे ज्ञेय ते देखी ज्ञान उपजे ठे तेवारे जाणे जे घट ते एहज ठे ए ज्ञान ते (समुठाय के०) उपजीने (तान्येवके०) तेहज ज्ञान ते ज्ञेयनो उपयोग जावाथी तेमांज नाश थाय (अनुविनश्यति के०) पठी ते घटना बोधनो पर्याय करीने विनाश पामे ठे (नप्रेत्यसंज्ञास्ति के०) जे पूर्वली ज्ञानसंज्ञा हती ते रहे नही एटले जे घट दीठो ते घटनुं ज्ञान तेहज घटमां रह्यु पण घटनो उपयोग पटमां नथाय परमार्थ ए ठे जे इंद्रभूतिने विज्ञानघननी श्रुतिना अर्थथी संदेह हतो के जीव भूतमां उत्पन्न थाय अने भूतमांज नाश थाय परतु परलोक नथी ए संदेह हतो ते

प्रभुयें अर्थ कह्यो के जे उपयोग घटनो हतो ते उपयोग घटमांज रह्यो? परतु पटमां नथी जो एम न मानीये तो (यथाकारी तथा भवति के०) जेह्वु करे तेह्वु थाय (साधुकारी साधुर्भवति के०) भलु करनारो भलो थाय अने (पापकारी पापी भवति के०) पाप करनारो पापी थाय (पुण्यपुण्येन कर्मणाभवति के०) पुण्य कर्म करीने पुण्य थाय (पाप पापेन भवतिके०) पापे करीने पापी थाय तथा "ददद" ए त्रण दकारनो अर्थ दया दान अने दम छे (इति दकार त्रयंयोवेत्ति के०) ए त्रण दकारने जाणे (सजीव के०) ते जीव छे ए यजुर्वेदादिकनां पद छे ते केम मले माटे ए अनुमान करीये ॥ विद्यमान भोक्तृकमिदं शरीर, भोग्यत्वा दोदनादिवत् ॥ अर्थ –विद्यमान छे भोक्ता जेह्नो एवु ए शरीर एटले विद्यमान छे भोगवनारो जे हनो एवु शरीर छे तो ए सूत्रथी एनो भोगवनारो जीव छे ते विद्यमान छे एम सिद्ध थयु तेथी ए शरीर भोगववा योग्य छे माटे एनो भोगवनार पण छे जेम आहार भोग्य छे तो तेनो भोक्ता पण छे तेम ए शरीरने भोगववावालो भोगवनारो जीव छे ए अनुमानथी जीव छे तेमाटे हे इन्द्रभूति! जेम (क्षीरेघृत के०) दूधमां घृत तथा (तिलेतैलं के०) तिलमां तेल अने (काष्टेअग्नि के०) काष्टमा अग्नि तथा (सौरभ्यं कुसुमे के०) फूलमां सुगंध वली (चन्द्रकांतौ सुधा के०) चन्द्रनी कांतिमां अमृत (यद्धत्तथा के०) जेम ए छे तेम (आत्मांगगत प्रतिक्षेत्रं भिन्न के०) आत्मा शरीरमां छे सर्व शरीर शरीरमां जुदो जुदो छे ते (अपौद्गलिक के०) पुद्गल रहित (पारिणामिक के०) पारिणामिक छे, कर्ता छे, भोक्ता छे, (सजीव के०) ते जीव छे (अन्यथा जीव विनादयाकिविषया स्यात् के०) एम जो जीव न मानिये तो जीवदया ते शाने विषे होय (तस्मा दस्तिजीव के०) ते माटे हे इन्द्रभूति! जीव छे ॥ इत्यादिक वेदपदना अर्थ सांभली, संशय

ला, मदठाला, वराग्यपामा, वाश सहस्त्रमा पावडीयें चडा, श्रीवीरप्रभुने त्रण प्रदक्षिणा त
देइ, इंद्रभूति पगेलाग्यो अने शुद्धभावथी पांचसो छात्रो सहित दीक्षा लीधी एवुं गौतमगोत्र हतुं
माटे गौतम एहवे नामे प्रसिद्ध थयो भगवानना मुखथी उपन्नेवा, विगमेइवा, धुवेवा ए त्रि
पदी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी जे माटे कहे छे ॥ श्लोक ॥ श्रीवीरमुखतोवेद, पदार्थ
मवगत्यच ॥ प्रव्रज्य त्रिपदी लब्ध्वा, द्वादशांगीं स निर्ममे ॥ १ ॥ ॥ अर्थ —श्रीवीरना मुखथी
वेदपदनो अर्थ जाणी दिक्षा लेइने त्रिपदी पामी वार अंगने रचतो हवो ॥ इति प्रथम गण
धर ॥ १ ॥ ॥ हवे इन्द्रभूतिये दिक्षा लीधी ए वात एनो बीजो भाइ अग्निभूति छे तेणे सां
भली तेवारे विचारवा लाग्यो के कदाचित् अग्नि जे छे ते पाणी थइ जाय, पाषाण नरम
थइ जाय, पर्वत वायुथी भगी जाय, सूर्य पश्चिम दिशाये उदय थाय, चन्द्रमाथी अंगारा वर्षे,
पाणी छे ते अग्निज्वाला थइ जाय, अमृत खाधाथी मरण नीपजे, विष खाधाथी जीवतो
थाय, पातालमां पृथ्वी पेसी जाय, मेरु पर्वत चलायमान थाय, समुद्र मर्यादा मूकी आपे,
एटलां वानां बनी जाय तेनी ना नथी परंतु महारो भाइ ए इन्द्रजालीयाथी हारी जाय ए
वात केवारे बने नही एम चितवना करे छे एवामां समोसरणथी केटलाक बीजा लोको गा
ममां आव्या तेमने अग्निभूतिये पोताना भाइ संबधि वृत्तांत पूछवाथी ते कहेवा लाग्या के
शु पूछो छो ? इन्द्रभूतितो भगवानना शिष्य थया ए अमे अमारी नजरे जोइ आव्या छैये एवुं
सांभली अग्निभूति विचारवा लाग्यो के महारो भाइ अत्यंत डाह्यो छतां केम छलाय ! पण
दैवेछाये वखते छलाइ गयो हशे तो हवे हु त्यां जइ ए इन्द्रजालियाने जीतीने महारा भाइने
पाछो वाली आवु अने एना सर्वज्ञ पणानुं विरुद पण टाली आवु एम कही आमर्ष सहित

पांचशे छात्रोना परिवारे परवर्यो थको बिरुदावली बोलावतो थको त्यां जइ समवसरणनी पहेली पावडीये पग आप्यो तेवारे प्रभुये पण तेने पूर्वली रीते नामगोत्र कहीने बोलाव्यो अने कह्यु के हे अग्निभूति ! तुजने कर्म छे किंवा नथी एवो संशय छे ते तुं वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी तेथी संशय रहे छे ते आवी रीते –अथ वेदपद ॥ पुरुष एवेदंसर्वंयद्भूत यच्च नाव्य ॥ इत्यादिक वेदना पदथी तु जाणे छे के जीव छे तेहज सर्व छे तो एथी बीजु कर्म ते वली जूदु केम संभवे ! एटले कर्म नथी केमके आत्मा तो अमूर्त्ति छे तेने कर्म केम लागे कारण के मूर्त्तिने अने अमूर्त्तिने मांहोमांहे संयोग होय नही माटे कर्म नथी वली कर्मथी जीवने सुखदुःख पण केम थाय ए पद उपरथी कर्म नथी एम तु माने छे तथा वली कोइक वेदना पद आम पण छे जे "पुण्य पुण्येन, पाप पापेन" ए उपरथी कर्म छे एम पण देखाय छे तो शु कर्म छे के नथी ए ताहारो संदेह छे पण हे अग्निभूति ! ते जे वेदनां पद छे ते आत्मस्तुतिनां छे, परंतु कर्म निषेध करनारां नथी केमके अमूर्त्ति छतें मूर्त्त द्रव्य साथे संयोग तो प्रत्यक्ष देखाय छे अमूर्त आकाशने मूर्ति वादला तेउने परस्पर योग थाय छे जे मूर्तिवत छे ते अमूर्तिने सुख दुःख करे छे जेम मदिरापान करनारने अचेत पणुं थाय छे ते मदिरा मूर्तिवत छे पण अमूर्ति जीव छे तेने मुंझावे छे ते माटे कर्म छे एम सिद्ध थाय छे वली लोकमा एक सुभाग्य, एक दुर्भाग्य, एक सुरूपवान एक कुरूपवान, एक धनवान एक दारिद्री ए सर्व शुभाशुभ कर्मविना केवी रीते संभवे ए रीते वेदपदमां पण कर्म सत्ता सिद्ध छे तेथी कर्म अवश्य छे, इत्यादिक वेदपदना अर्थ सांभलीने अग्निभूतिनो पण संशय टल्यो तेवारे अहंकार छोडी भावसहित पांचशे छात्रनी साथे दिक्षा॥ इति द्वितीय गणधर ॥

॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजो भाइ वायुभूति छे तेणे अग्निभूतिये दीक्षा लीधी ते वात सांभळी ते वारे चितववा लाग्यो जे म्हारा बे भाइये ए सर्वज्ञनी पासे दिक्षा लीधी तो ते कोइ महात्मा पुरुषोत्तम देखाय छे तेमाटे हु पण तेने वाडु पूजु अने संशय पूछी पाप रहित थाउं एम विचारी ते पण भगवान पासे आव्यो भगवाने तेमज पूर्वोक्त रीते बोलाव्यो अने कह्यु के हे वायुभूति ! जीव तेहज शरीर एटले जीव अने शरीर ए बे एक छे एवो तुजने संशय छे ते वेदपदना अर्थ बराबर न जाणवाने लीधे छे ते वेदपद "विज्ञानघनएवैतेभ्योभूतेभ्य समुछाय" इत्यादिक एनो अर्थ पूर्वली पेरे जाणवो ए पदथी जीव सत्ता छे तो एम जाणीये जे जीव छे तो ते जीवनु भोग्य जे शरीर ते जीवथी भिन्न छे तथा ॥ सत्येनलभ्यस्तपसाह्येषब्रह्मचर्येण ॥ इत्यादि वेदपदनो ए अर्थ छे के सत्य, तप, ब्रह्मचर्य, एणे करीने संयतपुरुष, एह जाणे छे जे जीव शरीरथी भिन्न छे वली प्रमाणथी पण प्रत्यक्ष जीव अने शरीर भिन्न देखाय छे केमके ए म्हारुं शरीर छे एम कहेवाय छे तो इहां म्हारुं शरीर छे एम कहेनारो जीव छे माटे जीव अने शरीर भिन्न छे एवु सांभळी वायुभूतिये पण दीक्षा लीधी ॥ इति तृतीय गणधर ॥ ३ ॥ ॥ हवे चोथो अव्यक्त पण प्रभुपासे आव्यो स्वामीये कह्यु के पांचभूत छे के नथी ए तुजने संदेह छे ते तुं वेदपदनो अर्थ नथी जाणतो माटे सदेह रहे छे ते वेदपद (स्वप्नोपमंवैसकलंके०) स्वप्ननी पेठे सर्व छे एवो अर्थ थाय छे ए पद उपरथी तु जाणे छे जे पांचभूत छे के नथी ! पण ए पाठ जे छे ते अनित्यता बतावनारो छे परतु भूतनी नास्ति करनारो नथी वली पृथ्वी देवता, आपो देवता, इत्यादिक वेदपद जे छे ते सहु भूतनी सत्ता जूदी जूदी कहे छे माटे पाचभूत छे ते प्रत्यक्ष देखाय छे एवु सांभळी संशयरहित थइ तेणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति चतुर्थ गणधर

॥ ४ ॥ पाचमो सुधर्म आव्यो तेने जगवाने कह्यु के हे सुधर्म ! आ जवमां जे जेह्वा होय ते परजवमा तेह्वाज थाय एटले पुरुप मरीने पुरुपज थाय अने स्त्री मरण पामीने पर जवमां पण स्त्रीज थाय ठे एवो तुजने संदेह ठे ते वेदपद कहे ठे ॥ पुरुपोवैपुरुपत्वमश्नुतेपशु पशुत्व ॥ एनो अर्थ तु आवीरीते जाणे ठे के पुरुप मरीने पुरुप थाय अने पशु मरण पामीने पशु थाय ए अर्थ तुं नित्य जाणे ठे परतु नित्य नथी ए जे वेदपद ठे ते कोइक जीव आश्रयी ठे जो ए पद नित्य होय तो वेदमा जखे ठे जे ॥ शृगालोवैजायतेय सपुरुपोदह्यते ॥ अर्थ –(य के०) जे पुरुप (दह्यते के०) वले ठे (स के०) ते पुरुप (शृगालो के०) सीआलीउं वै शब्द पादपूरणार्थमा ठे (जायते के०) थाय ठे एटले जे पुरुप वले ठे ते पुरुप मरण पामीने सी आल थाय ठे एमा पुरुप ते सीयाल थाय एम कह्यु माटे पुरुप मरीने पुरुपज थाय एवो संशय रा खवो नही पुरुप मरी सीआल पण थाय इत्यादि सांजली सशय मटावी दीक्षा लीधी ॥ इति प चम गणधर ॥ ५ ॥ ॥ हवे ठठो मण्डितजी आव्यो तेने प्रजुये कह्यु बंध मोक्ष ठे के नथी ए तुजने संशय ठे ते तु वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी ते वेदपद कहे ठे ॥ सएपविगुणोविज्ञुर्नबध्यते, ससरति वा न मुच्यते ॥ अर्थ –(सके०) ते (एप के०) ए (विगुण के०) सत्वगुणादि रहित (विज्ञुके०) सर्वव्यापी (नबध्यते के०) कर्मैकरी बधातो नथी (ससरतिवा के०) संचरतो नथी एटले चालतो पण नथी (नमुच्यते के०) कर्मादि बंधनथी बूटतो पण नथी ए अर्थथी तु जाणे ठे जे जीवने बंध मोक्ष नथी परतु एम न जाणवु ए वेदपद जे ठे ते सिद्ध वर्णवनुं ठे केमके सिद्धना जीवोने बंध मोक्ष नथी पण जे रागादियुक्त ससारी जीवो ठे तेने तो बंध अने मोक्ष बेहु ठे एवु सांजली सशय टाली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति पष्ट गणधर ॥ ६ ॥ ॥

ह्वे सातमो मौर्यपुत्र आव्यो तेने प्रज्जुये कह्यु हे मोर्यपुत्र' तुजने देव नथी एवो सदेह् ठे ते तुं वेदना पदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी ते वेदपद आम ठे ॥ मायोपमान इन्द्र यम वरुण कुबेरादि ॥ एनो अर्थ – माया जेम इन्द्र, यम, वरुण, अने कुबेरादिक ठे एनाथी तुजने एवो संदेह् ठे के देवादि सर्व मायारूप ठे परतु वस्तुगते नथी एम तुं जाणे ठे पण ए मायारूप जे कह्या ठे तेतो अनित्यता जणाववामाटे कह्याठे अने वेदमां ॥ सएष यज्ञायुधी यजमानो जसा स्वर्गलोकं गच्छति ॥ अर्थ – यज्ञरूप आयुध ठे जेह्ने ते ए यज्ञ करनारो यजमान तत्काल सूधो स्वर्ग एटले देवलोकें जाय ठे ए वेदपद उपरथी हे मोर्यपुत्र' देवलोक ठे एम सिद्ध थाय ठे एवीरीते वेदपदनो अर्थ सांजली मौर्यपुत्रनो संदेह् टल्यो तेथी दीक्षा लीधी ॥ इति सप्तमगणधर ॥ ७ ॥ ॥ ह्वे आठमो अकंपित आव्यो तेने स्वामीये कह्यु हे अकंपित' तुजने नारकी नथी एवीरीतनो सदेह् ठे ते वेदपदना अर्थनु रह्स्य तुं जाणतो नथी तेने लीधे सदेह् ठे ते वेदपद कहे ठे ॥ नेह् वै प्रेत्य नरके नारकास्संति ॥ ए वेदपदना अर्थथी तुं एम जाणे ठे के परलोकमां नारकी नथी परतु ते अर्थ तुं खोटो समजे ठे एनो अर्थ आम ठे ते हुं तुजने कहुं बु के (नेह् के०) नही इहां (प्रेत्य के०) परलोकमां (नरके के०) नरकने विषे शाश्वता (नारका के०) नरकना जीव (वै के०) निश्चे एटले नारकीना जीव शाश्वता नथी एम जाणवु, पण नारकी नथी एम न जाणवु केमके वेदपदमां नारकी ठे ते पद कहुं हुं ॥ नारको वै एष जायते य शूद्रान्नमश्नाति ॥ अर्थ – जे शूद्रनुं अन्न लीये ते नारकी थाय ए वेदपद उपरथी नारकी ठे एवो अर्थ सांजली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति अष्टम गणधर ॥ ८ ॥ ॥ ह्वे नवमो अचलभ्रातजी आव्यो तेने प्रज्जुयें कह्यु के ताहारा मनमां पुण्य पाप ठे किवा नथी एवो

संदेह छे ते तुं वेदना पदनो अर्थ विरुद्ध समजे छे तेने लीधे छे ते वेदपद ॥ पुरुष एवेदं ॥
इत्यादि बीजा गणधरना वेदपदना पाठमां एनो वधो अर्थ करेलो छे ते रीते आही पण जा
णवो माटे जीव पुण्यथी सुख पामे अने पापथी दुःख पामे एम पुण्य अने पाप ए बे वेदमा
छे ए अर्थ सांभली संदेह टाली एणे पण दिक्षा लीधी ॥ इति नवम गणधर ॥ ९ ॥
हवे दशमो मेतार्यजी आव्यो तेने प्रभुये कह्यु हे मेतार्य ! परलोक छे के नथी एवो तुजने स
देह छे तेना उपर वेदना पद जे रीते प्रथम गणधरने कह्यां हतां ते रीते सर्व कही देखाड्या
वली ॥ अस्ति परलोक इहलोकस्यान्यथानुपपत्तेस्त्वत्पूर्वजवत् ॥ अर्थ –परलोक छे जो न होय
तो आ लोक पण केम कहेवाय माटे ताहारा पूर्वजनी परे परलोक पण छे जेम ताहारा
पूर्वज छे तो तु पण छे अने जे पाप करीने मरण पामे ते नरकमां जाय अने धर्म करे ते
मोक्षे जाय एवो अर्थ सांभली तेणे पण दिक्षा लीधी अने प्रभुनो शिष्य थयो ॥ इति दशम
गणधर ॥ १० ॥ ॥ हवे अगीआरमो प्रभासजी आव्यो तेवारे प्रभु बोल्या हे प्रभास ! तु
जने मोक्ष छे के नथी एवो संदेह छे ते तु वेदपदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी तेने लीधे छे
ते वेदपद कहे छे ॥ जरामर्य एतत्सर्व यदग्निहोत्र ॥ अर्थ – जे ए (अग्निहोत्र के०) यज्ञ छे
(तत्सर्व के०) ते सर्व (जरामर्यवा के०) जावज्जीव करवो अने ए होममां जीव मरण
पामे छे ते पाप रूप छे ते स्वर्गना सुख आपे पण तेथी मोक्ष न थाय केमके जावज्जीव ए
करवो कह्यो माटे स्वर्गेज जवाय पण ते विना मोक्ष जावानो उपाय नथी तो मोक्ष केम
थाय एम विचारतां मोक्ष नथीज एवो अर्थ तु करे छे तेथी तुजने संदेह रह्यो छे परंतु ते
अर्थ तु करे छे तेम नथी एनो अर्थ आवी रीते छे ते हु तुजने कहुं छु ते सांभल जे ए अग्नि

होत्र छे ते जावज्जीव सर्व पण छे परतु वा शब्दथी मुक्तिना अर्थी जे जीवो छे तेउ मोक्षना कारण सारू पण क्रियानुष्टान करवु एटले ए होमज सर्वकाल करवो नही परतु मोक्षनो पण उपाय करवो तथा वली वे ब्रह्म छे (परमपरके०) तेमां एकतो परब्रह्म अने वीजो अपर ब्रह्म (तत्रपरसत्यंज्ञानमनंतब्रह्म के०) तिहां परब्रह्म तो सत्यरूप ज्ञान अनंतरूप नाशरहित ब्रह्म छे एटले अनंत ज्ञानमय ब्रह्म ते पर छे ए श्रुतिथी मोक्ष छे एम जाणवु ए अर्थ सांभली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति एकादशम गणधर ॥ ११ ॥ ॥ एरीते श्रीगौतम स्वामीथी मांडीने यावत् प्रभासजी पर्यंत सर्व मली अगीआर गणधर आव्या ते सर्वना म नमां जे जे सशय रह्या हता ते प्रभुये टाल्या तेथी अगीआरे जणे मली पोताना चुम्मालीशसो शिष्यो सहित प्रभु पासेथी दीक्षा लीधी प्रभुये सर्वने त्रिपदी आपी ते आवीरीतें – प्रथम उपन्नेइवा ॥ एटले सर्व उपजे छे एम कह्यु तेवारे शंका पेदा थाय जे सर्व उपजे छे तो ते जगतमां केवीरीते समाय तेवारे वीजुं पद ॥ विगमेइवा ॥ एटले विनाश पामे छे ए पदमां पण शंका उपजे छे के जो विनाश थतो जाय तो सर्व संसार शून्य थइ जाय एम विचारी त्रीजु पद कहेछे ॥ धुवेवा ॥ एटले ए संसारनी स्थिति निश्चल छे तेवारे जाण्युं जे उपजे छे, विणसे छे अने रहेनारो छे ते रहे पण छे एवी संसारनी स्थिति सदा सर्वदा त्रणेय कालमा चालती आवे छे एम त्रिपदी प्रभु पासेथी पामीने ए अगीआरेय गणधरे बे घडीमां एटले एक मुहूर्त्तमां द्वादशांगीनी रचना करी ते अवसरने विषे इन्द्र महाराज पोते रत्नना थालमां वासक्षेप लेइ हाजर थया तेमांथी प्रभुये मुठी भरीने अगीआरे गणधरने माथे अनुक्रमे वासक्षेप कर्यो ए तीर्थनी स्थापना थइ देवताउए देवदुंदुभि वगाड्यां अने जयजय शब्दने वोलवा लाग्या ॥ इति गणधरवाद

पढी चंदनबालाये भगवाननी देशना सांभली प्रतिबोध
स्तथा गणधरस्थापनाधिकार ॥३॥ ॥ पढी चंदनबालाये भगवाननी देशना सांभली प्रतिबोध
पामीने महामहोत्सव सहित प्रभुपासेथी दीक्षा लीधी तेनी पढवाडे बीजा पण घणा जनोए
दीक्षा लीधी घणा श्रावक थया, घणी श्राविकाउ थइ, एम चार प्रकारना संघनी स्थापना करी॥
॥ हवे गौतम स्वामीनो संबंध कहे छे, गौतम स्वामीनु उत्कृष्टरूप, प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान,
छठ अठमादिक तपश्चर्या करता थका, धर्मदेशना देता थका, तेजोलेश्यादिक अठावीश लब्धि
नाधरनार, चार ज्ञानवंत, चौदपूर्वधारी, श्रुतकेवली थया, जेने दीक्षा आपे, तेने केवल उपजे
पोताने प्रभुउपर स्नेह घणो तेथी केवल उपजे नही तेवारे चिंतव्यु जे केम मने केवलज्ञाननी
प्राप्ति थाशे के नही ? गौतमनी एवी चिंतवणीजोइ श्रीवीर भगवान देशनामा एवीरीते बोल्या
के जे पोतानी लब्धिये अष्टापद पर्वत उपर चढी चोवीश तीर्थंकरने वांदे, ते जीव तेहज भवे
मोक्ष जाय, एवी वीरनी वाणी सांभली बत्रीश कोश उंचो अष्टापद पर्वत छे जेनी आठ पाव
डीयो छे तेना उपर सूर्यना किरण अवलंबीने श्रीगौतम स्वामी पोतानी लब्धिये चढया, तिहां
चोवीश जिनने वांदी जगचिंतामणि स्तवन जोडी श्रीवयरस्वामीनो जीव तिर्यग्जृंभकनामा
सामानिक देवछे तेने पुंडरीकाध्ययने प्रतिबोधीने नीचे उतर्या, तेवारे पन्नरशेने त्रण तापस
चोथ, छठ अने अठम तपने पारणें कंदमूल फलादिनु पारणुं करे, एम करतां बार मास वहि
गया छे तेमणे श्रीगौतमने उतरता दीठा तेवारे चिंतव्यु जे आपणे एना शिष्य थाश्ये तो अ
ष्टापद उपर जइ देवने वांदीये एम धारी उभीने श्रीगौतमजीने पगे लागा, गौतमे तेमने प्र
तिबोधिने दीक्षा आपी पढी मकोलारे अष्टापदें चडावी तापसने देव वंदावीने पाछा उतार्या,
तेवारे गौतमजीये पूछ्यु के हे शिष्यो ! तमे पारणुं करशो ? ते बोल्या हा स्वामी, पढी गौत

करी खीरनो एक पडघो सवा शेरनो जरी आव्या अने तापसान ...
मजी पोतानी लब्धिये करी खीरनो एक पडघो सवा शेरनो जरी आव्या अने तापसान
के उगो पारणुं करो, तेवारे खीरपात्र देखी तापस कहेवा लागा के खीर थोडीने खानार घणा
माटे आटली खीरथी तो आंखे आंजण थाशे ? अथवा वधाने एकेकुं टीलुं कराशे ! पछी, गौ
तमजीये कह्यु के हे शिष्यो मांफले चालो महारे पारणुं करी गुरु पासे जावु छे एम कही मांफले
वेसाडी तापसोनो संदेह जांजवाने अर्थे खीरना पात्रामां पोतानो अंगुठो मेल्यो, तेवारे अक्षीण
लब्धियकी पन्नरशे त्रणे तापसने पारणां कराव्यां, पोतें पण पारणुं कर्युं, तिहां पांचशे ने
एक तापसने तो खीर जमतां जमतां श्रीगौतमना गुण चितवतां चितवतां केवल ज्ञान उपन्युं
अने पांचशेने एकने प्रभुनुं समोवसरण देखी केवल ज्ञान उपन्युं तथा पांचशे एक तापसने तो
श्रीवीर जगवाननुं मुख देखतांज केवल ज्ञान उपन्युं एम पन्नरशें त्रणे तापस केवली थया
तेणे वीरजगवानने वांदी केवलीनी सजाये जावा मांड्युं, तेवारे गौतम बोल्या हे शिष्यो !
तमे छद्मस्थनी सजाये वेसो अहीयांतो केवलीनी सजा छे माटे न वेसवु तेवारे वीरजगवान्
बोल्या हे गौतम ! तमें केवलीनी आशातना म करो, ए पन्नरशे त्रणे केवली थया छे, ते सां
जली गौतम खेद पाम्या के जुओ ? महारा शिष्य केवली थया पण हुं केवली थातो नथी एम
घणो घणो चित्तमां खेद करवा लाग्यो, तेवारे जगवाने कह्युं के हे गौतम ! तुं खेद म कर,
अंते आपणे वे सरखा थाशुं ॥ इति गौतम संवंध ॥ हवे जगवानें कया कया गाममां केटलां
केटलां चोमासां कर्यां ते सूत्रकार कहे छे – ते कालने विषे, ते समयने विषे, श्रमण जगवत
श्रीमहावीरस्वामीने अस्थिग्रामनी निश्राये वर्षाकालनुं पहेलुं चोमासुं थयुं तेवार पछी चंपानग
रीमां अने पृष्ठचपानी निश्रायें त्रण चोमासां वर्षाकालनां थयां एव चार तथा विशाला नग

ये वाणिय गामनी निश्राये करीने बार चोमासां वर्षाकालनां थयां एव सोल तथा राजगृह
ने पाडानी बाहेर निश्रायें चौद चोमासां वर्षाकालनां थयां एव त्रीश तथा
चोमासां कर्यां तथा नद्रिका नगरीये बे चोमासां कर्यां तथा आलंनिका
था सावत्थि नगरीये एक चोमासुं कर्यु तथा अनार्य देशमां एक
। थयां ठेलु बेतालीशमुं चोमासु मध्यम पावापुरी अपापा नगरीये
लेखकशालामां जगातनी मांडवी कारकुननी सन्नामां वर्षाकाले
चोथो महीनो सातमुं पखवाडीयु कार्त्तिक वदि आमावास्याना
विषे, नगवान श्रीमहावीरस्वामी काल प्राप्त थया जाति, जरा, म
, वृद्ध थावु, मरवु तेनु जे बंधन तेने छेदीने सिद्ध थया, तत्त्व जा
थया, सर्व दुःखनो अंत कर्यो, सताप रहित थया, सर्व दुःखनो क्षय थयो
सर मांहेलो चंद्रनामा बीजो सवत्सर वर्त्ते छे तेने विषे, प्रीतिवर्द्धन नामे मास
न तेने विषे, नंदीवर्द्धन नामा पक्ष, अग्निवेश्य नामा दिवस तेने विषे तथा
एवु बीजुं नाम ए दिवसनु कहे छे, देवानंदा नामा रात्रि क्यांएक बीजो निरत्ति
पण ए रात्रिनुं छे जे लवमां नगवत मोक्षे पहोता ते लवनो नाम अर्च छे एटले
नामा लव, मुहूर्त्त नामा प्राण एटले श्वासोछ्वास, सिद्ध नामा स्तोक, नाग नामा करण,
सर्वार्थ सिद्ध नामा मुहूर्त्त, स्वाति नामा नक्षत्रनी साथे चंद्रमानो योग होते छते नगवान काय
स्थिति नवस्थिति खपावीने कालगत थया, यावत् मन संबधि शरीर संबधि सर्व दुःखथी र
हित थया ॥ १२५ ॥ ॥ जे रात्रिमा श्रमण नगवत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रा



भगवान् सुवर्ण कमले बेठा घणा भव्य जीवोने धर्मोपदेश देता थका निर्वाण पाम्या समाधिस्थ थया

त्रिये चारे निकायना घणा देव, घणी देवीयो स्वर्गथी
लाग्यां तेणे करी तथा उंचा उर्ध्वलोकने विषे जावा लाग्यां तेथी करीने ते रात्रिने विष आकाशमां घणो उद्योत होतो हवो ॥१२६॥ ॥ जे रात्रिये श्रमण नगवत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया, ते रात्रिये घणा देव अने देवीयो आवतां जातां बहुज आकुल थयां तेथी अव्यक्त कोलाहल शब्द थवा लाग्यो ॥१२७॥ ॥ जे रात्रिये नगवान श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रात्रिमां गौतम जे इन्द्रनूति अणगार नगवानना शिष्य तेहुं प्रेमबंधन त्रूटचुं तेथी श्रीगौतमजीने केवल ज्ञान केवल दर्शन उपन्युं ॥ १२८ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रीगौतमस्वामीजीने केवल ज्ञान उपन्युं ते केवीरीते उपन्युं तेनी कथा कहे छे.– पोतानो अंतसमय जाणीने श्रीमहावीर देवे श्री गौतमजीनो पोतानी उपर निबड स्नेह जाणी ते प्रशस्त स्नेह राग निवर्तन करवाने अर्थे संध्यासमयथी पहेलां श्रीगौतमस्वामीने देवशर्मा ब्राह्मणने प्रतिबोध करवा सारुं पार्श्ववर्त्ती ग्रामे मोकल्या हता, ते ब्राह्मणने प्रतिबोध आपी तिहां रात्रि रही प्रनातें पाछा वल्या, तेवारे मार्गमां केटलाएक देवोने शून्य चित्त देख्या अने उपयोगथी वीरनिर्वाण सांनल्युं, तेवारे वज्राहतनी पेरे मूर्छा पाम्या, थोडीवेला पछी सावधान थया, तेवारे मोहने वशें विलाप करवा लागा के हे प्रनो ! तमे त्रण लोकना सूर्य अस्त पाम्या तो हवे मिथ्यात्वरूप अंधकार पसरवा मांमशे ! कुतीर्थरूप घुवडना समूह जागृत थइ गर्जारव करशे ! डरमति डुकालरूप राक्स प्रवेश करशे ! कुमतिरूप चोर घणा थाशे ! जेम सूर्य अस्त थये कमल कुमलाय, तेम चतुर्विध सघरूप कमल वन कुमलाशे ! जेम चंद्रविना आकाश, जिम दिवाविना मंदिर, जेम सूर्यविना दिवस, ए जेम शोनता नथी तेम तमारा विना ए नरत क्षेत्र शोना रहित थाशे !

हे वीर । विना हवे सात प्रकारना इति उपद्रव प्रवृत्त थशे, हे वीर तमारा विना पाखंडी रूप तारा दे दीप्यमान थशे, तमाराविना धर्मरूप चंद्रमाने पापरूप राहु ग्रहण करशे, हे श्री महावीरदेव ! हवे हु कोना पगतळियां उल्लासतो थको म्हारा मनना संदेह पूछीश कोने हुं जगवान् कही बोलावीश ! कोने हु नमीश ! हे प्रभो ! हवे मुजने तुम विना बीजो कोण गौतम कही बोलावशे ! हाहा ! ! हे वीर हे वीर ! तमे ए शुं कर्युं जे आ वखते मने दूर कीधि, लौकिक पणुं पण नही राख्यु, हुशु बालकनी पेरे आडो वेशी आपनो छेडो पकडी रहेत ? अथवा शु केवल ज्ञाननो जाग मागत ? शु मोक्षमार्ग संकीर्ण थात ? अथवा शु तमोने कांइ जारलागत ? के मुजने मोकलावीने चाल्या गया, हे वीर जे वेलाये पोतानो बालक वेगळो होय तो पण तेने बोलावीने पोतानी पासे राखवो जोइये ते वेलाये उलटो तमे मुजने पोताथी दूर कर्यो, हे वीर तमे शु तमारा उपर म्हारो कृतिम स्नेह जाण्यो ? हे वीर हु तमारे शु असुखकारी थातो हतो जेथी मने मूकी गया, हे वीर तमे मुजने केम वीसारी मूक्यो, हे वीर तमे आजे मुजने महोटा विरह रूप समुद्रमां नाख्यो, हे वीर तमारा विना हुं महोटा वियोग रूप दाहमां दाझ्यो, हवे तमारा विना म्हारो दुःख कोण जाणशे, हे वीर हवे समोसरणनी शोभा विलय थइ गइ, हवे मुक्ति मार्गनो साथ भाग्यो, हे वीर हवे जेम जल विना माछली टलवले तेम तमारा विना चतुर्विध श्रीसंघ टलवलतो थशे, हे वीर तमारा वचनरूप उपशम जलविना जिनशासन रूप वाडीयो बाग बगीचा सूकाइ जशे, हे वीर तमारा विना समता रूप केतकी सूकाइ जशे, हे वीर हवे भव्यजीवना मनरूप भ्रमर ते किहां जइने गुजारव करशे, हे वीर हे गुणनिधान, हे जिनशासन नायक, हे भव्यजीव सुख दायक हे

जिनशासन सणगार, हे करुणासागर, तमे मुजने विलविलतो मूकीने साताराज दूर जइ वस्या तो हाहा हे वीर हवे हु कोनी साथे संदेसो कहेवरावु एम अनेक प्रकारे गौतमजी प्रशस्त मोहना उदयथी नाना प्रकारनो दुःख करता थका श्री गौतमने वार वार मोहने वशे करी वीर ! वीर ! एवा अक्षर मुखें रही गया पछी गौतमजीये विचार्युं जे ए श्रीवीतराग तो नि स्नेहीज होय, माटे अहीआ तो महारोज अपराध छे, हुंज मूर्ख थयो जे मे मोहने वशे तदा श्रुतनो उपयोग आपी जोयुं नही माटे ए महारा एक पक्षा स्नेहने धि कार होजो. ए स्नेहे सर्युं ॥ अरे आ मोहराजानो कहेवो महात्म्य छे जे महारा सरखाने पण एवीरीते पीडाकरे छे तो वली बीजा ते सी गणतीमां? अरे में रागना वशथकी विचार्युं नही जे ए श्रीवीर प्रभुतो निरागी निस्नेही हता तो महारे एना उपर राग करवो ते फोकट क्षेप कारीज जाणवो ए निरमोहीने शानो मोह होय अर्थात् कांइ पण नहोय वली हे जीव तु कोणछो अने ते कोण छे तेमा पण जो निश्चे दृष्टीये विचारवा जइये तेवारे तो श्रीवीर अने हुं कांइ जूदा नथी केमके आ आत्मातो एकज ज्ञान, दर्शन, चारित्र मयी शाश्वतो छे, बीजा सर्वभाव अशाश्वता छे, हुं एकलो छुं, महारो बीजो कोइ स्नेही नथी, जगतमां कोइ कोइनु नथी इत्यादिक सम भावना भावतां श्रीगौतम स्वामीने केवलज्ञान उपन्युं, इंद्रादिकदेवतायें प्रभातें केवलज्ञाननो महोत्सव कीधो, इहां कवि युक्ति करे छे के श्रीगौतमस्वामी अहंकारथी तो प्रतिबोध पाम्या अने रागथी गुरुभक्ति करी तथा विषवादमां केवल ज्ञान पाम्या ए आश्चर्य छे, दीर्घायुष्यवंत जाणीने सौधर्मस्वामीने पाटदीधो ॥ पछी बार वरस केवल पर्याय पाली सर्व मली बाणुं वर्षायु पाली, मोक्षे पोहोता छे ए गौतमस्वामी जेमने दीक्षा आपे ते तेहज भवमां मोक्ष जाय ए गौतम

स्वामीमां महोटो अतिशय कह्यो छे इति गौतम केवलोत्पत्ति संपूर्ण ॥ जे रात्रीये नगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां नव मल्लनी जातिना उपन्या, नव लछनी जातीना उपन्या, काशी कौशल्य देशना मालक गण एटले परिवारना धणी एवा अढारे गण राजा छे ते नगवानना मामो चेडो महाराजा छे तेना ए अढारे देशना राजा मित्र समान छे माटे मलवाने अर्थे आव्या छे ते राजा अमावास्याने दिवसे उपवास करीने रात्रे पोसहमां बेठा हता पछी ते राजाउए नगवत निर्वाण पाम्या माटे केवलज्ञान रूप जे नाव उद्योत हतो तेतो गयो तो हवे इव्य उद्योत करीशु ॥ १२ए॥ एटले पोसह उपवास रूप जे इव्य उद्योत ते आगला वरसो वरसे ए अमावास्या आवे थके करीशु अथवा हवे इव्य उद्योत करशु एवु विचारीने दीवा प्रमुख इव्य उद्योत कर्यो ते दिवसथी मंगलिकने अर्थे महोटु पर्व दीवालीनुं थयु ते पर्वे नगवान मोक्ष पाम्या, शिवसुख निरुपइव सुख पाम्या ॥ वली कार्त्तिक शुदी एकमने दिवसे गौतम स्वामीने केवलज्ञान उपन्युं तेनो हर्ष जाणवो अने कार्त्तिक शुदी बीजने दिवसे नगवानना महोटो नाइ नंदीवर्द्धन छे ते प्रजुनु निर्वाण सांनलीने घणोज शोकवंत थयो तेनो शोक मटा ववा सारू नगवाननी बहिन सुदर्शनाये पोताने घेर नंदीवर्द्धनने तेडीने जिमाड्यो नाइनो शोक टाल्यो ते दिवसथी लोकोमां नाइबीज चाली॥१२ए॥ जे रात्रिमां नगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां कुइ एटले क्रूर स्वनाव छे जेनो एवो अठयासी ग्रह माहेलो त्रिशमो नस्मराशिनामा ग्रह तेनी बे हजार वर्षनी एक नक्षत्र उपर स्थिति छे ते नगवानना उत्तराफाल्गुनी नामे जन्मनक्षत्र उपर आव्यो छे ॥ १३० ॥ ॥ जे दिवसथी नस्मराशि नामा महोटो ग्रह नगवानना जन्म नक्षत्र उपर आव्यो ते दिवसथी प्रारंनीने निर्ग्रंथ जे साधु साधवी छे तेमनी घणी

पूजा एटले उठीने उत्तुं थावु आहारादिकनुं देवु तथा सत्कार ते वस्त्रादिकनुं देवुं तेनी वृद्धि थाशे नही ॥१३१॥ इहां प्रथम जगवानने सौधर्मेंद्रे वीनति करी हती के हे महाराज! तमे मोक्ष जाउगो परंतु तमारा संतानीयांने वे हजार वर्ष पर्यंत पीडा थाशे माटे वे घडी जस्म ग्रह वाकी रह्यो छे एटलुं वे घडीनुं आयुष्य तमारुं वधारो एटले जस्मग्रह उतरी जाय तो पाछलथी आपना संतानीयां चेला चेलीने शाता उपजशे ते सांजली जगवान वोल्या हे इंद्र! ए वात त्रणे कालमां न थाय तमे तो वे घडी आयु वधारवा कहो गो परंतु एक समय मात्र आयु पण महाराथी वधे नही त्रूटयुं आयु कोइथी वधार्युं जाय नही ए एमज जावी छे जे वे हजार वर्ष पर्यंत महारा तीर्थमां शिष्योने वाधा थवा वाली छे तेने कोण वर्जी शके कोइनु पण सामर्थ्य नथी अने जेवारे जस्मराशी ग्रहना वे हजार वर्ष पूरण थइ जाशे तेवारे निर्ग्रंथोनी घणीज पूजा सत्कारादिक मानता थाशे धर्मनो उदय थाशे, श्रीसंघने हर्ष थाशे ॥ दोहो ॥ घडीन लब्भे आगली, इश्युं अरके वीर ॥ इम जाणी जीव धर्मकर, ज्यां लगे वहे शरीर ॥ १३२ ॥ ॥ जे रात्रिये जगवान मोक्ष गया ते रात्रियें घणा झीणा झीणा कुंथुआ तेइंद्रिय जातीना जीव उत्पन्न थया ते उठ्या पण नजाय, उठरीने अलगा पण न मूकाय अने साधु साधवीने नजरे नही आवे सीघ्र चाले तेवारे देखाय ॥ १३३ ॥ ते देखी घणा साधु साध्वीयें जात पाणी आदिक चारे आहारनो त्याग करी अनशन कर्युं तिहां शिष्ये पुछ्युं जे हे गुरु महाराज आवी रीतनो उपद्रव केम थयो तेवारें गुरु वोल्या हे वत्स! आज पछी चारित्र दुःखे पलशे ॥ १३४ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे जगवान श्रीमहावीरस्वामीने इंद्रजूति आदेदेइने चौद हजार उत्कृष्टी साधुउनी संपदा थइ ॥ १३५ ॥ ॥ जगवान् श्रीमहा

वीरस्वामीने चदनबाला प्रमुख छत्रीश हजार उत्कृष्टी साध्वीउंनी सपदा थइ ॥ १३६ ॥ ॥
जगवानने शखजी तथा शतकजी आदे देइने १५९००० उत्कृष्टी श्रावकोनी सपदा थइ ॥
जगवानने सुलशा, रेवती प्रमुख ३१८००० उत्कृष्टी श्राविकाउंनी सपदा थइ
॥ १३७ ॥ ॥ जगवानने केवली नही पण केवली सरखा सर्व अक्षरोना सयोग जाणे तेवा केव
॥ १३८ ॥ जगवानने केवली नही पण केवली सरखा सर्व अक्षरोना सयोग जाणे तेवा केवलीनी पेरे सत्य प्ररूपणा करवा वाला एवा त्रणशे साधुउ चौद पूर्वधारीनी उत्कृष्टी सपदा थइ
लीनी पेरे सत्य प्ररूपणा करवा वाला एवा त्रणशे साधुउ चौद पूर्वधारीनी उत्कृष्टी सपदा थइ
॥ १३९ ॥ जगवानने तेरशो साधुउ अवधिज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ १४० ॥ ॥ जगवान
श्रीमहावीर स्वामीने सातसे केवलज्ञानी संपूर्ण केवलज्ञान अने केवल दर्शनना धरनारनी उ
त्कृष्टी सपदा थइ ॥१४१॥ ॥ जगवानने जे देवतानी ऋद्धि वनावी लीये एवा सातशे वैक्रियल
ब्धिना धरनारनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥१४२॥ ॥ जगवानने पांचशे विपुलमति जे अढीद्वीप बे
समुद्रमां सज्ञीपचेंद्रीय पर्याप्ता जीवोना मनना जाव जाणे एवा विपुलमति मन पर्यवज्ञानीनी उ
त्कृष्टी संपदा थइ १४३ जगवानने जे देवो अने मनुष्योनी परपदामा बेशी वाद करता कोइथी हारे
नही एवा चारसे वादिउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥१४४॥ ॥ श्रीमहावीरने जे अते एटले समीपे
वासी एटले वसे रहे तेने अतेवासी कहीये एवा सातशे शिष्य उत्कृष्टा मोक्ष गया ए जगवानना
पोताना हाथ दिक्षित जाणवा तथा चौदशे साधवी उत्कृष्टी मोक्ष गइ ते पण पोतानी हाथ
दिक्षित जाणवी ॥१४५॥ ॥ श्रीमहावीरने जे आगामि जवे मोक्ष जावावाला जेमनी गतिनु
जद्रं आयुष्य एवा उत्कृष्टा आठशे साधुउ विजयादि पांच अनुत्तर विमाने गया ॥ १४६ ॥
श्रमण जगवान् श्रीमहावीर स्वामीने बे प्रकारे अतगड जूमि थइ एटले मुक्ति मार्गनी मर्यादा
थइ ते आवी रीते के जव जे ससार तेनो अत करवो तेनी जे जूमिका एटले मर्यादा अथवा

कर्मनो अंत करवो तेनी मर्यादा ते बे प्रकारनी थइ ते बे प्रकारनां नाम कहे छे एक जुगांत कृत नूमि अने बीजी पर्याय अंतकृत नूमि जाणवी तेमां प्रथम युग एटले कालमान विशेष, अनुक्रमे गुरु शिष्य प्रतिशिष्यादिरूप जे पुरुषो तेना प्रमाणे कालमान जाणवु ते आंही श्रीवीर नगवानने त्रण पुरुषना पाट पर्यंत काल सुधी कर्मनो अंत थयो एटले बीजा घणा जीवोए कर्म खपाव्यां छे ते श्रीवीर नगवानना पाटथी मांमीने श्रीजबूस्वामी पर्यंत मोक्ष मार्ग चाल्यो तेमां एक तो श्रीवीर नगवान पोते बीजा तेमने पाटे तेमना शिष्य श्री सुधर्मा स्वामी त्रीजा नगवानना प्रतिशिष्य अने श्रीसुधर्म स्वामिना शिष्य श्रीजंबूस्वामी ए त्रण पाट सुधी मोक्ष मार्ग वह्यो छे तेने युगांतकृत नूमि कहीयें अने बीजी पर्याय अंत कृतनूमि ते श्रीतीर्थंकरने केवल ज्ञान उपन्या पछीनो काल ते आश्रयी जाणवो ते नगवान श्रीमहा वीरस्वामिने केवलज्ञान उपना पछी चार वर्षे मुक्तिमार्ग वह्यो एटले प्रभुने चार वर्षनो केवल पर्याय थया पछी बीजा कोइक जीवने कर्मनो अंत थयो कोइ मुनि मोक्ष गयो एम चार वर्ष वीते मोक्षमार्ग प्रवर्त्यो छे, बीजा जीवोने कर्मनो अंत थयो छे ते पर्याय अंतकृत नूमि कहीयें ॥ १४७ ॥ ॥ ते कालने विषे, ते समयने विषे श्रमण नगवत श्रीमहावीर स्वामी त्रीश वर्ष घरवासे रह्या अने काइक जाजेरा बार वर्ष छद्मस्थ पणे रह्या तथा कांइक उंछा एटले साडा छ मासे उणा त्रीश वर्ष केवली पणे विचर्या एकंदर बेतालीश वर्ष लगे चारित्र पर्याय पाली साधुपणुं पाल्युं सर्वमली बहोतेर वर्षनुं आयुष्य पालीने वेदनीकर्म, आयुकर्म, नामकर्म अने गोत्रकर्म ए चार कर्म शेष रह्यां हतां ते क्षय थयां तेवारे एहज अवसर्पिणी कालने विषे डुसम सुसमानामे चोथो आरो घणो वीत्यो अने चोथा आरानां



भगवानने अग्नि संस्कार करवा माटे पालखीमांथी उतार्या

त्रण वर्षने साडा आठ महीना वाकी रहे थके पावानगरीमा हस्तिपाल राजानी कारकुननी सन्नामा पोते एकला परतु साथे वीजो कोइ नही एटले वीजा तीर्थकरो सर्व साधुओना परिवार सहित मोक्ष गया छे अने श्रीवीर नगवान तो एकलाज वेलानु तप एटले पाणी रहित वे उपवास चउविहारा करीने पलाठीवाली वेठा थका स्वाति नक्षत्रमां चन्द्रमानो योग आवे थके पाछली चार घडी रात रहे थके पचावन्न अध्ययन पुण्य फलना कहेवावाला अने पचावन्न अध्ययन पाप फलना कहेवावाला तथा छत्रीश अध्ययन पूछया विना कहीने छेल्लो प्रधान नामा मरुदेवीनु अध्ययन प्ररूपता थका काल प्राप्त थया, उंचा गया, जाति जन्म जरा मरणनु बधन कापीने सिद्ध थया, बुद्ध थया, मुक्त थया, कर्मोनो अत करीने सर्व सताप रहित थया दुःखथी छूटा ॥ १४८ ॥ ॥ नगवान श्रीमहावीर स्वामि मोक्ष गया पछी नवसे वर्ष वीत्या अने दशमा सैकडानां एसी वर्ष थयां तेवारे एटले वीरनिर्वाणथी ९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं अने वांचनामां नवशे त्र्याणु वर्षे पुस्तक लखाणुं एवु देखाय छे ॥ १४९ ॥ हवे नगवतनु निरवाण थयु, तेवारे इन्द्रादिकना आसन चलायमान थया, नगवतनु पाचमुं निर्वाण कल्याणक जाणी सर्व इन्द्र नेगा थइने चमरेन्द्रादिके वावना चदने करी नगवतनी चय रची, अग्निकुमार देवोये अग्नि मूक्यो, वायुकुमारे वायरो विकूर्व्यो, नगवतना मांस सर्व शोषाव्यां पछी मेघकुमार देवोये वरसाद वरषाव्यो शरीरनी राख खीर समुद्रमां नाखी, नगवतनी उपरली दाढा सौधर्मेन्द्रे लीधी, हेठली दाढा चमरेन्द्रे लीधी, ते दाढाने रत्नमय माबलामां राखी पूजे ए विस्तारे अधिकार श्री जबूद्वीपप्रज्ञप्तिमां कह्यो छे, त्यांथी जोवु ॥ हवे पुस्तक लखाणुं ते आ प्रमाणे के श्रीवीर निर्वाण पछी वल्लनीपुर नगरे देवर्द्धिगणि क्षमाश्र



भगवानने अग्नि सस्कार करवामाटे पालखीमाथी उतार्या

मण प्रमुख सर्वे श्रीसंघे मलीने सिद्धांत पुस्तकारूढ कीधो, एटले आगल तो सर्वे सूत्रो आचार्य प्रमुखने मुखपाठे हतां पछी बार वर्ष डुकाल पड्यो तेने लीधे केटला एक साधुउ मरण पाम्या तेथी घणा सूत्रपाठ साधुउने मुखे हता ते विछेद गया, तेवार पछी जेवारे सुगाल थयो, तेवारे सूत्रोनो विनाश थतो देखी साधुनो संघ नेगो थइ जेने मुखे जेटलो पाठ स्मरणमां रह्यो हतो तें सर्वे तालपत्र उपर लखी पुस्तकारूढ कर्यो तथा केटला एक एम कहे छे के नवशे एशीमा वर्षथी सर्वे सिद्धांत पुस्तके लखवा मांड्या ते नवशेने त्र्याणुमे वर्षे संपूरण लखाइ रह्या एवु पण देखाय छे यत ॥ वल्लहिपुरमिनयरे, देवढ्ढिपमुह सयल संघेहिं ॥ पुढे आगमलहिउ, नवसय असिआउ वीराउ ॥ १ ॥ तथा कोइ एक कहे छे के सकंदिलाचार्यें माथुरी वाचना करी पुस्तक लिख्यो छे तथा कोइएक कहे छे के कालिकाचार्यें चोथनी संवत्सरी नवशेने त्र्याणु वर्षे थापी अने पछी चौमासी एक दिवसे थापी एवा केटला एक मतथी बोले छे तेनो मुद्दो केवली जाणे ए वातनो विशेष विस्तार दीपिका प्रमुख थकी जाणवो॥ श्रीवीर प्रभुना शासननुं प्रमाण एकवीश हजार वर्षनुं कह्यु छे॥ श्रीवीर प्रभुना नव गणधरतो प्रभु पोते छतांज राजगृहि नगरीये एक महीनानी संलेषणा करीने परिवार सहित सिद्धि पाम्या छे अने वीरनिर्वाण पछी बार वर्षे श्रीगौतम स्वामी मोक्ष पाम्या छे, सांप्रत पांचमा कालमां जे मुनिराज वर्त्ते छे ते सर्वे भगवतना पाटें श्रीसुधर्मा स्वामी पांचमा गणधर वेग हता तेनो परिवार जाणवो ते श्रीसुधर्मा स्वामी वीरनिर्वाण पछी वीश वर्षे सिद्धि पाम्या छे तथा श्रीवीर भगवानना जन्म चैत्र महीनामां छे अने कार्तिक मासमां मोक्ष गया छे माटे बहोतेर वर्षायु बराबर मलतु नथी ते बाबत घणा ग्रंथोमां संवत्सरना दिनमानना फेर

देखाडी समाधान करे छे परतु खरेखरी वात्त केवली गम्य छे ए श्रीमहावीरना पाच कल्या
णक विस्तारे कह्यां ए छठा वखाण पर्यंत श्रीवीर भगवाननो अधिकार जाणवो ॥ इति सुबो
धिनी नापाया षष्टी व्याख्यान समाप्त ॥ ६ ॥ ॥ अथ सप्तम व्याख्यान प्रारन्न ॥ ॥ हवे
पश्चानुपूर्वी न्यायथी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना पाच कल्याणक कहे छे ते कालने विषे ते समयने
विषे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत त्रेशठ शिलाका पुरुषमा प्रसिद्ध जेने सर्व मतवाला जाणे छे एवा
श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना पांच कल्याणक विशाखा नक्षत्रमां थया ते कहे छे विशाखा नक्षत्रमां
देवलोकथी चवीने वामादेवीनी कुखे उपन्या, विशाखा नक्षत्रमा जन्म पाम्या, विशाखा
नक्षत्रमा गृहस्थ पणाने त्यागीने साधु पणानु ग्रहण कीधु, एटले दिक्षा लीधी, विशाखा
नक्षत्रमां सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान अने केवल दर्शन उत्पन्न थयुं छे अने विशाखा नक्षत्रमां
मोक्ष गया छे इति संक्षेप वाचना ॥ १५० ॥ ॥ हवे विस्तारथी वाचना लखीये छैये ते का
लमां ते समयमां श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोमा प्रधान ते उनालानो पहेलो महीनो, पहेलु पखवा
डयुं एटले चैत्रवदि चोथने दिवसे प्राणातनामा दशमा देवलोकथी वीश सागरोपमनु आ
उखु पूरण करीने तिहांथी चव्या ते इहा जबूद्वीपना भरत क्षेत्रने विषे वाणारसी नगरीमां
अश्वसेन नामा राजा तेनी वामादेवी नामे राणी तेमनी कूखे मध्यरात्रीये विशाखा नक्ष
त्रमां चंद्रमानो योग होते छते देव संबंधि आहार, देव संबधि शरीरनो त्याग करीने ॥ ग्रंथा
ग्रंथ ॥ ७०० ॥ गर्नपणे उपज्या ॥ १५१ ॥ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ भगवान प्राणात देवलोके
कया भवथी आव्या ते दर्शाववा सारु श्रीपार्श्वनाथ स्वामिना दशभव लखिये छैये ॥ आ
जबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां पोतनपुर नामक नगरनो अरविंद नामा राजा तेनो विश्वभूति नामे

पुरोहित हतो तेनी अनुद्धरी नामनी स्त्रीना एक कमठ अने बीजो मरुभूति ए बे पुत्र हता पछी अनुक्रमे तेनां माता पिता काल धर्म पाम्यां केडे राजाये कमठने पुरोहित पदवी आपी पण ते कमठ स्वभावे कठोर, लंपटी, दुष्ट मागलक्षणवालो मूर्ख छे तेनी स्त्रीनुं नाम वरुणा छे अने अमरभूति तो सरल स्वभाववालो भद्रकपरिणामी धर्मात्मा श्रावकधर्म पालनारो छे तेनी स्त्री वसुंधरा नामे अत्यंत स्वरूपवाली अने घणी चपल स्वभाववाली छे एक दिवसे ते कमठ मरुभूतिनी स्त्रीने देखी रूपे मोह्यो थको भोग करवाने माटे तेने बे त्रण वार बोलावी तेवारे ते स्त्री पण कमठ उपर राग करवा लागी एक दिवसे कमठे प्रधान वस्त्राभूषण आपीने वसुंधराने पोताने वश करी मांहोमांहे प्रीति बांधी भोग कर्म करवा मांड्यो ते वात कमठनी स्त्री वरुणाना जाणवामां आवी तेवारे पोताना भरतारने कहेवा लागी जे हे भरतार! आ अकृत तमे करोछो ते सारुं देखातुं नथी जो देवरना जाणवामां आवशे तो लोकोमां निंदा थाशे एवो पोतानी स्त्रीयें कहेलो उपदेश कमठे मान्यो नही तेने लीधे ते वरुणा नाराजी थइ थकी कमठना अनाचारनी वात मरुभूतिने कही तेवारे मरुभूतिये जाण्युं जे पोतानी नजरे दीठा विना एकाएक स्त्रीयोनी वात मानवी नही एम विचारी एकदिवसें कपटथी कोइक गामे जवानो मिष करीने बाहेर गयो वली कापडीनो वेश करी पाछो मरुभूतिने घेर एटले पोताने घेर आवी रह्यो ते रात्रीयें तेणे दुराचारी कमठ अने पोतानी स्त्री बेहुने क्रीडा करतां दीठां तेवारे क्रोधकरीने प्रभातें कमठना दुराचारनी वार्त्ता अरविंद राजा आगल आवीने कही राजाये कमठने पकडी चोरनी पेरे भूंडे हाले करी रासभ उपर चडावी नगरमां फेरवी विटंबना करी शहेरनी बाहेर काढाडी मूक्यो अने मरुभूतिने पुरो

हित कर्यो पछी कमठ दुःखी थयो थको कोइ तापसनी पासेथी दीक्षा लइ बारवर्ष पर्यंत तपस्या करतो पृथ्वीमां भमतो भमतो फरी पाछो पोतनपुरनी बाहेर एक पर्वतनी उपर आवी तपश्या करवा लाग्यो पण गाममां न आवे गामना सर्वलोक तेने तपशी देखी भो जनादिक आपे प्रशंसा करे तेवात मरुभूतिये सांभलीने विचार्युजे ए म्हारो म्होटो भाइ छे मे एने दुःख दीधुछे तेथी तापस थयो छे माटे हु पण जइने म्हारो अपराध खमावी आवु एम चिंतवी घणा भोजनादिक रंधावी साथे लइ कमठने खमाववा गयो तिहां जइ तेने पगे लागी पोतानो अपराध खमावी पाछो वले छे एटलामां कमठे मरुभूतिने उलखी पोतानो वैर सं भारी तेना मस्तक उपर एक म्होटी शिला नाखी तेथी मरुभूति मरण पाम्यो ए पहेलो भव कह्यो ॥ १ ॥ ॥ हवे ते मरुभूतिनो जीव आर्त्तध्यानथी मरण पामीने बीजे भवे विंध्याच लनी अटवीमा सुजातिक नामा हाथी थयो अने कमठनो जीव पण दुष्टकर्मना जोरथी ते पर्वत उपरथी उतरता नीचे त्रूटी पड्यो तेथी मरण पामीने तेहज विंध्याचलनी भूमिमां प खीनी पेरे उडतो चाले एवो कूर्कट नामे सर्प्प थयो हवे एकदा अरविंद राजाये संध्या सम यने विषे पंचवर्णा वादलां दीठा तेथी वैराग्य पामी दीक्षा लेइ अगीआर अंग भणी उग्रतप करता थका एकाकी विचरवा लाग्या एकदा सागरचंद्र नामा सार्थवाहना संघनी साथे अष्टा पद समेतशिखरनी यात्रायें गया तिहां विंध्याचल वनमा एक सरोवर देखी संघे तेस्थानके उ तारो कर्यो एवामां मरुभूतिनो जीव जे हाथी थयो छे ते पोतानी हाथणीयोना परिवार स हित तिहां सरोवरने विषे जल पीवा सारु आव्यो तेणे क्रोधे करी सर्व संघने उपद्रव कर्यो तेथी सर्व संघवाराना लोक नासी गया पछी साधु काउस्सग्गमा ऊभा हता तेने ते हाथी मा

रवा आव्यो तेवारे मुनिना तपप्रन्नावथी तिहां थंनाइ गयो ते अलगो उन्नो थको मुनिने जो
वालागो मुनिने जोतां थकां हाथीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारे पूर्वला न्नव देखी साधुने
उलख्या पछी शूंढ लांबी करी साधुने पगे लागो मुनिये पण न्नव्यजीव जाणीने तेने प्रतिबोध
आप्यो तेथी ते हाथी समकेत पाम्यो ते जोइने बीजा पण घणा लोक तिहां प्रतिबोध पाम्या
पछी हाथीये श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो श्रावकना बार व्रतनी अन्निलाषा धरतो थको सा
धुने नमस्कार करी सरोवरमांथी पाणी पीइने पोताने स्थानकें गयो साधुजी पण तिहांथी
विहार करी सथवारानी पाछल चाली यात्राये गया चारित्र पालीने शुन्नगति पाम्या हवे मरु
न्नूतिनो जीव हाथी ते एक दिवस उनालाना दिवसोमां मध्यान्ह समये तृषाये पीडायो थको
तलाव उपर पाणी पीवाने आव्यो तिहां कादवमां खूची रह्यो ते वखत पेहेलो कूर्कट सर्प
पण तृषाये पीडायो थको उडतो उडतो तिहां आव्यो तेणे पाणी पीइने पछी हाथीने दीठो
तेवारे आगला न्नव ना वैरनेलीधे हाथीनी उपर चढीने तेना मस्तकमां डंक मार्यो तेथी
तेज वखत हाथीने जेर व्यापी गयु तिहां श्रावकधर्म पालवाना योगे शुन्नध्याने मरण
पाम्यो ए बीजो न्नव ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजे न्नवे ते हाथी त्यांथी मरण पामीने आठमे
देवलोके देवता थयो अने हाथी पडतां सर्प पण चपाइने मरण पाम्यो ते हाथीनी घातना
पातकथी पांचमी नरके जई नारकी पणे उपन्यो ए त्रीजो न्नव ॥ ३ ॥ ॥ चोथे न्नवे
मरुन्नूतिनो जीव आठमा देवलोकथी चवीने जबूद्वीपना पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां सुकछ नामा
विजयना वैताढ्य पर्वतनी दक्षिणश्रेणिमां तिलवती नामा नगरीने विषे विद्युतगतिराजानी
कनकवती नामा स्त्रीनी कूखें पुत्र पणे उपन्यो तेनु करणवेग एवुं नाम मातपिताये दीधुं अ

नुक्रमें युवावस्थाये सुरुपा नामा स्त्री परण्यो, राज्यने पण पाम्यो एकदिवसे सुरुपा राणी साथे सुख नोगवता गोखमां बेठा थका सध्या फूली देखी वैराग्य पामी दीक्षा लीधी पछी वैताढ्य ना हेमशैल उपर काउस्सग्गमा कना रह्या ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमी नरकथी नीकलीने ते पर्वत उपर सर्प थयो छे तेणे साधुने करड्यो तेथी साधुये काल कीधो ए चोथो नव ॥४॥ ॥ पाचमे नवे साधु बारमे देवलोके देवता थया अने सर्प मरण पामीने पांचमी नरके गयो ए पाचमो नव ॥५॥ ॥ छठे नवे मरुनूतिनो जीव बारमां देवलोकथी चवीने आ जबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे गधीलावती विजयमां शुनकरा नगरीनो वज्रवीर्य नामे राजा तेनी लक्ष्मीवती नामे राणीनी कूखे पुत्र पणे आवी उपन्यो मात पिताये तेनु वज्रनान एवु नाम दीधु अनुक्रमे तेना पिताये तेने राजपाटे बेसाड्यो ते यौवनवयमां राज पालतो थको संसारिक सुख नोगवे छे एक दिवसे शुनकरा नगरीना उद्यानमां श्रीक्षेमकर नामा तीर्थंकर आवी समोसर्या तेमने वज्रनान राजा वांदवा गयो तिहां तीर्थंकरनी देशना सांनली संसार अनित्य जाणी तीर्थंकर पासेथी दीक्षा लइ अगीआरे अग नण्या जघाचारणनी लब्धीना बले करी सुकछविजय माहे निज्वलन पर्वत उपर काउस्सग रह्या ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमा नरकथी नीकलीने वली वचमां ससारने विषे बीजा पण घणां नवन्रमण करी ते पर्वतमां कुरग नामा निह्न थयो छे ते निह्न पोताना स्थानकथी बाहेर आहेडो करवा निकल्यो छे तेवारे वज्रनान साधुने देखी आगला नवना वैरने लीधे साधुने देखतांज अपशुकन थयु जाणी क्रोध उपन्यो माटे साधुने सामुं एक बाण मार्यु ते मर्मस्थानके लाग्यु तेथी साधु शुनध्यान ध्यावता मरण पाम्या ए छठो नव ॥ ६ ॥ ॥ सातमे नवे साधु शुनध्याने मरण

पामीने मध्यम ग्रैवेयके देवता पणे उपन्यो अने निल्ल मरण पामी साधुनी घातना पापथी सातमे नरकें गयो ए सातमो नव ॥ ७ ॥ ॥ आठमे नवें मरुनूतिनो जीव मध्यम ग्रैवेय कथी चवीने आ जंबूद्दीपना पूर्व महाविदेहमां शुनंकर विजयने विषे पुराणपुर नामे नगर तिहां कुशलबाहु नामे वासुदेवनी सुदर्शना नामे राणीनी कूखनेविषे पुत्रपणे आवी उपन्यो माताये चौदसुपनां दीठा पठी पुत्रजन्म थयो त्यारे माता पिताये सुवर्णबाहु एवु नाम आप्यु हवे चौद सुपन देखवाना प्रनावथी ते सुवर्णबाहु चक्रवर्त्तिनी पदवी पाम्यो, ठ खम साधी चक्रवर्त्तिनी पदवी नोगवी, वृद्धावस्थामां तीर्थंकरनी देशना सांनली दीक्षा लइ वीश स्थानकनुं तप आराधन करी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं हवे ते साधु एक दिवसे उजाडमां काउ स्सग्ग ध्याने रह्या ठे एवामां ते निल्लनो जीव सातमा नरकथी मध्यम आउखुं पूरण करीने तिहांथी मरण पामी ते उजाडमां क्षीर गुफाये सिंह पणे आवी उपन्यो ठे तेणे तिहां सुवर्ण बाहु मुनिने दीठो तेवारे पूर्वनवना वैरथी सिंहने क्रोध उपन्यो तेथी साधुने विदारी नाख्यो ए आठमो नव ॥८॥ ॥ नवमे नवे साधु शुनध्याने मरण पामी दशमा प्राणात देवलोके देवता पणे जइ उपन्या अने सिंह मरण पामीने चोथे नरके गयो ए नवमो नव ॥९॥ ॥ हवे दशमा नवने विषे मरुनूतिनो जीव दशमा देवलोकथी चवीने श्रीवामादेवीनी कूखें आवी उपन्यो अने कमठनो जीव चोथा नरकथी मरण पामीने एक दारिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रपणे आवी उपन्यो तेनां मा बाप बालपणामांज मरण पाम्यां पाठलथी दुःखी थयो थको लोके तेना उपर दया आणीने महोटो कीधो अनुक्रमे यौवनावस्था पाम्यो तेवारे निर्धनपणा माटे स्त्री मली नही तेथी अमर्ष धरी पेट नरवा सारुं अज्ञान तपश्या आदरी तापसनी पठवाडे लागी पंचाग्नि

साधवा लाग्यो तेथी ते तापस अग्नितापणे कमठनामे विख्यात थयो इति पार्श्वनाथ दश नव अधिकार समाप्त ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत, पुरुषमा प्रधान, त्रण ज्ञाने करी सहित माता नी कूखमां आव्या इहां चौदसुपन माताये दीठा तथा सुपनपाठक बोलाव्या यावत् गर्भनी प्रतिपालना करी इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीर स्वामिनी पेरे जाणी लेवो ॥ १५२ ॥ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे पार्श्वनाथ स्वामी शीयालानो वीजो महिनो त्रीजुं पखवाडियु पोषवदि दशमीने दिवसे नव महीनाने साडासात दिवस गर्भमां गया थका मध्यरात्रिमां विशाखा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके वामाराणीनी कूखे रोगरहित पुत्रपणे जन्म्या ॥ १५३ ॥ ॥ जे रात्रिमा श्रीपार्श्वनाथ जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता आव्या ॥ १५४ ॥ ॥ यावत् चोसठ इंद्र जन्ममहोत्सव प्रमुख करवा आव्या तथा दिग्कुमारिकादि आवी ते सर्व श्रीमहावीर स्वामिनी पेरे श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनु नाम लइ लइने इहां पण कहेवु पछी अश्वसेन राजा जन्ममहोत्सव करीने कहेता हवा के महारी वामाराणीनी कूखे जेवारे ए पुत्र आव्यो तेवारे वामाराणीये शय्यामां पोतानी पासेथी निकलतो कालो सर्प दीठो तेथी अमारा आ पुत्रनु नाम पार्श्व होजो एम कही श्रीपार्श्व एवु नाम दीधु ॥ १५५ ॥ ॥ पांच धावे पालन कराता, बीजना चंद्रमानी पेरे वृद्धि पामता, माता पितादिकने आनंद उपजावता थका अनुक्रमे युवान अवस्था पाम्या तेवारे कुशस्थल नगरना प्रसेनजीत नामे राजाने म्लेच्छ लोकोये रोक्यो तेनो सहाय करवा माटे अश्वसेन राजा जावा लाग्यो ते वखत पिताने व र्जीने पार्श्वकुमर तिहां जवाने तैयार थया ते जोइ इंद्रमहाराजे पोतानो रथ सारथी सहित मूक्यो ते उपर चडीने आकाश मार्गे थइ तिहां उतर्या तेने जोइ सर्व म्लेच्छ लोको नाशी



श्री पार्श्वनाथन रथ

…ग्यो तेथी ते तापस अग्नितापणे कमठनामे विख्यात थयो इति पार्श्वनाथ दश नव
…अरिहत, पुरुषमां प्रधान, त्रण ज्ञाने करी सहित माता
… यावत गर्जनी

जीत राजाये सन्मान दीधु तिहां नीळवणे ठवां, नवहा
। अने एक हजार आठ लक्षणधारक, अत्यंत रूपवान, महा
प्यमान तेजस्वी एवा श्रीपार्श्वकुमरने देखीने प्रसेनजीत राजानी पुत्री
नावती नामे हती ते बोली जे हे पिताजी ! मुजने पार्श्वकुमर साथे परणावो पछी नगवा
नने परणवानी इछा हती नही तो पण राजाये घणो आग्रह करीने पोतानी पुत्री परणावी
ते परणीने पाछा घेर आव्या प्रनावती राणी साथे सुख नोगवे छे एवामां एक दिवसे वा
राणसी नगरीने बाहेर पेलो कमठ नामा तापस आव्यो तिहां घणा लोको हाथमां पूजापो
लइने पंचाग्नि तापतो देखी तापस पासे जाता हता तेने प्रजुये गोखमां बेठा थकां दीठा
तेवारे पार्श्वकुमर बोल्या के आ लोको सर्व क्यां जाय छे तेवारे हजुरीउ चाकर पासे ननो
हतो ते बोल्यो हे महाराज ! एक दरिद्री ब्राह्मण हतो तेना मा बाप न्हानापणमां मरी गयां
तेथी तापस थइ कमठ नाम धारण करीने फरतोफरे छे ते इहां आव्यो छे तेने आ सर्व लोको पूज
वाने जाय छे ते सांनली नगवान पण तिहां आव्या त्यां काष्टमां बलता सर्पने अवधि ज्ञानथी
देखी करीने नगवान बोल्या अरे मूढ तपस्वी ! आ तुं दयाविना शुं वृथा कष्ट करे छे, आ
ताहारो श्रम ते दयाविना सर्व मिथ्या छे तेवारे क्रोध करीने कमठ तापस बोल्यो अरे राजा
उना पुत्रोने तप जप करवानी शी परीक्षा होय तमे तो हाथी घोडाउनी परीक्षा करो तपनी
वातनो अमेज योगी पुरुषो समजीये छैये ए वातमां तमे शुं समजो ? एवु कमठनुं बोलवु सां
नली नगवाने ते अग्निकुंममांथी एक बलतु लाकडुं बाहेर कहाडी तेने कोहाडाथी फाड्युं
तेमांथी तापे करी व्याकुल थयेलो सर्प नीकल्यो ते सर्प नगवानना मुखने देखीने श्रद्धापूर्वक


चित्र ५४
बीजा यागियो
कमठ तापस
पार्श्वनाथ

गया जगवान तिहां गया तेने प्रसेनजीत राजाये सन्मान दीधु तिहां नीलवर्ण ठवी, नवहाथनु शरीर, युवान अवस्था अने एक हजार आठ लक्षणधारक, अत्यंत रूपवान, महाकांतिवंत सुंदर देदीप्यमान तेजस्वी एवा श्रीपार्श्वकुमरने देखीने प्रसेनजीत राजानी पुत्री प्रजावती नामे हती ते बोली जे हे पिताजी! मुजनें पार्श्वकुमर साथे परणावो पठी जगवानने परणवानी इच्छा हती नही तो पण राजायें घणो आग्रह करीने पोतानी पुत्री परणावी ते परणीने पाठा घेर आव्या प्रजावती राणी साथे सुख जोगवे ठे एवामां एक दिवसे वाराणसी नगरीने बाहेर पेलो कमठ नामा तापस आव्यो तिहां घणा लोको हाथमां पूजापो लइने पंचाग्नि तापतो देखी तापस पासे जाता हता तेने प्रजुये गोखमां बेठा थकां दीठा तेवारे पार्श्वकुमर बोल्या के आ लोको सर्व क्यां जाय ठे तेवारे हजुरीउ चाकर पासे उज्जो हतो ते बोल्यो हे महाराज! एक दरिद्री ब्राह्मण हतो तेना मा बाप न्हानापणमां मरी गयां तेथी तापस थइ कमठ नाम धारण करीने फरतोफरे ठे ते इहां आव्यो ठे तेने आ सर्व लोको पूजवाने जाय ठे ते सांजली जगवान पण तिहां आव्या त्यां काष्टमां बलता सर्पने अवधि ज्ञानथी देखी करीने जगवान बोल्या अरे मूढ तपस्वी! आ तुं दयाविना शुं वृथा कष्ट करे ठे, आ ताहारो श्रम ते दयाविना सर्व मिथ्या ठे तेवारे क्रोध करीने कमठ तापस बोल्यो अरे राजाउना पुत्रोने तप जप करवानी शी परीक्षा होय तमे तो हाथी घोडाउनी परीक्षा करो तपनी वाततो अमेज योगी पुरुषो समजीयें ठैये ए वातमां तमे शुं समजो? एवुं कमठनुं बोलवु सांजली जगवाने ते अग्निकुंडमांथी एक बलतुं लाकडुं बाहेर काहाडी तेने कोहाडाथी फाड्यु तेमांथी तापे करी व्याकुल थयेलो सर्प नीकल्यो ते सर्प जगवानना मुखने देखीने श्रद्धापूर्वक

जगवानना मुखथी नवकार पच्चरकाण सांजलीने तत्काल मरण पामी धरणेन्द्र नागराजा थयो "घणी प्रतोमां तो अग्निकुम्डमाथी बलतु लाकडु जगवाने सेवकने हाथे बाहार काढावी कुहाडो मगावी फोडाव्यु अने बलता सर्पने जे नवकार सन्जलाव्यो छे ते पण सेवकना मुखथी सन्जलाव्यो छे एम स्पष्ट लखेलु छे " पछी तिहा एकठा थयेला लोको कमठने कहेवा लागा के अरे ए अज्ञानी अधर्म करे छे जीवोने हणे छे एवो पोतानो अवर्णवाद सांजलीने कमठ लज्जा पाम्यो, जगवान घरे आव्या पछी कमठ तिहाथी मानभ्रष्ट थइ वली अन्य स्थानके जइ घणा हठथी घणा कालपर्यंत विशेष पणे अज्ञान तपश्या करी मरण पामीने जवनपतिमांहे मेघमाली नामा देवता थयो ॥ ॥ हवे एकदा वसतरुतुमा जगवान पोतानी राणी साथे वनक्रीडा करवा गया तिहा एक सुंदर प्रासाद जोइ तेमां जइ बेठा ते प्रासादमां नेमीश्वर जगवाननी जान संबंधी राजीमतीने त्यागी दीक्षा लीधी तेनु चित्र चित्रेलु जोइने वैराग पाम्या हवे जगवान श्रीपार्श्वनाथ अरिहत दक्ष, चतुर, जली प्रतिज्ञा वाला, रूपवान गुणवान, जद्रक, विनयवान, त्रीश वर्ष लगण गृहस्थावासे रह्या पछी लोकांतिक देव आवीने तेमने इष्टकारी वाणीये करी कहेता हवा ॥ १५६ ॥ ॥ जयजय होवो हे समृद्धिमान्' यावत् हे कल्याणवान्' एवु कहीने जयजय शब्द करे ॥ १५७ ॥ ॥ पहेला पण श्रीपार्श्वनाथजी मनुष्ययोग्य गृहस्थ धर्ममां पण अवधिज्ञाने करी सहित छे तेणे करी जाण्यु जे महारे हवे दीक्षा लेवानो अवसर आव्यो एवु जाणीने सवत्सरी दान प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी पेरे आपीने शीआलानो बीजो महीनो, त्रीजु परखवाडियुं, पोषवदि अगीआरसने दिवसे बपोर पहेला विशाला नामा पालखीमां बेठा, देव मनुष्ये ते पालखी उपाडी ए सर्व दीक्षा महोत्सव श्रीमहावीरजीनी

नगवानना मुखथी नवकार पच्चरकाण सांनलीने तत्काल मरण पामी धरणेंद्र नागराजा थयो "घणी प्रतोमां तो अग्निकुम्भमाथी बलतु लाकडु नगवाने सेवकने हाथे बाहार काहाडावी कुहाडो मगावी फोडाव्युं अने बलता सर्पने जे नवकार सनलाव्यो बे ते पण सेवकना मुखथी सनलाव्यो बे एम स्पष्ट लखेलु बे" पबी तिहां एकवा थयेला लोको कमठने कहेवा लागा के अरे ए अज्ञानी अधर्म करे बे जीवोने हणे बे एवो पोतानो अवर्णवाद सांनलीने कमठ लज्जा पाम्यो, नगवान घरे आव्या पबी कमठ तिहांथी मानभ्रष्ट थइ वली अन्य स्थानकें जइ घणा हवथी घणा कालपर्यंत विशेष पणे अज्ञान तपश्या करी मरण पामीने नवनपतिमांहे मेघमाली नामा देवता थयो ॥ ॥ हवे एकदा वसंतरुतुमां नगवान पोतानी राणी साथे वनक्रीडा करवा गया तिहां एक सुंदर प्रासाद जोइ तेमां जइ बेठा ते प्रासादमा नेमीश्वर नगवाननी जान सबधी राजीमतीने त्याग

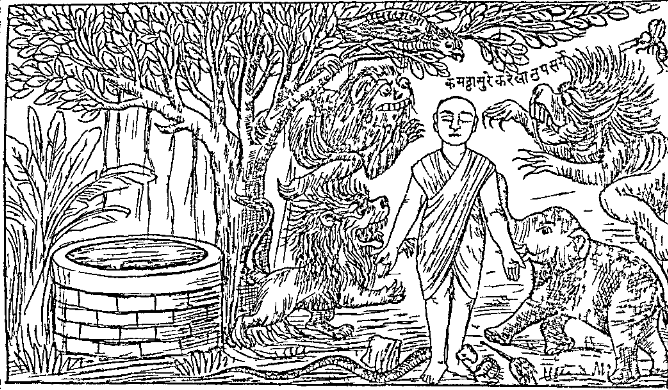
पेरे आदी पण समजवो परतु एटलुं विशेष जे वाराणसी नगरीमांथी थइनें जिहां आश्रम पद नामा उद्यान छे जिहां अशोकवृक्ष छे तिहां आवीने पालखीथी उतरीने अशोकवृक्षनी नीचे पोताना हाथथी घरेणा प्रमुख सर्व उतारीने पोताना हाथथी पंचमुष्टी लोच करे लोच करीने अठम तप पाणीरहित करीने विशाखा नक्षत्रे चंद्रयोग आवे थके एक देवडुष्य वस्त्र लेइने त्रणसें पुरुषोनी सार्थे दीक्षा लीधी, अणगार थया ॥ १५७ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत त्र्याशी दिवस पर्यंत नित्य कायाने वोसरावीने जेकोइ देवना मनुष्यना अने तिर्यंचना करेला उपसर्ग होय ते सर्व सहन करे ॥ १५९ ॥ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथजीये अठम तपनुं पारणुं कोपट सन्निवेशमां धन्नाने घेर परमान्ने करी कर्युं तिहां पांच दिव्य प्रगट थया साडी वारक्रोड सौनैया वर्ष्या ॥ ॥ एकदिवस भगवान् विचरता थका कादंवरी अटवीमां गया, तिहां कलिगिरि पर्वतनी नीचे कुंडनामा सरोवरनी पासे काउस्सग्गमां रह्या ते स्थानके महीधरनामा हाथी पाणी पीवा आव्यो ते भगवानने देखीने जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेणेकरी पोतानो पूर्वलो भव दीठो जे आगला भवमां हु हेमलनामा वामनो कुलपुत्र हतो महारां स्वजन कुटुंब महारा उपर हसतां हतां तेथी मने चिंतातुर देखीने महारो सुप्रतिष्ट नामा मित्र मने गुरु पासे लइ गयो तेनी पासेथी मे श्रावकधर्म लीधो पण अंत अवस्थामां महारी वामणी न्हानी कायाने निंदतो थको मरण समये महोटी काया पामवानुं में नियाणुं कर्युं तेना योगथी हुं महोटी काया वालो हाथी थयोछु एवु जाणी ते हाथीये भगवानने कमले करी पूज्या ए हाथीनी वात सांभली चंपानगरीनो वासी करकंडू राजा तिहां आव्यो ते टलामां भगवान विहार करी गया जेथी राजा घणो दुःख करवा लागो तेवारे इंद्रे आवीने

चित्र ५५



पेरे आही पण समजवो परतु एटलु विशेष जे वाराणसी नगरीमांथी थइने जिहां आश्रम पद नामा उद्यान छे जिहां अशोकवृक्ष छे तिहां आवीने पालखीथी उतरीने अशोकवृक्षनी नीचें पोताना हाथथी घरेणा प्रमुख सर्व उतारीने पोताना हाथथी पंचमुष्टी लोच करे लोच करीने अठम तप पाणीरहित करीने विशाखा नक्षत्रे चंद्रयोग आवे थके एक देवडुष्य वस्त्र लेइने त्रणसे पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, अणगार थया ॥ १५७ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत च्याशी दिवस पर्यंत नित्य कायाने वोसरावीने जेकोइ देवना मनुष्यना अने तिर्यंचना करेला उपसर्ग होय ते सर्व सहन करे ॥ १५९ ॥ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथजीयें अठम तपनुं पारणुं कोपट सन्निवेशमां धन्नाने घेर परमान्ने करी कर्युं तिहां पांच दिव्य प्रगट थया साडी बारक्रोड सौनैया वर्ष्या ॥ ॥ एकदिवस भगवान् विचरता थका कादंबरी अटवीमां गया, तिहां कलिगिरि पर्वतनी नीचे कुंडनामा सरोवरनी पासे काउस्सग्गमां रह्या ते स्थानके महीधरनामा हाथी पाणी पीवा आव्यो ते भगवानने देखीने जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेणेकरी पोतानो पूर्वलो भव दीठो जे आगला भवमां हु हेमलनामा वामनो कुलपुत्र हतो म्हारां स्वजन कुटुंब म्हारा उपर हसतां हतां तेथी मने चितातुर देखीने म्हारो सुप्रतिष्ट नामा मित्र मने गुरु पासें लइ गयो तेनी पासेथी मे श्रावकधर्म लीधो पण अंत अवस्थामां म्हारी वामणी न्हानी कायाने निंदतो थको मरण समये म्होटी काया पामवानुं मे नियाणुं कर्युं तेना योगथी हुं म्होटी काया वालो हाथी थयोछुं एवुं जाणी ते हाथीये भगवानने कमले करी पूज्या ए हाथीनी वात सांभली चंपानगरीनो वासी करकंडू राजा तिहां आव्यो ते टलामां भगवान विहार करी गया जेथी राजा घणो दुःख करवा लागो तेवारे इंद्रे आवीने

तिहां नव हाथनी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनी प्रतिमा प्रगट करी पछी राजाये तेनी पूजा करीने तिहा मदिर कराव्यु ते स्थानके कलिकुण्ड नामे तीर्थ थयु, हाथी मरण पामीने व्यंतर देवता थयो ते चैत्यनो अधिष्ठायिक थइ रह्यो॥ ॥ एकदा समये राजपुरनो ईश्वर नामा राजा ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामीने काउसग्गमां उन्ना देखी जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेणे करी पोतानो पूर्वलो नव दीठो तेथी मूर्छा आवी गइ पछी ज्यारे सावधान थया त्यारे तेने मंत्रीये पुछ्यु स्वामी तमे मूर्छा केम पाम्या ? तेवारे राजा बोल्यो मे म्हारो पूर्वलो नव दीठो जे हु वसतपुर नगरमा एक कोढीयो ब्राह्मण हतो ते रोगना दुःखने लीधे गगानदीमां पडीने मरवा तैयार थयो हतो एटलामा एक चारण मुनिये आवीने मुजने प्रतिवोध दीधो पछी समकेत वासनाथी हु नित्य चैत्यना दर्शन करवा जाउ तिहां मुजने पुष्कल नामा श्रावके दीठो अने कहेवा लागो के अरे आ कोढीयो मदिरमा केम जाय छे ! पछी ते श्रावके मुनिने पूछ्यु महाराज ! ए कोढीउ मदिरमां जाय छे तेनो कांइ दोष छे किवा नथी तेवारे मुनि बोल्या दूरथी नमवामां काइ पण दोष नथी वली हे श्रावक ! ए ब्राह्मण आगामिक नवे राजपुरनगरे ईश्वर नामा राजा थाशे ते श्रीपार्श्वनाथजीने काउस्सग्गे रह्या देखीने जातिस्मरण पामशे माटे हे प्रधान ! ते कोढीयो ब्राह्मण मरीने हु ईश्वर नामे राजा थयो छुं, पछी ते ईश्वर राजाये नक्तिनावथी तिहा चैत्य कराव्यो तेमा श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा थापी तिहां कुकुडेसर नामे तीर्थ थयु॥ एक समये नगवान विहार करता थका कोइ नगर नजीक तापसनो आश्रम हतो तेनी पासे आव्या एटलामां सूर्य अस्त थयो तेवारे नगवान वडवृक्षने नीचे एक कूवानी पासे अडग ध्याने काउस्सग्ग रह्या ते अवसरमा पूर्वनवनो वैरी मेघमाली अ

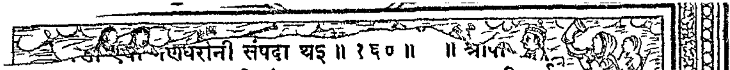

चित्र ५६
कमठासुरे करेलो उपसर्ग

धम देवता अवधिज्ञानने बले भगवानने ऊभा उभा देखी पूर्वभवनुं वैर संभारी अमर्ष पूर्यो थको क्रोधे करी उपसर्ग करवा लाग्यो तेणे प्रथम वेतालनां रूप करी भगवानने बीवराव्या पण भगवान तेनाथी बीह्या नही पछी सिंहनां रूप, वींछीनां रूप, सर्पनां रूप, हाथीनां रूप बीजां पण अनेक जातिनां रूप विकूर्वीने भगवानने करडवा लाग्यो मसलवा लाग्यो तोपण भगवान तेनाथी क्षोभ पाम्या नही चलायमान थया नही तेवारे विशेष क्रोधारुण थइने घणो गर्जारव करी विजली विकूर्वी तेनी साथे कल्पांतकालनो पवन विकूर्वी ते पवने करी धूलने उमावतो थको आकाशने पण छाइ मूक्युं अने धूल साथे मलेला पाणीनी मूसल धाराये वृष्टि करी तथा ब्रह्मांड स्फोट सदृश गर्जारव कर्यो, दशे दिशाये वीजलीना कणीया उत्पन्न करी त्रास पमाडवा लाग्यो तिहां पाणीनुं पूर नदी जेवु वहेवा लाग्युं जोरवालुं पाणी चढ्युं, मेघलीनेविषे आकाश अंधकारमय थइ गयुं ते वखते भगवानने कंठसुधी पाणी ऊंचु आवी लाग्युं तोपण डग्या नही ते समये धरणेंद्रनुं आसन चलायमान थयुं तेवारे अवधिज्ञान प्रयुजी भगवानने उपसर्ग थयो जाणीने पद्मावती प्रमुख अग्रमहीषीयो सहित तिहां आवीने प्रभुने मस्तके फणाटोपे करी छत्र धर्युं अने प्रभुना चरणनी नीचें कमलनी रचना करी ए प्रकारे वरसादना समूहने बंध राखवानो उपाय करी पोते इंद्राणी सहित प्रभु आगल नाटक करवा लाग्यो पण वरसाद पडतो बंध थयो नही तेवारे धरणेंद्रे जाण्युं जे प्रलयकाल तो हमणा छे नही तो आवा प्रकारनो मेघ केम वरसे छे एम विचारी अवधिज्ञाने जोयु तो मेघमाली कृत उपसर्ग जाण्यो तेवारे मेघमालीने ललकार्यो के अरे दुष्ट, पापिष्ट, उल्लंठ, अधम, तें आ शुं अकार्य करवा मांड्युं छे प्रभुये तो ताहारा उपर गुण कर्यो छे ते उलटो


चित्र ५७
धरणीन्द्र
पद्मावती
अग्रमहिषी

धम देवता अवधिज्ञानने बले जगवानने इहा उन्ना देखी पूर्वजवनुं वैर संजारी अमर्ष पूर्यो थको क्रोधे करी उपसर्ग करवा लाग्यो तेणे प्रथम वेतालनां रूप करी जगवानने बीवराव्या पण जगवान तेनाथी मर्या नही पछी सिंहनां रूप, वीछीनां रूप, सर्पनां रूप, हाथीना रूप बीजां पण अनेक जातिना रूप विकूर्वीने जगवानने करडवा लाग्यो मसलवा लाग्यो तोपण जगवान तेनाथी क्षोज पाम्या नही चलायमान थया नही तेवारे विशेष क्रोधारुण थइने घणो गर्जारव करी विजली विकूर्वी तेनी साथे कल्पांतकालनो पवन विकूर्वी ते पवने करी धूलने उमावतो थको आकाशने पण ढाइ मूक्यु अने धूल साथे मलेला पाणीनी मूसल धाराये वृष्टि करी तथा ब्रह्मांड स्फोट सदृश गर्जारव कस्यो, दशे दिशाये वीजलीना कणीया उत्पन्न करी त्रास पमाडवा लाग्यो तिहां पाणीनु पूर नदी जेवु वहेवा लाग्युं जोरवालुं पाणी चढयुं, मेघलीनेविषे आकाश अंधकारमय थइ गयुं ते वखते जगवानने कंठसुधी पाणी उंचु आवी लाग्युं तोपण मग्या नही ते समये धरणेन्द्रनुं आसन चलायमान थयुं तेवारे अवधिज्ञान प्रयुंजी जगवानने उपसर्ग थयो जाणीने पद्मावती प्रमुख अग्रमहीषीयो सहित तिहां आवीने प्रजुने मस्तके फणाटोपे करी छत्र धर्युं अने प्रजुना चरणनी नीचे कमलनी रचना करी ए प्रकारे वरसादना समूहने बंध राखवानो उपाय करी पोते इंद्राणी सहित प्रजु आगल नाटक करवा लाग्यो पण वरसाद पडतो बंध थयो नही तेवारे धरणेन्द्रे जाण्युं जे प्रलयकाल तो हमणा छे नही तो आवा प्रकारनो मेघ केम वरसे छे एम विचारी अवधिज्ञाने जोयुं तो मेघमाली कृत उपसर्ग जाण्यो तेवारे मेघमालीने ललकार्यो के अरे दुष्ट, पापिष्ट, स्वछंद, अधम, तें आ शुं अकार्य करवा मांड्युं छे प्रजुयें तो ताहारा उपर गुण कर्यो छे ते उलटो

तुजने अवगुण थइ परिणम्यो तेथी तु विपरीत थइने एमनी उपर द्वेप करे छे परतु भगवान पोते तो अतुलबलना धणी छे तथापि ते क्षमावत दयालु छे तेतो सहन करशे पण हु ताहारो अपराधसहन करनार नथी अरे मूर्ख ! तुजने रुडो उपदेश पण वैरकारी थइ पड्यो तो हवे तुजने हु ताहारी कमाइ देखाडीश, ते स्वामीनी घणी आशातना कीधी छे पण हवे तु क्यां नाशी जइश एम कही धरणेन्द्रे तेना उपर वज्र मूक्युं तेवारे जेम बाजने देखी सूडो तथा कबुतर भयभ्रांत थाय तेम कमठ भयभ्रात थयो थको पोतानी देवांगना सहित भगवान पासे आवी तेमना चरणनुं शरण ग्रही भगवानने नमस्कार करीने पोतानो अपराध खमाववा लाग्यो अने कहेवा लागों के हवे आजपछी हुं एम नही करीश ते जोइ धरणेन्द्रे कह्यु के तुं महोटाने शरणे आव्यो माटे महारो साधर्मि भाइ समजीने तुने मूकुलु पछी दश भवनुं वेर खमावी प्रभु पासे नाटक करीने कमठ पोताने स्थानके गयो अने धरणेन्द्र पण नाटक करी पोतानी इन्द्राणी सहित स्वस्थानके गयो आहीं धरणेन्द्रे त्रण दिवस पर्यंत भगवानने मस्तके फणनुं छत्र राख्यु तेथी ते नगरी अहिछत्रा एवे नामे करी प्रसिद्ध थइ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ स्वामी अणगार थया, पांच समिति अने त्रण गुप्ति सहित थया यावत् ग्रामानुग्राम विचरता आत्माने भावता थका त्र्याशी दिवस वीत्या अने चोराशीमो रात्रि दिन वर्त्तमान छतां उनालानो पहेलो महीनो, पहेलु पखवाडियु चैत्रवदि चोथने दिवसे, विशाखा नक्षत्रे चन्द्रमानो योग आवे थके, पहेला बे पहोरना काल समयने विषे, धावडी वृक्षनी हेठे पाणीये रहित चउविहारो छठ्ठतप कीधे थके, निर्व्याघात पणे आवरण रहित समग्र परिपूर्ण जलहलता सूर्य सरखुं एवु केवलज्ञान अने केवलदर्शन



...गणधरोनी संपदा थइ ॥ १६० ॥ ॥ श्रीपा...

शोलहजार साधुउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ १६१ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी पुष्पचूला प्रमुख आडत्रीश हजार साधवीउंनी संपदा थइ ॥ १६२ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी सुव्रत आदिदेइ एक लाखने चोसठ हजार श्रावकोनी संपदा थइ ॥ १६३ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी सुनंदा प्रमुख त्रण लाखने सत्तावीश हजार श्राविकाउंनी संपदा थइ ॥ १६४ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी केवली नही पण केवली सरखा एवा साडा त्रणशो चौद पूर्वधारी मुनिउंनी संपदा थइ ॥ १६५ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी चौदशो अवधि ज्ञानिउंनी संपदा थइ, एक हजार केवलीउंनी संपदा थइ, अगीआरसे वैक्रिय लब्धिवतोनी संपदा थइ, छशो ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानीउंनी संपदा थइ, एक हजार साधु मोक्ष गया, बे हजार आर्या मोक्ष गइ, आठशो विपुलमतिनी संपदा थइ, छसे वादीउंनी सपदा थइ, बारसे साधु अनुत्तर विमाने गया एकावतारी थया, ए प्रभुना परिवारनुं प्रमाण जाणवु ॥ १६६ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषादाणीने बे प्रकारनी अंतगड भूमि थइ तेमां एकतो युगंतकृतभूमि ते श्रीपार्श्वनाथना चार पाट पर्यंत मोक्ष मार्ग चाल्यो वह्यो, बीजी पर्याय अंतकृतभूमि ते भगवान केवल ज्ञान पाम्या पछी त्रणवर्षे कोइक मुनि सिद्धि पाम्यो एटले त्रणवर्षे मोक्षमार्ग चाल्यो ॥ १६७ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने

महीना, सातमो पक्ष एटले कार्तिक वदि बारस ... नि
जिहां बत्रीश सागरोपमनुं आयु छे तिहांथी चवीने आ जबूद्वीपना जरतक्षेत्रनेविषे शौ
रीपुर नगरना समुद्रविजय नामा राजानी शिवादेवी नामे जार्या तेनी कूखमां मध्यरात्रिने
विषे चित्रा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते छते गर्जपणे आवी उपन्या तेवारे चौदस्वप्न मा
ताये दीठां इत्यादिक सर्व वर्णन श्रीमहावीर स्वामीनी पेरे इहां पण कहेवु ॥ १७१ ॥ ॥
ते कालने विषे ते समयने विषे श्रीनेमिनाथ अरिहंत वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजुं प
खवाडियुं एटले श्रावणशुदि पंचमीने दिवसें नव महीनाने साडासात दिवस गर्जमां पूरण
थये थके यावत् चित्रा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवेथके पुत्र पणे जन्म्या, इहां जन्म महोत्सव
प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी पेरे श्रीनेमिनाथजीना नामथी कहेवु पछी माता पिताये अ
रिष्टनेमि एवु नाम आप्युं, तेनुं कारण कहे छे जे जगवाननी माता शिवादेवीजीये पन्नरमा स्व
प्नमां अरिष्ट रत्ननुं चक्र दीठुं तेथी अरिष्टनेमि एवुं नाम आप्युं तथा लोकोनां अरिष्ट चूर्यां
मटाड्यां माटे अरिष्टनेमि एवु नाम दीधु हवे जगवानने बालपणामां इंद्राणी आवी रमत
करावे जे वारे प्रजुने जूख लागे तेवारे पोताना अंगूठाने चूशे ते अंगूठामां देवो आवीने अ
मृतनो संचार करे परंतु मातानां स्तन चूशे नही एवा अनुक्रमे प्रजुजी वृद्धि पामता हवा प्र
जुना शरीरनो श्यामवर्ण छे तथापि महा स्वरूपवान छे एकदिवसे श्रीनेमिनाथजी पालणामां
रमत करे छे ते वखते इंद्रमहाराजे पोतानी सजामांहे प्रजुना बल पराक्रमनी प्रशंसा करी ते
वात कोइएक देवता असहहतो थको त्यांआवी जगवानने पालणामांहेथी उपाडीने सवालाख

योजन दूर लइ गयो तेवारे जगवाने आ कोइ देवप्रयोग छे एवु जाणीने कांइक स्वल्प बल देखाड्युं तेथी देवता नीचे आवी पड्यो अने एकसो योजन पर्यंत धरतीमां पेसी गयो तेवारे इन्द्रे आवी अनुकंपा आणीने देवताने छोडाव्यो अने जगवानने पाछा पालणामां मूकी स्त वना करीने इन्द्रमहाराज पोताने स्थानकें गया ॥ ॥ हवे सूत्रकार आगल एवुं कहेशे के श्री नेमं १

दीक्षा लीधी तेवारें सांजलनारने आशंका उपजशे के ज
द्वारिकामां लीधी ए वात केम मले ए संदेहने मटाव
॥ ॥ पूर्वे हरि अने हरिणी ए बे युगलीया थकी हरि
अछेराना अधिकारमा संक्षेपथी लखाइ गइ छे ते
पुत्र वसुराजा थयो तेना वशमां अनुक्रमें यडु
ते यडुनो पुत्र शूरराजा थयो तेना वली एक शौरी
। महोटो पुत्र शौरी छे तेने मथुरानुं राज्य आपीने सुवी
त्रि लीधु, पछी शौरीराजाये पोताना न्हाना जाइ सुवी
शमां जइ पोताने नामे शौरीपुर नामा नवीन नगर
वीर मथुरानु राज्य करे छे हवे शौरीराजाने अधक,
रने जोजकवृष्णि नामा पुत्र थयो ते जोजक वृष्णिने वली
त्र थयो पछी जोजकवृष्णिये उग्रसेनने मथुरानु राज्य आपी पोते
ष्णिने दश पुत्र थया तेनां नाम कहे छे एक समुद्रविजय, बीजो अ
सागर, पांचमो हिमवत, छठो अचल, सातमो धरण, आठमो पू

रण, नवमो अभिचंद्र अने दशमो वसुदेव ए दशे दशार्ह कहेवाय हवे अंधकवृष्णिये पोताना मह्योटा पुत्र समुद्रविजयने शौरीपुरनुं राज्य आप्युं अने एज अंधकवृष्णिनी एक कुंती अने बीजी माद्री ए बे नामे बे पुत्रीउ थइ तेमां कुंती पांडुराजाने परणावी अने माद्री दमघोष राजाने परणावी ॥ ॥ इहां संक्षेपथी पांडवोनी उत्पत्ति कहे छे, प्रथम ऋषभदेवजीनो पुत्र कुरु नामा थयो तेणे कुरुदेश वसाव्यो तेनी पछवाडे तेना पाटें असंख्यात राजा थइगया तेमांथी एक हस्ति राजायें हस्तिनागपुर वसाव्युं तेवार पछी केटलोएक काल वीत्याकेडे सुभूमनामा चक्रवर्त्ति राजा थयो तेवार पछी वली घणा राजा थयाकेडे एक शंतनु नामे राजा थयो तेनी बे स्त्री थइ तेमां एकतो विद्याधरनी पुत्री गंगा हती तेने गांगेय नामे पुत्र थयो तेनुं भीष्मपितामह एवुं बीजुं नाम लोकमां प्रसिद्ध थयुं हतुं अने बीजी राणी सत्यवती नामे हती तेना बे पुत्र थया एकनुं नाम चित्रांगद अने बीजानुं नाम विचित्रवीर्य पछी शंतनु राजा चित्रांगदने राज्य आपीने परलोक प्राप्त थयो हवे ते चित्रांगद एक दिवसे कोइ नीलांगद राजा साथे युद्ध करतां मरण पाम्यो तेवारे विचित्रवीर्य राजा थयो तेनी एक अंबिका, बीजी अंबालिका अने त्रीजी अंबा ए त्रण भार्या हती तेमां अंबिकानो पुत्र धृतराष्ट्र थयो तेनी गांधारी प्रमुख आठ स्त्रीयो हती तेना दुर्योधनादिक सो पुत्र थया अने बीजी अंबालिकाने पांडु नामे पुत्र थयो तेनी एक कुंती नामे स्त्री हती तेने एक युधिष्टिर, बीजो भीम अने त्रीजो अर्जुन ए त्रण पुत्र थया अने वली बीजी माद्री नामे स्त्री हती तेनुं अपर नाम पद्मा एवु हतु तेना एक नकुल अने बीजो सहदेव एवा बे पुत्र थया एम बन्ने स्त्रीयोना मली पांडु राजाना पांच पुत्र थया ते पांच पांडवो कहेवाणा, हवे विचित्रवीर्यनी त्रीजी स्त्री अंबा हती तेने एक विदूर नामे

योजन दूर लइ गयो तेवारे नगवाने आ कोइ देवप्रयोग ढे एवु जाणीने कांइक स्वल्प बल देखाडयु तेथी देवता नीचे आवी पड्यो अने एकसो योजन पर्यंत धरतीमां पेसी गयो तेवारे इन्द्रे आवी अनुकंपा आणीने देवताने ढोडाव्यो अने नगवानने पाढा पालणामां मूकी स्तवना करीने इन्द्रमहाराज पोताने स्थानकें गया ॥ ॥ हवे सूत्रकार आगल एवु कहेशे के श्री नेमीश्वर नगवाने द्वारिका नगरीमां दीक्षा लीधी तेवारें सांनलनारने आशंका उपजशे के जन्मतो शौरीपुरमां थयो अने दीक्षा द्वारिकामां लीधी ए वात केम मले ए संदेहने मटाववाने माटे यादवोनी उत्पत्ति कहे ढे ॥ ॥ पूर्वे हरि अने हरिणी ए बे जुगलीया थकी हरिवंश कुल प्रगट थयुं, ए वात आगल दश अछेराना अधिकारमां संक्षेपथी लखाइ गइ ढे ते पढी ते हरिराजानो पुत्र अश्व थयो अने तेनो पुत्र वसुराजा थयो तेना वंशमां अनुक्रमे यडुराजा थयो तिहांथी यादववंश प्रगट्यो पढी ते यडुनो पुत्र शूरराजा थयो तेना वली एक शौरी अने बीजो सुवीर ए बेपुत्र थया तेमां महोटो पुत्र शौरी ढे तेने मथुरानुं राज्य आपीने सुवीरने युवराज पाटे थापी शूरराजाये चारित्र लीधु, पढी शौरीराजाये पोताना न्हाना नाइ सुवीरने मथुरानुं राज्य आपी पोते कुशावर्त्त देशमां जइ पोताने नामे शौरीपुर नामा नवीन नगर वसावीने तेनु राज्य करवा लाग्यो अने सुवीर मथुरानुं राज्य करे ढे हवे शौरीराजाने अंधकवृष्णि नामे पुत्र थयो अने सुवीरने नोजकवृष्णि नामा पुत्र थयो ते नोजक वृष्णिने वली उग्रसेन नामा पुत्र थयो पढी नोजकवृष्णिये उग्रसेनने मथुरानु राज्य आपी पोते दीक्षा लीधी, हवे अंधकवृष्णिने दश पुत्र थया तेनां नाम कहे ढे एक समुद्रविजय, बीजो अक्षोन, त्रीजो स्तमित, चोथो सागर, पांचमो हिमवंत, ढठो अचल, सातमो धरण, आठमो पू

रण, नवमो अभिचंद अने दशमो वसुदेव ए दशो दशार्ह कहेवाय हवे अंधकवृष्णियें पोताना महोटा पुत्र समुद्रविजयने शौरीपुरनुं राज्य आप्युं अने एज अंधकवृष्णिनी एक कुंती अने बीजी माद्री ए बे नामे बे पुत्रीओ थइ तेमां कुंती पांडुराजाने परणावी अने माद्री दमघोष राजानें परणावी ॥ ॥ इहां संक्षेपथी पांडवोनी उत्पत्ति कहे छे, प्रथम ऋषभदेवजीनो पुत्र कुरु नामा थयो तेणे कुरुदेश वसाव्यो तेनी पछवाडे तेना पाटें असंख्यात राजा थइगया तेमांथी एक हस्ति राजायें हस्तिनागपुर वसाव्युं तेवार पछी केटलोएक काल वीत्याकेडे सुभूमनामा चक्रवर्त्ति राजा थयो तेवार पछी वली घणा राजा थयाकेडे एक शंतनु नामे राजा थयो तेनी बे स्त्री थइ तेमां एकतो विद्याधरनी पुत्री गंगा हती तेने गांगेय नामे पुत्र थयो तेनुं भीष्मपितामह एवु बीजुं नाम लोकमां प्रसिद्ध थयुं हतुं अने बीजी राणी सत्यवती नामे हती तेना बे पुत्र थया एकनुं नाम चित्रांगद अने बीजानुं नाम विचित्रवीर्य पछी शंतनु राजा चित्रांगदने राज्य आपीने परलोक प्राप्त थयो हवे ते चित्रांगद एक दिवसे कोइ नीलांगद राजा सार्थे युद्ध करतां मरण पाम्यो तेवारे विचित्रवीर्य राजा थयो तेनी एक अंबिका, बीजी अंबालिका अने त्रीजी अंबा ए त्रण भार्या हती तेमां अंबिकानो पुत्र धृतराष्ट्र थयो तेनी गांधारी प्रमुख आठ स्त्रीयो हती तेना दुर्योधनादिक सो पुत्र थया अने बीजी अंबालिकाने पांडु नामे पुत्र थयो तेनी एक कुंती नामे स्त्री हती तेने एक युधिष्ठिर, बीजो भीम अने त्रीजो अर्जुन ए त्रण पुत्र थया अने वली बीजी माद्री नामे स्त्री हती तेनुं अपर नाम पद्मा एवु हतुं तेना एक नकुल अने बीजो सहदेव एवा बे पुत्र थया एम बन्ने स्त्रीयोना मली पांडु राजाना पांच पुत्र थया ते पांच पांडवो कहेवाणा, हवे विचित्रवीर्यनी त्रीजी स्त्री अंबा हती तेने एक विदूर नामे

पुत्र थयो एरीतें पांमवोनो सबंध सद्क्षेपथी कह्यो ॥ ॥ हवे अधकवृष्णिनी बीजी पुत्रीजे दमघोष राजाने परणावी हती तेनो शिशुपालनामा पुत्र थयो तेने श्रीकृष्णे मार्यो ठे एवीरीते व्यवस्था कह्यापछी अधकवृष्णिये दीक्षा लीधी, हवे मथुरानु राज्य उग्रसेन राजा चलावे ठे तेनी धारणी नामे राणी ठे अने शौरीपुरनु राज्य समुद्रविजयराजा चलावे ठे तेनी शिवादेवी नामे नार्या ठे ते शिवादेवीने नेमिकुमार पुत्र थयो बीजा पण सर्व भाइउ एकठा भेला रहे ठे हवे मथुरामा उग्रसेनराजा सुखे राज पाले ठे एक दिवसे ते नगरीनी बाहेर वनमां एक मासी उपवासनो करनारो एवो एक तापस आव्यो तेनो एवो नियम ठे के महीनानी अंदर कोइ आवीने कहे के महारे घेर पारणुं करजो तो तेने घेर पारणुं करे पण बीजाने घेर पारणु करे नही अने जो नोतरु आपनार धणी भूली जाय अने तापसने पारणुं करावबा माटे तेडवा सारु नही आवे तो वली बीजा एक मासनुं पच्चरकाण करी लीये एवो ते तापस मासिक उपवास करीने वनमा बेठो ठे तिहां उग्रसेन राजा रमवा गयो अने वनमा तापसने देखी राजाये पोताने घेर पारणुं करवानी वीनति करी पारणु करवु कबुल करावीने पोताने घेर आव्यो परतु जे दिवसे पारणु करावबानु हतु ते दिवसे विस्मृतिमा तापसने बोलाववा माणस मोकल्यु नही तापसे पण साज सुधी वाट जोइ कोइ बोलाववा नही आव्यो तेवारे वली बीजा महीनानी तपस्यानो नियम करी लीधो तेवारपछी वली केटलेक दिवसे राजाने ते तापस याद आव्यो के अरे मे आ केवु अकार्य कर्युं जे तापसने नोतरीने जमवा तेड्यो नही एम चितवी फरी पण तापसने जमवानु आमन्त्रण करी आव्यो परतु बीजी वार पण पारणाने दिवसे जमवा सारु तेडवाने भूली गयो एवीज रीते वली त्रीजे महीने पण नोतरु

आपीने जमाडवाने वखतें तेडवानुं चूकी गयो तेथी तापसें राजा उपर क्रोध करीने विचार्युं जे आ दुष्ट राजा मने नोतरु आपी जाय छे ने जमाडतो नथी माटे जो म्हारा तपनो प्रभाव होयतो हु एने भवांतरमां दुःख देवावालो थाउ एवु नियाणुं करी तिहांथी मरण पामीने उग्रसेन राजानी भार्या धारणीनी कूखमां आवी उपन्यो तेना प्रभावथी राणीने त्रीजे महीने राजानु कालजुं खावानो डोहोलो उपन्यो तेथी शरीरे दुर्बल थइ तेने घणुं घणुं राजाये पूछ्यु तेवारें डोहोला संबधि जेवी वात हती तेवी राजा आगल कही, पछी राजाये प्रधाननी अकलथी ते डोहोलो पूरण कर्यो राणीये गर्भ पाडवाना घणा उपाय कर्या पण गर्भ पड्यो नही छेवट नव महीना पूरण थये पुत्र जन्म्यो ते जन्मतांज राणीये तेंने कांसानी पेटीमां नाखीने मांहे नामांकित मुद्रिका मूकीने ते पेटी यमुना नदीमां वहेवरावी दीधी ते कांसानी पेटी तरती तरती मथुरांथी शौरीपुर आवी एवामां घृत अने तेलनो वेचनार सुभद्र नामे वाणीयो ते यमुना नदीमां स्नान करवा आव्यो तेणे ते पेटी नदीमांथी बाहेर काहाडी लइने उघाडी जोइ तो तेमां बालक दीठो तेवारे ते वाणीयो मुद्रिकासहित ते बालकने छानो मानो पोताने घेर लइ आवीने पोतानी स्त्रीने पुत्र सोंप्यो अने लोकोने कहेवा लाग्यो के म्हारी स्त्रीने गूढगर्भ पुत्र थयो तेनुं नाम कंस आप्युं अनुक्रमे ते बालक महोटो थयो तेवारे मस्ति करे लोकोना छोकराउने मार आपे तेथी लोक आवीने सुभद्रने नित्य उलंभा आपे तेवारे वाणिये विचार्युं जे हुंतो सामान्य माणस छुं अने आतो राजपुत्र छे माटे म्हारे घेर ए केवीरीतें रही शके एवु जाणी वाणीयाये ते छोकरो वसुदेव कुमरने जइ सोंप्यो अने कंस पण वसुदेवजीनो चाकर थइ रह्यो तेमज वसुदेवजी पण कंस उपर घणी कृपा दृष्टि राखवा

लाग्या एवा अवसरमां वसुराजाना वशमा वृहद्रथ राजा थया तेनो पुत्र जरासंध नामे प्रति
वासुदेव त्रण खंडनो जोक्ता छे ते राजगृही नगरीमा राज्य करे छे अने यादव पण सर्वे ते
नीज आज्ञा पाळे छे ते जरासंध राजाये समुद्रविजयनी उपर दूतनी साथे एक कागळ लखी
मोकल्यो के वैताढ्य पर्वत पासेनो रहेवासी सिंहनामे पल्लिपति ते सिंहपुर नगरनो राजा छे
तेने जीवतो बांधी पकडीने जे महारी पासे लइ आवे तेने हुं महारी जीवयशा नामे पुत्री छे
ते परणावु अने वळी एक नगर जे ते धणी पसंद करे ते नगरनु राज्य पण आपु एवी री
तनो कागळ वांचीने समुद्रविजयजी पोतानी सेना तैयार करी सिंह नामा पल्लिपतिने जी
तवा माटे चडाइ करवाने तैयार थया एटलामां वसुदेव कुमरे आवी समुद्रविजयजीने वर्ज्यो
अने कंसने साथे लइ पोते सैन्य सहित ते राजानी उपर चडी गयो तिहां जइ कंसने आगे
वान करी तेनी साथे युद्ध कर्यु तिहां कंसे सिंहराजाने बांधी लावीने वसुदेवजीने स्वाधीन
कर्यो पाछळथी समुद्रविजयजीये कोष्टक निमित्तियाने पूछ्युं जे वसुदेवजी अने जीवयशानु
जोडु मळतु छे के नथी? तेवारे निमित्तिये कह्यु के ए जीवयशा जे छे ते परण्या पछी श्वसुरना
कुळनो अने पोताना पिताना कुळनो एरीते बेहु कुळनो क्षय करनारी छे माटे तमे विचा
रीने काम करजो महारा वचनमां लगार मात्र संदेह जाणशो नही एवु सांभळी निमित्तियाने
शीख आपी विदाय कर्यो अने निमित्तियानी वातथी चिंतातुर थयो थको विचारवा लाग्यो जे
वसुदेवजी जीत्यो एवु सांभळशे तो जरासंध पोतानी पुत्री वसुदेवजीने आपशे अने ते
कन्या तो बंने कुळनो क्षयकरनारी छे तो हवे आपणने एनो शो उपाय करवो एवो चिं
तातुर थको बेठो छे एटलामां तो वसुदेवजी पण सिंहराजाने बांधीने समुद्रविजयजीनी पासे

लइ आव्यो अने समुद्रविजयजीने चितातुर थयेलो देखीने पूछवा लाग्यो जे तमे शी चिंतामां वेग छो? तेवारे वसुदेवजीने एकांतमां लइ जइने समुद्रविजयजीये, जीवयशा वेहु कुलना क्षयने करवावाली छे ए वात संजलावी तेवारे वसुदेवजी बोल्या के ए सिंहराजाने में बांध्यो नथी परतु कंसे बांध्यो छे ए वात सांजली समुद्रविजयजी विचारमां पड्या के ए वाणियाना छोकरामां एटलु वल होय नहि माटे तेनी हकीगत पूछवासारुं सुजड वणिकने बोलाव्यो तेणें सर्व वृत्तात कह्यो पछी ते वाणियानी पासेथी मुद्रिका मगावी कंसने आपी सिंहराजासहित कसने राजगृहनगरे जरासध पासे मोकल्यो जरासधे पण कसने पोतानी पुत्री जीवयशा परणावी दीधी अने वली कंसे तेनी पासेथी मथुरानु राज्य माग्युं तेवारे जरासधे पोतानुं सबल सैन्य आप्यु ते लेइ कंसे मथुरामा जइ पोतानो पिता जे उग्रसेन तेने जीवतो झाली काष्टना पांजरामां नाखी दीधो अने पोते मथुरानु राज्य करवा लाग्यो, हवे पोतानो पिता काष्टपिंजरमा पड्यो थको दुःख जोगवे छे एवु जोइने कंसनो न्हानो जाइ अतिमुक्तक नामे छे ते संसारथी विरक्त थयो अने दीक्षा लइ चाली निकल्यो ॥ ॥ हवे वसुदेवकुमरे पूर्वजवमां स्त्रीवल्लन कर्म उपार्जन कर्युं छे ते पूर्वजवनी कथा कहे छे वसुदेवनो जीव पाछला जवमां कोइएक गामनेविषे नंदीषेण एवे नामे कुलपुत्र हतो तेनां माता पिता बाल्यावस्थामां मरण पाम्या पछी ते मामाना घरमां रहीने महोटो थयो ते जेवारे युवान अवस्था पाम्यो तेवारे कालुं रूप, कुदर्शनी, बिलाडाना जेवी न्हानी आंख, गणेशना जेवु महोटु पेट, हाथीना जेवा मोटा दांत, उंटना जेवा मोटा होठ, वानराना जेवा कान, नासिका चापडी, त्रिखूणुं कपाल, एवो कुरूपो देखीने तेने कोइ कन्या आपे नही सर्व स्त्रीयो तेनी निंदा करे

तेथी चितातुर थयो थको मामाना घरमां कामकाज करवु मूकी दीधु, मामाये कह्युके म
हारी सात पुत्री ठे तेमाथी एक तुजने परणावीश तुं चिता करीश नही पठी मामाये पो
तानी दीकरीयोने एनी साथे परणवानु कह्यु तेवारे ते साते जणीउ बोली जे अमे मरी
जाइये ते कबुल करीये पण ए दांतलाने तो कदापि काले परणीये नही एवु सांजली ते
नदीपेण मरवाने माटे कोइएक पर्वत उपर चडीने त्याथी पडवा लाग्यो एवामां एक मुनि
राजे तेने वर्ज्यो अने कह्यु के हे जोला आवा प्रकारे मरवाथी ताहारूं डुःख मटे नही
तिहां प्रतिबोध पामीने चारित्र लीधुं अने साधुउनो वैयावच्च करवानो अनिग्रह धारण कर्यो
वली पोते मासखमणनी तपस्या करे अने साधुउनो पण वैयावच्च करे एक दिवसे इंद्रमहा
राजे पोतानी सजामां ते नदीपेणनी वैयावच्च करवा आश्रयी घणीज प्रशंसा करी के एना
सरखो वैयावच्चनो करनार बीजो कोइ नथी ते वातने एक देवता अणमानतो थको तिहां
आव्यो तेणे अतिसारना रोगेकरी ग्रस्त थयेला एवा एक साधुनुं रूप विकूर्वीने एक गामने
बाहेर जइ बेसाड्यो अने वली बीजा एक साधुनो रूप बनावीने जिहां नदीपेण मासखम
णनु पारणु करवा लाग्यो ठे तिहा मोकल्यो ते कृत्रिम साधु आवीने नदीपेणने कहेवा लाग्यो
के अरे, अतिसारना रोगवालो साधु वहार पड्यो ठे तेनो वैयावृत्य कर ते सांजली नदी
पेण पारणु करवु पडतु मूकीने तरतज ते साधुनी शरीर शुद्धिने माटे गाममां सूजतुं
पाणी लेवा सारु फरवा लाग्यो परतु तेपण ते देवे देवमायाथी असूजतु करी दीधु लेवा
योग्य क्यांय मले नही तोपण मनमां खेद आवतो नथी पण उलटो पश्चात्ताप करवा लाग्यो
के अरे जूउतो खरा के हु कहेवो जाग्यहीन हु जे आवा मुनिउनो वैयावच्च करवामां पण

मने अंतराय पडवा लागो छे पछी एम करतां पाणी पण मल्युं ते लइने साधु पासे आव्यो ते वारे ते अतिसारी साधुयें रीशकरी लात मारीने पाणी ढोली नाख्युं अने कहेवा लाग्यो के अरे मूर्ख आटलो वखत रहीने केम आव्यो एम कह्यु तो पण तेना उपर रोष न कर्यो पछी ते साधुने पोतानी खांध उपर चडावी गाममां लइ चाल्यो तेवारे ते साधुयें देवमायाथी वली अत्यंत दुर्गंधित विष्टा करवा मांडी तेथी नंदीषेणनुं शरीर सपूर्ण मलथी भराइ गयुं तो पण नंदीषेणने द्वेष उपज्यो नही एवी तेनी धीरज जोइ देव तुष्टमान थइ नंदीषेणने वांदीने स्वस्थानके देवलोकमां गयो एवीरीते नंदीषेणे बार हजार वर्ष चारित्र पाल्युं अने घणा ग्रंथोमां पचावन्न हजार वर्ष चरित्र पाल्युं एम कहेलुं छे अते अनशन कर्युं ते वखत कोइक चक्रवर्ति तेने वांदवा आव्यो तेवारे चक्रवर्तिनी पटराणीने देखी तेणे नियाणुं कर्युं जे हुं परभवे स्त्रीवल्लभ थाउं एवुं नियाणुं बांधी तिहांथी काल करी देवलोक गयो अने देवलोकथी चवीने इहां वसुदेव थयो छे तेनुं पूर्वे करेला नियाणानां प्रभावथी कामदेव जेवुं रूप थयुं छे ते वसुदेव जे वखत शौरीपुर नगरमां फरे तेवारे ते नगरनी सर्व स्त्रीयो पोताना घर उघडा मूकी तथा बीजां पण सर्व कामकाज पडतां मूकी रूपे मोही थकी वसुदेवनी पछवाडे फरे अने भरतारनुं कह्यु पण माने नही तेथी कोइ कोइना घरोमां चोर पेसी जाय अने घर पण लूंटी चाल्यो जाय एवु कृत्य जोइ ते नगरना रहेनारा सर्व लोकोयें समुद्रविजय राजानी पासे जइ विनति करी के गामनी सर्व स्त्रीयो घर सूना मूकीने वसुदेव कुमरनी पाछल भमे छे माटे जो तमे वसुदेवजीने नही वर्जो तो अमने बीजे क्याइ रहेवानी जगा बतावो ते सांभली समुद्रविजय राजा बोल्या के हे पंचो! तमे कहो छो तेम हुं करीश हवे तमे सुखे आपणे घरें जाउ अने सुखसमाधिमां रहो एम

कही महाजनने शीख आपी, थोडी वार पछी वसुदेवजी पण समुद्रविजयने पगे लागवा सारु तिहां आव्यो तेवारे वसुदेवजीने खोलामां बेसाडीने समुद्रविजयजी बोल्या के हे भाइ! आज काल तु शरीरमां दुर्बल थइ गयेलो देखाय छे ते हु जाणुं छु जे तु इहां तिहा घणो रखडे छे माटे वेलाये कुवेलाये कोइ छिद्र जोइ छल करीने ताहारा रूपनी खराबी करशे तथा वली आपणे राजा छैये माटे आपणा वैरी पण घणा छे ते कोइ उपद्रव करे माटे तु आपणा घरना बगीचामा रम्या करजे पण बाहेर भमवानु मूकी आपजे वली बाहेर भमवाथी विद्या शीखेली छे ते पण भूली जइश एवु सांभली वसुदेवजी पण विनयपूर्वक बोल्यो के तमारो हुकम महारे प्रमाण छे एम कही घरनी वाडीमाहेज रमत करवा लाग्यो एवामां उनालो आव्यो तेवारे शिवादेवीये समुद्रविजयजीने माटे चदन घसी तेनी कटोरी भरी ढाकीने दासीना हाथमां आपी समुद्रविजयजी पासे मोकली ते कटोरी दासी लइ जाय छे तेने देखी वसुदेव बोल्यो के आ शु छे? दासी बोली हजुरने विलेपन करवा सारु चदननी कटोरी राणीये दीधी छे ते लइ जाउ छु तेवारे वसुदेवजीये ते दासीना हाथमांथी छीनवी लइ पोताना अग उपर चदननु विलेपन करी लीधु ते जोइ दासी कोप करीने बोली जे ताहारां आवां लक्षण छे तेथीज तु बंदीखाने पड्यो छो ते सांभली वसुदेवजीये दासीने पूछ्यु के बंदीखानु ते वली कयु! तेवारे दासीये जवाब दीधो नही पण जेवारे घणो हठ करीने पूछ्यु तेवारे दासीये गामना लोको सबधि विचार सर्व कही सभलाव्यो तेथी वसुदेवजी राजानी उपर तथा पचोनी उपर अमर्ष आणीने अर्द्धरात्रे एकलो घरमाथी बाहेर निकली गयो, अने विचार्युं जे हवेथी ए समुद्रविजयजी महारी आशा मूकीने पछवाडे शोध

करवा नीकळे नही एवो कोइ उपाय करुं पछी नगरनी बाहेर एक मडदाने बाळीने पोळना कमाड उपर लोहीना अक्षरोथी लख्यु जे हे नगरवासी लोको! तमे सांभळो हुं तमोने तथा म्हारा म्होटा भाइने सुख थवाने माटे बळी भस्म थयो छु हवे तमे सुख समाधीमां रहेजो एवी रीते लखीने चालतो थयो प्रभाते पोळीये पोळ उघाडी तेवारे मुडदुं बळ्यु दीठुं अने वसुदेवजीना लखेला अक्षर वांची समुद्रविजयजीने जइ कह्यु समुद्रविजय तिहां आवी ते कृत्य जोइ शोकथी मरवा लाग्यो तेवारे प्रधानादि लोकोये तेने समजावी राख्यो तोपण शोकमां गरकाब थयो थको राज्य करे छे हवे वसुदेव गामे गामे फरवा लाग्यो ते ज्यां ज्यां जाय तिहां पूर्वे करेला नीयाणाना प्रभावथी अत्यंत स्वरूपवान कन्याउ परणे एम क्यांक दश, क्यांक वीश, क्यांक सो, क्यांक पांचसो कन्याउने परणे ते सर्व विद्याधरराजाउनी पुत्रीयो तथा बीजा भूचरराजाउनी पुत्रीउ तथा शेठ प्रमुख म्होटा धनाढ्य लोकोनी पुत्रीउ जाणवी एम सर्वमळी बहोतेर हजार कन्याउने वसुदेवजी परण्यो अने घणी विद्याउ पण शीख्यो, एवा अवसरमा रोहक राजानी पुत्री रोहिणी नामे छे तेनो स्वयवर मंडप मंडाणो छे तिहां त्रण खंडनो स्वामी जरासंध आदि देइने सर्वराजाउ ते स्वयंवर मंडपे आव्या छे तेमज समुद्रविजय प्रमुख सर्व यादवो पण आव्या छे ते रात्रिये वसुदेवजीने रोहिणीप्रज्ञप्ति विद्यादेवीये आवी स्वप्नामां कह्यु के हे वसुदेव! रोहिणीना स्वयंवर मंडपने विषे तुं जा अने तुजने ते रोहिणी परणशे वळी रोहिणी शिवाय बीजी पण एक कन्या तुं हजी परणीश एम सर्वे तुजने बे कन्याउनी प्राप्ति हवे थवानी छे माटे तु कां सूतो छो! प्रभातें तुं तिहां जाजे एम कहीने पछी ते विद्यादेवीये रोहिणीनी पासे जइ तेने पण स्वप्नामां कह्यु के तुं मृ

दग वजाववावाला कुबडाने परणजे ॥ हवे रोहक राजाये प्रजाते स्वयवर मम्प शणगाव्यो त्यां सर्व राजा, राजकुमारो पण शणगार करी पोत पोताना नामनां सिंहासनो उपर आवी बिराजमान थया एटलामां रोहिणी राजकन्या पण पोताने शरीरे सोल शणगार करी सखीउंये करी परवरी थकी हाथमा फूलमाला लेइने स्वयंवर मम्पमां आवी तेवारे सर्व राजा ते कन्याने देखवा लाग्या अने ढडीदारणी प्रतिहारिणी प्रत्येक राजाउंना गुण रूपादिकनो वर्णन करे ठे केमके ते रोहिणी सती ठे माटे काचमाथी सर्व देखी शके नही तेथी प्रतिहारिणीये सर्व राजाउंने वर्णवी देखाड्या पण कुलदेवीना वचनने हृदयमां धरीने जे मृदग वगाडनारा कूवडाने रूपे वसुदेव आव्यो ठे ते एज वसुदेव एज वसुदेव एवो मृदगशब्द वजावे ठे तेने जोइने तेना गलामां वरमाला पहेरावी तेवारे कूबडो नाचवा लाग्यो अने मुखथी आ रीतें शब्दोच्चार करतो हवो के अहो आ सर्व राजाउ करतां हु अधिक नाग्यशाली बु जेमाटें ए सर्व राजाउ वेगला रह्या अने मुजने वरमाला मली गइ एवु जोइ ते मम्पमां आवेला सर्व राजाउ ते कन्या उपर क्रोध करीने, केटलाएकतो कन्याने निंदवा लाग्या, केटलाएक कन्याना पितानी निंदा करवा लाग्या अने केटलाएक बोल्या अरे आ कूबडाने मारीने एनी पासेथी वरमाला खोसी ल्यो फोकट बीजा उपर रीश करवाथी शु थाय एवु मांहोमांहे कहीने बोल्या के जेना सुनट कूबडा पासे उनेला ठे तें कूबडा पासेथी वरमाला खोसी लीये अने तेनीज ए वरमाला पण जाणवी एवु सांजली सर्व राजाउंना सेवक ते कूबडा पासे आव्या तेनें कूबडे सोनाना मृदगथी मारीने जमीन उपर नाखी दीधा तेदेखी सर्व राजा शस्त्र लइने मारवा दोड्या तेवारे वसुदेवे सर्व राजाउंने विरूप करी नाख्या कोइनी मूढो म्हाढी कापी नाखी, कोइने रुम मुंम करी

नाख्यो ते जोइ जरासंध राजाये समुद्रविजयना सादामुं जोयु तेवारे समुद्रविजय राजा वकतर, टोप पहेरी धनुष बाण लइने युद्ध करवा उठ्या तेने देखी वसुदेवे जाण्यु जे भाइनी साथे ल डवु नही तो हवे हुं महारूं स्वरूप प्रगट करी देखाडुं नहीतो संग्राम थाशे एवो विचारी कूबडानुं रूप त्यागी मृदग नाखी देइने समुद्रविजय पासे एक बाण नाख्यो तेमां वसुदेवनो तमोने नमस्कार छे एवु सुवर्णमयी अक्षरोथी लखेलुं हतु ते वांचीने समुद्रविजय विस्मय थयो अने विचार्यु जे वसुदेव मरण पाम्याने केइक वरस थइ गयां तो आही वसुदेव किहांथी आव्यो आतो कोइ इद्रजालीयो मने भोलवतोतो नथी एवु विचारे छे एटलामां तो वसुदेव पण आवी पगे लागो तेवारे तो समुद्रविजयजीये सारीपेठे उलख्यो अने सर्व यादव खुशी थया जरासंध प्रमुख राजाउ पण खुशी थया, महोत्सव करीने वसुदेवने रो हिणी परणावी तथा आगल पण जेटली स्त्री परण्या हता ते सहुनी हकीगत सर्व समुद्रविज यजीने कही पाछलथी बहोतेर हजार कन्याउने भेली करी विमानमां बेसाडी लावीने वसुदेव घेर आव्या ॥ हवे स्नेहने लीधे वसुदेवजीने मथुरा नगरीमां कस लइ आव्यो त्यां कंस तथा वसु देवजी बेहु मथुरामा रहे छे एकदा देवकराजानी पुत्री देवकीजी, वसुदेवने परणवा आवी छे ते देवकीजी अने जीवयशा ए बे साथे रमत करे पण जीवयशा पोताना बापना बलना गर्वकरी उन्मत्त छे हवे जेवारे देवकीजीनो विवाह मण्डाणो तेवारे जीवयशा मदिरापान करी देवकी जीने पोतानी खांध उपर बेसाडी नाचे छे एवा अवसरमां कसनो न्हानो भाइ अइमुत्तो नामा साधु थयो छे ते गोचरी सारु फरतो थको कसने घरे आव्यो तेने जीवयशाये दीठो तेवारे म दोन्मत्त थइ थकी मुनिने कंठे वलगीने बोली जे हे देवरजी! तमे भला अवसरमा आव्या छो

तो हवे एक राजकन्या तमोने पण परणावीश एवु बोलती थकी तेने मूके नही तेवारे तेने वीवरावबा माटे साधु बोल्या के अरे मूरखणी तुं शु नाचे कूदे छे जेने तं ताहारा खाध उपर बेसाडी छे तेनो सातमो गर्भ जे थाशे ते ताहारा भरतारने तथा ताहारा पिताने मारवा वालो थाशे एवा साधुना वचन सांभली साधुने कठे वलगेली हती ते मूकी दीधो त्यांथी साधुतो विहार करी गयो अने जीवयशाने मद उतरी गयो मनमां शका पडी जे साधुनु व चन खोटु थाय नही पछी ते वात एकांते जइ पोताना भरतार कसने कही कसे पण ते वात सत्य करी मानी तोपण ते वचन जुठु करवाने अर्थे विचार्यु जे आ वात कोइने जाण वामा नही आवे तेवीरीते एनो उपाय करवो एवु चितवन करी एक दिवस वसुदेवजीने कंसे राजी कर्यो तेवारे वसुदेवजी बोल्या हे कस ! ताहारा उपर हुं तुष्टमान थयो छु माटे माग माग जे मागीश ते हु आपीश एवु सांभली कस बोल्यो जे हे मित्र ! तु तुष्टमान थयो तो देव कीजीना पहेलवेलां साते गर्भ मने आपजे ते वात वसुदेवजीये सरल चित्तथी मान्य करी अने कंसने कह्यु के हु तमोने साते गर्भ आपीश एवीरीते वसुदेवजी वचनथी बधाइ गया, पछी ते वात देवकीजी आगल कही तेवारे देवकीजीये अइमत्ता मुनिना कहेलां वचन वसुदे वजीने संभलाव्या अने कह्यु के आ कस आपणा पुत्रोने लइ मारी नाखशे ते सांभली वसुदे वजीने पश्चात्ताप थयो पण वचने बधाइ गयो त्या शो उपाय ? सत्पुरुषनुं बोलवुं फरे नही माटे सत्पुरुषे जे बोलवु ते विचारीने बोलवु हवे एवा अवसरमा भद्दिलपुर नगरनो रेवासी नाग नामे शेठ छे तेनी सुलसा नामा स्त्रीने मृतवत्सा दोष छे तेथी ते वखत मुवेला पुत्रने जन्म आपे छे माटे ते स्त्रीये अठम तपकरी हरणीगमेषी देवनुं आराधन कर्यु ते देव त्रीजा उप

हवु ते गोकुलगाममा नंदनामे गोप तथा तेनी यशोदा नामे स्त्री ए बे रहे छे तेपण ते दाय
जामा आवी गया हता एटलामां देवकीजीने गर्भ थयो ते वर्णे कालो हतो तेने देखी कृष्ण
पण एवु कहीने वसुदेवजी तेने तिहांथी छानो लइने निकली गयो ते वखत कसे बेसाडेला
ीदारोने निद्रा आवीगइ हती आगल जतां दरवाजो खोलीने निकल्यो तेवारे उग्रसेन
। कोण छे वसुदेवजी बोल्या आ ताहारुं काष्ठनु पाजरु भांगीने तेमांथी तुजने मुक्त
एवु कही आगल चाल्यो मार्गमा यमुनानदीयें पण मार्ग आप्यो ते नदी उल्ल
ंमा जइ यशोदाजीने ते बालक सोंप्यो अने ते वखत यशोदाजीने पुत्री आवी
ावीने देवकीजीने सोंपी पाछलथी कसना पोरायत निद्रामांथी जाग्या ते बोल्या
थ्यो के पुत्री आवी तेवारे वसुदेवजीयें पुत्री आपी ते कसे लईने तेनु नाक कापीने
जीने आपी आ ठेकाणे अन्यदर्शनीउ कहे छे के कन्याने पण शिला उपर पछाडी
इगइ ए वात मिथ्या छे हवे कस निश्चित थयो आणीगम गोकुलमा यशोदाजी
वाथी कृष्णनु पुत्रनी पेरे पालन पोषण करे छे कृष्ण पण सुखे सुखे वृद्धि पामे
कीजीने कृष्णजीने देखवानी घणी घणी चाहना रहे पण कसनी बीकने लीधे पन्नर
वसे अथवा महीने महीने आज बछ बारश छे आज गोत्राट छे आज काजली त्रीज छे
ा नवा उत्तर करी करीने गोकुलमां जाय तेने लीधे ते दिवसो सर्व मिथ्यात्वीउना पर्व
ो तिहां जइ देवकीजी श्रीकृष्णने रमत करावे, दूध धवरावे, अने यशोदाजीने कहे के
मने घणो वहाल लागे छे एवा वचन कही पाछी घेर आवे एरीतें कृष्णजी बाल
रता थका यशोदाजीनां दूध दही प्रमुखनां वासण ढोली नाखे फोडी नाखे इत्यादिक

चित्र ६०







वसुदेवजी श्रीकृष्णनेलई गगानदी.उतरेछे

हतु ते गोकुलगाममां नंदनामे गोप तथा तेनी यशोदा नामे स्त्री ए वे रहे छे तेपण ते दाय जामा आवी गया हता एटलामा देवकीजीने गर्भ थयो ते वर्णे कालो हतो तेने देखी कृष्ण कृष्ण एवु कहीने वसुदेवजी तेने तिहांथी छानो लइने निकली गयो ते वखत कंसे वेसाडेला चोकीदारोने निद्रा आवीगइ हती आगल जता दरवाजो खोलीने निकल्यो तेवारे उग्रसेन वोल्यो आ कोण छे वसुदेवजी वोल्या आ ताहारु काष्ठनुं पांजरु जांगीने तेमाथी तुजने मुक्त करनार छे एवु कही आगल चाल्यो मार्गमा यमुनानदीये पण मार्ग आप्यो ते नदी उल्लं घीने गोकुलमा जइ यशोदाजीने ते वालक सोप्यो अने ते वखत यशोदाजीने पुत्री आवी छे ते लइ आवीने देवकीजीने सोपी पाछलथी कसना पोरायत निद्रामाथी जाग्या ते वोल्या शुं पुत्र आव्यो के पुत्री आवी तेवारे वसुदेवजीये पुत्री आपी ते कंसे लईने तेनु नाक कापीने पाछी वसुदेवजीने आपी आ ठेकाणे अन्यदर्शनीउ कहे छे के कन्याने पण शिला उपर पछाडी ते वीजली थइगइ ए वात मिथ्या छे हवे कंस निश्चित थयो आणीगम गोकुलमा यशोदाजी वसुदेवना कहेवाथी कृष्णनु पुत्रनी पेरे पालन पोषण करे छे कृष्ण पण सुखे सुखे वृद्धि पामे छे हवे देवकीजीने कृष्णजीने देखवानी घणी घणी चाहना रहे पण कसनी वीकने लीधे पन्नर पन्नर दिवसे अथवा महीने महीने आज वछ वारश छे आज गोत्राट छे आज काजली त्रीज छे एवा नवा नवा उत्तर करी करीने गोकुलमां जाय तेने लीधे ते दिवसो सर्व मिथ्यात्वीउना पर्व थया पछी तिहां जइ देवकीजी श्रीकृष्णने रमत करावे, दूध धवरावे, अने यशोदाजीने कहे के ताहारो पुत्र मने घणो वल्लभ लागे छे एवा वचन कही पाछी घेर आवे एरीते कृष्णजी वाल लीला करता थका यशोदाजीनां दूध दही प्रमुखनां वासण ढोली नाखे फोडी नाखे इत्यादिक



वसुदेवजी श्रीकृष्णनेलई गगानदी उतरेछे

अनेक प्रकारनी रमत करतो विचरे ९५५। ... जावु नही कारणके जो कंसने ए वातनी खबर पडशे तो वली कोइक ... कृष्ण सात आठ वर्षना थया तेवारे तेने कलाउ शीखववा सारु रोहिणीना पुत्र वलदेवजीने कंसथी गनो मोकल्यो अने ते गनो रहेवानी हेतुभूत कंससंबंधि सर्व हकीगत वलदेवजीने निवेदन करी एम वलदेवजी अने कृष्ण वेहु जण गोकुलमा नदने घेर रहे छे अने वलदेवजी श्रीकृष्णने विद्याउ जणावे छे सर्व कलाउ शीखावे छे एम करतां श्रीकृष्ण चौदवर्षना थया हवे राम कृष्ण वन्ने जाइउ तिहां गोवालीआउनी साथे नाचे कूदे गाय वजावे नीला पीला वस्त्र पहेरे,कृष्ण पोताने मस्तके मोरपीछ राखे, मुरली वजावे, गोपीयोनी साथे गाय,आखो दिवस रमत करे, सांजना घेर आवे एवा अवसरमां वली एक दिवसे कंसना मनमां एवी वात आवीके साधुनुं वचन जूठुं थयुं के नथी थयुं तेनी चोकसी करवा माटे निमित्तियाने पूछ्यु के मने कोइ मारनार छे किवा नथी? ते सांभली निमित्तियो वोल्यो के साधुनुं वचन जूठु नथी ताहारो शत्रु कोइक जगायें महोटो थइ रह्यो छे पण ताहारो शत्रु मरण पाम्यो नथी तेवारे कंसे पूछ्युं ते केवीरीते महारा जाणवामां आवे, निमित्तियो वोल्यो जे अरिष्ट नामा वलदने दमन करशे, जे कालीनागने वश करशे, जे ताहारा केशी नामना घोडाने दमशे, जे खर अने मेष नामा खरोने मारशे, जे चपोत्तर अने पद्मोत्तर नामा हाथीउने मारशे, जे सारग धनुष्य चढावशे, जे चाणूरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए वेने मारशे ते ताहारो मारनार जाणजे ए वात सांभली कंसे तेनी निगाह करवाने माटे पडह वजाडाव्यो के जे कोइ सारग धनुष्यने चढावे तेने महारी वहेन सत्यभामा हुं परणावु ए वात सांभली घणा

राजा तिह   ला थया एवा अवसरमां वसुदेवजीनो एक अनादृष्ट नामा महावलवत पुत्र ठे ते पण धनुष्य चडाववाने जाय ठे मार्गमा सांज पडी तेथी रात्रे श्रीगोकुलमां रह्यो तेने वलजद्र उलखतो हतो तेथी तेनी घणी सेवा करी प्रजात थयुं तेवारे अनादृष्ट वलजद्रने कहेवा लाग्यो के एक वलावो आपो तो मने मथुरानो मार्ग देखाडी आवे ते सांजली वलजद्रे श्रीकृष्णने अनादृष्ट साथे मार्ग देखाडवा मोकल्यो मार्गे जतां अनादृष्टनो रथ वृक्षोमा अटकी रह्यो ते अनादृष्टथी निकल्यो नही तेवारे कृष्णजीये ते वेहु वृक्षोने लात मारी उखेडी नाख्यां अने मार्ग करी रथ वाहेर रस्ते चडावी दीधो तेजोइ अनादृष्टीये तेने वलवान जाणी रथमा वेसाडी मथुरामा लइ गयो त्यां जइ अनादृष्टी धनुष्यने हाथ फरसवा लाग्यो दैवयोगथी पाठो पड्यो तेवारे तेना उपर लोक हस्या श्रीकृष्णे अनादृष्टीनु हास्य थतु देखी ते धनुष्यने सहेज उपाडीने चडावी लीधु सत्यजामा पासे उजी हती तेणे श्रीकृष्णने वरमाला पेरावी तेवारे वसुदेवजी अनादृष्टी उपर क्रोधकरी कहेवा लाग्यो के एने शा वास्ते आंही लइ आव्यो जा हमणाज पाठो मूकी आव ते सांजली अनादृष्टी ठानोमानो कृष्णने गोकुलमा लइ आव्यो एटला दिवससुधी आ वलजद्र महारो जाइ ठे एवु श्रीकृष्णना जाणवामा न हतु हवे अनुक्रमे श्रीकृष्ण सोल वर्षनो थयो एवा अवसरमा कसे केशी घोडो अने मेष घोडो तथा अरिष्टनामा वलद ए सर्वने गोकुलमां मोकल्या ते जइ गोकुलमा उपद्रव करवा लाग्या तेमने श्रीकृष्णे मारी नाख्या एवा अवसरमा वली मथुरामा कसे मल्लनो अखाडो मांड्यो तिहां घणा मल्ल एकठा थया ठे तेमां एक चाणूरमल्ल अने वीजो मुष्टिकमल्ल ए वे मल्ल घणा वलवान ठे ते वखत कसे जाण्यु जे धनुष्य चढाववावालाने मे सारीपेठे उलख्यो नही माटे हवे कोइरीते

ते आंही आवे तो हुं तेने मारी नाखु एवुं विचारी एक बाजु कंस बेठो रह्यो छे एवामा श्री कृष्णे सांभल्यु जे आज मल्लयुद्ध छे ते हुं देखवा जाउं एवु चितवी बलभद्रने गुरु जाणी पगे लागी बोल्यो स्वामी आज आज्ञा आपोतो मथुरामां मल्लयुद्ध जोवा जाउ तेवारे बलभद्रे जाण्यु जे तिहां जवाथी कदाच कंसनी साथे युद्धथइ जाय माटे कृष्णने भाइपणानी वात जणावी आपु एम विचारी बलभद्र बोल्यो हे यशोदा! अमोने स्नान करवा माटे उन्हु पाणी आप अमे आज मल्लयुद्ध देखवा जइशु ते वखत यशोदा बीजा कोइ काममां पडी हती तेथी बलभद्रनुं वचन सांभल्युं अण सांभल्या जेवु करी दीधु तेवारे बलभद्र बोल्यो केम यशोदा तु म्हारा भाइनुं पालण पोषण करवाथी शु राणी बनी बेठी? दासपणुं भूली गइ जे थकी म्हारी वातने गणकारी नही एवु कहीने श्रीकृष्णने साथे लइ बलभद्र बोल्यो के चालो आपणे यमुनामांहेज स्नान करीशु पछी मथुरामां जइशुं एम यशोदाने कडवां वचन बलभद्रे कह्या तेथी श्रीकृष्ण नाराजी थयो तेवारे मार्गमां बलभद्रे छ भाइने मारवा आदिक कंस संबधि सर्व वृत्तांत कह्यु तथा आपणे बे भाइनी माताउ जुदी जुदी छे परंतु बाप एकज छे तने कंसना भयने लीधे इहां श्रीगोकुलमां राख्यो छे ते वात सांभलीने श्रीकृष्ण बोल्यो के जो आजने आज हुं म्हारा छ भाइने मारवानुं वैर कंस पासेथी लेउं तोज हु खरेखरो कृष्ण? एम कही मार्गे यमुना नदीमां स्नान करवा प्रवेश कर्यो तेवारे कालियद्रहनो काली नाग आव्यो तेने श्रीकृष्णें पकडीने नाक वींधी नाकमां कमलवेलथी नाथी तेना उपर चडी असवार थइने घोडानी पेठे दोडाव्यो आ वात लोकोये जइ मथुरामां एक बीजानी पासे करी कंसें पण लोकोना मुखथी सांभली जे आजे नंद गोवालीयाना पुत्रे कालिनागने दम्यो

एटलामांतो राम कृष्ण वेहु नाइ घणा गोवालीयाना वृंदे परवस्या थका नगरने बारणे आव्या तिहां चपोत्तर अने पद्मोत्तर ए वे हाथीये तेमने रोक्या तेथी बधा गोवालीया मरवा लाग्या पछी वलजइ अने कृष्णे मली हाथीउना दंतोसल उखेडी नाखी हाथीउने उपाडी दूर फेकी दीधा तेथी हाथीउ मरण पाम्या पछी कृष्ण वलजइ वेहु जण मल्लने अखाडे आव्या तिहा एक राजाने मच उपरथी नीचे पटकीने ते मच उपर वेठा त्यां वलजइ श्री कृष्णने पोतानु सर्व कुटुंब बताव्यु वली कंस पण देखाड्यो अने कह्यु के ए कंस आपणोज छे परतु दुष्ट छे एटलामां कंसे पण चाणूरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए वे ने युद्ध करवा तयार कर्या अनुक्रमे कृष्णजीये चाणूर मल्लने मार्यो अने वलजइ मुष्टिक मल्लने मारी नाख्यो ए रीते वेहु मल्लने मरण पामेला जोइ कंस क्रोध करीने बोल्यो अरे सुजटो जेणे ए बन्ने सर्पने पालण पोषण करी मह्योटा कर्या छे ते नद अने यशोदाजी वेहुने बाधी पकडीने इहां लइ आवो एटले घाणीमा पीली नखावीये एवु कसनु बोलवु सांभली श्रीकृष्ण रोषारुण थया थका कूदको मारीने कसने कहेवा लाग्या अरे दुष्ट मह्यारा छ जाइने तें मार्या छे तेनु हु वैर लेउ हु एम कही कसनी चोटली पकडी, नीचो नाखी देइ, मूकी मारी तेथी कंस मरण पामी नरके गयो यादवोये मली उग्रसेन राजाने पाजरामांथी बाहेर काढाडी बूटो करी सभामा लइ आवी वेसाड्यो, तेवारे लोकोये जाण्यु जे आ राम अने कृष्ण वेहु वसुदेवना पुत्र छे पछी उग्रसेन राजाये सोल वर्षनी उमरवाला श्रीकृष्णजीने त्रणसे वर्षनी उमरवाली सत्य नामाने परणावी दीधी हवे यादवोये जरासधथी बीक पामीने जीवयशाने पूछ्यु के कसने अग्निसस्कार करीये ? तेवारे जीवयशा बोली राम कृष्ण तथा बीजा पण घणा यादवोनी

चित्र ६१









साथे कंसनें दाह् देवाशे तमे जुउंतो खरा शुं थाय ठे? ते सांजली कृष्णजी वोल्या के अरे जारे शु ताराथी थवानु ठे एवु सांजली जीवयशा तिहांथी निकली परवारी राजगृहमां पोताना पिता पासे जइ उघाडे माथे रोवा लागी अने कह्युके ताहारा जीवतां यादवोये ताहारा जमाइने मारी नाख्यो यादव घणा उन्मत्त थया ठे ते सांजली जरासंध वोल्यो हे पुत्रि! तुं धीरज धर जे थवानु हतुं ते थयु हवे ए राम कृष्ण वेहु म्हारा अपराधी ठे ते वेहुने आवी म्हारे स्वाधीन करी जाशे तोज यादवो म्हारा राजमां रही शकशे नहीकांतो हु ए सर्व यादवोने मारी नाखीश एवी रीते जीवयशाने दिलासो आपी सतोपी पठी एक सोमनामा सामतने यादवोनी पासे जरासंधें मोकल्यो ते यादवो पासे आवीने समुइविजय प्रमुख राजाउने कहेवा लाग्यो के हे यादवो! तमे म्हारी वात सांजलो के, जे थवावालुं हतु ते थइ गयुं हवे मात्र एक राम अने वीजो कृष्ण ए वे गोवालीयाना ठोकरा ठे तेने वांधीने म्हारी साथे आपी जरासंध पासे मोकली आपो ए दासोने लीधे तमारा सर्व यादवकुलनो क्षय करावो नही, ते सांजली समुइविजय वोल्या अरे सोम! तुं समजतो नथी जे एवा गुणवान अने वलवत पुत्रोने मरावावाने अर्थे अमे तुजने आपी दइये तो हवे अमे वृद्ध थया ते केटला एक काल पर्यंत जीवता रहीशुं माटे जे थवानुं हशे ते थशे अमे कांइ अमारा पुत्र आपीशुं नही वली वलजइ वोल्या के अरे सोम तुं पिताउनी पासेथी पुत्रनें मागता लजातो नथी शु? अरे हजीतो अमे अमारा एक जाइ मारवानुं कंस पासेथी वैर लीधुं ठे परतु पांच जाइ वीजा मार्या ठे तेनुं वैर लेवु वाकी रह्यु ठे माटे तुं जीववानी चाहना राखतो होयतो इहांथी चाल्यो जा नहीकां तने तो हमणाज फल देखाडीश एवु सांजली सो

मनामा सामत बीक पामीनें जरासंध पासे गयो पाछलथी यादवो जय पाम्या थका कोष्टिक
निमित्तियाने पूछ्युं के अमारो जय क्यां थशे ते दिशा अमने बताव तेवारे निमित्तियो बोल्यो
तमारा कुलमां राम अने कृष्ण महापुरुषो छे वली नेमीश्वर भगवान तीर्थंकर छे माटे त
मारो कोइ रीते बिगाड थवानो नथी परंतु हाल तमे कृष्णने राजा करीने पछी पश्चिमदिशाये
जाउ ते मार्गमां जतां जतां जे स्थानके सत्यभामा, पुत्रनुं जोडलुं प्रसवे ते स्थानके तमारे
रही जावु तिहां तमारी वृद्धि थवावाली छे पण आही तमारे रहेवु नही एवुं सांभलीने
शौरीपुरथी समुद्रविजय प्रमुख अगीआर कुलकोटी यादव नीकल्या अने मथुराथी उग्रसेन
प्रमुख सात कुलकोटी यादवो एकठा थइने सर्व कुटुंबसहित सोरठ देश तरफ चाल्या हवे
तिहां सोम नामा सामंते राजगृह नगरे जइ राजा जरासंधने समाचार विदित कर्या जरा
संध पण सैन्य सज्ज करी यादवो उपर चडाइ करवा तयार थयो, ते वखत जरासंधनो पुत्र
कालकुमर बोल्यो के जो महारुं नाम काल छे तो हुं सर्व यादवोने कालरूप थइ मारी ना
खीश जो यादवो आकाशमा उंचा गया हशे तो नीसरणी मांडीने उपर आकाशमां जइ
यादवोनो नाश करीश अने जो यादवोये जमीनमां प्रवेश कर्यो हशे तो जमीन खोदीने हुं
पण प्रवेश करी तेमने मारीश जो पाणीमां यादवोये प्रवेश कर्यो हशे तो हुं पण पाणीमा
प्रवेश करी तेमने मारीश तथा जो अग्निमा यादवोये प्रवेश कर्यो हशे तो हुं पण अग्निमां
प्रवेश करीने यादवोनो नाश करीश एवु पण लइ पांचशे भाइयो सहित पिताने नमस्कार
करीने कालकुमरे यादवोनी पछवाडे चडाइ करी अने जीवयशाने पण जती वखते कहेवा
लाग्यो के महारा बनेवीजीनुं वैर यादवो पासेथी लउं तो महारु नाम काल करी जाणजे


(चेत्र ८२
जादवजता रहवेत
दासी रुदन करेछे
जराकुमार
जरासधनुसैन्य

तेवारे जीवयशायें आशीर्वाद आप्यो अने कह्यु के जाइ ताहारुं मृत्यु थाय तो जले थाउ पण यादवोनो क्षय करजे ए रीते जेम थवानु छे तेम जीवयशाना मुखमांथी वचन पण नीकल्युं हवे पांचसो जाइउसहित घणी ताकीदथी कालकुमर चल्यो ते चालतां चालतां जेवारे यादवोथी एक दिवसना मुकाम जेटले अंतरे आवी रह्यो एटलामां श्रीनेमीश्वर तीर्थंकर, कृष्ण वासुदेव, राम बलदेव बीजा पण वली तद्भव मोक्षगामी एवा घणा जनो यादवोना परिवारमां छे तेमना पुण्यना योगें खेंची थकी यादवोनी कुलदेवी आवीने यादवोनुं मुकाम तथा कालकुमरनुं मुकाम जे जे स्थानके हतुं तेना वचला मध्यभागमां एक पर्वतनी रचना करी ते पर्वतना मार्गमां एक चिता सलगावी ते चितानी पासे वली एक झोशीनुं रूप करीने कुलदेवी रुदन करती थकी बेठी तेने कालकुमरे आवीने पूछ्युं के आ चितामां कोण बल्या छे अने तुं शावास्ते रुदन करे छे तेवारे कुलदेवी छल करी रोती थकी बोली के हे पुत्र ! कालकुमरना भयने लीधे सर्व यादवोनुं कुटुंब आ चितामां बली भस्म थइ गयुं छे कोइ पण यादव रह्यो नही माटे हुं तेमनी कुलदेवी छुं तो हवे मने कोण पूजशे ए कारण माटे मुजने बहु दुःख लाग्यु तेथी रुदन करुं छुं ते वात सांभली कालकुमर पोताना मुखें करेली प्रतिज्ञा राखवा माटे घणा सामंत तथा केटलाएक भाइयोसहित तरवार काहाडीने यादवोने मारवा सारुं अग्निमां पड्यो अने बली भस्म थइ गयो पछी प्रभाते बाकी रहेला जरासंधना लश्करमांहेला लोको देवमाया जाणीने पाछा फरी राजगृहे जइ जरासंधने सर्व वृत्तांत कह्यु हवे आंही सर्व यादवो मोज मजामां खुशी थया थका पश्चिम समुद्रना तट उपर आव्या तिहां सत्यभामाये भ्रमरनामा पुत्रनुं जोडुं जण्युं तेवारे नैमित्तिकना कहेवा प्रमाणे

यादवो सर्व तिहांज रह्या पछी कृष्ण महाराजे अष्टम तप करी सुस्थित नामा लवणाधिप देवनु आराधन कर्युं तेथी देवता प्रत्यक्ष आवी उनो रह्यो तेनी पासेथी श्रीकृष्णे रहेवाने सारु जगा मागी तेवारे देवतायें कह्यु इंद्रमहाराजने पूछीने तमोने जगा आपीश एवु कहीने सुस्थित देवता इंद्र महाराज पासे जइ सर्व वात कही इंद्रे धनद नामे जंडारीने मोकल्यो तेणे आवीने बार योजन लांबी अनें नव योजन पोहोळी एवी एक द्वारिका नगरी बनावी तेने फरतो अढार हाथ उंचो अने बार हाथ जाडो तथा नव हाथ पृथ्वीमां उंमो एवो सोनानो कोट बनाव्यो ते कोटने रत्नना कांगराये करी शोभित कर्यो वली ते कोटनी चारे बाजु फरती खाइ करी तथा वाडी बाग बगीचाउ सहित एवो ते सुंदर कोट बनावी पछी धनदें ते द्वारिका नगरीमां श्रीकृष्णने वसवानी आज्ञा आपी ते नगरीमां एक सातभूमिवाळुं कल्पवृक्षोनी वाडीसहित एवु घर श्रीकृष्णजीने रहेवा सारु बनाव्युं वली ते घरनी एक बाजु समुद्रविजयादिक दश भाइउने माटे घरो बनाव्यां तथा ते श्रीकृष्णना घरनी बीजी बाजुमां वली उग्रसेननु घर बनाव्यु तेनी बाजुमां वली बीजा सर्व भाइउना घर बनाव्यां ते सर्व घरो त्रण दिवस पर्यंत धन, धान्य, वस्त्र, घरेणा प्रमुख उत्तम वस्तुउंथी भरीने श्रीकृष्णने स्वाधीन करी धनद देवता स्वर्गमां पोताने स्थानके गयो हवे सर्व यादवोये मली द्वारिका नगरीमां वास कर्यो तिहां यादवोना कुंटुंबोनी वृद्धि थवा लागी ते अनुक्रमे पचाश वर्षनी मुदतमां अढार कुलकोडी यादवोमांथी वधीने छपन्न कुलकोडी यादवोनी वस्ती थइ एवा अवसरमां राजगृही नगरीमां कोइ रत्नकंबलना व्यापारीउये आवीने एवी वात करी के आ नगरीमां कांइ माल नथी सत्वविनानी निर्धन लोकोये करी भरेली छे कारण के अमारा रत्न कंबलना



श्रीकृष्णअने जरासधनु युद्ध

लेवावाला पण कोइ आवा शहेरमां निकल्या नही अनें द्वारिकामां यादवो वसे छे ते महा सुखी छे एवीरीते द्वारिका नगरीनी प्रशंसा जरासधें सांभलीने विचार्युं के महारा वैरी हजी लगण जीवता छे माटे हवे एनो नाश करु, एम चितवी सेना लइ युद्ध करवा चाल्यो एवामां नारद रूपीये जइ श्रीकृष्णने कह्यु के तमारे चेतवु होय तो चेतजो जरासंध तमारा उपर चडी आवें छे ते सांभली श्रीकृष्ण पण सेना तयार करी लडवाने तेनी सामे चाल्या तेणे पंचासरा गामनी पासे आवी पडाव दीधो मुकाम कर्युं अने जरासंधनुं लश्कर पण पंचासरा गामथी चार योजन दूर आवी पोहोच्यु तेमां जरासंधनुं लश्कर चक्रव्यूहना न्यायथी अने श्रीकृष्णनु लश्कर गरुडव्यूहना न्यायथी एवा आकारे आवी पडाव दीधो ते बेहु लश्करने मांहोमांहे महोटुं युद्ध थयुं लाखो गमे सुभटो मरण पाम्या छे इत्यादि विशेष अधिकार श्रीनेमिनाथचरित्रादि अनेक ग्रंथोथी जाणी लेवो, आंही ग्रथगौरवना भयथी लखता नथी हवे ते बेहु तरफवाला सुभटोनी लडाइ चालतां श्रीकृष्णने जीतवो आपणने कठण थइ पडशे एवु जरासंधे विचारीने कोइ उपाय न सूजतां जरा नामे एक वाण हतो ते श्रीकृष्णनी सेना उपर नाख्यो तेथी श्रीकृष्णनी सर्व सेना मुखें लोही वमती मूर्छा पामी गइ, तेवारे श्रीनेमिनाथजीना कहेवाथी श्रीकृष्णे अठम तप करी धरणेंद्रने आराध्यो धरणेंद्रे आवीनें आगामिक तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा श्रीकृष्णने आपी तिहां मंगल निमित्ते श्रीकृष्णजीये सुस्थित देवे आपेलो शंख वजाव्यो अने धरणेंद्रे आपेला बिंबनुं स्थापन कर्युं तिहां श्रीशंखेश्वर एवे नामे तीर्थ थयु ते आज लगण मोजुद छे कोइक आचार्य वली एम पण कहे छे के श्रीकृष्णजी त्रण दिवस उपवास करी बेठा ते त्रण दिवस पर्यंत श्रीनेमि

नाथ स्वामीये संग्राम कर्यो वली इन्द्र महाराजे मातली नामा सारथी सहित रथ मोकल्यो तेना उपर चढीने नेमिनाथजीये शंख वजाव्यो तेथी जरासंधनी सेना शिथिल थइ गइ, अने त्रण दिवस श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथनी मूर्तिनो न्हवण पोतानी सेनामां श्रीकृष्णे छांट्यु तेथी श्रीकृष्णजीनी सेना सज्ज थइ छेवट कोइ पण रीते श्रीकृष्णने जीतवानो उपाय जरासंधने सूज्यो नही तेवारे श्रीकृष्णने मारवा सारु जरासंधे पोतानुं चक्र तेना उपर चलाव्युं तेथी कांइ श्रीकृष्णनुं बगड्युं नही पण उलटुं ते चक्र श्रीकृष्णने त्रण प्रदक्षिणा आपीने तेमना हाथमा आवी बेठुं पछी तेज चक्र लइ श्रीकृष्णे जरासंध उपर चलाव्युं तेणे जरासंधनुं मस्तक छेदी नाख्युं ते वखत देवताओ आकाशमा देवदुंदुभी वगाडीने बोल्या जे श्रीकृष्ण नवमो वासुदेव थयो, ते वात सांभली समस्त जरासंधनी सेना आवीने श्रीकृष्णजीनी सेवामा हाजर थइ पछी श्रीकृष्ण द्वारिकामा आव्या सुख समाधिमा त्रण खंडनुं राज्य भोगवता तिहां रह्या छे बहोतेर कुलकोडी यादव द्वारिकामां रहे छे अने साठ कुलकोडी यादवो द्वारिकानी बाहेर रहे छे तथा महापुरुष समुद्रविजयादिक दशे दसार तथा बलदेवादिक पांच महावीर एटले महोटा योधा, तेमज उग्रसेनादिक सोल हजार राजाओ तथा प्रद्युम्नादिक साडा त्रणक्रोड कुमर तथा सांबादिक सोल हजार दुर्दांत कुमर अने वीरसेन प्रमुख एकवीश हजार वीर तथा महासेनप्रमुख छपन्न हजार बलवंत राजाओ ए सर्व द्वारिकामां वसे छे वली रुक्मिणीप्रमुख बत्रीश हजार राणीओ तथा अनंगसेना प्रमुख अनेक गणिकाओ एवा परिवार सहित परवर्यो थको महोटुं राज्य श्रीकृष्णजी करे छे एवा अवसरमां इन्द्रमहाराजे श्रीनेमिनाथजीना बलनी प्रशंसा करी तेवारे ते सभामां कोइ मिथ्यात्वी देव इन्द्रमहाराजना वचनने

नही मानतो थको गिरनार पर्वत उपर आव्यो तेणें त्यां सुरधरा नामें नवीन नगर वसाव्युं तेमां ते देवता पोते आवीने मनुष्यनुं रूप धारण करीने रह्यो अने द्वारिका नगरीना रहे नारा लोकोने नित्यप्रत्ये घणुंज दुःख देवा लाग्यो, उपद्रव करवा लाग्यो, ए वात सांभली ने महा अभिमाननो धरनार एवो अनादृष्टि ते देवने पकडवा सारुं गिरनारनी उपर ते देवे वसावेला नगरनी उपर चडी आव्यो, तेने देवताये देव मायाये करी जीती लीधो अने बांधीने पोताना नगरमां लइ गयो, ए वात सांभलीने समुद्रविजयजी तेनी साथे लडवाने माटे जवाने तयार थया तेवारे राम कृष्ण बे भाइए समुद्रविजयने वर्ज्यो, अने पोते लडाइ करवा सारु गया तेने पण देवताये हरावीने पोतानां नगरमां लइ जइ बंदीखानामां नाखी दीधा, तेवारे द्वारिकामां हाहाकल्लोल थइ रह्यो अने लोको कहेवा लाग्या के राम कृष्ण बे भाइ हारी गया तो हवे आपणी रक्षा कोण करी शकशे? त्यार पछी सत्यभामाजी प्रमुख स्त्रीउंये जइ श्रीनेमनाथजीने कह्युं के तमे अनंत बली छतां तमारा भाइने शत्रु दुःख आपे छे तो एथी तमारी लाज जाय छे तेवारे नेमीश्वर भगवान एकला रथमां बेशीने शत्रुना नगरने चारे बाजु रथ फेरव्यो तेथी कांगरासहित सर्व कोट पडी गयो तेवारे देवें सिंह विकुर्व्या ते जोइ नेमिनाथें धनुष्यनो टंकारव करीने सर्व सिंहोने भगावी दीधा तेवारे देवताये अंधकार करी मूक्यो, भगवाने उद्योतवालो बाण मूकीने अंधकारनो नाश कर्यो, तेवारे देवताये मेघ वरसाव्यो, भगवाने वायरो चलावीने मेघने दूर कर्यो, तेवारे देवतायें अंगरानो वर्षाद वरसाव्यो, तेने भगवाने पाणीथी बूझावी नाख्यो, पछी भगवाने मोह बाण मूक्युं तेथी सर्व शत्रु मूर्छा खाइने पडी गया, महादुःखी थया, तेवारे इंद्रमहाराज तिहां आवीने विनं

ति करवा लाग्यो, के महाराज ! ए अज्ञानी देव छे ते आपना अनंत बलने शु जाणे? ते वारे नगवाने कृपा करीने देवताने छोडी मूक्यो पछी ते देवतायें महोटा महोत्सव सहित श्री कृष्णादिकने द्वारिकामां मोकली दीधा पोते नगवानने नमीने पोताने स्थानके गयो हवे अनुक्रमे श्रीनेमीश्वर नगवान त्रणसे वर्षना थया पण परणवानी इच्छा राखे नही तेवारे शिवादेवी जीये कह्यु के हे पुत्र ! तु एक विवाह करीने महारा मनोरथ पूरण कर तेवारे नगवान बोल्या हे माताजी ! कोइ महारा योग्य कन्या हशे तो हु परणीश ते वात सांजली माताजी मौन धारण करी रह्यां हवे श्रीसमुद्रविजयकुलसणगार, शिवादेवी मात मल्हार, एक दंढनेमि, बीजा दृढनेमि, त्रीजा अतिनेमि, चोथा अरिष्टनेमि अने पांचमां रहनेमि ए पांच कुमर मांहेला श्रीअरिष्टनेमि कुमर ते लघुवय सरखा सरखी जोडि, मनतणे कोडि, घणा कुमरे परवर्या लीलाये रमता नमता श्रीकृष्णनी आयुध शालाये आव्या, आयुध जोवा लाग्या, तेवारे रक्षपाल बोल्यो तमे लघु बालक छो, माटे अलगा रहो, एनो स्पर्श करवो पण दोहिलो छे, छोकरडे छाश न पीवाय, महोटुं कार्य ते महोटाथाज थाय, ते न सांजलतां श्रीअरिष्टनेमि कुमारे श्रीकृष्णना चक्रने उपाडी कुंनारना चक्रनी पेरे नमाव्युं तथा सारग धनुष्य उपाडीने तेने कमलना नालनी पेरे नमाव्यु तथा कौमोदकी नामे गदाने लाकडीनी पेठे उपाडीने पोताना खांधा उपर राखी हवे जेवारे पांचजन्य शंख पूर्यो तेवारे तेनो शब्द सांजलीने त्रण भुवन कंप्या, पर्वतना शृंग तूटी तूटीने पडवा लाग्या, समुद्रजल उछलता हवा, हस्ती तुरगमादिकना बंधन तूटी पड्या तेथी सर्व नागी गया, लोक सर्व बहेरा थइ गया, धरती धूजवा लागी, नगरनो कोट पण धूज्यो, समुद्र उछल्यो, दिग्गजत्रास पाम्या, यादव

चित्र ६४





ए स्त्रीउ साथे ते वली श्यो वचनविचार करवो एम चिंति हा ना कांइ न कही, तेंवारे स्त्रीउ
कहेवालागी के मान्यो मान्यो विवाह, सहुने थयो उछाह, श्रीसमुद्रविजय शिवादेवी राणीने
तिणीताल, आपें वधामणी उजमाल ॥ हवे श्रीकृष्ण नरिंद, मनने आणंद, उग्रसेन राजान,
पासे बहुमान, मागे राजीमती कन्या, सतीशिरोमणि धन्या, उग्रसेन पभणे सघले साज,
इहां आणो ते वरराज, तो देउ कन्या तास, जग विस्तरे जश वास ॥ हवे समुद्रविजय
राजा, शिवादेवी राणी ज्योतषी कोष्टुकना मुखथी श्रावण सुदि छठ्ठनुं लगन जाणी, वांटे
वधामणी, तेडावे सगासणीजा जणी, मांडे मोहोटो आडंबर, धवल मंगल गाये घर घर,
पोषे जल जले पकवान, जुगते चलावे जान ॥ तद्यथा ॥ शोल हजार मुकुटबद्ध छत्राधिपति
राजान, बेतालीश लाख हस्ती ऐरावतसमान ॥ बेतालीश लाख घोडा, सुवर्ण साजतेने स
जोडा ॥ बेतालीश लाख रथ, शोभा पामता पथ, अडतालीश कोडी पायक, शत्रुदल घा
यक, नव कोडी सामान्य तुरगम, एक एकथी अनोपम ॥ छन्नु कोडी चिराकदार, नव
कोडी छगलियादार ॥ बार कोडी वाजित्र वाजे, अंबर गाजे, सांबकुमरप्रमुख शाठ सहस्र
दुर्दांत कुमर ते पारसीक जातिने घोडे चढ्या, प्रद्युम्नप्रमुख पंचोतेर सहस्र कुमर महाधीर
ते हयरेवा जातिने अश्वे आरूढ थया, अरिमर्दनप्रमुख पांच लाख कुमर ते वहोली जा
तिने अश्वे चढ्या, वीरप्रमुख सात लाख कुमर ते पाणी पंथा जातिने तुरगे चढ्या, साग
रचंद्रप्रमुख एक लाख कुमर ते कंबोजा जातिने अश्वे चढ्या, अनाधृष्टिप्रमुख तेर लाख
कुमर रेवाधिरूढ थया, पालकप्रमुख सात लाख कुमर अष्टमगल जातिने अश्वे चढ्या, दं
... जातिने अश्वे चढ्या, रहनेमिप्रमुख नव लाख कु

ए स्त्रीउं साथे ते वली श्यो वचनविचार करवो एम चिंति हा ना कांइ न कही, तेंवारे स्त्रीउं कहेवालागी के मान्यो मान्यो विवाह, सहुने थयो उछाह, श्रीसमुद्रविजय शिवादेवी राणीने तिणीताल, आपें वधामणी उजमाल ॥ हवे श्रीकृष्ण नरिंद, मनने आणंद, उग्रसेन राजान, पासे बहुमान, मागे राजीमती कन्या, सतीशिरोमणि धन्या, उग्रसेन पभणे सघले साज, इहां आणो ते वरराज, तो देउं कन्या तास, जग विस्तरे जश वास ॥ हवे समुद्रविजय राजा, शिवादेवी राणी ज्योतषी कोष्टुकना मुखथी श्रावण सुदि छठ्ठनुं लगन जाणी, वांटें वधामणी, तेडावे सगासणीजा नणी, मांडे मोहोटो आडंबर, धवल मंगल गाये घर घर, पोषे नल नले पकवान, जुगते चलावे जान ॥ तद्यथा ॥ शोल हजार मुकुटबद्ध छत्राधिपति राजान, बेतालीश लाख हस्ती ऐरावतसमान ॥ बेतालीश लाख घोडा, सुवर्ण साजतेने स जोडा ॥ बेतालीश लाख रथ, शोभा पामता पथ, अडतालीश कोडी पायक, शत्रुदल घा यक, नव कोडी सामान्य तुरगम, एक एकथी अनोपम ॥ छन्नु कोडी चिराकदार, नव कोडी छागलियादार ॥ बार कोडी वाजित्र वाजे, अंबर गाजे, सांबकुमरप्रमुख शाठ सहस्र दुर्दांत कुमर ते पारसीक जातिने घोडे चढया, प्रद्युम्नप्रमुख पंचोतेर सहस्र कुमर महाधीर ते हयरेवा जातिने अश्वे आरूढ थया, अरिमर्दनप्रमुख पांच लाख कुमर ते वहोली जा तिने अश्वे चढया, वीरप्रमुख सात लाख कुमर ते पाणी पंथा जातिने तुरगे चढया, साग रचंद्रप्रमुख एक लाख कुमर ते कंबोजा जातिने अश्वे चढया, अनाधृष्टिप्रमुख तेर लाख कुमर रेवाधिरूढ थया, पालकप्रमुख सात लाख कुमर अष्टमंगल जातिने अश्वे चढया, दं ढनेमिप्रमुख बार लाख कुमर रेमगली जातिने अश्वे चढया, रहनेमिप्रमुख नव लाख कु

शणगार करावचा लागा पण नेमजी विनयवान ठे माटे मातापितानो दूर्पन्नग करवाना न यथी जो पण निस्पृही ठे तोपण मौन धारण करी रह्या हवे जान निकली ते वखत अनेक यादवोना क्रोडो गमे मनुष्य साथे चाल्या, सर्व राजाउ साथे चाल्या, अनेक वाजा वाजता, हाथी उपर वेठा, चमर ढलता, देवदेवी आकाशमां चालता, स्त्रीयो पृथ्वी उपर गीत गाते थके चालता चालता उग्रसेनना महेल पासे जान आवी तेवारे नेमजी सारथीने पूछवा लाग्या के आ महेल कोनो ठे, सारथी वोल्यो तमारा श्वसुरानो महेल ठे, आंही विवाह मनाववा तथा जान सवधि युक्ति बीजी प्रत उपरथी लखीये ठैये जेवारे वसत मास आव्यो,तेवारे बत्रीश हजार राणी सहित श्रीकृष्ण वासुदेव श्रीनेमिकुमरने साथे लइ वसतक्रीडा करवा वनमां आव्या तिहां स त्यन्नामादिक राणीयोने नेमिकुमरने विवाह मनाववानो सन्कारी कृष्ण स्थानांतरे रह्या, हवे ते अनेक स्त्रीउ मली यकी श्रीनेमिकुमरने केसर, गुलाव प्रमुख सुगध नीर ढाटे, फूलनो दडो हृदयन्नणी नाखे, कटाक्ष वाणे वींधे, कामचेष्टापूर्वक जल ढाटे, एम घणा प्रकारे हास्य करीने कहेवा लागी के हे देवर! विवाह मानो अने एक स्त्रीतो परणो, जो स्त्रीनुं नरण पोपण तमाराथी न थाय तो तमारो न्नाइ बत्रीश हजार स्त्रीयोनो नरण पोपण करे ठे, तेम तमारी एक स्त्रीनु पण पोपण करशे? तेनी चिता करशो नही, पण स्त्री जरुर परणो, स्त्री विना पुरुप शोन्ने नही, कोइ विश्वास न करे, कोइ माने नही, वली अगनी शुश्रूपा कोण करे, प्राहुणा प्रहीने कोण साचवे, ते माटे पाणिग्रहण अगीकार करो, मन मानती कन्या वरो, ए विनति मानो, वधे जेम वानो, नही तर पण नही टूटो, जोर करी जूवो, अमने वश आव्या आज, करवी हवे केही लाज एवा वचन सांन्नली नेमीश्वर नीचु जोइ रह्या, जे

सहित

त्यक्तामादिक राणीयोने नेमिकुमरने विवाह मनाववानो सन

ते अनेक स्त्रीउं मली थकी श्रीनेमिकुमरने केसर, गुलाब प्रमुख सुगंध नीर छांटे, फूलनो दडो हृदयकणी नाखे, कटाक्ष बाणे वींधे, कामचेष्टापूर्वक जल छांटे, एम घणा प्रकारे हास्य करीने कहेवा लागी के हे देवर! विवाह मानो अने एक स्त्रीतो परणो, जो स्त्रीनुं नरण पोषण तमाराथी न थाय तो तमारो जाइ बत्रीश हजार स्त्रीयोनो नरण पोषण करे छे, तेम तमारी एक स्त्रीनु पण पोषण करशे? तेनी चिंता करशो नही, पण स्त्री जरुर परणो, स्त्री विना पुरुष शोभे नही, कोइ विश्वास न करे, कोइ माने नही, वली अगनी शुश्रूषा कोण करे, प्राहुणा प्रहीने कोण साचवे, ते माटे पाणिग्रहण अंगीकार करो, मन मानती कन्या वरो, ए विनति मानो, वधे जेम वानो, नही तर पण नही छूटो, जोर करी जूगो, अमने वश आव्या आज, करवी हवे केही लाज एवा वचन सांभली नेमीश्वर नीचु जोइ रह्या, जे

कृष्णजी हर्ष पामी पोताने घरे पोहोता हवे एक दिवस शिवादेवीजीये नेमिकुमरने निरागी जाणीने गोपीयोने भलामण करी के तमे वसंत रमवाने माटे नेमीश्वरने तेडी जाउ अने एने जेम तेम सरागी करी विवाह करवानो मनावो तेवारे सत्यभामाप्रमुख सोल हजार गोपीयो मलीने श्रीनेमीश्वरने सहस्राम्र वनमां लइ जइ विचित्र प्रकारना वचनो केहेवा लागी तिहां एक बोली तमे शामाटे परणता नथी तमारो भाइ श्रीकृष्ण सोल हजार स्त्रीयो परण्यो छे अने तमे एक पण परणता नथी तेनुं कारण शुं? तेवारे बीजी बोली हे भला पुरुष! आवी रीतें युवानपणुं कां फोकट गमावो छो, परणवामां घणी मजा छे, त्रीजी बोली परण्याविना मोक्ष पण जइ शकशो नही, केमके ऋषभादिक तीर्थंकर पण सर्व परणीने मोक्ष गया छे तो वली तमे ते कांइ नवा मोक्ष जवावाला थया छो, एक बोली एतो मोल्यो याशे परणीने शुं करशे, सत्यभामा बोली जो नही माने तो एनो पल्लो पकडो, तेवारे लक्ष्मणा बोली ए पूज्य छे माटे एनी साथे जबराइ करवी नही, पण परणवुं तो अवश्य जोइयेज, वली सत्यभामाजी बोली एनी पासे कांइ सामर्थ्य नथी कारणके जो स्त्री परणे तो तेने पालवानुं काम मुश्केल छे ते एनाथी बनी शके नही तथापि जो परणी लेशे तो सोल हजारने एनो भाइ पाले छे तेनी साथें एक एनी पण पालशे एवी वातो सांभलीने नेमिनाथजी कांइक हस्या तेवारे सर्व गोपीयो तालोटा आपीने बोलवा लागी जे एणे विवाह मान्यो, मातापिताये पण जाणुं जे विवाह मान्य कर्यो एवुं समजीने शिवादेवीना केहेवाथी श्रीकृष्ण तथा समुद्रविजयजी प्रमुख राजायें उग्रसेन राजाने घरे जइने राजीमती कन्यानी मागणी करी तेणे पण खुसीथी कह्युं के सुखेथी परणावो पछी वेहु जणाये विवाहनो महोत्सव थवा मांड्यो परणवा माटें



नेमीश्वर भगवान् वसंतक्रीडा करवा गया तेनु चित्र

कृष्णजी हर्ष पामी पोताने घरे पोहोता हवे एक दिवस शिवादेवीजीये नेमिकुमरने निरागी जाणीने गोपीयोने नलामण करी के तमे वसंत रमवाने माटे नेमीश्वरने तेडी जाउ अने एने जेम तेम सरागी करी विवाह करवानो मनावो तेवारें सत्यभामाप्रमुख सोल हजार गोपीयो मलीने श्रीनेमीश्वरने सहस्राम्र वनमां लइ जइ विचित्र प्रकारना वचनो कहेवा लागी तिहां एक वोली तमे शामाटे परणता नथी तमारो भाइ श्रीकृष्ण सोल हजार स्त्रीयो परण्यो छे अने तमे एक पण परणता नथी तेनुं कारण शुं? तेवारे बीजी वोली हे भला पुरुष! आवी रीतें युवानपणुं कां फोकट गमावो छो, परणवामां घणी मजा छे, त्रीजी वोली परण्याविना मोक्ष पण जइ शकशो नही, केमके ऋषभादिक तीर्थंकर पण सर्व परणीने मोक्ष गया छे तो वली तमे ते कांइ नवा मोक्ष जवावाला थया छो, एक वोली एतो मोल्यो थाशे परणीने शुं करशे, सत्यभामा बोली जो नही माने तो एनो पल्लो पकडो, तेवारे लक्ष्मणा वोली ए पूज्य छे माटे एनी साथे जबराइ करवी नही, पण परणवुं तो अवश्य जोइयेज, वली सत्यभामाजी वोली एनी पासे कांइ सामर्थ्य नथी कारणके जो स्त्री परणे तो तेने पालवानुं काम मुश्केल छे ते एनाथी बनी शके नही तथापि जो परणी लेशे तो सोल हजारने एनो भाइ पाले छे तेनी साथें एक एनी पण पालशे एवी वातो सांभलीने नेमिनाथजी कांइक हस्या तेवारे सर्व गोपीयो तालोटा आपीने बोलवा लागी जे एणे विवाह मान्यो, मातापिताये पण जाण्युं जे विवाह मान्य कर्यो एवुं समजीने शिवादेवीना कहेवाथी श्रीकृष्ण तथा समुद्रविजयजी प्रमुख राजायें उग्रसेन राजाने घरे जइने राजीमती कन्यानी मागणी करी तेणे पण खुसीथी कह्यु के सुखेथी परणावो पछी वेहु जगाये विवाहनो महोत्सव थवा माम्यो परणवा माटें

सर्वे मूर्छांगत जेवा थइ गया, सर्व बीक पामवा लाग्या, श्रीकृष्ण, बलजइ, कंपता हवा अने नयाकुल थया थका चितववा लाग्या जे आ ते कोण बलवत छे? के जेणे सर्व पृथ्वी डोल पमाडी एवी रीतें तेमने कांइ पण जप न आव्यो, तेथी तरत तिहां आव्या अने पूछ करी, ते वारे सर्वे बोल्या जे श्रीअरिष्टनेमि कुमारनो ए बल छे, ते सांजली चमत्कार पाम्या पछी श्री कृष्णे कह्यु के हे जाइ! आपणे बलपरीक्षा करीये, तो वचित शीजे तेवारे नेमिकुमर बोल्या के जे जूमि लुंठनादिक बाह्य खेल करवु, ते उत्तम नरने योग्य नही, माटे माहोमाहे एकेकनी जुजावालीने बलपरीक्षा करियें, ते वचन श्रीकृष्णे प्रमाण करी पोतानी जुजा लंबावीने कह्यु के, आ महारी बाहु नमाडो तेवारे नेमिकुमारें कमलनालनी पेरे एक आगुलीये श्रीकृष्णनी बाहु नमावी दीधी पछी श्रीनेमिकुमारे पोतानी बाहु लवावी तिहां कृष्ण घणु बल करी वान रनी पेरे वलगीने हिच्या तेवारे श्रीनेमिकुमर बोल्या के हे कृष्णजी! तमोने माता देवकीयें पालणे पोढाडीने रमाड्या नही, ते माटे हवे हु तमने हिचोलु, एम कहीने श्रीकृष्णने हि ंडोलानी माफक हिचोल्या एरीते जेम जुगारी दाव हारे, तेम कृष्ण हारी गया एवुं जोइने बलजइजी बोल्या के हे जाइ ज्रमरने जारे तरुशाखा नमे नही, पछी कृष्ण तथा बलजइजी चितातुर थका चितवे छे के ए पितराइ जाइ आपणाथी अधिक बलवान् छे माटे आपणुं सर्व राज्य लइ मूकशे कीडी तीतर न्याय करशे एटलामां आकाशे देव वाणी थइ के अहो कृष्ण वासुदेव तमे चिता म करशो एतो नेमीश्वर जगवान, बाल ब्रह्मचारी, बावीशमां तीर्थ कर एनु अतुली बल छे तथापि तमारो राज्य लेवानी एने गरज नथी अने स्त्री परणवानी पण गरज नथी ए तो परण्या विनाज ससारनो त्याग करी दिक्षा लेशे ए वचन सांजली



नेमीश्वर भगवाननी जान

मर चंद्रप्रना जातिने अश्वे चढया, महानेमिप्रमुख पन्नर लाख कुमर अग्नि पंथा जातिने अश्वे चढया, एवा यादव कुमर, जोगी जमर, जेहना जाणीता कुल, जालानुं वल, आगलथी चाले, थोडुं वोले, थोडुं ठाकुरने नमे, दर्शनीने नमे, परनारी सहोदर, वाचा अविचल, शरणागत साधार, सूर वीर दातार, फूंझार रणांगण धीर, रिपुहृदय हल सीर, कसबोइ गरकाव, केशरीए पागे, लीधीए वागे, कांधाल, मूछाल, जलजला जूपाल, आवे उमह्यां, पंथे वह्यां, वली वे कोडी सेजवाला, चोराशी कोडी स्त्री गीत गान करे, छपन्न कोडी अलंब धजा, वार कोडी जाट विरुदावली वोले, वार कोडी सुखासन पालखी, पन्नर लाख खचर इश्वे जत्या, त्रण लाख श्रीछत्र, वेतालीश लाख रथ, त्रण कोडि चामर ढले, एंसी लाख नीसान वाजे, सत्तर लाख ढोल वाजे, छन्नु कोडी जेरी वाजे, नव लाख मादल वाजे, पीस्तालीश कोडी छडीदार, शाठ कोडी सुरहीया, वडवडा वहीया, मंत्रीश्वर प्रधान, कहिये केता अनिधान, नवाणु कोडी सामान्य वहिल, यइ इम जाननी चहिल पहिल, हवे वर राजाने सर्वौपधिनीरे कराव्युं स्नान, उजुआव्युं विशेपे वान, माताये जालस्थले कीधो तिलक, अक्षतनो प्रतिष्ठयो उपर पदक, नव कोडीनो मुकुट, पच्चाश कोडीनो नवग्रहो, वार कोडीना वे कुंमल, अडतालीश कोडीनुं रत्ने जडित तिलक, पच्चीश कोडीनी मुद्रिका, पच्चीश कोडीना अनेक रत्न जडित हार, वे लाख कोडीनी रत्नजडीत शांकली, जनोइनी पेरे पहेरे, पन्नर कोडीनी चपकलि, देवदत्त अमुलिक पागडी, पच्चीश लाख कोडीनी कवाइ, एकाणुं कोडीना वे वहिरखां, पीस्तालीश कोडीना वे वाजुवंध, सत्तावीश लाखनो कणदोरो, पच्चीश कोडीनो रत्नजडित कणो, त्रीश कोडीनी वाणही पगरखां, छन्नु कोडीनो अनेकरत्नजडित श्रीफल रूप फूलदडो,

अमूलक वस्त्र पहेरावी, सकल सणगार करावी, आंख आंजी, मुख माजी, सिर धार्यो खूंप, शोने सुरूप, आण्यो गजराज, सुवर्णमय साज, मेघाम्बर छत्र, प्रतिष्ठयो पवित्र, चढयो वर राज, जाणे इन्द्रमहाराज, के मूर्त्तिवतो कामराज, शोना समाज, पसर्यो तूर्यमगलनिनाद, गह गह्यो स्त्रीजनसाद, आकाशे अनेक देव देवांगना इन्द्र इन्द्राणी रंजा अपत्सरा आवे, मनने नावे, किन्नरी गीत गाये, सरस्वती वीणा वाये, तूंबर गंधर्व नाचे, सहु मन साचे, कृष्ण बल नद दशे दशार उमावे, जीर्ण डुर्ग नणी जान आवे, जेम ज्येष्ठमास उद्यान, साजन जनने अधिको मान, याचक जनने देता दान, हुउ धवल मगल उच्चार, आवीउ वर तोरण बार, जोये जोवणहार, धन्य धन्य राजीमती नार, जेणीये वर लाधो श्रीनेमिकुमार, हवे राजीमती गवाक्षमां वेठी थकी सखीयोने कहे छे के महारो नर्त्तार कहेवो छे तेवारे सखीयो बोली आ हाथी उ पर बेठा थका महाऋद्धिसहित चाल्या आवे छे ते नेमजी छे तेवारे प्रज्ञुनु रूप देखी मोह पामीने विचारवा लागी के महारो महोटो नाग्योदय थयुं जे नेमजी जेवो वर आवीने मुने परणशे एम विचारती चन्द्राननना, मृगलोचना सखीसहित वार्त्ता करतां सखीये कह्यु के, ए वर सर्वगुणसपूर्ण छे पण एक अवगुण ए छे जे एनुं श्यामवर्ण छे, वरतो गौरो जोइये, राजीमती बोली एतो दूधमांहेथी पूरा काढवा मांड्या श्यामवस्तु मांहे तो घणो गुण छे, नमि, चित्रा वेली, अगर, कस्तूरी, मेघ, कीकी, केश, कशोटीनु पाषाण, मसी, रात्रि, इत्यादिक वस्तु श्याम होय छे ते जगतमां नली कहेवाय छे तथा धोली वस्तु कपूर छे, तेने मरी अगाराष्ठ मेल छे, चित्रा ने रोहिणी श्याम होय तो शोने, नि केवल गौर तो लुण, अस्थि, हिम, स्वेत कुष्ट, एमां हे शु वखाणवा योग्य छे ? श्यामले वरणे वरप्रशंस्य देखी लोचन अमीय नराणी, हृदय



भोजन आपवा माटे एकठा करेला चतुष्पद जीवो तथा पाजरामा रहेला पक्षीओ तेमने भगवान् जूदा करी मूके छे

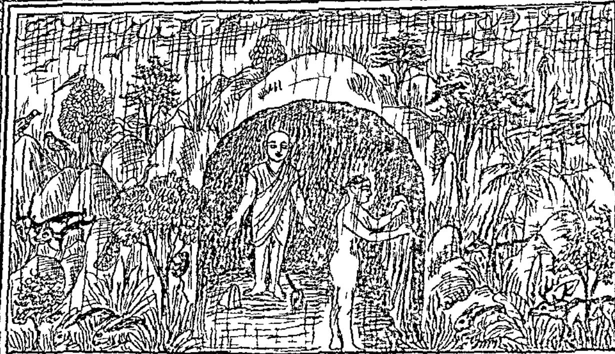
कमल उल्लस्यां, मनना मनोरथ रूप वेली प्रसरति हवी ॥ ॥ एवामां राजीमतीनी ज
मणी आंख फूरकी तेवारे शोच करवा लागी अने जाण्युं जे सर्वथा प्रभुनो संयोग न मले,
पछी सखी प्रत्ये कहेवा लागी के म्हारो जमणो अंग फूरके छे ते सांभली सखी बोली तुं
मगलमां अपमंगल कां बोले छे एवामां प्रभुयें पण तोरणे आवतां थकां मार्गमां चतुष्पदा
दिक जीवे भर्यां वाडा दीठां तथा पखीये भरेला पांजरा दीठां तथा घणा जलचर जीव पा
णीविना ऊचा ऊचा कुमी रह्या छे तथा थलचरमां हरिण, सांबर, रोज, गेटा, मेंढा, ससला,
प्रमुख अनेक जातिना जीव तथा खेचरमां कूर्कूट, तीतर, मोर, सारसना जोडला, राजहस,
कोयल, वगलां, सूडा, इत्यादिक जीवो एकठा कर्यां छे, तेनी पोकार सांभली तथा एवामां एक
हरिण अने हरिणली कोटें कोट भरावी विलाप करतां प्रभुने विनति करे छे के हे प्रभु ! अ
मने आ कष्टमांहेथी उगार, अमे कांइ अपराध कीधो नथी, तृणखला मुखे दीये छैये, हे अनाथ
नाथ ! प्रभु, राख राख ते जोइ श्रीनेमिकुमरे हस्ति मावतकने पूछ्युं के ए जीवोने शे कारणे रो
की राख्या छे, तेवारे मावत वोल्यो तुमारा विवाह गोरव भोजनार्थे राख्या छे ते सांभली प्रभु
वोल्या धिक् धिक् ए विवाहे सखु मने आ नरकना मूलरूप विवाह जोतो नथी प्रभु दीनद
याल सर्व जीवायोनीने छोडावी हस्तिथकी ऊतरी रथे वेसी पाछा वल्या, तेवारे श्रीसमुद्रवि
जय राजा, शिवा देवी राणी, कृष्णवासुदेव, अने बलभद्रप्रमुख छप्पन्नकुलकोडि यादव रथ
अटकाववाने आडा फर्या परंतु प्रभु कोइना वार्या वल्या नही अने एवुं वोल्या के आ सर्व
जीवो वंधनमां वांध्यां थका महादुःख देखे छे तेम हुं बंधाउं नही अने संसारमां पण रहुं
नही. हाथीउ वाधे जाल्या न जाय, तिहां जायरे जाय यादव राय ॥ एवी वार्त्ता सांभली रा

जीमती धरणी ढली पडी क्षण एकें सचेतन थइ तेवारें मुखथकी बोली के हे हे हे प्रभु तमे हर्षस्थानकें ए श्यो विषवाद उपजाव्यो ? एम कहेती हार त्रोडती, वलय मोडती आभ रण नाखती, वस्त्र मांजती, किंकणीकलाप छोडती, मस्तक फोडती, कुंतलकलाप रोलती, भूमि लोटती, साजन बाष्पजलें भूमि सींचती, सखीजन अपमानती, जेम थोडा पाणी माहे माछली टलवले तेम विकल थाती, विरहमाती, क्षणे रोवे, क्षणे जोवे, क्षणे आक्रंद करे, क्षणे नीसास भरे, क्षणे मूंझे, क्षणे बूजे, क्षणे धूजे, क्षणे न सूजे, वली अनेक उलभा पूर्वक वचन कहे छे के हा यादवकुलदिनकर, हा करुणासागर, हे शरणागतवत्सल, हुं अबलाने एम एकली मूकवी तुमने न घटे, जो सर्वजग जीवनी दया पालो छो तो मुज उपर कां दया न आणी, माटे अरे निष्ठुर निर्लज्ज हैडातने प्रभु मूकी गया तो हवे तु शतखण्ड कां नथी थातो ? हवे तुं श्यो लाहो लइश एवा राजीमतीना विलाप सांभली सखीवर्ग, सज्जनवर्ग, मातापितादिक क हेवा लाग्या के ए निस्पृहि छु श्यो राग करवो तुं एटला विलाप शावास्ते करे छे तहारो कांइ विवाह थयो नथी माटे ए कालो कुरूपो वर गयो तो शुं थयुं ताहारे वली बीजो रूपवान वर मलशे माटे हवे अन्य उत्तम वर वरो तेवारे राजीमती बोली ए वचन सांभलवा योग्य नहिं, तमे एवा वचन मुजने म कहो, म्हारे तो श्रीनेमिनाथना चरणनुं शरण छे, काली तो कस्तुरी पण थाय छे ते गुणवान छे माटे तेनु मूल्य घणुं थाय छे अने जे सपेत लसण थाय छे ते निरगुणी छे माटे तेनो कोइ भाव पण पूछतो नथी तो ए प्रभुजीयें मारो हाथ न साह्यो पण हु एनो हाथ म्हारे माथे मूकावीश ए प्रभुने नामे हु सौभाग्यवती छुं माटे जो एणे मुजने नही परणी तो हु एनी चेली थइने एनी पछवाडे फरीश पण बीजो वर प

रणीश नही एम कही वली गिरनारजीने कहेवा लागी के हे गिरनार मुजने त्यागीने नेमजी जो ताहारी पासे आवे तो तु एने पेसवा आपीश नही वली एवो उलंनो आपजे के तु अबलाने दुखणी करीने कां आव्यो अथवा राजलक्ष्मी छोडी दीधी तो जाणु जे एतो त्यागवावालानी रीती छे इत्यादिक विकल्प करती, शील पालती थकी पोताना पिताना घरमां रहे छे एवामां रथनेमि राजीमतीने कहेवा लाग्यो के नेमजीये तुजने परणी नही अने हु नेमजीनो भाइ छुं माटे हवे तुं मनेज परण तेवारे राजीमती बोली अरे वमेला आहारने खावानी तु शु चाहना राखे छे? हुं तो एक श्रीनेमीश्वर विना बीजानी चाहना करती नथी एवु सांभली रथनेमि विलखो थइ बेशी रह्यो ॥ हवे अरिहंत श्रीअरिष्टनेमि तोरणथी पाछा फरी घरे आव्या बधा मली त्रणशे वर्ष कुमारावस्थाये घरमां रह्या पछी लोकांतिक देवो आवी बोल्या हे प्रभु! धर्म प्रवर्त्तावो नेमिनाथ स्वामीये अवधिज्ञानथी पोताने दीक्षानो अवसर जाणी वरसी दान देवा मांड्यु ॥ १७२ ॥ ॥ हवे आ वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजुं पखवाडियुं, श्रावणशुदि छठने दिवसे पहेला पहोरथी पूर्वदिनमां अर्थात् मध्यान्ह पहेलां, उत्तर कुरानामा पालखीमां बेशी ते पालखी देव तथा मनुष्ये उपाडी यावत् द्वारिका नगरीनी वचमांथी थइने जिहा रेवत नामा उद्यान छे तिहां आवीने अशोक वृक्षनी नीचे पालखीमांथी उतरीने, पोताना हाथथी सर्व घरेणा अलंकार उतारीने, पाच मुष्टि लोच करीने, छठ भक्त पाणीरहित एटले चउविहारा बे उपवासे, चित्रा नक्षत्रे चन्द्रमानो योग होते छते, एक देवडुष्य वस्त्र लइने एक हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, घर त्यागीने साधुपणुं अंगीकार कीधु ॥१७३॥ ॥ अरिहंत अरिष्टनेमि चोपन रात्री सुधी काया वोसरावी यावत्


चित्र ६८
भगवान् दीक्षा लीएछे
अशोक वृक्षनी नीचे

रणीश नही एम कही वली गिरनारजीने कहेवा लागी के हे गिरनार मुजने त्यागीने नेमजी जो ताहारी पासे आवे तो तु एने पेसवा आपीश नही वली एवो उलनो आपजे के तुं अबलाने डुखणी करीने कां आव्यो अथवा राजलक्ष्मी बोडी दीधी तो जाणुं जे एतो त्यागवावालानी रीती ठे इत्यादिक विकल्प करती, शील पालती थकी पोताना पिताना घरमां रहे ठे एवामां रथनेमि राजीमतीने कहेवा लाग्यो के नेमजीये तुजने परणी नही अने हुं नेमजीनो नाइ बुं माटे हवे तुं मनेज परण तेवारे राजीमती बोली अरे वमेला आहारने खावानी तुं शु चाहना राखे ठे? हुं तो एक श्रीनेमीश्वर विना बीजानी चाहना करती नथी एवु सांजली रथनेमि विलखो थइ वेशी रह्यो ॥ हवे अरिहत श्रीअरिष्टनेमि तोरणथी पाठा फरी घरे आव्या वधा मली त्रणशे वर्ष कुमारावस्थाये घरमां रह्या पठी लोकातिक देवो आवी वोल्या हे प्रजु! धर्म प्रवर्त्तावो नेमिनाथ स्वामीये अवधिज्ञानथी पोताने दीक्षानो अवसर जाणी वरसी दान देवा मांमयुं ॥ १७२ ॥ ॥ हवे आ वर्षाकालनो पहेलो महीनो, वीजुं परववाडियुं, श्रावणशुदि ठठने दिवसे पहेला पहोरथी पूर्वदिनमां अर्थात् मध्यान्ह पहेलां, उत्तर कुरानामा पालखीमां वेशी ते पालखी देव तथा मनुष्ये उपाडी यावत् द्वारिका नगरीनी वचमांथी थइने जिहां रेवत नामा उद्यान ठे तिहां आवीने अशोक वृक्षनी नीचे पालखीमांथी उतरीने, पोताना हाथथी सर्व घरेणा अलकार उतारीने, पांच मुष्टि लोच करीने, ठठ नक्त पाणीरहित एटले चउविहारा वे उपवासे, चित्रा नक्षत्रे चंद्रमानो योग होते ठते, एक देवडुष्य वस्त्र लइने एक हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, घर त्यागीने साधुपणुं अंगीकार कीधुं ॥१७३॥ ॥ अरिहंत अरिष्टनेमि चोपन रात्री सुधी काया वोसरावी यावत्



चित्र ६९

गिरनार पर्वतउपर एक गुफामा रहनेमी साधु काउस्सग करेछे अने तेज गुफामा राजीमतीजी नग्न थईने पोताना वस्त्र सूकावेछे

त्रमां देवलोकथी चवीने गर्जमां आवी उपन्या छे, उत्तरापाढामां जन्म थयो छे, उत्तरापाढामां दीक्षा लीधी छे अने उत्तरापाढामां केवल ज्ञान उपन्यु छे तथा अजिच नक्षत्रमां मोक्ष गया छे ॥ २०६ ॥ ॥ हवे प्रथम श्रीऋषजदेवजीना तेर जव कहेवाने अर्थें गाथा कहे छे ॥ धण मिहुण सुर महब्बल, ललियगो वयरजय मिहुणेय ॥ सोहम्म विद्य अच्चु, चक्की सवठ उसजेय ॥ १ ॥ ॥ अर्थ —पहेले जवे आ जंबूद्वीपने विषे महाविदेह क्षेत्रमां सुप्रतिष्ठित नामा नगरे प्रियंकर नामा राजा राज्य करे छे ते नगरमां महोटो धनाढ्य धन्नो एवे नामें एक सार्थवाह रहे छे एकदा ते धन्नो सार्थवाह वसंतपुर नगरे जवाने तयार थयो तेवारे नगरमां पडहो वजडाव्यो के जो कोइने वसंतपुर नगरे जावु होय तो तेणे महारी साथे आववुं तेनो हुं-निरवाह करीश एवो पडह सांजली घणा लोक तेनी साथे जवाने एकठां थयां, महोटो सथवारो थयो हवे ते नगरमां श्रीधर्मघोष सूरि पांचसे साधु साथे रहेला हता तेमने पण यात्राने अर्थें वसंतपुर जवानी इच्छा थइ तेथी धन्ना सार्थवाहनी पासे आवीने धर्मलाज आपी बोल्या के हे सार्थवाह जो तमारी आज्ञा होय तो अमे पण वसंतपुर जवाने अर्थें साथे आवीयें तेवारे धन्नो बोल्यो के हे स्वामी सुखेथी महारी साथे पधारो तेवारें आचार्य पण तेनी साथे चाल्या, हवे मार्गें जतां एकदिवसें शेठने आंबानुं जेटणुं आव्युं ते साधुने आपवा मांड्युं पण साधुये सचेत जाणी लीधुं नही हवे सथवारो हलवे हलवे धीमे धीमे थोडा थोडा कोश दररोज चाल्यो जाय छे तेथी मार्गमांज चोमासुं आवी गयुं वर्षाद घणो वर्ष्यो, नदीउ आवीगइ तेने लीधे पंथिजनोने चालवानो मार्ग रोकाइ गयो हरिप्रमुख जीवोनी उत्पत्ति थइ, कादव पण घणो थयो तेथी लोक चाली शकें नही तेवारे सथवारे अर्थने विषे [illegible] मेरा आपीने जंगलमांज

अजितनाथ जिन मोक्ष गया पछी त्रीश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीसन्नवनाथजी मोक्ष गया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महीने न्यून वीश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरजिन मोक्ष गया ते पछी नवसेने एशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ २०४ ॥ पहेला श्रीऋषनदेव नगवान मोक्ष पाम्या पछी पचास लाख कोडी सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ नगवान निरवाण पाम्या ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ महीना एटला वर्षे न्यून पच्चाश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रनु निर्वाण पाम्या ते पछी नवसेने एसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ ॥ ए श्रीमहावीर प्रनुना निरवाणथी लइने पश्चानुपूर्वीयें आंतरा कह्या हवे चोथो, पांचमो अने छठो ए त्रणे आरानु प्रमाण एक कोडाकोडी सागरोपमनु छे तेमां बेंतालीश हजार पचोतेर वर्षनी उपर साडा आठ महीना एटला वर्ष उणां करीये तेवारे चोवीशमां तीर्थंकर श्रीमहावीरजिननो जन्म थयो तेमां बहोत्तर वर्ष श्रीमहावीर स्वामीनु आयुष्य हतु अने चोथा आराना त्रण वर्षने साढा आठ महीना शेष रह्या तेवारे श्रीवीर निरवाण थया तथा एकवीश हजार वर्षनु कालमान पांचमा आरानुं जाणवु अने एकवीश हजार वर्षनुं कालमान छठा आरानु जाणवु ए सर्वनो सरवालो करीये तेवारे एक कोडाकोडी सागरोपम पूर्ण थाय ॥ ॥ इति श्रीकल्पव्याख्यानाधिकारे सप्तम व्याख्यानं सपूर्ण ॥ ॥ अथ अष्टम व्याख्यान प्रारन ॥ एमा श्रीआदिनाथ नगवाननु चरित्र कहेवाय छे ॥ ते कालनेविषे ते समयनेविषे श्रीऋषननाथ अरिहंत अयोध्या नगरीमा थया तेने लीधे एमने कौशलिक कहिये तेमना चार कल्याणक तो उत्तराषाढा नक्षत्रमा थया अने पांचमो कल्याणक अनिच नक्षत्रमां थयो छे ॥ २०५ ॥ ॥ उत्तराषाढा नक्ष

न्यून दश कोडी सागरोपम गये थके श्रीवीर निरवाण पाम्या ते पछी नवसेने एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ १९८ ॥ सातमा श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया पछी नवसे क्रोड सागरोपम गये थके श्रीचन्द्रप्रभ स्वामी मोक्ष गया ते पछी बेंतालीश हजार उपर त्रण वर्षने साडा आठ महीना एटले वर्षे न्यून एकसो क्रोड सागरोपमे श्रीवीरप्रभु निरवाण पाम्या ते पछी नवसेंने एंशी वर्षे पुस्तक लिख्युं ॥ १९९ ॥ छठा श्रीपद्मप्रभजी मोक्ष गया पछी नव हजार क्रोड सागरोपमें श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्षे उपर साडा आठ महीना एटले वर्षे उणा एक हजार क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रभु मोक्ष गया ते पछी नवसेंने एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ २०० ॥ पांचमा श्रीसुमतिनाथजी निरवाण पाम्या पछी नेवु हजार क्रोड सागरोपम गये थके श्रीपद्मप्रभ स्वामी निरवाण पाम्या ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने उपर साडा आठ महीना एटले वर्षे उणा दस हजार क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया ते पछी नवसेने एंसी वर्षे पुस्तक लिख्यु ॥ २०१ ॥ चोथा श्रीअभिनंदनजिन मोक्ष गया पछी नवलाख क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीसुमतिजिन निरवाण थया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महीना उपर एटला वर्षे न्यून एक लाख क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीरजीनुं निर्वाण थयुं ते पछी नवसेने एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ २०२ ॥ त्रीजा श्रीसंभवनाथजी निर्वाण पाम्या पछी दश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीअभिनंदनजिन निर्वाण थया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ महिना एटले वर्षे न्यून दश लाख क्रोड सागरोपम गये श्रीवीर निरवाण पाम्या ते पछी नवसेंने एसी वर्षे पुस्तक लख्यु ॥ २०३ ॥ बीजा श्री

त्यांथी विहार कर्यो अने श्रीकृष्णादिक तथा राजीमतीप्रमुख वृत्तांत सांजली द्वारिकायें गयां, पछी वली एकदा श्रीनेमिनाथजी गिरनारें आवी समोसर्या तेवारे राजीमतीये बीजी घणी राजकन्याउनी सांथे दीक्षा लीधी अने रथनेमीये पण दीक्षा लीधी, हवे एक दिवस राजीमतीजीने गिरनार पर्वत उपर जगवानने वांदवा जतां मार्गमां वर्षाद वर्ष्यो तेथी राजीमतीना वस्त्र जीजाइ गयां तेने सूकाववा सारुं एक गुफामा प्रवेश कर्यो तेज गुफामा आगलथी रथनेमि काउसग्ग ध्याने रहेलो छे तेनी कांइ राजीमतीने खबर हती नही तेथी राजीमतीये ते गुफामाहे पोताना जीजेला सर्व वस्त्र उतारी नाखीने सूकववा मूक्यां तिहां राजीमतीने नग्न देखीने रथनेमीनु मन चलायमान थयु अने कामे पीड्यो थको लज्जानो त्याग करी बोलवा लाग्यो के हे राजीमती ! तमे शा वास्ते तपश्या करीने नकामां शरीरने शोषवो छो आवोनी महारी पासे आपणे बेहु जण विषयसुख जोगवीयें हमणा युवान अवस्थामा तप करवानो अवसर नथी फरी वृद्धावस्थाये दीक्षा लइशु अकस्मात् ए वचन सांजली, अंगोपांग संवरी, धैर्य धरी, दृढता धारण करीने, राजीमती बोली के अरे तने धिक्कार पडो जे तु दीक्षा ग्रहण करीने एवी वात करे छे ? अरे समुद्रविजयराजाना पुत्र सर्व सावद्य व्यापार त्यागी साधुपणु आदर्युं तेणे मुजने वमी छे माटे जे अंगधकुलना सर्प छे ते जो पण तिर्यंच जातीना छे तो पण ते वमेला वस्तुने वांछता नथी तो तु शु ते तिर्यंचथी पण नीच थाय छे जेमाटे वमेली वस्तुने जोगववा वांछे छे वमेली वस्तुने तो श्वानादिक वांछे छे माटे तु तहारु मन ठेकाणे राख हुं कोइ रीतें तहारे हाथ आववानी नथी अरे तु जोग त्यागीने फरी नरकें जवानी अभिलाषा शामाटे करे छे तो हे महानुजाव ए पापनी आलोवणा लइ फरी संयमनो उच्चार कर

रह्यो अने धर्मघोष आचार्य पण एक पर्वतनी गुफामां निरवद्य स्थानक देखीने पांचसे साधु सहित मासखमणनी तपस्या करी चोमासुं रह्या थका धर्मध्यान करवा प्रवर्त्त थया, एम करतां सथवाराना लोको पासे संबल खुटी पड्युं माटे सर्वलोक कंदमूलफलादिक नो आहार करीने दिवस निर्गमन करवा लाग्या तेथी साधुउने पण पारणें शुद्धमान आहार मले नही एम करतां केटलाक दिवस पछी तिहां एक जाट आव्यो ते शेठने खुशी करवा माटे सुजापित कहीने बोल्यो के हे शेठ ! महोटा पुरुष जे वात अंगीकार करे ते पार पाडे पण अधवच मूकी आपे नही ए वात सांजलीने शेठे धर्मघोष सूरीने याद कर्युं अने मनमां विचारवा लाग्यो के अरे म्हारा कहेवा उपरथी साधुउ म्हारी साथे आव्या अने मे तो एक दिवस पण तेमनी सारसंजाल कीधी नथी माटे तेउनो विश्वासघाती हुं थयो तो हवे प्रजाते एमनी पासे जइने खमत खामणा करुं एम चितवी प्रजाते आचार्य पासे जइ वंदना करीने लज्जाथी पोतानु मुख नीचुं करी बेठो अने विनंति करवा लागो जे हे स्वामी ! म्हारो अपराध तमे खमजो में आपनी कोइ वखते पण निगाह करी नथी हे महाराज ! लोकनुं सर्व संबल क्षीण थयुं छे आपमुजने कांइ आज्ञा करो, हुकुम फरमावो. तेवारे आचार्य बोल्या हे सार्थेश ! अमारा माटे तमे कांइ पण चिंता करशो नही, अमारे तो सुखे धर्मध्यान थाय छे, तमारा साथना योगे अमे घणी अटवी उलंघन करी तेमां तमे अमारी महोटी वात्सल्यता करी एवु सांजली धनो शेठ खुशी थयो अने सर्व साधुउने आहारनी निमंत्रणा करी सथवारामां लइ आव्यो पछी पोतानी पासे शुद्ध आहार घृतना कूपा हता ते साधुउने घणाज उलटथी वहोरावतां थका अत्यंत जावनी वृद्धि थवा मांडी तेथी समकेत पाम्यो

अहीं घणा आचार्यो कहे छे के पाचशे कूपा घृतना वहोरावी दीधा पछी वली जाएयु जे हवे तो
घणु देवाणु एवी रीते शेठना परिणाम घटता देखीने मुनिउंये कह्यु के हे महानुनाव ! हवे
अमारे खप नथी, परतु जो थोडीक वार हजीपण शेठनो नाव वधतो रह्यो हत तो केवल
ज्ञान उपजी जात पण पाछा परिणाम घटवाने योगे केवल उपन्यु नही परतु समकेतथी पो
तानो आत्मा निर्मल कर्यो पछी वर्षाकाल वीत्याबाद वसतपुरे आव्या, धर्मघोष आचार्य पण
सार्थवाहने धर्मलान देइने तीर्थयात्रा करवा गया धनो पण घणा दिवस समकेत पाली अंते
शुनध्याने मरण पाम्यो ए पहेलो नव ॥१॥ ॥ हवे बीजा नवमा उत्तरकुरुक्षेत्रे जइ युगली
यामा उपन्यो तिहा त्रण पल्योपमनु आयुष्य नोगवी मरण पाम्यो ए बीजो नव ॥२॥ त्रीजे
नवे सौधर्म देवलोके देवता थयो ए त्रीजो नव ॥३॥ ॥ चोथे नवे देवलोकथी चवीने पश्चिम
महाविदेहे गधिलावति विजये शीतवल राजानी चड्कांता राणीना महाबलनामा पुत्र थया,
परतु महा विषयलोलुपी नोगपुरदर थया विनयवती प्रमुख घणी राणीयो छे, तेमनी साथे
विषयसुख नोगववामां मग्न रहे छे, धर्मनी वात न जाणे, सर्वदा गीत, गान, तान, मान,
अने नाटकने प्रियकारी जाणे छे एम महामोहनी निद्रामां काल गमावतां एक दिवस नाट
कादिक थाय छे ते देखे छे, गीतमां एक चित्त लागी रह्यु छे, ते वखते सुबुद्धिनामा प्रधाने रा
जाने प्रतिबोधवा सारुं एक गाथा कही ते आवी रीते "सव्वं विलविय गीअं, सव्व नट्ट विडवणा ॥
सव्वे आनरणा नारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥ १ ॥ ॥ अर्थ —ए सर्वे गीत जे छे ते विलोपात
करवा जेवा छे, सर्वे नाटक जे छे ते विटंबना सरखां छे, सर्वे आनरण जे छे ते नार समान
छे, अने ए सर्वे कामनोग जे छे ते दुखावहा एटले दु खदायी छे ॥ १ ॥ ॥ ए गाथा सां

न्नी राजा बोल्यो के हे प्रधान ! तमे विना प्रस्तावे आ वैराग्य उत्पन्न करनारी गाथा केम कही " यत्र सरागस्तत्र विराग: कथ ? यत्र विरागस्तत्र सराग कथं ? यत्र श्रीरर्थे तत्र अश्री रर्थे कथ ॥ माटे हे मत्री ! विना प्रस्तावे आ वात शा कामनी तेवारे प्रधान बोल्यो में आ वात प्रस्तावेज कही छे, ते आवी रीतें के आज मुजने केवली मल्या तेमणे कह्यु के तमारा राजानुं आयुष्य एक मासनुं शेष रह्यु छे माटे हुं आपने चेतवणी आपुं छुं एवी वात सांन्नली राजा चमक्यो, मरण समान कोइ न्नय नथी, पछी मंत्रिने कहेवा लागो के हुं तो मोहनिद्रामां सुतो हतो, तें सुताने जगाड्यो तो खरो, परतु आग लागीने कूवो केम खणाय ? तेम हवे एक मासनुं आयु रह्यु, तेमा शु धर्मसाधन थाय ! तेवारे प्रधाने कह्यु तमे विषाद म करो, एकदिवसनुं चारित्र पण मोक्षने देवावालुं थाय छे अने जो मोक्षप्राप्ति न थाय तोपण देवताना सुखने तो आपे छे एवु सांन्नली पुत्रने राज्य आपी सात क्षेत्रे धन वावरी अठाइ महोत्सव करी सुगुरु पासे चारित्र लई चोत्रीश दिवस चारित्र पाली अंते अनशन करी काल कर्यो ॥ ए चोथो न्नव ॥ ४ ॥ ॥ पाचमे न्नवे ईशान देवलोकें प्रन्नवनामा विमानने विषे ललितागनामा सामानिक देवता थयो तिहां स्वयंप्रन्न नामा देवी घणीज वल्लन्न छे तेनी साथे विषयसुख न्नोगवतो विचरे छे, पछी एक दिवसें स्वयंप्रन्ना नामा देवी तिहांथी चवी तेना विरह थकी मूर्छा पाम्यो, घणो डुःखी थई शोक करतो थको रुदन करवा लागो, तेवारे पूर्वन्नवनो सुबुद्धि मंत्री पण तिहांज देवता थयो छे, तेणें प्रतिबोध्यो, तथापि तेनो शोक मट्यो नही.तेवारे मत्री देवताये कह्यु तमारी स्त्रीने हुं जाणुं छुं तेने मेलवी आपवानो हुं उपाय बताबु तमे शोक करशो नही, हवे ते स्त्रीनो संबंध कहे छे धातकी खंमना महाविदेह क्षेत्रे नंदनामा

ग्रामने विषे नागिल नामे एक गृहस्थ महादरिद्री छे, तेनी नागश्री स्त्रीये पूर्वे छ पुत्री तो जणेली छे, कह्यु छे के दारिद्रीने छोडीयो घणी थाय, पछी तेणे विचार्यु जे हवे जो महारी स्त्रीने सातमी पण पुत्री आवशे तो हु देश त्यागीने चाल्यो जइश दैवयोगे स्वयंप्रभा देवीनो जीव पण तेने घेर आवी अवतर्यो तेथी वली पण ए सातमी पुत्री नागिलने थइ तेवारे शोक शोगणी वेहु दुःख धरवा लागां अने नागिल दुःखे पीडातो परदेश गयो, पछवाडे कुटुंबी जण ते पुत्रीनु नाम पाड्युं नही अनामिका कही बोलावे, अभागणी माटे कोइ परणे पण नही तेथी काष्ठना भारा वेचीने पेट भरे तथा लोकने घेर काम करीने पेट भराइ करे एक दिवसे कोइ धनवंतना बालकने मोदक खातां देखी अनामिकाये पण पोतानी माता पासेथी मोदक माग्या, तेवारे मातायें कह्यु ताहारो पिता मोदक लेवा गयो छे ते आवशे त्यारे आपीश, त्यां सुधी ए अंबरतिलक नामा पर्वत थकी काष्ठनो भारो लाव पछी रुदन करती भारो लेवा गइ तिहां युगंधर मुनिने केवलज्ञान उपन्यु छे, तेनो इंद्र महाराज महोत्सव करे छे, तिहां अनामिका पण नमस्कार करी बेठी धर्म देशना सांभली केवलीने पूछ्यु के हु एवी दुःखनी अवस्था केम पामी? तथा महारे भर्तार प्रमुखनुं सुख कांइ पण थयो नही तेनु कारण शुं? प्रभुयें कह्यु तें पूर्वे धर्म आराध्यो नथी माटे रे भोली धर्म विना सुख होय नही तो हवे जो सुखनी इछा होय तो धर्म कर. धर्मना प्रभावे देवना सुख पामीयें पछी अनामिकायें श्रावकनां व्रत आदर्यां उपाश्रयें बेठी श्रावकनो धर्म करे तेथी लोकोयें धर्मिणी एवु नाम दीधुं साधर्मि श्रावको तेने पारणा प्रमुखनो सहाय आपे छे एम धर्मना प्रभावथी ते सुखी थइ छे पछी छेवटे अनशन करी सुती छे, ते समयें ललितांगने स्वयंबुद्ध

मंत्रियें कह्युं के तमे त्यां जइ तमारुं रूप एनें देखाडो के जेम ए नियाणो करे ते सांभली ललितांगे आवी पोतानुं अत्यंत उत्कृष्ट रूप देखाड्युं ते रूप देखी अनामिकाये व्यामोह पामी नियाणुं कर्युं के मह्वारे तपस्यानुं फल होय तो एनी स्त्री हुं थाउं, पछी अनामिका मरण पामी स्वयंप्रभा देवी थइ तेनी साथे ललितांग देव सुख भोगववा लागो ए पांचमो भव ॥ ५ ॥ तिहांथी चवीने छठे भवे जबूद्वीपे पूर्व महाविदेहे पुष्कलावती विजये लोहार्गल नगरे सुवर्णजंघ राजानी लक्ष्मीवती राणीनो वज्रजघनामा पुत्र थयो अने स्वयंप्रभा देवी पण तेहिज विजयें पुण्डरीक नगरीये वज्रसेन नामा चक्रवर्त्तिनी श्रीमती नामा पुत्री थइ, ते यौवन पामी थकी एक दिवसें चंद्रोदय सभामां बेठी छे ते समये कोइ साधुने केवल ज्ञान उपन्युं छे तेने देवता वांदवा आवे छे, ते देवोने देखी एने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें विचार्युं जे मह्वारो पूर्वभवनो भर्तार ललितांग नामा देवतानो जीव किहां उपन्यो हशे? ते मले, अने हुं तेने परणुं तो सारुं थाय, एम विचारी मौनपणे रही, मातापिताये अनेक उपचार कर्या पण बोले नही, पछी धाई माताये एकांते वात पूछी तेवारे कुमरीये तेनें एक कागल उपर चित्राम करी कुंवर आलेखी आप्यो, धाइयें ते चित्रपट राजाने दीधो पछी एना पिता वज्रसेन चक्रवर्त्तीना वर्षमहोत्सवे अनेक राजपुत्रो आव्या अने ते धाई पण दिवसे चित्रपट लइ राजमार्गें बेठी, ते राजकुमर पण जति वखतें चित्रपटने अणुहार देखतां जाय छे, तेवारे वज्रजघ ते चित्रपटने देखी जातिस्मरण पाम्यो अनें कहेवा लागो के आ चित्र तो मह्वारी पूर्वभवनी स्त्री स्वयंप्रभा नामें देवीनुं चितरेलुं छे, ए वात धाइ मातायें श्रीमतीने कही. पछी श्रीमती ते वात सांभलीने वज्रजंघ कुंवरने परणी सुखे समाधे रहे छे, घणी प्र

तोमां आम लख्युं छे के ते पुत्री तीर्थंकरनी सन्नामां देवोने देखी जातिस्मरण पामी तेणे पूर्वन्नव जाण्यो तिहां अनामिका अने स्वयप्रन्नानो न्नव देखी विचाखु जे महारो पूर्वन्नवनो न्नर्तार ललितांग केवी रीतें मले पछी पिताये पूछ्यु तेवारे सर्व पूर्वन्नवसबधि वात कही चक्रवर्तीये केवलीने पूछ्युं के एनो पूर्वन्नव न्नर्तार किहा उपन्यो छे केवलीये वज्रजघ नाम कह्यु पछी चक्रवर्त्तियें वज्रजघने परणावी तथा कोइक कहे छे चित्रपट बनावीने कह्यु के एना स्वरूपने जे कहें तेने हु परणुं पछी बीजा राजाउंए अनेक प्रकारनी वातो बनावीने कही पण ललितागनी वात मले नही परतु जेवारे वज्रजघें कह्यु के आ महारी स्वयप्रन्ना देवीनु रूप छे तेवारे चक्रवर्त्तिये तेने श्रीमती परणावी एवो लेख छे तत्व केवलिगम्य एकदा सुवर्णजघे पोताना वज्रजघ पुत्रने राज्य आपी पोते दीक्षा लीधी, पछी वज्रजघे पण श्रीमती राणीसहित गोखमां बेठा थका सध्या फूली देखीने वली विलय थइ जोइ तेवारें विचाखुं जे सर्व विलय थवानी वस्तुउ आ ससारमा छे माटे चितव्यु जे प्रन्नातें पुत्रने राज्य आपी दीक्षा लेशु ते समयें पुत्र पण राज्यनें लोन्ने झेरनो धूमाडो करी मातापिताने एटले श्रीमतीसमेत राजाने विषप्रयोगे माखो ए छठो न्नव ॥ ६ ॥ ॥ तिहांथी मरण पामी सातमे न्नवे राजा राणी बेहु उत्तर कुरु क्षेत्रने विषे युगलीयां थयां ए सातमो न्नव ॥ ७ ॥ ॥ आठमे न्नवे सौधर्म देवलोके मित्रपणे देवता थया ए आठमो न्नव ॥ ८ ॥ ॥ तिहांथी चवी नवमे न्नवे जबूद्वीपे महाविदेह क्षेत्रें क्षितिप्रतिष्ठितनगरे सुविधिनामा वैद्यनो जीवानद नामा पुत्र थयो ते दिवसे ते नगरीयें बीजा पण चार जीव पुत्रपणे अवतखा, एक प्रसन्नचइ राजानो पुत्र महीधर जन्म्यो, बीजो सुनासीरनामा प्रधाननो पुत्र सुबुद्धि थयो, त्रीजो ध

नागोरनो पुत्र गुणाकर थयो, चोथो सागरनामा शेठनो पुत्र पूर्णचंद्र थयो, हवे श्रीमतीनो जीव सौधर्म देवलोकथी चवीने ईश्वरदत्तनो पुत्र केशव थयो, ए पाचे जीवानदना परम मित्र छे ए छए मित्र सार्थे मली जमे, रमे, सुखे काल निर्गमन करे छे, एक दिवसे जीवानदने घेर ते छए जणा बेठा छे एटलामां एक कोढीउ साधु गोचरी करवा आव्यो, तेने देखीने ते पांचे मित्र एकठा थइने वैद्य पुत्रने कहेवा लाग्या के अरे वैद्यतो मतलबीया थाय छे, जो पुण्यने अर्थे वैदु करता हो तो आ साधुनो कोढरोग मटावी आपो तेवारे तो अमे पण जाणीये जे तमे धर्मात्मा छो ते सांभली जीवानंद वैद्य बोल्यो हे मित्रो ! तमे महारी वात सांभलो आ साधुनो रोग मटाववा माटे लक्षपाक तेल जोशे तेतो महारा घरमां तयार छे पण बीजो रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चंदन खपशे ते महारी पासे नथी माटे जो ए बे चीजो क्यांथी पेदा करो तो साधुनी वेयावच्च करीये ए वात सांभली ते छए जणे मली अढीलाख सोनैया भेला कीधा पछी ते छए मित्र मली नगर शेठने घेर जइ सोनैया आपीने बोल्या के एक रत्नकंबल अने बीजो गोशीर्ष चदन ए बे चीज अमने आपो शेठे पूछ्यु जे तमे एने शु करशो तेणे कह्यु के अमे साधुनी वेयावच्च करीशु ते सांभली शेठे विचार्युं जे ए बालको छे तोपण जुओ केहवा धर्म बुद्धि वाला छे अने हुं आटलो महोटो वृद्ध थयो छुं तोपण हजी लगण कांइ धर्ममा समजतो नथी एम चितवी ते शेठे सोनैया तो धर्मदा वापरी नाख्या अने रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चदन तेमने आपीने पोते दीक्षा लइ साधुपणुं पडिवजी अंतगड केवली थइने मोक्ष गयो हवे ते छए जणा औषध लइ वनमां गया तिहां मुनि काउसग्गमां उभा रह्या छे तेने "अनुजानीध्व" एवु कही चामडा उपर मुनिने सुवारीने लक्षपाक तेल मसल्युं पछी चदननो लेप करी रत्न

कांबलमा लपेटी दीधो तिहां पहेलीवारमां तो ते सर्व चामडीमा जे कांइ कीडा हता ते सर्व कांबलमा आवी लागा तेने गायना मृत कलेवरमां मुक्या फरी बीजीवार तेल मसल्यु तेनी उपर चदन लगावी रत्नकांबलथी वीट्यो तेवारे मांसमांहेला कीडा निकली पड्या तेमज त्रीजीवार एमज पूर्वोक्त रीते कर्यु ते वखत हाड मीजीना कीडा निकली पड्या पछी रोहिणी औषध साधुने शरीरे लगाडी तेनु शरीर कचन सरखु करी मूक्यु पछी ते छए जणे रत्नकंबलनु द्रव्य सात क्षेत्रमा खरचीने दीक्षा लीधी निरतिचार चारित्र पालीने काल कर्यो ए नवमो जव ॥ ए ॥ ॥ दशमे जवे ते छए जणा बारमे देवलोके देवपणे जइ उपन्या छए देव मित्र थया ए दशमो जव ॥ १० ॥ ॥ अगीआरमे जवे बारमा देवलोकथी चवीने जबूद्वीपना महा विदेहक्षेत्रे पुष्कलावती विजयें पुम्डरीकिणी नगरीये वज्रसेन नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमां ते छ मांथी पांच जण अनुक्रमे पुत्रपणे आवी उपन्या तेमां जीवानद वैद्य जे धन्ना सार्थवाहनो जीव छे ते चौद सुपन सूचित मातानी कूखमा उपन्यो जन्म्या पछी माता पिताये तेनुं वज्रनाज नाम आप्यु ए जीव ऋषजदेवजी थावावालो छे हमणा चक्रवर्त्ति पणे उपन्यो छे हवे बीजो राजानो पुत्र महीधरनो जीव ते बाहु नामे थयो त्रीजो मत्रीनो पुत्र सुबाहु नामे थयो, चोथो शेठनो पुत्र गुणाकरनो जीव, पीठ नामे थयो अने पांचमो सार्थ वाहनो पुत्र पूर्णजद्रनो जीव महापीठ नामे थयो ए पांच तो जाइ पणे आवी उपन्या अने छठो केशवनो जीव जे पूर्वे निर्नामिकानो जीव छे ते वली बीजा एक राजाने घरे पुत्र पणे उपन्यो ते वज्रनाज नामा चक्रवर्त्तिने घणोज वल्लज छे तेथी ए एनो सारथि थाशे एरीते छए मित्र सुखे रहे छे हवे वज्रसेन राजा तीर्थंकर थवाना छे माटे लोकांतिक देवोना वचनथी

उदास थइ वज्रनाभ नामा पुत्रने राज्य आपी संवत्सरीदान देइ दीक्षा लइ घनघातीकर्म क्ष यकरी केवलज्ञान पाम्या तीर्थंकर थया ते पुण्डरीकिणी नगरीये आव्या वनपालके वज्रनाभने वधामणी आपी तेवा अवसरमां चक्ररत्न प्रगटवानी पण वधामणी आवी तेवारे विचार्युं जे पहेलां केनी पूजा करुं ? एम विचारतां निरधार कर्यो जे तीर्थंकरने पूज्या तो सर्वने पूज्या ए त्रण लोकना नाथथी वली बीजो कोण वधारे गणाय एम चिंतवी केवल महोत्सव कर्यो, भगवानने वांदवा आव्यो पछी चक्रने पूज्यो अनुक्रमे छ खण्ड साधी, सुखे राज्य भोगवे छे एक दिवस वली वज्रसेन तीर्थंकर समोसर्या तेमने वज्रनाभ प्रमुख वांदवा गया तिहां प्रभुनी देशना सांभली छए जणाये दीक्षा लीधी तेमां पहेलो वज्रनाभ चक्रवर्त्ति साधु थयो ते चौदे पूर्व भण्यो अने बीजा पाचे अगीआर अंग भण्या, वली बाहुनामा जे साधु छे ते पांचसे साधुने आहार लावी आपे अने सुबाहु पांचसे साधुउना पग चांपे तथा पीठ अने महापीठ ए बे एकांतें तप करे तथा सझाय ध्यान करे, हवे बाहु अने सुबाहुनी गुरुप्रमुख सर्वे प्रशंसा करे तेथी पीठ अने महापीठ एवु जाणे के जुउ काम सर्वने वहाल्न छे जो साधु थया तोपण मतलबी देखाय छे केमके अमे सझाय ध्यान करीये छैये तो अमोने कोइ प्रशसता नथी अने बाहु सुबाहु एमनी चाकरी करे छे तो तेमनी प्रशंसा सर्व करे छे माटे जगत् सर्व स्वार्थी छे पछी वज्रनाभे वीश थानक तप करीने तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्यु तथा बाहु साधुये आहारना दानथी भोगफल उपार्जन कर्यु तथा सुबाहु साधुये पगच पीना प्रभावथी बाहुबल नाम कर्म उपार्जन कर्युं तथा पीठ अने महापीठे इर्ष्या करवाथी स्त्रीवेद बांध्यो अने छठो निर्नामिकानो जीव ते श्रेयांस कुमर थाशे अंते सर्वे अनशन करी

मरण पाम्या ए अगीआरमो नव ॥ ११ ॥ ॥ बारमे नवे ठए जए सर्वार्थसिद्ध विमाने जइ देवपणे उपन्या ए बारमो नव ॥ १२ ॥ ॥ पठी सर्वार्थसिद्ध विमानथी तेत्रीश सागरोपमनु आयुपूरण करीने तिहांथी चवी तेरमे नवे वज्रनाजनो जीव ते श्रीरूपनदेवजी थया तथा बाहुनो जीव नरतचक्रवर्त्ती थयो अने सुबाहुनो जीव बाहुबल थयो वली पीठ अने महापीठनो जीव ब्राह्मी अने सुदरी थया ए पांचे जीव अनुक्रमे मोक्ष जाशे ए तेरमो नव ॥१३॥ ॥ इति रूपन नव॥ ते कालने विपे, ते समयने विपे श्रीरूपनदेव अरिहत ते उनालानो चोथो महिनो, सातमुं पखवाडियु, आषाढवदि चोथने दिवसे, सर्वार्थसिद्ध विमानथी, देवतानु आयुष्य पूरण करीने चव्या ते आ जबूद्वीपना नरतक्षेत्रने विपे इक्ष्वाकुनूमीमां नाजिकुलधरनी मरुदेवी नार्या तेमनी कूखे मध्यरात्रिने विपे देव संबधी आहार, देव संबधि नव, देव संबधि शरीर त्यागीने गर्नमा पुत्रपणे आवी उपन्या ॥ २०६ ॥ ॥ इक्ष्वाकु वंशमां उपन्या तेथी इक्ष्वाकु नूमि थइ ते केवी रीते थइ ते कहे ठे जे पूर्वे सर्वे युगलिया हता परतु नगर कोइ हतु नही तिहा युगलीयामां तो कल्पवृक्ष मनोरथ पूरण करता हतां तेमां पहेला सात कुलघर थया तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे ठे ॥ ॥ आ अवसर्पिणीना त्रीजा आराना अतमा पल्योपमनो आठमो नाग बाकी रहे ठते आ दक्षिण तरफनो अर्धो नरत तेने दक्षिणार्द्ध नरत कहीयें तेना त्रण नाग करवा ते त्रण नाग मांहेला मध्य नागमा एटले विचला नागमां पहेला त्रण कुलघर थया तेमां प्रथम कुलघर एवीरीतें थयो के पश्चिममहाविदेहमां वे वाणीया हता ते बेहु वाणीया माहोमांहे मित्र हता परतु तेमां एक कपटी हतो अने एक सरलमनवालो हतो ते जेवारे मांहोमाहे द्रव्य वांटे तेवारे जे कपटी ठे ते सरल स्वनाव

वालाने ठगीने तेनाथी ठानुं धन पोते राखे अने सरल तो कपटरहितपणे व्यापार करे एक दिवसे सरलचित्तवालानी स्त्रीने देखीने कपटी मित्र नोग नोगववानु कह्यु तेवारे ते सरलनी स्त्री पतिव्रता छे ते बोली के अरे मर्यादाहीन ! मित्रनी स्त्रीने वांछे छे ? एवु कहीने निर्नछना करी बाहेर काहाडी मूक्यो पछी ते कपटीये जइने सरलचित्तवालाने कह्यु के ताहारी स्त्री मने वांछती हती परतु मे तेने नाकारो कह्यो एवी कपटाइ करी पछी ते सरल चित्तवालो वैराग्य पामी मरीने इक्ष्वाकुनूमिमां मनुष्यरूपें युगलीयो थयो अने कपटी मित्र मरण पामीने इक्ष्वाकु नूमिमां हाथीरूपे युगलीयो थयो केमके जीव कपटाइथी बहुलतायेंकरी तिर्यंच पणाने पामे, एकदा समयने विषे हाथी युगलीये सरलयुगलीयाने दीठो तेथी बेहु मांहोमाहे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या पछी परमस्नेहथी हाथी तेमने पोताना स्कंध उपर बेसाडीने रात्रदिवस फर्यां करे तेमने सपेत हाथी उपर बेठो जोइने बीजा युगलीया बोलवा लाग्या के ए विमलवाहन छे एवु तेनुं नाम पाडी दीधु केंटलोएक काल गयो तेवारे कालनां माहात्म्यथी जेवा कल्पवृक्ष प्रथम हता तेवा रह्या नही तेवारे युगलीया लडवा लाग्या अने सहु पोत पोताना कल्पवृक्ष थापी बेठा सहु कोइ पोताना कल्पवृक्षमां रहे बीजाने आववा दीये नही अने कदापि कोइ आवे तो तेनी विमलवाहननी पासे राव आपवा आवे तेवारे विमलवाहन तेने हकार एवो दंम आपे तेथी युगलीयो मनमां जाणे जे सर्व महारी वात गइ एवो जाणी लडे करे नही ए प्रथम हकार नीति थइ ते विमलवाहनने चंद्रयशा नार्या हती, नवशो धनुष्य प्रमाण शरीर हतुं ए प्रथम कुलघर ॥ १ ॥ ॥ पछी ते विमलवाहनना पुत्र चक्षुष्मान् थया तेनी चंद्रकाता नार्या अने आठशो धनुष्य शरीरनुं प्रमाण, एनी पण हकार दंमनीति थइ ए बीजो

कुलधर ॥ २ ॥ ॥ त्रीजो यशोमान् कुलधर थयो तेनी सुरूपा नामें न्नार्या एनु सातसों धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवु एनी वखतमां मकार दम्नीति जाणवी ॥ ३ ॥ ॥ चोथो अन्निचंड नामा कुलधर थयो तेनी प्रतिरूपा नामे न्नार्या एनु साडा छसे धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवु एनी वखतमां म एटलो कहेवाथी मरी जाय माटे मकार दम्नीति जाणवी ॥ ४ ॥ पांचमुं प्रसेनजित् नामा कुलगर थयो तेनी चकुष्मती नामें न्नार्या एनु छशें धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवु एमां धिक्कार एटलु कहेवाथी ते एवु समजी जाय के मने महोटो दम थयो माटे धिक्कार दम्नीति जाणवी ॥ ५ ॥ ॥ छठो मरुदेव नामा कुलधर थयो तेनी श्रीकाता नामे न्नार्या एनु साडा पांचसे धनुष्य प्रमाण शरीरनु मान जाणवु एना वखतमां धिक्कार दम्नीति जाणवी ॥ ६ ॥ ॥ सातमो नाभिनामे कुलधर थयो तेनी मेरुदेवी नामे न्नार्या एनु सवा पांचशे धनुष्य प्रमाण देहमान जाणवु एनी वखतमां धिक्कार एटलो कहे तेवारे ते समजे के मुजने महादम थयो फरीथी जनम पर्यंत ते अन्याय करे नही एरीतें पहेला तथा बीजा कुलधरना वारामा हकार दंम्नीति हती अने त्रीजा तथा चोथा कुलधरना वारामा जघन्यथी हकार अने उत्कृष्टथी मकार दंम्नीति चाली एटले घणो अन्याय करे तेवारे तेने (म) एटलो कहे तेथी ते एवु समजे के मने महोटो दम थयो फरीथी कोइवारे ते अन्याय करे नही तथा पाचमां, छठा अने सातमा कुलधरनी वखतमां जघन्यथी तो हकार तथा मध्यमथी मकार अने उत्कृष्टथी धिक्कार एवी त्रण प्रकारनी दंम्नीति चालु थइ ॥ श्री रुषननाथ अरिहंत त्रण ज्ञाने सहित मेरुदेवी मातानी कूखे आवी उपन्या यावत् मेरुदेवीये चौद सुपना दीठा इत्यादिक सर्व अधिकार महावीर स्वामीनी पेरे अहीं पण जाणी लेवु

परतु एटलों विशेष जे मेरुदेवीजीये पहेला सुपनामां वृषन्न मुखमाहे पेसतो दीठो अने बीजा बावीश तीर्थकरनी माताये पहेले सुपने हाथी मुखमांहे पेसतो दीठो तथा श्रीमहावीरस्वामीनी माताये पहेले सुपने सिंह मुखमां प्रवेस करतो दीठो वली श्हां सुपनानुं फल नाजीराजायें पोतेज कह्यु परतु सुपन पाठक ते वखते हता नही ॥ २०७ ॥ ते कालनेविषे ते समयनेविषे रुषन्ननाथ अरिहंत उनालानो पहेलो महिनो, पहेलो पखवाडियु, चैत्रवदि आठमना दिवसे नवमास उपर साढासात दिवस रात्री गर्जमां प्रतिपूर्ण होते छते उत्तराषाढा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके निराबाध पणे जन्म्या ॥ २०८ ॥ ॥ इहां जन्ममहोत्सव इंद्रादिकोये आवी कर्युं इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीरजीनी पेठे कहेवु परतु बंदीखानामांथी केदीउने छोडी मूकवा तथा तोल वधारवा तथा कुलमर्यादा करवी तथा पूजादिकने अर्थे द्रव्य रखाववो ए कृत्य ते युगलीयाना वखतमां गाम शहेरादिकना अजावने लीधे हता नही माटे ते कह्या नथी बाकी सर्व श्रीमहावीर स्वामीना पाठनी पेठे आंही पण कहेवु ॥२०९॥ तथा ते वखत सर्व युगलीया हता तेथी प्रजुनुं नाम स्थापन करवानुं महोत्सव संबंधी व्यवहार पण चाल्यो नही तेवारे जगवाननी जंघामां रोमनु वृषन्न सरिखो लंछन दीठो तथा प्रजुनी मातायें पहेला सुपनामां पण वृषन्न दीठो तेथी रुषन्न एवुं नाम दीधु ॥ ते जगवान महा स्वरूपवान थका देव तथा देवीउ साथे रमत करे, इंद्राणी पोते खोलामां लइने रमाडे, हवे सुनंदा युगलीयाणी तो जगवाननी साथेज युगलपणे जनमी हती तथा एक युगलीयाना मस्तक उपर ताल वृक्षनुं फल पड्युं तेथी ते बालपणामांज मरण पाम्यो अने तेनी साथे जन्मेली युगलणी जीवती रही हती तेने बीजा कोइ युगलीयाये दीठी तेणे ति

हांथी उपाडीने नाभि कुलधरने जइ आपी नाभिकुलधरे कह्यु के आ म्हारा पुत्र रुषभ देवनी सुनंदानी साथे ए पण स्त्री करीशु एम कही तेनु सुमंगला एवु नाम आप्यु ते पण भगवाननी साथे वधे छे, भगवाननो सुवर्णमय शरीर छे हवे रुषभ देवजी गुणगुण बोले, थाकता थाकता चाले, हशे, तेवारे माता कहेके हे पुत्र तु इन्द्राणीने वल्लभ छो अने देवताये दीधेला अमृतनु पान करे छे, म्हारी पासे तो रहेतो नथी, म्हारा स्तन पण चूसतो नथी, तो हु ताहारी माता छु एवो जगतमां कोण जाणशे ? इत्यादिक वातो करी रमाडे ॥ हवे जेवारे भगवान देशेकणा एक वर्षना थया तेवा अवसरमां इन्द्रमहाराज भगवाननु वंश स्थापन करवा सारु हाथमां सेलडी लइने आव्यो तेवारे भगवान नाभि कुलगरना खोलामांहे बेठा हता ते खोलामांहेथी सेलडी लेवा सारुं हाथ लांबो कर्यो तेथी इन्द्रे जाण्यु जे प्रभुने सेलडी खावानु मन थयु ते माटे इन्द्रे तिहां भगवाननो वंश इक्ष्वाकुकुल स्थापन कर्यो श्रीरुषभदेवने देवकुरु अने उत्तरकुरु क्षेत्र संबधि कल्पवृक्षोना फलनो आहार देवताउये आणी आप्यो ते आहार गृहस्थ पणामा थयो अने बालपणामां तो अंगुठामां देवोए संचारेला अमृतनो आहार सर्व तीर्थंकरोने होय छे अने एक श्रीरुषभदेव विना बीजा तीर्थंकरोने तो बालपणुं टल्या पछी म्होटा थाय तेवारे पक्क थयेलो आहार होय अने संयम लीधा पछी तो सर्व तीर्थंकरोने फासु आहार होय हवे भगवान जेवारे भोग भोगववाने समर्थ थया तेवारे सर्व इन्द्र अने इन्द्राणीयो चारे निकायना देव अने देवीयो विवाह करवा आव्या तेमां इन्द्रादिक देवो तो वर राजानी तरफ रह्या थका श्रीरुषभदेवने वींद बनाव्यो अने इन्द्राणीउ प्रमुख सर्व देवीउ ए मलीने कन्यानी तरफ रही थकी सुनंदा तथा सुमंगलाने वींदणीयो बनावी, सणगार कराव्या, मांमवा मांम्या इत्या



ऋषभदेवजीने इंद्रमहाराज शेलडी आपे छे मुकुट कुंडल आपे छे

नाभिराजा सभामा बेठा छे

दिक सर्वप्रकारनी विवाह संबंधी जे रीतीउ छे ते रीतीउ करीने वर कन्याने परणाव्या तिहांथी युगलीयामां विवाह करवानी रीती प्रवर्त्तमान थइ ते आजदिवस पर्यंत चाली आवे छे हवे श्रीरूपनदेवजीने, सुनंदा तथा सुमंगला ए बे राणीयो साथे नोग नोगवतां छ लाख पूर्व व्यतिक्रम्या तेवारे सुमंगलाने नरत अने ब्राह्मी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो, अने सुनंदाने एकतो बाहुबली तथा सुंदरी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो तथा उगणपचास तो निकेवल पुत्रोनाज जोडला थया एरीते रूपनदेव स्वामीने शो पुत्र तथा बे पुत्रीनो परिकर थयो हवे कालना महात्म्यथी अनुक्रमें दिवसें दिवसे युगलीयाउमां कषायनी वृद्धि थवा मांडी तेवारे हकार, मकार अने धिक्कार ए त्रण जातनी जे दंमनीतिउ चालती हती तेने पण लोक उल्लंघन करवा लाग्या तेने मान्य न करता पोतपोतामां क्लेश उत्पन्न थवाथी श्रीरूपनदेवनी पासे आवी कहेवा लाग्या के अमारो न्याय करी आपो तेवारे नगवान बोल्या हुं राजा नथी महारा पिता नाभिकुलघर राजा छे तेनी पासे तमे जाउ ते सांनली युगलीया नाभीराजा पासे गया नाभीराजाये तेमने कह्यु के तमारो राजा रूपनदेव होवो ते तमारो न्याय करशे ए अवसरमां इंद्रमहाराजनुं आसन चलायमान थयुं तेवारे अवधिज्ञानथी नगवानने राज्यपाटे स्थापना करवानुं अवसर जाणी इंद्रमाहाराजे तिहां आवी नगवानने मुकुट,कुंमल, हार प्रमुख पहेरावी सिंहासन उपर बेसाडी राज्य अभिषेक कर्यो तिहां युगलीया इंद्रमहाराजना कहेवाथी जल लेवा गया हता परतु ते राज्याभिषेक थइ गया पछी जल लेइने आव्या तेवारे नगवानने सणगार सहित सिंहासन उपर बेठेला जोइने युगलीयाने विवेक आव्यो जे बीजा तो सर्व शरीर उपर शोना थइ रही छे परतु एक नगवानना पग खाली देखाय छे एवुं जाणी पग उ

पर पाणी ढोल्यु केटली प्रतोमां तो युगलीया मांहोमाहे वढवाड करीने नाभि कुलधर पासे
न्याय कराववा गया नाभिराजाये तेमने कह्यु के अमे गरढा थया माटे तमे ऋषभने जइ कहो
ते तमारो न्याय करशे युगलीयाये जइ ऋषभजीने कह्यो ऋषभजी बोल्या मने राज्य अ
भिषेक करी राजा स्थापो तेवारे युगलीयाये धूलनो एक महोटो ढगलो बनावी तेना उपर प्र
भुने बेसाडी पोते अभिषेक करवा पाणी लेवा गया एवामा इन्द्रनु आसन कंप्यु तेणे आवीने
मुकुटादिक अलंकार पहेरावी सिंहासने बेसाडी, वस्त्रविभूषित करी राज्याभिषेक विधि सा
चव्यो प्रभु उपर छत्र धारण कर्यु, चामर वींजतो थको इन्द्रमहाराज पोते प्रभुनी सेवा करे छे एट
लामां युगलीया पण कमलपत्रना डुनामा पाणी भरी लइ आव्या तिहा भगवाननु स्वरूप स
र्वालंकारविभूषित देखीने चितववा लाग्या के प्रथम भगवानना केहवा प्रमाणे जो पाणी एम
ना मस्तक उपर नाखिये तो सर्व वस्त्र, अलंकार भींजाइ जाय माटे स्वामीनो डावो पग
छूटो छे तेना उपर न्हवण करीये एम विचारी डावा पग उपर अभिषेक कीधो तेवारे इन्द्र
महाराज बोल्या ए युगलीया भला विनीत पुरुषो छे तेमाटे इहा विनीता नामे नगरी वसा
ववी एवु कहीने वैश्रवण नामे देवने इन्द्रे नगरी वसावी आपवानी आज्ञा आपी तेवारे वैश्र
वणे विनीता नगरी बनावी ते केवी रीतनी बनावी लोके बार योजन लांबी, नव योजन
पोली, आठ दरवाजा कर्या, फरतो महोटो कोट कर्यो, ईशान कोणमा सात भूमिउं चोखूणो
एवो एक महोटो नाभिराजाने रहेवा माटे घर बनाव्यु, अने पूर्व दिशाये भरतने रहेवा सारु
सात भूमीनु घर बनाव्यु, अग्निकोणमा बाहुबलीने रहेवा माटे महोटु घर बनाव्यु तेनी व
चमां श्रीऋषभदेवजीने रहेवा सारु एकवीश भूमिनो घर बनाव्यु, एकसो आठ जिनमंदिर

बनाव्या, वली राज्यने अर्थे हाथी, घोडा, गाय, ऊंट, वेसर, बलद प्रमुख चतुष्पदोनो संग्रह कर्यो आगल तो ए हाथी प्रमुख सर्व जीवो जंगलमां फरतां रहेता हता. वली केटलाएक जुगलीया अपराधमां आवे तेमने दंड देवामाटे उग्रा एवा नामथी माणसो स्थापन कर्या, केटलाएक गुरुस्थानीया करी तेमने भोगा एवा नामथी स्थापन कर्या, केटलाएक मंडलाधिप करीने तेमने राजन्य एवा नामथी थाप्या, बीजा पायदल क्षत्रियो एवा नामेंकरी थाप्या एम चार प्रकारना पुरुषोनी व्यवस्था थइ ॥ तथा वली जे ब्रह्मचर्य पाले ते ब्राह्मण, जे शस्त्र राखे ते क्षत्री, खेती करावे ते वैश्य, चाकरी करे ते शूद्र, एवा नाम स्थापन कर्या वली ए विनीता नगरीमां चोरासी चौटा कर्या तेमां सोगंधिक, गांधी, तंबोली, कंदोइ, सोनार, मणियार, सोनुं वेचनार, माणिक वेचनार, नाणावटी, भाडभुंजा, धान्यवजार, दोसी, चमार, कंसारा, माली, घृत वजार, तथा तेल, सूत्र, कपास, भांमा, भाडा इत्यादिक वजारो करी अनेक जातना उद्यमीउ वगेरे थया ॥ ॥ श्रीऋषभनाथ स्वामीना पांच नाम थया एक ऋषभनाथ, बीजुं प्रथम राजा, त्रीजुं पहेलां भिक्षाचर, चोथुं पहेला केवली अने पांचमुं पहेला तीर्थंकर ए पांच नाम थया ॥ २११ ॥ ॥ श्री ऋषभनाथ अरिहंत महाचतुर, भली प्रतिज्ञाना पालनार, भला रूपवत, सर्वगुणसहित, सरल, विनीत, वीश लाख पूर्व पर्यंत कुमर पदे रह्या, त्रेशठ लाख पूर्व लगें राज्य भोगव्यो, तिहां राज्य करतां लखवानी कला, गणवानी कला, बहोतेर कला पुरुषोनी तथा चोशठ कला स्त्रीयोनी, कारीगरोना सो भेद, खेतीकर्मादिक त्रण कर्म इत्यादिक वातोनो लोकोना हित करवाने सारुं उपदेश दइने, सो पुत्रोने सो देशनो जूदोजूदो राज्य आपीने वली लोकांतिक देवोना प्रतिबोधथी वरसीदान देइने, गोत्रीयाने धन वांटी आपीने,

उनालानो पहेलो महिनो, पहेलुं पखवाडियुं, चैत्र वदि आठमना दिवसे, पाछले पहोरे, सुदसणा नामा पालखीमा बेसीने, देवमनुष्यसहित, यावत् विनीतानी राज्यधानीमाथी थइने, जिहां सिद्धवण उद्यान छे तिहां अशोक वृक्षनी नीचे पालखी राखीने, ते पालखीमांथी नीचे उतरीने, सर्व घरेणा पोताना हाथथी उतारीने, चार मुष्टि लोच करे, बेलानो एटले छठ्ठ तप पाणी रहित चउविहारो करे छते, उत्तराषाढा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके उग्रकुलना, भोगकुलना, राज्यकुलना, क्षत्रियकुलना एवा कछ महाकछ प्रमुख चार हजार पुरुषोनी साथे इंद्रदत्त एक देवडुष्य वस्त्र लइने, दीक्षा लीधी, गृहस्थपणो त्यागीने साधुपणो अंगीकार कर्यो ॥ २१२ ॥ ॥ हवे वली भगवाने दीक्षा लीधी तेथी पहेलानी वात बनेली ते लखिये छेये ॥ भरतनी साथे ब्राह्मी जन्मी हती ते बाहुबलीने परणावी अने जे बाहुबलीनी साथे सुंदरीनो जन्म थयो हतो ते भरतने स्त्रीरत्न करवा माटे राखी एटले युगलधर्म मटाड्यो ॥ हवे युगलीयाने आहार पचे नही ते आश्रयी कहे छे प्रथमतो युगलीया कल्पवृक्षना पत्रादिकनो आहार करतां हता ते अयोग्य थया, खावा योग्य रह्या नही तेवारे लोक मूल, पत्र, कंद, फल अने फूलनो आहार करवा लाग्या अपकशालिप्रमुख काचुं धान्य खावा लाग्या, ते खातांखातां पचे नही, पेटमां डखी आवे तेवारे भगवान् पासे आवी कहेवा लाग्या के आहार कर्याथी अमारु पेट चडी आवे छे भगवान बोल्या लगारेक हाथमां मसलीने हाथनी बाफ आपीने खाउतो पची जासे केटलाएक दिवस पछी ते पण पच्यो नही पछी कांखमा अने हृदयमां राखी बाफ आपीने आहार करवा कह्यु केटला काल पछी ते पण पचवा लाग्यो नही एवा अवसरे वनमांहे वश घासते घासते अग्नि उपन्यो ते देखीने युगलीयाये जाण्युं ए कोइ अपूर्व



ऋषभदेवजी हाथी उपर बेसीने माटीना वासण बनावीने युगलीयाने आपर तथा युगलीया माटीना पिंड लई आवी भगवानने आपव

रत्न उत्पन्न थयुं ठे एवु जाणी तेने हाथमा लेवा लाग्या तेथी हाथ बलवा मांम्या तेवारे तेनाथी बीहीता थका ऋषनदेवजीने जइ कहेवा लाग्या के हे स्वामि एक अपूर्व रत्न उपन्युं ठे परतु तेमा क्रोध घणो ठे तेथी हाथ लगाडीयें तो बालवाने दोडे ठे एविषे क्यांएक एवु पण लखेलुं ठे के युगलीआउए जइ नगवानने कह्यु के कोइ राक्षस उठ्यो ठे पठी नगवाने अवधिज्ञाने जोयु तो अग्नि उपन्यो दीठो तेवारे युगलीयाने कह्यु के तमे एमां तृण लगावीने अग्नि ग्रहण करो तेमां शालिप्रमुख धान्य पचावीने खाउ तेवारे युगलीयाउए परसवाडाना तिरणा तोडीने अग्नि जूदो सलगावी, तेमां धान्य नाख्युं ते सर्व बली गयु कांइपण पाछुं हाथमां आव्यु नही ते जोइ फरी नगवान् पासे आवीने कहेवा लाग्या के ते पोतेज नुख्यो ठे माटे सर्व धान्य खाइ जाय ठे अमने कांइ पण आपतो नथी ते सांनली नगवान् बोल्या हुं हाथी उपर चढीने आवु तेवारे मने एक माटीनो पिंम आपजो पठी युगलीयाये तेमज कर्यु माटीनो पिंम लइ आव्या ते माटीमांथी नगवाने हांमी, कुंमी प्रमुख वासण बनावी आप्या अने सर्वे रीत पण कही समजावी जे आवीआवी रीते बनावीने, वासणीमां पचावी एमां धान्य पाणी नाखीने अग्नि उपर चढावी पाकुं धान्य करीने खाउ एवा नगवाने बतावेला विधिथी युगलीया अन्नने पचावीने खावा लाग्या तेवारे अन्न पचवा लाग्यु ए नोजनविधि कह्यो ॥ ॥ हवे नगवाने अढार जातिनी लीपी ब्राह्मीने जिमणा हाथथी लखवाने बतावी तेना नाम कहे ठे १ हंसलिपी, २ नूतलिपी, ३ यक्षलिपी, ४ राक्षसलिपी, ५ उड्डी लिपी, ६ यावनी लिपी, ७ तुरकीलिपी, ८ कीरीलिपी, ९ द्राविडीलिपी, १० सैंधवीलिपी, ११ मालवीलिपी, १२ नडीलिपी, १३ नागरीलिपी, १४ लाटीलिपी, १५ पारसीलिपी, १६ अनिमित्तिलिपी, १७

चाणाकीलिपी, १८ मूलदेवीलिपी ए अढार लिपीना नाम तथा बीजी पण देशना नामे लिपी जे मके लाटी, चोटी, माहाली इत्यादिक लिपी जाणवी ॥ तथा गणित जे आंकनो विधान ते सुद रीने जगवाने मावे हाथे करवाने बताव्यु ते श्या जणी तोके " अंकाना वामतो गति ॥ अक्षराणां दक्षिणतो गति " वली जरत महाराजने रूप करवानु कर्म बताव्यु तथा बाहुबलीने पुरुषादिलक्षण बताव्या तथा पुरुषनी बहोतेर कलाउ बतावी तेना नाम कहे छे १ लेखनकला, २ पठनकला ३ गणितकला, ४ गीत गावानी कला, ५ नाटकनी कला, ६ तालमाननी कला, ७ ढोल वजाववानी कला, ८ मृदग वजाववानी कला, ९ वीणा वजाववानी कला, १० वांसली वजाववानी कला, ११ जेरी वजाववानी कला, १२ हाथी परखवानी कला, १३ घोडा परखवानी कला, १४ धातुवादनी कला, १५ दृष्टिवादनी कला, १६ मन्त्रवादनी कला, १७ पलितविणासनी कला, १८ रत्नलक्षण, १९ नारीलक्षण, २० नरलक्षण, २१ छदकरण, २२ तर्कवाद, २३ न्याय, २४ तत्त्वविचार, २५ काव्यकरण, २६ ज्योतिष, २७ चारवेदनी कला, २८ वैद्यकला, २९ षट्जाषाज्ञान, ३० वशीकरण, ३१ अजन, ३२ लिपी, ३३ कृषिकर्म, ३४ सुपन, ३५ वाणिज्य, ३६ राजसेवा, ३७ शकुन, ३८ इन्द्रजाल, ३९ वायुस्तजन, ४० अग्निस्तजन, ४१ मेघ वर्षाववानी कला, ४२ लेपनकला, ४३ मर्दनकला, ४४ ऊर्ध्व जावानी कला, ४५ घटबंधननी कला, ४६ घणो फेरवो, ४७ पत्र छेदवो, ४८ मर्मजेदन, ४९ फल खेचवो, ५० पाणीवृष्टि, ५१ लोकाचार शीखवानी कला, ५२ लोकोनी मरजी राखवानी कला, ५३ फल जरवानी कला, ५४ खड्ग धारवानी कला, ५५ छुरीबंधन, ५६ मुद्राकरण, ५७ लोहघटन, ५८ दंतसमारण, ५९ काष्ठछेदन, ६० चित्रकरण, ६१ बाहुयुद्ध, ६२ दृष्टियुद्ध, ६३ मुष्टियुद्ध,

६४ दंडयुद्ध, ६५ खड्गयुद्ध, ६६ वाग्युद्ध, ६७ गरुडमर्द्दन, ६८ सर्पदमन, ६९ भूतदमन, ७० योगध्यान, ७१ वर्षज्ञान ७२ नामावली ए पुरुषनी बहोतेर कला भगवाने बतावी ॥ हवे स्त्रीयोनी चोशठ कला बतावी तेना नाम कहे छे १ नाचवानी कला, २ आदर देवानी कला, ३ चित्रकला, ४ वादकला, ५ मंत्रकला, ६ तंत्रकला, ७ ज्ञानकला, ८ विज्ञानकला, ९ दंभकला, १० जलस्तंभनकला, ११ गीत गावानी कला, १२ तालमाननी कला, १३ मेघवृष्टीनी कला, १४ फलाकृष्टीनी कला, १५ वाग्गोपन, १६ आकारगोपन, १७ धर्मविचार, १८ शकुन जोवुं, १९ क्रियाकल्प, २० संस्कृतभाषा बोलवी, २१ प्रसादनीति, २२ धर्मनीति, २३ वर्णिकावृध्धी, २४ सुवर्णसिद्धि, २५ सुगंधितेल करवु, २६ लीलासहित चालवु, २७ हाथी घोडानी परीक्षा करवी, २८ पुरुषस्त्रीलक्षण जाणवु, २९ सुवर्णरत्नभेदनुं ज्ञान, ३० अढार जातिनी लीपी, ३१ तात्कालिक बुद्धि, ३२ वास्तुसिद्धि, ३३ वैद्यक्रिया, ३४ कामक्रिया, ३५ घटभ्रमण, ३६ सारिपरिश्रम, ३७ अंजनयोग, ३८ चूर्णयोग, ३९ हस्तलाघव, ४० वचनचतुरता, ४१ भोजनविधि, ४२ वाणिज्यविधि, ४३ मुखमजन्न, ४४ शालिखंडन, ४५ कथा केहवी, ४६ फूलगुथन, ४७ वांकुं बोलवु, ४८ काव्यशक्ति, ४९ वेस बनाववो, ५० सर्वप्रकारनी भाषाउ बोलवी, ५१ अभिधानज्ञान, ५२ घरेणा पहेरवा, ५३ राजानी भक्ति करवी, ५४ घरनो आचार शीखवो, ५५ काव्यकरण, ५६ परने हरावको, ५७ धान्य रांधवु, ५८ केश बांधवा गुंथवा, ५९ वीणा वजाववी, ६० वितंडावाद, ६१ अंकविचार, ६२ लोकव्यवहार, ६३ अंत्याक्षरिका, ६४ प्रश्नप्रहेलिका ए चोशठ स्त्रीयोनी कला भगवाने बतावी तथा श्रीऋषभदेवजीना सो पुत्रना नाम आवी रीते छे. १ भरत २ बाहुबली, ३ मस्तक, ४ पुत्रा

गारक, ५ मल्लिदेव, ६ अगज्योति, ७ मलयदेव, ८ नार्गवनाथ, ९ अगदेव, १० वसुदेव, ११ मगधनायक इत्यादिक सो पुत्र जाणवा तेमांथी नरतने तो अयोध्यानुं राज्य आप्युं तथा बाहुबलीने तक्षशिला नगरीनु राज्य आप्युं अने बीजा अठाणु पुत्रोने अंग वंग प्रमुख देशोना राज्य आप्या पछी पोते चार हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लइने विहार कर्यो हतो ते वखत चार मुष्टी लोच कर्यो हतो अने बीजा तीर्थंकर सर्व पांच मुष्टी लोच करे छे तेनु कारण कही देखाडे छे नगवाने जेवारे चार मुष्टी लोच करी लीधो तेवारे पांचमी मुठीये उखेडी नाखीये एटला केस पाछल चोटलीमां रह्या एटलामां पवन वाह्यो तेने लीधे ते केसनी शिखा फरकीने पोहोली थइ तेथी घणीज सोनवा लागी ते जोइने इन्द्रमहाराजे प्रभुने विनति करी के महाराज केशनी शिखा घणीज सारी रमणिक देखाय छे माटे एमज रहे तो सारुं प्रभुये पण ते शिखा एमज राखी ते जेम पद्मद्रहमांथी सिंधूनदी निकलती वखते सवा छ योजननी पोहोली छे अने पछी अनुक्रमे वधती वधती समुद्रमां मलतां साडी बाशठ योजननी पोहोलपणे थयली छे तेम ए चोटली पण मस्तकना थडमांथी नीकलेली ते आगल आगल पोहोलाइमां विस्तारने पामती दीठामां आवी तेथी पद्मद्रह सिंधुनदीना प्रवाहनी पेरे शोनाकारी देखवा लागी तेने लोक नापाये अद्या चोटली पण कहे छे हवे नगवान घोर अभिग्रहधारी थया थका ग्रामानुग्रामे विहार करता आकरा परिसह सहन करता थका विचरे छे तिहां नगवानने यद्यपि छठ तपनुं पारणुं करवु हतुं तथापि ते वखतमां सुपात्र साधुने दान देवानो विधि कोइ जाणतो न हतो निक्षानो व्यवहार कोइ जाणतो नथी साधु ते शुं अने निक्षा ते वली शुं? एवो कोइ समजे नही ते वखत कोइ निक्षानो मागनार पण डुनीयामां

रहे तिहां जगा साफ करे, कांटो, कांकरो काहाडी नाखे, पाणी छटकावे, फूल विछावे, मांस मशकादिक उफाडे, त्रिकाल खड्ग धरे एम प्रजुनी सेवा जक्ति करता थका विचरे छे एकदा धरणीड् जगवानने वांदवा आव्यो तेणे नमि विनमिने कह्यु के जगवान तो त्यागी छे माटे तमे जरतनी पासे जाउ ते तमोने राज्य आपशे तेवारे ते बोल्या जगवान विना अमे बीजा कोइ पासेथी राज्य मागीयें नही एवुं सांजली धरणीड् तेमनी जक्तिथी संतुष्ट थइने कहेवा लागो के तमे एकमना थइने प्रजुनी सेवा करो छो तो महोटाना चरणनी सेवा केवारे पण निष्फल थाय नही तेथी हुं तमारा उपर निवाज्यो हुं माटे जे मागो ते हुं आपुं तो पण तेणे कांइ माग्युं नही तेवारें धरणीडे जगवतना शरीर अदृष्टि अदृष्टि एटले जगवानना मुखें अवतरीने अडतालीश हजार विद्याउ पाठ गुणतांज सिद्ध थइ जाय एवी शीखावी अने गौरी, गांधारी, रोहिणी तथा प्रज्ञप्ति प्रमुख शोल देवीयो ते विद्याउनी अधिष्ठायकाउ छे ते आपी अने वैताढ्य पर्वतनी दक्षण उत्तर श्रेणीनुं राज्य आप्युं पछी विद्याउ साधी बन्ने जाइउ विद्याधरनी ऋद्धि पाम्या त्यारे पोतानो सर्व स्वजनवर्ग लइने रथनुपुर चक्रवालादि पच्चास नगर उत्तर श्रेणिना तथा गगनवल्लज प्रमुख शाठ नगर दक्षण श्रेणीना वसावीने विद्याना बलथी सर्व परिवार सहित तिहां रहेता हवा पछी ते बे जाइउने धरणीडे कह्युं के हे विद्याधरो तमे सांजलो जे एक तो केवली जगवाननी, बीजी जिनप्रतिमानी, त्रीजी चरम शरीरीनी अने चोथी प्रतिमाधर साधुनी ए चारनी जो तमे आशातना करशो अने वली एनुं उल्लघन करशो एटले ए चारने रस्तामा मूकी तेना दर्शन सेवा कर्या विना एमज चाल्या जासो तथा परस्त्रीनी साथे जोरावरीथी जोग जोगवशो तो तमारी विद्याउ नि फल

हतो नही तेणेकरी जिहां जाय तिहां कोइ अन्न आपे नही तेथी
तृषाये पीड्या थका प्रभुने आहारनो उपाय पूछवा लाग्या पण
पणे रह्या तेवारे कछ अने महाकछने पूछ्युं तेणे पण कह्यु के
नथी तेवारे सवे विचार करवा लाग्या के आपणे प्रथमथीज
अने हवे पाछा घेर जइने वेसवु पण योग्य नथी तेम आहार कस्या
जाय नही तो हवे आपणने ए वनवासमां रहेवुज नलु छे एम चित
दक्षण तटना वनमां जटिल तापस थइने रह्या अने वृक्षमांथी नीचे
फल, फूल आदिकनो आहार करवा लाग्या तथा वृक्षनी छालना वस्त्र पेहरे
नदेवजीनु ध्यान करता थका विचरवा लाग्या ॥ हवे जेवारे प्रभुये दीक्षा लीधी हती
तेवारे सर्व पुत्रोने जुदा जुदा देशोना राज्य वहेंची आप्या हता तें अवसरमां कछ अने म
हाकछना पुत्र एक नमि अने बीजो विनमी ए वेहुने नगवानें पुत्रनी पेरे पाल्या हता ते
वन्ने जण ते वखतें क्यांएक देशांतरें जता रह्या हता पण हाजर हता नही ते जेवारें पाछा
फरी आव्या तेवारे तेणे नरतने आवी कह्यु के अमने राज्य केम न आप्यो नरतें कह्यु
के हुं तमने थोडोक नाग आपु तेणे कह्यु के ताहारा पासेथी न लहीयें तेवारें नरतें कह्यु
नगवान जाणे ने तमे जाणो तेवारे वेहु नाइ नरतनी अवगणना करीने नगवाननी पासे
आवी तेमना चरणकमलनी सेवा करीने कहेवा लाग्या के हे प्रभु तमे सर्वने राज्य दीधुं
माटे अमोने राज्य आपो नगवाने तो ससारत्याग कस्यो छे माटे मौनपणे रह्या कांइ उत्तर
दीधुं नही तेवारे ते वन्ने जण राज्यने अर्थे नगवाननी पाछल रह्या जिहां नगवान उना

थइ जाओ एवी रीते शिखामण आपीने ते शिखामण रत्नजीत उपर लखीने धरणेंद्र पोताने स्थानके गयो पछी भगवाननी सेवानु फल भरतने कहीने शोलजाति विद्याधरोनी थापी दक्षण श्रेणीनु राज्य नमि करवा लाग्यो अने उत्तर श्रेणीनुं राज्य विनमि करवा लाग्यो ॥ इति नमि विनमि प्रबध ॥ हवे भगवान पूर्वकृत अंतराय कर्मना उदय थकी एक वर्ष पर्यंत आहार विना रह्या क्यांय शुद्ध भिक्षा न पामता हवा जिहां गोचरीये जाय तिहां महोटो माणस जोइने कोइ वस्त्र आपे, कोइ आभरण आपे, कोइ मणी, माणिक अने मुक्ताफलना थाल भरी आपे, कोइक तो घणी स्वरूपवान् एवी कन्याने शोल शणगारे शणगारीने आपवा तयार थाय, कोइक तो हाथी, घोडा, रथ इत्यादिक वाहन आपवा आवे, कोइ एक धनभृत सुवर्णस्थालप्रमुख उचित वस्तु आपवा आवे एम घणा घणा पदार्थ लावीने लोको स्वामिनी आगल धरे ते सर्व अणखपता भणी स्वामी लीये नही पण अन्न कोइ आपवा आवे नही एवी रीते एक वर्ष पर्यंत स्वामी निराहारी रह्या पण आहार विना लगार मात्र भग्या नही दीनपणुं आव्यु नही एवी रीते भगवान विचरता थका एकदा गजपुर नगरे पधार्या तिहां बाहुबलीनो पुत्र सोमप्रभ नामे राजा राज्य करे छे तेनो पुत्र श्रेयांस कुमर युवराजा छे तेणे ते रात्रीये सुपनुं दीठुं हतुं जे मेरुपर्वत मलिन थइ गयो हतो तेने मे अमृतना घडाथी धोइने उज्ज्वल शोभायमान कीधो तथा श्रेयांसना पिता सोमप्रभ राजाने एवु सुपनुं आव्युं जे कोइ एक पुरुषने शत्रुये घेरी लीधो ते श्रेयांस कुमरना सहाय थकी जय पामी छूटो थयो तथा ते नगरना सुबुद्धि शेठने सुपनुं आव्युं जे सूर्यना सहस्र किरणो पडता हता तेने श्रेयांस कुमरे पाछा सूर्यमां थाप्या ए त्रणे जण प्रभाते राजसभामां भेला थया तिहां स

हुये पोतपोताने आवेला सुपनानी वात कही तेवारे सर्वना मनमां एवो विचार आव्यो के आ सुपनानु सर्वे फल श्रेयांसकुमरने थाशे अने श्रेयांसने कोइ महोटो लाभ थाशे एम कही सहु पोतपोताने घेर गया पछी मध्यान्ह समये गोचरी करवाने माटे श्रीऋषभदेवजी घरघरने विषे फरवा लाग्या तेने लोको पूर्वोक्त रीते वस्त्राभरणादिक वस्तु आपवा लाग्या पण प्रभु लेता नथी तेथी लोकोमा कोलाहल थइ रह्यो छे जे भगवानतो कांइ पण लेता नथी एटलामां श्रेयांस कुमर गोखमा बेठा हता तेणे श्रीऋषभदेवजीने दीठा पछी इहापो करता जातिस्मरण ज्ञान पाम्या तेणेकरी पूर्वलो भव दीठो तेवारे जाण्यु जे अहो ! हुतो ए प्रभुनो पूर्वभवने विषे सारथी हतो तिहा मे पण दीक्षा लीधी हती तिहां वज्रसेन तीर्थकरे एवु कह्यु हतु जे ए वज्रनाभ राजर्षि भरतक्षेत्रमां पहेला तीर्थकर थाशे तेज ए प्रभु तीर्थकर, देवोना देव गोचरीये भमता देखाय छे एम जाणी गोखथकी हेठा उतरीने कह्यु के हे प्रभु लोको साधुने दान देवानी रीतीमा वाकेब नथी एम कही पांच अभिगमन साचवी त्रण प्रदक्षिणा देइ॥ इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वदामि ॥ १ ॥ ॥ एम खमासमण आपी पछी इच्छाकारि सुहराइ सुहदेवसि सुख तप शरीर निराबाध सुख संजम जात्रा निर्वहोछोजी हे भगवन् भातपाणीनो लाभ देवा पधारो महारु गृहांगण पावन करो, महारे घरे पधारो, शुद्ध बेतालीश दोष रहित आहार वहोरीने महारो निस्तार करो एम इहां श्रेयांस कुमर पहेला श्रावक प्रगट थया ते समये शेलडीना रसे भरला एकशोने आठ घडा श्रेयांस कुमरने कोइक भेट आपी गयेलो छे ते शुद्धमान घडा लइने श्रेयांस कुमरे भगवतने भिक्षा लेवानी विनती करी ---- कवी घटना करे छे के दान लेती वखते प्रभुना बेहु हाथनो

मांहोमांहे विवाद थयो ते आवी रीते के प्रथम जमणो हाथ गद्गद्स्वरे करीने श्रेयांस कुमर प्रत्ये कहेतो हवो के अहो श्रेयास तुं सांजल हु श्रीरूपनदेवनो आजन्मनो सेवक हुं, मे श्री रूषनदेवजीना प्रसादेंकरीने घणा महोटा महोटा उत्तम काम कर्या ठे तेणेकरी हु घणो प्रतिष्ठा पामेलो हुं ते महारा कर्त्तव्य तुं निरपेक्ष पणे सांजल प्रथम तो मे इन्द्रादिक देवोने देखता थकां जमणे अगुठेकरीने प्रजुने अमृतपान कराव्यु एटले तीर्थंकरनी एवी रीतिज ठे के पोतानी मातानु तथा अन्य स्त्रीयोनुं स्तनपान नकरे पण जेवारे क्षुध लागे तेवारे पोताना जमणा हाथनो अंगुठो चूसवा मांन्डे के तरतज तेमां अमृतमयी पुद्गल प्रणमी जाय तेथी क्षुधावेदनी उपशमी जाय ॥ १ ॥ वली वसस्थापनाने अवसरे मे इन्द्रना हाथथी सेलडीनो सांठो ग्रहण करीने स्वामीनी वांठा पूरण करी माटे वसस्थापवामां पण हुं आगेवान थयो ॥ २ ॥ वली मे नरतराजाने तिलक करीने विनीता नगरीनुं राज्य आपी ठ खण्नो जोक्ता कर्यो एटले राज्यस्थापनमां पण जमणे हाथेज मगलिक कामे टीलुं कराय ठे ॥ ३ ॥ वली नरतनी पेरेज मे बाहुबलीने तिक्षशिला नगरीनु राज्य आप्युं ॥ ४ ॥ तथा शेष अठाणु पुत्रने पण एज रीते मे राज्य आप्यु ॥ ५ ॥ तथा सुनंदा अने सुमंगला ए बे कन्याउने पण हाथ मलाववाने अवसरे जमणे हाथे जालीने स्वामीने परणावी दीधी ॥ ६ ॥ वली मे एक वर्ष पर्यंत स्वइच्छित वरसी दान आपीने त्रण जगतना मनोवांछित पूरण कर्या केमके दान पण जमणा हाथेज देवाय ठे ॥ ७ ॥ ॥ वली हुं ठत्र, चामर, चक्र, गदा खड्ग, धनुष्य, अकुश. वज्र अने शंखादिक शुन्न लक्षणेकरी विराजमान थको शोन्नी रह्यो हुं एवा सर्व लक्षण हुं (जमणो हाथ) धारण करुं हुं अने लक्षण जोवावाला लोक पण महा

रीज रेखाउ आदिक सर्व लक्षणने जुए ने ॥ ८ ॥ वळी तीर्थयात्रा, पुत्रप्राप्ति, सौनाग्य, यश कीर्त्तिनी सूचक रेखाउनो धारक पण हुंज हु एटले ए सर्व नावोने सूचववा वाळी रेखाउ जो जमणा हाथमा होय तोज तद्रूप फळनी प्राप्ति थाय ने ॥ ए ॥ वळी हु चोखा देखवामा सो धवामा चतुर व्यापारवान हु एटले चोखा गोधूमादिकमांथी कांकरा प्रमुख सोधी काहाडवा ते जमणा हाथथीज बनी शके ने ॥ १० ॥ वळी दानने विषे, नोजनने विषे, देवपूजाने विषे, परमेश्वरना स्मरणने विषे, प्रीति बांधवाने विषे, बोल तथा कबुलात आपवाने विषे, दानने विषे, इत्यादिक शुन्न शुन्न कार्योमा म्हारोज अधिकार ने ॥ ११ ॥ एवी रीते हु सर्वनी उपर हु अने म्होटा म्होटा कामोमा म्हारो अधिकार ने तो कहो आ स्वल्प सेलडीना तुब रसनी हेठळ केवी रीते थाउ वळी मे त्र्यासी लाख पूर्व लगे नगवाननी साथे राज्य साम्राज्य पाळ्यु तो हवे हु हमणा नगवतनी आगळ थइने केवी रीते याचना करांवु तेज कारणथी मे खावु, पीवु, पहेरवु, उढवु, नाटक देखवु, इत्यादिक क्रीडाविना मौन धरावीने वन गहन अटवीउमां प्रजुने नमाव्या तो हवे आ सेलडीना रसने हु ग्रहण न करुं माटे तमे मावा हाथने कहो तो ते मा गी लेशे एवा जमणा हाथना वचन सांनळीने मावो हाथ बोल्यो के हे निर्लज्ज तुं वृथा पोतानी मेळे पोताना आत्मानी म्होटाइ करीने शु प्रशसा करे ने पोताना मुखथी जे पोतानी म्होटाइ करे तेमा कोइ गुण होय तोपण ते लघुताने पामी जाय अने परनी प्रशसा करवाथी जो निर्गुणी होय तो पण गुणवान् थाय गुणवत होय तेना गुण तो पोतानी मेळेज प्रगट थाय जेम कपूरनो सुगध, रत्ननु तेज अने मणिनु निर्विषपणुं इत्यादिक जे गुणो ने ते पोतानी मेळेज प्रगट देखाइ आवे ने पण ते कोइ कोइने आगळ कहेवा जाता नथी वळी एकनाज रहेनारा बे जण होय तेमां

थी एक जण ऊठीने पोताना गुण बीजानी आगल वर्णवी देखाडे ते युक्त नथी जेम माताना मुख आगल मामानुं वर्णन करी देखाडवु युक्त कहेवाय नही तेनी पेठे ए पण जाणी लेवु ॥ माटे अहो श्रीश्रेयांस श्रीऋषभ देवना परपोत्रा म्हारुं पण कर्तव्य जे छे ते तुं सांभल परमेश्वरे जे बे कन्याने परणवानु स्वीकार्युं तेमने सूवा बेसवानुं ठेकाणुं तो मेज आप्यु कारण के स्त्रीयो जे छे ते पतिना डावापासा तरफ सूवे बेशे छे एटले जमणे हाथे तो मात्र स्त्रीनुं हाथ झालीने उगाडी मूकी पण तेमने बेसवा माटे स्थानक तो मे आप्युं ॥ १ ॥ वली हुं ढाल आगल राखीने सग्रामनेविषे स्वामीनुं रक्षण करुं छुं अने जमणो हाथ तो खड्ग उपाडीने पाछो नासी जाय छे ॥ २ ॥ वली हुं सग्राममां धनुष्यने आगल धारण करीने ऊभो रहुं छुं अने आ जमणो हाथ तो तीर लइने कानने विषे चुगलनी पेरे पेशे छे ॥ ३ ॥ वली आंक गणवानो व्यापार पण म्हारी पासे थाय छे एटले आंकनी वामगति होय छे ॥ ४ ॥ वली ग्रामांतरे प्रयाण करतां गधेडो पण जो म्हारी दिशा तरफ आवीने बोले तो सिद्धिदायक छे ॥ ५ ॥ तेमज देव चकली पण डावे पासे आवी बोले तेवारे शुभ फलनी सूचवनारी थाय छे ॥ ६ ॥ वली प्रथम प्रयाणने विषे प्रथम रात्रीना पहोरमां सीयालीया पण म्हारी दिशाये रह्या थका बोले तो सिद्धिना करवावाला थाय ॥ ७ ॥ वली जे प्राणी रोगादिके पीडाणो होय ते पण घणुं करीने डावे पासे सूवे तो तेने समाधिकारक थाय ॥ ८ ॥ वली म्हारी तरफनी चड्नाडी वहेतां जे शुभकामनो प्रारंभ कर्यो होय ते सिद्धिदायक थाय ॥ ९ ॥ वली हे श्रेयांस तु सांभल के आ पापी जमणा हाथे प्रभुने परणवाने अवसरे कन्याउनो हाथ ग्रहण कर्यो तेवारे पण मने बोलाव्युं नही ॥ १० ॥

वली कसार पण एणे एकलेज खाधु पण एम न जाण्यु जे आ महारो नाइ नूख्यो छे माटे थोडोक एने पण बोलावीने खवाडु एवो विचार कर्या विना महाराथी कपट करीने ए एकलोज खाइ गयो तेथी ए नि केवल पेट नरो देखाय छे, फोकट पोताना मुखथी पोताना गुणनु वर्णन करे छे ॥ ११ ॥ वली हे श्रेयांस तु सान्नल बीजी पण एनी निष्ठुरता कही देखाडुं छु के जे वखत मिष्टान्नपान नोजन करे तेवारे नोजन तो पोते करे अने मक्षिकाउ महारा पासे उडावे तो पण हु ते वखत महारी दाक्षिणताथी महारो महोटो नाइ जाणीने एने कांइ कहु नही ॥ १२ ॥ वली ए जमणा हाथमा चतुराइ किंवा बीजो कोइ गुण पण काइ नथी कारण के जे वखत मस्तके पागडी वींटे छे ते वखत एतो जेम तेम वींटी नाखे छे पण पाछलथी बरोबर आंटा प्रमुख सुधारवा करवानु काम, बरानर रचना करवी, सुंदर आकार करवो तेतो सर्व हुज करु छु ॥ १४ ॥ वली आ जमणो हाथ जे छे ते जूवटानो रमवावालो छे ॥ १५ ॥ ॥ इत्यादिक हे श्रेयांस हुं केटलु तमोने कहु अमारा बेजणना सारा माठा लक्षण तथा गुण अने अवगुणने सर्व जगत्र जाणे छे अथवा आ श्री रूपनदेव स्वामी पोतेज त्रण लोकना नाथ छे माटे सर्व जाणे छे एवी रीते अमो बेहु जणने विवाद करता थका एक वर्ष व्यतीत थइ गयु तेथी नगवान् वर्षी तपना करनार थया एम कुटुंबनो विरोध केवारे पण कल्याणकारी न थाय ते माटे हे श्रेयास ए घणोज हठीलो छे तथापि हु तहारी दाक्षिणताथी एने समजावु छु केमके कोइ प्रकारे जेवारे कुटुंबमां विरोध उत्पन्न थाय छे तेवारे सवधीने सवधीउज पोतपोतामां प्रतिबोध आपी समजावे छे एम कही मावो हाथ जमणा हाथने कहेवा लाग्यो के हेनाइ आ अवसरे आपणने विवाद



श्रेयांसकुमर भगवानने सेलडीनो रस वहोरावे छे

करवुं घटतु नथी ह्मणा स्वामीने केवल ज्ञाननी उत्पत्तिनेविषे तथा तीर्थ प्रवर्तननेविषे अने संघस्थापनाने विषे तमारुंज काम छे एमां बीजा कोश्नु काम नथी मह्योटाउने पोतानु काम ते पारके अर्थेज थाय छे जेम माताये पीधेलुं दूध ते वालकने अर्थेज थाय छे ते कारणे आ वखते आपणने विरोध करवु योग्य नथी एवी रीते मावो हाथ बोली रह्यो तेवारे श्रेयांस कुमर बेहु हाथने समजाववा लाग्यो जे अरे मावा जमणा हाथो तमे बन्ने जण पोतपोताना काममा कल्याणकारी छो परतु ह्मणा तमे मह्यारी प्रार्थना सफल करो ते आवी रीते के तमे बेहु एकठा थाउ के जे थकी भगवानने बार मासना तपनु पारणुं थाय अने मह्यारे पण उत्तम दान आपवाथी ससारसमुद्र थकी तरवुं थाय माटे तमे भला थइ मह्यारा उपर कृपा करीने बेहु जण जगडो मटावीने भेला थइ जाउ एवी श्रेयांसनी विनति सांभलीने बन्ने हाथ पसलीने आकारे एकठा मली गया तेवारे श्रेयांस कुमरे शुद्ध भावे करीने सेलडीनो रस वह्योरावी दीधो तेनी शिखा उंची चडी तथापि एक बिंदुमात्र पण नीचे पड्यो नही जो हजारो घडा हाथमां उथावाली आपो अथवा सर्व समुद्रोना पाणी नाखो तो पण एक टीपु हाथथी बाहेर पडी जाय नहीं मात्र शिखा उंची चढती आवे एवी लब्धि जेवारे प्राप्त थयेली होय तेवारे करपात्री थाय यदुक्त ॥ माइज्ञ घडसहस्सा, अहवा माइज्ञ सागरा सव्वे॥ जस्से आरिस्स लद्धि, सो पाणिपडग्गहा होइ ॥ १ ॥ ॥ ए भगवाननी लब्धिनो प्रभाव जाणवो पछी स्वामीये तिहांज पारणु कर्युं ते वखत पांच दिव्य प्रगट थया एकतो गधोदक फूलनी वृष्टि थइ, बीजुं वसुधारानी वृष्टि थइ, त्रीजुं वस्त्रनी वृष्टि थइ, चोथु आकाशे देव दुंदुभी वागी, पांचमुं "अहोदानमहोदान" एवी उद्घोषणा देवोये करी आ पात्रदानथी श्रेयांस

कुमरे मोक्ष फल उपार्जन कर्यु, जिहा नगवाने पारणु कर्यु तिहां रत्नमय पीठ कराव्युं, ए नगवानना पारणानो दिवस वैशाख शुदि त्रीजनो हतो तेथी अक्षय त्रीज एवे नामे ते पर्व जगतमां मान्य थातो हवो, लोकोये प्रशंसा करी के श्रीऋषनदेव सरखो पात्र अने सेलडीना रस सरखो शुद्ध आहार तथा श्रेयांस कुमरना जेवो नाव ए कोइ महोटा पुण्यना योगवडे थाय छे॥ यत ॥ रिसहेससम पत्त, निरवद्य इक्खुरससम दाण ॥ सियंससमो नावो, हविद्य जइ मग्गिद्म हुज्जा ॥ १ ॥ श्रीआदिनाथनु पारणु सेलडीना रसनु थयु अने बीजा तीर्थ करोनु प्रथम पारणु खीर नोजननु थयुं हवे ते वखत श्रेयांस कुमरने लोकोए पूछ्युं जे अमे तो नगवान आहार लेशे एवु जाणता न हता अने तमे शी रीते जाण्यु जे नगवान आहार लेशे तेवारे श्रेयांस बोल्यो के हु नगवानना जीवनी साथे आठ नव पर्यंत रहेलो छुं तेथी दान देवानो विधि सर्व जाणुं छु तेवारे लोकोये पूछ्यु के ते आठ नव केवी रीते छे तेवारे श्रेयांसे कह्यु के पहेला नवमां नगवाननो जीव ललितांग देव हतो तिहां हु एमनी स्वयप्रना नामे देवी हती, बीजा नवमा स्वामी वज्रंधर राजा थयो हु तेमनी श्रीमती नामे राणी थइ, त्रीजा नवमा अमे बेहु युगलीया थया, चोथा नवमां बेहु जण सौधर्म देवलोकमा जइ मित्रपणे देवता थया, पांचमा नवमां प्रनु वैद्यपुत्र जीवानद नामे थया अने हु एमनो मित्र थयो, छठा नवमां अच्युत देवलोके जइ बेहु जण देवतामां मित्रपणे उपना, सातमा नवमा प्रनुतो वज्रनान नामे चक्रवर्ती थया तिहां हु एमनो सारथी थयो हतो, तिहां तीर्थंकरनी पासेथी अमे सहुये दीक्षा लीधी, आठमा नवमां सर्वार्थसिद्ध विमाने देवता पणे थया तिहांथी चवी ए नगवान थया अने हु एमनो पोतरो श्रेयांस हुं थयो ते वात

एटला दिवस पर्यंत हु कांइ पण जाणतो नहतो परतु आजे मे जगवानने दीठा तेथी मुंजन जातिस्मरण ज्ञान उपनु तेथी मे जे सातमा जवमां दीक्षा पाली हती तेनी सर्व रीत मने जाण वामां आवी तेवारे मे साधुनी मर्यादाये आहार वहोराव्यो, ए महोटा पुरुष छे, एमने कांइ ध नादिकनी गरज नथी, ए वात सांजलीने सर्व लोकोए साधुने आहार आपवानो विधि जाणी लीधो हवे जगवानने एक वर्ष पर्यंत जुख्यो रहेवु पड्युं अने आहार मल्यो नही ए कया अतराय कर्मना उदयथी थयुं ते कही देखाडे छे जगवान पूर्वे कोइक जवमां शेठनो जीव हता ते शेठ एक दिवस करसणीयोनी पासे उगराणी करवा गया तिहां ते करसणीये खलो कर्यो हतो तेनो धान काहाडवा सारुं ते करसणी पोताना बलदोने धानमां फेरवे छे ते बल द फरता फरता जे वखत नीचे नमीने धानमां मोहोडुं घाले तेवारे करसणी बलदोना मोहो डाने उपर चाबका मारे ते जोइ शेठने दया आवी तेथी शेठे कणबीने कह्यु के अरे एने तु फोकट शावास्ते मारे छे एमना मोहोडा उपर छीकु बांधी मूक तो धान खाशे नही पछी बधा करसणीउये तेमज छीका बांध्या ते छीका बार पोर सुधी बांध्या रह्या ए अंतराय कर्म जगवाने बांध्यो हतो ते आ जवमां उदय आव्युं तथा कोइक आचार्य कहे छे के जगवाने जेवारे महाविदेह क्षेत्रमां छ मित्रनी साथे चारित्र लीधुं हतुं ते छएमां श्रीरुषजनो जीव महोटो हतो ते सपरिवार विहार करता करता कोइक कणबीना खेत्रनी वाडे जाय छे तेवामां ते कणबी पण धान काहाडवा माटे बलदोने फेरवे छे हालरुं खेडतां वचमां वचमां ते बलदो नीचा थइ थइने धान खाये तेवारे ते कणबी तेने परोणे करी मार आपे ते देखी गुरु चितववा लाग्या जे ए कणबी विचारा बलदोने परोणानो मार आपे छे ते करतां जो ए बलदोना मुखे

कुमरे मोक्ष फल उपार्जन कर्युं, जिहां जगवाने पारणु कर्यु तिहां रत्नमय पीठ कराव्यु, ए जगवानना पारणानो दिवस वैशाख शुदि त्रीजनो हतो तेथी अक्षय त्रीज एवे नामे ते पर्व जगतमां मान्य थातो हवो, लोकोये प्रशंसा करी के श्रीऋषजदेव सरखो पात्र अने सेलडीना रस सरखो शुद्ध आहार तथा श्रेयांस कुमरना जेवो जाव ए कोइ महोटा पुण्यना योगवडे थाय छे॥ यत ॥ रिसहेससम पत्तं, निरवद्य इक्खुरससम दाणं ॥ सियससमो जावो, हविद्य जइ मग्गिअं हुज्जा ॥ १ ॥ श्रीआदिनाथनु पारणु सेलडीना रसनु थयु अने बीजा तीर्थ करोनु प्रथम पारणुं खीर जोजननु थयुं हवे ते वखत श्रेयांस कुमरने लोकोए पूछ्युं जे अमे तो जगवान आहार लेशे एवु जाणता न हता अने तमे शी रीते जाण्युं जे जगवान आहार लेशे तेवारे श्रेयांस बोल्यो के हु जगवानना जीवनी साथे आठ जव पर्यंत रहेलो छु तेथी दान देवानो विधि सर्व जाणुं छु तेवारे लोकोये पूछ्यु के ते आठ जव केवी रीते छे ते वारे श्रेयांसे कह्यु के पहेला जवमां जगवाननो जीव ललितांग देव हतो तिहां हु एमनी स्वयंप्रजा नामे देवी हती, बीजा जवमा स्वामी वज्रधर राजा थयो हुं तेमनी श्रीमती नामे राणी थइ, त्रीजा जवमां अमे बेहु युगलीया थया, चोथा जवमां बेहु जण सौधर्म देवलोकमा जइ मित्रपणे देवता थया, पांचमा जवमां प्रजु वैद्यपुत्र जीवानद नामे थया अने हु एमनो मित्र थयो, छहा जवमा अच्युत देवलोके जइ बेहु जण देवतामां मित्रपणे उपना, सातमा जवमां प्रजुतो वज्रनाज नामे चक्रवर्ती थया तिहां हु एमनो सारथी थयो हतो, तिहां तीर्थंकरनी पासेथी अमे सहुये दीक्षा लीधी, आठमा जवमां सर्वार्थसिद्ध विमाने देवता पणे थया तिहांथी चवी ए जगवान थया अने हु एमनो पोतरो श्रेयांस छु थयो ते वात

एटला दिवस पर्यंत हुं कांइ पण जाणतो नहतो परतु आजे मे जगवानने दीठो तेथी मुजने जातिस्मरण ज्ञान उपनुं तेथी मे जे सातमा जवमां दीक्षा पाली हती तेनी सर्व रीत मने जाण वामां आवी तेवारे में साधुनी मर्यादाये आहार वहोराव्यो, ए महोटा पुरुष ठे, एमने कांइ ध नादिकनी गरज नथी, ए वात सांजलीने सर्व लोकोए साधुने आहार आपवानो विधि जाणी लीधो हवे जगवानने एक वर्ष पर्यंत जुख्यो रहेवु पड्यु अने आहार मल्यो नही ए कया अतराय कर्मना उदयथी थयुं ते कही देखाडे ठे जगवान पूर्वे कोइक जवमां शेठनो जीव हता ते शेठ एक दिवस करसणीयोनी पासें उगराणी करवा गया तिहां ते करसणीये खलो कर्यो हतो तेनो धान काहाडवा सारुं ते करसणी पोताना बलदोने धानमां फेरवे ठे ते बल द फरता फरता जे वखत नीचे नमीने धानमां मोहोडुं घाले तेवारे करसणी बलदोना मोहो डाने उपर चाबका मारे ते जोइ शेठने दया आवी तेथी शेठे कणबीने कह्यु के अरे एने तु फोकट शावास्ते मारे ठे एमना मोहोडा उपर ठीकु बांधी मूक तो धान खाशे नही पठी वधा करसणीउये तेमज ठीका बांध्या ते ठीका बार पोर सुधी बांध्या रह्या ए अंतराय कर्म जगवाने बांध्यो हतो ते आ जवमां उदय आव्युं तथा कोइक आचार्य कहे ठे के जगवाने जेवारे महाविदेह क्षेत्रमां ठ मित्रनी साथें चारित्र लीधु हतुं ते ठएमां श्रीकृष्णनो जीव महोटो हतो ते सपरिवार विहार करता करता कोइक कणबीना खेत्रनी वाडे जाय ठे तेवामां ते कणबी पण धान काहाडवा माटे बलदोने फेरवे ठे हालरुं खेडतां वचमां वचमां ते बलदो नीचा थइ थइने धान खाये तेवारे ते कणबी तेने परोणे करी मार आपे ते देखी गुरु चितववा लाग्या जे ए कणबी बिचारा बलदोने परोणानो मार आपे ठे ते करतां जो ए बलदोना मुखे

शीकुं बाधी मूके तो कांइपण धान खाइ शके नही अने हींफयांज करे एवी रीतें मुखथी तो बोल्या नही पण मनमां चितव्यु हतु पठी ते अणआलोयु कर्म आ नवमा उदय आव्यु तेना प्रनावथी प्रनु एक वर्ष सुधी आहार पाणी पाम्या नही ए पागतर ठे, माटे कोइने पण अंतराय पाडवो नही एम आ अवसर्पिणी कालमा श्रेयासकुमरथी पहेल वहेलु सुपात्रदान प्रवर्त्यु ॥ यत ॥ मिथ्यादृष्टिसहस्त्रेन्यो, वरमेको जिनाश्रयी ॥ जिनाश्रयिसहस्त्रेन्यो, वरमेकोह्यणुव्रती ॥ १ ॥ ॥ अणुव्रतिसहस्त्रेन्यो, वरमेको महाव्रती ॥ महाव्रतिसहस्त्रेन्यो, वरमेको जिनेश्वर ॥ २ ॥ ॥ जिनेश्वरसम पात्र, न नूत न नविष्यति ॥ यत पात्रविशेषेण, देय दान शुनात्मनि ॥३॥ ॥ इति नगवत पारणाधिकार ॥ ॥ हवे नगवान विहार करता थकां बहुलीदेशमां तिक्षशिला नगरीने उद्याने सध्या समये कायसग्गे रह्या तिहा वनपालकें जइने बाहुबलिराजाने वधामणी दीधी तेवारे वनपालकने दान आपी सतोषीने पठी मनमा विचार्यु के हमणा साज पडी अवारु थयु ठे तेथी थोडा वखतमां सर्व परिवार नेलो थइ शके नही केमके त्रण लाख तो महारा पुत्र ठे वली पौत्रादिक अनेक ठे ते सर्व एकठा थइ शके नही माटे प्रनाते महामहोत्सवसहित प्रनुने वादवा जइश एम चितवी बेशी रह्यो पठी प्रनाते नगरी शणगारी घणा आमबरसहित प्रनुने वादवा गयो एटलामां नगवानतो अप्रतिबंध विहारी ठे माटे बाहुबली आव्याना अगाउ विहार करी दूरदेशे चाल्या गया तेथी बाहुबलीये नगवानने दीठा नही माटे घणो खेद करवा लाग्यो कानमां आंगलीउ नाखीने उच्चस्वरे रुदन कर्यु अने प्रनुना बे पग पासे उनो रही बोल्यो हे बाबा आदम हे बाबा आदम एवी बाग मारी तिहाथी बाग चाली हमणा पण ते समुदायवाला कहे ठे ॥ पठी नगवाननी नक्ति करवाने अर्थे जिहां

प्रभु काउस्सग्गमां उजा हता ते स्थानक धर्मचक्र एवे नाम आठ योजनना विस्तार वालो एक योजन ऊंचो, हजार खूणानो हजार पगथीआवालो एवो रत्नमय पीठ बांध्यो पूजा कराव्यो तेनी उपर जगवानना पगला थाप्या अने जाणयु जे एज जगवान ठे एवी बुद्धिथी नमस्कार कर्यो बीजा लोकोये पण तेवोज महिमा कर्यो पठी पण तिहां आवीने परणामादि विधि साचवतो हतो तिहांथी बाहुबलीकृतपीठनो महिमा चाल्यो एम प्रभु पृथ्वीतले विहार करे ठे ॥ हवे जे दिवसथी जगवान दीक्षा लइने विहार करी गया ते दिवसथी मरुदेवीमाता जरत महाराजने उलंजा आप्यां करे ठे अने कहे ठे के हे जरत जेम कमलना फूलोनी मालाने नाखी आपीये तेवी रीते ए रूपनो मुजने ठोडीने चाल्यो गयो अने एकाकी वनवासी थयो ठे, भुख तृषाये पीडातो हशे, क्यांएक मसाण अथवा गुफाउमां तपस्या करतो हशे, टाहाड ताप सहन करतो हशे, वर्षाकालमां जींजातो हशे, डांस मत्सर मक मारता हशे, अरे हु पापणी छुं जे पुत्रने आटलु दुःख थयु ठे ते सांजलु छुं तेम ठतां मरती केम नथी माटे महारा जेवी दुःखणी क्यांय पण कोइ हसे नही, अरे जरत तुतो राज्यना सुखमां लोजाणो ठो, महारा ठोकरानी खबर पण काहाडतो नथी, तुंतो सर्व प्रकारनी सुंदर रसोयो करीने खाय ठे अने महारो पुत्रतो जिक्षा मागी शुका टूकडा खाय ठे, तुतो सारा मजाना घरेणा गांठां पहेरे ठे अने महारो पुत्रतो नग्न फरे ठे, तुतो सुख सय्याये सूवे ठे अने महारो पुत्र कठण कांकरा कांटावाली जमीन उपर सुइ रहे ठे, अरे जे मधुर गीत गाने करी जागतो हतो ते शृगालादिकना दुष्टस्वरे जागतो हशे वली तेनी जूख तृषा अने शरीरनी शुश्रूषानी खबर कोण लेतो हशे तथा अणवाणे पगे चालतो हशे इत्यादिक अनेक उलंजा आपती रहे ठे, पुत्रनी चिंताथी

मरुदेवी माताने आंखे पम्रल आवी गया तेने वली नरतराजा समजावे के माताजी तमे कांइ दुःख करो नही तमारो पुत्र घणो सुखी ढे तेवारे फरी माता कहे के मने देखाड तेने नरत कहे के हवे थोडा दिवसोमां अहींआ आवशे तेवारे हुं तमोने देखाडीश एम मरुदेवी माता नरतने उलजा देता थका रह्या ढे ॥ हवे श्रीरुषनदेव अरिहंते एक हजार वर्ष पर्यंत कायाने वोसरावी दीधी शरीरनी शुश्रूपा त्यागी आपी, एमने कांइ उपसर्ग थया नही परंतु एक वर्ष आहार मल्यो नही एटलुं कष्ट दीठुं ते कष्टने सहन करता थका, आत्माने नावता थका, एक हजार वर्ष वीत्या त्यारे सीयालानो चोथो महिनो, सातमु पखवाडियु, फाल्गुनवदि अगीआरसने दिवसे पूर्वान्ह कालना समयनेविषे पुरिमताल नगरना शकटमुख नामा उद्यानमां न्यग्रोध वडवृक्षनी नीचे, पाणीये रहित अष्टम तप कीधे थके, उत्तरापाढा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके, शुक्लध्यानने विचाले वर्त्ततां थका, जेनी समान बीजो कोइ जगतमां पदार्थ नथी एवुं अनोपम अनंतु केवलज्ञान अने केवलदर्शन उपनुं तेनायोगे यावत् सर्व नावने जाणता देखता थका विचरे ॥ २१३ ॥ हवे एवा अवसरमां नरतमहाराजनी आयुधशालामा चक्ररत्न पण प्रगट थयु तेवारे रुषनदेवना केवलज्ञाननी अने आयुधशालाये चक्ररत्न उपनानी ए बेहु वधामणी नरतजीने साथे आवी ते बेहु वधामणीयाने हर्षदान आपीने विदाय कस्या पढी नरतजी विचारमा पड्या के ए बे वधामणी साथे आवी एमांथी कोनो महोत्सव पहेलो करु एम क्षणेकवार विचारीने निश्चय कस्यो के चक्ररत्नतो संसारिक ढे अने श्रीतीर्थंकरनो केवल महोत्सव करवो ते लोकोत्तर ढे वली पिताने पूज्या तो सर्वने पूज्या माटे प्रथम इहलोक अने परलोकनो सुखदाइ जे केवलज्ञान तेनो महोत्सव करुं पढी चक्ररत्ननी


(चित्र ७३)
भरतमहाराज हाथीना
स्कंध उपर बेठा
थका मरु देवी
माताने भगवान
नु समवसरण
देखाडे छे

पूजा करीश एम निरधारी श्रीमरुदेवीमाता पासे आवीने कहेवा लाग्या के हे माताजी तमे मुजने उलजा देता हता ते तमारा पुत्र आजे अहींआं पधार्या छे माटे चालो म्हारी साथें हुं तमारा पुत्रनो महिमा तमोने देखाडु एम कही मरुदेवीजीने हाथी उपर बेशाडीने पछी पोते पण वेग बेशीने घणा आम्बरसहित तिहांथी चाल्या ते चालतां चालतां जेवारे समो सरणने ढुकडा आव्या तेवारे माताजी बोल्या हे जरत आ देवसंबधि वाजा किहां वाजे छे, जरतजीये कह्यु ए वाजा तमारा पुत्रनी आगल वाजे छे तोपण माताजीये मान्यु नही वली आगल चालतां घणा देव अने देवीउ समवसरणनी रचना करवा अने केवलज्ञाननो महोत्सव करवा आव्या छे ते पोतपोतामां एक बीजाने हांकोहांक करी रह्या छे ते सांजली वली पण मरुदेवीजीये जरतने पूछ्युं के आ कोलाहल शानो थइ रह्यो छे तेवारे जरतराजा बोल्या हे माताजी आ तमारा पुत्रनी पूजा करवाने माटे देव देवीउ आवे जाय छे तेमनो कोलाहल थाय छे तोपण मताये मान्यु नही वली आगल जातां जरतमहाराजाये कह्यु के हे माताजी आ रूपां, सोना अने रत्नमयी एवा त्रण गढवालुं तमारा पुत्रनुं घर तो जूउ! एनी शोजानुं हुं शुं वर्णन करु एनुं वर्णनतो क्रोडो गमे ब्रह्माउ पण करी शके नही ए वातने माताजी सत्य करी मानती थकी पोतानी आंखोने हाथथी मसलवा लागी तेथी पटल दूर थइ गया तेवारे खरे खरो समोसरण दीठो तिहां अनेक देव देवीयोने देखी मनमां विचार कर्यो के जुउतो खरा आ मोहनी विकलता कहेवी छे हुतो जाणती हती के म्हारो पुत्र दुःखी छे अने आतो घणोज सुखमा वेगो छे हुंतो रडीरडीने आंधली थइ गइ आंखे पटल वली गया अने एणेतो मने संजारी पण नही, म्हारी तो रूपजरूपज करतां जीज पण सुकाइ गइ हती वली जरतने

वर्जना देती हती जे महारो पुत्र नूख, तृषा, टाहाड, तडका तथा वर्षाद आदिकनी पीडा खमे वे अने उपान्ह तथा वाहाने रहित थको एकाकी डुंगर, वन तथा अटवीउमा ज्रमण करे वे तेने मनावी लइ आवो अने एतो महारा दुखने काइ पण जाणतो नथी, सुखवार्त्ता पण पूछतो नथी, आंही आव्यो तो पण मने संदेसो मोकल्यो नही माटे धिक्कार वे ए मोहने तो हवे माहारे पण पुत्रनी साथे शु काम वे, हु कोण अने आ पुत्र ते वली कोण, जगतमा कोइ कोइनु नथी, सर्व कोइ आपस्वार्थि वे, अरे महारा पुत्रे मने एटलु पण कह्यु नही जे हु सुखीयो छु, महारी चिंता करशो नही, परंतु ए शावास्ते एम कहे केमके एतो निरागी वे एने कोइनी उपर राग रह्यो नथी अने हुतो सरागी छु तेथी मनेतो एवा विकल्प थाय एमां काइ संसय नथी तो हवे महारे पण ए निरागी साथे श्यो प्रतिबंध करवो ए एकपरका स्नेहने धिक्कार हो इत्यादिक चिंतवना करी सर्व वस्तु उपर ममत्वरहित थइ थकी मरुदेवीजी माता शुन्नध्याने अव्यक्त न्नावना न्नावता थका केवलज्ञान पामी तेज वेलाये अंतगड केवली थइने मोक्ष पोहोता इहा कवीश्वर कहे वे ॥ यत० ॥ पुत्रो युगादीशसमो न विश्वे, ज्रांत्वा क्षितौ येन शरत्सहस्रम् ॥ यदर्जितं केवलरत्नमग्र्य, स्नेहात्तदेवार्पित मातुराद्दु ॥ १ ॥ मरुदेवीसमा नास्ति, याऽगात्पूर्वं किलेक्षितु ॥ मुक्तिकन्यां तनूजार्थं, शिवमार्गमपि स्फुटम् ॥ २ ॥ अर्थ – ए श्रीयुगादिदेव सरखो पुत्र बीजो कोइ विश्वमा थयो नथी अने थाशे पण नही के जेणे पृथ्वीनेविषे एक हजार वर्ष सुधी ज्रमण करी कष्ट सहन करीने उपार्ज्यु कमाव्यु एवु जे केवलज्ञान रूप रत्न ते प्रधान स्नेह थकी प्रथम पोतानी माताने आप्यु तेमज मरुदेवी समान कोइ माता पण थइ नथी अने थाशे पण नही केमके जे पुत्रने परणाववाने अर्थे

मुक्तिकन्या जोवाने माटे आगलथी त्यां गइ के कन्या जोइने म्हारा पुत्रने परणावुं एम आ अवसर्प्पिणीमां पहेलवेला श्रीमरुदेवीजी मोक्ष गया ॥ इंद्रादिकें तेना शरीरनुं सस्कार करी खीरसमुद्रमां परठव्युं वली इंद्रना वचनथी शोक निवर्त्तावी, वावीमांहे स्नान करी, भरत महाराजे हर्ष शोकाकुल थका जइ भगवतने वांद्या इहांथी पहेलवेलुं केवली नाम प्रवर्त्त थयुं ॥ हवे प्रथम तीर्थंकर नाम थयु ते कहे छे ॥ भरत महाराज श्रीऋषभदेवस्वामीने नमस्कार करीने परपदामां बेठा, तेवारे भगवाने धर्मोपदेश दीधो तिहां पहेली देशनामां ऋषभसेन प्रमुख पांचसो भरतना पुत्र तथा सातसे भरतराजाना पोतरा सर्व मली बारसे कुमरोये दीक्षा लीधी ए बारसो कुमरोमां मरिचि पण भेलो जाणवो तिहां पुंडरीकादिक चोरासी गणधरोनी थापना करी तथा ब्राह्मीये बाहुबलने पूछीने दीक्षा लीधी ए प्रथम साध्वी थइ अने भरत महाराज श्रावक थयो तथा सुंदरी दीक्षा लेती हती तेने घणी स्वरूपवाली जाणीने स्त्रीरत्न स्थापवा सारु भरते दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी नही तेवारे ते श्राविका थइ एम साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका ए चतुर्विध संघने थापीने धर्मनी प्ररूपणा करी एटले तीर्थंकर नाम थयु ॥ जे वृक्षनी नीचे प्रभुने केवलज्ञान उपनुं तेनुं नाम प्रयागवड थयुं ते वृक्षनी लोकोमां पूजा चाली हमणा पण प्रयागवड नामे करीने ते पूजाय छे तथा कच्छ अने महाकच्छ ए बे तो तापसज रह्या माटे ते बे टालीने बीजा सर्व भद्रक परिणामना धणी जे तापसो थइ गया हता तेमणे आवी फरीथी दीक्षा लीधी, भरतमहाराज वांदीने पाछा अयोध्यामां आव्या अने श्रीऋषभदेवे अनेक जीव तारवाने माटे तिहांथी अन्यत्र विहार कर्यो ॥ ॥ हवे भरतराजाये घरे आवीने चक्ररत्ननो अठाइ महोत्सव कर्यो पछी छ खंड पृथ्वी साधवाने अर्थे भरत महा

राज सैन्य लइ चाल्यो तेनी आगल हजार देवताये अधिष्ठित चक्ररत्न चाल्यु ते जेटले दूर चक्ररत्न जइ रहे तेटला योजन सैन्य पण चाले, अनुक्रमे गंगादेवीना घरने विषे तेणे कह्यु माटे रह्या तिहां नवी नवी जाते नवा नवा वेशें गंगादेवीनी साथे विषयसुख जो गव्या पछी गंगादेवीये मार्ग आप्यो तेवारे तामस गुफा जागी म्लेछोना देश साध्या एम षट् खम साधीने शाठ हजार वर्षे जरत पाछा अयोध्याये आव्या वली नमी विद्याधरने घरे पुत्री स्त्रीरत्न नवु उपन्यु ते जरतजी परण्या छे अने सुंदरीये पण शाठ हजार वर्ष सुधी आयंबिल तप कर्युं तेथी डुर्बल थइ गइ पछी जरत जेवारे आव्या तेवारे सुंदरीयें जरतने मोतीये वधाव्या, सुंदरीने डुर्बल देखीने लोको उपर जरत खीज्यो अने कहेवा लाग्यो के तमे एनी सार संजाल काइ करी नही तेवारे लोक बोल्या एणे आयंबिल तप कर्यु तेथी डुर्बल थइ छे पछी जरत जीये तेने संयम लेवानी आज्ञा आपी सुंदरी पण दीक्षा लइने साध्वी थइ हवे जरतराजा अयोध्यामां सुख जोगववा लाग्यो एवामा आयुधशालानो अधिष्ठायिक पुरुष आवीने जरतने कहेवा लाग्यो के स्वामी चक्र आयुधशालामां आवतु नथी तेने जरते पूछ्युं के केम नथी आवतुं? तेवारे अधिकारीयें कह्यु तमारा जाइयो तमारी आज्ञा मानता नथी तेथी नथी आवतु तेवारे जरतें सर्व जाइउंनी उपर दूत मोकलीने कहेवराव्युं के जो तमो राज्य करवानी चाहना राखता हो तो सर्वे जाइउं म्हारी आज्ञा मानो, सेवा करो नहीतो राजनो त्याग करो ते सांजली अठाणु जाइयें विचार्युं जे आपणने राज्यतो पिताजीयें दीधु छे तो जरतनी चाकरी शामाटे करीयें एम चिंतवी जगवान पासे गया तेने जगवाने अंगारा करवा वालानो दृष्टांत आप्यो, सूयगडांग सूत्रनो वैतालिक अध्ययन संजलाव्यु तेवारे

प्रतिबोध पामीने सर्व जाइये दीक्षा लीधी, जगवानना शिष्य थया, ए वात दूते आवीने जरतने कही तो पण चक्ररत्न आयुधशालामां आवे नही तेवारे जरतनो मुख्य मंत्रीश्वर बोल्यो हे स्वामी? बीजा तो सर्व आपनी आज्ञा माने छे पण बाहुबली महा अहंकारनो धरनार छे ते तमारी आज्ञा मानतो नथी, पोतानी जुजाना बलनुं पराक्रम घणुं जाणे छे माटे एने मूलथी उखाडी देवो जोइये, ए महोटो रोग छे ते तमोने व्याधि उत्पन्न करे छे एवु सांजली जरतराजाये सुवेग नामे दूतने सर्व वात समजावीने बाहुबलीनी पासें मोकल्यो ते दूतने जतां थकां पुंठे छीक थइ, वस्त्र कांटो वलग्यो, रथनी पींजणी जांगी, जमणो रासज बोल्यो इत्यादिक अनेक अपशकुन मार्गमा थयां तोपण ते वन, अटवी अने पाहाड प्रमुख उल्लंघन करीने बाहुबलीना देशे पोहोच्यो तेने मार्गनी धूले जर्यो देखीने गोवालणीयो तथा पाणीहारीयोए पुछ्युं के तमे कोण छो? क्यांथी आव्या अने कोण तमारो मालेक छे तेवारे दूते कह्युं हुं जरतराजानो दूत छुं ते सांजली स्त्रियो बोली के जरत ते शुं जे अमारा पहेरवानी कांचलीउमां जरत काढीये छैये ते जरत अथवा वासणमां जरत, किंवा रोग संबधि जरत ए त्रण जरतने अमे जाणीये छैये परतु ए त्रण विना बीजो कोइ जरत राजा छे एवुतो अमे सांजल्युं पण नथी तेवारे दूत आश्चर्य पाम्यो अने विचारवा लाग्यो के आ बाहुबलीनुं राज्य पण वेपरवाइ अने जबरजस्त छे एम वातो सांजलतो विचारतो विचारतो तिक्षशिला नगरीयें गयो तिहां दरवाजा उपर पोलीये रोकी राख्यो जेवारे बाहुबलीनी आज्ञा आवी तेवारे गाममांहे प्रवेश करी राज्यसजामां गयो तेने बाहुबलें आंखोनी संज्ञा करी आसन उपर बेसाड्यो अने पुछ्युं के अरे दूत, जरतने पोताना सवाक्रोड पुत्रादिको सहित कुशल छे? दूत बोल्यो हे राजन्

लाखो गमे देवताउ जेनी चाकरीमां तत्पर रहेला ठे तेने कुशल केम न होय, तेने तो कुश
लज ठे परतु आप तेनी चाकरीमा आव्या नही तेथी ते सर्व वात निष्फल गऐ ठे माटे
तमे जरत राजानी पासे पधारो अने एटला दिवस नही आव्या तेनो अपराध खमावो ते
पण तमारो महोटो नाइ ठे ते तमारा पितानी जगाये ठे माटे तमारो गुनाह सर्व माफ करशे
वली अनेक राजाउ तेनी सेवा चाकरी करे ठे अने तमोने तो वली अवश्य पूजवा योग्य
ठेज माटे चालो एवा दूतना वचन सांजली बाहुबली ते वचनोनो परमार्थ जाणी गयो
अने नृकुटी चडावी, राता लोचन करी बोलवा लाग्यो के अरे दूत तु मारवा योग्य नथी
माटे तुने मारतो नथी पण न्हाना अग्राणु जाइउना राज्य लइ लीधा अने वली महारु
पण राज्य लेवा वाठे ठे तेथी जाइनो स्नेह तो जाणी लीधो हवे तु तेने कहेजे के बालपणामां
जेवारे आपणे बेहु रमत करता हता तेवारे हु तुजने दडानी पेठे महारा हाथमां धरतो
हतो ते दिवस नूली गयो ठे के शु? हुतो तेनो तेज हुं जे माटे हमणा चाकरी करवानुं कहे ठे
ते शु तारा राजाने कांइ विचार ठे के नथी तेवारे दूत बोल्यो हे राजन् जो बे दिवस सुखे
जीववानी तमोने वाठा होय अने कुटुबनी साथे प्रयोजन होय तो तमे एनी सेवा नक्ति
करो हु तमोने सत्य कहु ठु ते सांजली क्रोध करीने बाहुबले दूतने धक्का अपावी काहाडी
मूक्यो दूत पण पाठलना बारणाथी निकली पोतानो जीव लइ नाशी गयो ते चालतो चा
लतो अयोध्याये आवीने जरत राजानी आगल बनावी बनावीने बमणी वात कही सन्नलावी
तेवारे नरत पण रणनंना वजडावी चतुरगणी सेना लइने पोते श्रीऋषन्न देवजीनी पूजा
करी, वज्रसन्नाह पहेरी, हस्तिरत्न उपर बेशी चाल्यो, तेनी पठवाडे तेना सवा क्रोड पुत्र तथा

पुत्रना पुत्र जे पोतरा ते पण घणा छे वली चोराशी लाख हाथी, चोराशी लाख अश्व, चोराशी लाख रथ, छन्नु क्रोड पायक, शोल लाख रणतूर वजाडनार, दश क्रोड ध्वजा, चौद हजार महोटा मंत्रीश्वर, अढार क्रोड महोटा घोडा, पच्चाश क्रोड दीवटीआ, चोराशी लाख महोटा नीशाण, नव निधान, चौद रत्न, शोल हजार यक्ष, बत्रीश हजार मुकुटबद्ध राजा, तथा वारांगनासहित वमणी करीयें तेवारे चोशठ हजार राजकन्याउं, बत्रीश हजार नाटक, वली बीजा पण घणा विद्याधर, यक्ष, किन्नरादिक अनेक प्रकारनो परिवार चाल्यो, भरते रणपट्ट मस्तके बंधावीने सुखेणनामा सेनाधिपतिने आगल कर्यो, एवी रीते सेना लइने चढयो, अनुक्रमे बहुली देशनी सीमायें आवीने लस्करनो पडाव दीधो तेवारे बाहुबलेपण जाइ आव्यो सांभलीने श्रीऋषभदेवजीनी पूजा करी वज्रनो सन्नाह पहेरीने, सर्व जगतने तृणसमान मानतो थको भद्रनामा हस्ती उपर बेशीने, भरतनी साहमो लडवा निकल्यो तेनी पछवाडे त्रण लाख पुत्र तथा पोतरापण घणा छे तेमज बार हजार राजा तथा घणा विद्याधरो, अनेक सुभट, हाथी, घोडा, रथ, पायक प्रमुख चाल्या वली पोतानो पुत्र सिंहरथने सेनापति करीने आगल चलाव्यो ते पण जइ भरतनी सेनाने मल्यो तिहां बेहु सैन्य एकठा मलवाथी धरती धूजवा लागी, समुद्र चलायमान थयो, पर्वतना टूक पडी गयां, भरतनी सेनामां शोल लाख रणतूर वाजते तेम बाहुबलनी सेनामां पण लाखो गमे रणतूर वाजते बदीजनो बिरुदावली बोलते बेहु तरफना सैन्यनु मांहोमांहे युद्ध थवा लाग्युं तिहां हाथीये हाथी, घोडे घोडा, रथे रथ, विद्याधरे विद्याधर, पाले पाला एम न्याययुद्ध थवा लाग्युं एटलामां सुखेणनामे सेनापतिये पोतानी सन्मुख सिंहरथने आवतो दीठो ते

वारे सुखेणे कह्यु हुतो जरतनो चाकर बु अने तु तो बाहुबलनो पुत्र ठो तेथी तु महारो स्वामी ठो माटे तु पहेला महारा उपर शस्त्र चलाव ते सांजली सिंहरथे तेना उपर शस्त्र चलाव्यु तेवारे सुखेण सेनानीये खड्ग चलाव्यु मारगमां सिंहरथना जाइ सिंहकेतुये ते खड्गने पाडी नाख्युं तेथी सुखेणने घणो क्रोध चड्यो तेवारे ते सुखेण बाहुबलनी सेनाने विलोवीने बाहुबलनी पासे गयो १ व = नेजवेग विद्याधर आवी बाहुबलने नमस्कार करीने सुखेणनी सन्मुख
जण मल्लनी पेठे जीड्या अरस्परस मूठीठनु युद्द कर्यु, लाठीयो
खत सुखेण खड्ग लइने सिंहरथने मारवा जाय ठे एवामां तो सूर्य
एवी मर्यादा ठे जे कोइ पण श्रीरूषजदेवजीनी आण आपे
थयो पठी लडवु नही, त्रीजी मेघ वरसतो होय तेवारे ज
ानी अगाउ मरीगया तेनो तो कोइ उपाय नही परतु जे
ंगणीरत्नना जलेकरी जरत पोतानी सेन्याना माणसोने साजा
ना रुदयना आजरणोना जलथी साजा करे एवी मर्यादा करी
जाते युद्द थवा मांड्यु तेवारे सुखेण सेनानी अनिलवेगने दे
अने अनिलवेगने मारवा आव्यो एटलामा सिंहरथ वचमां
सुखेणने साहामो लडवा उनो रह्यो तेवारें अनिलवेग जरत
उल्लंघन करी जिहां हाथीउना त्रण कोट बनावीने जरतराजा सूतो ठे
उने कांकरानी पेठें उठाली महाविकराल रूप करीने सैन्यनुं मथन
पासें आव्यो जरते जाण्युं जे आ दुर्द्धर विद्याधर ठे ते महारी सुरत

वारे सुखेणे कह्यु हुतो जरतनो चाकर बु अने तु तो वाहुबलनो पुत्र ठो तेथी तु महारो स्वामी ठो माटे तु पहेला महारा उपर शस्त्र चलाव ते सांजली सिह्रथे तेना उपर शस्त्र चलाव्यु तेवारे सुखेण सेनानीये खड्ग चलाव्युं मारगमा सिह्रथना जाइ सिह्केतुये ते खड्गने पाडी नाख्यु तेथी सुखेणने घणो क्रोध चड्यो तेवारे ते सुखेण वाहुबलनी सेनाने विलोवीने बाहुबलनी पासे गयो एवामा अनिलवेग विद्याधर आवी वाहुबलने नमस्कार करीने सुखेणनी सन्मुख लडवा आव्यो ते वेहु जण मह्ननी पेठे जीड्या अरस्परस मूठीउनु युद्ध कर्युं, लाठीयो मारवानु युद्ध कर्युं ते वखत सुखेण खड्ग लइने सिह्रथने मारवा जाय ठे एवामां तो सूर्य अस्त थयो तो एमना सग्राममां एवी मर्यादा ठे जे कोइ पण श्रीरूपजदेवजीनी आण आपे तो लडवु नही, बीजी सूर्य अस्त थयो पठी लडवु नही, त्रीजी मेघ वरसतो होय तेवारे लडवु नही, तेमाटे जे सांज पड्यानी अगाउ मरीगया तेनो तो कोइ उपाय नही परतु जे अर्ध मरेला होय तेमने कांगणीरत्नना जलेकरी जरत पोतानी सेन्याना माणसोने साजा करे अने वाहुबली तो सोमयशना रूदयना आजरणोना जलथी साजा करे एवी मर्यादा करी ठे हवे फरी बीजा दिवसनी प्रजाते युद्ध थवां मांड्यु तेवारें सुखेण सेनानी अनिलवेगने देखीने अग्निनी पेरे बलवा लाग्यो अने अनिलवेगने मारवा आव्यो एटलामां सिह्रथ वचमां आवी आडो पड्यो अने सुखेणने सामो लडवा उजो रह्यो तेवारें अनिलवेग जरत राजानी सर्व सेन्याने उल्लंघन करी जिहां हाथीउना त्रण कोट बनावीने जरतराजा सूतो ठे तिहां आवीने हाथीउने क॰ ॰री पेठें उगली महाविकराल रूप करीने सैन्यनु मथन जरतनी प॰ जरते जाण्युं जे आ दुर्धर विद्याधर ठे ते महारी सुरत


चित्र ७४
भरत महाराज
इंद्र महाराज
बाहुबलि

चूकावी आपशे माटे ए न होय तो सारुं एम चिंतवी तेना उपर चक्र मूक्युं ते चक्रने देखी अनिलवेग नाठो परतु जिहां जाय तिहां चक्र पाछलनुं पाछल चाल्युं आवे तेवारें अनिलवेग वज्रपिंजर करीने ठ महिना सुधी लवण समुद्रमां वेशी रह्यो पण चक्र माथे ज्रमतुंज रह्यु ठ महीना पठी समुद्रमांथी गावडी बाहेर काहाडी तेवारे चक्रे ते गावडीने कापी नाखी हवे सूर्ययश बाहुबलीनुं कटक उलघीने बाहुबल पासें आव्यो अने कहेवा लाग्यो के मने शस्त्र मारो तेवारे बाहुबली हसीने बोल्यो अरे तुं इक्ष्वाकुवशमां ज्लो सूर वीर ठो पण हुं जो तु जने एक मुठी मात्र मारीश तोपण तुं चूर्ण थइ जइश माटे जा दूर उज्लो रहे पठी तेने देवतायें कह्यु के अरे मूर्खा बाहुबली साथे तु शु लडवा आव्यो ठो नाहकनो मास्यो जइश माटे अमे तने वर्जीये ठैये के तु चाल्यो जा तेवारे ते जतो रह्यो एवीरीते बारवर्ष पर्यंत युद्ध चाल्युं, क्रोडो गमे माणसो मरी गया, लोहीनी नदीउ वहेवा लागी पण कोइ हास्यो नही तेवारें घणो अनर्थ थतो देखी सौधर्मेंद्र अने चमरेंद्र ए बे इंद्र ज्ररतनी पासे आवी कहेवा लाग्या के ज्रगवान तो लोकोनुं पालण पोषण करी गया अने तमे माणसोनो नाश करावो ठो ए शुं? ज्ररत कहेवा लाग्यो जे बाहुबली महारी आज्ञा मानतो नथी तिहां सुधी चक्र आयुधशालामां आवतु नथी तो हवे कहो हुं शुं करुं? ते सांज्लली इंद्र बोल्या तमे बे जाइउ पोतपोतामां युद्ध करो पण बीजा माणसोनो नाश म करावो ए वात ज्ररते कबुल करी पठी ते बेहु इंद्र बाहुबली पासे आव्या अनें कहेवा लाग्या के आ प्रमाणे युद्धमां लोकोनो नाश थइ जाय ठे ते करावो नही अने तमे बे जाइउज पोत पोतामां युद्ध करो बाहुबलीये पण ते वात मान्य करी पठी इंद्रे मलीने एक दृष्टियुद्ध, बीजुं वाक्युद्ध, त्रीजुं बाहुयुद्ध, चोथुं मुष्टियुद्ध,

अने पांचमुं दंमयुद्ध ए पांच युद्ध करवानो ठेराव कर्यो अने बेहु इंद्रे बन्ने लस्करोने श्रीआ दिनाथजीनी डुवा आपीने दूर कर्या पछी पाणी छटकावी, फूल बिछावी, भूमि शुद्ध करीने मुकुट, टोप, सन्नाह पहेरी करी बेहु भाइ सामासामा लडवाने आव्या ते युद्धने देवता आ काशमां साक्षीधर रह्या थका देखे छे हवे प्रथम भरत अने बाहुबली बे भाइ आंखो काढ डीने एक बीजानी सन्मुख दोड्या, आंख मिटावे नही, मांहोमांहे एक बीजाने देखताज रहे, महासूर वीर छे तो पण क्षणमात्र रह्या तेवारे जेम सूर्यनी सामो देखवाथी आंखमां पाणी आवी जाय तेम भरत राजानी आंखोमां पाणी आवी गयु ते जोइ देवता फूलोनो वरसाद वरसावीने बोल्या के बाहुबली जीत्यो अने भरत हार्यो ए प्रथम युद्ध ॥ पछी भरते सिंहनाद कर्यो तेथी पर्वत कंपायमान थया अने बाहुबलीये हाक मारी तेवारे ब्रह्मांड फू टवा जेवो शब्द थयो तेथी भरतें पोताना कान ढांकी लीधा ते जोइ देवता बोल्या के बाहुबल जीत्यो अने भरत हार्यो ए बीजु युद्ध ॥ तेवार पछी बाहुयुद्धमां प्रथम भरत राजाये हाथ लांबो कर्यो तेने बाहुबलीये कमलनालनी पेरे वाल्यो अने बाहुबलीयें पोतानो बाह लांबो कर्यो तेने भरत वालवा गयो पण लगार मात्र चसक्यो नही हिंमोलानी पेरे भरत लटकी रह्यो ते देखी देवो बोल्या एमां पण बाहुबली जीत्यो अने भरत हार्यो ए त्रीजु युद्ध ॥ ते पछी मुष्टीयुद्ध करवा लाग्या तेवारें प्रथम तो बन्ने भाइ मल्लोनी पेठे भुजास्फोट करता मल्या पछी भरते बाहुबलीनें मुष्टी मारी तेथी बाहुबली थोडीशी वार आंखो मीची रह्यो पछी भरतने दडानी पेरे उपाडीने आकाशमां उछाली दीधो परतु फरी अनुकंपा आणीने पाछो पोताना हाथमां पकडी करीने एक मुठी मारी तेथी भरत जमीनमां पेसी गयो ते

जोइ देवता बोल्या के एमां पण बाहुबली जीत्यो अने भरत हारी गयो ए चोथुं युद्ध ॥ पछी पांचमुं दंडयुद्ध करवा मांड्यो तिहां प्रथम तो भरत महाराजे लोहदंड लइने बाहुबलने मार्यो तेथी बाहुबलीनो मुकुट माटीनां घटनी पेरे चूरण थइ गयो अने बाहुबली गूडा सुधी जमीनमां पेसी गयो पछी जमीनमांथी बाहेर नीकलीने बाहुबलीये लोहदंड मार्यो तेथी भरतनो मुकुट चूर्ण थइ गयो अने भरत महाराजनुं संपूर्ण सर्व शरीर धरतीमां पेसी गयुं ते जोइने देवता बोल्या जे आ युद्धमां पण बाहुबली जीत्यो अने भरत हारी गयो ए पांचमुं युद्ध ॥ एम पांचे युद्ध भरत हारी गयो तेवारे चिंतातुर थयो थको विचार करवा लाग्यो जे महारु राज्य ए लइ लेशे आ ते वली कोइ बीजो चक्रवर्ति थयो छे के शुं? एवु चितवीने पछी चक्रने पोताना हाथमां लइ भमाडीने पोतानी करेली प्रतिज्ञानो भंग करी बाहुबली उपर ते चक्र मूक्युं पण पोताना गोत्रमां चक्र चाले नही तेथी ते चक्र आवी बाहुबलीने त्रण प्रदक्षिणा आपीने पाछो जइ भरतना हाथमां आवी बेठो एवी रीते भरते जेवारे प्रतिज्ञानो भंग कर्यो तेवारे बाहुबलने अत्यंत क्रोध चडी गयो तेणे करी भरतनी उपर मुष्टी उपाडीने मारवा चाल्यो तेवारे देवता बोल्या विचार करो ते सांभली बाहुबलीये जाण्यु जे धिक्कार छे आ राजने के जेना लीधे महोटा भाइने पण मारवानो विचार थयो एवी रीते वैराग्य पामीने बाहुबले पोते भरतने मारवा माटे जे मुठी वाली हती ते महोटा पुरुषनी मुठी पाछी फरे नही माटे संवेग आव्यो तेवारे ते मुठीये भरतने मारवु मूकी दइने पोताना मस्तके लोच करी दीक्षा लइने विचरवा लाग्यो तेवारे देवताये फूलनो वर्षाद वरसाव्यो, भरतराजा विलाप करवा लाग्यो के महारा सर्व भाइउ दीक्षा लइने जता रह्या पछी बाहुब

न्ररत राजाये जाएयुं जे हुंतो सर्व प्रकारे न्नक्तिरहित थयो एम शोच करवा लाग्यो ते जोइ इंइमहाराजे न्नगवानने पुब्युं के हे प्रन्नु! अवग्रह केटला प्रकारना बे? न्नगवान वोल्या पांच अवग्रह बे तेमां एक इंइनो अवग्रह, वीजो राजेंइनो अवग्रह, त्रीजो ग्रहपतिनो अवग्रह, चोथो सागारिकनो अवग्रह अने पांचमो साधर्मिकनो अवग्रह ए पांच अवग्रह जाणवा ते सांन्नली इंइ वोल्या हुं तो आपना सर्व साधुउने महारा सर्व क्षेत्रमां सुखें विचरवानी आज्ञा आपु बुं तेवारे न्नरत महाराज वोल्यो के महारा ब खम पृथ्वीमां हुं पण आपना सर्व साधु उने विचरवानी आज्ञा आपु बुं एम कहेवाथी न्नरतने घणो संतोष थयो वली न्नरते इंइने पुब्युं के आ आहारनुं हवे शुं करवु तेवारे इंइे कह्यु ताहाराथी अधिक गुणवान होय तेने ए आहार जमाडो पबी न्नरते पण ते आहार श्रावकोने जमाड्यो श्हांथी ब्रह्मन्नोजन चालुं थयुं ॥ हवे न्नरतराजा सदा सर्वदा श्रावकोने जमाडे बे केटला एक काल पबी जेवारे घणा जमनारा थया तेवारे परीक्षा करीने सर्वने सेलाणीनां कांगणी रत्ननी जनोइ आपी तथा देव, गुरु अने धर्म रूप त्रण तत्वसंबंधी त्रण रेखा प्रत्येक श्रावकने करी तिहांथी जनोइ आपवानी चाल पडी श्हां श्रीरूषन्नदेवस्तुतिना चार वेद थया ॥ एकदा न्नरत राजाये इंइमहा राजने पुब्यु के तमारु खरेखरु रूप कहेवु बे? तेवारे इंइे एक अंगुली वतावी ते महाज्वाला मालाकुल देखीने न्नरत चमत्कार पाम्यो. तिहांथी वर्षोवर्ष इंइमहोत्सव चालु थयो ॥ हवे एक दिवसे न्नगवंत विहार करतां विनीताये आव्या न्नरत वांदवा आव्यो, प्रन्नुयें देशना आपी संसारनुं अनित्यपणुं देखाड्यु, जीव कर्मने न्नारे करी तुंवडाने दृष्टांते संसारमां बूडे बे, जेम तुंवडाने माटी चोपडी पाणीमां मूकीयें तो हेठुं वेसे, तेम आठ कर्मे करी जीव

भारी थयो थको होगे बेसे छे, एवी भगवाननी वाणी सांभळी भरत मनमा वैराग्य पाम्यो, ज्ञान दशामां लय लीन थयो एम अनुक्रमे एकदा भरतराजा आरीशा भवनमां बेठा थका अनित्य भावना भावतां केवल ज्ञान पामी, मोक्षे पहोता छे पछी तेमने पाटे आदित्ययशा राजा थया तेणे सोनानी जनोइउ करीने एमज श्रावक जमाड्या, तेने पाटे महायशा राजा थया तेणे रूपानी जनोइउ करीने श्रावक जमाड्या एम आठ पाट लगे श्रावक जमाड्या छे तेमां केटलाएक राजाये सूत्रनी जनोइ करी जमाड्या छे, पछी ते जनोइना पहेरनार सर्व ब्राह्मण कहेवाणा भरतने पाटे आदित्ययशा, तेने पाटे महायशा, तेने पाटे अभिबल, तेने पाटे बलभद्र, तेने पाटे बलवीर्य, तेने पाटे कीर्तिवीर्य, तेने पाटे जलवीर्य, तेने पाटे दमवीर्य, ए आठे राजाये भगवतनो मुकुट पहेर्यो अने ए आठे राजा आरीशा भुवनमां केवली थइ मोक्षे गया छे भगवान श्रीऋषभ देवजी एक लाख पूर्व पर्यंत विचरीने घणा जीवोने प्रतिबोध्या ॥ हवे श्रीऋषभदेव स्वामीना परिवारनु वर्णन सूत्रकार करे छे॥ श्रीऋषभनाथजीने ऋषभसेन आदे देइने चोराशी गणधर थया, चोराशी गछ थया ॥ २१४ ॥ ॥ तथा ऋषभसेन प्रमुख चोराशी हजार साधुउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१५ ॥ ॥ तथा ब्राह्मी अने सुंदरी आदे देइने त्रण लाख साधवीउनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥ २१६ ॥ ॥ तथा श्रेयांस आदे देइने त्रण लाखने पांच हजार श्रावकोनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥ २१७ ॥ ॥ तथा सुभद्रा आदे देइने पांच लाखने चोपन हजार श्राविकाउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१८ ॥ तथा चार हजार सातसोने पच्चास चौद पूर्वधर ते केवली नही पण केवली सरखा साधुउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१९ ॥ ॥ तथा श्रीऋषभनाथ अरिहतने नव हजार अवधिज्ञानीनी

संपदा थइ तथा वीश हजार केवल ज्ञानीनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥ २२० ॥ ॥ तथा वीश हजारने छशे वैक्रिय लब्धिवंत साधुउनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥ २२१ ॥ ॥ तथा बार हजार छशोने पच्चाश अढीद्वीपमां संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताजीवोना मनना परिणामने जाणे एवा विपुल मति, मन पर्यवज्ञानना धरनार साधुउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २२२ ॥ ॥ तथा तेटलाज वादी जाणवा एटले बार हजार छशोने पच्चाश वादी साधुउनी सपदा थइ ॥ २२३ ॥ तथा वीश हजार साधु सिद्ध थया चालीश हजार साध्वी सिद्ध थइ ॥ २२४ ॥ ॥ श्रीऋषभनाथ अरिहंत कौशलिकने बावीश हजारने नवशे साधुउ अनुत्तर विमाने गया, एकावतारी थया ॥ २२५ ॥ ॥ श्रीऋषभदेव अरिहंतने बे प्रकारे अंतगड भूमि थइ तिहां यावत् असंख्याता पाटलगे केवलज्ञान चाल्यो, मोक्षमार्ग वह्यो, ते युगतकृत भूमि कहेवाय अने भगवानने केवलज्ञान उपन्या पछी अंतर मुहूर्त काल वीते कोइ मोक्ष गयो एटले अंतर मुहूर्त पछी मरुदेवी माता मोक्ष गया ते पर्यायांतकृत भूमि कहेवाय ॥२२६॥ ॥ ते कालनेविषे, ते समयनेविषे, श्रीऋषभनाथ अरिहंत वीश लाख पूर्व सुधी कुमार पणे रह्या अने त्रेशठ लाख पूर्व राज्यावस्थामां रह्या एवी रीते त्र्यासी लाख पूर्व घरवासे रह्या, सीतेर लाख क्रोडवर्षनी उपर वली बीजा छपन्न हजार क्रोड वर्ष वीते तेवारे एक पूर्व थाय एवा त्र्यासी लाख पूर्व घरवासें रहीने पछी एक हजार वर्ष छद्मस्थपणे रह्या तथा एक हजार वर्ष उणा एक लाख पूर्व केवल पर्याय पालीने संपूर्ण एक लाख पूर्व साधुपणुं पालीने भवोपग्राही चार कर्मनो क्षय करी आ अवसर्पिणीनो सुखमदुखमा नामा त्रीजो आरो ते घणो वीती गयो बाकी त्रणवर्ष ने साडा आठ महिना शेष रह्या तेवारे सीतकालनो त्रीजो महिनो, पांचमुं पखवाडियुं, माघवदि ॥

॥ ग्रथाग्रथ ॥ ए०० ॥ तेरसने दिवसे अष्टापद पर्वतनी उपर दशहजार साधुउनी साथे चौद नक्त एटले ब उपवास पाणी रहित कीधे थके, अनीचनक्षत्रे चङमानो योग आवे थके, प्रथम पहोरनी पढी वपोरनी वखते, पालखी वालेला आसने बेठा थकां, कालगत थया यावत् सर्व डुख थकी रहित थया ॥ १२७ ॥ ॥ ते अवसरमां शक्रेन्द्रनु आसन चलायमान थयु तेवारे आंखोमा आंसु नराणा एवो थको इहां आव्यो, आवीने नगवानने त्रण प्रदक्षिणा आपी, नमस्कार करी, योग्यस्थानके बेठो, बीजा पण सर्व इन्द्रो आवीने बेठा पढी शक्रेन्द्रे देवोने मोकली नदनवनमांथी चंदन मगाव्यु तेनी त्रण चय बनावी तेमां एक नगवानना शरीरने माटे, बीजी गणधरोना शरीरने माटे अने त्रीजी सर्व साधुउना शरीरने माटे बनावी वली आनियोगिक देवोनी पासे खीरसमुद्रनु पाणी मगावी शक्रेन्द्रे नगवानना शरीरने स्नान कराव्यु, सर्व वस्त्र घरेणा प्रमुख पहेराव्या पढी त्रण पालखी करी तिहां एक पालखीमां नगवाननु शरीर, एकमां गणधरोनु शरीर अने एकमां मुनिउना शरीरने मूकी शुद्ध नूमिये लइ जइने चितानी पासे पालखीउ राखी तेमां शक्रेन्द्रे नगवानना शरीरने पालखीमांथी लइने चितामां मूक्यु तथा अन्य देवोये बीजा गणधरादिकना शरीरने पालखीमांथी उतारीने चितामां मूक्या तथा शक्रेन्द्रना हुकुमथी अग्निकुमार देवो मनमांहे उदास थया थका चितामा अग्नि सलगाववा लाग्या, तथा वायुकुमार देवोपण उदास थया थका वायु चलाववा लाग्या, वली बीजा देवो चितामां घृत प्रमुखने सींचवा लाग्या पढी जेवारे मात्र हाडकाज शेष रहे अने बीजो शरीरनो नाग सर्व बलीने नस्म थइ जाय तेवारे मेघकुमार देवो वर्षाद वरसावीने चिताने बूजावी नाखे, पढी शक्रेन्द्र नगवाननी उपरली जमणी बाजुनी दाढा


चित्र ७६
पर्वतने फरती खाईमा वहाणो छे
दवता निर्वाण महोत्सव करे छे
साधुओनी साथे प्रभु निर्वाण पाम्या
अष्टपद पर्वत

लीये अने ईशानेंद्र उपरली डाबा बाजुनी दाढा लीये तथा चमरेंद्र नीचली जमणी बाजुनी दाढा लीये अने बलेंद्र नीचेनी डाबी बाजुनी दाढा लीये तथा बीजा देवता जे छे तेमांथी केटलाएकतो जिनभक्तिना वश थकी, केटलाएकतो आपणु आचार छे एवु मानीने, केटलाएक तो धर्ममानीने परमेश्वरना अंगोपांगना सर्व हाडका लइ लीये पछी शक्रेंद्र जे स्थानके डाग देवाणो होय ते स्थानके रत्नोनां त्रण पीठ बनावे एटलुं करीने सर्व देवो नंदीश्वरद्वीपने विषे जइ अठाइ महोत्सव करीने पोतपोताने स्थानकें जाय तिहां जइने दाढा प्रमुख जे लइ आव्या होय ते पोतपोतानी सभानेविषे वज्रमयी डाबलामां जइ राखे, तेने गंधमाला दिकथी पूजे, धूप दीये, ए प्रकारनो निर्वाण महोत्सव सर्व तीर्थंकरोनो जाणी लेवो ॥ इति श्रीऋषभनिर्वाणमहोत्सव ॥ ॥ श्रीऋषभदेव स्वामी मोक्ष गया पछी पचाश लाख क्रोड सागरो पम गये थके श्रीअजितनाथ मोक्ष गया, श्रीऋषभदेव अरिहंत मोक्ष गया पछी त्रण वर्षने साडा आठ महिना त्रीजो आरो शेष रह्यो हतो ते पण वीती गयो पछी त्रणवर्ष ने साडाआठ महिना तथा उपर बेतालीश हजार वर्षे एटले वर्षे ऊणा एक कोडाकोडी सागरोपम गया नतर श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया एटले ते वखतें त्रणवर्षने साडाआठ महिना तो चोथा आराना बाकी रह्या हता अने पांचमां आराना एकवीश हजार वर्ष तथा छठा आराना एकवीश ह जार वर्ष एम बे आराना मली बेंतालीश हजार वर्ष ते एक कोडाकोडी सागरोपममा ऊंछा थयां तेमाटे बेतालीश हजारने त्रणवर्ष उपर साडाआठ महिने न्यून एवो एक कोडाकोडी सागरोपम काल चोथा आरानुं गये थके महावीर मोक्ष पोहोता अने ते पछी नवसेंने एंसी वर्ष गया तेवारे आ पुस्तक देवर्द्धीगणिक्षमाश्रमणे लख्यो अने नवसेने त्र्याणु वर्षे संघमां वचाणुं

एवु क्यांएक लखे ठे ॥२१७॥ ॥ इहा ॥ पुरिमचरिमाणकप्पो० ॥ ए गाथा मगज्ञिकने अर्थें कहेवी इति श्रीकल्पसूत्रे बालावबोधिन्यां अष्टम व्याख्यानम् कृत राजेन्द्रसूरिणा ॥ ८ ॥ ॥ अथ श्रीस्थविरावली प्रारंभ ॥ ते कालमां ते समयमां नगवान श्रीमहावीरस्वामीना नवगछ अने अगीआर गणधर थया ॥ २४ ॥ ॥ इहा शिष्य प्रश्न करे ठे के हे गुरु महाराज! मर्यादातो एवी ठे के जेटला गणधर होय तेटलाज गछ पण होवा जोइयें परतु आपतो नव गछ अने अगीआर गणधर फरमावो ठो तेनुं कारण शु एवो शिष्यनो प्रश्न सांजलीने ॥२५॥ गुरु कहे ठे के श्रीमहावीरस्वामीना महोटा शिष्य इंद्रजूति नामा अणगार थया ते गौतमगोत्रीया हता अने पांचसे साधुउने वाचना आपता माटे तेनो एक गछ ॥ एटले जेनी वाचना एक होय तेने गछ कहीये इहां कोइ शका करे के वाचनामां फेर होय तो शु केवलीना कहेवामां फेर फार ठे? तेने उत्तर कहीये ठैये जे केवलीना कहेवामां फेर नथी परतु केवलीना वचन सांजलीने ते वचनोनां गणधरो सूत्रो बांधे ठे गुथे ठे तेनी रचनाना शब्दोमा फेर ठे पण वातोमां फेर नथी मात्र शब्द अनेक प्रकारना ठे तेमां रचना करती वखते एक गणधर एक जातिना शब्दथी गुथे ठे तो वली बीजो गणधर बीजी जातना शब्दोथी गुथे ठे तेने लीधे रचनाना शब्दोमां फेर फार होय ठे इति प्रथम गछ ॥ १ ॥ ॥ हवे बीजो वचलो नाइ शिष्य अग्निजूति अणगार ठे तेनुं गौतम गोत्र ठे अने पांचसे साधुउने वाचना आपे ठे ते बीजो गछ ॥२॥ ॥ त्रीजो न्हानो नाइ वायुजूति नामे शिष्य ठे तेपण गौतम गोत्रनो ठे ते पांचसे साधुउने वाचना आपे ठे ए त्रीजो गछ ॥ ३ ॥ ॥ ए त्रणे गृहस्थपणामां सगा नाइउ ठे चोथा थविर आर्यव्यक्त नामा नारद्वायण गोत्रीया ते पांचसे साधुउने वाचना

आपे छे ए चोथो गछ ॥ ४ ॥ ॥ पांचमा थविर आर्यसुधर्म नामा अग्निवेसायन गोत्रीया छे ते पांचसे साधुउने वाचना आपे छे ए पांचमो गछ ॥ ५ ॥ ॥ छठा थविर मंडित पुत्र वासिष्ट गोत्रीया छे ते साडा त्रणसे साधुउने वाचना आपे छे ए छठो गछ ॥६॥ ॥ सातमा थविर मोर्यपुत्र काश्यप गोत्रीया छे ते साडा त्रणसें साधुउने वाचना आपे छे ए सातमो गछ ॥ ७ ॥ ॥ आठमा थविर अकपित गौतम गोत्रीया छे तथा नवमा थविर अचलभ्राता हारितायन गोत्रीया छे ए बेहु थविर त्रण त्रणसो शिष्योने वाचना आपे छे ए बेहु गणधरोनी वाचना एक छे तेमाटे एनो एक गछ गणीये ए बन्ने गणधर जाइउ छे परतु तेनी माता एक छे अने पिता बे छे तेथी एमना गोत्र जुदां जुदां कह्यां छे आगल ब्राह्मणोमां बीजो जरतार करवानी चाल हती माटे बे जरतार कह्या कह्या छे ए आठमो गछ ॥ ८ ॥ दशमा थविर मेतार्य अने अगीआरमा थविर प्रजास ए बन्ने कौडिन्य गोत्रीया जाइ छे ते त्रण त्रणसे साधुउने वाचना आपे छे ए बेहुनी वाचना एकज छे माटे एकज गछ कहेवाय ए नवमो गछ ए रीते हे शिष्य ! अमे श्रीमहावीरना अगीआर गणधरना नव गछ कहीये छैये ए अगीआरे गणधर द्वादशांगीना धरवावाला, चौद पूर्वधारी, सपूर्ण आचार्य रत्नकरंडीयाना धारक एटले द्वादश अंगरूप रत्नो करंडीयो तेना धरवावाला, ए अगीआरे गणधर राजग्रही नगरीमां एक मासी अनशन पाणी रहित करीने कालगत थया, मोक्ष पाम्या, सर्व डुःखथी रहित थया तेमां नव गणधर तो श्रीमहावीर स्वामी विद्यमान छतांज मोक्ष गया अने थविर इंद्रजूति तथा थविर आर्यसुधर्म ए बे गणधरोये तो श्रीमहावीर जगवान मोक्ष गया पछी काल कर्यो छे, मोक्षे गया छे तथा बीजा सर्व गणधरोना तो शिष्योपण

काल करी गया हता कोइ पण शेप रह्यो हतो नही माटे जे कांइ हमणा वर्तमान समये साधुउ विचरे छे ते सर्व सुधर्म गछना छे वाकी कोइ गछना नथी बीजा सर्व गणधरोना शिष्यो जे हता ते विछेद गया छे तेथी एक सुधर्म गछज रह्यो ॥ २६ ॥ ॥ हवे पट्टावली लखीये छैये श्रीमहावीर स्वामी काश्यप गोत्री हता तेमना पाटे श्रीसुधर्म स्वामी पांचमा गणधर बेठा तेमनु अग्निवेश्यायन गोत्र हतुं तेनो सवंध आ प्रमाणे छे कुल्लाग सन्निवेस नामा नगरमां धम्मिल्ल नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी जद्दिला नामे जार्याना पुत्र सुधर्म नामे थया ते चौद विद्याना निधान, चार वेदना पारगामी, पच्चाश वर्ष घरवासे रह्या पछी महावीरनी पासेथी दीक्षा लीधी, पाचमा गणधर थया, त्रीश वर्ष पर्यंत तो महावीरस्वामीना चरणकमल सेवता रह्या, अने श्रीमहावीर निर्वाण पाम्या पछी बार वर्ष पर्यंत छद्मस्थपणे विचर्या तथा आठ वर्ष केवली पणे विचर्या सर्व मली एकशो वर्षनु आयुष्य पालीने मोक्ष गया ॥ १ ॥ ॥ तेवार पछी श्रीसुधर्म स्वामीना पाट उपर श्रीजबुस्वामी बेठा तेमनु काश्यपगोत्र हतु तेनो सवध आ रीते छे के एकदा श्रीमहावीरस्वामी राजगृही नगरीये समोसर्या तिहां एक महोटो तेजवत देवता पोतानी चार अग्रमहीपीयो सहित तथा बीजा पण घणा देव अने देवीयोना परिवारे परवर्यो थको जगवानने वांदवा आव्यो तेवारे श्रेणिक राजाये जगवानने पुछ्युं जे हे स्वामी महाराज आ देवतानी बीजा घणा देवोथी अधिक कांति केम थयेली छे तेवारे जगवाने कह्यु के आ देवताये पूर्व जवने विपे दश वर्ष पर्यंत नित्य तप कर्यु छे तेना प्रजावथी ए पांचमा ब्रह्मदेव लोकनेविपे तिर्यक् जृम्जकनी जातिमां महर्द्धिक देवता थयो छे वली पण ए देवता आजथी सातमे दिवसे देवलोकथी चवीने राजगृही नगरीमां

ऋषभदत्त शेठनी धारणी नामे भार्यानी कूखमां पुत्रपणे आवीने उपजशे पछी एनो जन्मम होत्सव करीने एनी माता स्वप्नमां जंबुवृक्ष देखशे तेथी एनुं जंबु एवु नाम आपशे अनुक्रमे युवान अवस्था पामशे तेवारे सुधर्म गणधरनी पासेथी धर्मदेशना सांभळीने वैराग्य पामशे तेवारे कहेशे के हुं चारित्र लइश पण म्हारा मातापिताने पूछी आवु एम कही पाछो घर तरफ जाय छे एटले मार्गमां आवतां जंत्रथी उपडेलो पत्थर, पोतानी पासेथी निकळ्यो देखीने विचारवा लागशे के हमणा जो मने आ तोपनो गोळो लागी जात तो हु अव्रतिपणामां म रण पामत, एवु जाणी सुधर्मनी पासे पाछो आवीने एकवारतो समकेत मूळ जे बार व्रत छे ते बारे व्रत लेशे तेमां चोथा व्रतमां एटली मर्यादा राखशे के, कदापि मातापिताना कहेवाथी स्त्रीयो परणवी पडे तो तेने परणुं पण ते स्त्रीयोनी साथे भोग भोगवु नही एवो त्याग करी फरी घरे आवी माता पिताने कहेशे के मने आज्ञा आपो हुं श्रीसुधर्म स्वामी पासेथी दीक्षा लेउ? माता पिता कहेशे के हे पुत्र! दीक्षा पाळवी घणी दुक्कर छे एवी रीते घणो घणो समजावशे तोपण ए मानशे नही तेवारे मातापिता कहेशे के हे पुत्र! आठ पुत्रीयो साथे ताहारुं सगपण करेलुं छे माटे तेने परणीने पछी दीक्षा लेजे ते सांभळी जंबुकुमर मौनपणुं धारण करी रहेशे मातापिता आठ शेठीयाने कहेशे के अमारो पुत्र वैराग्यवान् थयो छे माटे तमारे दीकरीयो परणाववानी मरजी होय तो भले परणावो पण ते कन्याउनो त्याग करीने जो दीक्षा लेशे तो अमारो दोष कहाडशो नही ते सांभळी सर्व शेठीया कहेवा लागशे के अमे नही परणावीशुं पण ते शेठियाउनी दीक रीयो कहेशे जे अमेतो जंबुकुमरनेज परणीशुं बीजाने परणवानो त्याग छे तेवारे शेठिया

पोतानी पुत्रीयोने कहेशे के एतो दीक्षा लेशे तोपण दीकरीयो कहेशे के ए दीक्षा लीये तो लजे ल्यो पण अमेतो एनेज परणीशु पठी ते एक रात्रीमां आठे कन्या परणशे अने रात्रिये शय्या उपर वेसीने सर्व कन्याउने कहेशे के हुतो दीक्षा लइश केमके आ ससार सर्व अनित्य ठे, कोइ कोइने साथे आवनार नथी, तेवारे स्त्रीयो कहेशे के हे स्वामी ! तमे हमणा दीक्षा लियो नही, हमणातो जे ससारनु सुख मल्यु ठे ते सारी रीते जोगवीने पठी दीक्षा लेजो, नहीतो करसणीना न्याये पश्चात्ताप करशो जेम कोइ मारवाड देशनो करसणी पोताने घेर गहुं वावीने पठी मेवाडमां पोताने सासरे गयो तिहा तेनी सासुये सारा रोटला करीने थालमां मूक्या उपरथी काकब मूकी ते काकब करसणीने घणी सारी स्वादिष्ट लागी पठी जेवारे शालाने पुठ्यु के आ काकब तमोने किहाथी आवी ? तेवारे शालाये कह्यु के ए अमारा घरमां नीपजे ठे बनेवीये पुठ्यु केवी रीते नीपजे ठे ! तेवारे शालाये शेलडी वाववानो विधि देखाड्यो पठी करसणीये जाण्युं जे महारे घेर पण ए हु वावीश एम निर्धार करी घेर आवीने प्रथम जे गहुंनु खेत्र वाव्यु हतु तेने उखेडी नाखवा लाग्यो तेवारे लोकोये कह्यु के आ तु शु करे ठे ? तेणे कह्यु के हु एमां शेलडी वावीश लोको कहेवा लाग्या के आ देशमा पाणी नथी तेमाटे शेलडी थशे नही, तेम ठतां जो तने शेलडीज वाववानी इहा होय तो एकवार आ गहुनी करेली खेती ठे ते कपावी ले पठी शेलडी वनावजे एवु लोकोनु वचन तेणे मान्यु नही अने शेलडी वावी ते थोडी उगी एटलामां कूवानु पाणी खुटी पड्युं तेथी जे उगेली शेलडी हती तेपण शुकाइ गइ तेवारे पश्चात्ताप करवा लाग्यो तेम तमे पण ठतुं सुख मूकीने बीजा नवा सुखनी चाहना करो ठो तो पठी पस्तावशो एवी स्त्रीयोनी वाणी सांजली

जबू कुमर कहेशे के हुं पूर्वोक्त दृष्टांते पश्चात्ताप नही करीश परतु जो नही समजशो तो तमेज पसतावो करशो हुंतो ललितांगकुमरनी पेरे तमारा फंदमां नही पडुं तेनी कथा कहुंछुं ते सांजलो एक नगरमां एक शेठनो पुत्र ललितांगकुमर एवे नामे महारूपवत हतो तेने एक दिवसें ते नगरना राजानी रूपवती नामा राणी छे तेणे दीठो तेवारे एकांते बोलावीने तेनी साथे ससारसबधि जोग विलास करवा लागी एटलामां राजा पण तिहां आव्यो तेवारे जयभ्रांत थइने राणीये ते ललितांगकुमरने खालमां नाखी दीधो अने विचाखुंजे पछी काहाडी लइश हवे राणीतो राजानी साथे रमवा लागी गइ अने ललितांग खालमा जूखे मरतो कोइ अन्य आवीने एठवाडो नाखे ते खाय अने एठनु पाणी पडे ते पीये एवी रीते चार महिना पर्यंत ते खालमां पडी रह्यो अने ललितांगना मा बापे घणोये जोयो पण लाधो नही तेथी शोक करवा वेगं एटलामां वर्षाद आव्यो तेथी खालमां पाणी जराणुं ते पाणी काहाडवा सारुं खाल खोली ते खालना पाणीनी साथे ललितांग पण तणातो तणातो नगरनी मोटी खालमां जइ पड्यो तेने लोकोयें देखीने तेना मातापिताने जइ कह्यु मातापिता जइ खाल मांथी काहाडी घेर लइ आव्या तिहा मुर्छा खाइने पडी रह्यो, शरीर पीळुं पडी गयुं, हाडका नीकली आव्या, माता पिताये घणा प्रकारना तैलादिक मसली जागतो कर्यो तेवारे कांइक सावचेत थयो पछी औपधोपचार करतां करतां घणा दिवसे तेनुं शरीर सारु थयुं तेवारे वली कपडा प्रमुख पहेरीने बजारमां फरवा निकल्यो तेने राणीये देखीने बोलाव्यो ते बोल्यो हवे हु तमारा फदमा पडुं नही इति ललितांग कथा ॥ एवी रीते आठे स्त्रीयो जुदी जुदी आठ कथाउ संसारना सुखनो त्याग न करवो ते आश्रयी जबु कुमरने कहशे अने जबु कुमर

फरी संसारनी असारता बतावनारी जुदी जुदी आठ कथाउ आठे स्त्रीयोने कहेशे तेवारें स्त्रीयो प्रतिबोध पामशे एवामां एक प्रभवो चोर पांचशे चोरने साथे लइने जंबु कुमरना घरमा आवशे ते सर्वने विद्याना बलथी अवस्वापिनी निद्रा आपशे तेथी सर्वने निद्रा आवी जशे परंतु जंबुकुमरने निद्रा आवशे नही पछी तालां उघाडवानी विद्याथी भंडार खोलीने नवाणु क्रोड सोनामोरोनी गाडीयो बांधी तेने लइने चालवा मांडशे एटलामां जंबु कुमरने यद्यपि द्रव्य उपर मूर्छा तो बिलकुल नथी तथापि एवो विचार आवशे के महारे तो प्रभाते दीक्षा लेवी छे अने आजे चोर लोको द्रव्य लइ जशे तो लोक कहेशे के जूउ भाइउ! एनु धन सर्व चोर लोको लइ गया तेथी ए साधु मुंभावे छे एवी रीते धर्मनी निंदा थाशे ते वात सारी नही एवु चितवीने नवकार गुणवा लागशे तेथी पांचशे चोरोना पग थंभाइ जाशे तेवारे प्रभवाने विचार थाशे के आ ते शु थयु! जो जोवा लागशे तो जंबुकुमरने जागतो देखशे तेवारे प्रभवो जाणशे के एनी पासे कोइ महा जोरावर विद्या छे एवु जाणी जंबुकुमरने कहेशे के महारी विद्या तमे ल्यो अने तमारी विद्या मने आपो जंबुकुमर कहेशे के महारी पासे कांइ पण विद्या नथी वली बीजी विद्या मने खपती पण नथी मने तो मात्र नवकार मंत्रनो आधार छे एवो धर्मोपदेश देशे तेवारे प्रभवो कहेशे के आ नवी परणेली स्त्रीयोनो त्याग करीने तु दीक्षा शा वास्ते लीये छे? संसारना सुख भोगवी पछी दीक्षा लेजे तेने जंबु कहेशे के हे प्रभवा संसारमां सुख छेज किहां के जेने हु भोगवु संसारनुं सुख तो मधुबिंदुआ समान छे तेनी लालचे जीव संसारमा रझले छे जेम कोइ एक पुरुष भूलथी उजाडमां जइ पड्यो, तेनी पछवाडे एक हाथी दोड्यो, तेवारे ते हाथीना भयथी नासतो भागतो एक वडनी

शाखामां जइ लटकी रह्यो हवे ते शाखानी नीचे एक कूप छे तेमा चार सर्प्प पोतानुं महोडुं फाडीनें बेठेला छे, तथा बे अजगर पण महोडुं फाडी बेठा छे, तथा वडना थडने हाथी धू णावी रह्यो छे, तथा जे शाखामां ते पुरुष लटके छे ते शाखाने एक कालो अने बीजो धोलो एवा बे उदरो कापी रह्या छे, वली तेनी उपर एक मधुमाखीनु मधपुडुं छे तेनी मक्षिकाउ उडी उडीने ते पुरुषना शरीरने चटका मारी रहेली छे, एटलामां ते मधुआलमांथी एक मधनुं टीपु टबक्युं ते पहेला पुरुषनी जीभने जइ लाग्यु, तेवारे ते पुरुषे ऊंचु जोवा मांड्युं तो तेणे दीठुं जे मधुआल मांहेथी ए मधुबिंदु पडे छे, एवु जाणीने ते टीपानी नीचे म होडुं उघाडुं राखीने लटक्यो अने टीपाना स्वादमा मग्न थयो थको पोतानी उपर पूर्वोक्त अनेक जातना दुःख पड्या छे ते सर्वे भूली गयो एटलामा एक विद्याधर आवीने कहेवा लाग्यो के हे पुरुष! ताहारुं दुःख देखीने मने दया आवे छे माटे आव महारा विमानमां बेशी जा, हुं तुजने दुःखमाथी काहाडवा वांछु छुं तेवारे ते पुरुष बोल्यो हे विद्याधर! आ एक टीपु मधनु महारा मुखमां आववा दो पछी हुं आपनी साथे विमानमा बेसी चालुं एम एक टीपु आव्युं पछी वली पण कह्यु के आ बीजुं टीपु आवे तो चालुं ए रीते एकेक टीपाना स्वादमां लोभाणो थको ते विकट स्थानने छोडे नही, तेवारे विद्याधरे जाण्युं जे एतो एवोज मुर्ख छे लोभी छे ए कांइ दुःखमांथी निकलशे नही एवु जाणी तेने तिहांज मूकी विद्याधर चाल्यो गयो तेम हे भव्यो! आ जीव संसाररूप अट वीमा आयुष्यरूप वृक्ष छे तिहां कुटुंबरूप मधुबिंदुने खातो खातो आयुष्य खूटावे छे मोहे माच्यो थको रहे छे, तेने सद्गुरु आवीने चारित्ररूप विमानमां बेसवानुं कहे तेवारें स

संसारमांथी निकळवा वांछे नही माटे
सारी जीव स्त्रीना भोग रूप मधुबिंदुमां लोभायो थको संसारमां पड्याने मनुष्य अवतार मळवो महादुर्लभ
हे प्रभवा आ अवसर चूक्या तो फरी संसारमां पड्याने मनुष्य अवतार मळवो महादुर्लभ
छे एवा वचन सांभळीने प्रभवो चोर पण प्रतिबोध पाम्यो अने बोल्यो के हे जंबु ! हुं पण
ताहारी साथे दीक्षा लइश पछी वळी जंबुकुमर पोताना मातापिताने प्रतिबोध देशो तथा आठ
कन्याओ वळी पोतपोताना मातापिताने प्रतिबोध आपशे तथा प्रभवो पण पांचशें चोरोने प्र
तिबोध आपशे एम सर्व मळी प्रभाते पांचशेने सत्तावीश जनोनी साथे श्रीजंबुकुमर दीक्षा
लेशे एवुं श्रेणिकराजाने श्रीमहावीरस्वामीयें कह्युं हतुं ते प्रमाणे नवाणुं क्रोड सोनैया धर्मक्षे
त्रोमां खरची नाखीने उत्तम उत्सवसहित पांचशेने सत्तावीश जनोनी साथे श्रीजंबुस्वामीयें
सुधर्मस्वामी पासेथी दीक्षा लीधी पछी द्वादशांगी भणी श्रीसुधर्मस्वामीनी पाटें बेठा, केवल
ज्ञान पाम्या, पोतानी पाटे प्रभवाजीने बेसाडीने पोते मोक्ष गया ए श्रीजंबुस्वामी छेल्ला के
वली थया इहां कवीश्वर कहे छे के जंबुजातना वाणिया घणा लोभी थाय छे एवुं लोक एटला
माटे कहे छे के जंबुस्वामीना हाथमां केवलज्ञान रूप धन आव्युं ते बीजा कोइने आप्युं नही.
छेल्लुं केवलज्ञान एज पाम्या छे, मोक्ष नगरनो दरवाजो बंध करी बेठा माटे लोभी कहेवाणा
ते उपरथी ए जातना वाणीयाने लोभी कहे छे तथा ए श्रीजंबुकुमर सरखो सोभागी कोइ थयो
नही अने थाशे नही, शामाटे जे मोक्षरूपणी स्त्रीपण एने परण्या पछी बीजाने परणी नथी
तथा एना जेवो कोइ कोटवाल पण नही थाय केमके एणे पांचसो चोरोने साधु बनावी दीधा
ए कवीनी घटना कही. हवे श्रीजंबुस्वामी मोक्ष गया पछी दश वस्तु विछेद थइ गइ तेना नाम
कहे छे एक मन पर्यवज्ञान, बीजो परमावधि, त्रीजी पुलाकलब्धि, चोथुं आहारक शरीर, पांचमी





पाचशे चोर सोना मोरोना पोटला बाधी माथ लई ऊभाछे

यशोभद्रसहित संघना माणसो बोल्या हे पूज्य आपना अनेक साधुउ परलोके जाय छे - ५१७ आपनी आंखमांथी आंशु पडता केवारे पण दीठां नथी अने आज आंशु केम पड्यां ? तेवारे गुरु बोल्या मोहथी आंशु पड्यां सघे पुछ्युं कयो मोह हतो। त्यारे गुरु बोल्या ए अमारे संसारी पणानो पुत्र हतो परतु स्वल्प काल चारित्र पाल्युं तेथी मोह आवी गयो तेवारें साधुउ बोल्या महाराज तमे अमने क्यारे पण कह्यु नही जे ए अमारो पुत्र छे। तेवारे गुरु बोल्या हुं जो तमने एवु कहेत के ए म्हारो संसारीपणानो पुत्र छे तो पछी तमे एनी पासे वैयावच्च करावत नही तेथी एने शो लाभ थात ? माटे एना अल्प आउखामां एटलो लाभ जाणीने तमोने मे कह्यु नही ए तात्पर्यार्थ छे पछी गुरु, दशवैकालिकने पाछुं सिद्धांतोमां नाखवा लाग्या तेवारे सघे विनंति करी के हे स्वामी ए अल्प ग्रंथ छे ते आगल जतां अल्पबुद्धि अने अल्पायुपवाला लोकोने घणोज उपकारी थाशे माटे एमज रहेवा आपो ते सांभली दशवैकालिक एमज राख्यो पछी सयंभवसूरि पोताना पाटे श्रीयशोभद्र सूरिने बेशाडीने श्रीमहावीर स्वामीथी अठाणुमे वर्षे स्वर्गे गया ए चोथो पाट ॥ ४ ॥ हवे पांचमे पाटे श्रीयशोभद्रसूरि तुंगीयायणगोत्रीया थेया तेना पाटे बे शिष्य थेया तेमां एकतो आर्यसंभूतिविजयजी माढरगोत्रीया अने बीजा आर्य श्रीभद्रबाहुस्वामी पाईण गोत्रीया तेमांथी भद्रबाहुजीनो संबध आवीरीते छे के प्रतिष्ठान पुरना रेहेवासी एक वराहमिहिर अने बीजा भद्रबाहु ए बे नामे बे ब्राह्मण भाइउ हता तेमणे श्रीयशोभद्रसूरिनी पासे धर्मदेशना सांभलीने दीक्षा लीधी, चौद पूर्व भण्या पछी गुरुये विनीत पणानो गुण जोइने भद्रबाहुने आचार्यपद आप्युं अने वराहमिहिरने अविनीतपणाने लीधे आचार्यपद आप्युं नही कारणके जे आचार्यपद गणधरोये धारण कर्युं ते आचार्यपद जो

करो एक दिवस पाठशालाये गयो तिहां गेकराउनी साथे जएयो तेवारे वीजे गेकरे मेणु मार्युं के हे नि पितृक! घणो तनें जाणीये ठेये ताहारो वापतो ठेज नही आ वात सांजलीने गेकरो डुःखी थयो थको पोतानी माता पासें आव्यो माताने पुग्युं हे माता! महारो पिता नथी? त्यारे माताये कह्यु हे पुत्र! ताहारो वाप नही ते वली होय! ताहारो वाप सयंजवजट्ट ठे गेकराये पुग्युं ते किहां ठे? तेवारे माताये कह्यु हे पुत्र ताहारा वापने जैनना साधुउं जो लवीने लइ गया तेथी तेणे दीक्षा लीधी ठे एवु सांजली जे गाममां सयंजव सूरि हता ते गामनी वाहेर ते मनक पण आव्यो तेने साहामा ठमिलें जाता गुरु मख्या तेमने मनके पुग्युं के महाराज इहां सयंजवसूरि ठे एवु सांजलीये ठेये ते क्यां जगाये रहे ठे? गुरु बोख्या ताहारे शुं काम ठे तेवारे मनके पोतानी सर्व हकीगत कही अने कह्यु के हुं तेमनो पुत्र हुं तेने गुरुये पण कोइक उत्तर आपीने उपासरे मोकली आप्यो अने ठमिलथी पाठा फरी आव्या तेवारे गुरुये तेने प्रतिबोध दीधो मनके कह्यु के मने दीक्षा आपो ते सांजली गुरु बोख्या महारुं तथा ताहारुं पितापुत्रपणुं जे ठे ते तुं बीजा साधुउंने नही कहे तो हुं तु जने दीक्षा आपु त्यारे मनक बोख्यो हे महाराज हुं न कहुं ते सांजली गुरुये दीक्षा आपी पण मनकनुं आयुष्य स्वल्प जाणु तेवारें गुरुये सिद्धांतोमांथी सार लहीने दशवैकालिक सूत्र मनकने माटे बनाव्युं ते सूत्र ठ महिनामा मनक जणी रह्यो सर्व आचार जणी गयो, ठ महिना जफेरा चारित्र पालीने देवलोक गयो पठी श्रावको मनकना शरीरने दाग आपी गुरुनी पासे आव्या ते वखत यशोजद्रप्रमुख बीजा घणा शिष्यो हता ते पण सर्व गुरुनी पासे बेठेला हता तिहां गुरुये श्रावकोने धर्मोपदेश आप्यो पण गुरुनी आखोमां आंशु आव्या ते देखीने

यशोजद्रसहित सघना माणसो बोल्या हे पूज्य आपना अनेक साधुउ परलोक जाय ठे परतु
आपनी आंखमांथी आंसु पडतां केवारे पण दीठां नथी अने आज आंसु केम पड्यां? तेवारे
गुरु बोल्या मोहथी आंसु पड्यां संघे पुछ्युं कयो मोह हतो। त्यारे गुरु बोल्या ए अमारे ससारी
पणानो पुत्र हतो परतु स्वल्प काल चारित्र पाल्यु तेथी मोह आवी गयो तेवारे साधुउ बोल्या
महाराज तमे अमने क्यारे पण कह्यु नही जे ए अमारो पुत्र ठे। तेवारे गुरु बोल्या हु जो तमने
एवु कहेत के ए महारो संसारीपणानो पुत्र ठे तो पठी तमे एनी पासे वैयावच्च करावत नही तेथी
एने शो लाभ थात? माटे एना अल्प आउखामां एटलो लाभ जाणीने तमोने मे कह्यु नही
ए तात्पर्यार्थ ठे पठी गुरु, दशवैकालिकने पाठुं सिद्धांतोमां नाखवा लाग्या तेवारे संघे विनंति
करी के हे स्वामी ए अल्प ग्रंथ ठे ते आगल जतां अल्पबुद्धि अने अल्पायुषवाला लोकोने
घणोज उपकारी थाशे माटे एमज रहेवा आपो ते सांभली दशवैकालिक एमज राख्यो पठी
सयंभवसूरि पोताना पाटे श्रीयशोजद्र सूरिने बेसाडीने श्रीमहावीर स्वामीथी अठाणुमे वर्षे
स्वर्गे गया ए चोथो पाट ॥ ४ ॥ हवे पांचमे पाटे श्रीयशोजद्रसूरि तुंगीयायणगोत्रीया थेया
तेना पाटे बे शिष्य थेया तेमां एकतो आर्यसंभूतिविजयजी माढरगोत्रीया अने बीजा आर्य
श्रीजद्रबाहुस्वामी पाईण गोत्रीया तेमांथी जद्रबाहुजीनो सबंध आवीरीते ठे के प्रतिष्ठान पु
रना रेहेवासी एक वराहमिहिर अने बीजा जद्रबाहु ए बे नामे बे ब्राह्मण जाइउ हता तेमणे
श्रीयशोजद्रसूरिनी पासे धर्मदेशना सांभलीने दीक्षा लीधी, चौद पूर्व जण्या पठी गुरुये विनीत
पणानो गुण जोइने जद्रबाहुने आचार्यपद आप्युं अने वराहमिहिरने अविनीतपणाने लीधे
आचार्यपद आप्युं नही कारणके जे आचार्यपद गणधरोये धारण कर्युं ते आचार्यपद जो

अविनीत अयोग्यने आपे तो ते गुरु जे आचार्य पदनो आपनार होय ते पण अनंत संसारी थाय हवे नद्रबाहुने आचार्य पद मव्युं जोइने वराहमिहिर कोपानल थयो थको गच्छथी बाहेर नीकलीने गुरुनी उपर द्वेष धरवा लाग्यो चौदे पूर्व नणेलो हतो तेथी नवीन ज्योतिषना वाराहीसंहिता प्रमुख ग्रंथो बनावी साधुनो वेष मूकीने ब्राह्मणनो वेष धारण करी लोकोनी आगल निमित्त कहीने तेनाथी आजीविका चलाववा लाग्यो तेने लोक पूछे के एटलु तमे क्यांथी नण्या, तेवारे लोकोनी आगल एवुं कहे के मे एक दिवस नगरनी बारणे लग्न कुंमली मांमी ते कुंमलीने नाग्याविना एमज पाछो चाली निकल्यो पछी जेवारें याद आव्यो तेवारे नूसाडी नाखवा गयो अने तिहां जइने जोउ तो कुंमलीमां सिंहलग्ननो स्वामी सिंह ते पूछडुं वधारीने उपर उनो छे पछी मे लग्ननी नक्तिने लीधे महारी छाती कठण करीने सिंहनी नीचे घुंसीने लग्न नुसाडी नाख्युं महारी नक्ति जोइने सिंहनो अधिपति जे सूर्य ते आव्यो अने महारा उपर तुष्टमान थइने बोल्यो के माग माग तेवारे में कह्यु मने नक्षत्रादिकनो चार खरेखरो जेवो छे तेवो बतावो पछी सूर्य पोताना ज्योतिषना मंमल चारमां मुजने लइ गयो तिहां मने सर्व चार बताव्या, उदयास्तचक्र बताव्युं ते ज्योतिषना बलथी हुं त्रण कालनी वात जाणुं छु एवी कल्पित वातो कहीने लोकोमां पूजाय, राजा प्रमुखने निमित्त कहीने खुशी करे अने चमत्कार पमाडे एम घणा लोकोने मिथ्यात्वी कर्या एवा अवसरमां श्रीनद्रबाहु स्वामी पण ते नगरमां आव्या तेमने श्रावकोये महोटा महोत्सवसहित गाममा प्रवेश कराव्यो पण वराहमिहिरथी ते सहन थयु नही तेवारे विचार्यु जे एनुं मान खंमित करुं तो सारी वात थाय एवु चिंतवी एक दिवस राजसनामां जइने

राजाने कहेवा लाग्यो के आजथी पांचमे दिवसे पूर्व दिशाथी वर्षाद आवशे ते त्रीजे पहोरे वरसशे आ हुं कुंडालुं करुं छुं तेना वच्चमां बावन पलनो माछलुं पडशे एवु निमित्त कह्यु ते वात श्रावकोये आवीने भद्रबाहु स्वामी आगल कही के हे स्वामी आ वराहमिहिरे कहेली वात सत्य छे किंवा असत्य छे तेवारे भद्रबाहु बोल्या कांईक सत्य छे अने कांईक असत्य छे केमके पूर्व दिशाथी नही पण ईशान कोणेथी आवशे ते छ घडी दिवस पाछलो रहेशे तेवारे पडशे पण त्रीजो पहोर कह्यो ते जूठो कह्यो छे वली बावन पलनो नही परंतु वायुथी सुकाई जासे माटे साडी एकावन पलनो मत्स्य रहेशे तथा कुंडालानां मध्यभागमां नही पडे पण कुंडालानी कोर उपर एक बाजुयें पडशे माटे ते वराहमिहिर मिथ्यात्वना योगथी आटलुं जुठुं बोले छे ए वात पण श्रावकोये राजाने कही राजा बोल्यो साच जूठनी खबर हवे तरत पांच दिवसमां जणाई आवशे एटलामां पांचमो दिवस आव्यो तेवारे वर्षाद वरश्यो अने श्रीभद्रबाहु स्वामीना कहेवा प्रमाणे सर्व वात सत्य थई तेवारे राजा प्रमुख सर्व लोकोये श्रीभद्रबाहु स्वामीनुं ज्ञान वखाण्युं अने वराहमिहिरनी कांई साची कांई जुठी वात पडी गई तेथी तेनी मानता कमती थवा लागी वली एक दिवस राजाने घेर पुत्रजन्म थयो तेनी वराहमिहिरे जन्मपत्रिका बनावीने एकशो वर्षनुं आयुष्य वर्त्ति काहाडयुं त्यारे सर्व लोक अद्भुत लईने राजाने वधाववा आव्या अन्यदर्शनी योगी संन्यासी प्रमुख सर्व आशीर्वाद आपवाने आव्या, परतु एक श्रीभद्रबाहु गया नही तेवारे वराहमिहिर राजाने कहेवा लाग्यो के हे राजन्! तमारे घेर पुत्रजन्म थयो ते भद्रबाहुने रुच्यो नही तेथी आंही आशीर्वाद आपवा आव्यो नही ए वात पण श्रावकोये जई श्रीभद्रबाहु स्वामीने कही

तेवारे भद्रबाहु बोल्या वारवार केम जवाय एकवार जइशुं श्रावक बोल्या केम जाशो गुरु बोल्या आठमे दिवसे रात्रीने वखते बिल्लाडीना योगथी पुत्र मरण पामशे तेवारे देखाडी आवशु ए वात श्रावकोये जइ राजाने कही, राजाये सर्व बिल्लाडीयोने आखा गाममांथी बाहेर काहाडी मूकावी तथा बिल्लाडी कोइना घरमा अथवा गाममां न आवी शके तेना शो कडो गमे जावता कर्या परतु आठमे दिवसे दैवयोगे दासीना हाथथी कमाडनी ठांसणी बालकना माथा उपर आवी पडी तेथी बालक मरण पाम्यो तेवारे वराहमिहिर बोल्यो बिल्लाडीथी तो मरण पाम्यो नही? पछी गुरुये ठांसणीनी उपर बिल्लाडीना मुखनो आकार लाकडामां करेलो हतो ते देखाड्यो तेथी वराहमिहिर लज्जा पाम्यो माटे तिहांथी निकली अन्यत्र स्थानके जइ अज्ञानकष्टथी मरण पामीने व्यतर देवता थयो तेणे आवी श्रीसघमां मरकीना रोगनो उपद्रव कर्यो तेथी घणा लोक मरवा लाग्या तेवारे श्रावकोनो उपद्रव टालवाने माटे महा महिमावत एवु "उवसग्गहर" नामे स्तोत्र गुरुये बनाव्यु तेनो घरघरने विषे गणणो सरु थयो तेथी सर्व उपद्रव दूर थइ गयो पछी सर्व श्रावकोना घेरमां जो थोडुं शो काम होय तो पण ते उवसग्गहरनो पाठ करे के ते काम पार पडी जाय, एम करतां करतां छेवट लोकोमां एवी चाल पडी गइ के जो गाय दूध न आपे तो पण उवसग्गहर स्तोत्र गुणे तेवारे गाय पण दूध आपती थाय एमज वली कोइक छाणा वीणवा गइ ते एकली हती तेनी छाणानी पोटली उपाडी आपवाने कोइ बीजो माणस ते वखत तिहा हाजर हतो नही तेवारे तेणे पण उवसग्गहरनो पाठ कर्यो तेवारे नागे पोते आवीने भारी उपाडी तेना माथा उपर राखी दीधी एमज एक स्त्री रोटला करवा बेठी हती तेनो छोकरो झाडे गयो ते रोवा लाग्यो

तेणे जाण्युं जे रोटलो वली जाशे त्यारें उवसग्गहरनो पाठ कर्यो के तरत नागराजा आवीने कहेवा लाग्यो के शुं काम छे ? स्त्रीये कह्यु छोकरो रडे छे तेने राखो तेवारे ते छोकराने शौच करावी रोतो रखाव्यो एवुं प्राये सांभलीये छैये एवीरीते नीच कामो लोको कराववा लाग्या तेवारे नागराज खीजीयो अने गुरुपासें आवी विनति करी के हे महाराज संघथी हुं एक क्षणमात्र पण अलगो रही शकतो नथी लोकोतो पूर्वोक्त हलका हलका काम ते पण माहरी पासे करावे छे तेवारे गुरुये जाण्यु जे ए निर्भाग्य लोको देवने खीजावशे तो उलटो अनर्थ थइ पडशे माटे आ स्तोत्र भंडारी मूकवु युक्त छे तेमने नागेंद्रे कह्यु हे स्वामी नाथ आप छठी गाथा भंडारी मूको अने शेष पांच गाथाथीज हुं महारे स्थानके बेठो थको सर्व उपद्रव टालीश एवु सांभलीने गुरुये छठी गाथा भंडारीमूकी वली श्रीभद्रबाहु स्वामीना करेला आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख अनेक ग्रंथ हालमां विद्यमान छे ए श्रीभद्रबाहुस्वामी श्रीमहावीर स्वामीथी एकसो सितेर वर्षे देवलोक गया तथा बीजा श्रीसंभूतिविजयजी जाणवा ए छठो पाट ॥ ६ ॥

हवे श्रीसंभूतिविजयजी माढरगोत्रीया हता तेमना पाटें आर्य थूलिभद्रजी गौतम गोत्रीया थया तेमनो संबंध आवीरीतें छे के पाडलीपुर नगरमां नवमो नंदराजा राज्य करे छे तेनो शकडाल नामे प्रधान छे तेनी लाछलदे नामा भार्याना बे पुत्र थया एक थुलिभद्र अने बीजो सिरियो एक दिवस वररुची नामा ब्राह्मण राजा पासें आव्यो तेणे एकशोने आठ काव्य नवा बनावीने सभलाव्या एम ते ब्राह्मण नित्य आवीने एकशोने आठ काव्य नवा नवा बनावीने राजा आगल कहे पण जेवारे प्रधान तेनी प्रशंसा करे तेवारे राजा दान आपे नहीकां दान आपे नही अने प्रधान तो वररुचीने मिथ्यात्वी जाणी तेनी प्रशंसा करे नही तेवारे

वररुचीनट्टे प्रधाननी स्त्री लाछलदेने कह्यु स्त्रीये प्रधानने कह्यु के ते विचारा नट्टने कांइक अपावजो तेवारे प्रधानना मनमातो अपाववानो विचार न हतो पण स्त्रीना कहेवा उपरथी राजसत्नामा कह्यु के ए काव्य सारा छे त्यारे राजाये सतुष्ट थइने नित्य तेने एकशोने आठ सोनैया आपवा मांड्या एम घणादिवस देतां थया तेवारे प्रधाने जाण्यु के आवी रीते तो सर्व धन नाश थइ जाशे एवु चितवीने पोतानी सात पुत्रीयो छे ते एवी बुद्धिमान् छे के पहेली पुत्रीतो एक वार कांइ काव्यप्रमुख सांभले तो ते काव्य तेने मुखपाठ थइ जाय अने फरी तेनो पाठ कही आपे एमज बीजी पुत्री वे वार सांभले तो तेने मुखपाठ थइ जाय, त्रीजी त्रणवार, चोथी चारवार, एम यावत् सातमी सातवखत सांभलीने पाछो कही संभलावे एम साते पुत्रीयो महा चतुरछे तेने सीखावी मूक्यु के तमे राजसभामां एवु कहेजो जे ए काव्य जुना छे अमोने आवडे छे एम कही मुखपाठे संभलावजो प्रभाते वररुची पण नवा एकशो आठ काव्य बनावीने सभामां आवी कहेवा लाग्यो ते वखत प्रधान बोल्यो हे महाराज, आगलना आपणा वडेरा नंदराजानी पासे कहेला काव्य छे ते नित्य आवी कहे छे ए काव्य तो सर्व महारी पुत्रीयोने पण आवे छे तेवारे राजायें पुत्रीयोने बोलावी सर्व काव्य कहेवराव्या ते साते जणीये अनुक्रमे एक बीजानी पाछल मुख पाठें कही देखाड्या तेवारे राजाये नट्टने निर्भछना करी काहाडी मूक्यो पछी ते वररुचीये वली गगानदीमां एक यंत्र नाखीने तेनी उपर छानो पांचशो सोनामोरोनो दडो नित्य मूकी आवे अने प्रभाते लोक भेला करी तिहां जइ गंगानी स्तुतिना काव्य कही कल खटकावे के पांचशो सोनामोरोनो दडो हाथमां आवी पडे ते कौतुक जोइने लोको बोलवा लाग्या के जुउ राजाये आपवानुं बंध कर्यु तो पण आ पण्डितने

गंगादेवीज द्रव्य आपे ठे ए वात राजायें सांजली त्यारे प्रधानने कह्यु के आपणे पण जोवा चालीये, प्रधाने कह्यु आवती काले चालीशुं पठी प्रधाने तिहां ठाना रूपा माणसो बे राख्या ते जेवारे सांजनी वखते जट्ट सोनामोरोनी पोटली यंत्रमां राखी आव्यो तेवारे ते ठाना बेठेला माणसोये पोटली काढाडी लइने प्रधानने आवी सोंपी दीधी प्रजाते तो राजा प्रमुख सर्व लोको जोवा गया तेवारे ते वररुची पण गंगादेवीनी स्तुति करी घणा जोरथी कल दाबे ठे तो पण हाथमां कांइ आवे नही तेवारे राजा बोल्यो आम केम थयुं ते वखत प्रधाने सर्व प्रपच प्रगट करी आप्यो ने पोटली पण बतावी आपीने पाठी जट्टने सोंपी दीधी तेथी लोकोमां जट्टनी घणी निंदा थइ हवे जट्ट मंत्री उपर द्वेष करवा लाग्यो एवा अवसरमां प्रधानना ठोकरा सिरियानो विवाह मंडाणो ठे तेवारे प्रधानना घरमां शस्त्रप्रमुख अनेक तरेनी तयारीयो देखीने जट्टे एक दुहो बनावी पोतानी पासे जणवा आवनार ठोकराने शिखाव्यो ते दोहो कहे ठे ॥ नंदराय जाणे नही, जे सिकमाल करेसि ॥ नंदराय मारी करी, सिरियो रज्ज ठवेसि ॥ १ ॥ ॥ ए दुहो ठोकरा राजाना महेल पासे आवीने कहेता थका निकल्या, राजाये जट्टने पूठ्युं आ वात केम ठे जट्टे कह्यु तमे चोकशी करावो सर्व जातिना शस्त्र तयार थाय ठे राजाये चोकसी करावी युद्धसामग्री जाणीने कोपानल थयो अने निरधार कर्यो जे सकमालना सर्व कुंटुबने मरावी नाखुं आ वात सकमाले जाणी तेवारे राजा पासे आव्यो, राजायें सकमालने जोइ महोडुं फेरवी नाख्युं तेवारें प्रधान घरे आवीने सिरियाने कहेवा लाग्यो के महारी वात सांजल जेवारें हुं जइ राजाने नमस्कार करुं ते वखत तुं महारु मस्तक तरवारथी कापी नाखजे ए वात घणीज महेनतथी सिरिये मान्य

करी पछी सकमाले राजाने प्रणाम कर्यो राजाये मह्योडुं फेरवी नाख्यु प्रधाने पोताना मु
खमां तालपुट विष नाखी लीधो हतो तिहां सिरियो बोल्यो के जे कोइ राजानो द्वेषी होय
तेने तो मारवुज जोइये एवु कहीने तरवार मारी तेथी मस्तक कपाइ गयु राजा घणो खेद
करीने पछी संतुष्ट थइ सिरियाने कहेवा लाग्यो के ताहारा पितानो अधिकार तुं ले, सिरियो
बोल्यो म्हारो म्होटो भाइ थुलिभद्र छे तेने अधिकार आपवो जोइये, राजाये पूछ्यु ते किहां
छे त्यारे सिरिये कह्यु ए म्हारो भाइ न्हानपणमां पोथी वाचवा उपर कालनिर्गम करतो
हतो ते परण्यो हतो पण पोतानी स्त्रीपासे जतो नही तेवारे माहारा मातपिताये जाण्यु
ए संसारनी कला शीखशे नही एवु विचारीने कोश्या वेश्याने कला शीखाववा माटे
सोप्यो छे तेने बार वर्ष थया वेश्याने तिहांहीज लोभाइ गयो छे बार क्रोड सोनैया
खाइ गयो छे माटे तेने बोलावीने अधिकारी करो राजाये थूलिभद्रने तेडवा माटे छ
डीदार मोकल्यो, तेवारे वेश्या बोली राजा पासे म जाउ केम के जासो तो फरी राजा
तमोने म्हारी पासे आववा देशे नही अने म्हारे पण तमारा विना केवी रीते रह्यु जाशे ते
विचार करो जे एक क्षणवार पण तमारा वगर मने चेन पडतुं नथी ते तमे जाणोज छो
माटे तमारे जावु नही तेवारे थूलिभद्र बोल्यो एकतो म्हारा पितानु मरण थयु छे अने बीजो
वली राजानो हुकुम आव्यो छे ते फरी शके नही तो पण एकवार तने मलवा माटे तो जरुर
आवीश एवु कहीने पोताने घेर आव्यो तिहां सर्व नंदना प्रपंचनी वात तथा पिताना मर
णनी वात सांभलीने पछी राजापासें आव्यो राजाये तेने कह्यु के तुं प्रधानपद ग्रहण कर
थूलिभद्र बोल्यो विचारीने ग्रहण करीश, तेवारे राजाये कह्यु तुरत विचारी ले पछी अशोक


चित्र ७९
थूलिभद्रजी साधु
कोश्या वेश्या नाटक
करेछे

वाडीमां जइने विचार कर्यो के जुउ आ ससारतो मतलबी छे, मह्वारा पितानी एवी अवस्था थइ माटे राज्यना काममां, आ लोकनुं पण सुख नथी अनें परलोकमां तो नरकनी प्राप्ति थाय एवो संसार असार जाणी रत्नकंबलनो उघो बनावी, लोच करी, साधु थइने राजाने जइ धर्मलाभ आप्यो अने तिह्वांथी निकल्यो राजाये जाण्यु जे आ व्यसनी छे माटे वेश्याने घेर जशे एवु विचारीने जोवा लाग्यो तेवारे ते तो कोइ मह्वादुर्गंधित गलीमांथी थइने गाम बाह्वेर निकली गयो पण दुर्गंधथी नाक ढांक्यु नह्वी तेथी राजायें जाण्यु जे ए खरेखरो वैराग्यवान् छे पछी थुलिभद्र जइने श्रीसंभूति विजयजीनी पासे दीक्षा लीधी अने राजाये सिरियाने मत्रीपद आप्यु, मह्वोर सोंपी ह्ववे चोमासुं आवे श्रीथुलिभद्रजी गुरुना आदेशथी वैश्याने घेर चोमासुं रह्या अने एक साधु सिंह्वनी गुफाये चोमासुं रह्या तथा त्रीजो शिष्य सर्पबिलें चोमासुं रह्या, चोथो साधु कूआना वचला काष्ठ उपरे चोमासुं रह्या ए चारेमांथी थुलिभद्रजी वैश्याने घेर चोमासुं रह्या छे तिह्वां चोमासुं काढवु घणुं कठण छे कारण के एकतो वर्षाऋतु छे ते कामनी जगाववा वाली छे केम के जे कालमां मेघ गर्जारव करे, वी जली चमके, मोर बोले, पपइया पिउ पिउ करे, एवा कालमां भोगनी वांछा घणी थाय वली रह्वेवाने चित्रामणवाली जगा, अने खावाने षड्रस भोजन नित्य मले, ए सर्व भो गना अंग मले अने जो स्त्री रागवाली न मले तो सर्व निष्फल थाय परतु अह्वी थुलिभद्र जीने तो कोश्या वेश्या सरखी सर्वमां अग्रेसर रागवाली मली छे तेणे मह्वोटा उमेदथी चित्र शालिमां उताखा, अनेक प्रकारना भोजन कराव्या, अनेक तरेना ह्वाव भाव कर्या, फूल उ पर नाटक कीधुं, भोग विलासना वचन बोली, तथापि ए मह्वापुरुषनुं एक रोम पण

मग्युं नही सेवट वेश्या वोली जे हुं आटला विलाप करु बु तेनु कांइ प्रत्युत्तर तो आपो तेवारे मुनिये उपदेश दीधो के हे नोली धर्मविना सर्व अवतार निष्फल ठे इत्यादिक उपदेश सांनलीने कोश्या श्राविका थइ, एक राजाना हुकुमदार पुरुष विना वीजा कोइ पण पुरुपने घरमां पेसवा देवो नही एवी श्राविका करी चोमासु पूरण थये मुनि गुरु पासे आव्या अने वीजा त्रण साधु पण आव्या तेमने तो गुरुये किंचित् उठीने कह्यु के नले आव्या हे डुक्करकारक ! अने थुलिनद्रने तो आवतो देखतांज तत्काल गुरु उठी उना थइने वोल्या नले आव्या अहो डुक्करडुक्करकारक एवु सांनली सिंहगुफावासी साधुये अमर्ष आणीने विचार्यु के जुओ आ गुरु पण धनवतना गरजु देखाय ठे केमके जे खूब माल खाइने मातो थइ आव्यो तेने तो अहो डुक्करडुक्करकारक एवु कह्यु अने मे एवु कठण तप कर्युं तेने तो डुक्करकारक एटलुज कह्यु एवु जाणीने आवते चोमासे सिंहगुफावासी साधुये गुरुने कह्यु के हु वेश्याने घेर चोमासु करवा जइश तेने गुरुये कह्यु हे वत्स, कामदेवनी राजधानी सरखा घरमां जइ चोमासु करवानु काम अत्यत कठण ठे तु भ्रष्ट थइ जइश माटे ताहारे जावु नही तो पण तेणे मान्यु नही अने कोश्याने घेर चोमासुं रहेवा गयो तिहां एक सामान्य जगा वेश्याये तेने रहेवा माटे आपी अने तेनी पासे सामान्य वेप करीने वेठी तो पण तेनु रूप देखीने मुनि मगी गयो अने नोग करवानु कह्यु तेवारे वेश्या वोली धनविना अमारे कामना नथी, साधुये कह्यु के धन किहांथी लइ आवु ? वेश्या वोली नेपाल देशनो राजा रत्नकंवल आपे ठे ते लइ आवो साधु नोग करवानो मतलवी थयो माटे चोमासाना दिवसोमां कीचड घूटतो घूंटतो नेपाल देशे गयो तिहांना राजा पासेथी रत्नकंवल लइने पाठो वल्यो तेवारे रस्तामा चोरोनो सूडो

बोल्यो " लक्ष याति " चोरोयें सूडानी वाणी सांजलीने साधुनी पासेथी रत्नकंबल खोंची लीधो फरी पाठो राजा पासे जइ कहेवा लाग्यो के कंबल चोरोये लुंटी लीधो तेवारे राजाये वांसनी लाकडीमां कंबल नाखीने दीधो पाठो फरतां वली पण रस्तामां सूडो बोल्यो " लक्षं याति " ते चोरोये सांजल्युं परतु कंबल दीठामां न आव्यो तो पण चोरोये जाण्युं जे अमारो सूडो जुठु बोले नही तेथी मुनिने कह्यु हवे तमारो कंबल अमे लइशुं नही पण सत्य कहो जे तमारी पासे कंबल ठे के नथी मुनिये सत्य कह्यु, चोरोये ठोडी दीधो, मुनियें रत्नकंबल लावीने वेश्याने दीधो, वेश्याये स्नान करी कांबलथी शरीर लुठीने खालमां पटकी दीधो ते जोइ साधु बोल्यो हे जोली एवा अमूल्य रत्नकंबलने खालमां केम नाखी दीये ठे? त्यारे वेश्या बोली अरे मूर्खा तुं पण शु करे ठे! जे आ महाउज्जल इहलोकमां अने परलोकमां सुखकारी रत्नकंबलथी पण अत्यत अधिक मूल्यवान् एवु चारित्र रूप रत्न ठे तेने मलमूत्रे करी जरेलुं एवु जे महारुं शरीर रूप दुर्गंधित खाल तेमां केम नाखी आपे ठे? माटे तुं महाराथी अधिक मूर्ख देखाय ठे एवु सांजली प्रतिबोध पामी पाठो गुरुनी पासे आवीने साधुये फरीथी चारित्र लीधु ॥ हवे एक दिवस राजाना रथकारे कोश्या वेश्यानें घणीज स्वरूपवाली सांजली तेथी तेनी पासे जवानी इछा थइ पण राजाना हुकुम विना बीजाने वेश्या राखे नही एवो तेनो नियम जाणीने रथकारे राजाने कोइ पोतानी कला बतावीने राजी कर्यो तेवारे राजा प्रसन्न थइने बोल्यो के माग जे तु मागे ते हु आपु रथकारे कोश्यानी मागणी करी राजाये हुकुम आप्यो अने कोश्याने रथकार सोंप्यो हवे कोश्या नित्य प्रत्ये रथकारनी पासे श्रीथुलिभद्रजीना गुणगान करे ते जोइ रथकारे जाण्युं जे हुं एने कोइ कला ब

ताउ तो ए म्हारा गुण जाणशे ने म्हारी स्तुति पण करशे एवु चितवीने गोखमां बेशी एक बाणथी सात केरीनो जुमखो वींध्यो तथा तेनी पछवाडे वली बीजुं बाण साध्यु एम एकेकनी पछवाडे बाणो साधीने गोखमा बेठा थकाज आंबानी लुंब तोडीने वेश्याने आपी दीधी अने कहेवा लाग्यो के जो आ म्हारी कला केहेवी छे! तेवारे कोश्याये एक राइना दाणानो ढगलो करी तेना उपर फूल राख्युं तेमां एक दोरो शीववानी सूइ उभी राखीने तेनी उपर नाटक कर्यु ते नृत्य जोइने रथकार अत्यत खुशी थइ गयो अने कहेवा लाग्यो जे माग माग हु ताहारी उपर सतुष्ट थयो छु कोश्याये कह्यु ते कहेवोक तमासो जोयो के जे थकी खुशी थइने म्हारा उपर प्रसन्न थयो? आ मे जे सूइनी अणी उपर नृत्य करी बताव्युं एवी कलाउ जो शीखवा बेसीये तो हजारो शीखी शकाय छे तेमज ते जे आम्रनी लुंब तोडी आपी ए पण शीखवु सहेज छे एमा कांइ कठण नथी अभ्यास करवाथी वधी कला शीखी शकाय तेवी छे परतु म्हारा जेवी स्वरूपवाली स्त्री पासेनी पासे उभी रहेली हती, अने वली चोमासाना दिवस हता तेमज कामने जागृत करनारी एवी आ चित्रशाला हती तथा शरीरने पुष्टीना करनारा मन्मथने उत्तेजन आपनारा एवा घणा श्रेयमां श्रेय भोजन मलता हता ते आरोगी ने वली रात्रदिवस म्हारी पासे रहेता तेम हुं पण तेमना उपर अत्यत मोहित थई थकी सराग दृष्टीये बहुप्रीतिपूर्वक विषयसेवन करवानी याचना करी रही हती आटलु छता एक क्षणमात्र पण जेनुं मन चलायमान थयु नही एवी कला श्रीथुलिभद्रजीनी पासे हती ते शीखवी घणीज कठण छे महा दुर्लभ छे जेनी आगल मे घणा प्रकारना चाला कर्या तथापि ते महापुरुष किंचिन्मात्र



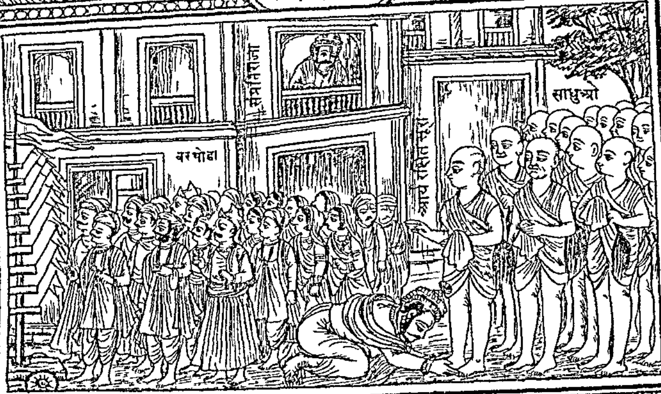
थूलिभद्रजीये सिंह रूप कर्यु

गम्यो नही धन्य छे एमना मातपिताने के जेना कुलमां एवो पुरुष उत्पन्न थयो एवो उपदेश आपी रथकारनु मन फेरवीने श्रीथुलिभद्रजी पासे मोकल्यो तेणे जइ दीक्षा लीधी ॥ हवे को इक समये बारवर्ष पर्यंत काल पड्यो तेवारे त्या सर्व मुनिराजो अग्यार अंगना जाणनारा रह्या पण द्वादशांगीना जाणनारा कोइ न हता तेवारें सर्व संघे बे मनुष्य मूकीने श्रीभद्र बाहु स्वामीने बोलाव्यो, भद्रबाहु स्वामीये कह्यु मे प्राणायाम ध्यान चालुं कर्यु छे तेमाटे म हाराथी आवी शकाशे नही तेमने श्रीसंघे फरीथी कहेवराव्युं के हे महाराज जे श्रीसंघनी आज्ञा न माने तेने केवा प्रकारनो दंड करवो? श्रीभद्रबाहुजी बोल्या तेने गछ बाहेर करवो एवी चाल छे पण मने ध्याननो अंतराय थाय छे माटे श्रीसंघने एम करवु योग्य छे के भ णवावाला साधुउने इहां म्हारी पासे मोकली आपवा जोइये तो तेमने भणवानु बनी श कशे तेवारे श्रीसंघे मली श्रीथुलिभद्र प्रमुख पांचशो साधुउने श्रीभद्रबाहुस्वामी पासें मो कल्या तिहां गुरुये सर्व साधुउने सात वाचना दीधी तेमां बीजा सर्व साधुउतो भणवाथी हारी गया परंतु एक श्रीथुलिभद्रजी बे वस्तुये उणा दश पूर्व भणी गया एवामां श्रीथुलि भद्रजीनी सात बहेनो यक्षा, यक्षदिन्ना, भूता, भूतदिन्ना, सेणा, वेणा अने रेणा ए साते साध्वीउ श्रीसंभूतिविजयजीनी शिष्यणीउ थयेली छे ते श्रीथुलिभद्रजीने वांदवा सारु आवी तेणे प्रथम श्रीभद्रबाहु स्वामीने वांदीने पुछ्यु के थुलिभद्रजी किहां छे? गुरु बोल्या पर्वतनी गुफामांहे भणेला पूर्वनुं गुणणु करे छे तेवारे साते जणी तिहां गइ तेमने आवती जोइ ज्ञा नना बलेकरी चमत्कार देखाडवामाटे श्रीथुलिभद्र सिंहनुं रूप करी बेठा तिहां सिंहने देखी साध्वीउ भय पामी थकी फरी गुरु पासे आवीने केहेवा लागी के महाराज तिहां तो सिंह

वेगो छे तेवारे गुरुये जाण्यु एणे विद्या प्रगट करी जणाय छे एम विचारीने वली कह्यु के हवे तमे जाउ थुलिभद्रजी तिहांज छे तेवारे ते फरी तिहा गइ जाइने देखी हर्षसहित वंदना करी वली गुरु पासे आवीने पूछवा लागी के महाराज अमारी साथे सिरिये दीक्षा लीधी तेने अमारामाथी यक्षणीये उपवास कराव्यो ते देवलोक गयो पछी यक्षणीने प्रायश्चित्त लेवा माटे श्रीसंघने कह्यु तेवारे श्रीसंघे काउसग्ग करीने शासन देवीने सीमंधरस्वामी पासें मोकली सीमंधरस्वामीना मुखथी बे चूलिका लइने शासनदेवी इहां आवी एवु कही गुरुने वांदीने पोताने स्थानके गइ हवे एक दिवस श्रीथुलिभद्रजी पोतानो एक ब्राह्मण मित्र हतो तेने घेर गया तिहा ते ब्राह्मणनी स्त्रीने पुछ्यु महारो मित्र किहां छे? स्त्रीये कह्यु अमने दारिद्रीपणुं प्राप्त थयुं छे माटे भीख मागवा गयो छे तेवारे श्रीथुलिभद्रे ज्ञानबलथी जोयु तो एना घरमां वडिलोपार्जित घणु धन भरेलु दीठु पण ब्राह्मणने तेनी खबर नथी माटे भीख मागे छे पछी श्रीथुलिभद्रजीये पोतानी दृष्टीथी दाटेला धननु ठेकाणुं तेनी स्त्रीने बताव्युं अने पोते चाल्या गया ब्राह्मणे आवीने पोतानी स्त्रीना कहेवा उपरथी दाटेला धननुं स्थानक जाण्यु अने विचार्यु जे पक्का मुद्दा विना मुनिराज दृष्टी आपे नही माटे तेणे धरती खोदी जोइ तो तेमाथी घणु धन निकल्यु तेना योगे ब्राह्मण सुखी थयो एवी रीते एक सिंहनी विकुर्वणा करी अने बीजुं ब्राह्मणने धन देखाड्यु ए बे वातो अयोग्य करीने वली श्रीथुलिभद्रजी गुरुनी पासे वाचना लेवा आव्या तेवारे गुरुये कह्यु के पूर्वोक्त बे काम करवा थकी तमे वाचना लेवाने अयोग्य थया छो, फूटेला भाजनमां दूध नाखीये तो ठेरे नही, तेम तमोने पण वाचना हवें देवाय नही एवु सांभली श्रीथुलिभद्रजी उदास थया थका श्रीसंघने

विनंति करी जे महारामां चूक पडी माटे गुरु वाचना आपता नथी श्रीसंघें मली थुलिभ
इने वाचना आपवा माटे श्रीगुरुने अरजी करी तें उपरथी गुरुये चार पूर्व मूल पाठे व
चाव्या पण अर्थ शीखव्यो नही वली एवु पण कह्यु के ए चार पूर्व तमारे वीजा कोइने हवे
जणाववा नही तिहांथी पाछला चार पूर्वनो ज्ञान विछेद थयो अने दश पूर्वनु ज्ञान रह्यु ए
श्रीथुलिभद्र आचार्य श्रीमहावीर स्वामीना निर्वाण पछी वशेने पन्नर वर्षे देवलोक गया ए
सातमो पाट कह्यो ॥ ७ ॥ ॥ आही सुधी एक श्रीजंबुस्वामी केवली थया अने वीजा पाट
सर्वश्रुत केवली थया हवे श्रीथुलिभद्रना पाटे बे शिष्य थया एक तो श्रीआर्य महागिरि ए
लावच्छ गोत्री अने वीजा श्रीआर्य सुहस्ति वाशिष्ट गोत्री ए बे आचार्य वेठा तेमां आर्य सु
हस्तिसूरिनो सबंध कहे छे ते वखत जिनकल्प विछेद गयो हतो तो पण श्रीआर्य महागिरि
जीये जिनकल्पनी तुलना करी एटले जिनकल्पनी पेठे चाल्या एक दिवस श्रीआर्य सुहस्ति
सूरि कोइ शेठने घेर उपदेश आपे छे एटलामा श्रीआर्य महागिरिजी गोचरीये आव्या तेमने
देखीने श्रीआर्य सुहस्ति तरत उठीने ऊभा थया तेवारे शेठे पुछ्युं के ए महात्मा कोण छे?
त्यारे आर्यसुहस्ति सूरिये शेठनी आगल आर्य महागिरिजीनी स्तवना करी सर्व वृत्तांत कह्यु ॥
एक समये दुकाल पड्यो धान खावाने मलवु मुसकिल थयुं तेथी लोक सर्व दुखी थया छे, जे
राजा जेवा हता ते पण रांक जेवा थइ गया छे तो पण श्रावक लोको साधुउने दान आपे
छे साधुउने घणी भिक्षा मलती देखीने एक भिखारी साधुनी पछवाडे चालवा लाग्यो अने
बोल्यो के मने खावाने आपो तमारे घणुं खावानुं मले छे साधुये कह्यु के अमारा गुरुने पूछी
तेनी आज्ञा लइ आव तेवारे भीखारी गुरुनी पासे आव्यो गुरुये कह्यु के जे अमारा जेवो

होय तेने अमे आपीयें निखारीयें कह्यु के नले तमारा जेवो मने पण करी ल्यो ते सांनली गुरुये पण लान जाणी तेने दीक्षा आपीने तेनी इच्छा मुजब नोजन कराव्यु अने सुहस्ति सूरिये कह्यु के शुद्ध नाव राखजो एटलामा तेने ऊलटी थइ तेवारें सर्व साधु तेनो वैयावच्च करवा लाग्या तेथी निक्षुये चारित्रनी अनुमोदना कीधी अने मरण पाम्यो तिहांथी मरीने उज्जयणी नगरीमा श्रेणिक राजाने पाटे कोणिक राजा, तेना पाटे उदायिन राजा, तेना पाटे नंद नामे नव राजानां नव पाट थया अहींसुधी श्रेणिकथी मांमी वार पाट थया तेरमे पाटे चंद्रगुप्त, चौदमे पाटे बिंदुसार, पन्नरमे पाटे अशोकश्री अने शोलमे पाटे अशोकश्रीनो पुत्र कुणाल थयो ते कुणालनो पुत्र सम्प्रतिनामे राजा थयो, जनमतांज तेना दादाये तेने राज्य आप्युं ते अनुक्रमे त्रण खंम पृथ्वीनु राज्य नोगवनारो थयो हवे एक दिवस ते सम्प्रतिराजा गोखमां बेठो छे तेणे रथयात्रामा आर्य सुहस्तिसूरि जाय छे तेने दीठा तेना योगें जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेथी पूर्वे निक्षुना नवमां पोते साधु थयो हतो ते सर्व दीठामां आव्यु तेवारे गोखथी नीचे उतरी गुरुने पगे लागीने पुछ्युं के हे स्वामी अव्यक्त सामायिकनु शुं फल? गुरुये कह्यु राज्यादिप्राप्ति थाय ते सांनली सम्प्रति राजा वली विशेष दृढ थइने गुरुने पूछवा लाग्यो के हे स्वामी मने आप ओलखो छो? तेवारे गुरु उपयोग आपीने बोल्या के तु निक्षुना नवमां अमारो शिष्य हतो तो हवे तने राज्य मल्युं माटे धर्मवृद्धि कर एवु गुरुनु वचन सांनलीने राजाये श्रावकपणुं लीधु अने सवालाख जिनमंदिर नवा कराव्या, सवाकोटी जिनबिंब प्रतिष्ठाव्या, तेर हजार जीर्णोद्धार कराव्या, पचाणु हजार पीतलनी प्रतिमाओ नरावी, सातसे दानशालाओ करावी, देवालयोथी सर्व पृथ्वी शोनायमान करी, कर



सप्रति राजा आर्यरक्षितजीने नमस्कार करेछे

छोडाव्या, साधुउंना वेश पहेरावीने पोताना सुभटोने अनार्य जेवा [illegible]
लोकोने समजावीने साधुउंने अनार्य देशोमां विचराव्या तथा वीजा घृत, गोड, वस्त्र प्रमु
खना सर्व व्यापारीउंने तेमज कदोइ लोकोने कहेवरावी मूक्यु के तमे शुद्ध आहारादिक मु
निउंने वहोरावजो तेना पैशा जे थाय ते राजानी पासेथी लइ जाजो पण ए वातनी साधु
उंने खबर पडवा देशो नही लोको पण तेमज साधुउंने देवा लाग्या, साधुउं पण अशुद्ध न
जाणता थका आहारादि लेवा लाग्या, जाणे शुद्धज छे एम समजवा लाग्या, एटलामां आ
र्यमहागिरिजी बोल्या हे शिष्यो आ एवो स्निग्ध आहार नित्य केम लइ आवो छो? तेवारे शिष्यो
बोल्या असे चोकसी तो नित्य करीये छैये पण एनी मालम पडती नथी वली गुरुये कह्यु
हवे सारी रीते चोकशी करो पछी शिष्यो ए गोचरी करतां छोकराउंने पुछ्युं अरे तमने नित्य
लाडु प्रमुख किहांथी आवे छे? तेवारे छोकरा बोल्या महाराज सर्व आपणो प्रताप छे अमे
पण तमारे प्रतापे लाडु प्रमुख खाइये छैये अने आपने पण वहोरावीये छैये राजानो नं
म्हार अखूट छे ते सांजली शिष्यो ए आवीने आर्यमहागिरिजीने कह्यु आर्यमहागिरिये
जाण्यु आ राजद्रव्य छे पछी आर्यसुहस्तिने कह्यु हे देवाणुप्रिया तमे आहारनी चोकशी करो
छो के नथी करता? आपणने राजद्रव्य आवे छे ते केम? तेवारे आर्यसुहस्ति विना उपयोगथी
बोल्या के राजद्रव्य तो सर्वत्र छे, कहो राजद्रव्य क्यां नथी? आर्यमहागिरिजी बोल्या आवी
शिथिलपणानी वात तमे केम करो छो? आजे तमे पोतेज एवुं बोलो छो तेवारे तो प्रसिद्धपणे
दोष लागवानु थाशे माटे हवे तमारे ने अमारे सांजोगिकपणुं नथी एवुं कहीने अन्यत्र
स्थानके विहार करी गया इहां सुधी तो एकज समाचारी हती अने एकज गछ हतो तथा

एक सांभोगिपणो आचार्योनो चाल्यो परतु आही श्रीआर्य सुहस्ति सूरिथी सांभोग भिन्न थयो आर्यसुहस्ति चारित्र पाली देवलोक गया ए आठमो पाट जाणवो ॥ ८ ॥ ॥ हवे श्री आर्यसुहस्तिना वे शिष्य थया तेमां एकतो सुस्थित अने वीजो सुप्रतिबद्धक एमणे कोटी वार सूरिमंत्र जप्यो काकदी नगरीमा जन्म्या तेमनो व्याघ्रापत्य गोत्र हतुं ए नवमो पाट ॥ ॥ ए ॥ ॥ एमने पाटे श्रीआर्य इन्द्रदिन्नसूरि कौशिक गोत्रीया थया ए दशमो पाट ॥ १० ॥ श्रीआर्य इन्द्रदिन्न सूरिने पाटे श्रीआर्य दिन्नसूरि गौतम गोत्रीया थया ए अगीआरमो पाट ॥ ॥ ११ ॥ ॥ श्रीआर्यदिन्नने पाटे श्रीआर्य सिंहगिरि कौशिक गोत्रीया थया जे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या हता ए वारमो पाट ॥ १२ ॥ ॥ आर्य सिंहगिरिने पाटे आर्यवज्रसूरि गौतम गोत्रीया थया ए तेरमो पाट ॥ १३ ॥ ॥ आर्यवज्र सूरिने पाटे आर्यवज्रसेन सूरि उत्कौशिक गोत्री थया ए चौदमो पाट ॥ १४ ॥ ॥ एमना चार शिष्य थया एक नाइल, वीजो पोमिल, त्रीजो जयंत अने चोथो तापस ए चारने नामे एमनी चार शाखा निकली ए पन्नरमो पाट ॥ १५ ॥ ॥ हवे तेरमा आर्यसिंहगिरिथी मांमीने त्रण पाटनु वर्णन कही देखाडीये छैये ते आवी रीते छे के श्रीसिंहगिरिनी पासेथी सुनदानो भाइ आर्यसमित तथा वीजो सुनंदानो भरतार धनगिरि ए वे जणे दीक्षा लीधी अने सुनदा पोते गर्भवती हती तेने तुंबवन गाममा मूकी दीधी पछी सुनदाने पुत्र थयो ते वखतमां वीजी पडोसीनी स्त्री वोली के वाइ जो आज एना वाप धनगिरिये दीक्षा न लीधी हती तो आ पुत्रना जन्मनो महोटो महोत्सव थात पण हमणा तो पिता विना वीजो कोण आवीने महोत्सव करे. एवी वात सांभलीने ते वालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्यु तेवारे वालके जाण्यु जे हु जो महारी मा



सुनंदा पोताना भरतार धनगिरिजीने छोकरो वहोरावेछे- झोलीमा नाखी साधु लई जायछे

ताने राजी राखीश तो ए मह्रारी माता मुजने ठोडशे नही माटे कोइ रीते एने कंटालो उ पजे तेवो उपाय करु तो ए मने त्यागी देशे, तेवारे हुं दीक्षा लइश एवु जाणी माताने उद्वेग करावताने माटे नित्य रुदन करवानुं चालुं कर्युं केमके एने तो चारित्र लेवानो जाव वर्त्ते ठे तेवारे बालकना रुदनथी माता घणी उद्वेग करवा लागी अने विचार्युं जे हुं आ पुत्रने शुं करुं? कोइने आपी देउं तो ठीक एवा अवसरमां सिह्गिरि आचार्य तिह्रां पधार्या तेवारे धन गिरि गोचरीये जवा लाग्या तेने गुरुये ज्ञान दृष्टीये विचारीने कह्यु के आज तमोने गोच रीमां सचित्त अचित्त वस्तु जे मले ते लइ लेवी, ह्वे धनगिरि गोचरी फरतां फरतां सुनंदाने घरे गया सुनदा बोली आ तमारा पुत्रे तो मने उलटो संताप करी दीधो ठे माटे एने लइ जाउ साधुये कह्यु ह्मणा तो तु आपे ठे पण पाठलथी दुःख करीश, सुनदा बोली हुं दुःख नही करु तमे सुखे लइ जाउ तेवारे धनगिरिजी घणी स्त्रीयोने तथा बीजा लोकोने साक्षी करी पुत्रने लइ जोलीमा नाखी उपासरे आव्या गुरुये जोली उपाडी तेमां जार घणो जाएयो तेवारे बोल्या के आ शुं वज्र ठे के? एवु कह्रीने जोली उघाडी तो मांह्रे बालकने दीठो तेनु वज्र एवु नाम दीधुं ह्वे उपासरामां आव्या पठी बालकें रुदन करवु बंध कर्युं गुरुये सध्यातरनी देवावाली श्राविकाने ते बालक सोप्यो तेणे पारणामां राख्युं ते जेवारे ठ मह्रीनानो थयो तेवारे तिह्रां शालामां साध्वीउ जणवा करे ठे तेमना वचन सांजली पार णामां सुतां सुतां अगीआर अंग जणी गयो अनुक्रमे जेवारे त्रण वर्षनो थयो तेवारे सुनदा बोली जे हुं मह्रारो पुत्र पाठो लइश तेने संघे कह्यु के ए गुरुनो माल ठे ते गुरु जाणे पण अमाराथी उपाय नही पठी राज दरबारमां गइ तिह्रां संघनी विनतिथी गुरु पण दरबारमां

आव्या राजाये एवी रीते न्याय थाप्यो के जेना उपकरण ए बालक लइ लीये तेनो ए पुत्र जाणवो तेवारे माताये लाडु तथा घुंघरा प्रमुख बालकने देखाड्या परतु बालके तेनी सा हामुं पण जोयु नही पछी गुरुये बालकने कह्यु के आ उघो ताहारे लेवो होय तो लइ ले तेवारे बालकें उघो ग्रहण कर्यो अने नाचवा कूदवा लाग्यो राजाये कह्यु न्याय थइ चुक्यो एम कही बालक गुरुने आपी दीधो ते जेवारे आठ वर्षनो थयो तेवारे दीक्षा लीधी ते वखत सुनदाये कह्यु के म्हारो पुत्र पण तमे लइ लीधो तो हवे मने पण दीक्षा आपो, गुरुये सुन दाने पण दीक्षा दीधी ॥ एक दिवस उज्जयणीना मार्गमा वज्र रुषीना पूर्वभवनो मित्र कोइ देव हतो ते मनुष्यनुं रूप करीने वज्र रुषीनी परीक्षा करवाने अर्थे कोलानी भीक्षा देवा लाग्यो वज्र रुषीये जाण्यु जे कोलानी रुतु तो हमणा नथी तो आ वखतमा ए कोला क्यांथी लाव्यो, ए तो कोइ देवताये छल कर्यो होय एम जणाय छे माटे देवपिन्ड न लेवो एवु जाणी भिक्षा लीधी नही तेवारें देवे सतुष्ट थइने वैक्रिय लब्धि आपी फरी वली उ नालाना दिवसोमा गेवरनी परीक्षामा देव चलाववा आव्यो तेमा पण वज्रमुनि चलायमान थया नही तेवारे देवतायें आकाश गामिनी विद्या आपी हवे एक दिवस गुरु थन्डिल भूमिये गया अने केटलाएक साधुउ गोचरीये गया तेवारे वज्रमुनि बालक्रीडाथी साधुउना सथारा दिक चारे बाजु मूकी पोते वचमां बेशीने जेवी रीतें गुरु वाचना आपे तेवी रीते जूदी जूदी अगीआरे अगनी वाचना देवा लाग्यो गुरुयें पण बारणे छाना उभा रहीने सर्व वाचना सांभली पछी बालकने कांइ पण शंका पडे नही तेवी रीते म्होटा स्वरथी निसिहि कहीने गुरु उपास रामा आव्या तेवारे वज्ररुषीये पण पोतानु करेलु सर्व कृत्य समेटी लीधु हवे गुरुये ते बाल



त्रण वर्ष थया पछी सुनदाये राजसभामा फरीयाद करी परतु राजाये न्याय करी ते छोकरो अपाव्यु नही

कना गुण प्रगट करवाने माटे कह्यु के हे साधुओ तमे इहां रहजो हु एक गाम जइने आवु
बु तेवारे साधुओ बोल्या अमोने वाचना कोण आपशे? गुरुये कह्यु वज्ररूपी आपशे एवु
कहीने गुरु बीजे गाम गया हवे ते साधुओ गुरुनुं वचन प्रमाण करवावाला, विनयवंत छे
माटे वज्रमुनिनो विनय करीने वज्रनी पासे वाचना लेवा लाग्या तेमने वज्रे पण एवी वा
चना आपी के गुरु घणी वाचनाओथी जेटलु जणावे तेटलु वज्रमुनिये एक वाचनामां ज
णावी दीधु तेवारे साधुओए विचार्युं के गुरु गामे गया छे तेने जो चार दिवस वधारे लागे
तो ठीक तेटलामां अमारो आ अमुक श्रुतस्कंध पूरण थइ जाय पछी केटलाक दिवस वीत्या
केडे गुरु आव्या तेमणे पुछ्युं जो साधुओ तमारे वाचना सुखे थइ? साधु बोल्या हा
महाराज हवे अमारे वाचनाचार्य ए वज्रज होजो तेवारे गुरुये अगीआरे अंग वज्रने आपीने
वाचनाचार्य कर्यो हवे गुरुनी आज्ञाथी वज्रमुनि श्री उज्जयणी नगरीमां जइगुप्ताचार्य
पासेथी दश पूर्व जण्या पछी आचार्य पद पाम्या एक दिवस पाटली पुरमां धनशेठने घरे
साध्वीओ उतरी छे तेणे वज्रस्वामीना गुण अने रूपनु वर्णन कर्युं तिहां शेठनी पुत्री रुक्मि
णीये एवी प्रतिज्ञा करी के वज्रस्वामी विना बीजाने महारे परणवु नही एटलामां वज्रस्वामी
पण पाटली पुरमां आव्या अने विचार्यु के महारा रूपथी लोको क्षोभ पामे छे, ते नही
पामे एटला माटे विद्याना बलथी रूप संक्षेप करी सामान्य रूपथी धर्मदेशना आपवा
मांडी तेवारे साधुओये लोकोना मुखथी सांभल्यु जे गुरुनी देशनातो अमृत सरखी छे पण
रूप तो सामान्य छे ए वात साधुये वज्राचार्यने कही तेवारे बीजे दिवसे हजार दलनुं सुवर्ण
कमल करीने तेनी उपर बेठा अने पोतानुं जेवु मूलरूप हतुं तेवाज रूपथी देशना दीधी

ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या, धनशेठ पण पोतानी महारूपवाली रुक्मिणी नामा पुत्री अने एक क्रोड सोनामोरो लइ गुरुनी पासे आवी भेट करवा लाग्यो गुरुये कन्याने प्रतिबोध आपी धर्म पमाडीने पोतानी शिष्यणी करी ॥ हवे एकदा वज्रस्वामीये पदानुसारिणी लब्धिये करीने श्रीआचारांग सूत्रना महापरिज्ञा नामा अध्ययनमांथी मानुष्योत्तर पर्वत पर्यंत जइ शकाय एवी आकाशगामिनी विद्या काहाडी वली एक समय उत्तर दिशामां दुकाल पडतो जाणी श्रीसंघने पट कपडा उपर वेशाडीने अन्यस्थानके लइ जवा तयार थया एवामां तिहां सय्यात्तर बोल्यो महाराज हुं पण एमनो साधर्मि छु तेवारे तेने पण पट उपर वेशाडीने आकाशमां रह्या थकाज स्थानके स्थानके श्रीजिनचैत्य वंदावता थका महानिशि नामा नगरीये गया तिहां यद्यपि सुगाल तो छे तथापि राजा बौधमतवालो छे माटे तेणे बौधदर्शनीना भक्त लोकोना कहेवा उपरथी पजोसणना दिवसोमां जैनमंदिरमां फूल लइ जवा देवा नही एवो बंदोबस्त कर्यो ते जोइने संघे श्रीवज्रस्वामीने विनति करी महाराज फूलनो अटकाव थाय छे? वज्रस्वामीये कह्यु तमे चिंता करशो नही हुं एनो उपाय करु छु एम कही आकाशमां उडीने माहेश्वरी पुरीमां हुताशन नामा देव तेना वनमां पोताना पितानो मित्र वनमाली हतो तेने जइ कह्यु के तमे फूल तयार राखजो एवु कहीने पछी हिमवत पर्वत उपर गया तिहां पद्मद्रहना कमलनिवासिनी लक्ष्मीदेवीये श्रीवज्रस्वामीने वांद्या अने कहेवा लागी हे स्वामी! आपनी दासीने कांइ हुकुम फरमावो तेवारे आचार्यें कह्यु पूजाने अर्थें फूल जोइये छैये तिहां लक्ष्मीदेवी देव पूजाने अर्थें लक्षदल कमल लइ आवी हती ते हाजर कर्या तेने लइने फरी पाछा वलतां हुताशन वनथी वीश लाख फूल लइ

विमानमां बेशीने पूर्वनवनो मित्र तिर्यक् जृंनक जातिनो देव छे ते पण आचायना साथ गीत, नृत्य, वाजित्र प्रमुख महोत्सव करतो थको रह्यो छे तेना सहित आवीने पुष्पो श्राव कोने आप्या अने जैनना चैत्यनो महिमा वधार्यो, श्रीसंघ पण घणोज आनंद पाम्यो, ते नगरनो राजा पण बौद्धधर्म मूकी जिनधर्मी थयो ॥ तथा वली एक दिवस दक्षिण मार्गमां जाता थका श्रीवज्रस्वामीने श्लेष्म थइ आव्युं तेवारे साधुउनी पासेथी गोचरीमां सुंठ म गावी ते साधुउ लइ आव्या तेने पोते कानमां धरी राखीने विचार्युं जे पछी खाइशु पण नू लमां एमज रही गइ, खवाणी नही ते पडिक्कमणो करती वखते पडिलेहणां करतां नीचे पडी गइ तेवारे गुरुये विचार्युं जे हुं दश पूर्वधर छु तेने आवी नूल ते वली केम पडी? एथी जाणयु जे हवे महारुं आयुष्य स्वल्प रहेलु जणाय छे माटे अनशन करवानो विचार कर्यो अने पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्यु के वार डुकाली पडशे तेवारे तु सोपारापुर पाटण जाजे, कोइ तने पूछे के सुनिक्ष क्यारे थशे तेवारे ताहारे एम ध्यानमां राखवु के जे दिवसे लाख मौ ल्यनी एक हांमी चडे ते दिवसथी बीजे दिवसे सुगाल थाशे एवु थतो देखीने जवाब आपजे अमे तो हवे अनशन करीशु एम कहीने वज्रसेनने सोपारा पाटण जवाने विदाय कर्यो, पोतानी पासे रहेला साधुउने जेवारे निक्षा नही मले तेवारे विद्यापिंम करीने केटला एकने जमाड्या, पछी पांचशे साधुउने लइने अनशन करवाने माटे चाल्या तेमां एक न्हानो चेलो हतो तेने नोलव्यो के तुं इहां बेश हुं आवु छु पण ते चेलाये मोहथी कह्यु जे हु तो तमारी पछवाडे आवीश तो पण गुरुये समजावीने राख्यो तेवारे चेलाये जाण्यु जे गुरु महाराजने अप्रीति न थाय तेम करु तो ठीक एवु चिंतवीने फरी पर्वतना मूलमां आवी तपेली शिला

उपर ते चेलाये अनशन करी दीधो, ते बालक हतो माटे सुकुमार पणाथी तत्काल शुभ ध्याने मरण पामी देवलोक गयो, देवताउये नेला थइने तेनो महिमा कर्यो, तेवारे बीजा साधुउये पण विशेष दृढ थइने अनशन कर्यां परतु मिथ्यात्वी देवो आवीने साधुउने अ नशनमा मोदकनी निमत्रणा करवा लाग्या अने बोल्या के हे महाराज आ शुद्ध निर्दोष आ हार छे ते ल्यो तेवारे साधुउये जाएयु जे एने अप्रीति छे एवु जाणी नजीकना बीजा पर्वत उपर जइने अनशन कर्यु शुभ ध्यानथी काल करीने वज्रस्वामी प्रमुख देवलोक गया, तेवारे इन्द्र महाराजे रथ उपर बेशी पर्वतने प्रदक्षिणा देइ सर्व साधुउने वांद्या तिहां ते इन्द्र महाराजना र थनी रेखा मंडाणी तेथी ते पर्वतनु रथावर्त एवु नाम थयु तथा तिहांना वृक्ष पण साधुउने नमवाथी नमेला थकाज आज पर्यंत देखाय छे श्रीवज्रस्वामी देवलोक गया पछी दशमो पूर्व तथा चोथो अर्द्धनाराच संघयण विछेद गया तेवार पछी वज्रसेनाचार्य सोपारा नगरमा जिनदत्त श्रावक तथा तेनी नार्या ईश्वरी नामे छे ए बेहुने प्रथम श्री वज्रस्वामीनो प्रतिबोध थयो हतो तेमने घेर गोचरी गया तिहां देखे तो धान मले नही तेवारे शेठ अने शेठा णीये पोताना चार पुत्रो सहित लाख मूल्य धान्यनी हांमी चडावीने विचार कर्यो के सर्व आपणे छ जणाये आ रांधेला अनाजमा जहेर मेलवी खाइने पछी अनशन करी लेवुं एवु चितवी हांमीमा जहेर नाखवाने तयार थया छे एटलामां वज्रसेन आव्या तेमणे ते कृत्य देखीने पुछ्यु के, शु ? मरवानो उपाय करो छो !! तेवारे शेठाणी बोली धन तो अमारा पासे घणुं छे परतु धान्य मलतु नथी तेवारे वज्रसेन बोल्या गुरुये कह्यु छे के लाख द्रव्यनी हांमी च डशे तेने बीजे दिवशे सुगाल थाशे ते सानली शेठाणीने पण पूज्यना वचननी प्रतीति छे

माटे वोली के जो सुगाल थइ जशे तो आ महारा चारे पुत्र हु आपने
रेने दीक्षा आपजो एवी प्रतिज्ञा करी हांमीमां जहेर नाखवु बंध कर्युं तेवार पछी वा
होर गया केडे केटलाक वाहाणो उजड वायराना योगथी छेटे निकली गया हता ते सारो
वायरो वाह्याथी पाछां आव्या तेमां जुवार भरेली हती ते लोकोये लीधी, सुगाल थयो, ते
धान्यथी जुगउद्धार थयो तेथी जुगंधरी एवु नाम धानतुं थयु एने लोक भापामां जुवार कहे
छे पछी शेठ अने शेठाणीये एक नागेन्द्र, बीजो चन्द्र, त्रीजो निर्वृत्ति अने चोथो विद्याधर ए
चारे पुत्रोने दीक्षा अपावी अने पोते पण दीक्षा लीधी ते चारे साधुउ बहुश्रुत आचार्य
थया तेनी चार शाखा निकली हवे विस्तार वाचनामां केटलाएक कुल, केटलाएक गण,
केटलिएक शाखाउ कहेली छे ते सूत्रथी सुगम छे माटे लखता नथी सूत्र उपरथीज जाणी
लेवु अने अर्थ पण सूत्र वोले ते प्रमाणे करी देवो ॥ पुणोअज्जजसभद्दाउपुरउ ॥ वली आर्य
यशोभद्रनी आगल थविरावली आ प्रमाणे जोवी ते कहे छे ॥ थेरस्सणअज्जजसभद्दस्सतुंगिया
यणगुत्तस्स ॥ थविर आर्य जसभद्र तुगीयायण गोत्रीयाना ए बे शिष्य एवो अर्थ सूत्रनो
समजी लेवो बाकी अमे तो मात्र कोइक शाखानो संवध लखिशुं ॥ थविर छलुए रोहगुत्ते
कोसियगुत्ते ॥ एनाथी त्रैराशिक मत निकल्यु तेनी कथा कहीये छेये श्रीमहावीरथी पांचशो
चुमालीश वर्ष गया पछी श्रीरोहगुप्ताचार्यनो गुप्त नामा शिष्य हतो ते अंतरजिका नामे नग
रीमां आव्यो ते वखत एक महोटो वादी पोट्टशाला नामे तापस छे ते पण ते नगरीमा आव्यो
ते कहेवो छे तो के वीछी, साप, उंदर, हरिण, सूअर, काग, अने पखी ए सात चीजो
वनावी आपवानी सात विद्याउनो धरनारो छे तेना मदथी ते, सर्व लोकोने एम कहेके

म्हारो पेट फाटीने कदाच विद्या बाहेर चाली जाय तेना भयथी मे म्हारा पेट उपर पाटा बांधी राख्या छे एवा अभिमाननी वातो करे वली एक जांबूनी डाली हाथमा राखे अने लोको आगल एवु कहे के आ जंबूद्वीपमा म्हारी साथे जीतवावालो कोइ नथी एवी रीते ते तापसे आवीने नगरीना राजाने पण कह्यु वली कह्यु के तमारा नगरमां कोइ वाद करवा वालो होय तो सुखेथी तेने तेडावीने म्हारी साथे वाद करावो नहीका मने जीतपताका आपो तेवारे राजाये पडह वजडाव्यो के जे वाद करवाने इच्छा राखतो होय ते आ पडह रोकी राखे एटलामा ते गुप्तनामा रोहगुप्ताचार्यनो शिष्य गाममा गोचरीये आव्यो छे ते पडह सांभलीने बोल्यो हु वाद करीश एवु कही गुरुनी पासे आवी पडहनी हकीगत कही गुरु बोल्या ए वात ते ठीक करी नही केमके ते योगी क्रोधी छे माटे तहारा उपर विद्या च लावशे तेवारे शिष्ये कह्यु आप जैनी वेग थका ते जितपताका लइ जाय तो पछी आपणी शी विशेषता कहेवाय! एवो शिष्यनो निश्चय जाणीने गुरुये तेने सात विद्याउ आपी वली पण कह्यु जो कदापि तने कोइ अधिक उपद्रव थाय तो आ उघो मंत्री आपु छुं तेने तु फेर वजे तेथी सर्व उपद्रव निवर्त थइ जाशे एवी रीते गुरु पासेथी आज्ञा लइने वलश्रीनामा राजानी सभामा आवी योगीने कहेवा लाग्यो जे तहारो वाद शु छे ते सांभलाव योगी छल करीने बोल्यो अमारा मतमां एक जीवराशि बीजो अजीवराशि ए बे राशि कही छे एवु यो गीनु बोलवु सांभलीने शिष्ये विचार्युं जे आ वातनो जो हुं हाकारो करीश तो ए कहेशे के मे म्हारी वात एने मंजुर करावी, म्हारु मत एणे मान्यु, तेथी लोको जाणशे के शिष्य हारीगयो एम चितवीने शिष्ये पण कुतर्क करी कह्यु के बे राशि तु कहे छे ते खोटु कहे छे परन्तु जीव,

अजीव अने त्रीजो नोजीव एवी त्रण राशि छे तेवारे योगी बोल्यो तुं नोजीव २ |केवी रीते कहे छे?
शिष्ये तरत एक दोरो वाटीने भूमि उपर नाख्यो ते हालवा लाग्यो त्यारे कह्यु के जो आ नो
जीव छे, एवी घणी युक्तियो लगाडीने संसारमां सर्व मली जीव, अजीव अने नोजीव ए त्रण
वातो स्थापन करी आपी तेथी योगी हारी गयो पछी योगीये विद्याउ चलाववा मांडी तिहां
प्रथमतो मह्टोटा डंकने मारवावाला एवा वींछीउ बनाव्या तेवारे चेलाये गुरुये बतावेली वि
द्याना बलथी मोर बनाव्या ते आवीने सर्व वींछीयोने खाइ गया,तेवारे योगीये सर्प बनाव्या
तिहां चेलाये नोलीयां बनाव्यां, योगीये उंदर बनाव्या तेवारे चेलाये बिल्लाडी बनावी, यो
गीये तीखा सींगडावाला हरिण बनाव्या तेवारे चेलाये चितरा बनाव्या तेणे आवीने सर्व
हरिणोने मारी नाख्या, योगीये सूअर बनाव्या तेवारे चेलाये सिंह बनाव्या, योगीये काक
बनाव्या, चेलाये घूड बनाव्या, योगीये पंखी बनाव्या, चेलाये बाज बनाव्या, एमां पण योगी
हार खाइ वेठो तेवारे गर्दभी विद्या चलावी तेवखत चेलाये उघो फेरव्यो तेथी तेनी विद्या
नाशि गइ, एरीते योगी हारीगयो अने चेलो जीत करीने घणा लोकोनी साथे परिवर्यो थको
गुरुनी पासे आव्यो गुरुये पुछ्युं केवीरीते जीती आव्यो तेवारे त्रण राशि थापी तेथी जीत्यो
एवुं कह्यु त्यारे गुरु बोल्या हे वत्स ते आ सारी वात नही करी, भगवानना मतथी तुं विपरीत
बोल्यो, माटे राजसभामा जइने मिछामि डुक्कडं दइ आव अने वादीने जीतवाने माटे जे कु
युक्ति लगाडी तेनो सघमां मिछामि डुक्कडं दइआव, जो मिछामि डुक्कडं नही देइश तो जैनम
तनो उछापक थइश ते सांभली शिष्य बोल्यो हवे मह्टारा मुखथी हु केम जुठो पडुं, मह्टाराथी
तो मिछामि डुक्कडं देवाय नही, मे खोटुं थोडुंज थापन कर्युं छे ! राशितो त्रणज छे, गुरुये

कह्यु के तु म्हारी साथे पण जो वाद करवा इछतो होय तो चाल राजसन्नामां जइ आ पणे वे वाद करीये एम कही गुरु पोताना शिष्यने लेइने राजानी पासे आव्या अने कहेवा लाग्या के हे राजन् आ म्हारा शिष्ये वादीने जीतवा माटे जे त्रण राशि थापन करी ते वात जूठी छे, ए अमारु कह्यु मानतो नथी ने म्हारी साथे वाद करशे तेनी वचमा आप साक्षी धर रहो तो अमे वाद करीये राजाये कह्यु सुखे वाद करो पछी ते वेहु गुरु शिष्य वाद करवा लाग्या तिहां छ महीना सुधी वाद कस्यो १४४४ प्रश्न कुतर्कना शिष्ये थापन करी पूछ्या ते सर्व प्रश्न गुरुये त्रोडी नाख्या तो पण समज्यो नही राजाने घणो वखत खोवो पड्यो ते वारे राजाये जाण्यु जे हु केटला दिवस एहना झगडामा खोटी थाउ' एम विचारी गुरुने कह्यु हे स्वामी आपनुं वोलवु सर्व साचुं छे पण म्हारा राज्यसबधि कामकाजमां निगाड थाय छे माटे हवे मने साक्षीथी मुक्त करो गुरुये कह्यु आवती काले सर्व रगडो मटाडी आपीश एम कही वीजे दिवसे वाद ठहेरावीने कुत्रिकापणमां जे वस्तु त्रण लोकमां होय ते मले छे माटे जो तु साचो होइश तो नोजीव ए चीज पण मलशे, ते लइ आवीश' ते वात चेलाये पण मान्य करी अने राजा लोकोये पण कह्यु के ठीक छे पछी चेलाये कुत्रिकापण जइने जीव, अजीव अने नोजीव माग्या तेवारे देवे जीवने बदले तो उदर लावीने आप्यो तथा अजीव माग्यु तेवारे पथ्थर लावीने आप्यो पछी चेलाये जेवारे कह्यु के नोजीव लाव तेवारे वे त्रण वार तेहिज पूर्वली चीज लावीने आपे पण नोजीव आपे नही एवामां आकाश वाणी थइ के जगतमां जीवने अजीव ए वेज राशि छे पण त्रीजी कोइ राशि नथी तेवारे सर्व लोक वोल्या गुरु साचा छे गुरुये शिष्यने कह्यु केम हवे समज्यो के नथी समज्यो ? जो समज्यो होय तो

मिछामि डुक्कडं आप ते सांजली शिष्य बोल्यो एम कांइ हुं मानुं नही तेवारे गुरुने रीश चडी तेथी जस्मनु कुंभो तेना माथा उपर नाखीने गछथी बाहेर काहाडी मूक्यो तेणे जइ वैशे षिक मत थापन कर्युं तेमां नव द्रव्य, सत्तर गुण, पांच कर्म, त्रण सामान्य, एक विशेष, एक समवाय, ए ढ पदार्थ प्ररूप्या एना प्ररूपवाथी चौदशे चुमालीश नेद थया तिहां षट्गोत्रथी उलूका षटुचासौचलूकश्वषडुलूक. ॥ एवा नाम अने गोत्रना मिलापथी नाम स्थापन थयु, इहांथी त्रैराशिक शाखा थइ इति रोहगुप्त कथा सपूर्ण ॥ ॥ हवे थविर प्रियग्रंथथी मध्यिमशाखा निकली तेनो अधिकार आ प्रमाणे ढे ते कहे ढे श्रीहर्षपुरनामा नगर जेने हमणा अजमेर कहे ढे तेमां त्रणशे जैनमंदिर अने चारशे अन्यदर्शनीउना देरा हता तथा आठ हजार घर ब्राह्मणोना अने ढत्रीश हजार घर वाणीयाउना हता वली नवसें बाग, सातसे वावडी, सा तसे दानशाला हती तिहां सुन्नटपाल नामे राजा राज्य करतो हतो एक दिवसें ब्राह्मणोये यज्ञ मांम्यो एवामां तिहां प्रियग्रंथसूरि पधार्या तेणे वासक्षेप मन्त्रीने श्रावकोना हाथमां आप्यो श्रावकोये जइने, यज्ञमां जिहां ब्राह्मणो होम करवाने सारु बकरो लाव्या हता ते बकरानी उपर वासक्षेप नाख्यो तेना योगे ते बकराना शरीरमां अंबिका देवीये प्रवेश कर्यो तेवारे ते बकरो तिहांथी उडी आकाशमां उन्नो रहीने मनुष्य वाणीये बोलवा लाग्यो के अरे निर्दयी ब्राह्मणो तमे सांजलो के तमे जेम निरपराधि जीवोने निर्दयी थइने मारी नाखो ढो तेम जो हुं पण हमणा निर्दय थइ जाउं तो तमो सवेने मारी नाखुं, जेवी रीते हनुमाने रा क्षसोमां करी देखाड्यु तेम हुं पण तमोने करी देखाडुं परतु महाराथी दयानो गुण दूर थइ शकतो नथी माटे हु तमारी पेठें राक्षसो जेवो निर्दयी थतो नथी तथापि हे पापीयो तमे म

ह्यारी वात सांजलो जे तमे विचारा आवा कोमला कोमला पशुउने हणो छो, ते पशुउने ह णवानुं पाप सांजव्युं छे? जो नही सांजव्युं होय तो हुं तमोने कही सजलावुं छुं ते सांजलो जे पशुने मारीये ते पशुना जेटला रोम होय तेटला हजार वर्ष पर्यंत ते पशुनो मारनारो प्राणी नरकमां पडी दुःख जोगवे छे वली जे कोइ सोनानो मेरुपर्वत बनावीने दानमां आपी दीये अथवा पृथ्वीनुं दान आपे तेटला दानथी पण अधिक फल जे एक प्राणी मरतो होय तेने बचावे ते जीवने मले छे माटे मरता प्राणीने बचाववा जेटलुं फल सोनाना दानथी तथा पृथ्वीना दानथी होय नही केमके बीजा सर्व प्रकारना दान जे छे तेनुं फल तो कालां तरमां खूटी जाय छे, जोगवाइ जाय छे, परतु अजयदाननुं फल केवारे पण खूटे नही, सर्वथी श्रेष्ठ फल ते अजयदाननुंज छे एवा तेना वचन सांजली यज्ञ करनारा निर्दयी ब्राह्मण लोको बोल्या तुं कोण छो? बकरो बोल्यो हुं अग्नि देव छुं, बकरो म्हारो वाहन छे, तमे पशुउने मारो छो तेना योगे महादुःख तमने वेठवा पडशे, माटे तमारा उपर मने दया आवी तेथी उपदेश करवा आव्यो छुं ब्राह्मणो बोल्या अमे धर्म थवाने माटे मारीये छैये, बकरो बोल्यो अरे दुष्टो पशुवध करवाथी वली धर्म ते क्यांथी थवानो छे? एतो महोटुं जबरजस्त पापनुं स्थानक छे जो एनो मुद्दो तमारे पूछवो होय तो, जैनाचार्य श्रीप्रियग्रंथसूरिने पूछो, ते महाकृपापात्र छे माटे तमोने समजावी तमारो निस्तार करशे तेवारे ब्राह्मणो सर्व प्रियग्रंथसूरि पासे पूछवा आव्या, तेमणे दया रूप शुद्ध धर्म बताव्यो ते वखत ब्राह्मणप्रमुख घणा लोको जैनी थया, एवा श्रीप्रियग्रंथसूरि हता एमनाथी मध्यमशाखा निकली ॥ तथा थविर आर्य समित गौतम गोत्रीयाथी ब्रह्मदीपिका शाखा निकली तेनो

संबंध आ प्रमाणे ठे ते कहे ठे आभीर देशमां, अचलपुर नगरनी नजीक एक कन्ना बीजी वेन्ना ए बे नदीयो हती, तेनी वचमा ब्रह्म नामा द्वीप हतो तिहां पांचशे तापस वसता हता तेमां एक तापस पोताना पगमां लेप लगाडी पावडीयो पहेरी हरहमेस वेन्ना नदीना पाणीमांथी उतरतो हतो पण पाणीमां डूबे नही जेवी रीते थल उपर सुका मार्गमां चाल्या जश्ये तेवी रीते पाणीमांथी चालीने गाममां पारणुं करवा आवे तेवारे लोक तेनी प्रशंसा करतां थका बोले जे आ तापसनी जूउ केवी अथाग तपनी शक्ति ठे, एवा भर्ममां घणा लोको मिथ्यात्वी थइ गया अने तापसनी भक्ति करवा लाग्या वली श्रावकोने कहे के जूउ अमारा गुरुनो केवो प्रभाव ठे? एना प्रभावमां कांइ न्यूनता नथी एवा उपदेशथी घणा लोको मिथ्यात्वी थता देखीने श्रावकोये श्रीवज्रस्वामीना मामा श्रीआर्यसमितसूरिने बो लाव्या, सूरि आव्या, तेवारे श्रावकोये पुछ्युं स्वामीजी आ तापसनी केवा प्रकारनी तपशक्ति ठे? आचार्यें कह्यु के तपशक्ति कांइ पण नथी परतु पादलेपशक्ति ठे तेवारे श्रावक लोक सर्व समजी गया, पठी तापसनुं ठिद्र उघाडुं पाडवा माटे ते तापसने श्रावकोये पोताने घेर भोजनने अर्थे निमत्रणा करी तेवारे मिथ्यात्वी लोक घणा खुशी थया अने जाणवा लाग्या जे श्रावको पण हवे आपणा धर्ममां आवी जाशे एवु जाणीने श्रावकोने घेर योगीने लइ गया तिहां श्रावकोये भक्तिना मिसे करीने पावडी उपर तापसना पग धोइ नखाव्या तेवारे योगीना मनमांतो महोटुं दुःख थयु पण शरमनो मार्यो शु करे! नाकारो कहेवाय नही पठी कांइ भोजन कर्युं कांइ नही कर्युं अने तरत तापस तिहांथी उठ्यो तेने श्रावको आदर देइने पाठा तेना स्थानक उपर पोहोचाडवाने साथे चाल्या, मनमांतो एवु समजता हता जे जो

इये केवी मजा थाय ने पण वाहारथी तेने स्थानके पोहोचाडवानु मोल घालीने तेनी साथे वलावा गया सर्व नदीकिनारे आवी ऊना तेवारे तापसे विचार्यु जे थोडोसो लेप हशे तो पण नदी उतरी जइश एम विचारी नदीमा पग दीधो के तरत बुडवा लाग्यो तेवारे लोकोमां निंदा थइ पछी दया लावीने श्रावकोये नदीमांथी खेंची पाछो वाहेर काहाड्यो, नहीकां तणाइ जतो हतो, एटलामा लोकोने प्रतिवोध आपवाने माटे श्रीआर्यसमित सूरि पण तिहां आव्या अने चिपटी वजाडी वोल्या के हे वेन्नाह नदी ! महारे पहेले पार जावु ने माटे मार्ग आप ए टलुं आचार्यना मुखमांथी वचन निकलताज नदीना वेहु काग जेला मली गया तेवारे लोक विस्मय पाम्या पछी आचार्य तथा वीजा नगरना लोको सर्व मली ब्रह्मद्वीप गया तिहा तापसोने धर्मोपदेश आपी प्रतिवोध पमाड्यो तेवारे पांचसें तापसोये दीक्षा लीधी अने चूर्णना प्रयोगथी तापस नदी उपरथी चालतो हतो परतु तपस्यानो प्रनाव न हतो एवी वात सर्व लोकोमा प्रसिद्ध थइ, जैनधर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो पछी संघसहित गुरु पोताने स्थानकें आव्या, तिहा तापस साधुउथी ब्रह्मद्वीपिका नामे शाखा थइ ॥ ॥ हवे थविर आर्यस्थूलिजनी पछी चौद गाथाउनो अर्थ कहीये ठेये ॥ गौतमगोत्रीया फल्गु मित्रने वांदु हुं, वीजा वशिष्टगोत्रीया धनगिरिने वांदु हुं, कांइक शिवनूति कौशिक गोत्रीया डुज्जत अने कृष्णने वांदु ॥ १ ॥ ॥ एमने मस्तके करी वादीने वली नद्र, नक्षत्र अने रक्षित ए त्रणे काश्यप गोत्रीयाने वांदु ॥ २ ॥ ॥ तथा एक आर्य नाग गौतमगोत्रीया, वीजा आर्य जेहिल वासिष्ठगोत्रीया, त्रीजा आर्य विष्णु माढरगोत्रीया अने चोथा आर्य कालक गौतमगोत्रीया ए चारने वांदुं ॥ ३ ॥ ॥ गौतमगोत्रीया कुमारपजिब्रक तथा नद्रक तथा स्थविर आर्यवृद्धि गौतमगोत्रीयाने हुं वांदु हुं ॥ ४ ॥ ॥ ते

मने मस्तकें करी वांदीने वली चारित्र ज्ञान सहित एवा स्थविर सथपालके गोत्रना
वांडुं ॥ ५ ॥ ॥ वली आर्य हस्ति काश्यपगोत्रीया, क्षमावंत समुद्र सरखा धैर्यवंत, जे उ
नालाना पहेला महीनामां एटले चैत्रमहिनाना शुक्लपक्षमां कालगत थया तेमने वांडुं ॥ ६॥
वली नला व्रत शील लब्धिसहित जेमना दीक्षामहोत्सवमां देवतायें आवीने मस्तक उपर
छत्र राख्युं एवा स्थविर आर्यधर्म ते प्रत्ये वांडुं ॥ ७ ॥ ॥ तथा एक हस्ति, बीजा धर्म अने
त्रीजा सिंह ए त्रण काश्यपगोत्रीया मोक्षमार्गना साधक तेमने वांडुं ॥ ८ ॥ ॥ तेमने म
स्तकें करी वांदीने पछी स्थिर छे चारित्र अने ज्ञान जेमना एवा थविर आर्य जंबु गौतमगोत्री
याने वांडुं ॥ ए ॥ ॥ तथा जे कोमल हृदयवाला अने मानरहित तेमज घणुंज उंचुं उ
त्तम छे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र जेमनुं एवा नंदिक पिता काश्यपगोत्रीयाने वांडुं ॥ १० ॥
तथा स्थिर छे चारित्र जेमनुं वली उत्तम सम्यक्त्व अने सत्व तेणे करी सहित एवा देसि गणि
क्षमाश्रमण माढरगोत्रीयाने वांडुं ॥ ११॥ ॥ तेवार पछी वली जे अनुयोगना धारक, सागर
जेवा धैर्यवान् गंभीर, महा सत्ववंत एवा थविर उत्तम क्षमाश्रमण वत्सगोत्रीयाने वांडुं
॥ १२ ॥ ॥ पछी वली जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप तेमां थिर थयेला, महागुणवान्
एवा थविर कुमार धर्मगणी गुणवानने वांडुं ॥१३॥ ॥ वली सूत्र अने अर्थ रूप रत्ने करी
नरेला अने क्षमामार्दवादिगुणसंपन्न, जेणे सर्व सूत्र पुस्तकारूढ कर्या एवा देवर्द्धिगणिक्ष
माश्रमण काश्यपगोत्रीयाने वांडुं ॥ १४ ॥ ॥ इति स्थविरावली सूत्रार्थः ॥ ॥ हवे यद्यपि
इहां आ स्थविरावलीमां श्रीआर्यरक्षित प्रमुखना नाम कह्या नथी तथापि ए पण स्थविर
सरखाज थया छे तेमनो संबंध लखीयें छैयें. ॥ ॥ दशपुर नाम नगरमां, सोमदेव पुरोहित

इये केवी मजा थाय छे पण बाहारथी तेने स्थानकें पोहोचाडवानु मोल घालीने तेनी साथे वलावा गया सर्व नदीकिनारे आवी उन्ना तेवारे तापसे विचार्यु जे थोडोसो लेप हशे तो पण नदी उतरी जइश एम विचारी नदीमा पग दीधो के तरत डुबवा लाग्यो तेवारे लोकोमां निंदा थइ पछी दया लावीने श्रावकोये नदीमांथी खेंची पाछो बाहेर काढ्यो, नदीका तणाइ जतो हतो, एटलामा लोकोने प्रतिबोध आपवाने माटे श्रीआर्यसमित सूरि पण तिहां आव्या अने चिपटी वजाडी बोल्या के हे बेन्नाह् नदी ! महारे पहेले पार जावु छे माटे मार्ग आप ए टलुं आचार्यना मुखमांथी वचन निकलताज नदीना बेहु काठ जेला मली गया तेवारे लोक विस्मय पाम्या पछी आचार्य तथा बीजा नगरना लोको सर्व मली ब्रह्मद्वीप गया तिहां तापसोने धर्मोपदेश आपी प्रतिबोध पमाड्यो तेवारे पांचसे तापसोये दीक्षा लीधी अने चूर्णना प्रयोगथी तापस नदी उपरथी चालतो हतो परतु तपस्यानो प्रनाव न हतो एवी वात सर्व लोकोमा प्रसिद्ध थइ, जैनधर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो पछी संघसहित गुरु पोताने स्थानके आव्या, तिहां तापस साधुउंथी ब्रह्मद्वीपिका नामे शाखा थइ ॥ ॥ हवे थविर आर्यस्थफिलनी पछी चौद गाथाउंनो अर्थ कहीये छैये ॥ गौतमगोत्रीया फल्गु मित्रने वांडु छु,बीजा वशिष्ठगोत्रीया धनगिरिने वाडु छुं, काश्क शिवनूति कौशिक गोत्रीया उज्जत अने कृष्णने वाडु ॥ १ ॥ ॥ एमने मस्तकं करी वांदीने वली नइ, नक्षत्र अने रक्षित ए त्रणे काश्यप गोत्रीयाने वांडुं॥ २ ॥ ॥ तथा एक आर्य नाग गौतमगोत्रीया, बीजा आर्य जेहिल वासिष्ठगोत्रीया, त्रीजा आर्य विष्णु माढरगोत्रीया अने चोथा आर्य कालक गौतमगोत्रीया ए चारने वांडु ॥ ३ ॥ ॥ गौतमगोत्रीया कुमरसपलिअक तथा नइरु तथा स्थविर आर्यवृद्धि गौतमगोत्रीयाने हु वांडु छु ॥ ४ ॥ ॥ ते

मने मस्तकें करी वांदीने वली चारित्र ज्ञान सहित एवा स्थविर संघपालक गौतमगोत्रीयाने वांडुं छुं ॥ ५ ॥ ॥ वली आर्य हस्ति काश्यपगोत्रीया, क्षमावत समुद्र सरखा धैर्यवत, जे उनालाना पहेला महीनामां एटले चैत्रमहिनाना शुक्लपक्षमां कालगत थया तेमने वांडु ॥ ६॥ वली नला व्रत शील लब्धिसहित जेमना दीक्षामहोत्सवमां देवताये आवीने मस्तक उपर छत्र राख्यु एवा स्थविर आर्यधर्म ते प्रत्ये वांडु ॥ ७ ॥ ॥ तथा एक हस्ति, बीजा धर्म अने त्रीजा सिंह ए त्रण काश्यपगोत्रीया मोक्षमार्गना साधक तेमने वांडुं ॥ ८ ॥ ॥ तेमने मस्तके करी वांदीने पछी स्थिर छे चारित्र अने ज्ञान जेमना एवा थविर आर्य जबु गौतमगोत्रीयाने वांडु ॥ ९ ॥ ॥ तथा जे कोमल हृदयवाला अने मानरहित तेमज घणुज उंचु उत्तम छे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र जेमनु एवा नंदिक पिता काश्यपगोत्रीयाने वांडु ॥ १० ॥ तथा स्थिर छे चारित्र जेमनुं वली उत्तम सम्यक्त्व अने सत्व तेणे करी सहित एवा देसि गणि क्षमाश्रमण माढरगोत्रीयाने वाडुं ॥ ११॥ ॥ तेवार पछी वली जे अनुयोगना धारक, सागर जेवा धैर्यवान् गंभीर, महा सत्ववत एवा थविर उत्तम क्षमाश्रमण वत्सगोत्रीयाने वांडुं ॥ १२ ॥ ॥ पछी वली जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप तेमां थिर थयेला, महागुणवान् एवा थविर कुमार धर्मगणी गुणवानने वांडुं ॥१३॥ ॥ वली सूत्र अने अर्थ रूप रत्नेकरी भरेला अने क्षमामार्दवादिगुणसंपन्न, जेणे सर्व सूत्र पुस्तकारूढ कर्या एवा देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण काश्यपगोत्रीयाने वाडु ॥ १४ ॥ ॥ इति स्थविरावली सूत्रार्थ ॥ ॥ हवे यद्यपि इहां आ स्थविरावलीमां श्रीआर्यरक्षित प्रमुखना नाम कह्या नथी तथापि ए पण स्थविर सरखाज थया छे तेमनो संबंध लखीये छैये ॥ ॥ दशपुर नाम नगरमां, सोमदेव पुरोहित

तेनी रुद्रा नामे भार्या तेमना पुत्र आर्यरक्षितजी परदेश गया, तिहांथी चौदे विद्या भणीने आव्या तेमने राजाये हाथी उपर बेसाडी, महोत्सवसहित नगरमां प्रवेश कराव्यो इहां सर्व सज्जन कुटुंब मित्रादिक आवीने मल्या परंतु एमनी माता मली नही माताने पगे लाग्या तो पण माता खुसी थइ नही तेवारे आर्यरक्षितजीये पूछ्युं माताजी तमे आमणा डुमणा देखाउ छो पण कांइ हर्ष आनंद दर्शावता नथी तेनुं कारण म्हारा उपर कृपा करीने प्रकाश करो' ते सांभली माताजी बोल्या हे पुत्र तुं जे विद्या शीखी आव्यो छो ते सर्व नरकपतननी विद्याउ छे कारण के तुं घणा होमादिक लौकिक कृत्य करवानां शास्त्र भणी आव्यो छो ते हुं जैनी छुं माटे ए दुर्गतिना देवावालाने केवी रीते रुडा करी मानुं! हुतो जेथकी ताहारा आत्मानुं कल्याण थाय एवां शास्त्र तुं भण्यो होय तो सुबुद्धिमान् करी मानुं ते सांभलीने पुत्र बोल्यो हे माताजी आत्माने तारनार कयां शास्त्र छे? ते मने कहो तो हुं तेनो पण अभ्यास करुं माताये कह्युं के दृष्टिवाद भणो तेवारे आर्यरक्षितजीये जाण्युं जे सर्व मतनां शास्त्र भणवा योग्य छे माटे म्हारे ए शास्त्र पण भणवुं पछी रात्रीये माताजीने पूछ्युं हुं दृष्टिवाद क्यां भणवा जाउं माताये कह्युं तोसली पुत्राचार्यनी पासे जइ ए शास्त्र भणो हवे आर्य रक्षितजीये म्होटे परोढीये उठीने भणवा माटे प्रयाण कर्युं केटलुंक दूर गयो के पोताना पितानो मित्र एक ब्राह्मण शेलडीना साठा हाथमां लइने आवतो हतो ते साहामो मल्यो तेणे पूछ्युं तुं कोण छो? एणे कह्युं हुं आर्यरक्षित छुं तेवारे तेणे कह्युं के हुतो तने परदेशथी आव्यो सांभलीने मलवा सारु आव्यो छुं अने आ शेलडीना साठा पण ताहारे वास्ते लाव्यो छुं ते सांभली आर्यरक्षिते सेलडीना साठा गणी जोया तो

साडा नव सख्याय थया तवारे विचार्यु जे हुं दृष्टिवादना साडा नव भाग भणीश एवु चि
तवी ते ब्राह्मणने कह्यु के तमे म्हारी माता पासे जाउ हुं आवु छुं वली तमे माताजीने कहेजो के आर्यरक्षित मने मल्या हता एवु कहीने आगल चाल्यो अने पहेला ब्राह्मणे पण एमनी माता पासे जइ शेलडी आपीने कह्यु के तमारो पुत्र आर्यरक्षित मने रस्तामां मल्यो ते सांभली माताये जाण्यु जे म्हारा पुत्रने शुकन तो सारा थया ए साडा नव पूर्व भणशे एवु मनमां जाणी लीधु हवे आर्यरक्षित जिहां शिष्य पाठ करे छे तिहां गया अने विचारवा लाग्या जे एमने केवी रीते वदना करु एवु चितवीने उपासरानी बाहेर वेठा एटलामां ढड्ढर नामे कोइ श्रावकें, निसिहि कही उपासरामां जइने उंचे स्वरे वांदणा देवानी जे इरियावहि प्रमुख किरिया छे ते कही वदना करी ते विधि सर्व आर्यरक्षित सीखी गया पछी गुरु पासे आवी तेवाज विधिथी गुरुने वांदीने विनयपूर्वक आगल वेठा गुरुये जाण्युं जे आ कोइ नवो श्रावक छे पण वांदवानो विधि तो बरावर जाणे छे पछी ढड्ढर श्रावकने गुरुये पुछ्युं तेवारे ढड्ढरे उ त्तर्यो जे आ गुरुनो भाणेज छे पछी गुरुने कह्यु आ तो आर्यरक्षित आपनो भाणेज छे. तेने गुरुये धर्मोपदेश आप्यो तेवारे आर्यरक्षिते कह्यु मने दीक्षा आपो म्हारी मातायें तो दृष्टिवाद भणवानी आज्ञा आपी छे तेवारे गुरुयें लोकोना भयथी अन्यस्थानके जइने दीक्षा दीधी पछी पोतानी पासे जेटली विद्याउ हती ते तो सर्वे गुरुये भणावी वली अ धिक पूर्व भणाववानें माटे श्रीवज्रस्वामीनी पासे मोकल्यो तिहां जातां रस्तामां उज्जयणी नगरी आवी तिहां भद्रगुप्तसूरि मल्या ते खुशी थया. अने बोल्या के ते सारु काम कर्युं पण हवे मने हाल अनशन करवु छे माटे तुं अनशनने सहाय आपीने पछी जाजे एवां

गुरुनां वचन सांजली तिहां अनशनमां सहायी थयो, जद्रगुप्त सूरिये कह्यु के तु वज्रस्वामीनी पासे जणजे पण तेमनी सघाते रात्रे जेलो रहीश नही जुदा उपासरामा रात्रे रहेजे, केमके जे श्रीवज्रस्वामीनी साथे एक रात्रीज रहे ते जो सोपक्रमी आउखावालो होय तो पण वज्रस्वामीनी साथेज मरण पामे ए वात सांजलीने तहत्ति करी संथारो करावीने श्रीवज्रस्वामीना पासे आव्यो रात्रे नगरने बाहेर रह्यो अने तेज रात्रीये श्रीवज्रस्वामीने सुपनुं आव्यु जे महारी पासे पात्रमा दूध जरेलु हतु ते कोइ प्राहुणो आवीने पी गयो स्वल्पमात्र शेष रह्यु एवामां प्रजातना श्रीआर्यरक्षितजी पण तेमनी पासे आव्या तेमने वज्रस्वामीये पुछ्यु तु किहांथी आव्यो? तेवारे सर्व हकीगत कहीने कह्यु के हु बीजा उपासरामां रहीने आपनी पासे जणीश वज्रस्वामीये पूछ्यु महारी पासे जणवु ने बीजा उपासरामा रहेवु एम तने शामाटे करवु पडे छे? तेवारे जद्रगुप्ताचार्यें कहेलु वृत्तांत तेमने सजलाव्युं ते सांजली वज्रस्वामीये उपयोग आपीने जाण्यु जे आ वात सत्य छे, महापुरुषना वचन प्रमाण छे हवे श्रीआर्यरक्षितजीये नवपूर्व शास्त्र तो सपूर्ण मुख पाठे करी लीधो अने दशमो पूर्व जणे छे, एटलामां माता पिताउने घणा दिवस पर्यंत श्रीआर्यरक्षितनु कोइ पण समाचार न मलवाथी मातापिताये आर्यरक्षितनो न्हानो जाइ फल्गुरक्षित छे तेने बोलावीने आर्यरक्षितनी पासे मोकल्यो तेणे आवी कह्यु के तमे माता पितानी पासे चालो आर्यरक्षिते कह्यु के चालीने शु करु? तेणे कह्यु धर्मोपदेश आपो, केमके तेमने दीक्षा लेवानी इछा थइ छे तेने आर्यरक्षिते कह्यु तुतो दीक्षा लइ ले फल्गुरक्षितें कह्यु हुं दीक्षा लेइ लेउ छु अने तमे तिहा चालो तेवारे फल्गुने दीक्षा आपीने गुरुने पूछ्यु हवे दशमो पूर्व केटलो शेष महारे जण

वानो रह्यो छे? गुरुये कह्यु हजी घणो छे तुं उद्यम कर तेवारे तिहांज रही जणवानो उद्यम कर्यो वली केटलाएक दिवस पछी मातापितानी पासे जवानु मनमां घणुं उमंग थयो तेवारे फरीथी गुरुने पुछ्युं महाराज दशमो पूर्व हजी केटलो शेष रह्यो छे! गुरुये कह्यु दशमा पूर्वनुं बिंदुमात्र तो तु शीख्यो अने समुद्र जेटलो शेष जणवो रह्यो छे पण उद्यम कर तेवारे वली पण जणवानो उद्यम करवा मांड्यो पण चित्त बराबर लागे नही, तेवारे कह्यु हवे तो हुं जइश त्यारे वज्रस्वामीयें जाण्यु जे एटलो पूर्वलो पूर्वनो नाग हवे शेष रहेशे, बाकी विछेद थइ जाशे, कारणके हमणा बीजो कोइ एटला पूर्वनो जणनार छे नही, एवो मनमां विचार करीने श्री आर्यरक्षितने मावित्रो पासे जवानी रजा आपी तेवारे बेहु नाइउ दशपुर नगरे आव्या, तेमने राजाये महोटा महोत्सवसहित गाममा प्रवेश कराव्यो पछी मातापिता प्रमुख सर्व कुटुबने धर्मोपदेश देइ सर्वने दीक्षा आपी, एक पिताये दीक्षा लीधी नही ते कुटुंबना मोहने लीधे तेमनी पासेज रहे पण दीक्षा लीए नही तेवारे आर्यरक्षितजीये कह्यु तमे दीक्षा शामाटे लेता नथी? पिताये कह्यु के मने एकतो म होटुं धोतीयुं, बीजी जनोइ, त्रीजुं छत्र, चोथा पगरखा अने पाचमुं कमंडल ए पांच वस्तु विना चाले नही जो ए पांच वाना विना चालु तो मने लज्जा थाय तेवारे गुरुये पांच वाना वापरवानी छूट आपीने पण दीक्षा दीधी पछी गुरुये जाण्यु जे आ वृद्धने तो जरुर तारवो ज जोइये एवो निश्चय करी छोकराउने शीखावी मुक्यु जे, अमे जेवारे चैत्यना दर्शन करवा जइये तेवारे तमे सर्वे साधुउने वदना करजो, पण एक ए वृद्ध साधुने वांदशो नही, जेवारे तमोने कहे के अमने का वांदता नथी? तेवारे तमे कहेजो के तमे साधु केम कहेवाउ?

तमे तो छत्र राखो छो पछी छोकराउए तेमज कह्यु तेवारे वृद्धे कह्यु के हे वत्सो ! साधु छत्र नही राखे तो महारे पण नही राखवु एम कही छत्र नाखी दीधु एमज जनोइ, पावडी अने कमंडल सर्वनो त्याग करी दीधो पण कह्यु के धोतीयु तो महाराथी मूकाशे नही तेवारे आर्यरक्षितजी बोल्या एमज रहेवा आपो जजे धोत्यु पहेरेलु छे एटलामां एकदिवस एक साधुये अनशन करीने काल कर्यो तेवारे आर्यरक्षितजीये बीजा साधुउने शीखावी मुक्यु के तमे माहोमांहे विवाद करजो पण साधुने परठवा माटे उपाडशो नही एवु शीखवीने पछी बोल्या के आ साधुना शरीरने जे परठवी आवे तेने महालाभ थाय तेवारे साधुउ माहोमाहे बोलवा लाग्या तेमा एके कह्यु हु लइजाउ, बीजाये कह्यु हु लइजाउ तेमने देखीने सोमदेव वृद्धसाधु बोल्या जे शु ए कार्य करवामा घणी निर्जरा थाय छे ? गुरु बोल्या हा घणी निर्जरा थाय छे तेवारे वृद्ध साधु बोल्या के ए काम हुज करीश गुरुये कह्यु इहा उपसर्ग घणा छे माटे उपसर्ग सहन करवानी शक्ति होय तो ए काम करवु नहीकां अरिष्ट थइ जाय तेवारे वृद्ध साधु बोल्या हा, हु सर्व उपसर्ग सहन करीश, एम कही ते अनशनी साधुना शरीरने उपाडीने लइ चाल्यो, तिहां आचार्यें श्रावकोना छोकराउने शीखवी मुक्यु, तेथी छोकराये हाको करी पाछल पडीने वृद्धनु धोतीयु खोसी लीधुं तेवारे वृद्धे जाण्यु जे उपसर्ग तो छे पछी आचार्य सर्व परिवार लइने वृद्धनी पाछल गया, तेने देखीने वृद्ध लज्जा पाम्यो गुरु बोल्या महोटो उपसर्ग थयो, हवे बीजो चोलपट्टो लावो तिहां साधुउ बोल्या, महोटो चोलपट्ट तो जइने लइ आवो तो थाय, वृद्धे कह्यु चोलपट्टोज आपो लाजतो गइ हवे शु छे ! ! एम करी चोलपट्टो पहेराव्यो हवे ते वृद्ध गोचरी करवा जाय नही तेवारे गुरुये साधुउने

कही मुक्युं के तमे गोचरी लावी आपशो नही, ए वृद्ध पोते जइ लइ आवशे एवु कहीने गुरु अन्य गामे चाल्या गया. पछलथी साधुओए पोतपोतानो आहार लइ आवीने जमी लीधो अने वृद्ध तो भूख्यो बेठो रह्यो बीजे दिवसे गुरु आव्या तेमणे साधुओने कह्यु केम रे वृद्ध साधुने आहार शा वास्ते नही लइ आप्यु ? एवीरीते कृत्रिम कोप कर्यो तेवारे साधुओ बोल्या ए वृद्ध पोते गोचरी केम जाता नथी! पछी गुरु पोते गोचरी जवा लाग्या वृद्ध जाण्यु जे आतो गुरुनो अविनय थाय छे एवु चितवीने वृद्ध पोतेज गोचरी गयो तिहां एक शेठने घेर खरा दरवाजाने तो जाण्युं नही अने पाछलना बारणाथी तेना घेरमां घुसवा लाग्यो, तेवारे घरना माणसो बोल्यां, साहामा बारणामांथी आवो एवु सांभली वृद्ध साधु बोल्या अरे लक्ष्मी छे ते तो मरजीमां आवे ते तरफथी आवे जे तरफथी आवे ते तरफथी सारी जाणवी, एनो कांइ विचार राखवो नही तेवारे शेठे खुशी थइने बत्रीश लाडु वहोराव्या ते लइने वृद्ध साधुये आवी गुरुने देखाड्या ते जोइ गुरुये विचार कर्यो जे बत्रीश शिष्य महारा थाशे, वृद्ध बोल्यो पहेलो लाभ थयो ते सर्व साधुओने देवो जोइये, एम विचारी सर्व मोदक साधुओने आपी दीधा फरी गोचरीये जइने खीरनु भोजन लइ आवी पोते पारणुं कर्युं एम ए वृद्धसाधु भिक्षामां लब्धिवंत थयो, ज्यां जाय त्यां जो ते दातार महालोभी होय तोपण उत्तम भोजन एने वहोरावे एम अनुक्रमे ते वृद्धसाधु गछनो आधारभूत थयो ए श्री आर्यरक्षितजीना गछमां त्रण साधु लब्धिवंत थया तेना नाम कहे छे. एक डुर्बलिका पुष्पमित्र, बीजो घृतपुष्प मित्र अने त्रीजो वस्त्रपुष्पमित्र तथा चार साधुओ महापंडित थया तेना नाम कहे छे एक डुर्बलिका पुष्पमित्र, बीजो वृद्ध, त्रीजो फल्गुरक्षित अने चोथो गोष्टामाहिल ए चार

जाणवा हवे एक दिवसे इंद्रमहाराजे सीमंधरस्वामीने निगोद विचार पूछ्यो नगवाने वर्णन करी सनलाव्यु तेवारे इंद्रे पूछ्यु नरतक्षेत्रमा कोइ एवो विचार कहेवावालो हालमा छे? नगवाने कह्यु आर्यरक्षित सूरि छे पछी इंद्रमहाराज वृद्धरूप करी आर्यरक्षितजी पासे आवीने पूछवा लाग्यो के हे महाराज? महारु आयुष्य हजी केटलुं छे? तेवारे गुरुये श्रुतउपयोगथी कह्यु के तु पहेला देवलोकनो इंद्र छो पछी निगोदना सूक्ष्म विचार पूछ्या गुरुये ते सर्व खुलासापूर्वक कह्या तेवारे इंद्रमहाराज गुरुनी स्तवना करी उपासरानु द्वार फेरवीने चाल्या गया, शिष्यने खबर पडी जे इंद्र आव्यो हतो हवे वली आर्यरक्षित सूरिये बुद्धिनी हानी थती देखीने सूत्रोना जूदा जूदा चार अनुयोगद्वार, कर्या एवा ए आर्यरक्षित स्थविर थया॥ हवे ए प्रमाणे विद्याधरगछीय वृद्धवादीना शिष्य सिद्धसेन दिवाकर थया तेनो सबंध आ प्रमाणे छे के एक साधु वृद्धपणामां महोटा स्वरथी नणतो हतो तेने देखीने राजायें कह्यु के तुं शु मूसलो फुलावीश? जे एटलो उतावलो गोखे छे! तेवारे तेणे सरस्वतीने बोलावी विद्या पामीने चोवटा माहे मूसलो उनो करी राजासहित सर्वलोकोने देखतां फुल्लवित काव्य कह्यु तेथी मूसलो फूल्यो ते जोइ सर्व राजा प्रमुख चमत्कार पाम्या एवो वृद्धवादि थयो तेमणे सिद्धसेन ब्राह्मणने प्रतिबोध्यो अने ते सिद्धसेने वली विक्रमादित्यराजाने प्रतिबोध आप्यो, श्रीशत्रुंजयनो संघ चलाव्यो, तेना सघमां एकशोने सीतेर शोनाना देवल चालता वली शत्रुंजानो उद्धार कराव्यो तथा श्रीसिद्धसेन सूरिना सहायथी विक्रमादित्य राजायें सवत् चलाव्यो,आगल श्रीवीरनगवाननो संवत् हतो,ए वृद्धवादी अने सिद्धसेन ए पण बेहु थविर थया॥ ॥तथा वली त्रण कालिकाचार्य थया छे तेमां एकतो श्रीवीरनगवानथी त्रणशोने छहोतेर वर्षे थया तेमणे श्रीपन्नवणा सूत्र बनाव्यु

जेणे सौधर्मेंद्रने निगोदनो विचार कह्यो, कोइक आचार्य कहे छे के गाथा देखवाथी ए कालिकाचार्य वीर संवत्थी त्रणशेने वीश वर्षे थया छे, कोइ कहे छे त्रणशो पचीश वर्षे थया छे, कोइ कहे छे के चोथनी संवत्सरी थापवावाला पण एज कालिकाचार्य छे एमां खरुं खोटुं केवली जगवान् जाणे ग्रंथोमां तो सवत्नो फेर छे वली बीजा कालिकाचार्य तो पूर्वे कालिकाचार्य कह्या तेमना मांमां थाय अने त्रीजा कालिकाचार्य तो श्रीवीरजगवान् मोक्ष गया पछी ९९३ मे वर्षे अने विक्रमादित्यना सवत् ५२३ मे वर्षे जेणे चोथनी सवत्सरी करी ते छे तेमां वली कोइकोइ चूर्णिकार, एवीरीते लखे छे के केटलाएक कालिकाचार्यना शिष्योये चोथनी सवत्सरी मान्य करी, अने केटलाएक श्रीसुधर्मस्वामीना शिष्योए पांचमनी संवत्सरी मानी तत्त्व केवली जाणे. ए विवादमां तत नथी खबर विना जोर लगाववु मुनासेव नथी इति रहस्य ॥ ॥ वली हरिजद्र सूरि पण त्रण थया छे तेमां एकतो हरिजद्र नामा ब्राह्मण हतो ते व्याकरणादि जण्या पछी प्रतिज्ञा करीके जेनो अर्थ हुं समजी शकुं नही ते पदनो अर्थ जे कही आपे तेनो हु शिष्य थाउं पछी एक दिवस साध्वीउ गाथा जणे छे ते आवीरीते ॥ चक्किडग हरि पणगं, पणग चक्कीण केसवो चक्की ॥ इत्यादि ए गाथानो अर्थ ए ब्राह्मणथी थइ शक्यो नही तेवारे जाण्युं जे हुं हार्यो पछी साध्वीने अर्थ पुछयो तेवारे साध्वीये कह्युं गुरुने पुछो गुरु पासेथी गाथानो अर्थ सांजली प्रतिज्ञा पालवा सारु दीक्षा लीधी, आचार्यपद पाम्यो ते आचार्ये विक्रमसंवत्ना ५८५ में वर्षे आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख ग्रंथोनी टीकाउ करी तथा एमना एक हंस अने बीजा परमहंस एवा नामे बे शिष्य बौधलोकोनुं मत जाणवा माटे बौधोनी पासें जणवा गया हता तिहां बौधोयें जाण्युं के ए बे जैनी जेवा देखाय छे तेवारें परीक्षा करवा माटे दादराना पग

थीयाउ उपर जैनप्रतिमा मूकी दीधी, तेनी उपर पग आपीने बौधना शिष्यो तो सर्व उतरी गया परंतु हंस अने परमहंस जैनप्रतिमा देखीने प्रतिमाना हृदयमां खडीनी जनोइ करी उतर्या तेवारे बौधोये जाण्युं जे आ निश्चये जैनीउ छे अने शिष्योने पण खबर पडी के ए आपणने जाणी गया छे तेवारे मरणना जयथी ते बे जण पोतपोतानी जणवाना पोथीयो हाथमां लइने पोताने देश चालता थया बौधोये राजाना सीपाइयो ते बे शिष्योने मारवा माटे मो कल्या तेणे जइ प्रथम तो हंसने मारी नाख्यो अने परमहंस नागी गयो परंतु चितोड गढना कोट पासे तेने पण मारी नाख्यो पछी राजाना सुजटो राजापासे गया हरिजद्रसूरि ए वात सांजलीने महा कोपायमान थया थका मंत्रना बलेकरी एक तेलनी कढाइ उका लीने पछी मंत्र जपता जाय अने एकेक कांकरी कढाइमा नाखता जाय जे वखत कांकरी नाखे ते वखत मंत्रना प्रजावथी बौधनो एक तपस्वी ते कढाइमां पडी जस्म थइ जाय एम करी १४४४ बौधोने हण्या तेवारे एक श्रावक गाथा बोल्यो ॥ जइजलइजलउलोए ॥ एटलुं सांजलतांज क्रोध उतरी गयो वली केटलाएक ग्रंथोमा एम लख्युं छे के याकनी महत्तरा साध्वीये एक श्राविकाने लावीने गुरुने कह्युं के एणे पचेंडी जीवनो वध कर्यो छे तेनो दंड शुं आपो छो? तेवारे गुरु बोल्या पंच कल्याणानो दंड आपीये छेये ते वखत साध्वी बोली महाराज! एक पचेंडीना वधनो एटलो महोटो दंड अपाय छे? एवुं आप जाणो छो तो आ बौधोने केम मारो छो? तेवारे गुरुनो क्रोध उतरी गयो पछी प्रायश्चित्त शोधवाने माटे चौदशे ने चुमालीश पंचाशक प्रमुख प्रकरण बनाव्यां ए प्रथम हरिजद्र सूरिनी संक्षेप कथा कही ॥ ॥ १ ॥ ॥ वली बीजा हरिजद्रसूरि विक्रमसंवत्ना ए६२ मां वर्षमा थया तेमना शिष्य

सिद्धर्षिगणी हता ते बौधोनी पासे एकवीश वार गया अने आव्या तेमणे बौधोने प्रतिबोधवा माटे ललितविस्तरा शक्रस्तवनी वृत्ति बनावी ए बीजा हरिजद्र सूरिनी सामान्य कथा कही ॥ हवे त्रीजा हरिजद्रसूरि विक्रम सवत्ना बारसेना सैकामां थया तेमणे बनावेला मुनिप्रति चरित्र आदिक ग्रथो आजे प्रसिद्ध छे ए त्रीजा हरिजद्रसूरि थया तथा वली श्रीजिनजद्र गणिक्षमाश्रमणप्रमुख घणा आचार्यो स्थविर थइ गया छे, तेमणे विशेषावश्यकनुं जाष्य बनाव्युं छे तेमज बीजा वली श्रीशीलंगाचार्य, अजय देवसूरि अने मलयगिरिप्रमुख टीका उना करवावाला थया छे ए सर्व स्थविरो जाणवा इति स्थविरावली शेषसबंध सपूर्ण ॥ हवे अगवीश प्रकारनी साधु समाचारी लखीये छैये ॥ ते काळने विषे, ते समयने विषे, श्रमण जगवत श्रीमहावीर स्वामी आषाढ शुदि पूर्णिमाथी लइने एक महीनो अने वीश दिवस वरसादना गये थकें पजोसण करे एवो नियम छे इहां शिष्य पुछे छे के चोमासाना पचाश दिवस गया पछी पजोसण केम करे ॥ १ ॥ तेने गुरु कहे छे हे शिष्य! गृहस्थ श्रावको पोताना घरने खडी प्रमुखथी धोइ उपर छाया करी, घगारे, मगारे, धूप आपे, परनाल प्रमुख पाणीना मार्ग काहाडे इत्यादिक सर्व काम गृहस्थे पोताने माटे कर्या होय अने पोते वापरी फासु करी मूक्या होय, ते कारण माटे हे शिष्य! वर्षादना पचाश दिवस गया थकां पंजोसण करे अने कदाचित् जो साधु पहेलाथीज कहे के हुं चोमासुं रहीश, तो ते गृहस्थ साधुनुं निमित्त करीने घर प्रमुखनो आरम्भ करे ते माटे पचाश दिन गया पछी साधु कहे के अमे चोमासुं आंही करीशुं एम कहे ॥ २ ॥ ॥ एवी रीते जो जगवान् पोते पचाश दिन गये थके पजोसण करे तो तेमना गणधर पण पचाश दिन गये थके पजोसण करे ॥

॥ ३ ॥ ॥ अने जो गणधर पण पचाश दिन गया केडे पजोसण करे तो गणधरोना शिष्यो पण वर्षादना पचाश दिवस गये थके पंजोसण करे ॥ ४ ॥ ॥ जो गणधरोना शिष्यो पचाश दिन गये पंजोसण करे तो थविर पण वर्षादना पचाश दिवस गये पजोसण करे ॥५॥ ॥ जो थविरो, वर्षादना पचाश दिवस गये पजोसण करे तो जे आजना समयमां श्रमण निर्ग्रंथ विचरे ते पण पचाश दिन गये पजोसण करे ॥ ६ ॥ ॥ जो आज वर्त्तमान श्रमण निर्ग्रंथ वर्षादना पचाश दिवस गये थके पजोसण करे तो अमारा आचार्य उपाध्याय पण पचाश दिवस गये पजोसण करे ॥ ७ ॥ ॥ जो अमारा आचार्य उपाध्याय पचाश दिवस गये पजोसण करे तो अमे पण वर्षादना पचाश दिवस गये पजोसण करीये ठेये इहां अपवाद कहे ठे के नादरवा शुदि पाचमना एक दिवस आगल अर्थात् नादरवा शुदि चोथने दिवसे पजोसण करवु कल्पे परतु नादरवा शुदि पाचमीने उलघवी कल्पे नही एटले एकावन्नमे दिवसे सवछरी करवी कल्पे नही परतु उगण पचाशमे दिवसे कारणे करवी कल्पे माटे कारणे चोथनी सवत्सरी करवी कल्पे पण ठठनी सवत्सरी तो अपवादे पण करवी न कल्पे ॥ ८ ॥ ए आठ आलावे करी पजोसण करवा आश्रयी प्रथम समाचारी जाणवी ॥ १ ॥ ॥ हवे वर्षाकालमां चोमासुं रहेला साधु अने साध्वी तेमने पांच कोशनो चोफेरे अवग्रह राखवो पण अवग्रहथी वारणे हाथ सुके तिहा सुधी पण उत्तुं रहेवु नही ॥ ९ ॥ साधु साध्वीने वर्षादे चोमासामा गोचरीने माटे पाच कोश जावु आववु कल्पे ॥ १० ॥ ए जावा आववानी बीजी समाचारी जाणवी ॥२॥ जिहा विचाले नित्य नदी वहेती रहेती होय तिहां नदी उतरीने पांचकोश लगण पण जावु आववु कल्पे नही ॥ ११ ॥ अने कुणाला नग

रीनी पासे ऐरावती नदी ठे ते नित्य वहेती रहे ठे पण तेनो पाट घणो पहोळो ठे,पाणी स्वल्प ठे, माटे एक पग जळमां अने एक पग उंचो आकासे थळमां राखतो उतरे तो चोफेर पाच कोश जावु आववु कल्पे ॥ १२ ॥ एवी नदी न होय तो न कल्पे ॥ १३ ॥ ए नदी उतरवानी त्रीजी समाचारी जाणवी ॥३॥ ॥ हवे वर्षादमा रहेला साधु अने साध्वीने गुरुये कह्यु होय के जो साधुउ तमे गिलाणने आहार आणी आपजो तो तेने माटे आहार लावी देवो कल्पे परतु पोतानी मतिये गिलानने माटे आहार लावी देवु कल्पे नही ॥ १४ ॥ ॥ अने जो गुरुये कह्यु होय के तु तहारे माटेज लइ आव, तो पोताने माटेज लइ आववु कल्पे पण बीजाने आपवु न कल्पे ॥ १५ ॥ ॥ वळी गुरुये कह्यु होय के तु गिलाणने आहार लावी आपजे अने तुं पण खाजे, तो लाववु अने देवु बेहु कल्पे ॥ १६ ॥ ॥ ए साधुउने परस्पर देवा लेवानी चोथी समाचारी जाणवी ॥ ४ ॥ ॥ हवे चोमासे पजोसण करी रहेला साधु साध्वीने नव विगय लेवी कल्पे नही तेना नाम कहे ठे १ दूध, २ दहि, ३ माखण, ४ घृत, ५ तेल, ६ गोल, ७ सहत, ८ मदिरा अने ९ मांस ए नव विगय ठे तेमां मदिरा, मांस, माखण अने सहत ए चार विगय तो सर्व साधुउने प्रथमथीज सर्वप्रकारे वर्जेली होय ठे माटे ते मूकीने बाकीनी पाच विगय जे ठे ते बलवान् रोगरहित शरीरवाळाने, लेवी कल्पे नही अने कारणे लेवी पडे तो लेवाय पण पंजोसणमां लेवी नही ॥ १७ ॥ ए विगय निषेध नामे पांचमी समाचारी जाणवी ॥ ५ ॥ ॥ चोमासुं रहेला साधु साध्वी जे होय तेने कोइ गिलाण कहे के माहारा माटे अमुक चीज गृहस्थना घरथी लइ आवजो तेवारे ते लाववावाळो साधु गुरुने पुठे हे स्वामी गिलाण साधु अमुक चीज मगावे ठे ते

लइ आवु ? गुरु कहे केटलीक मगावे छे ? तेवारे गिलाणने पूछे अने गिलाण कहे के आटली चीज जोइये छेये पछी वली गुरुने कहे स्वामी ! अमुक चीज आटली गिलान मगावे छे त्यारे गुरु कहे एटली चीज एटला प्रमाणनी लावजे पछी ते साधु जेवारे गोचरी जाय तेवारे गिलाणने खपती चीजथी वधारे श्रावक देवा लागे, तेने साधु कहे के एटलीज गिलाणने खपे छे तेम छता वली श्रावक कहेके वधारे लइ जाउ आपपण खाजो, पीजो, वापरजो, महारा घरमा घणी छे माटे सुखे ल्यो तो लेवी पण गिलाणना नामथी पोते लइने वापरवी नही ॥ १७ ॥ ॥ ए गिलाणने खपती वस्तु लावी आपवा सवधि छठी समाचारी जाणवी ॥ ६ ॥ ॥ हवे वर्षादमां रहेला थविर कल्पी साधुउने श्रावकोना घरमां जे नवा श्रावक थयेला होय तेमने घेर हरकोइ न्हाना अथवा महोटा साधु जाय अने ते जे काइ मागे ते आपे, पण नाकारो करे नही, न्हाना महोटा साधु साहामु जुए नही पण चोरासी गछना साधुउने दान देवानीज इछा राखे ते अने ज्या साधुउने पण एवो विश्वास होय के जे चीज क्यांय पण नही मलशे ते एमना घरमा तो जरुर मलशे एवा श्रावको जे होय तेमना घरमां साधुउये विना देखती चीज मागवी नही कारण के ते श्रावक तो हरेक चीजनु दान आपवु एवी वांछावालो छे तेथी ते श्रावक एवु जाणे जे ए चीज एमने क्याय पण नही मली हशे माटे मागवा आव्या छे तेथी ते वजारमांथी वेचाती लइने अथवा अणसमजु नवो थयेलो श्रावक होय तो ते वाहेरथी चोरी लावीने पण साधुने आपे ते माटे एवा घरोमा अणदीठी वस्तु साधुये मागवी नही ॥ १९ ॥ ॥ ए अदृष्टयाचनावर्जनसंबंधि सातमी समाचारी जाणवी ॥ ७ ॥ ॥ हवे वर्षादमा चोमासु रहेला साधुउये नित्य एकवार जमवु अने गृ

हस्थोने घेर गोचरीये जावु ते पण एकवारज कल्पे पण आचार्य,उपाध्याय, तपसी,गिलान, न्हानी वयना शिष्य अने शिष्यणीउं एटले जेने दाढी मूछ आव्या न होय एवा लघु वयना शिष्य तथा जेने स्तन न होय एवी लघुवयनी शिष्यणीउं प्रमुख जे होय तेमनी वैयावृत्त्य करवाने सारु जो एक दिवसमां वे त्रण वखत गृहस्थने घेर जवुं पडे तो पण तेनी मनाइ नथी परतु पोताने माटे तो एक वारज जवु कल्पे उपरांत जवु कल्पे नही ॥ २० ॥ ॥ तथा एक उपवास करवावालाने, जो एकवार गोचरी गया थका खाइ पीने तृप्त थइ रह्या, पातरां प्रमुख पुछी राख्या, तो फरी वीजो वखत गोचरी न जावु अने जो नही धाया होय तो वीजी वार गोचरीये जावु ॥ २१ ॥ ॥ तथा वेलानी तपस्यावालाने एटले छट्ठनुं तप जेणे करेलु होय तेने तो वे वखत गोचरी जावु कल्पे ॥ २२ ॥ ॥ अने तेलानी तपस्यावालाने एटले अठ्ठम तप करनारने त्रण वार गोचरीये जावु कल्पे ॥ २३ ॥ ॥ वली त्रण उपवासथी उपरात तपस्याना करनारा जे होय तेमने तो मरजीमां आवे तेटला वखत गोचरीये जावु कल्पे ॥ २४ ॥ए गोचरीये जवानी आठमी समाचारी जाणवी ॥ ८ ॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वी जे नित्य जमवावाला होय तेमने श्रीआचारांगे कहेला सर्व एकवीशे प्रकारना पाणी लेवा कल्पे ॥ २५ ॥ तथा एक उपवासवाला साधुने एक आटानुं धोवण, वीजुं पाननुं धोवण अने त्रीजु चावलनुं धोवण ए त्रण प्रकारनुं पाणी लेवु कल्पे ॥ तथा छट्ठना तपवाला साधुने तूसनु कूकसानु धोवण,जवनु धोवण,अने तिलनुं धोवण,ए त्रण जातनुं पाणी लेवु कल्पे ॥ तथा अठ्ठम तपवाला साधुने एक उसामण, वीजुं कांजी, अने त्रीजु वर्ण पालटेलु उन्हु पाणी ए त्रण प्रकारनां पाणी लेवां कल्पे ॥ तथा त्रण उपवासथी उपरांत प

रवी अने चावल वहोरवा नही ॥३४॥ अने जो चावल तथा दाल वेहु पहेला उतस्या होय तो वेहु लेवा कल्पे अने जो वेहु पछी उतस्या तो वेहु चीज लेवी कल्पे नही ॥ ३५ ॥ तथा गोचरी गयेला साधुने आहार मल्यो छे अने वर्षाद रहीरहीने वर्षतो होयतो वागमां, उपासरामां, ढांकेली जगामां, झाडनी नीचे एटली जगाये आवीने आहार खाइ जवु पण आहारने घणो वखत राखी मूकवो नही तरत आरोगी पातरा पुछी एकठा बांधीने वर्षाद पडतो होय तोपण दिवस छतेज उपासरामां आववु पण रात्रिये बाहेर रहेतां घणा दोष उपजे छे माटे रात्रे तो उपासराथी अलगु रहेवुज नही ॥३६ ॥ एम वर्षादमा रह्या साधु गृहस्थने घेर गोचरी गया थकांने रहीरही वर्षाद वर्षवा लाग्यो तो वागादिकमां अथवा उपासरे आववु कल्पे ॥ ३७ ॥ परतु वागादिकस्थानके एक साधु अने एक साध्वीने एक स्थानके रहेवु तथा एक साधु अने वे साध्वी तथा वे साधु अने एक साध्वी तथा वे साध्वी अने बे साधुउ ए चारे नांगाये एकठु रहेवु नही कल्पे तथा पाचमे नांगे वे साधु अने बे साध्वी होय तेमां एक वृद्ध साधु साध्वी होय तथा एक लघु साधु साध्वी होय अने जगा घणी मोकली होय जिहां सर्वलोक देखता होय एवी जगामां रहेवु कल्पे एवाज चार नांगा साधुने श्राविकानी साथे कहेवा तेमज वली एवाज चार नांगा साध्वीने श्रावकनी साथे कहेवा ॥ ३८ ॥ अने पूर्वोक्त पाचमे नांगे एकठा रहेवु कल्पे ॥३९॥ आ थविरकल्पी साधु साध्वीउने गोचरी तथा साधु साध्वीउने एकत्र रहेवा संबधिनी तेरमी समाचारी जाणवी ॥ १३ ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु अथवा साध्वीये कोइ साधुना कह्या विना तेमना माटें अशनादिक चार आहार लाववा नही ॥ ४० ॥ ते शामाटे के तेनी इछा होय तो ते आहार खाय अने इछा न होय तो न खाय ते माटे कह्या विना

आहार लाववो नही ॥ ४१ ॥ ए पूछ्या विना बीजा साधुउने माटे आहार नही लाववो ते संबंधी चौदमी समाचारी जाणवी ॥१४॥ ॥ वर्षादमा रहेला साधु साध्वीने जिहां सुधी शरीर भीजेलुं होय तिहां सुधी अशनादिक चार आहार करवा नही ॥ ४२ ॥ एम शास्त्रे कह्यु छे, के घणु करी सात ठेकाणा भीजेला रहे छे, तेमां एक हाथ, बीजी हाथनी रेखा, त्रीजा नख, चोथी नखनी अणीउ, पांचमां भुंहारा, छठा नीचला होठ अने नीचली दाढीनी जगा, सातमा उपरला होठ अने उपरनी मूछो, ए सात स्थानक आला रहे छे तिहां सुधी अशनादि चार आहार न करवा अने जेवारे जाणवामां आवे के ए साते ठेकाणा आला रह्या नथी तदन सुकी गया छे तेवारे चार आहार करवा ॥ ४३ ॥ आ शरीर आलुं होय तेवारे आहार नही करवा सबंधी पन्नरमी समाचारी जाणवी ॥ १५ ॥ ॥ वर्षाद वरश्या थका, साधु साध्वीयोने सूक्ष्म आठ वस्तुउने वारवार सूत्र ज्ञानेकरी जाणवी अने चक्षुये करी देखवी, पडिलेहण करवी जोइये, तेना नाम कहे छे एक प्राण सूक्ष्म, बीजु पणक सूक्ष्म, त्रीजुं बीज सूक्ष्म, चोथुं हरितसूक्ष्म, पांचमुं फूलसूक्ष्म, छठुं कीडी प्रमुखना अंमसूक्ष्म, सातमुं कोली आवडा प्रमुखना घर सूक्ष्म अने आठमुं स्नेह सूक्ष्म, ए आठनां नाम कह्या हवे एने उलखवा माटे विशेष खोलासो गुरु शिष्यना प्रश्नोत्तररूपें लखीये छैये तिहां प्रथम प्राण एटले सूक्ष्म जीणा जीणा जतुउ काला, नीला, राता, पीला अने धोला एवा पांच प्रकारना रग वाला कुंथुआ जीव थाय छे, अणुध्दरी एवु एनुं नाम छे ए जीव एकस्थानके अणचालता रहे, ज्ञानरहित छद्मस्थ साधु साध्वीउने नजरथी देखाय नही माटे ते जीवोने साधु साध्वीये वारवार सूत्र सांजलवे करी जाणतां रहेवु, चक्षुये करी देखतां रहेवु ए प्राण सूक्ष्म कह्या

॥ ४४ ॥ हवे शिष्य पूछे छे, हे भगवन् पणग एटले फूलण सूक्ष्म ते कोने कहीये ? गुरु कहे छे काली, लीली, राती, पीली अने धोली एवा पाच प्रकारनी फूलण थाय छे, ते जीवो जे वस्तुमां पडे ते वस्तुनां रग जेवा दीठामां आवी जाय छद्मस्थने नजरे नही आवे माटे तेने पण वारवार देखतां तपासतां रहेवु, ए बीजी नील फूल सूक्ष्म कही ॥ २ ॥ हवे त्रीजा बीज सूक्ष्म कोने कहीये ? गुरु कहे छे ते पण काला, नीला, धोला, पीला अने राता एरीते पांच प्रकारना छे शाल प्रमुखना जेवा वर्णवाला थाय छे, तेपण छद्मस्थने जाणवामां नही आवे माटे तेनी पण वारवार पडिलेहणा करवी ए बीज सूक्ष्म कह्या ॥ ३ ॥ हवे चोथा हरित सूक्ष्म कोने कहीये ? गुरु कहे छे के हरित एटले नीलोत्री सूक्ष्म थाय छे । ते पण पूर्वोक्त पांच रगवाली थाय छे ते पृथ्वीना रग सदृश होय अने घणी झीणी बारीक होय, तेने पण साधु साध्वीये घणीज रूडीरीते दृष्टी वडे जोइने पडिलेहण करवी, ए हरित सूक्ष्म कही ॥ ॥ ४ ॥ पांचमां फूल सूक्ष्म कोने कहीये ? गुरु कहे छे ए पण झीणा फूल ते पूर्वोक्त कालाथी मांडीने यावत् धोला पर्यंत पांच प्रकारना थाय छे ते रूखना जेवा एटले रूंखनो जेवो रग थाय तेवा रगवाला थाय छे ते पण जाणवामां नही आवे, तेनी पण पडिलेहण करवी ए फूल सूक्ष्म कह्या ॥ ५ ॥ हवे छठा अंड सूक्ष्म ते कोने कहीयें ? गुरु कहे छे तिहां प्रथम मधुमाखीनां इंडां, बीजां कुलातराना इंडा, त्रीजां कीडीनां इंडा, चोथां गिरोलीना इंडा अने पांचमां काकिडाना इंडा ए सर्व जीवोनां इंडा पण सूक्ष्म थाय छे, माटे एने वार वार जोवा अने पडिलेहण करवी ए अंड सूक्ष्म कह्या ॥ ६ ॥ हवे सातमां घर सूक्ष्म पण पांच प्रकारना छे, ते शिष्यना पूछवाथी गुरु कहे छे के एकतो भूमीमां गडइया स

रखा घर करेला होय ते, बीजा पाणी सुकाइ गया पछी पापडी भूमि उपर पडे ते, त्रीजा बिल घर,चोथा ताड प्रमुख वृक्षोना मूलमां न्हाना न्हाना घर थाय छे ते घर,अने पांचमां भमरानां घर ए पांचे प्रकारनां घरोनी पडिलेहणा करवी ए घर सूक्ष्म कह्या ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो स्नेहसूक्ष्म ते कोने कहीये ? गुरु कहे छे ए पाणी सूक्ष्म पण पांच प्रकारनो छे, एकतो उसनु पाणी, बीजुं हेमारानुं पाणी, त्रीजुं धुंहरि थाय छे ते, चोथु करानुं पाणी अने पांचमुं भाल प्रमुखनी अणी उपर जे पाणीनां बिंदु रहे छे ते, ए पांच प्रकारनुं पाणी छे तेने पण छद्मस्थे जाणीने पडिलेहवु जोइयें ए स्नेह सूक्ष्म कह्यो ॥ ८ ॥ ॥ ४५ ॥ ए आठ सूक्ष्म चीज आश्री शोलमी समाचारी जाणवी ॥ १६ ॥ ॥ हवे वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने जेवारे गृहस्थोने घेर गोचरी करवा आहार प्रमुख लेवाने माटे जावु होय तेवारे आचार्य, उपाध्याय, थविर, प्रवर्त्तक, गणि, गणधर, गणावछेदक, तथा जेनी आज्ञामां चालता होइये तेमने पूछीने पछी भात पाणी प्रमुख लेवाने माटे जावु तेमने एम कहेवु के हे भगवन् आपनी आज्ञा होय तो गृहस्थोने घेर भात पाणी लेवाने वास्ते जाउं तेवारे ते पूर्वोक्त आचार्यादिको जो जवानी आज्ञा आपे तो जवु नहीकां जावु कल्पे नही इहां शिष्य पूछे छे के शा वास्ते ? गुरु कहे छे के आचार्यादिक जे छे ते उपद्रव टालवानां उपाय जाणे छे जे ते साधु अमुक दिशा गया तेने घणो वखत केम लाग्यो ! एटला माटे॥ ४६॥ एवीज रीते जो श्रीजिनचैत्ये दर्शन करवा जवुं होय तथा ठल्ले भूमिये जवुं होय अथवा बीजा कोइ पण कामने माटे जवु होय,गामोगाम विचरवु होय तोपण पूछया विना जवु नही ॥ ४७ ॥ ॥ तथा चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने जो विगयनो आहार करवानी इछा होय

तो आचार्यादिकोने पूछ्या विना विगय लेवी कल्पे नही माटे आचार्यादिकोने पूछवु के हे महाराज आपनी आज्ञा होय तो हु दूध प्रमुख विगय गृहस्थना घरेथी लइ आवीने आहार करु? तेवारे आचार्यादिक कहे के अमुक प्रमाणवाली विगय लावीने आहार करजे इहां शिष्य आशंका करे छे के एमां आज्ञा लेवानुं शु प्रयोजन छे? तेवारे गुरु उत्तर आपे छे के विगयादिक खावा के नही खावा, तेथी थता गुण तथा अवगुण ए सर्व आचार्यादिक जाणे छे माटे पूछवु जोइये ॥ ४८ ॥ ॥ तथा चोमासामां कोइ साधु पोतानी आरोग्यता माटे औषध करवानी चाहना राखता होय तो पण आचार्यादिकने पूछीने औषध करवु ॥ ४९ ॥ ॥ तथा चोमासामां कोइ साधु, सारु, कल्याणकारि, उपद्रवरहित, धन्यकारि मगलिकनु करनार, सोभावत तथा महाप्रभाविक एवु तप करवानी चाहना राखतो होय, तेणे पण आचार्यादिकने पूछीने पछी तें तप करवु ॥ ५० ॥ ॥ तथा कोइ साधु अनशन करवानी चाहना राखतो होय, आत्माने जूपे भात पाणीनो त्याग करी पादोपगमन संथारो प्रमुख करे, कालने वांछे नही,तेणे पण आचार्यादिकने पूछ्या विना करवु नही एमज आहार करवो, ठलें जावु, मात्री परठववी, सधाय ध्यान करवु, धर्मजागरणा करवी, काउस्सग्ग प्रमुख करवु ते सर्व आचार्यादिकने पूछीने करवु परतु आचार्यादिकने पूछ्या विना पूर्वोक्त कोइ पण काम करवु कल्पे नही ॥ ५१ ॥ ॥ ए वोहोरवा प्रमुख जे कार्य करवां ते सर्व आचार्यादिकने पूछीने करवा, ते संबधिनी सत्तरमी समाचारी जाणवी ॥ १७ ॥ ॥ वर्षाकालमां पजोसण करीने रहेला साधुउने कोइ उपधी तपाववी होय, तावडामां नाखवी होय तो पोते तिहां खबर राखवी, पासे वेसवु, परतु उपधिने तावडे नाखीने गोचरीये

जावु नही, आहार करवो नही, चैत्यें जावु नही, वले जावु नही, सधाय करवी नही, काउस्सग्ग करवो नही, जो एटला काम करवां होय तो बीजा कोइ साधुने कहेवु के हे आर्य ! मने गोचरीप्रमुख अमुक कार्य करवु छे, माटे तमे अमारी उपधीनी निगा राखो तो हुं गोचरी प्रमुखनु काम करु तेवारे ते साधु कहे के हु निगा राखीश तो गोचरीप्रमुख कार्य करवु कल्पे पण कदापि ते कहे के महारे बीजा काम छे तेथी वेशी नही शकुं तो पूर्वोक्त गोचरीप्रमुख करवी कल्पे नही ॥ ५२ ॥ ए उपधि तावडे तपाववा संबधि अढारमी समाचारी जाणवी ॥ १७ ॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीउने, एक हाथ उंची अने बोले नही एटले शब्द नकरे एवी वली मगे नही, फरती काठी बांधेली एवा शय्या विना रहेवु कल्पे नही जो एवा शय्यासन विना रहे तो कर्मबंधनुं कारण थाय वली ते शय्यासनने वारवार पडिलेहण करवु, तावडे नाखवो, पूंजवो प्रमुख जो नकरे तो तेने चारित्र पालवुं दुर्लभ थाशे ॥ ५३ ॥ अने ते शय्यासनने जे साधु तावडो प्रमुख आपे, पूजे ते साधु चारित्र सुखें पालशे ॥ ५४ ॥ ए शय्या प्रमुख ग्रहण करवानी उगणीशमी समाचारी जाणवी ॥ १९ ॥ ॥ चोमासामां रहेला साधु साध्वीउने ठला मात्रानी त्रण जगाउ राखवी अने ते जगाउने पडिलेहवी परतु सीयाला अने उनालानी पेठे चोमासामां न रहेवु जोइये इहां शिष्य पुछे छे के शीयाला अने उनालाना दिवसोनी पेठे चोमासामां शा वास्ते न करवु? गुरु उत्तर कहे छे के प्राय चोमासामां नीली वनस्पतिप्रमुख जीवो घणा उत्पन्न थयेला होय ते माटे तेनाथी चोमासानो जुदो प्रकार कह्यो ॥ ५५ ॥ ए ठला अने मात्रानी जगा पडिलेहण करवा संबधि वीशमी समाचारी जाणवी ॥ २० ॥ ॥ चोमासामां साधु साध्वीउने त्रण

मात्रा राखवा कल्पे तेमा एक तो उच्चारनु, बीजो मात्रानो, त्रीजो खेल प्रस्रवणनो एव त्रण जाणवा ॥ ५६ ॥ ए त्रण मात्रा राखवा संबंधि एकवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २१ ॥ पजोसण करीने रहेला एवा साधु साध्वीओने, गायना केस जेवडा सूक्ष्म केस पण पोताना मस्तके राखवा नही केमके पाचमिनी रात्रे जो मस्तके केस रही जाय तो दंड आवे ते माटे जो कोइ अशक्त गिलान टाटियो होय तो तेणे छरीथी मुंडी नाखवा, कतरणीथी कतरवा अने उत्सर्गमां तो लोच करवो तथा जो कतरवा होय तो पाछा पंदर पंदर दिवसे कतरवा, गुरु मासी दंड आपवो, महीने महीने खुर मुंड करवो, लघु मासी प्रायश्चित्त देवो, युवान साधुने चार मासे लोच करवो, स्थविरने अने जर्जर थयेला साधुने चक्षुनो तेज राखवा माटे छ महीने लोच करवो, अथवा थविर वर्षे वर्षे लोच अवश्य करे ॥ ५७ ॥ ए लोच करवा आश्री बावीशमी समाचारी जाणवी ॥ २२ ॥ ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीओने संवत्सरी थया पछी पहेला थयेलो कलह खमाववो पण क्रोध राखवो नही, जे कोइ निर्ग्रंथ अने निर्ग्रंथणी पजोसण वीत्या पछी क्रोध करे, क्रोध राखे, ते अनाचारी छे एम जाणवु तेमने बीजा साधुओए कहेवु के हे आर्य ? तमे अयोग्य काम करो छो एवु कहेवाथी नही समजे अने पजोसण वीत्या पछी कषाय खमावे नही तो जेम तंबोली सडी गयेला पानने बाहेर काहाडी फेंकी आपे छे तेनी पेरें ते क्रोधी साधु साध्वीने पण संघमांहेथी बाहेर काहाडी मूकवो ॥ ५८ ॥ ए अधिकरणने नही उदिरवा संबंधि त्रेवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २३ ॥ ॥ वर्षाकालमां रहेला साधु साध्वीओने, जो पजोसणना दिवसोमां कलह थयो होय, कटुक बोलवुं पड्युं होय, उद्वेग कर्यो होय तेवारे शिष्ये जइ रत्नाधिक

आचार्य प्रमुखने खमाववु अने आचार्य प्रमुखें शिष्यने खमाववु ॥ ग्रथाग्रथ ॥ १२०० ॥ ए रीते पोते खमवु, बीजाने खमाववु, पोते उपशम करवो, बीजाने उपशम कराववो, घणा प्रकारे करी रागद्वेषरहित थावु, जे क्रोधादिकने उपशमावशे ते ज्ञानादिकनो आराधक थशे अने जे क्रोधादिकने नही उपशमावशे ते ज्ञानादिकनो विराधक थशे, एवु जाणीने निश्चये पोते उपशम करवो, नगवान् ए उपशमनेज सार पदार्थ कहे ठे माटे हे शिष्य उपशम अवश्य अंगीकार करवो ॥ ५ए ॥ ॥ ए परस्पर खमत खामणा करवा सबधिनी चोवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २४ ॥ ॥ इहां पांच समिति, त्रण गुप्ति अने चार कषायोना दृष्टांत कहेवा ॥ साधु साध्वीये चोमासामां वली विशेषे करीने पाच समिति आदिक पालवी तिहां प्रथम इरिया समिति पालवा आश्री वरदत्त मुनिनो दृष्टांत कहे ठे एक दिवस इन्द्रमहाराजे पोतानी सन्नामां कह्युं के आज नरत क्षेत्रमां वरदत्त मुनि समान कोइ इरिया समितिनो पालवावालो नथी एवी इन्द्रना मुखथी वरदत्त मुनिनी प्रशंसा थयेली सांनलीने कोइक देव परीक्षा करवा सारु आव्यो तेणे हाथीनुं रूप करी सुंढमां पकडीने मुनिने आकाशमां उठाल्यो अने देवमायाथी जमीन उपर न्हानी न्हानी घणी मेडकीउ विकुर्वी तेवारे मुनि आकाशथी नीचे पडतां विचार करवा लाग्या के मने तो मरवानुं नय नथी पण आ जीणी जीणी मेडकीउ महारा शरीरना पडवाथी मरण पामशे, तेनी विराधना थाशे, एवु जाणीने आकाशथी पडतां थकां पण उघाथी जमीन पूंजवा लाग्या ते देखी देवताए जाण्युं के धन्य ठे एने जे एवी रीते जीव विराधनाथी बीये ठे पठी ते देवता प्रगट थइने साधुनी साथे अपराध खमावी नमस्कार करीने पोताने स्थानके गयो. इति इरिया समितौ

वरदत्तदृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे भाषासमिति उपर संगत साधुनो दृष्टांत कहे छे जे नगरमां संगत साधु हता ते नगरनी बाहेर कोइ वैरीराजाये सेन्या लइ आवीने नगरने वींटी लीधो, तेवारे संगत साधु नगरमांथी निकलीने बाहेर आव्या, तेने शत्रुनी फोजवालाये पुछ्युं के हे साधु नगरनी मांहेली कोरे केटलिक फोज छे? तेवारे साधु बोल्या के घणो सांभल्यो काने, घणो जोयो आंख्योथी (चक्षुथी), नही देख्यो सवे सांभल्यो, नही सुण्यो सर्वं दीठो, एवी रीते बोल्यो वली पण ज्यारे ज्यारे ते पूछे त्यारे वारवार एमज बोलवा लाग्यो, तेवारे सेन्याना लोके जाण्युं जे आ भणी भणीने घहेलो थइ गयो छे,एम विचारी मूकी दीधो ए बीजी भाषा समिति उपर दृष्टांत कह्यो ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजी एषणासमितिमा नंदीषेणनो दृष्टांत कहे छे वसुदेवजीनो जीव पूर्वला भवमां नंदीषेण हतो, तेणे ग्लाननी वैयावच्च करवानो अभिग्रह कर्यो हतो पोते छठ छठ पारणुं करे तेनी इन्द्रे प्रशंसा करी, तेवारे कोइक देवे आवी अतिसारना रोगवालो साधु बनावीने नंदीषेण पासे मोकल्यो नंदीषेण तेना सारु पाणी लेवा गयो ते देवताये अशुद्ध करी आप्युं, नंदीषेणे लीधुं नही, एवी रीते एषणा सोधी छे ग्लानने खांधे बेसाड्युं, ग्लाने तेने अशुचीये खरड्युं, देवे स्तुति करी ए कथा आगल श्रीनेमिसर भगवानना चरित्रमां लखाइ गइ छे इति एषणा समिति दृष्टांत ॥ ३ ॥ हवे आदानादि पडिलेहण करवानी चोथी समितिमां सोमिल साधुनो दृष्टांत कहेछे. एक दिवस साधु विहार करीने कोइ गामे आव्या तिहां दिवस केटलो छे एवी बराबर खबर न पडवाथी वहेली पडिलेहण करी लीधी एटलामा पाछलथी वखतनी खबर पडी तेवारे गुरुयें कह्युं पडिलेहण करवानो वखत तो हमणा छे, माटे पडिलेहण करो. ते सांभली सर्व साधु

उए पडिलेहण करी, गुरुये सोमिलसाधुने कह्यु के ! तुं पण पडिलेहण कर सोमिल वाल्यो हजी हमणातो पडिलेहण करी बे तो हवे एटलामां शुं कांइ सर्प घुंसीगयो बे ? एवु उलंठ वचन बोल्यो पढी जेवारे प्रजाते पडिलेहण करी तेवारे गुह्यामांहे पातरा बांधेला हता तेमांथी कोइ देवप्रयोगथी सर्प निकल्यो दीठो तेथी बीक पामीने गुरुपासे आवी कहेवा लाग्यो महाराज सर्प निकल्यो, तेवारे गुरु बोल्या तु उलंठ वचन शामाटे बोल्यो ? हे वत्स एवां वचन ताहारे आज पढी बोलवा नही पडिलेहण करवामां तो घणीज निर्जरा बे पढी ते साधुयें एवो अभिग्रह लीधो जे आजथी सर्व साधुउंना दंम हुं पडिलेहीश, सर्वने हुं हाथ आ पीश, एवो अभिग्रह पालतां ते साधुयें घणा कर्म क्षय कस्या इति आदानजंमनिक्षेपणसमिति दृष्टांत ॥ ४ ॥ ॥ हवे उच्चार प्रश्रवण समितिमां सुव्रताचार्यनो दृष्टांत कहे बे सुव्रताचार्यनो एक लघु शिष्य हतो तेने गुरुये कह्यु, अरे मांमला कर, तोपण तेणे मांमला कीधा नही अने कहेवा लाग्यो शुं वाहारे उंटडा बेगठे के ? पढी रात्रिये बाहेर मात्रुं परठववा गयो तेने तिहां कोइक देवे आवी उटनुं रूप करीने बीवराव्यो अने बोल्यो, अरे आ गछमां एक साधु पण मम्ल कस्या विना मात्रा प्रमुख करे नही पढी वली एक दिवस मम्ल दीठो नही अने रात्रें मात्रानी घणी बाधा थइ पण परठे नही तेवारें देवताये उद्योत कस्यो पढी ते शिष्यें जगा जोइने मात्रा परठवी तेमाटे जे कोइ मम्ल देखी परठवणा करशे तेने देवता स हाय आपशे एवो निश्चयकरी क्षुल्लक पण पारिठावणिया समितिमां सावधान थयो ए पारिठा वणिया समितिनो दृष्टांत कह्यो ॥ ५ ॥ ए पांच समिति साधुये चोमासामां विशेष पालवी ॥ हवे मनगुप्ति उपर कौकुण साधुने काउस्सग्गमां घणी देर लागी तेने गुरुये पुढ्युं घणो वखत

केम लाग्यो ? साधु बोल्यो, जीवदया ध्यायी, गुरु बोल्या केवी जीवदया ध्यायी ? साधु बोल्यो म्हारा घरमां छोकरा आलशुं छे ते खड निदानादिक करशे नही तो धान थोडो नीपजशे, तेथी ड खी थशे,गुरुये कह्यु तमे सावद्य चितव्यु माटे मिछामि डुक्कड द्यो साधु पण मिछामि डुक्कडं देतो हवो ॥ इति मनगुप्ति दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे वचनगुप्ति उपर गुणदत्त साधुनो दृष्टांत कहे छे गुणदत्त साधु, एक दिवस पोतानी संसारसबधि धनवती नामे माताने वदावा जातो हतो, रस्तामां चोर मळ्या, तेणे साधुने पकड्यो अने कहेवा लाग्या अरे साधु! आ रस्ताथी जान आवशे तेनी आगल तु अमारुं नाम लइश नही जे आ ठेकाणे चोरो रहे छे साधुयें कह्यु हुतो बोलीश नही तेवारे चोरोये तेने छोडी मूक्यो, ते पोताने स्थानके जइ पोताना कुटुंबने वदावीने फरी तेवोज जाननी साथे तेहज मार्गे आव्यो तेवारे चोरोये जान लूंटी लीधी अने वली बोलवा लाग्या के जूउ आ साधु कहेवो सत्यवादी छे के पोताना घरना माणसो आगल पण चोर रस्तामां बेठा छे एवु कह्यु नही ते वचन साधुनी मातायें सांभल्युं, तेवारे म्हाडुं ख करती थकी साधुने कहेवा लागी के अरे दुष्ट ! ते ताहारे हाथे चोरोने माल लुटावी दीधो,तुं केम प्रथमथी बोल्यो नही ! पछी साधुने घणो कष्ट थतो देखीने चोरोयें लुटेलु धन सर्व पाछु आपी दीधु, तेवारे जानवाला सर्व खुशी थया पण साधु बोल्यो नही, ए वचन गुप्ति उपर कथा कही ॥२॥ त्रीजी कायगुप्ति उपर अर्हन्नक साधुनी कथा कहे छे अर्हन्नक साधु, विहार करतां कोइ स्थानके पालो वहेतो देखीने विचारवा लाग्यो के जो हु आ खालमां पग देइश तो जीवविराधना थाशे माटे फ़दको मारीने आंहीथी निकली जाउ एवु चितवी वलांग मारीने पेली तरफ गयो एथी आज्ञा भंग करी माटे कोइक देवे ते साधुना पग छेदी नाख्या तेथी

ठ खी थयो तेवारे देवतायें आवी कह्यु के आगल हवे तमारे एम कोइवारे पण करवु नही, जो कदापि जीव मरे तो पण ए केवलीनी आज्ञा छे माटे उतरीने जावु पण कूदको मारीने जावु नही. इति कायगुप्तिदृष्टांत ॥ ३ ॥ ॥ हवे वली आ पंजोसण आव्या थकां सर्वनी साथे ख मत खामणा करवा, कारणके खमतखामणा करवा विना पडिक्कमणादिक क्रिया करवी सूजे नही माटे जो कोइनी साथे महोटो वैर होय तो पण उदाइराजानी पेरे खमाववु जेम चंपान गरीमां कुमारनंदी नामा एक सोनार रहे छे ते जन्मथी स्त्रीनो लोलुपी छे, धन आपीने महा स्वरूपवाली पांचशे स्त्रीउ परण्यो छे एक दिवस ते, हासा अने प्रहासा ए बे देवीयोने देखी तेनुं स्वरूप जोइ मोहित थयो, तेथी देवीयोने कह्यु के तमे महारीसाथें भोग करो देवीयो बोली तुं पंचशैल पर्वत द्वीपे आवजे तो अमारे भोगयोग्य होइश एवु कहीने देवीयो पोताने स्था नके गइ सोनारे गाममां आवी पडह वजडाव्यो के जे कोइ मुजने पंचशैलद्वीपे लइ जाय तेने हुं क्रोड सोनामोरो आपु ते सांभली एक वृद्ध खलासी (नावनो खेडनार) द्रव्यनो लोभी छे तेणे जाण्युं घरना माणसो द्रव्यतो खाशे एवु विचारी बोल्यो के हु लइ जइश पछी बेहु ज हाजमां बेठा जहाज चाल्युं आगल जतां एक वडवृक्ष आव्यो तेवारे नावड्यो बोल्यो आ वडनी उपर तुं चडी जाजे अने हुतो आंहीआं जहाज पाणीना चक्रमां बूडशे तेनी साथे बू डीने मरीश पण तुं वड उपर बेशी रहेजे, रात्रना भारंड पंखी आवशे तेना पगोमां तहारा शरीरने बांधी मूकजे, ते पंचशैल द्वीपमां चूगवा जाशे तिहां तने मूकी देशे पछी तुं तिहां बंधनमुक्त थइ हासा प्रहासा देवीउनी पासे जाजे एवु कह्यु एटलामां ते वाहण वडनी पासे आव्यु, सोनार वड उपर चड्यो अने जहाज भांगी पड्युं,नावड्यो मरण पाम्यो, सोनार ति

हांथी भारम पखीना पगमां वधाइने हासा प्रहासानी पासें गयो, तेनी आगळ भोग भोगववा माटे याचना करी, देवीउ बोली आ तहारी अशुद्ध देह छे ते देहथी अमे भोग करीयें नही तेवारे ते देवीयोये फरी तेने चपानगरीमा मूक्यो अने कह्यु के जे हमणा अमारो देवपति छे ते चवसे तिहां तु मरण पामीने ते देवनी शय्यामां उपजजे तो तहारु काम थशे तेवारे सोनार पण काष्ठ बाळीने अज्ञानकष्ट करी मरवा लाग्यो ते अवसरमां ते सोनारनो मित्र नागिलनामा श्रावक हतो ते बोल्यो, अरे तु आवीरीते मरवानु मकर आ प्रकारे देवीउने माटे मरवु योग्य नथी तो पण तेणे मान्युं नही काष्ठमां बळी मरण पामीने हासा प्रहासाना ध्यानथी तेम नो पति देव थयो अने तेउनी साथे भोग भोगवतो रहे छे एकदिवस इन्द्रमहाराज, सर्व देव देवी सहित नंदीश्वरद्वीपे देवयात्राये जवाने माटे तयार थया, तेवारे हासा प्रहासानो पति जे देव छे तेनी उपर एवो हुकुम आव्यो के तुं सर्व देवोनी आगळ मृदंग वजावतो चालजे ते वारे, हासा प्रहासायें ते देवना गळामां मृदंग नाख्यो, देवे ते मृदंग पोताना गळामांथी काढ़ीने फेंकी दीधो अने कह्यु के हुं मृदग वजावीश नही एटलामां तो फरी ते मृदग तेना गळामां आवी वाळी गयुं, फरी देवे फेंकी दीधो, एम वे त्रणवार कर्युं त्यारे हासा प्रहासा बोली अमारा भरतारनी एज मर्यादा छे के मृदंग वजाव्या विना ते छूटेज नही "हासा प्रहासानो मृदंग गळामां पड्यो ते वजावे छूटको" एवी लोकमां पण कहेवत छे हवे ए विद्युन्माळी देव हासाप्रहासासहित मृदंग वजावतो आगळ चाले छे तिहां महर्द्धिक देवोने देखीने पोताना भवनी निंदा करे छे एटलामां नागिल श्रावकनो जीव बारमां देवलोकमां उपन्यो छे, ते पण तिहां आव्यो अने विद्युन्माळीने कहेवा लाग्यो के अरे तु मने उळखे छे के नथी उळ

खतो ? तेवारे देवे उपयोग आपीने कह्यु के हा महारा मित्र नागिल तें घणो ए मने वर्ज्यो
पण हुं तुछ भोगने माटे व्यर्थ मनुष्य जन्म गमावीने आवा पुण्यहीन देवोमां आवी उपन्यो
छुं तो हवे महारे शुं करवु ? तेवारे नागिल बोल्यो तुं गोशीर्षचंदननी श्रीमहावीरस्वामीनी प्र
तिमा बनावीने तेनी पूजा कर के जेथकी तने समकेतनी प्राप्ति थाय. पछी ते विद्युन्मालीयें
पण तेमज श्रीमहावीरजीनी प्रतिमा बनावीने केटलाएक काल पर्यंत पूजी छेवट पोतानुं अ
ल्पायुष्य रह्युं जाण्युं, तेवारे प्रतिमाने पेटीमां नाखीने जहाजोवाला लोकोनी जहाजो अटकी
रही हती ते देवताये देव प्रयोगथी काहाडी आपी अने तेमने पेटी सोंपीने कह्यु के आ
पेटीमां श्रीदेवाधिदेवनी प्रतिमा छे ते तमे वीतभय पाटणमां जइने उदाइ राजाने आपजो
तेवारे जहाजना लोकोये ते पेटी लावीने उदाइराजानी सभामां मूकीने कह्यु के आ श्रीदेवा
धिदेवनी प्रतिमा छे तमोने कोइ देवताये मोकली छे ते ल्यो तेवारे राजाये जाण्यु जे देवाधि
देव तो ब्रह्मानुं नाम छे माटे ब्रह्मानुं नाम लइने उघाडवा लाग्या तो पण उघडी नही ए
मज वली विष्णुना नामथी पण उघडी नही, महेश्वरना नामथी पण उघडी नही, रा
जाने भोजननी वेला वीती गइ पण पेटी उघडी नही तेवारे राजानी राणी प्रभावती बोली
जे " देवाधिदेव श्रीअरिहंत वीतराग देव होय तो पेटी उघडजो " एवु कहेवाथी पेटी उघडी
पडी तेमांथी प्रतिमा निकली ते लइ देरासरमां थापन करी तेने प्रभावती राणी श्राविका छे
ते नित्य पूजे छे एक दिवस प्रभावती राणीये पूजाना श्वेतवस्त्र दासीना हाथे मगाव्या दासी
ए लावी आप्या पण राणीये पोतानी दृष्टीनी भ्रमताथी लाल वस्त्र जाण्या,तेथी दासी साथे
लडवा लागी पण थोडी वार पछी वली तेज वस्त्रने श्वेत दीठा तेवारे जाण्यु जे हवे महारु आ

पुष्य शेष ब मद्दीनानु रह्यु छे ते माटे राजाने जइ कह्यु के मने आज्ञा आपो तो हुं दीक्षा लेउं राजा बोल्यो तुं देवलोक जाय तेवारे अने मह्यारे कष्टनी वेला आवे तेवारे आवी सांनिध्य करवानु कबुल करे तो आज्ञा आपु ते वात प्रभावतीये मानी पछी राजाये आज्ञा आपी प्रभावतीये दीक्षा लीधी,संयम पाली आयुष्य पूरण करी देवलोक गइ तिहांथी आवी योगीनु रूप करीने राजाने अमृतफल देखाडी जंगलमां लइगइ तिहां घणा योगीयो बेग हता ते राजाने मारवा उठ्या राजाये बीक पामीने देवताने याद कर्यो तेवारे देवे आवी राजाने तिहांथी उपाडी साधुउ पासे मूक्यो,राजाये जाण्युं जगतमां खरा आधारभूततो एज छे पछी तेमनी पासेथी श्रावकना व्रत लइ श्रावक थयो. हवे पूर्वली श्रीवर्द्धमान स्वामीनी प्रतिमाने प्रभावती राणी दीक्षा लेती वखते देवदत्ता दासीने पूजवानु कही गइ हती ते प्रमाणे ते दासी नित्य प्रत्ये पूजा करे छे. एक दिवस कोइ गंधार नामे श्रावक सर्व गामोना देरासर वांदवाने निकल्यो छे ते वीतभय पाटण आव्यो, तेणे ते प्रतिमाने पूजी, तिहा ते गंधार श्रावक अजारी थयो तेनी देवदत्ता दासीये चाकरी करी तेथी श्रावकने रोग मटी गयो अने निरोगी थयो तेणे उपकार करवावाली देवदत्ता दासीने बे गोलीउ आपीने कह्यु के आ बे गोलीमांथी एक गोली खावाथी महास्वरूपवाली थइश अने बीजी गोली खावाथी जे मनमां चाहीश ते पुरुष वश थइ जाशे, एवु कहीने गंधार श्रावक जतो रह्यो पछी देवदत्ताये पहेली गोली खाधी तेथी दिव्य रूप थयुं तेणे करी सुवर्णगुलिका एवु नाम दासीनुं पडी गयुं वली बीजी गोली खाधी अने चंडप्रद्योतन राजा स्त्रीयोनो लोलुपी छे तेने मनमा चाहीने धार्यो जे मारो चंडप्रद्योतन राजा भरतार होजो तेवारे गुटिकाना अधिष्ठायिक देवे क्षणमात्रमां आवी चंडप्रद्योतन राजानी आगल

दासीनुं रूप वर्णन करी राजाने दासीउपर रागी करी गयो,पछी राजा अनलगिरि हाथीनी उ
पर स्वारी करीने तिहां गयो, तिहां दासीने बोलावी, तेवारे दासी बोली, हुंतो प्रतिमा विना
आवु नही तेवारे चंडप्रद्योतन राजा फरी पाछो उज्जयणीये आवीने ते प्रतिमा सरखी बीजी
प्रतिमा करावी तेने लइने वली वीतभय पाटण जइने ते नवी प्रतिमा तिहां राखीने देवे
दीधेली प्रतिमाने दासीसहित लइने उज्जयणीये चाल्यो आव्यो. हवे प्रभाते उदायी राजाये
पोताना हाथीउना मद उतरी गया देखीने जाण्युं जे अनलगिरि हाथीनी उपर चडीने चंड
प्रद्योतन राजा आव्यो हतो, ते वली सुवर्णगुलिका दासी अने प्रतिमा लइने जतो रह्यो
एवु जाणीने क्रोधसहित दश मुगुटबद्ध राजाउने साथे लइने उज्जयणी नगरी सहामुं चाल्यो
मार्गमां जेसलमेर ब्रह्मसर पासे आव्यो, पण मार्गमा पाणी पीवाने मले नही तेथी विलखो
थयो थको राजाये चितापूर्वक प्रभावती देवीने याद कर्यो तेवारें तेणे आवीने तिहां अखूट
पाणी करी दीधुं ते स्थानके पुष्करज प्रमुख घणा तलावो अखूट पाणी वाला थयां एवीरीते
उदायिराजए सेना लइने उज्जयणीनी सीमामां आवीने मेरा दीधा अने चंडप्रद्योतन उपर दूत
मोकली कहेवराव्यु के दासी पाछी नही आपे तो भले तुं राखजे परतु अमारी प्रतिमाजी
अमोने पाछी आप एवी मागणी करी, पण चंडप्रद्योतन राजायें प्रतिमाजी दीधी नही अने
चौद बीजा मुगुटबद्ध राजा साथे लइने उदायी राजाने सामुं लडवा आव्यो, तेवारे तिहां
अनलगिरि हाथी विना लडाइ करवानो ठेराव कर्यो, तोपण चंडप्रद्योतन प्रतिज्ञा तोडीने
अनलगिरि हाथी उपर चडीने सग्राममां आव्यो, पछी मांहोमांहे युद्ध करता चंडप्रद्योतन
हारी गयो तेने अनलगिरि हाथी उपरथी उतारी नीचे नाखी महारी दासीनो भरतार चंडप्र

द्योतन छे एवीरीतनो मांच तेनी ललाटमां देश्ने उदायीराजा प्रतिमा लेवा लाग्यो तो प्रतिमा तिहांथी उठे नही एटलामां आकाशवाणी थइ जे, प्रतिमा लइ जासो नही, कारणके वीत जय नगरमां धूलनो कोट पडवावालो छे तेवारे प्रतिमाने तिहाज राखी पोते चण्डप्रद्योतनने बांधी लइने चालतो थयो मार्गमां पजुसण पर्व आव्या उदायीराजाये तिहां पडाव कस्यो, पंजुसण कस्या, अठाइ महोत्सव कस्या, पोते उपवास कस्यो रसोइ करनाराउने कह्यु के चण्डप्र द्योतनने जे रुचे ते रसोइ करी जमाडजो एवु कहीने उदायिराजा पोतानी जिनपूजादिक करणीमां प्रवर्त्त थइ गयो, रसोइ करनारे चण्डप्रद्योतनने पूछ्युं के आपना सारु केवी रसोइ बनावु ? चण्डप्रद्योतन बोल्यो जे उदायि कहे ते बनावो, रसोइये कह्यु तेमणे तो आज पजु सण पर्व छे माटे उपवास कस्यो छे ते सांभली चण्डप्रद्योतने विचार्यु जे आज एणे मने जहेर आपवानो विचार राख्यो छे तेमाटे जूदी जूदी रसोइ करावे छे एवा भयथी बोल्यो जे हुं पण आज उपवास करीश, उदायी राजा अमारो साधर्मी भाइ छे, अमेपण एज धर्म पालीये छैये एवु रसोइ करनारे जइ उदायी राजाने कह्यु तेवारे उदायीयें जाण्यु जे ए धूर्त्ततायी बोल्यो छे खरो तो पण महारोतो साधर्मी थयो. माटे एने खमाव्या विना पडिक्कमणुं करवु सूजे नही एवु जाणी चण्डप्रद्योतनने वंदीखानामांथी कढावी पोतानी पासे बोलावी तेना ललाटे सोनानो पट्ट बधावी खमतखामणा करी सत्कार आपीने पाछो अयवती नगरीयें मोकली दीधो एवी रीतें बीजा भव्यजीवोये पण उदायी राजानी पेरे खमाववु, क्रोधनो त्याग करवो के जे थकी आराधकपणु थाय ॥ वली जो अपराध करीने खमावे नही तो अनर्थनी वृद्धि थाय तेनी उपर दृष्टांत कहे छे एक गाममा कोइक कुंभार भांमानु गाडु भरीने वेचवा आव्यो तेवारे तेनो

एक बलद लेवा सारु गामना धूर्त्त लोक बोल्या जूठ आ एक बलदनी गाडी चाले छे एवु बीजा लोकोये पण सांजल्यु अने गाडावाले जाण्युं जे आ दुष्ट लोको मह्वारो एक बलद खोसी लेवानो उपाय करे छे माटे ए प्रत्यक्ष चोर छे केमके मह्वारा तो बे बलद छे तेने छुपावीने ए लोको एक बलद कहे छे, माटे कपटी छे एमचितवीते कुंजार पोताना ठामडा वेचवामां एकचित्ते तत्पर थइ गयो तेवारे बलदीयाने धूर्त्त लइ गया पछी कुंजार जेवारे वासण वेची तयार थयो तेवारे जोवा माड्युं तो एक बलद दीठो नही पछी घणी हांको मारी के अरे मह्वारो बलद कोण लइ गयो !! तेने लोको कहेवा लाग्या के अमेतो एकज बलदनी गाडी सांजली हती ते सांजली कुंजार घणु दुःख करवा लाग्यो छेवट निराश थइने पोताने स्थानके जतो रह्यो पण क्रोध करीने सात वर्ष लगण खेत्रखलां बाल्या, एकदा कोइ यक्षनी यात्रामां गामना लोको एकठा थया छे, ते वखत गामना लोकोये पडह वजाव्यो के जे अमारा धानना खेत्र बाले छे ते प्रगट थाउ ते सांजली कुंजार पोतानो वेष बदलावीने बोल्यो के जेनी एक बलदनी गाडी तमे दीठी हती ते तमारो धान बाले छे तेवारे लोकोये जाण्यु जे एनी गाडीनो बलदीउ आपणा लोकोये लीधेलो छे ते वेष बदलावीने बोले छे, माटे ह्वे एनो बलदीउ आपी द्यो नही तो फरी धान बालशे, पछी कुंजारने बलदीयो आपीने सर्व लोकोये अपराध खमाव्यो तेमाटे प्रथम बनता सुधी अपराधतो करवोज नही एवीज टेव राखवी परंतु कदापि थइ जाय तो तरत खमतखामणा करी अपराधनी क्षमा मागी लेवी, के जेथी कोइ अनर्थ थाय नही ए क्रोध उपर कुंजारनो दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ ह्वे जे पंजुसणमां क्रोधनो त्याग नही करे तेने जेम सडेला पानने बाहेर कहाडीने फेंकी आपीये छैये तेनी पेठे

सघथी बाहेर कहाडी मूकवो, तेना उपर दृष्टांत कहे छे एक खेडा गामनो रहेवासी कोइ ब्राह्मण हतो, ते खेतीनो धंधो करे, तेनो हल खेडवामा बलद हाकता हाकता गळीयो थइ बेशी गयो, तेने उठाडवाना घणा प्रयत्न कर्या पराणानी मार आपी, पाटुये मार्यो तो पण उठीने चाले नही, तेवारे ब्राह्मण रीसे धमधमतो ते बलदनी उपर खेत्रना ढेफा नाखवा लाग्यो ते ढेफा नाखतां नाखतां बलद आखो ढकाइ गयो, कदर्थनाथी ते बलदनु श्वास रुंधाणु तेथी मरण पाम्यो ब्राह्मणने गोहत्यानु पाप लाग्यु, ब्राह्मणे महापुरुषोनी पासेथी प्रायश्चित्त लेवा माग्यु कह्यु के गोहत्यानो दंड आपो, महापुरुषोये कह्यु ताहारो क्रोध उतर्यो के नथी उतर्यो? ब्राह्मण बोल्यो हमणा बलदने देखु तो मारी नाखु तेवारे महापुरुषोए कह्यु के आ पापीने शो दंड आपीये के जेथी ए शुद्ध थाय एतो अशुद्ध छे एवु कही न्यात बाहार कहाडी मूक्यो एवीरीते साधुपण जे क्रोधने त्यागे नही तो तेने संघ बाहार करी मूकवो ॥ हवे पोताथी अपराध थयो होय तो मृगावतीनी पेरे खमाववो पोतानु मन शुद्ध करीने मिच्छामिडुक्कड देवो ते कथा कहे छे एक दिवस श्रीमहावीरस्वामी कोसंबी नगरी समोसर्या, तिहां चंद्र ने सूर्य बे मूल विमाने वांदवा आव्या, चंदनबाला, मृगावती प्रमुख तिहां बेठी हती; तेमा चंदनबाला तो सूर्य अस्त थतो जाणी तिहांथी उठी पोताने उपासरे आवी अने मृगावती तो भगवाननी देशनामां मोहित थइ थकी तिहांज बेशी रही, पछी सूर्य ने चंद्र जेवारे पोताने स्थानके गया तेवारे अंधकार थइ रह्यो तिहा मृगावतीयें चंदनाने दीठी नही तेथी एकलीज भय पामती उपासरे आवी तिहां इरियावहि पडिकमि चंदनबालाने नमती थकी पगचंपी [illegible] गमिनी? हुं रात्रनी एकली

इहां आवी एथी हुं अपराधणी थइ माटे आप महारा ए आपराध खमजो, तन चदनाये कह्यु हे नइ ? तू उत्तम कुळनी उपनी छो माटे तारे एम न करवु मृगावतीये कह्यु हवे हुं एम केवारे पण करुं नही एवु कहेती वारवार चदनबाळाने पगे लागती शुद्ध मनथी खमा वती थकी तत्पर रहेलीने केवलज्ञान उपजी गयुं अने चदनाने तो चपी करावता निद्रा आवी गइ एवामां अंधकारने विषे सर्प आवतो जाणीने मृगावतीये चदनानो हाथ उपाडीने सथारा उपर मूक्यो, तेवारे चदना जागृत थइने पूछवा लागी के महारो हाथ कोणे उपाड्यो, तेने मृगावतीये कह्यु सर्पनो सघटो थवाने लीधे मे तमारो हाथ उचो राख्यो, चदनाये पूछ्युं एवां अंधकारमां सर्प आवतो तमारा जाणवामां केवीरीते आव्यो ? मृगावतीये कह्यु आपना प्रतापथी ! चदनाये कह्यु, शु ! तमोने केवलज्ञान उपन्युं छे ? मृगावती बोली आपनी कृपाथी तेवारे चदनाये जाण्यु जे, अरे मे केवलीनी आशातना करी एवु चिंतवीने वारवार खमा वती खमावती मिछामिदुक्कडं देती देती, तेपण केवलज्ञान पामी ॥ एवीरीते भव्यजीवोये मिछामिदुक्कडं देवो परतु कुंभार अने चेलानी पेरे नही करवुं ते कथा कहे छे जेम एक लघु शिष्य हतो ते कुंभारनां भांमा तावडे सूके तेने कांकरा मारे, ते जोइ कुंभारे कह्यु हांमा म फोडो, तेवारे शिष्य बोल्यो " मिछामिदुक्कडं " ते सांभली कुंभारे जाण्युं जे हवे भांमा फोडशे नही पण शिष्यतो फरीने तेवीज रीते कांकराथी कुंभारनां भांमा फोडवा लाग्यो अने कुंभार नाकारो करे तेने शिष्य वारवार मिछामिदुक्कडं देवा लाग्यो, ते जोइ कुंभारे पण एक कांकरो लइ शिष्यना कानमां नाखीने कान मसळ्यो, तेवारे शिष्य बोल्यो अरे कान दुखे छे ते सांभली कुंभार बोल्यो मिछामिदुक्कडं एवीरीते वारवार चेलो कहे, अने कुंभार मिछामि

डुक्कडं आपे माटे ए प्रकारे मिच्छामिडुक्कड देवाथी कार्यसिद्धि न थाय, वारवार पाप करवा अने वारवार मिच्छामिडुक्कड देवो ते काममा न आवे तो शु करवु ? लोके सासु जमाइनी पेरे सर्व अलिया गलिया करवा, ते कथा कहे छे एक वृद्ध स्त्री हती तेनी पासे घणु द्रव्य हतु परतु पुत्र न हतो अने पोतें विधवा घणी लोभी अने कजुस हती धननो सग्रह करे पण पेटमां खाय नही तेने एक दीकरी हती ते कोइ कुलवान् छोकराने परणावी पण पोते लोभी हती माटे जमाइने दायजो प्रमुख कांइ दीधु नही तेथी जमाइ कचवाणो,नाखुश थयो होली दीवाली प्रमुख कोइ पर्वे जमवा आव्यो नही, तेवारे लोको वृद्ध स्त्रीने कहेवा लाग्यां के अरे पापणी ! आ तहारो एकज जमाइ छे तेनें पण जमाडती नथी ! छोकरोतो ताहारे छे नही तो तहारु आ धन ते कोण खाशे ! अने कोने काम आवशे ! तेवारे लौकिक रीती साचववा माटे जमाइने घणी मनवार करीने बोलाव्यो, अने कहेवराव्यु के हे जमाईजी आज तमे एकलाज पधारजो ते सांभली जमाइना मित्रो कहेवा लाग्या के आज तुजने सासु बधु द्रव्य आपीदेशे पछी जमाइ सासुने घेर एकलो जमवा गयो, तेने सासुये खीर पीरसी वली वाटकीमां रुनो पुभडो नाखीने घृत पीरसवा आवी, वाटकी मांहेथी घृतनु टीपु टीपु था लीमां पडे पण वधारे पडे नही तेथी घणी देर लागी सासुये विचार्यु जे जमाइ हमणा नाकारो करशे, अने जमाइये जाण्युं जे आ तो मने छगवा आवी छे तेथी सासुनो हाथ पकडी वाटकीनुं महोडुं थालीमां उधुं करी लीधुं अने सासुने कहेवा लाग्यो के जीजी घणुं थयु हवे म नाखो, सासुये जाण्यु जे, अरे वाटकीतो खाली थइ गइ, घीतो बधु जमाइजी खाइ जाशे एतो ठीक थयु नही माटे कांइ युक्ति करवी एम विचारीने जमाइने कहेवा लागी

के हे जमाइजी आजे तमारे अमारे रुसणुं छे ते सर्वे नांगो माटे आपणे वे नेला वेसी जमीये एम कही जमाइनी नेली साथे जमवा वेठी पण जमाइनी तरफ थालीनु नीचाण वाजु आवेलु हतु तेथी घी सर्वे जमाइ तरफ थइ गयु हतुं एवु जाणीने सासु अलंनानुं मिस करीने आंगुली सुंधी पोतानी तरफ खेचती जाय ने जमाइजीने कहेती जाय के तहारामां एटला वाक छे के प्रथमतो तुं होली उपर नही आव्यो,बीजो दीवाली उपर नही आव्यो, त्रीजो अक्षयत्रीज उपर नही आव्यो, एवु वोलती वोलती सर्वे घृत पोतानी तरफ खेची लीधुं तेवारे जमाइये जाण्यु जे सासुतो घणी समजणवाली देखाय छे घीतो सर्वे पोतानी तरफ खेची लीधु एवु जाणी थालीमा हाथ फेरवीने वोल्यो, सासुजी ! जे थवानुं हतुं ते थयु पण हवे तमारु अने महारु वेहुनुं मन एक करी ल्यो अलिया गलिया आज पछी सर्वे अपराध ॥ एवु कही थाली उपाडीने घी खांड सहित सर्वे खीर जमाइ पीगयो अने वोल्यो हवे आपणुं सर्वे रुसणु मटी गयुं माटे तमे खुशीमां रहेजो ॥ ॥ एवी रीते धर्मार्थि जीवने पण कोइ राग द्वेष उपज्यो होय ते सर्वे खमाववो पण पजुसणमां राग द्वेष राखवो नही मिछामिडुक्कड दे यो ॥ १ ॥ ॥ वली आ पंजुसण पर्वमां क्रोध, मान, माया अने लोभ करवो नही एनी उपर अनेक दृष्टांत छे पण पंजुसण पर्वने विषे गोचरीमां क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार वाना सर्वथा न करवा तेनी उपर दृष्टांत कहेतो थको प्रथम क्रोधथी आहारादिक लेवा आश्रयी दृष्टांत कहे छे हस्तिकल्पनामा नगरमां एक साधु मासितपने पारणे गोचरी क रवा माटे ब्राह्मणोमां कोइ मरण पामेलानु जमण थयु छे तिहां गयो, तिहां ब्राह्मणो घेवर खाय ने साधु घणो वखत उभो रह्यो पण कोइये साधुने दीधुं नही तेवारे साधु क्रोध करीने

बोल्यो जे आ आजना जमणमां नही आपो तो फरी जमण थाशे तेवारे आपजो एवु कही चालतो थयो, साधुनुं बोलवु जुठु थाय नही एटलामां बीजा महीनाने पारणे फरी पण कोइक ब्राह्मण मरण पाम्यो तेना जमणमां वली साधु पण पारणु करवा माटे गोचरीये आव्यो परतु कोइये वहोराव्यु नही, तेवारे वली क्रोधथी बोल्यो, त्रीजाना जमणमा वहोरावजो, एवु कही जतो रह्यो एम वली पण त्रीजा महीनामा कोइ मरण पाम्यो तेना जमणमां पण वहोराव्यु नही तेवारें साधु क्रोधथी चोथाना जमणमा वहोरववानु बोल्यो ते शब्द कोइ मोकरो पाल उपर बेगे हतो तेना काने पड्यो तेवारे मोशाये घरना धणीने कह्यु के आ साधुने घेवर आपीने खुसी करो नही तो वली पण कोइ मरशे एवु समजी साधुने बोलावी घेवर वहोराव्यो जेम ए साधुये क्रोधथी घेवर वहोर्यो तेचीरीते कोइ पण साधुये वहोरवु नही ॥ ए क्रोधपिंम उपर गेवरीया साधुनो दृष्टात ॥ १ ॥ ॥ हवे मानपिंम उपर सेवैया साधुनो दृष्टात कहे छे कोशलदेशमा गिरिपुष्पनामा नगरने विषे एक सेवोनु पर्व आव्यु तेवारे युवान साधु एकठा मिल्या तेमां एक साधु बोल्यो आजतो सेवैया पर्व छे माटे सेवो लावीशु तेमां शु वधाइ छे' परतु काले प्रनातें खाम घी सहित जे सेवु लावीने सर्वे साधुउने जमाडे ते लब्धिवान् जाणवो तेवारे वली एक शिष्य अभिमान करीने बोल्यो जे हु काले सेवो लइ आवीने सर्व साधुउने जमाडुं तो मद्दारु नाम फलाणु ते खरे खरु करी जाणजो एवो अभिमान करी बीजे दिवसे महोटा महोटा पात्रा जोलीमां नाखीने गोचरी गयो तिहां एक शेठने घेर सेवो देखीने मागवा लाग्यो के शेगाणीजी अमने सेवो वहोराव पण ते शेगाणी लोजणी हती माटे बोली, अरे जा जा,दूर जा,तुने सेवो नही मले, ए प्रमाणे लजकारीने का

हाडी मूक्यो तेवारे चेलो बोल्यो तुं जोतो खरी के हुं जरूर ताहारी पासेथ
तो म्हारुं नाम साधु जाणजे. कोइ पण रीतें अवश्य लइ जइश. तेवारे गोवाणीं बाला. जो
तु सेवो लइ जाय तो म्हारुं नाक गयुं एम जाणजे परतु म्हारुं नाक होयतो तुने सेवो लइ
जवा देइश नही, ते सांभली साधु तिहांथी निकली आगल जइ कोइने पूछ्युं के आ घर कोनु
छे? एना घरनो मालक किहां छे? तेवारें कोइए कह्यु, ए देवदत्तनु घर छे, ते हमणा पंचाय
तीमां बेठो छे, तेवारें ते साधु तिहां गयो अने कहेवा लाग्यो अरे पचातीयो तमारामां देव
दत्त कोण छे? ते बोल्या शु काम छे? साधुये कह्यु तेनी पासेथी कांइ मागवुं छे, पचातीयो
बोल्या अरे ए कृपण पासेथी शु मागवा चाहे छे? ताहारें मागवु होयतो अमारी पासेथी
माग के जेथी ताहारुं कार्य सरे तेवारे देवदत्त बोल्यो हे साधुजी जे तमे मागशो ते हुं
आपीश तेने चेलाये कह्यु हे देवदत्त जेवीरीते छ जणा स्त्रीयोने वश हता, तेवीरीते
जो-तु स्त्रीने वश न होय तो हु कहु छुं के तहारी पासेथी कांइ मागु ते सांभली पच-बोल्या,
ते छ जणा कोण हता? जे स्त्रीयोने वश थया हता तेनी कथा कहो तेवारे चेलो
बोल्यो एक कुलपुत्र हतो ते परणीने पछी स्त्रीने वश थयो, प्रभाते भूख लागी स्त्रीनी पासेथी
खावा माग्युं, स्त्री ढोलीया उपर बेठी थकीज कहेवा लागी के जो तुं भुख्यो होय तो चूला
मांथी राख काहाडी बाहेर नाख, इंधण लाव, चूलामां अग्नी बाल, माथे हांडी चडाव, तेमां
पाणी नाख, कोठामांथी चावल लावी तेने सोधी साफ करीने हांडीमा नांखी पचावीने त
यार कर, तयार थया पछी मने हाक मारजे तो हुं उठीने पीरसी आपीश ए वात सांभली
कुलपुत्र बोल्यो तुं कहे छे ते सत्य छे एम कही तहत्ति करीने पूर्वोक्त सर्व काम करवा ला

ग्यो एम नित्य करतो जाय प्रज्ञातना नित्य चूलानी राख काहाडवी पडे तेने लीधे आंगु लीओ धोली पडी गइ, लोकोये तेनुं श्वेतांगुली एवु नाम आप्यु तेम हे देवदत्त तुं पण स्त्रीने वश न होय तो हु याचना करु तेवारे देवदत्त बोल्यो हु स्त्रीनें वश नथी ॥ वली बीजा युवान पुरुषे पूछ्युं आ तो तें छमांथी एक वार्त्ता कही पण बीजी पांच वार्त्ता संन्नलाव साधु बो ल्यो एक कुलपुत्र हतो ते स्त्रीने वश थयो तेने स्त्री ढोलीया उपर बेठी बेठी कहेवा लागी के हु पाणी नही लावीश माटे तु जइ तलाव उपरथी पाणी नरी लाव तो रोटला हुं बनावी आ पीश तेपण स्त्रीने वश थयो थको लोकोनी लाजथी, जेवारे पाछली एक पहोर रात्री रहे तेवारे नित्य माथे घडो लइ पाणी नरी लइ आववा लाग्यो रात्रीना बगला प्रमुख जनावर बीक पामीने तलाव उपरथी उडवा लागे तेनो गडवडाट थाय तेथी लोकोये जाण्यु, आ शु नित्य उपद्रव थाय छे ! बगला केम उडे छे ! पछी शोध कराव्यो तेवारे जाणवामां आव्युं जे कुल पुत्र पाणी नरवा जाय छे तेथी बगलाप्रमुख उडे छे पछी लोकोए बगोड्डो एवु नाम पाडी दीधु माटे साधुये कह्यु जो तु पण एवो न होय तो हुं याचू देवदत्ते कह्यु हुं एवो नथी ॥ ते वारे वली बीजा युवाने पूछ्यु त्रीजानी कथा कहे साधु बोल्यो एक कुलपुत्र स्त्री परणीने तेने वश थयो, पछी नित्य प्रज्ञाते उठी हाथ जोडी स्त्रीने कहे के हे स्त्री हुं शु काम करुं ? स्त्री बोली सर्व रसोइ कर, तेवारे तेणे रसोइ तयार करी वली स्त्रीने कहेवा लाग्यो, हवे शु करु ? स्त्री बोली गादी बिछावीने पाटलो मूक, ते पण कर्युं, वली पूछ्युं हवे शुं करु ? स्त्री बोली म हारी बाह पकडीने मने गादी उपर बेसाड, तेणे बाह पकडीने गादी उपर बेसाडी वली पूछ्य हवे शु करुं ? स्त्रीये कह्यु रसोइ पीरस, रसोइ पीरसीने वली पूछ्युं हवे शुं करु ? स्त्री

बोली माखीयो उमाड, माखीयो उडामीने वली पूछ्युं हवे शु करुं? स्त्री बोली मलमूत्र परठी आव, ते परठी आवीने फरी बोल्यो हवे शु करुं? स्त्री बोली हुं सुइ रहुं छु तुं म्हारा पग माव चपी कर, तेवारे पग मावथा लाग्यो ते जोइ लोक बोल्या, ए स्त्रीकिंकर छे. तेम हे देवदत्त? तु पण तेना जेवो होय तो हुं याचना करुं नही देवदत्ते कह्यु हुं एवो नथी ॥ फरी चोथी कथा पूछवाथी साधु कहेवा लाग्यो एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थइने तेना वस्त्रप्रमुख धोवानुं कार्य नित्य करे तेनुं लोकोये तीर्थस्नाता एवु नाम दीधुं एमज पांचमानुं नाम गच्छापरखी जाणवु ॥ हवे छठ्ठानी कथा कहे छे एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थयो, तेने पुत्र थयो स्त्री कहे छोकराने हगावी लाव ते नित्य छोकराने हगावे, स्नान करावे, ते देखी लोकोये हदनीयो एवु नाम आप्युं माटे एनी पेरे तुं जो स्त्रीने वश न होय तो तहारी पासे याचना करु देवदत्त बोल्यो हु तेवो नथी तमे सुखे मागो ॥ तेवारे बीजा सर्व पचायती लोक बोल्या हे चेलाजी, स्त्रीने वश थयेलाना सर्व दोष एमां छे एवु हास्यपूर्वक बोल्यां तेवारे देवदत्त बोल्यो हे भगवान्! एतो म्हारी हांसी करे छे आपने जे चाहना होय ते सुखे मागो तेवारे चेलो बोल्यो घृत अने खांम सहित सेवो वहोरावो देवदत्ते कह्यु चालो हुं आपने वहोरावु एवु कही तिहांथी चाल्यो अने साधुने साथे लइ घेर आव्यो तेने रस्तामां साधुये कह्यु के तहारी स्त्रीतो म्हारी साथे लडी छे तेने देवदत्ते कह्यु तमे घरनी बाहेर उभा रहेजो हुं बोलावुं तेवारे आवजो पछी साधु बाहेर उभो रह्यो, देवदत्त घरमां जइने स्त्रीने कहेवा लाग्यो, आज ब्राह्मणोने जमवानु कह्यु छे, ते जमवा आवशे कांइ घरमां रांधेलु अन्न छे? ते बोली सेवों तयार छे देवदत्ते जाण्युं ए स्त्री छतां तो देवाय नही एवु चितवीने स्त्रीने कह्यु के नीसरणी चडीने उपरथी घृत गोल लइ

आवो ते स्त्री घृत गोल लेवा सारु नीसरणी उपर चडी ते वेलाये साधुने बोलाव्यो साधु बोल्यो देवदत्त आ नीसरणी जरा अलगी लइ ल्यो तो सारीरीते वहोरीश, देवदत्ते नीसरणी दूर करी साधुये रुडी रीतथी सेवों अने घृत गोलना पात्रा भरी लीधा, स्त्री उपर उभी उभी हांको करवा लागी, के अरे एने कां वहोरावे छे, आ मुंडो छे एवीरीते बकवाद करवा लागी पण जोर चाल्यु नही साधु पण पात्रा भरीने निकलतो थको नाक उपर आंगुली फेरवीने स्त्रीने जणाव्यु के तहारु नाक कपाइ गयु एवी सज्ञा करी उपासरे आवीने सर्व साधुयोने जमा ड्या एम जे रीते ए साधुये अभिमान करीने आहार लीधो ते रीते बीजा साधुये आहार लेवो नही ए कथाउ जो विस्तारे जोवी होयतो पिंडनिर्युक्तिनी टीकाथी जोइ लेवी आंही सक्षेप मात्र लखेली छे ए मानपिंड उपर दृष्टांत कह्यो ॥ हवे मायापिंड उपर आषाढभूतिनो दृष्टांत कहे छे, जेणे राजगृही नगरीमां नटवाना घेरथी रूपपरावर्त्तन करीने पाच लाडु वहोर्या छे ए कथा प्रसिद्ध छे माटे लखी नथी तेवीरीते पण साधुये नही वोहोरवु ए मायापिंड उपर दृष्टांत कह्यो ॥ ३ ॥ ॥ हवे लोभपिंड उपर सिंहकेसरीया साधुनो दृष्टांत कहे छे चपानगरीमां उत्सवना दिवसे एक साधुये मासखमणने पारणे अभिग्रह लीधो के महारे आज सिंहकेसरीया मोदक वहोरवा पछी घरघर भम्यो पण लाडवा कोइ आपे नही अने बीजु अन्न तो साधु पण ले नही पछी लाडु नही मलवाथी मुनिनु मन सक्लिष्ट थइ गयु ते अर्द्ध रात्री लगण घरघर धर्मलाभ देतो फर्यो लोभना वशथी रात्रनी खबर पण रही नही रात्रीये कोइएक श्रावकने घेर जइ धर्मलाभ दीधो ते श्रावक महागम्भीर छे मातापितासमान छे तेणे रात्रनो धर्मलाभ सांभलीने विचार्यु जे कोइ कर्मना वशथी साधुनुं मन डगमग थइ गयु छे

एवु जाणीने तिहांथी उठयो जइने मुनिने वदना करी जोयु तो साधु महातपस्वी देखाय छे. तेने श्रावके पूछयु महाराज आपने शु जोइये छैये ? मुनिये कह्यु सिंहकेसरीया मोदक खपे छे ! श्रावके कह्यु सुखे ल्यो, अमारे घेर घणा छे निर्दोष छे एवु कहीने सिंहकेसरीया मोदकनो थाल भरी लाव्यो अने मुनिने वहोराव्या तेवारे मुनिनुं मन ठेकाणे आव्युं श्रावक बोल्यो स्वामी पुरिमार्द्धना पच्चख्खाणनो वखत आव्यो के नही ? मुनिये उपदेश आपी आकाशमां जोयुं तो निर्मल तारा, नक्षत्रनी श्रेणिसहित चद्रमाने जोइ चित्त ठेकाणे आवी गयु तेवारे विचार्युं जे धिक्कार छे ! मे आ शु कर्यु ! जे हु रात्रीनो गोचरी करवा निकल्यो ! महारो साधुनो आचार किहां गयो ! एम पश्चात्ताप करतो थको नगरनी बाहेर आवीने सूत्रोक्तविधिसहित मोदक परठवतो थको विचारे छे के अरे कर्मने जीतवु घणुं मुसकील छे ! अरे मे आ खोटुं काम कर्युं धर्मनी निंदा करावी, एवीरीते पश्चात्ताप करतो करतो शुक्लध्यान ध्यावतो थको क्षपकश्रेणी चडीने केवलज्ञान पाम्यो इहां परमार्थ ए छे के जेम एणे लोलना वशथी सिंहकेसरीया मोदक वहोर्या तेम बीजा साधुये लेवा नही. एवां इहां घणा दृष्टांतो छे पण अमे केटला ल खीये ए लोभपिंड उपर दृष्टांत कह्यो ॥ ४ ॥ ए पर्वमां सर्व प्रकारे क्रोधादिक नही करवा ॥ हवे वर्षादमां पजुसण करीने रहेला साधु साध्वीउंये जीवादिकनी उत्पत्तिने लीधे त्रण उपासरा राखवा तेमां जे उपासरामां पोते रहे ते उपासराने तो प्रतिदिवस त्रणवार पडिलेहण करवुं पूजवो अने बीजा बे उपासराने एकवार पूंजवा पडिलेहण करवां ए पूंजवा पडिलेहवानी पच्चीसमी समाचारी जाणवी ॥२५॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीउने पोतानी मरजीमां आवे तिहां जवु होयतो गुरुने पूछीने जावु दिशि बतावीने जावुं. शिष्य पूछे छे के शा वास्ते

पू न्तु प्रयोजन कह्यु छे? गुरु कहे छे, साधु जे छे ते चोमासा विना शेषकालमां तो सामान्य प्रकारना तप करे छे परतु चोमासाना कालमां घणा प्रकारना विशेष तप करे छे माटे कोइ तपस्वी डुर्बल होय अने किहा मुर्छा खाइ पडीजाय तो, जे दिशाये गयो होय ते दिशाये आचार्य याद राखीने निगाह करावे, खबर कहाडावे, शोध करावे जे एटलो वखत केम लाग्यो तेमाटे खबर करावे ते सारु आचार्यने पूछीने वाहार जवु जोइये ॥ ६१ ॥ ए प्रतिजागरण करवानी छवीसमी समाचारी जाणवी ॥ २६ ॥ ॥ वर्षाकालमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने औषध प्रमुख कामने लीधे वैद्यनी पासे जवु पडे तो चार योजन तथा पांच योजनपर्यंत पोताना गामथी जे गाम दूर होय ते गामे जवु एटले सोल तथा वीस कोश दूर जइने ते गाममांथी औषध लइ पाछो फरी आवीने जो पोते रहेला गामनी माहे उपासरामा दिवस छतां आवी न शकाय तो तेज गामनी वाहेर आवी रहेवु पण जे गाममां औषधादिक लेवा गया ते गाममां रात्रे रहेवु नही अथवा दिवस छतां गामनी वाहेर न पोहोंची शकाय तो मार्गमां रहेवु ॥ ६२ ॥ ए औषधादिक लेवा माटे चारथी पांच योजन लगे जवानी सत्तावीसमी समाचारी जाणवी ॥ २७ ॥ ॥ इत्यादिक संवत्सरीनो थविरकल्प जेवीरीते कल्पसूत्रमां कह्यो छे तेवी विधिथी करे, ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो मार्ग जेरीते जगवाने कह्यो छे तेम करे, जला प्रकारथी मन, वचन अने कायाये करी फरशे, अतिचाररहित पाले, विधि सहित शोजा करी दीपावे, जाव जीव सुधी आराधे, कांठे पहोचाडे, लोकोमां कीर्त्ति करे, आराधीने आज्ञासहित पालीने केटलाएक निर्ग्रंथ तो तिहिज जवमां सीजे, तत्त्वने जाणी, कर्मोथी रहित थइ, सर्वसंतापरहित थइने सर्व दुःखथी छूटे, मोक्ष जाय, केटलाएक त्रीजे

नवे सीजे, यावत् मोक्ष जाय परतु सात आठ नवतो उलंघे नही तेमज केटलाएक सातमे तथा आठमे नवें तो अवश्य मोक्ष जाय ॥ ६३ ॥ ए चोमासानी मर्यादा पाले ते साधुने जे फल थाय तेनी अठावीसमी समाचारी जाणवी ॥ २८ ॥ ॥ ते कालने विपे, ते समयने विपे श्रमणजगवत श्रीमहावीर स्वामी राजगृही नगरीये गुणशील नामे चैत्यने विपे इहां जे वागमां यक्षनुं देहरुं होय ते वागने चैत्य कहीये ते चैत्यने विपे घणा साधुउमां, घणी साध्वी उमां, घणा श्रावकोमां, घणी श्राविकाउमां, घणा देवोमां, घणी देवीउमां बेठा थका अर्थात् नगवान् वार परपदामां बेठा थका एवां वचने करीने कहे ए कल्पने पालवानुं फल वतावे एवो प्ररूपे, ए पंजुसणकल्पनामा अध्ययन दशाश्रुतस्कंधनो आठमो अध्ययन, ते अर्थसहित, हेतुसहित, कारणसहित, सूत्रसहित, अर्थसहित, सूत्रार्थसहित, दृष्टांतसहित, वारवार उपदेश करीने देखाडे एवो बे जबू (मे के०) हुं आ सूत्र नद्रबाहु स्वामीये रच्यु बे दशाश्रुतस्कंधमा आठमो अध्ययन करीने रच्यो बे पण वाचना सर्व सुधर्मस्वामी अने जबुस्वामीनी जाणवी ॥ ६४ ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १२१६॥ इति नवम व्याख्यानम् ॥९॥ ॥ इति श्रीकल्पसूत्रस्य बालाववोधिनी नाषा समाप्ता ॥ ए कल्पसूत्र दशाश्रुतस्कंधसूत्रनो आठमो अध्ययन बे, तिहां पण एनुं सहिनाण बे ॥ सर्वेषु सूत्रेषु वरप्रशस्ति, र्यस्यास्ति सर्वेष्वतिमुख्यता च ॥ तत्कल्पसूत्रं मम कल्पतुल्यं, चारित्रकार्ये शुन्नशुक्लसदास्तु ॥१ ॥ सौधर्मपट्टे सुपरपरायां, सूरीश्वरा ये च वरा बन्नुवु ॥ वदे सदा तान् वरसूत्रदान्वा, श्रीरत्नसूरीन्सुमुनीस्तथापि ॥ २ ॥ श्रीमत्क्षमादिगुणवान् यशवाञ्शमीशो, जात क्षमागणधर प्रवराम्नकर्त्ता ॥ चित्रा लता चरणसेवनतत्परान्नूत् तस्यापि तां हृदि गुरु स च नो दधार ॥३॥ देवेंद्रविजयो वच·,तच्छिष्यो बहुकीर्त्तिन्नाक् ॥ कल्याणवि

जयस्तस्य, प्रमोदश्च प्रमोदयुक् ॥ ४ ॥ सौधर्मस्वामिनो गच्छे, सति राजेन्द्रसूरय ॥ तेनेय कल्प सूत्रस्य, वार्त्ता बालावबोधिनी ॥ ५ ॥ कृता सूत्रपदैर्युक्ता, सर्वसाराशसयुता ॥ सायोगोधहन येन, न कृत तस्य हेतवे ॥६॥ अब्दे खवेदनदैके, (१९४०) माधवे च सितेतरे ॥ पक्षे दिने द्वितीयायां, मगले लिखिता त्वियम् ॥७॥ इति श्रीराजेन्द्रसूरिविरचिताया प्राकृतभाषाया बालाव बोधिनी टीका कल्पसूत्रस्य समाप्ता ॥ श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु ॥ सवत् १९४० ना वैशाखवदि बीजना दिवसे बालावबोधिनी टीका सपूर्ण थई ॥ जावुवा नगरे ॥

॥ भट्टारक श्रीराजेंद्रसूरिकृता श्रीकल्पसूत्रस्य बालावबोधिनी वार्त्ता समाप्ता ॥

आगलथी आश्रय आपनार साहेबोनां स्मरण करवा योग्य नामो नीचे लखीये छैये

गामश्री वागराना श्रावकोनां नाम
लेनारनु नाम प्रत संख्या

शा मोतीजी गजाजी ओसवाल एमनी
दुकान कोकणदेसना गामश्री पेनमा शा
गजाजी केसवजीना नामथी चाले छे १२१

शा जूताजी, केशाजी, कुशनाजी, पेरा
जजी, धूनाजी, ए पांचे भाइ शेठ
खुसालजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान
करणाटक देसमां गामश्री निडगुदीमां छे १११

शा वन्नाजी कस्तूरचद ते शेठ चिमना
जी हुकुमाजीना सुपुत्र छे एमनी कोला
पुरमा दुकान छे १००

शा खुमाजी, देवराजजी, कुशनाजी,
नथाजी, नरसिंघजी, ए पांचे भाइ शेठ
मनरूपजीना सुपुत्र छे एमनी गामश्री
चिक्काडीमा दुकान छे १००

शा दानाजी, खुमाजी, हकमाजी, वन्ना
जी, ए चारे भाइ शेठ सवाजीना सुपुत्र
छे एमनी दुकान गामश्री बालाजीना
देवल गाममां छे १००

शा मनाजी, जेठाजी, सदाजी, ए त्रणे
भाइ शेठ मोटाजीना सुपुत्र छे एमनी
दुकान तालिकोटमा छे ७५

शा राजाजी, मोतीजी, कुशनाजी, धन्ना
जी, लखमाजी, ए पांचे भाइ शेठ दरगा
जीना सुपुत्र एमनी दुकान तालिकोटमां छे ५१

शा नरसिंहजी ते शेठ मोटाजीनासुपुत्रछे ४१

शा चुनीलालजी ते शेठ देवराजजीना सु
पुत्र छे जे गामश्री सीरोइवालाने नामे
ओलखाय छे एमनी दुकान पेनवंदरमां छे ४१

कस्तुरजी, गेनाजी, चिमनाजी, लखमाजी
ए चारे भाइ ते शेठ चेलाजीना सुपुत्र छे
एमनी दुकान गामश्री तालिकोटमां छे ३५

शा राजाजी, प्रतापजी, सरूपजी, ए त्र

ए भाइ ते शेठ सदाजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान बिल्लाडीमा छे २५
शा मनाजी, जुहाजी, नरसिंघजी, ए त्रणे भाइ ते शेठ भगवानजीना सुपुत्र छे तथा शा धूलाजी ते शेठ पन्नाजीना सुपुत्र छे ए बे काकाइ भाइ छे एमनी दुकान गामश्री तालिकोटमा छे ५०
शा रतनाजी, मथुराजी, चेनाजी, हसाजी ए चार भाइ ते शेठ अमरिंगजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान गामश्री बिल्लाडीमां छे १५
शा जिवाजी ते शेठ धूलाजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान चितोरदुर्गमां छे २५
शा खुशालजी, जेसाजी, ए बे भाइ ते शेठ पेथाजीना सुपुत्र थाय एमनी दुकान दक्षणदेशना गामश्री विजयपुरमां छे ७
शा खुमाजी, नरसिंघजी, लालाजी मेनाजी, मोतीजी ए पांच भाइ ते शेठ पन्नाजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान धारवाडमां छे. ५
शा मथुराजी, प्रेमाजी ए बे भाइ ते शेठ गुलाबजीना सुपुत्र थाय एमनी दुकान चितोरदुर्गमां छे ५
शा मगाजी ते शेठ चेलाजीना सुपुत्र ५
खुमाजी ते शेठ भूताजीना सुपुत्र थाय २
शा हसाजी ते शेठ धुवाजीना सुपुत्र २
शा मोतीजी ते शेठ दुलाजीना सुपुत्र १
शा फुशाजी ते शेठ धूमाजीना सुपुत्र २
बाइ नाजु शा मोतीजीनी घरवाली १
शा गोमाजी ते शेठ जिवाजीना सुपुत्र १

गामश्री सीयाणाना श्रावकोनी तरफथी

शा केशरीमल्ल, हेमराज, ए बे भाइ ते शेठ कस्तूरजीना सुपुत्र थाय, एमनी दुकान देवल गाममां छे ५०
शा झुंबाजी ते शेठ प्रेमाजीना सुपुत्र १०
शा कस्तूरजी, कुशनाजी ५
शा सेराजी, देवाजी, लखमाजी ५
शा जेसाजी, खुशालजी ५

शा खुमाजी, जेताजी	४	शा लखमाजी, सदाजी	१०
शा दीपाजी, खुमाजी	२	शा पन्नाजी, सूरतिगजी	७
सघवी नरसिघजी, लालाजी	२	शा फताजी, लखमाजी	५
शा मोतीजी, नूताजी	२	शा नथाजीनी, घरवाली	३
शा लुवाजी, परागजी	१	शा वगताजी, सदाजी	३
शा रासा, मन्नाजी	१	शा नथाजी, खुशालजी	२
शा ताराजी, वालाजी	१	शा राजाजी, मनाजी	२
शा पन्नाजी, केशाजी	१	शा पदमाजी, माह्याजी	१
शा कुशनाजी, सदाजी	१	शा कपूरजी, अदाजी	१
शा मोतीजी, गजाजी	१	शा मनाजी, वजाजी	१
शा गुलवा, सूराजी	१	मुता फुशा, नथाजी	१
सघवी सूरतिगजी दोलाजी	१	शा दीपाजी, जुवाजी	१
शा मोती, नगाजी	१	शा हकमा, खुशालजी	१
शा फुशा, डुरगाजी	१	शा अवा, गोमाजी	१
शा खुमा, सदाजी	१	शा अमरिग, डुरगाजी	१
शा वीराजी, मनाजी, ए वे नाइ शेठ दे		मुंता वरदा, गोमाजी	१
वाजीना सुपुत्र छे जे गाम श्रीकानदर		शा नूता, पदमाजी	१
वालाने नामे उलखाय छे ते	१५	शा फोजु, लखमाजी	१

गामश्री आहोरना श्रावको तरफथी
शा वनेचद, केशरमल, ए वे नाइ ते शेठ
नूताजीना सुपुत्र डुकान श्री मुवश्मां ठे. २५
मुता कस्तूरचद, वालाजी, ए वे नाइ ते
शेठ ऊमाजीना सुपुत्र ठे, एमनी डुकान
गामश्री कट्याणीमा ठे १५
सघवी जखमाजी, थानाजी, ते शेठ
रूपाजीना सुपुत्र ठे ५
शेठ गोडीदाशजी, वागमलजी ५
शा पन्नाजी, जुवारमल्लजी, ते शेठ
फुसाजीना सुपुत्र ५
नमारी नूताजी, हेमाजी, नीमाजी, ए
त्रणे नाइ ते शेठ अचलाजीना सुपुत्र ठे ५
शा हसराज ते शेठ नाथाजीना सुपुत्र
एमनी डुकान गढूलमां ठे ५
मुता जवानजी, केशरमल्ल, ए वे नाइ
ते शेठ अचलाजीना सुपुत्र ५
मुता सूरजमल्लजी, चदनमलजी, ए वे

ते शेठ हुकुमचदजीना सुपुत्र ५
शा. प्रेमचदजी, मनजी, मोतीजी, ए
त्रणे नाइ शेठ मकनाजीना सुपुत्र एम
नी डुकान गामश्री पिजरतमा ठे ५
शेठ प्रतापजी, लालचदजी, पुनमच
दजी, ते शेठ जेठमल्लजीना सुपुत्र ५
शा राइचद, शोनाजी १
शा गुलाबचद ते गेनाजीना वेटा २
शा धन्ना, पनाजी १
शा सेरा, रूपाजी १
गामश्री जालोरना श्रावको तरफथी
मुंता वनराजजी, जसवतराजजी, मुनि
लालजी, ए त्रणे नाइ ते मुता लालच
दजी माफा वालाना ठोकरा २५
मुता सुलतानमल्लजी, ते मुता उत्तमच
दजीना सुपुत्र ५
नट्टारक नेरचदजी दयालचदजीनां चेला ५
नार सीतारामजी जवानमल्लजी एम

ની દુકાન આબુરોડ ખરાડીમાં ५

ગામશ્રી નિન્નમાલના શ્રાવકો તરફથી

શા હીરાજી, લખમાજી, નાવાજી,
માફાવાળા ५

શા કેરાજી, કાનાજી ५

શા જુવારમલ, શિરદારમલજી २

શા ગુલાબચદ, ખૂપચદ २

શા લખમાજી, કસ્તૂરચદ २

મુતા કેવલચદજી, નગવાનચદ એ બે
નાઇ તે મુતા તોલાજીના સુપુત્ર २

ગામશ્રી થરાદના શ્રાવકો તરફથી

વોરા. જીવા, વાલુ ५

દોસી લલા, લાલજી. २

વોરા મોતીચદ, ચદાણા ५

દોસી. હીરા, વીસલા २

ગામશ્રી ધાનેરાના શ્રાવકોની મદત

મેતા તલકચદ, નોજરાજ ५

શા મૂલજી, દાનસિંઘ १

ગામશ્રી શિવગંજની તરફથી

શા મોતીજી, તુલસાજી, વન્નાજી, પો
માજી, હીરાચદજી અને રામાજી એ ઠ
નાડ્ઠ શેઠ મેગાજીના સુપુત્ર દુકાન મું
બઇમાં મેગા મોતીજીના નામની છે २५

શા લુંબાજી, જેગાજી २

શા રતનાજી, હઠાજી १

શા પન્નાજી, કલાજી ગામકોસીલાવ २

ગામ નેસાવડાના શ્રાવકોના તરફથી

શા નથાજી, મનરૂપજી પોરવાડ १००

શા જીફાજી, જોધાજી २

શા મહોનદાસજી १

શા સૂરાજી, વદાજી २

શા વન્ના, કલ્લાજી २

ગામશ્રી હરજીના શ્રાવકો તરફથી.

શા સૂરતિંગજી, મનાજી ५

શા નવલા, ઉંમાજી २

શા ચેલા, ગજાજી २

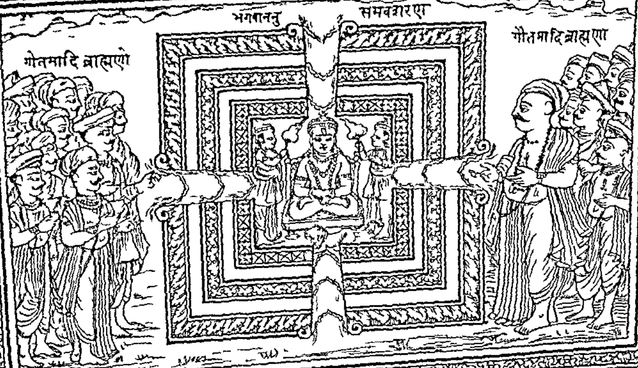
शा वन्ना, खुशालजी	२
गामश्री खीमेलना पचोनी तरफथी	५
गामश्री कोसीलावनां पच समस्त	५
गामश्री गुंदो बालोतरानो तेना पच समस्तनी तरफथी	५
शा नीखाजी, कुशनाजी पाडीवना	५
दोसी कृष्णाजी, वनेचंदजी गामश्री कछ सुंदरांवदरना रेवासी	५
शा गोकलभाइ, लहेरा गोधावी	१
शा जेठाजी, जवेरचंदजी अलीराजपुर	४
शा हीराचंद, कुवरजी अलीराजपुर	१
शा नीखाभाइ, रतनजी घोगा	२
शा केशवजी, लेहेरा भाइ गाम श्रीक राचीवदर वाला	१
शा मोटाजी, वल्हाजी कालीआवाडी	२
शा नगाजी, कुशनाजी रेवतरा वाला	५
शा लव्हाजी, कुपाजी धानपुर वाला	२
शा रूपाजी, प्रेमाजी	२
शा लव्हा, हीरजी अमदानगर वाला	२
गामश्री अमदावादमां अमदावादनी पांजरापोल वाली जैनसभानी तरफथी	५
शा पुनमचंद, ताराचंद	१
शा पन्नाजी, थनाजी	१
शा बालाभाइ, कक्कल	१
शा लखमीचंद, जेठा	१
शा मयारामजी ते शेठजी धूमाजीना सुपुत्र गामश्री मांभवडा	१
मुंता उमेद मल्लजी, चंदरभाणजी गामश्री एनेराने गुडे	५
शा रिखभाजी ते शेठ खुमाजी लखाजीना वेटा गामश्री भूतिना	२
शा मोतीजी, भगाजी गामश्री कवला	१
शा भगवान, लवजी कोलीआकवाला	१
गामश्री मुंबइना श्रावको तरफथी बाइ प्रेमाबाइ ते शा नागसी शिवजी नेणसीनी घरवाली	२५

शेठ घेलाभाइ, पदमसी	५	शा नथांजी, नोपाजी	१
शा. कस्तूरचद, नानचद त्रांबा कांटे	१	शा नीमा, मोताजी	१
शा ओधवजी देवजी जामनगर वाळा.	१०	शा जेशाजी, गोमाजी	१
शेठ गणेसमल्ल, सोभागमल्ल	१	शा पन्नाजी, भावाजी.	१
जैनविद्याशाळा तरफथी हा शा वृद्धि		शा वन्नाजी, शेनाजी	१
चद पुनमचद	५	शा केवदाजी, खुशालजी	१
शा कशतुर, वालाजी	२	शा मोतीजी, गुलाबचदजी	१
शा कशतुरचद, तलकचद वशनाली पेव.	१	शा खुमाजी, हसराजजी	१
शा जीवाजी, खीमाजी	१	शा हुकमाजी सांकलचद	१
शा गुलाबचद, केशवजी	१	शा हसाजी, जेराजी	१
शा फुसाजी, नगाजी	१	शा गुलाबचद, खुमाजी	१
मुता. नथा, रूपाजी	१	शा पानाचद, जगन्नाथजी	१
गाम भीमडीना पंचो तरफथी	२	शा जेताजी, कस्तूरचदजी	१
शा हिडु, जेगाजी.	१	शा मटाजी, विजिगजी	१
शा केशा, जोदाजी बूडतराना	१	शा लालचद, गुमनाजी.	१
मुंता. शवाजी, लखमाजी बूडतराना.	१	शा जवानमल्ल, नथाजी	१
शा भूताजी, फत्ताजी.	१	शा माणकजी, खुमाजी.	१
शा उमाजी, खाशाजी, राजाजीना पुत्र	१	शा सूराजी, जेताजी	१

ग्प० ५२॥ वाला० ॥

शा दोलाजी, जेराजी	१	शा मनाजी, मासिघजी	१
शां मनछाजी, अनेचद	१	शा चेनाजी, गजाजी	१
शा मनछाजी, वनेचद.	१	शा धुरा, मासाजी	१
शा लालचद, कपूरचद हाजाखमी	१	शा. जुवारमल्ल, चेनाजी	१
शा न्यालचद, आलमचदजी गाम सादरी	१	शा मोटाजी, वीराजी	१
शा. दीपाजी, केशाजी	१	शा जेरूप, सल्लाजी	१
शा. गेना, ओखाजी	१	शा जिवाजी, आणदाजी	५
शा गेनाजी, तेजाजी	१	शा जमनादास, लालजी	५
शा जेताजी, लखाजी	१	शा डुगरसी, धरमसी	५
शा जुताजी, तेलीजी	२	शा उपाजी, कपुरचद कुक्षी	१५
शा चरसिंघ, देवसी	१	शा आशाजी, राइचद कुक्षी	५
शा खुमाजी, हिडजी	१	शा गोमाजी, जवेरचद कुक्षी	५
शा हिडजी, अमरंगजी	१	शा दोलतराम, चुनीलाल राजगढ	५
शा नाना, ओखाजी	१	शा जसुजी, चतुरभुज राजगढ	१०
शा मोती, पुरुपाजी	१	श्री जावडाना सघ समस्त	१०
शा इदाजी, सुजाजी	१	श्री जांबुआना संघ समस्त	१०
शा जेवा, गरनारजी	१	श्री वडनगरना सघ समस्त	५
शा खुशालजी, खुमाजी	१	शा दोलतराम, हरखचद राजगढ	५

।२५२॥


चित्र ४८
गोतमादि ब्राह्मणो
भगवाननु
समवसरण
गौतमादि ब्राह्मण